FAIZANE SIDDIQE AKBAR (HINDI)

अफ़ज़लुल बशर बा'दल अम्बिया ह़ज़रते सय्यिदुना
अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल और पाकीज़ा ज़िन्दगी पर मुश्तमिल
कमो बेश 500 कुतुब से माख़ूज़ जामेअ़ किताब

फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)
शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مُستَطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

त़ालिबे ग़मे मदीना बक़ीअ़ व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी इस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **''अल मदीनतुल इल्मिय्या''** ने येह किताब **''उर्दू''** ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का **''हिन्दी''** रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats app) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	स़ = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स़ = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ءٔ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
ू = ٗ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-
मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द
Mo. + 91 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

FAIZANE SIDDIQE AKBAR (HINDI)

अफ़्ज़लुल बशर बा'दल अम्बिया ह़ज़रते सय्यिदुना
अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल और पाकीज़ा ज़िन्दगी पर मुश्तमिल
कमो बेश 500 कुतुब से माख़ूज़ जामेअ़ किताब

फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)
शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत

शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत

नाशिर

मक्तबतुल मदीना देहली

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡکَ یَارَسُوۡلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصۡحٰبِکَ یَاحَبِیۡبَ اللہ

नाम किताब : फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर

पेशकश : शो 'बए फ़ैज़ाने सहाबा व अहले बैत (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

त़बाअ़ते अव्वल : शव्वालुल मुकर्रम 1436 हिजरी ब मुत़ाबिक़ जुलाई 2015 ईसवी

ता 'दाद : 3000 (तीन हज़ार)

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 25 जुमादल ऊला 1433 हि.

ह़वाला नम्बर : 176

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْن وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْن

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर"

(मत़बूआ़ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मत़ालिब व मफ़ाहीम के ए 'तिबार से मक़दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा 'वते इस्लामी)

بسم اللہ الرحمن الرحیم
مجلس
تفتیش کتب و رسائل
فیضان مدینہ پرانی سبزی منڈی باب المدینہ کراچی

18 - 04 - 2012

E.mail: ilmiapak@dawateislami.net
www.dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उन्वान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

‘सिद्दीक़े अक्बर मेरे हैं’ के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की “15 निय्यतें”

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث:۵۹۴۲،ج۶،ص۱۸۵)

दो मदनी फूल :

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़्ह़ा पर ऊपर दी हुई अ़रबी इ़बारत पढ़ लेने से इन निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। ﴾5﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾10﴿ जहां जहां ‘**अल्लाह**’ का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां ‘**सरकार**’ का इस्मे मुबारक आएगा वहां ‘صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم’ पढ़ूंगा। ﴾12﴿ इस ह़दीसे पाक “تَھَادَوْا تَحَابُّوْا” एक दूसरे को तोह़्फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، الحدیث:۱۷۳۱،ج۲،ص۴۰۷) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़्फ़तन दूंगा। ﴾13﴿ सीरते सह़ाबा पर अ़मल की कोशिश करूंगा। ﴾14﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾15﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(नाशिरीन को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बता देना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَارَسُوْلَ اللّٰہ

अब्वाबे फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर

तआ़रुफ़े सिद्दीक़े अक्बर	11	अवसाफ़े सिद्दीक़े अक्बर	87	हिजरते सिद्दीक़े अक्बर	191
ग़ज़्वाते सिद्दीक़े अक्बर	249	ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर	283	विसाले सिद्दीक़े अक्बर	445
तफ़्सीर व अह़ादीस	477	ख़ुसूसिय्याते सिद्दीक़े अक्बर	491	अव्वलिय्याते सिद्दीक़े अक्बर	495
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर	501	करामाते सिद्दीक़े अक्बर	533	अह़ादीसे फ़ज़ाइल	569

इजमाली फ़ेहरिस्त

तआ़रुफ़े अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या	7	सिद्दीक़े अक्बर और दा'वते इस्लाम	57
पेशे लफ़्ज़	8	सिद्दीक़े अक्बर के वालिदैने करीमैन	63
❁....तआ़रुफ़े सिद्दीक़े अक्बर....❁	11	सिद्दीक़े अक्बर की अज़्वाज (बीवियां) और अवलाद	67
सिद्दीक़े अक्बर का इस्मे गिरामी	19	नस्ल दर नस्ल सहाबी	75
सिद्दीक़े अक्बर के अल्क़ाबात	21	सिद्दीक़े अक्बर की अहले बैत से रिश्तेदारी	77
"अ़तीक़" लक़ब की वुजूहात	21	सिद्दीक़े अक्बर के भाई	86
"सिद्दीक़" लक़ब की वुजूहात	25	सिद्दीक़े अक्बर की बहनें	86
सादिक़, सिद्दीक़, सिद्दीक़िय्यत और सिद्दीक़े अक्बर	29	❁....अवसाफ़े सिद्दीक़े अक्बर....❁	87
		सिद्दीक़े अक्बर की जुरअत व बहादुरी	104
'ह़लीम' बुर्दबार 'अव्वाहुन' कसीरुद्दुआ़ आजिज़ी करने वाला	32	मुशरिकीन से रसूले ख़ुदा का दिफ़ाअ़	105
		सिद्दीक़े अक्बर की सख़ावत	114
सिद्दीक़े अक्बर की पैदाइश व जाए परवरिश	33	सिद्दीक़े अक्बर और मुख़्तलिफ़ उ़लूम	121
सिद्दीक़े अक्बर का हुल्यए मुबारका	34	सिद्दीक़े अक्बर ब हैसिय्यते मुशीर	146
सिद्दीक़े अक्बर का बचपन	35	सिद्दीक़े अक्बर का ख़ौफ़े ख़ुदा	148
सिद्दीक़े अक्बर की जवानी,	36	सिद्दीक़े अक्बर का तक़्वा व परहेज़गारी	152
ज़मानए जाहिलिय्यत की ज़िन्दगी	36	सिद्दीक़े अक्बर की ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ वाली नमाज़	166
सिद्दीक़े अक्बर का कारोबार	37	सिद्दीक़े अक्बर और मरीज़ों की इ़यादत	167
सिद्दीक़े अक्बर की नबिय्ये करीम से दोस्ती	40	सिद्दीक़े अक्बर और लवाह़िक़ीन से ता'ज़िय्यत	170
सिद्दीक़े अक्बर का क़बूले इस्लाम	45	फ़रामीने सिद्दीक़े अक्बर	172
सिद्दीक़े अक्बर और वह़दानिय्यते इलाही	48	सिद्दीक़े अक्बर से मन्क़ूल दुआ़एं	181
सिद्दीक़े अक्बर और अव्वलिय्यते क़बूले इस्लाम	55	सिद्दीक़े अक्बर की मुख़्तलिफ़ वसिय्यतें	184
सिद्दीक़े अक्बर का इज़्हार व ए'लाने इस्लाम	57	❁....हिजरते सिद्दीक़े अक्बर....❁	191

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर और हिजरते ह़बशा	193	मुर्तद्दीन से जिहाद का लाइह़ए अ़मल	371
सिद्दीक़े अक्बर और हिजरते मदीना	198	मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ जिहाद	381
ग़ारे सौर से मदीना को रवानगी	228	अस्वद अ़नसी के ख़िलाफ़ जिहाद	390
मदीनए मुनव्वरा में आमद	236	इर्तिदाद की आख़िरी छे जंगें	396
मस्जिदे क़ुबा के फ़ज़ाइल	240	मजलिसे इन्तिज़ामी उमूर	402
❁....ग़ज़वाते सिद्दीक़े अक्बर....❁	249	दौरे सिद्दीक़ी में फ़ुतूह़ात का आग़ाज़	404
ग़ज़वए बद्र और सिद्दीक़े अक्बर	251	शाम व मुल्ह़िक़ा अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात	409
ग़ज़वए उहुद और सिद्दीक़े अक्बर	256	फ़ैज़ाने ह़याते सिद्दीक़े अक्बर	414
हुदैबिय्या और सिद्दीक़े अक्बर	259	सिद्दीक़े अक्बर और जम्ए क़ुरआन	415
सिद्दीक़े अक्बर और घोड़ दौड़	267	ख़ुत़बाते सिद्दीक़े अक्बर	433
ग़ज़वए तबूक और सिद्दीक़े अक्बर	268	वसिय्यते ख़िलाफ़ते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म	437
सिद्दीक़े अक्बर की माली क़ुरबानी	269	**❁....विसाले सिद्दीक़े अक्बर....❁**	445
जैशे सिद्दीक़े अक्बर	276	सिद्दीक़े अक्बर की तजहीज़ व तक्फ़ीन व नमाज़े	
सिद्दीक़े अक्बर मुसलमानों के अमीरुल ह़ज	276	जनाज़ा वग़ैरा	462
❁....ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर....❁	283	सिद्दीक़े अक्बर ह़यातुन्नबी के क़ाइल थे	464
इमामते सुग़रा	285	**❁....तफ़्सीर व अह़ादीस....❁**	477
रसूलुल्लाह का विसाले ज़ाहिरी	292	सिद्दीक़े अक्बर से मन्क़ूल तफ़्सीरे क़ुरआन व	
इमामते कुब्रा, ख़िलाफ़त का बयान	301	मरवी अह़ादीसे मुबारका	477
अह़ादीसे मुबारका और ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े		**❁....ख़ुसूसिय्याते सिद्दीक़े अक्बर....❁**	491
अक्बर	304	सिद्दीक़े अक्बर की आठ ख़ुसूसिय्यात	491
मुख़्तलिफ़ अक़्वाल और ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर	308	**❁....अव्वलिय्याते सिद्दीक़े अक्बर....❁**	495
बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर	311	सिद्दीक़े अक्बर की उन्नीस अव्वलिय्यात की तफ़्सील	495
बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर और सय्यिदुना उ़मर		**❁....अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर....❁**	501
फ़ारूक़े आ'ज़म	319	आयाते अफ़्ज़लिय्यत, अह़ादीसे मुबारका व	
सिद्दीक़े अक्बर की बैअ़ते ख़ास्सा	321	अक़्वाले अस्लाफ़	501
बा'दे बैअ़त ख़ुत़बाते सिद्दीक़े अक्बर	326	सिद्दीक़े अक्बर सूफ़िया की नज़र में	519
बा'दे बैअ़त इब्तिदाई मुआ़मलात	335	**❁....करामाते सिद्दीक़े अक्बर....❁**	533
सिद्दीक़े अक्बर और मोहर वाली अंगूठी	338	सिद्दीक़े अक्बर की कमो बेश ग्यारह करामात	
बा'दे ख़िलाफ़त ह़याते सिद्दीक़े अक्बर	342	का बयान	533
सिद्दीक़े अक्बर और मुख़्तलिफ़ क़बाइल का		**❁....अह़ादीसे फ़ज़ाइल....❁**	569
इर्तिदाद व बग़ावत	355	सिद्दीक़े अक्बर की फ़ज़ीलत पर कमो बेश 1200	
इस्लाम में नज़रियए ज़कात	360	अह़ादीसे मुबारका	571
सिद्दीक़े अक्बर और मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जिहाद	367	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	687

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक 'दा'वते इस्लामी' नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस '**अल मदीनतुल इल्मिय्या**' भी है जो **दा'वते इस्लामी** के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बिड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छे शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाही़ कुतुब (4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़रीज

'**अल मदीनतुल इल्मिय्या**' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ **ह़त्तल वस्अ़** सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ '**दा'वते इस्लामी**' की तमाम मजालिस ब शुमूल '**अल मदीनतुल इल्मिय्या**' को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

पेशे लफ़्ज़

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''اَصْحَابِیْ کَالنُّجُوْمِ فَبِاَیِّہِمُ اقْتَدَیْتُمْ اِھْتَدَیْتُمْ या'नी मेरे सह़ाबा सितारों की मानिन्द हैं तुम इन में से जिस की भी इक़्तिदा करोगे हिदायत पा जाओगे।''

(مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب الصحابۃ، الحدیث: ۶۰۱۸، ج۲، ص۴۱۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यूं तो तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ही मुक़्तदा बेह (या'नी जिन की इक़्तिदा की जाए) सितारों की मानिन्द और शम्ए़ रिसालत के परवाने हैं लेकिन सिद्दीके़ अक्बर वोह हैं जो अम्बियाए किराम के बा'द तमाम मख़्लूक़ में अफ़्ज़ल हैं। जो मह़बूबे ह़बीबे ख़ुदा हैं जो अ़तीक़ भी हैं, सिद्दीक़ भी हैं, सादिक़ भी हैं, सिद्दीके़ अक्बर भी हैं। ह़लीम या'नी बुर्दबार भी हैं, बचपन व जवानी दोनों में बुत परस्ती से दूर रहने वाले, ज़मानए जाहिलिय्यत व ज़मानए इस्लाम दोनों में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोस्त। जब सभी ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को झुटलाया उस वक़्त आप की तस्दीक़ करने वाले, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ातिर अपना तन मन धन सब कुछ कुरबान करने वाले, मर्दों में सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाले, सब से पहले इज़्हारे इस्लाम करने वाले, सब से पहले दा'वते इस्लाम देने वाले, जिन के वालिदैन सह़ाबी, अवलाद सह़ाबी, अवलाद की अवलाद भी सह़ाबी, जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रिश्तेदार, जिन की इ़बादत व रियाज़त देख कर लोग इस्लाम क़बूल करें, शराब से नफ़रत करने वाले, इ़ज़्ज़त व ग़ैरत की ह़िफ़ाज़त करने वाले, ख़लीफ़ा होने के बा वुजूद इन्किसारी करने वाले, मुशरिकीन से रसूले ख़ुदा का दिफ़ाअ़ करने वाले, ग़ुलामों को आज़ाद करने वाले, सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़रीद कर बादशाहे ह़क़ीक़ी या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बहुत बड़े मुत्तक़ी का ख़िताब पाने वाले, जो कुरआनो ह़दीस के बहुत बड़े आ़लिम, इ़ल्मे ता'बीर व इ़ल्मे इन्साब के माहिर, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बराहे रास्त दर्से किताब व ह़िक्मत लेने वाले, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशीर व वज़ीर, जिन का ख़त़ा करना रब को पसन्द नहीं, जिन की ताईद ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم करें, जो ख़ौफ़े ख़ुदा से गिर्या व ज़ारी करने वाले, जो दुख्यारी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही करने वाले, मरीज़ों की इ़यादत करने वाले, लवाह़िक़ीन से ता'ज़िय्यत करने वाले, जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सफ़रे हिजरत के दोस्त और यारे ग़ार, हिजरत की रात मे'राज के दुल्हा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने कन्धों पर उठाने वाले, ऐसे यारे ग़ार कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ातिर अपनी जान की भी परवाह न करें, जिन का साह़िब व यारे ग़ार होना ख़ुद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

बयान करे, जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ तमाम ग़ज़्वात में शिर्कत करने वाले, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगहबानी करने वाले हैं। जिन को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अमीरुल हज बनाया। जिन्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इमाम बनाया। जिन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में इमामत की। जो ख़लीफ़ए अव्वल हैं, जिन की ख़िलाफ़त पर इजमाए उम्मत है, जिन की ख़िलाफ़त **अल्लाह**, रसूल, मुसलमानों सब को पसन्द व मह़बूब है, जिन्हों ने मुन्किरीने ज़कात व मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जिहाद फ़रमाया। जिन के अवसाफ़ व एह़सानात को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद बयान फ़रमाएं। जिन के फ़ज़ाइल को ख़ुद सह़ाबए किराम व अस्लाफ़े किराम बयान करें। जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़यात में भी इन के रफ़ीक़ हैं और मज़ार में भी इन के रफ़ीक़ हैं। '**सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा का रसूल बस**' येह इन की किताबे ज़िन्दगी का उ़नवान था। आप की शख़्सिय्यत रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त में है। यक़ीनन किसी शख़्सिय्यत की अ़ज़मत उस की सीरत ज़िक्र करने में है, इसी त़रह़ '**अ़ज़मते सिद्दीक़े अक्बर**', '**सीरते सिद्दीक़े अक्बर**' में है।

फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर से माला माल होने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक '**दा'वते इस्लामी**' की मजलिस '**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**' के शो'बे '**फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत**' ने अ़शरए मुबश्शरा में से छे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सीरत पर काम की तक्मील के बा'द अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की सीरते त़य्यिबा ब नाम '**फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर**' पर काम करने की सई की और कमो बेश छे माह के क़लील अ़र्से में इस को मुकम्मल किया गया, तफ़्सील कुछ यूं है :

(1)....आप की ह़याते मुबारका को तआ़रुफ़, अवसाफ़, हिजरत, ग़ज़्वात, ख़िलाफ़त, विसाले पुर मलाल, मन्क़ूल तफ़्सीर व मरवी अह़ादीस, ख़ुसूसिय्यात, अव्वलिय्यात, अफ़्ज़लिय्यत, करामात और अह़ादीसे फ़ज़ाइल के बारह अबवाब में तक़्सीम किया गया है।

(2)....पैदाइश से ले कर वफ़ात तक ह़याते त़य्यिबा के तमाम पहलूओं को उजागर किया गया है, नीज़ बा'ज़ जगह मुख़्तलिफ़ अक़्वाल को बयान करने के साथ साथ इन में मुत़ाबक़त भी ज़िक्र कर दी गई है।

(3)....ह़याते मुबारका के तज़्किरे के बा'द आप के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अह़ादीसे मुक़द्दसा बयान की गई हैं अगर्चे इन में ज़िमनन किसी और की फ़ज़ीलत भी मज़कूर हो, नीज़ सह़ाबा व सलफ़े सालिह़ीन से मन्क़ूल आप के फ़ज़ाइल भी दर्ज किये गए हैं।

(4)....इस किताब के उर्दू एडिशन में ह़याते सिद्दीक़े अक्बर मअ़ फ़ज़ाइल वग़ैरा को कमो बेश 450 जली सुर्ख़ियों (Main Headings) और 1100 ख़फ़ी सुर्ख़ियों (Sub Headings) के ज़रीए निहायत ही अह़सन अन्दाज़ में बयान किया गया है।

www.dawateislami.net

(5)....आयाते मुबारका कुरआनी रस्मुल ख़त़ में लिखी गई हैं, नीज़ आयात के ह़वालों के एहतिमाम के साथ साथ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** का भी इल्तिज़ाम किया गया है।

(6)....अह़ादीसे मुबारका और मुश्किल अल्फ़ाज़ पर ज़रूरतन ए'राब लगा दिये हैं नीज़ अह़ादीस व अक़्वाल की कमो बेश 1200 तख़्रीज भी की गई हैं।

(7)....मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर अह़ादीस वग़ैरा में मख़्सूस अ़रबी जुम्ले मअ़ मफ़्हूम ज़िक्र कर दिये हैं।

(8)....इस किताब को मुरत्तब करने के लिये अ़रबी, उर्दू और फ़ारसी की कमो बेश 500 कुतुब से इस्तिफ़ादा किया गया है अलबत्ता बत़ौरे माख़ज़ अक्सर अ़रबी कुतुब को ही मे'यार बनाया गया है जिन की फ़ेहरिस्त किताब के आख़िर में मौजूद है।

(9)....ह़याते मुबारका के मुख़्तलिफ़ पहलूओं में ह़त्तल मक़्दूर अह़ादीस को तरजीह़ दी गई है ब सूरते दीगर तफ़्सीर, तारीख़, सीरत वग़ैरा कुतुब को पेशे नज़र रखा गया है।

(10)....तरग़ीब व तह़रीस के लिये कई मक़ामात पर अह़ादीस, वाक़िआ़त और अक़्वाल से ह़ासिल शुदा दर्स को मदनी फूलों की सूरत में बयान किया गया है। नीज़ बा'ज़ मक़ामात पर अहम उमूर की वज़ाह़त के लिये मुख़्तलिफ़ नक़्शे भी दिये गए हैं।

(11)....इस किताब के उर्दू एडिशन को दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मदनी उ़लमाए किराम دَامَتْ فُيُوْضُهُم ने अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है।

इस किताब में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़त़ा, औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام की इनायत व शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की शफ़्क़तों का नतीजा हैं और जो ख़ामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़हमी को दख़्ल है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि वोह **दा'वते इस्लामी** की तमाम मजालिस ब शुमूल '**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**' को मज़ीद बरकतें अ़त़ा फ़रमाए, और ह़क़ीक़ी मा'नों में सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم की पैरवी करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, नीज़ इस किताब को ख़ुद भी पढ़ने और दूसरे को इस की तरग़ीब दिलाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

www.dawateislami.net

पहला बाब

तआरुफ़े सिद्दीक़े अकबर

नाम व नसब, अल्क़ाबात, हुल्यए मुबारका, क़बूले इस्लाम, अवलाद, रिश्तेदार वग़ैरा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं बारगाहे रिसालत में मौजूद था कि एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के सलाम का जवाब इरशाद फ़रमाया : उसे देख कर आप का रुख़े अन्वर निखर गया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने पहलू में बिठा लिया। जब उस शख़्स की ह़ाजत पूरी हो गई तो वोह उठ कर चला गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! येह वोह शख़्स है जिस की एक नेकी रोज़ाना आस्मान की त़रफ़ बुलन्द की जाती है जो तमाम ज़मीन वालों की नेकी की मिस्ल है।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस की क्या वजह है ?" फ़रमाया : "येह शख़्स रोज़ाना मुझ पर एक ऐसा दुरूद पढ़ता है जो तमाम मख़्लूक़ के बराबर हो जाता है।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह कौन सा दुरूद है ?" फ़रमाया : वोह येह कहता है :

"اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ عَدَدَ مَنْ صَلّٰى عَلَيْهِ مِنْ خَلْقِكَ ، وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ كَمَا يَنْبَغِيْ لَنَا أَنْ نُّصَلِّيَ عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ كَمَا أَمَرْتَنَا أَنْ نُّصَلِّيَ عَلَيْهِ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर उस मख़्लूक़ की ता'दाद के बराबर दुरूद भेज जो उन पर दुरूद भेजती है। इन पर ऐसा दुरूद भेज जैसा हमें भेजना चाहिये। मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर ऐसा दुरूद भेज जैसा तू ने हमें दुरूद भेजने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।" (الدر المنثور، پ ۲۱، الاحزاب: ۵۶، ج ۶، ص ۶۴۸)

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना गुनाहों को इस से ज़ियादा मिटा देता है जितना पानी आग को मिटाता है और दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सलाम भेजना गुलामों को आज़ाद करने

www.dawateislami.net

से ज़ियादा अफ़्ज़ल है और हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत करना ग़ुलामों को आज़ाद करने से ज़ियादा अफ़्ज़ल है।" या येह फ़रमाया कि "राहे ख़ुदा में जिहाद करने से ज़ियादा अफ़्ज़ल है।"

(کنزالعمال، کتاب الاذکار، باب فی الصلوۃ علیه صلی اللّٰہ علیه وسلم، الحدیث: ۳۹۷۹، ج ۱، الجزء: ۲، ص ۱۱۷)

दुखों ने जो तुम को घेरा है तो दुरूद पढ़ो
जो ह़ाज़िरी की तमन्ना है तो दुरूद पढ़ो
हर दर्द की दवा है صَلِّ عَلٰی مُحَمَّد
ता'वीज़े हर बला है صَلِّ عَلٰی مُحَمَّد

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ुरैश का नेक सीरत जवान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बिअ्सते नबवी से क़ब्ल अहले मक्का अगर्चे बुत परस्ती, कुफ़्रो शिर्क, ज़ुल्मो सितम, ज़िनाकारी व शराब नोशी, वह़शत व बरबरिय्यत और इन जैसे कई दीगर मुआ़मलाते फ़ासिदा में घिरे हुवे थे, मगर उस वक़्त भी चन्द एक ऐसे लोग थे जो इन तमाम मुआ़मलात को न सिर्फ़ ग़लत़ समझते बल्कि इन के ख़िलाफ़ ह़क़ की तलाश में सरगर्दां भी रहते, इन ही लोगों में एक ऐसा जवान भी था जिस का शुमार क़ुरैश के शुरफ़ा में होता था, और उस की नेक नामी की वजह से छोटे बड़े सब ही उस की इ़ज़्ज़त किया करते थे, एक दिन उस के साथ अ़जीब वाक़िआ़ पेश आया और जिस ह़क़ की तलाश में वोह सरगर्दां था वोह ह़क़ उसे मिल गया और उस की ज़िन्दगी में इन्क़िलाब बरपा हो गया। चुनान्चे, उस के साथ पेश आने वाले वाक़िए़ को उसी की ज़बानी पढ़िये :

मैं किसी अहम काम से यमन गया, वहां एक बुढ्ढे आ़लिम से मुलाक़ात हो गई उस ने मुझे देख कर कहा : "मेरा गुमान है कि तुम ह़रम (मक्कए मुकर्रमा) के रहने वाले हो ?" मैं ने कहा : "जी हां ! मैं अहले ह़रम से ही हूं।" उस ने कहा : "तुम क़ुरैश से हो ?" मैं ने कहा : "जी हां ! मैं क़ुरैश से हूं।" उस ने फिर कहा : "तुम तैमी भी हो ?" मैं ने

www.dawateislami.net

कहा : "जी हां !" मैं तैम बिन मुर्रह की अवलाद से हूं। मगर क्या बात है ! आप येह सब क्यूं पूछ रहे हैं ?" उस ने कहा : "मुझे तुम्हारी एक ख़ास अ़लामत का इ़ल्म है।" मैं ने कहा : "वोह क्या ?" उस ने कहा : "तुम अपना पेट दिखाओ।" मैं ने कहा : "नहीं ! तुम मुझे पहले सारी बात बताओ, फिर मैं दिखाऊंगा।" उस ने कहा : "मैं अपने सहीह़ और सादिक़ इ़ल्म के ज़रीए़ जानता हूं कि ह़रम में एक नबी मबऊ़स होगा और दो शख़्स उस नबी की मदद करेंगे। उन में से एक शख़्स मुहिम्मात को सर करने और मुश्किलात को ह़ल करने वाला होगा और दूसरा शख़्स सफ़ेद रंग का नह़ीफ़ व कमज़ोर होगा और उस के पेट पर तिल होगा, उस की उल्टी रान पर एक अ़लामत होगी।" मैं ने पेट से कपड़ा हटाया तो उस ने मेरी नाफ़ के ऊपर एक सियाह रंग का तिल देखा। उस ने कहा : "रब्बे का'बा की क़सम ! तुम वोही हो, मैं तुम्हारे पास ख़ुद आने वाला था।" मैं ने कहा : "किस लिये ?" उस ने कहा : "येह बताने के लिये कि तुम राहे हिदायत से न हटना और अल्लाह तआ़ला ने तुम को जो ने'मत अ़ता की है उस के मुआ़मले में डरते रहना।" जब मैं उस से रुख़्सत होने लगा तो उस ने कहा : "मुझ से कुछ शे'र सुनते जाओ।" उस के अश्आ़र सुन कर जब मैं वापस मक्कए मुकर्रमा पहुंचा तो मेरे वाक़िफ़े कार चन्द सरदाराने क़ुरैश उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़, शैबा, रबीआ़, अबू जह्ल, अबुल बख़्तरी वग़ैरा मिले, उन्हों ने कहा : "तुम यमन गए हुवे थे, यहां एक अ़ज़ीम वाक़िआ़ हो गया है ! अबू त़ालिब के भतीजे ने येह दा'वा किया है कि वोह अल्लाह का नबी है ! अगर तुम न होते तो हम इस मुआ़मले में इन्तिज़ार न करते और ख़ुद ही कोई न कोई फ़ैसला कर लेते लेकिन अब तुम आ गए हो तो इस का फ़ैसला करना तुम पर मौक़ूफ़ है !" मैं ने उन की बात सुन कर उन्हें अह़सन त़रीक़े से वापस किया और फिर (ह़ज़रत) मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो मा'लूम हुवा कि वोह (ह़ज़रत) ख़दीजा के घर हैं, मैं ने दरवाज़ा खट-खटाया तो वोह बाहर आए, मैं ने कहा : "ऐ दोस्त ! आप ने अपने आबाओ अजदाद का दीन क्यूं तर्क कर दिया ?" उन्हों ने कहा : "मैं तुम्हारी और तमाम लोगों की त़रफ़ अल्लाह का रसूल

www.dawateislami.net

हूं, तुम भी **अल्लाह** पर ईमान ले आओ।" मैं ने कहा : "आप की ज़ात अगर्चे ऐसी है कि आप ने कभी झूट नहीं बोला और निहायत ही अमानत दार हैं, लेकिन ज़ाहिर है येह बहुत बड़ा दा'वा है और यक़ीनन ग़ैर मा'मूली दा'वे के लिये ग़ैर मा'मूली सुबूत की हाजत होती है, अगर्चे मुझे किसी सुबूत की हाजत नहीं लेकिन आप सिर्फ़ मेरे इत्मीनाने क़ल्बी के लिये मेरी ज़ात से मुतअ़ल्लिक़ कोई ग़ैर मा'मूली बात बताइयें?" उन्हों ने कहा : "अभी जब तुम यमन गए थे वहां तुम एक बुढ्ढे शख़्स से मिले थे।" मैं ने कहा : "मैं तो वहां पर कई बुढ्ढो से मिला हूं।" उन्हों ने कहा : "नहीं ! मैं उस बुढ्ढे की बात कर रहा हूं जिस ने तुम्हें कुछ अश्आ़र भी सुनाए थे।" मैं ने कहा : "आप को इस बात की ख़बर किस ने दी ?" उन्हों ने कहा : "मुझे उस मुअ़ज़्ज़म फ़िरिश्ते ने ख़बर दी है जो मुझ से पहले आने वाले अम्बिया के पास भी आया करता था।" बस येह सुनते ही मैं हैरान व शशदर रह गया कि वाक़ेई इस बात का तो मेरे इलावा किसी को भी इल्म नहीं था, यक़ीनन येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल हैं। मैं ने फ़ौरन कहा : "मैं गवाही देता हूं कि बिला शुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और बेशक आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे रसूल हैं।" फिर मैं थोड़ी देर वहां बैठ कर वापस आ गया और मेरे इस्लाम लाने पर पूरी वादी में ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बढ़ कर कोई ख़ुश नहीं था।

(اسد الغابۃ، باب العین، عبد اللہ بن عثمان ابوبکر الصدیق، اسلامہ، ج۳، ص۳۱۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाला क़ुरैश का येह नेक सीरत जवान कोई और नहीं बल्कि ख़लीफ़ए अव्वल, सिद्दीक़े अक्बर, यारे ग़ार व यारे मज़ार अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे।

सिद्दीक़े अक्बर का तआरुफ़

शख़्सिय्यत की पहचान का अस्ल ज़रीआ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उमूमन किसी भी शख़्स की मिज़ाजी कैफ़िय्यात और उस की ज़ात में पाई जाने वाली खुसूसिय्यात का अन्दाज़ा उस के नसब का तज़्किरा करने से होता है, यूं समझिये कि किसी शख़्सिय्यत के ज़ाती और अन्दरूनी कवाइफ़ जानने के

www.dawateislami.net

लिये उस का नसब एक आईने की हैसिय्यत रखता है जहां उस के नसब का ज़िक्र किया वहीं उस की शख़्सिय्यत अपने तमाम अत्वार के साथ निखर कर सामने आ गई। बर सग़ीर पाक व हिन्द के इ़लावा आज तक अ़रबों में इस बात का रवाज है कि किसी शख़्स की आ़दात से आगाह होने के लिये उस के क़बीले का तज़्किरा ज़रूर करते हैं ह़त्ता कि अगर किताब में किसी शख़्सिय्यत का तज़्किरा बिग़ैर उस के नसब के किया जाए तो उस किताब की अहम्मिय्यत अहले अ़रब के नज़्दीक बहुत कम हो जाती है। लिहाज़ा अव्वलन नसब का ज़िक्र करना ना गुज़ीर है।

आप का सिलसिलए नसब

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का नाम **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़स्मान बिन आ़मिर बिन अ़म्र बिन का'ब बिन सा'द बिन तैम बिन मुर्रह बिन का'ब है।" मुर्रह बिन का'ब तक आप के सिलसिलए नसब में कुल छे वासित़े हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब में भी मुर्रह बिन का'ब तक छे ही वासित़े हैं और मुर्रह बिन का'ब पर जा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का सिलसिला सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब से जा मिलता है। आप के वालिद उ़स्मान की कुन्यत अबू क़ह़ाफ़ा है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदए माजिदा का नाम उम्मुल ख़ैर सलमा बिन्ते सख़र बिन आ़मिर बिन अ़म्र बिन का'ब बिन सा'द बिन तैम बिन मुर्रह बिन का'ब है। उम्मुल ख़ैर सलमा की वालिदा (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नानी) का नाम दिलाफ़ है और येही उमैमा बिन्ते उ़बैद बिन नाक़िद ख़ुज़ाई हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दादी (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़ह़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा) का नाम अमीना बिन्ते अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन ह़रसान बिन औ़फ़ बिन उ़बैद बिन उ़वैज बिन अ़दी बिन का'ब है।

(المعجم الكبير، نسبة ابی بكر الصديق واسمه، الحديث: ١، ج ١، ص ٥١، الاصابة فی تمييز الصحابة، ج ٤، ص ١٤٤)

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सातवीं पुश्त में मिलने का शजरए नसब मुलाह़ज़ा कीजिये :

www.dawateislami.net

नक़्शए शजरए नसब

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	अबू क़ुहाफ़ा उ़स्मान (वालिद)	उम्मुल ख़ैर सलमा (वालिदा)
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	आ़मिर	सख़र
हज़रते सय्यिदुना हाशिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	अ़म्र	आ़मिर
हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दे मनाफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	का'ब	
हज़रते सय्यिदुना क़ुसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	सा'द	
हज़रते सय्यिदुना किलाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ	तैम	
हज़रते सय्यिदुना मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ		
हज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ		
हज़रते सय्यिदुना लुअय्य رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ		
हज़रते सय्यिदुना ग़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ		
हज़रते सय्यिदुना फ़हिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ		
हज़रते सय्यिदुना मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ		
हज़रते सय्यिदुना मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की 58 वीं पुश्त में थे।		

आप के क़बीले के अवसाफ़

मक्कए मुकर्रमा में जितने क़बीले आबाद थे इन में से हर क़बीला उस वक़्त के मनासिब में से किसी न किसी मन्सब से ज़रूर सरफ़राज़ था मसलन बनू अ़ब्दे मनाफ़ के पास हुज्जाजे किराम के लिये पानी और दीगर ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी मुहय्या करने की ज़िम्मेदारी थी। बनू अ़ब्दुद्दार के पास जंगी मुआ़मलात और **का'बतुल्लाह** शरीफ़ के हिफ़ाज़ती उमूर की ज़िम्मेदारी थी। बनू मख़ज़ूम के पास लश्करों के सिपह सालार होने की ज़िम्मेदारी थी। इसी त़रह़ बनू तमीम बिन मुर्रह जो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़बीला था इन का काम ख़ून बहा और दीतें जम्अ़ करना था। बनू तमीम की ख़ुसूसिय्यात अ़रब के दूसरे क़बाइल से मुख़्तलिफ़ न थीं इन में भी वोही अवसाफ़ पाए

www.dawateislami.net

जाते थे जो दूसरे अ़रब क़बीलों में पाए जाते थे, जुरअत, शुजाअ़त, सख़ावत, मुरुव्वत व हमदर्दी, बहादुरी व जफ़ाकशी, हमसाया क़बाइल की ह़िमायत व ह़िफ़ाज़त, मुआ़हदे की पाबन्दी वग़ैरा तमाम अवसाफ़ से बनू तमीम मुत्तसिफ़ थे ।

सिद्दीक़े अक्बर का इस्मे गिरामी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नाम के बारे में तीन क़ौल हैं :

पहला क़ौल : अ़ब्दुल्लाह बिन उ़स्मान

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़स्मान है । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़स्मान है ।

(صحیح ابن حبان، کتاب اخبارہ صلی اللہ علیہ وسلم عن مناقب الصحابۃ، ذکر السبب الذی من اجلہ۔۔۔الخ، الحدیث: ۶۸۲۵، ج۹، ص۶)

दूसरा क़ौल : अ़ब्दुल का'बा

(1) जमहूर अह्ले नसब के नज़्दीक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का क़दीम नाम **अ़ब्दुल का'बा** था मुशर्रफ़ ब इस्लाम होने के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तब्दील फ़रमा कर **अ़ब्दुल्लाह** रख दिया ।

(الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، باب حرف العین، عبد اللہ بن ابی قحافۃ ابوبکر الصدیق، ج۳، ص۹۱، الریاض النضرۃ، ج۱، ص۷۷)

(2) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर वालों ने **अ़ब्दुल का'बा** नाम तब्दील कर के **अ़ब्दुल्लाह** रख दिया । और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा जब दुआ़ करतीं तो यूं कहतीं : یَارَبَّ عَبْدِ الْکَعْبَۃ ऐ **अ़ब्दुल का'बा** के रब ।"

(اسد الغابۃ، باب العین، عبد اللہ بن عثمان ابوبکر الصدیق، ج۳، ص۳۱۵، عمدۃ القاری، کتاب فضائل الصحابۃ، باب مناقب المھاجرین وفضلھم، ج۱۱، ص۳۸۴)

तीसरा क़ौल : अ़तीक़

अक्सर मुह़द्दिसीन के नज़्दीक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम अ़तीक़ है । इमाम इब्ने इस्ह़ाक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अ़तीक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

का नाम है और येह नाम इन के वालिद ने रखा। जब कि हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन त़लहा رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मरवी है कि "येह नाम आप की वालिदा ने रखा।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص۷۷)

इन तमाम अक़्वाल में मुत़ाबक़त

इन तीनों अक़्वाल में कोई तज़ाद नहीं, मुत़ाबक़त की सूरत येह है कि जब आप पैदा हुवे तो आप के वालिदैन ने आप का नाम **अ़ब्दुल का'बा** रखा, बा'द में इन्हों ने या सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तब्दील कर के **अ़ब्दुल्लाह** रख दिया और **अ़तीक़** आप का लक़ब था, लेकिन इसे नाम की हैसिय्यत ह़ासिल हो गई।

आप की कुन्यत

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की कुन्यत अबू बक्र है, वाज़ेह़ रहे कि आप अपने नाम से नहीं बल्कि कुन्यत से मश्हूर हैं, नीज़ आप की इस कुन्यत की इतनी शोहरत है कि अ़वामुन्नास इसे आप का अस्ल नाम समझते हैं ह़ालांकि आप का नाम तो **अ़ब्दुल्लाह** है।

अबू बक्र कुन्यत की वुजूहात

(1) अ़रबी ज़बान में '**अल बक्र**' जवान ऊंट को कहते हैं, इस की जम्अ़ '**अबकुर**' और '**बिकार**' है, जिस के पास ऊंटों की कसरत होती या जिस का क़बीला बहुत बड़ा होता या जो ऊंटों की देख भाल और दीगर मुआ़मलात में बहुत माहिर होता अ़रब लोग उसे '**अबू बक्र**' कहते थे, चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ का क़बीला भी बहुत बड़ा था और बहुत मालदार भी थे नीज़ ऊंटों के तमाम मुआ़मलात में भी आप महारत रखते थे इस लिये आप भी 'अबू बक्र' के नाम से मश्हूर हो गए।

(2) अ़रबी ज़बान में '**अबू**' का मा'ना है '**वाला**' और '**बक्र**' के मा'ना '**अव्वलिय्यत**' के हैं, तो अबू बक्र के मा'ना हुवे 'अव्वलिय्यत वाला' चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ इस्लाम लाने, माल ख़र्च करने, जान लुटाने, हिजरत करने, हुज़ूर की वफ़ात के बा'द वफ़ात, क़ियामत के दिन क़ब्र खुलने वग़ैरा हर मुआ़मले में अव्वलिय्यत रखते हैं इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को अबू बक्र (या'नी अव्वलिय्यत वाला) कहा गया। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 347)

www.dawateislami.net

(3) كُنِيَ بِاَبِي بَكْرٍ لِاِبْتِكَارِهِ الْخِصَالِ الْحَمِيْدَةِ या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत अबू बक्र इस लिये है कि आप शुरूअ़ ही से ख़साइले ह़मीदा रखते थे।"

(سیرت حلبیة، ذکر اول الناس ایمانا به، ج ۱، ص ۳۹۰)

सिद्दीक़े अक्बर के अलक़ाबात

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दो लक़ब ज़ियादा मश्हूर हैं **अ़तीक़** और **सिद्दीक़**। नीज़ अ़तीक़ वोह पहला लक़ब है कि इस्लाम में सब से पहले इस लक़ब से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ही मुलक़्क़ब किया गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पहले किसी को इस लक़ब से मुलक़्क़ब नहीं किया गया। (الریاض النضرة، ج ۱، ص ۷۷)

"अ़तीक़" लक़ब की वुजूहात

जहन्नम से आज़ादी के सबब अ़तीक़

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम '**अ़ब्दुल्लाह**' था, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें फ़रमाया : "اَنْتَ عَتِيْقٌ مِّنَ النَّارِ तुम जहन्नम से आज़ाद हो।" तब से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम अ़तीक़ हो गया। (صحیح ابن حبان، کتاب اخبارہ عن مناقب الصحابة، ج ۹، ص ۶)

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है फ़रमाती हैं : मैं एक दिन अपने घर में थी, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان सेह़्न में तशरीफ़ फ़रमा थे, मेरे और इन के माबैन चारपाई रखी थी, अचानक मेरे वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले आए तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की त़रफ़ देख कर अपने अस्ह़ाब से इरशाद फ़रमाया : "مَنْ أَرَادَ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى عَتِيقٍ مِنَ النَّارِ فَلْيَنْظُرْ إِلَى أَبِي بَكْرٍ या'नी जिसे दोज़ख़ से आज़ाद शख़्स को देखना हो वोह अबू बक्र को देख ले।" इस के बा'द से आप अ़तीक़ मश्हूर हो गए।

(المعجم الاوسط، من اسمه الهيثم، الحديث: ۹۳۸۴، ج ۶، ص ۴۵۶، معرفة الصحابة لابی نعيم، معرفة نسبة الصديق ---الخ، الرقم: ۵۹، ج ۱، ص ۳۸)

www.dawateislami.net

हुस्नो जमाल के सबब अ़तीक़

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना लैस बिन सा'द, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल, अ़ल्लामा इब्ने मुईन और दीगर कई उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि "إِنَّمَا سُمِّيَ عَتِيْقاً لِحُسْنِ وَجْهِه" या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को चेहरे के हुस्नो जमाल के सबब अ़तीक़ कहा जाता है।" इमाम त़बरानी رَحْمَةُ اللّٰه ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को चेहरे के हुस्नो जमाल के सबब अ़तीक़ कहा जाता था।

(المعجم الکبیر، نسبۃ ابی بکر الصدیق واسمہ، الحدیث: ٣، ج ١، ص ٥٢، اسد الغابۃ، باب العین، عبد اللہ بن عثمان ابوبکر الصدیق، ج ٣، ص ٣١٦، تاریخ الخلفاء، ص ٢٢)

ख़ैर में मुक़द्दम होने के सबब अ़तीक़

(3) अ़ल्लामा अबू नुऐ़म फ़ज़्ल बिन दुकैन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : "سُمِّيَ بِذٰلِكَ لِاَنَّه قَدِيْمٌ فِي الْخَيْر" या'नी ख़ैरो ख़ूबी में सब से पहले और दीगर अफ़राद से मुक़द्दम होने की वजह से आप को अ़तीक़ कहा जाता है। (الریاض النضرۃ، ج ١، ص ٧٨، تاریخ الخلفاء، ص ٢٢)

नसब की पाकीज़गी के सबब अ़तीक़

(4) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन बकार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار और इन के साथ एक पूरी जमाअ़त ने बयान किया है कि : "إِنَّمَا سُمِّيَ عَتِيْقاً لِاَنَّه لَمْ يَكُنْ فِيْ نَسَبِه شَيْءٌ يُعَابُ بِه" या'नी ह़सबो नसब की पाकीज़गी की वजह से आप को अ़तीक़ कहा जाता है क्यूंकि आप के नसब में कोई ऐसी कमज़ोरी नहीं थी जिस की वजह से आप की ऐबजूई की जाती।"

(تاریخ الخلفاء، ص ٢٢، اسد الغابۃ، باب العین، عبد اللہ بن عثمان ابوبکر الصدیق، ج ٣، ص ٣١٦)

www.dawateislami.net

वालिद के नाम रखने के सबब अ़तीक़

(5) पहले आप का नाम अ़तीक़ रखा गया और बा'द में आप को **अ़ब्दुल्लाह** कहा जाने लगा। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि इन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से पूछा : "आप के वालिद अबू बक्र का नाम क्या है?" उन्हों ने कहा : "**अ़ब्दुल्लाह**।" अ़र्ज़ किया : "लोग तो आप को अ़तीक़ कहते हैं?" फ़रमाया : "मेरे दादा अबू क़ुह़ाफ़ा के तीन बच्चे थे। आप ने उन के नाम अ़तीक़, मोअ़य्यतिक़ और मोअ़त्तिक़ रखे।"

(المعجم الکبیر، نسبۃ ابی بکر الصدیق واسمہ، الحدیث:٦، ج ١، ص ٥٣)

मां की दुआ़ के सबब अ़तीक़

(6) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा गया कि : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अ़तीक़ क्यूं कहा जाता है?" तो आप ने फ़रमाया : "आप की वालिदा का कोई बच्चा ज़िन्दा नहीं रहता था, जब आप की वालिदा ने आप को जनम दिया तो आप को ले कर **बैतुल्लाह** शरीफ़ गईं और गिड़ गिड़ा कर यूं दुआ़ मांगी : ऐ मेरे परवर दगार! अगर मेरा येह फ़रज़न्द मौत से आज़ाद है तो येह मुझे अ़त़ा फ़रमा दे।" तो इस के बा'द आप को अ़तीक़ कहा जाने लगा।

(تاریخ الخلفاء، ص ٢٢، معرفۃ الصحابہ لابی نعیم، معرفۃ نسبۃ الصدیق العتیق، ج ١، ص ٤٩)

ग़ल्बए नाम के सबब अ़तीक़

(7) ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि : "وَإِنَّ اِسْمَهُ الَّذِيْ سَمَّاهُ بِهٖ أَهْلُهُ حَيْثُ وَلَدَ عَبْدَ اللّٰهِ بْنَ عُثْمَانَ، فَغَلَبَ عَلَيْهِ اِسْمُ الْعَتِيْقِ" या'नी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का जो नाम आप के घर वालों ने रखा वोह **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़स्मान है लेकिन इस पर अ़तीक़ नाम ग़ालिब आ गया।" (معرفۃ الصحابۃ لابی نعیم، معرفۃ نسبۃ الصدیق، ج ١، ص ٤٨)

www.dawateislami.net

आस्मानो ज़मीन में अ़तीक़

(8) सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "أَبُوْبَكْر عَتِيْقٌ فِى السَّمَاءِ وَعَتِيْقٌ فِى الْأَرْضِ या'नी अबू बक्र आस्मान में भी अ़तीक़ है और ज़मीन में भी अ़तीक़ हैं।"

(مسند الفردوس، الحديث:١٧٨٨، ج١، ص٢٥٠)

ग़ुलाम आज़ाद करने के सबब अ़तीक़

(9) आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه निहायत ही शफ़ीक़ और मेहरबान थे, ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल ह़बशी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को उन के आक़ा के ज़ुल्मो सितम और दीगर कई मुसलमानों को कुफ़्फ़ार के ज़ुल्मो सितम से आज़ाद करवाया तो अ़तीक़ के नाम से मश्हूर हो गए।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 346)

इन तमाम अक़्वाल में मुत़ाबक़त

आप के लक़ब अ़तीक़ के बारे में जितने भी अक़्वाल ज़िक्र किये गए इन तमाम में कोई तज़ाद नहीं कि हो सकता है आप के वालिदैन ने आप को लक़बे अ़तीक़ से किसी एक मा'ना में पुकारा हो, और दीगर लोगों ने इस मा'ना में भी और किसी दूसरे मा'ना में पुकारा हो। फिर क़ुरैश में वोही मुस्त'मल हो गया और फिर येह इतना मश्हूर हो गया कि इस्लाम से पहले भी और बा'द में भी बाक़ी रहा। लिहाज़ा मुख़्तलिफ़ मआ़नी के ए'तिबार से तमाम का आप को अ़तीक़ पुकारना दुरुस्त हुवा। (الرياض النضرة، ج١، ص٧٨)

यक़ीनन मम्बए ख़ौफ़े ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं
ह़क़ीक़ी आ़शिक़े ख़ैरुल वरा सिद्दीक़े अक्बर हैं
निहायत मुत्तक़ी व पारसा सिद्दीक़े अक्बर हैं
तक़ी हैं बल्कि शाहे अतक़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

“सिद्दीक़” लक़ब की वुजूहात

रब तआ़ला ने आप का नाम सिद्दीक़ रखा

(1) ह़ज़रते सय्यिदतुना नबआ़ ह़बशिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना : “**یَا اَبَا بَکْرٍ اِنَّ اللّٰہَ قَدْ سَمَّاکَ الصِّدِّیْق** ” या'नी ऐ अबू बक्र ! बेशक **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने तुम्हारा नाम ‘**सिद्दीक़**’ रखा ।”

(الاصابة فی تمييز الصحابة، حرف النون، ج۸، ص ۳۳۲)

नबिय्ये करीम के नज़दीक सिद्दीक़

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : “मैं नव अफ़राद की गवाही देता हूं कि वोह सब जन्नती हैं और अगर मैं दसवें शख़्स की भी गवाही दूं तो मैं गुनहगार नहीं होऊंगा ।” पूछा गया : “वोह कैसे ?” फ़रमाया : हम शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जबले ह़िरा पर गए तो अचानक वोह लरज़ने लगा । मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “**اُثْبُتْ حِرَاءُ فَاِنَّمَا عَلَیْکَ نَبِیٌّ وَصِدِّیْقٌ وَشَھِیْدَانِ**” या'नी ऐ ह़िरा ! ठहर जा कि इस वक़्त तुझ पर एक नबी, एक सिद्दीक़ और दो शहीद खड़े हैं ।” ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया कि उस वक़्त पहाड़ पर कौन थे ? फ़रमाया : “**रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, सय्यिदुना त़लह़ा, सय्यिदुना ज़ुबैर, सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास, सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ।” (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْن) फिर ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ामोश हो गए । पूछा गया : “येह तो नव अफ़राद हैं, दसवें कौन हैं ?” फ़रमाया : “मैं ।”

(سنن الترمذی، کتاب المناقب عن رسول اللہ، مناقب سعید بن زید بن عمرو بن نفیل، الحدیث: ۳۷۷۸، ج۵، ص ۴۲۰)

www.dawateislami.net

पैग़ाम, नबी येह देते हैं सिद्दीक़े अक्बर मेरे हैं
जो हक़ पर हैं वोह कहते हैं सिद्दीक़े अक्बर मेरे हैं

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की

सय्यिदुना जिब्रीले अमीन के नज़दीक सिद्दीक़

(3) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मे'राज की रात सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام से इरशाद फ़रमाया : "**يَا جِبْرِيْلُ! إِنَّ قَوْمِيْ يَتَّهِمُوْنِيْ وَلَا يُصَدِّقُوْنِيْ**" या'नी ऐ जिब्रील ! मेरी क़ौम मुझ पर तोहमत लगाएगी और वोह मेरी तस्दीक़ नहीं करेगी।" हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "**إِنِ اتَّهَمَكَ قَوْمُكَ فَإِنَّ أَبَابَكْرٍ يُصَدِّقُكَ وَهُوَ الصِّدِّيْقُ**" या'नी अगर आप की क़ौम आप पर तोहमत लगाएगी तो क्या हुवा अबू बक्र तो आप की तस्दीक़ करेंगे क्यूंकि वोह **सिद्दीक़** हैं।" (المعجم الاوسط للطبرانی، الحدیث: ۷۱۷۳، ۱۴۸۰، ج۵، ص ۲۲۶ ملخصا)

ज़बाने जिब्रील से सिद्दीक़

हज़रते सय्यिदुना नज़्ज़ाल बिन सबरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि हम लोग हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के साथ खड़े हुवे थे और वोह ख़ुश त़बई फ़रमा रहे थे, हम ने उन से अ़र्ज़ किया : "अपने दोस्तों के बारे में कुछ इरशाद फ़रमाइये ?" फ़रमाया : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तमाम अस्ह़ाब मेरे दोस्त हैं।" हम ने अ़र्ज़ की : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में बताइये ?" फ़रमाया : **ذَاكَ امْرُءٌ سَمَّاهُ اللّٰهُ صِدِّيْقاً عَلٰى لِسَانِ جِبْرِيْلَ وَمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِمَا**" या'नी इन के तो क्या कहने ! येह तो वोह शख़्सिय्यत हैं जिन का नाम **अल्लाह** तआ़ला ने जिब्रीले अमीन और प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बान से **सिद्दीक़** रखा है।"

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب الاحادیث المشعرۃ بتسمیۃ ابی بکر صدیقا، الحدیث: ۴۴۶۲، ج۴، ص ۴)

www.dawateislami.net

ज़मानए जाहिलिय्यत से ही सिद्दीक़

(4) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़मानए जाहिलिय्यत में लक़बे सिद्दीक़ से पुकारा जाता था क्यूंकि आप हर वक़्त सच बोलते थे सच के सिवा आप के मुंह से कुछ न निकलता था। ज़ुहूरे इस्लाम से क़ब्ल आप का शुमार क़ुरैश के बड़े सरदारों में होता था, और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों की दीतें भी अदा करते थे, या'नी अगर कोई ग़लती से किसी को क़त्ल कर देता तो उस की त़रफ़ से ख़ून-बहा ख़ुद आप अदा कर देते थे, अगर वोह ग़रीब होता तब भी क़ुरैश आप की बात को अहम्मिय्यत देते और दीत क़बूल कर लेते और क़ातिल को छोड़ देते और अगर आप के इलावा कोई दूसरा दीत की ज़िम्मेदारी लेता तो हरगिज़ क़बूल न करते और उस की कोई अहम्मिय्यत न होती, लोग आप की बात की तस्दीक़ करते थे, इस लिये आप ज़मानए जाहिलिय्यत में ही **सिद्दीक़** के लक़ब से मश्हूर थे।

तस्दीक़े मे'राज के सबब सिद्दीक़

(5) "उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, फ़रमाती हैं : जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा की सैर कराई गई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दूसरी सुब्ह़ लोगों के सामने इस मुकम्मल वाक़िए को बयान फ़रमाया, मुशरिकीन वग़ैरा दौड़ते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचे और कहने लगे : "هَلْ لَکَ إِلٰی صَاحِبِکَ یَزْعُمُ أَسْرٰی بِہِ اللَّیْلَۃَ إِلٰی بَیْتِ الْمَقْدَسِ؟ या'नी क्या आप इस बात की तस्दीक़ कर सकते हैं जो आप के दोस्त ने कही है कि उन्हों ने रातों रात मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्सा की सैर की?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "أَوَ قَالَ ذٰلِکَ؟ क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वाक़ेई येह बयान फ़रमाया है?" उन्हों ने कहा : "जी हां।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "لَئِنْ کَانَ قَالَ ذٰلِکَ لَقَدْ صَدَقَ या'नी अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इरशाद फ़रमाया है तो यक़ीनन सच फ़रमाया है। और मैं उन की इस बात की बिला झिजक तस्दीक़ करता हूं।" उन्हों ने कहा : "أَوَ تُصَدِّقُہٗ أَنَّہٗ ذَھَبَ اللَّیْلَۃَ إِلٰی بَیْتِ الْمَقْدَسِ وَ جَاءَ قَبْلَ أَنْ یُّصْبِحَ؟ या'नी क्या आप इस हैरान कुन बात

www.dawateislami.net

की तस्दीक़ करते हैं कि वोह आज रात बैतुल मक़्दस गए और सुब्ह होने से पहले वापस भी आ गए ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया :

نَعَمْ! إِنِّي لَأُصَدِّقُهُ فِيمَا هُوَ أَبْعَدُ مِنْ ذٰلِكَ أُصَدِّقُهُ بِخَبَرِ السَّمَاءِ فِي غَدْوَةٍ أَوْ رَوْحَة

"या'नी जी हां ! मैं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आस्मानी ख़बरों की भी सुब्हो शाम तस्दीक़ करता हूं और यक़ीनन वोह तो इस बात से भी ज़ियादा हैरान कुन और तअ़ज्जुब वाली बात है ।" पस इस वाक़िए के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **सिद्दीक़** मशहूर हो गए ।

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر الاختلاف۔۔۔الخ، الحدیث: ۴۵۱۵، ج۴، ص۲۵)

सिद्दीक़ लक़ब आस्मान से उतारा गया

(6) हज़रते सय्यिदुना अबू यह्या ह़कीम बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि मैं ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **अल्लाह** की क़सम उठा कर कहते हुवे सुना कि "أُنْزِلَ اِسْمُ أَبِي بَكْرٍ مِنَ السَّمَاءِ الصِّدِّيق या'नी सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लक़ब **सिद्दीक़** आस्मान से उतारा गया ।"

(المعجم الکبیر، نسبۃ ابی بکر الصدیق واسمہ، الحدیث: ۱۴، ج۱، ص۵۵)

हर आस्मान पर सिद्दीक़ लिखा था

(7) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

عُرِجَ بِيْ إِلَى السَّمَاءِ فَمَا مَرَرْتُ بِسَمَاءٍ إِلَّا وَجَدْتُ اِسْمِيْ مَكْتُوْبًا: مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَ أَبُوْ بَكْرٍ الصِّدِّيْقُ خَلْفِي

या'नी शबे मे'राज मैं ने हर आस्मान पर अपना नाम यूं लिखा हुवा देखा : "मुह़म्मद **अल्लाह** के रसूल हैं और अबू बक्र सिद्दीक़ मेरे ख़लीफ़ा हैं ।"

(کنز العمال، کتاب الفضائل، الفصل الثانی، فضل ابی بکر، الحدیث: ۳۲۵۷۷، ج۶، الجزء: ۱۱، ص۲۵۱)

जो आप को सिद्दीक़ न कहे ....?

हज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना इमाम बाक़र अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और उन से इस्तिफ़्सार किया : "مَا قَوْلُکَ فِيْ حُلْيَةِ السُّيُوْف؟" या'नी तलवार को आरास्ता करने के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं ?" फ़रमाया : "لَا بَأْسَ قَدْ حَلٰی أَبُوْ بَکْرِالصِّدِّيْقُ سَيْفَه" या'नी इस में कोई ह़रज नहीं क्यूंकि खुद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी अपनी तलवार को आरास्ता किया ।" मैं ने कहा : "आप ने उन्हें सिद्दीक़ कहा ?" येह सुनना था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलाल फ़रमाते हुवे उठ खड़े हुवे और क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के इरशाद फ़रमाया : "हां ! वोह सिद्दीक़ हैं, हां ! वोह सिद्दीक़ हैं, हां ! वोह सिद्दीक़ हैं । और जो उन्हें सिद्दीक़ न कहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के क़ौल की तस्दीक़ नहीं फ़रमाता न दुन्या में और न ही आख़िरत में ।"

(فضائل الصحابة، ومن فضائل عمر بن الخطاب من حديث أبي بكر بن مالك، الرقم: ٢٥٥، ج ١، ص ٩ ١ ٤)

अमीरुल मोअमिनीं हैं आप इमामुल मुस्लिमीं हैं आप
नबी ने जन्नती जिन को कहा सिद्दीक़े अक्बर हैं
सभी अस्ह़ाब से बढ़ कर मुक़र्रब ज़ात है उन की
रफ़ीक़े सरवरे अर्ज़ो समा सिद्दीक़े अक्बर हैं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सादिक़, सिद्दीक़, सिद्दीक़िय्यत और सिद्दीक़े अक्बर

सादिक़ किसे कहते हैं ?

सादिक़ का लुग़वी मा'ना है '**सच्चा**' । और सादिक़ उस शख़्स को कहते हैं जो बात जैसी हो वैसे ही ज़बान से बयान कर दे । (التعريفات، ص ٩٥)

सिद्दीक़े अक्बर सादिक़ व ह़कीम हैं

शैख़ अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़िय्युद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अगर हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस मौतिन में तशरीफ़ न रखते हों और ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हाज़िर हों तो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

के मक़ाम पर सिद्दीक़ क़ियाम करेंगे कि वहां सिद्दीक़ से आ'ला कोई नहीं जो उन्हें इस से रोके। वोह उस वक़्त के सादिक़ व ह़कीम हैं, और जो उन के सिवा हैं सब उन के ज़ेरे हुक्म।"

(الفتوحات المکیۃ، الباب الثالث والسبعون،ج۳،ص ۴۴،فتاوی رضویہ،ج۱۵،ص ۲۸۰)

सिद्दीक़ किसे कहते हैं ?

(1) **सिद्दीक़** उसे कहते हैं जो ज़बान से कही हुई बात को दिल और अपने अ़मल से मुअक्कद कर दे। (التعریفات،ص۹۵) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **सिद्दीक़** इसी लिये कहते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़क़त़ ज़बान के नहीं बल्कि क़ल्बो अ़मल के भी **सिद्दीक़** थे।

(2) सिद्दीक़ उसे भी कहते हैं जो तस्दीक़ करने में मुबालग़ा करे, जब उस के सामने कोई चीज़ बयान की जाए तो अव्वलन ही उस की तस्दीक़ कर दे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी ऐसे ही थे कि अव्वलन ही सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हर बात की तस्दीक़ कर दिया करते थे।

(3) ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : "सिद्दीक़ वोह कि जैसा वोह कह दे बात वैसी ही हो जाए। इसी लिये तो ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ जो दो क़ैदी थे उन में से शाही साक़ी या'नी बादशाह को शराब पिलाने वाले ने आप عَلَیْہِ السَّلَام को **सिद्दीक़** कहा क्यूंकि उस ने देखा कि जो आप ने कहा था वोही हुवा, अ़र्ज़ किया : **یُوْسُفُ اَیُّهَا الصِّدِّیْقُ**। ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना मालिक बिन सिनान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ जो कहा था वोह ही हुवा कि वोह शहीद होने के बा'द ज़िन्दा हो कर आए।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 162)

सिद्दीक़िय्यत किसे कहते हैं ?

आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत परवानए शम्ए़ रिसालत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

“सिद्दीक़िय्यत एक मर्तबए तल्वे नबुव्वत है कि इस के और नबुव्वत के बीच में कोई मर्तबा नहीं मगर एक मक़ामे अदक़ व अख़्फ़ी कि नसीबए ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर अकरम व अतक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ है तो अजनास व अन्वाअ़ व असनाफ़ फ़ज़ाइल व कमालात व बुलन्दिये दरजात में ख़ुसाइस व मलज़ूमाते नबुव्वत के सिवा सिद्दीक़ीन हर अ़तिय्या बहिय्या के लाइक़ वाहिल हैं अगर्चे बाहम इन में तफ़ावुत व तफ़ाज़ुल कसीर व वाफ़िर हो।”

(फ़तावा रज़विय्या, जि.15, स.678)

सिद्दीक़े अक्बर किसे कहते हैं ?

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हर मुआ़मले में सदाक़त का अ़मली मुज़ाहरा फ़रमाया ह़त्ता कि वाक़िअ़ए मे'राज और आस्मानी ख़बरों वग़ैरा जैसे मुआ़मलात कि जिन को उस वक़्त किसी की अ़क़्ल ने तस्लीम नहीं किया उन में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन तस्दीक़ फ़रमाई। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तमाम मुआ़मलात में जैसी तस्दीक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने की वैसी किसी ने न की इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ‘**सिद्दीक़े अक्बर**’ कहा जाता है।

चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 15, स. 680 पर इरशाद फ़रमाते हैं : “सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **सिद्दीक़े अक्बर** हैं और सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **सिद्दीक़े असग़र**, सिद्दीक़े अक्बर का मक़ाम आ'ला सिद्दीक़िय्यत से बुलन्दो बाला है।” नसीमुर्रियाज़ शर्हे शिफ़ा इमाम क़ाज़ी इयाज़ में है : “सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तख़्सीस इस लिये कि वोह **सिद्दीक़े अक्बर** हैं जो तमाम लोगों में आगे हैं क्यूंकि उन्हों ने जो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तस्दीक़ की वोह किसी को ह़ासिल नहीं और यूंही सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम **सिद्दीक़े असग़र** है जो हरगिज़ कुफ़्र से मुल्तबस न हुवे और न ही उन्हों ने **ग़ैरुल्लाह** को सजदा किया बा वुजूद येह कि वोह ना बालिग़ थे और उन के वालिद मिल्लते इस्लामिय्या पर न थे।” (نسیم الریاض فی شرح الشفا، القسم الاول، فی ثناء اللہ---الخ، الفصل الاول، ج ۱، ص ۲۳۴)

www.dawateislami.net

सभी उ़लमाए उम्मत के, इमाम व पेश्वा हैं आप
बिला शक पैश्वाए अस्फ़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं
ख़ुदाए पाक की रह़मत से इन्सानों में हर इक से
फ़ुज़ू तर बा'द अज़ कुल अम्बिया सिद्दीक़े अक्बर हैं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

लक़बे "ह़लीम" (बुर्दबार)

सिद्दीक़े अक्बर आस्मानों में ह़लीम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक दफ़्आ़ सय्यिदुना जिब्रीले अमीन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और एक कोने में बैठ गए, काफ़ी देर तक वहीं बैठे रहे अचानक वहां से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गुज़रे तो जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह अबू क़ह़ाफ़ा के बेटे हैं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ जिब्रील ! क्या आप लोग भी इन्हें पहचानते हो ?" अ़र्ज़ किया : "उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस ने आप को मबऊ़स फ़रमाया है ! अबू बक्र ज़मीन की निस्बत आस्मानों में ज़ियादा मश्हूर हैं और आस्मानों में इन का नाम '**ह़लीम**' है।"

(الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۸۲)

लक़ब 'अव्वाहुन' (कसीरुद्दुआ, आ़जिज़ी करने वाले)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही आ़जिज़ी करने वाले और कसीरुद्दुआ़ थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कई मख़्सूस दुआ़एं भी मन्क़ूल हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं कि "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इन्हीं सिफ़ात की बिना पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लक़ब '**अव्वाहुन**' कसीरुद्दुआ, आ़जिज़ी करने वाला पड़ गया।" (ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، ج ۳، ص ۸۵)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर की पैदाइश व जाए परवरिश

दुन्या में तशरीफ़ आवरी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ़मुल फ़ील के अढ़ाई साल बा'द और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत के दो साल और चन्द माह बा'द पैदा हुवे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ 6 माह शिकमे मादर में रहे और दो साल तक अपनी वालिदा का दूध पिया।

(الاصابة فی تمییز الصحابة، ج۴، ص۱۴۵، تاریخ الخلفاء، ص۲۴، نورالعرفان، پ۲۶، الاحقاف:۱۵)

जाए परवरिश और दीगर मुआ़मलात

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जाए परवरिश मक्कए मुकर्रमा है, आप सिर्फ़ तिजारत की ग़रज़ से बाहर तशरीफ़ ले जाते थे, अपनी क़ौम में बड़े मालदार बा मुरुव्वत, हुस्ने अख़्लाक़ के मालिक और निहायत ही इ़ज़्ज़त व शरफ़ वाले थे।

(اسد الغابة، باب العین، عبد اللہ بن عثمان ابوبکر الصدیق، ج۳، ص۳۱۶، تاریخ الخلفاء، ص۲۴)

सिद्दीक़े अक्बर के तीन मुबारक घर

(1) मक्कए मुकर्रमा में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक घर मह़ल्ला मुस्फ़ला में वाक़ेअ़ है जिस में वोह दो मुबारक पथ्थर लगे हुवे हैं जिन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़ब्ल अज़ ए'लाने नबुव्वत सलाम किया। वाज़ेह़ रहे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मक्की ज़िन्दगी इसी मुबारक मकान में बसर की।

(2) मदीनए मुनव्वरा में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दो घर थे, एक घर मस्जिदे नबवी से मुत्तसिल था जिस की खिड़की मस्जिदे नबवी के अन्दर खुलती थी और उसी खिड़की के मुतअ़ल्लिक़ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आख़िरी उ़म्र में इरशाद फ़रमाया कि : "अबू बक्र की खिड़की के सिवा तमाम खिड़कियां बन्द कर दो।"

(3) दूसरा घर मक़ामे **'सुन्ह़'** में वाक़ेअ़ था, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इसी घर से काशानए नबुव्वत ह़ाज़िर हुवे थे। (مرآة المناجیح، ج۸، ص۳۴۷، فتح الباری، الحدیث:۳۶۵۴، ج۸، ص۱۲ ملخصا)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर का हुल्यए मुबारका

जिस्मानी ख़दो ख़ाल

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा गया : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जिस्मानी ख़दो ख़ाल कैसे थे ?" फ़रमाया : "आप का रंग सफ़ेद, जिस्म कमज़ोर और रुख़्सार कम गोश्त वाले थे, कमर की जानिब से तहबन्द को मज़्बूती से बांधा करते थे ताकि लटकने से मह़फ़ूज़ रहे, आप के चेहरए अक़्दस की रगें वाज़ेह़ नज़र आती थीं, इसी त़रह़ हथेलियों की पिछली रगें भी साफ़ नज़र आती थीं।"

(الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۸۲،تاریخ الخلفاء،ص ۲۵)

गन्दुमी रंग और कम गोश्त वाले

हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं अपने वालिद के साथ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मरज़े मौत में इन की इयादत के लिये ह़ाज़िर हुवा, मैं ने देखा आप गन्दुमी रंग और कम गोश्त वाले हैं।"

(الآحادوالمثانی،ذکر الصدیق ومن صفتہ،ج ۱،ص ۱۶)

दाढ़ी में ख़िज़ाब का इस्ति'माल

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि "मेरे वालिदे मोह़तरम हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेहंदी और कतम का ख़िज़ाब इस्ति'माल फ़रमाते थे।" (مصنف عبدالرزاق،صباغ ونتف الشعر،الحدیث:۲۰۳۴۷،ج۱۰،ص۱۷۳)

रीश मुबारक में सफ़ेद बाल

ख़ादिमे दरबारे रिसालत हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं : "जब ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीना

www.dawateislami.net

तशरीफ़ लाए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब में सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसे थे जिन की रीश मुबारक में सफे़द बाल भी थे इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेहंदी और कतम इस्ति'माल फ़रमाते थे।" (الطبقات الکبری، ذکر صفۃ ابی بکر، ج۳، ص۱۴۲)

'कतम' किसे कहते हैं ?

आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی के ह़वाले से इरशाद फ़रमाते हैं : "सह़ीह़ तौ़र पर येह बात हम तक पहुंची कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेहंदी और कतम से ख़िज़ाब इस्ति'माल किया, कतम एक घास का नाम है जिस का रंग सियाह नहीं बल्कि सुर्ख़ माइल ब सियाही होता है।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 502)

सिद्दीके़ अक्बर का बचपन

बचपन की ह़ैरत अंगेज़ ह़िकायत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब 'मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल 4 ह़िस्से)' सफ़ह़ा 60 ता 61 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी बुत को सजदा न किया। चन्द बरस की उ़म्र में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद बुतख़ाने में ले गए और कहा : "येह हैं तुम्हारे बुलन्दो बाला ख़ुदा, इन्हें सजदा करो।" फिर उन्हें अकेला छोड़ कर चले गए। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बुत के सामने तशरीफ़ ले गए तो फ़रमाया : "मैं भूका हूं मुझे खाना दे, मैं नंगा हूं मुझे कपड़ा दे, मैं पथ्थर मारता हूं अगर तू ख़ुदा है तो अपने आप को बचा।" वोह बुत भला क्या जवाब देता। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक पथ्थर उस के मारा जिस के लगते ही वोह गिर पड़ा और कु़व्वते ख़ुदादाद की ताब न लाते हुवे टुकड़े टुकड़े हो गया। बाप ने येह ह़ालत देखी तो उन्हें गुस्सा आया, और वहां से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मां के पास लाए, सारा

www.dawateislami.net

वाक़िआ़ बयान किया। मां ने कहा : इसे इस के ह़ाल पर छोड़ दो जब येह पैदा हुवा था तो ग़ैब से आवाज़ आई थी कि : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सच्ची बन्दी ! तुझे ख़ुश ख़बरी हो येह बच्चा अ़तीक़ है, आस्मानों में इस का नाम सिद्दीक़ है, मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का साहि़ब और रफ़ीक़ है।" येह रिवायत सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़ुद मजलिसे अक़्दस में बयान की। जब येह बयान कर चुके तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام हाज़िरे बारगाह हुवे और अ़र्ज़ की : "صَدَقَ اَبُوبَكْرٍ وَّهُوَالصِّدِّيْقُ या'नी अबू बक्र ने सच कहा और वोह सिद्दीक़ हैं।" और तीन बार येही अल्फ़ाज़ दोहराए।

(ارشاد الساری، کتاب مناقب الانصار، باب اسلام ابی بکر، ج۸، ص ۳۷۱، ملفوظات اعلی حضرت، ص۲۰ تا ۲۱ بتصرف)

सिद्दीक़े अक्बर की जवानी, ज़मानए जाहिलिय्यत की ज़िन्दगी

अ़ज़मतो शराफ़त

अ़ल्लामा अबू ज़करिय्या यह़्या बिन शरफ़ नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "आप का शुमार ज़मानए जाहिलिय्यत में रुअसाए क़ुरैश में होता था और दीगर सरदार आप से मुख़्तलिफ़ उमूर में मश्वरे किया करते थे, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उन के अच्छे बुरे तमाम मुआ़मलात को अच्छी त़रह़ जानते थे जब इस्लाम का पैग़ाम मिला तो इस्लाम को दुन्या पर तरजीह़ दी और सिर्फ़ इस्लाम के लिये अपनी ज़िन्दगी को वक़्फ़ कर दिया।"

(اسد الغابة، باب العین، عبد الله بن عثمان ابوبکر الصدیق، ج۳، ص ۳۱۶، تاریخ الخلفاء، ص ۲۴، تهذیب الاسماء واللغات للنووی، ابوبکر الصدیق، الرقم: ۷۲۷، ج۲، ص ۴۷۳)

ज़मानए जाहिलिय्यत व इस्लाम दोनों की मुसल्लमा शख़्सिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ बिन ख़रबूज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का शुमार क़ुरैश के उन दस मायानाज़ लोगों में होता है जिन की शराफ़त ज़मानए जाहिलिय्यत और ज़मानए इस्लाम दोनों में तस्लीम की जाती है। ज़मानए जाहिलिय्यत में आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास लोग फ़ैसला करवाने के लिये अपने

www.dawateislami.net

मुक़द्दमात लाया करते थे क्यूंकि उस वक़्त कोई इन्साफ़ पसन्द बादशाह तो था नहीं जिस के पास वोह अपने तमाम मुआमलात को पेश करते, इस लिये हर क़बीले में उस के रईस और शरीफ़ शख़्स को उस की विलायत हासिल होती थी लिहाज़ा लोग अपने फ़ैसले करवाने के लिये आप ही की ख़िदमत में हाज़िर होते। (تاریخ مدینہ دمشق، ج ۳۰، ص ۳۳۵، تاریخ الخلفاء، ص ۲۴)

सिद्दीक़े अक्बर का कारोबार

कपड़े की तिजारत

मक्का के छोटे बड़े तमाम क़बीलों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले लोग तिजारत करते थे। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब जवान हुवे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी कपड़े की तिजारत शुरूअ़ की और अपने आ'ला अख़्लाक़, साफ़ गुफ़्तगू, ज़बान की सच्चाई और ईमान दारी से आप ने बेहद नफ़्अ़ हासिल किया और थोड़े ही अ़र्से में आप का शुमार मक्का के मा'रूफ़ ताजिरों में होने लगा।

सिद्दीक़े अक्बर का शाम तक तिजारती सफ़र

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तिजारत के लिये शाम के शहर बसरा का सफ़र इख़्तियार फ़रमाया। नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से गहरी वाबस्तगी की शदीद तड़प के बा वुजूद आप ने इस तिजारती सफ़र को अहम्मिय्यत दी और ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से शदीद मह़ब्बत के बा वुजूद आप को येह सफ़र करने से मन्अ़ न फ़रमाया। (فتح الباری، ج ۱۰، ص ۱۰۱)

रिज़्क़े ह़लाल की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस सफ़रे तिजारत से इस बात की अहम्मिय्यत वाज़ेह़ होती है कि मुसलमान के लिये ह़लाल ज़रीए़ से इतना रिज़्क़ कमाना ज़रूरी है जिस

www.dawateislami.net

की बिना पर उसे लोगों के सामने हाथ फैलाने की नोबत न आए। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ 1195 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द दुवुम स. 609 पर है : "इतना कमाना फ़र्ज़ है जो अपने लिये और अहलो इ़याल के लिये और जिन का नफ़्क़ा इस के ज़िम्मे वाजिब है उन के नफ़्क़ा के लिये और अदाए दैन (क़र्ज़) के लिये किफ़ायत कर सके इस के बा'द इसे इख़्तियार है कि इतने ही पर बस करे या अपने और अहलो इ़याल के लिये कुछ पस मांदा रखने की भी सई व कोशिश करे। मां बाप मोह़ताज व तंगदस्त हों तो फ़र्ज़ है कि कमा कर उन्हें ब क़दरे किफ़ायत दे।"

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة، الباب الخامس عشر في الکسب، ج۵، ص۳۴۸، ۳۴۹)

कस्बे ह़लाल के मुतअ़ल्लिक़ तीन अह़ादीसे मुबारका

(1) "उस खाने से बेहतर कोई खाना नहीं जिस को किसी ने अपने हाथों से काम कर के ह़ासिल किया है और बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते दावूद عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने हाथ से कमा कर खाते थे।" (صحیح البخاري، کتاب البیوع، باب کسب الرجل۔۔۔الخ، الحدیث: ۲۰۷۲، ج۲، ص۱۱)

(2) "ह़लाल कमाई की तलाश भी फ़राइज़ के बा'द एक फ़रीज़ा है।"

(شعب الایمان، باب في حقوق الاولاد۔۔۔الخ، الحدیث: ۸۷۴۱، ج۶، ص۴۲۰)

(3) "तमाम कमाइयों में ज़ियादा पाकीज़ा उन ताजिरों की कमाई है कि जब वोह बात करें झूट न बोलें और जब उन के पास अमानत रखी जाए ख़ियानत न करें और जब वा'दा करें उस का ख़िलाफ़ न करें और जब किसी चीज़ को ख़रीदें तो उस की मज़म्मत (बुराई) न करें और जब अपनी चीज़ें बेचें तो उन की ता'रीफ़ में मुबालग़ा न करें और उन पर किसी का आता हो तो देने में टाल मटोल न करें और जब उन का किसी पर आता हो तो सख़्ती न करें।" (شعب الایمان، باب في حفظ اللسان، الحدیث: ۴۸۵۴، ج۴، ص۲۲۱)

ताजिर हो तो सिद्दीक़े अक्बर जैसा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक ताजिर पेशा और कारोबारी आदमी थे, कारोबारी लोग उ़मूमन गुफ़्तगू में बहुत मोह़तात़ होते हैं वोह कोई भी ऐसी बात ज़बान से नहीं निकालते जो उन के तअ़ल्लुक़ात पर मन्फ़ी असरात

www.dawateislami.net

मुरत्तब करे। न तो वोह किसी के मज़्हब व अ़क़ीदे में दख़्ल देते हैं और न ही किसी के अ़मल व ह़रकत के बारे में कोई बात करने की ज़रूरत मह़सूस करते हैं। येह लोग मस्लह़त और आ़फ़िय्यत को पसन्द करते हैं तमाम मुआ़मलात अपनी आंखों से देखते हैं मगर अपनी कारोबारी मजबूरियों की वजह से चुप साध लेते हैं, किसी से कुछ नहीं कहते बल्कि अक्सरिय्यत के जज़्बात की तर्जुमानी करते और उन की राए को सह़ीह़ क़रार देते हैं लेकिन जनाबे सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की फ़ित़रत आ़म कारोबारी लोगों की फ़ित़रत के बिल्कुल बर अ़क्स थी, इन्हों ने इस्लाम क़बूल करते ही इस्लाम का फ़ौरन इज़्हार कर दिया बल्कि इस्लाम की तब्लीग़ व इशाअ़त को अपना अव्वलीन फ़रीज़ा समझ कर अपने दीगर ताजिर भाइयों को इस्लाम के फ़वाइद से मुत्तलअ़ करना शुरूअ़ कर दिया। चुनान्चे, जिस दिन इस्लाम लाए उसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान, ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर और ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم) को इस्लाम की दा'वत पेश करने के बा'द उन्हें दाख़िले इस्लाम कर लिया और दूसरे ही दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह और ह़ज़रते सय्यिदुना अरक़म बिन अबिल अरक़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم) को भी दाख़िले इस्लाम कर लिया।

(الاصابة فی تمییز الصحابة، حرف العین المھملة، ج ۴، ص ۳۷۷، تاریخ مدینة دمشق، ج ۳۰، ص ۴۹)

गोया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने जैसे ही इस्लाम क़बूल किया आप को दुन्यवी तिजारत से ज़ियादा इस दीनी तिजारत में नफ़्अ़ नज़र आया लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने दुन्यवी तिजारत की त़रह़ इस दीनी तिजारत में भी अपने क़रीबी दोस्तों को शरीक करना शुरूअ़ कर दिया ताकि वोह भी ज़ियादा से ज़ियादा नफ़्अ़ कमाएं। वाक़ेई **"ताजिर हो तो आप जैसा हो।"**

रहेंगे चूमते देहलीज़ बादशाह तेरी
बहुत बुलन्द है सिद्दीक़ बारगाह तेरी
अदा शनासे रिसालत रही निगाह तेरी
है ज़ुल्फ़ यार से देरीना रस्मो राह तेरी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर की नबिय्ये करीम से दोस्ती

इस्लाम से क़ब्ल भी दोस्त

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जुहूरे इस्लाम से क़ब्ल भी एक दूसरे के दोस्त थे। (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۸۴)

सिद्दीक़े अक्बर के घर रसूलुल्लाह की रोज़ाना आमद

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के माबैन ऐसी गहरी दोस्ती थी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर रोज़ाना तशरीफ़ लाते थे, चुनान्चे, उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि कोई दिन ऐसा न गुज़रता था जिस की सुब्हो शाम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे घर तशरीफ़ न लाते हों। (صحیح البخاری، کتاب الصلوۃ، باب المسجد یکون فی الطریق من غیر ضرر بالناس، الحدیث:۴۷۶،ج ۱،ص ۱۸۰)

दोस्ती के वक़्त आप की उ़म्र

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दोस्ती के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र सोलह या अठ्ठारह साल थी और जब आप इस्लाम लाए उस वक़्त आप की उ़म्र अड़तीस साल थी। और यक़ीनन दोस्ती के वक़्त सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक कमोबेश बीस साल थी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दो या ढाई साल उ़म्र में बड़े थे। (تفسیر خزائن العرفان، پ ۲۶، الاحقاف:۱۵ ملخصا، فتاوی رضویۃ،ج ۲۸،ص ۴۵۷)

दोस्ती की वुजूहात

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बाहम दोस्ती की कई वुजूहात हैं, एक वजह तो वोही है जो मज़्कूरा

www.dawateislami.net

बाला ह़दीसे पाक में गुज़री कि आप दोनों तक़रीबन हम उ़म्र थे और दो हम उ़म्र अफ़राद में उन्सिय्यत व मह़ब्बत एक फ़ित़री अ़मल है। नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्कए मुकर्रमा के उस मह़ल्ले में रहते थे जिस में शहर के बड़े और मश्हूर ताजिर रिहाइश पज़ीर थे और उन का कारोबार मक्कए मुकर्रमा से ले कर यमन और शाम के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों तक फैला हुवा था, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से शादी करने के बा'द इन के साथ ही तशरीफ़ ले आए थे तो एक ही मह़ल्ले में रहने की वजह से दोनों में मुलाक़ातों का सिलसिला त़वील होता चला गया और फिर दोनों के दरमियान अच्छे ख़ासे मरासिम पैदा हो गए और येह मरासिम आहिस्ता आहिस्ता गहरी दोस्ती में तब्दील हो गए। नीज़ कारोबार एक होने के साथ साथ दोनों हस्तियों की त़बीअ़तें निहायत ही नफ़ीस थीं, कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की बुत परस्ती और मुशरिकाना अ़क़ाइद व नज़रिय्यात से दोनों ही को सख़्त नफ़रत थी और येह उन तमाम ग़लत़ रुसूम व आ़दातो अत़वार से मह़फ़ूज़ थे जिन में मक्कए मुकर्रमा के दीगर लोग मुब्तला थे। अल ग़रज़ येही मुश्तरका सिफ़ात गहरी दोस्ती और क़ुरबत का ज़रीआ़ बन गईं नीज़ इस्लाम के बा'द इस में मज़ीद ऐसा इस्तिह़काम पैदा हुवा कि क़ियामत तक इस की मिसाल नहीं मिलती।

ग़ैबी आवाज़ की पुकार

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मैसरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ुहूरे इस्लाम से क़ब्ल बा'ज़ अवक़ात बाहर निकलते तो कोई ग़ैबी शख़्स पीछे से आप का नाम ले कर यूं आवाज़ देता : **"या मुह़म्मद !"** आप जब पीछे देखते तो कोई न होता। बड़े ह़ैरान होते और दोबारा घर तशरीफ़ ले जाते।

(تاریخ الاسلام للذہبی، الجزء الاول ، ج ۱ ، ص۱۳۷ ، دلائل النبوۃللبیہقی، جماع ابواب المبعث، باب من تقدم اسلامہ من الصحابۃ، ج ۲، ص ۱۶۴ ، تاریخ الخلفاء، ص۲۷)

सय्यिदुना वरक़ा बिन नौफ़ल के हां तशरीफ़ आवरी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मैसरा अ़म्र बिन शुरह़बील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना

www.dawateislami.net

ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : ‘‘जब मैं तन्हा होता हूं तो मुझे एक अ़जीब आवाज़ सुनाई देती है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ज़रूर कोई मुआ़मला है।’’ ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया : ‘‘ख़ुदा की पनाह ! आप के साथ ऐसा क्यूं होगा ? अल्लाह की क़सम ! आप तो अमानतदार, सिलए रेह़्मी करने वाले और निहायत ही सच्चे इन्सान हैं।’’ बा'द में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ग़ैर मौजूदगी में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप को सारा माजरा सुनाया क्यूंकि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के येही गहरे दोस्त थे और कहा : ‘‘ऐ अ़तीक़ ! ऐसा करो इन्हें वरक़ा बिन नौफ़ल के पास ले जाओ।’’ इतने में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी तशरीफ़ ले आए, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप को साथ ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना वरक़ा बिन नौफ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास चल दिये, रास्ते में गुफ़्तगू हुई तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ‘‘अबू बक्र ! तुम्हें मेरे बारे में येह बातें किस ने बताईं ?’’ अ़र्ज़ किया : ‘‘ह़ज़रते ख़दीजा ने।’’ चुनान्चे, दोनों सय्यिदुना वरक़ा बिन नौफ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचे और सारा माजरा बयान किया। उन्हों ने कहा : ‘‘अब अगर आप को आवाज़ आए तो आप वहीं ठहरे रहें और मुकम्मल बात सुनें फिर मुझे आ कर बताएं।’’ चुनान्चे, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वैसा ही किया और जब दोबारा इन के पास आए तो इन्हें वोह सारी ग़ैबी बात बयान कर दी। इन्हों ने सब कुछ सुनने के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नबिय्ये मुर्सल होने की ख़ुश ख़बरी दी। (البداية والنهاية، ج ٢، ص ٣٤٢، دلائل النبوة للبيهقى، جماع ابواب المبعث، باب اول سورة نزلت من القرآن، ج ٢، ص ١٥٨ ملخصا)

सिद्दीक़े अक्बर और रसूलुल्लाह की ग़म ख़्वारी

माहे रमज़ानुल मुबारक में दस बिअ़्सते नबवी को उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का विसाल हो गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के विसाल के बा'द हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत ग़मगीन रहने लगे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से आप का हुज़्नो मलाल देखा न गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी लख़्ते जिगर ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बारगाहे

www.dawateislami.net

रिसालत में ले कर हाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह मेरी लख़्ते जिगर है, आप का कुछ ग़म येह दफ़्अ़ कर देगी कि इन में ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा की ख़स्लतें मौजूद हैं।"

तीन चीज़ें पसन्द हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के माबैन जो दोस्ती और मह़ब्बत का रिश्ता क़ाइम था यक़ीनन वोह किसी ग़रज़ के सबब नहीं था बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ लिल्लाहिय्यत वाला रिश्ता था, खुद जनाबे सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه भी इस अ़ज़ीम रिश्ते को निहायत ही मह़ब्बत से बयान किया करते थे। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 64 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले '**आ़शिक़े अक्बर**' सफ़ह़ा 14 पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इरशाद फ़रमाते हैं :

मुशीरे रसूले अन्वर, आ़शिक़े शहनशाहे बह़्रो बर, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं, मुझे तीन चीज़ें पसन्द हैं : "اَلنَّظْرُ اِلَيْكَ وَاِنْفَاقُ مَالِىْ عَلَيْكَ وَالْجُلُوْسُ بَيْنَ يَدَيْكَ या'नी (1) आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए पुर अन्वार का दीदार करते रहना (2) आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अपना माल ख़र्च करना और (3) आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर रहना। (تفسير روح البيان، پ١٩، النمل: ١٢، ج٦، ص ٣٤٢)

मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रह़मते आ़लम
मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये
तुम्हारी याद को कैसे न ज़िन्दगी समझूं
येही तो एक सहारा है ज़िन्दगी के लिये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तीनों आरज़ूएं बर आईं

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह तीनों ख़्वाहिशें हुब्बे रसूले अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े पूरी फ़रमा दीं (1) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सफ़र व ह़ज़र में रफ़ाक़ते ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नसीब रही, यहां तक कि ग़ारे सौर की तन्हाई में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा कोई और ज़ियारत से मुशर्रफ़ होने वाला न था (2) इसी त़रह़ माली क़ुरबानी की सआ़दत इस कसरत से नसीब हुई कि अपना सारा मालो सामान सरकारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमों पर क़ुरबान कर दिया और (3) मज़ारे पुर अन्वार में भी अपनी दाइमी रफ़ाक़त व क़ुरबत इनायत फ़रमाई।

मुह़म्मद है मताए़ आ़लम ईजाद से प्यारा
पिदर मादर से मालो जान से अवलाद से प्यारा

काश ! हमारे अन्दर भी जज़्बा पैदा हो जाए

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़श्क़ो मह़ब्बत भरे वाक़िआ़त हमारे लिये मश्अ़ले राह हैं। राहे इ़श्क़ में आ़शिक़ अपनी ज़ात की परवाह नहीं करता बल्कि उस की दिली तमन्ना येही होती है कि रिज़ाए महबूब की ख़ाति़र अपना सब कुछ लुटा दे। काश ! हमारे अन्दर भी ऐसा जज़्बए सादिक़ा पैदा हो जाए कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा की ख़ाति़र अपना सब कुछ क़ुरबान कर दें।

जान दी, दी हुई उसी की थी
ह़क़ तो येह है कि ह़क़ अदा न हुवा

मह़ब्बत के खोखले दा'वे

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! अब मुसलमानों की अक्सरिय्यत की ह़ालत येह हो चुकी है कि इ़श्क़ो मह़ब्बत के खोखले दा'वे और जानो माल लुटाने के मह़ज़ ना'रे लगाते

www.dawateislami.net

हैं, ज़ाहिरी ह़ालत देख कर ऐसा लगता है गोया इन के नज़दीक दुन्या की क़द्र (इ़ज़्ज़त) इस क़दर बढ़ गई है कि مَعَاذَ اللّٰه इस्लामी अक़्दार की कोई परवाह नहीं रही, नबिय्ये रह़मत, ग़म गुसारे उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक (या'नी नमाज़) की पाबन्दी का कुछ लिह़ाज़ नहीं, ग़ैरों की नक़्क़ाली में इस क़दर मह़विय्यत कि इत्तिबाए़ सुन्नत का बिल्कुल ख़याल नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सदक़े वलवलए इ़श्क़ो मह़ब्बत और जज़्बए इत्तिबाए़ सुन्नत इनायत फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तू अंग्रेज़ी फ़ैशन से हर दम बचा कर
मुझे सुन्नतों पर चला या इलाही !
ग़मे मुस्त़फ़ा दे ग़मे मुस्त़फ़ा दे
हो दर्दे मदीना अ़त़ा या इलाही !
मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही !
न पाऊं मैं अपना पता या इलाही !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर का क़बूले इस्लाम

ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़बूले इस्लाम के मुख़्तलिफ़ वाक़िआ़त मुख़्तलिफ़ कुतुब में मज़कूर हैं। चन्द वाक़िआ़त पेशे ख़िदमत हैं :

(1) बह़ीरा राहिब से मुलाक़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इस्लाम आस्मानी वह़ी की मानिन्द था, वोह इस त़रह़ कि आप मुल्के शाम तिजारत के लिये गए हुवे थे, वहां आप ने एक ख़्वाब देखा जो 'बह़ीरा'

www.dawateislami.net

नामी राहिब को सुनाया। उस ने आप से पूछा : "तुम कहां से आए हो ?" फ़रमाया : "मक्का से।" उस ने फिर पूछा : "कौन से क़बीले से तअ़ल्लुक़ रखते हो ?" फ़रमाया : "कु़रैश से।" पूछा : "क्या करते हो ?" फ़रमाया : "ताजिर हूं।" वोह राहिब कहने लगा : "अगर **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे ख़्वाब को सच्चा फ़रमा दिया तो वोह तुम्हारी क़ौम में ही एक नबी मबऊ़स फ़रमाएगा, उस की ह़यात में तुम उस के वज़ीर होगे और विसाल के बा'द उस के जा नशीन।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस वाक़िए को पोशीदा रखा, किसी को न बताया, और जब सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नबुव्वत का ए'लान फ़रमाया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येही वाक़िआ़ बतौ़रे दलील आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने पेश किया। येह सुनते ही आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफु़र्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को गले लगा लिया और पेशानी चूमते हुवे कहा : "मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं इस बात की गवाही देता हूं कि आप **अल्लाह** के सच्चे रसूल हैं।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "उस दिन मेरे इस्लाम लाने पर मक्कए मुकर्रमा में सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा कोई ख़ुश न था।" (الریاض النضرہ، ج ۱، ص ۸۳)

(2) आप का ख़्वाब

एक बार आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़्वाब देखा कि एक चांद मक्कए मुकर्रमा पर नाज़िल हो कर मुख़्तलिफ़ अज्ज़ा में तक़्सीम हो गया और उस का एक एक टुकड़ा हर घर में दाख़िल हो गया और फिर वोह तमाम अज्ज़ा मिल कर पूरा चांद बन कर उन की गोद में आ गया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक राहिब से इस की ता'बीर पूछी तो उस ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को नबिय्ये करीम रऊफु़र्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ुहूर और उन की इत्तिबाअ़ की ख़ुश ख़बरी दी।

(الروض الانف، اسلام ابی بکر، ج ۱، ص ۴۳۱ مختصرا)

(3) सिद्दीके़ अक्बर और दरख़्त की पुर असरार आवाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : "अय्यामे जाहिलिय्यत में एक दिन मैं एक दरख़्त के साए में बैठा था। अचानक उस दरख़्त की एक शाख़ मेरी त़रफ़ झुकने लगी यहां तक कि वोह इतना क़रीब आ गई कि मेरे सर से आ लगी।

www.dawateislami.net

मैं उसे देख रहा था और दिल में सोच रहा था कि येह मेरे साथ क्या हो रहा है ? उसी दरख़्त से येह आवाज़ मेरे कानों में पहुंची कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक सच्चा नबी फ़ुलां वक़्त ज़ाहिर होगा तुम्हें चाहिये कि (उस पर ईमान लाओ और उस के दोस्त बन कर) सब से ज़ियादा सआदत मन्द बनो।" मैं ने उस से कहा : "मुझे वाज़ेह कर के बताओ कि वोह नबी कौन है और उस का नाम क्या है ?" उस ने कहा : "मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम।" मैं ने कहा : "वोह तो मेरे दोस्त और मेरे ह़बीब हैं !" मैं ने उस दरख़्त से अ़हद लिया कि जिस वक़्त वोह मबऊ़स हो जाएं तो मुझे ख़ुश ख़बरी दे देना। जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मबऊ़स हो गए तो उस दरख़्त में से आवाज़ आई कि "ऐ अबू क़ुहाफ़ा के बेटे ! वोह नबी मबऊ़स हो गया है अब कोशिश करो और क़सम है रब्बे मूसा की ! इस्लाम में कोई तुम पर सबक़त न करेगा।" जब सुब्ह़ हुई तो मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंचा। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे देख कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल की त़रफ़ बुलाता हूं।" मैं ने कहा : "मैं गवाही देता हूं कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को ह़क़ दे कर रोशन चराग़ बना कर भेजा है, मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाया।" (ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، ج۳، ص ۳۱)

क़बूले इस्लाम के वक़्त आप की उ़म्र

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं : "(क़बूले इस्लाम के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की उ़म्र थी) 38 (अड़तीस) साल और सिवाए उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के कि ह़ुज़ूर (या'नी सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) की उ़म्र शरीफ़ 82 साल हुई हर सह (या'नी तीनों) ख़ुलफ़ाए राशिदीन رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن (में से हर एक) की उ़म्र मुबारक नीज़ उ़म्र शरीफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र मुबारक के बराबर हुई या'नी 63 साल। अगर्चे इस में कुछ रोज़ व माह कमोबेश ज़रूर थी लेकिन साले वफ़ात येही था। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 60)

www.dawateislami.net

सिद्दीके़ अक्बर और वह़्दानिय्यते इलाही

सिद्दीके़ अक्बर हमेशा से मुसलमान थे

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन, मौलल मुस्लिमीन, इमामुल वासिलीन, सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा मुश्किल कुशा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم और ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन, इमामुल मुशाहिदीन, अफ़्ज़लुल औलियाउल मुह़म्मदिय्यीन, सय्यिदुना व मौलाना सिद्दीके़ अक्बर, अ़तीके़ अत़्हर عَلَيْهِ الرِّضْوَانُ الْاَجَلُّ الْاَطْهَر दोनों ह़ज़रात आ़लमे ज़ुर्रिय्यत से रोज़े विलादत, रोज़े विलादत से सिने तमीज़, सिने तमीज़ से हंगामे ज़ुहूरे पुरनूर आफ़्ताबे बिअ़्सत, ज़ुहूरे बिअ़्सत से वक़्ते वफ़ात, वक़्ते वफ़ात से **अबदुल आबाद** तक بِحَمْدِ اللّٰهِ تَعَالٰی मुवह़्ह़िदे मौक़िन व मुस्लिम व मोमिन व त़य्यिब व ज़की व त़ाहिर व नक़ी थे और हैं और रहेंगे, कभी किसी वक़्त किसी ह़ाल में एक लह़्ज़ा एक आन को लौसे (गन्दगिये) कुफ़्रो शिर्क व इन्कार उन के पाक, मुबारक, सुथरे दामनों तक अस्लन न पहुंचा, न पहुंचे। وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن (और सब ता'रीफ़ें **अल्लाह** तआ़ला के लिये हैं जो परवर दगार है तमाम जहानों का) आ़लमे ज़ुर्रिय्यत से रोज़े विलादत तक इस्लाम मीसाक़ी था कहा : "اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ، قَالُوْا بَلٰى क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं ? इन्हों ने कहा : क्यूं नहीं। रोज़े विलादत से सिने तमीज़ तक इस्लामे फ़ित़्री कि كُلُّ مَوْلُوْدٍ يُوْلَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ हर बच्चा फ़ित़्रते इस्लाम पर पैदा होता है।"

(صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب ماقیل فی اولاد المشرکین، الحدیث: ۱۳۸۵، ج ۱، ص ۴۶۶)

कभी बुत को सजदा न किया

(सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर) ने सिने तमीज़ से रोज़े बिअ़्सत तक इस्लामे तौह़ीदी कि इन ह़ज़राते वाला सिफ़ात ने ज़मानए फ़ित्रत में भी कभी बुत को सजदा न किया, कभी ग़ैरे ख़ुदा को ख़ुदा न क़रार दिया हमेशा एक ही जाना, एक ही माना, एक ही कहा, एक ही से काम रहा। ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْم येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है जिसे चाहे

www.dawateislami.net

अ़ता फ़रमाता है और **अल्लाह** अ़ज़ीम फ़ज़्ल वाला है। फिर ज़ुहूरे बिअ़्सत से अबदुल आबाद तक ह़ाल तो ज़ाहिर व क़त़ई व मुतवातिर है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 28, स. 458)

कभी ज़ाते बारी तआ़ला में शक न हुवा

इमाम इब्ने अ़साकिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से जो ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के शागिर्दे रशीद हैं रिवायत करते हैं कि ''مِنْ فَضْلِ اَبِیْ بَکْرٍ اَنَّه لَمْ يَشُکَّ فِی اللهِ سَاعَةً या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़ज़ाइल में से एक येह भी है कि इन्हें कभी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में शक न हुवा।''

(معرفة الصحابة، ج ۱، ص ۵۲)

हमेशा हमेशा तक सरदारे मुस्लिमीन

इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी ''**अल यवाक़ीत वल जवाहिर**'' में फ़रमाते हैं : ''ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इरशाद फ़रमाया : ''اَتَذْکُرُ يَوْمَ يَوْمٍ क्या तुम्हें उस दिन वाला दिन याद है।'' अ़र्ज़ की : ''हां याद है और येह भी याद है कि उस दिन सब से पहले ह़ुज़ूर ने بَلٰی फ़रमाया था।'' बिल जुमला ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه **रोज़े अलस्तु** से रोज़े विलादत और रोज़े विलादत से रोज़े वफ़ात और रोज़े वफ़ात से हमेशा हमेशा तक सरदारे मुस्लिमीन हैं।''

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 62)

रोज़े "अलस्तु" क्या है ?

''रोज़े अलस्तु'' से मुराद वोह दिन है जिस में **अल्लाह** तआ़ला ने तमाम रूहों से सुवाल किया था कि ''اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ'' **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्या मैं तुम्हारा रब नहीं ? और रूहों ने जवाब में कहा था : "بَلٰی" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** क्यूं नहीं। (پ ۹، الاعراف: ۱۷۲)

www.dawateislami.net

तौह़ीद में सब से बुलन्द कलाम, फ़रमाने सिद्दीक़े अक्बर

इमामुस्सुफ़िया ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : "तौह़ीद में सब से बुलन्द कलाम अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का येह फ़रमान है : "سُبْحَانَ مَنْ لَّمْ يَجْعَلْ لِّخَلْقِهٖ سَبِيْلًا اِلَّا بِالْعِجْزِ عَنْ مَعْرِفَتِهٖ या'नी पाक है वोह ज़ात जिस ने अपनी मख़्लूक़ के लिये अपनी मा'रिफ़त की सिवाए आ़जिज़ होने के कोई राह नहीं बनाई ।" (ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، ج۳، ص ۷۹)

सिद्दीक़े अक्बर और वह़दानिय्यते इलाही ब ज़बाने आ'ला ह़ज़रत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की वह़दानिय्यते इलाही से मा'मूर ह़याते त़य्यिबा पर मुश्तमिल "फ़तावा रज़विय्या" जिल्द 28, सफ़ह़ा 456 से एक जामेअ़ फ़तवा बित्तसर्रुफ़ पेशे ख़िदमत है। चुनान्चे, आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : " بِحَمْدِ اللهِ تَعَالٰی येही फ़ज़्ले अजल व अजमल, बल्कि इस से भी आ'ला व अक्मल, नसीबे ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन, इमामुल मुशाहिदीन, अफ़्ज़लुल औलियाउल मुह़म्मदिय्यीन, सय्यिदुना व मौलाना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه है । चन्द बरस की उ़म्र शरीफ़ हुई कि परतवे शाने **ख़लीलुल्लाह** बुतख़ाने में बुत शिकनी फ़रमाई । (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने जिस त़रह़ बुत शिकनी फ़रमाई थी वैसे ही इन्हों ने भी बुत शिकनी फ़रमाई) इन के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़ुह़ाफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कि वोह भी सह़ाबी हुवे उस ज़मानए जाहिलिय्यत में इन्हें बुतख़ाने ले गए और बुतों को दिखा कर कहा : "هٰذِهٖ اٰلِهَتُکَ الشُّمُّ الْعُلٰی فَاسْجُدْ لَهَا" या'नी येह तुम्हारे बुलन्दो बाला ख़ुदा हैं इन्हें सजदा करो। वोह तो येह कह कर बाहर गए, सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه क़ज़ाए मुबर्रम की त़रह़ बुत के सामने तशरीफ़ लाए और बराहे इज़्हारे इज्ज़े सनम व जह्ले सनम परस्त (या'नी बुतों की लाचारी और बुत परस्तों की जहालत को ज़ाहिर करने के लिये) इरशाद फ़रमाया : "اِنِّیْ جَائِعٌ فَاَطْعِمْنِیْ मैं भूका हूं मुझे खाना दे।" वोह कुछ न बोला।

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "اِنِّیْ عَارٍفَاکْسِنِیْ मैं नंगा हूं मुझे कपड़ा पहना।" वोह कुछ न बोला । सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक पथ्थर हाथ में ले कर फ़रमाया : "मैं तुझ पर पथ्थर डालता (मारता) हूं। فَاِنْ کُنْتَ اِلٰھًا فَامْنَعْ نَفْسَکَ अगर तू ख़ुदा है तो अपने आप को बचा।" वोह अब भी निरा बुत बना रहा। आख़िर ब क़ुव्वते सिद्दीक़ी पथ्थर फेंका कि वोह ख़ुदाए गुमराहां मुंह के बल गिरा। वालिदे माजिद वापस आते थे येह माजरा देखा तो कहा : "ऐ मेरे बच्चे ! येह क्या किया ?" फ़रमाया : "वोही जो आप देख रहे हैं ?" वोह उन्हें उन की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मुल ख़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास कि वोह सह़ाबिय्या हुईं ले कर आए और सारा वाक़िआ़ उन से बयान किया उन्हों ने फ़रमाया : "इस बच्चे से कुछ न कहो, जिस रात येह पैदा हुवे मेरे पास कोई न था, मैं ने सुना कि हातिफ़ (या'नी ग़ैब से कोई) कह रहा है :

یَا اَمَةَ اللّٰہِ عَلَی التَّحْقِیْقِ! اِبْشِرِیْ بِالْوَلَدِ الْعَتِیْقِ اِسْمُہٗ فِی السَّمَاءِ الصِّدِّیْقُ لِمُحَمَّدٍ صَاحِبٌ وَرَفِیْقٌ

या'नी ऐ **अल्लाह** की सच्ची बन्दी ! तुझे ख़ुश ख़बरी हो इस आज़ाद बच्चे की, इस का नाम आस्मानों में सिद्दीक़ है, **मुह़म्मद** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का यार व रफ़ीक़ है।

(ارشاد الساری، کتاب مناقب الانصار، باب اسلام ابی بکر، ج۸، ص ۳۷۰ تا ۳۷۱، مرقاۃ المفاتیح، مناقب ابی بکر، تحت الحدیث: ۶۰۳۴، ج۱۰، ص ۳۸۵)

सिद्दीक़े अक्बर हमेशा रसूलुल्लाह की ख़ुशनूदी में रहे

सोलह बरस की उ़म्र में हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दम पकड़े कि उ़म्र भर न छोड़े, अब भी पहलूए अक़्दस में आराम करते हैं, रोज़े क़ियामत दस्त ब दस्त हुज़ूर (हाथ में हाथ डाले) उठेंगे, साए की त़रह़ साथ साथ दाख़िले ख़ुल्दे बरीं होंगे। जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मबऊ़स हुवे फ़ौरन बे तामिल (बिग़ैर ग़ौरो फ़िक्र के) ईमान लाए, व लिहाज़ा सय्यिदुना इमाम अबुल ह़सन अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "لَمْ یَزَلْ اَبُوْبَکْرٍ بِعَیْنِ الرِّضَا مِنْہُ" या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमेशा सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी में रहे। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 28, स. 457)

www.dawateislami.net

क़ब्ले बिअ़्सत भी मोमिन बा'दे बिअ़्सत भी मोमिन

इमाम क़स्त़लानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इरशादुस्सारी शर्हे सह़ीहुल बुख़ारी में फ़रमाते हैं :

اِخْتَلَفَ النَّاسُ فِیْ مُرَادِهٖ بِهٰذَا الْكَلَامِ فَقِيْلَ لَمْ يَزَلْ مُؤْمِناً قَبْلَ الْبِعْثَةِ وَبَعْدَهَا وَهُوَ الصَّحِيْحُ الْمُرْتَضٰى

या'नी इस कलाम से इमाम अश्अ़री की मुराद में लोगों का इख़्तिलाफ़ है। बयाने मुराद में एक क़ौल येह है कि वोह हमेशा मोमिन रहे, क़ब्ले बिअ़्सत भी, बा'दे बिअ़्सत भी। येही क़ौल सह़ीह़ व पसन्दीदा है। (ارشاد الساری، کتاب مناقب الانصار، باب اسلام ابی بکر رضی اللہ عنہ، ج۸، ص ۳۷۰)

आप से कोई ह़ालते कुफ़्र साबित नहीं

इमामे अजल सय्यिद अबुल ह़सन अ़ली बिन अ़ब्दुल काफ़ी तक़िय्युद्दीन सुबुकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :

اَلصَّوَابُ اَنْ يُّقَالَ اَنَّ الصِّدِّيْقَ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ لَمْ يَثْبُتْ عَنْهُ حَالَةُ كُفْرٍ بِاللّٰهِ

كَمَا ثَبَتَتْ عَنْ غَيْرِهٖ مِمَّنْ اٰمَنَ وَهُوَ الَّذِیْ سَمِعْنَاهُ مِنْ اَشْيَاخِنَا وَمَنْ يُّقْتَدٰى بِهٖ وَهُوَ الصَّوَابُ اِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالٰى

या'नी सह़ीह़ येह कहना है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मुतअ़ल्लिक़ कोई ह़ालते कुफ़्र साबित न हुई जैसा कि दूसरे ईमान वालों से मुतअ़ल्लिक़ साबित हुई। येही हम ने अपने शुयूख़ और पेश्वाओं से सुना है और येही ह़क़ है اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ

(ارشاد الساری، کتاب مناقب الانصار، باب اسلام ابی بکر رضی اللہ عنہ، ج۸، ص ۳۷۰)

मह़ब्बते इलाही और फ़रमाने सिद्दीक़े अक्बर

सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی से मन्क़ूल है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ ذَاقَ خَالِصَ مَحَبَّةِ اللّٰهِ يُشْغِلُهُ ذٰلِكَ مِنْ طَلَبِ الدُّنْيَا وَاَوْحَشَهُ عَنْ جَمِيْعِ الْبَشَرِ

"या'नी जिस ने ख़ालिस मह़ब्बते इलाही का मज़ा चख लिया वोह उस को दुन्या की त़लब से मुतनफ़्फ़िर कर देगी और उस में रहने वाले तमाम इन्सानों से मुतवह़्ह़िश (या'नी मुतनफ़्फ़िर) कर देगी।" (ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء، ج۳، ص ۸۰)

www.dawateislami.net

इस्लाम लाने में कोई तरद्दुद न किया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दिल पहले ही ईमान क़बूल करने की सलाहिय्यत से पूरी त़रह़ मा'मूर था। सिर्फ़ दा'वत मिलने की देर थी और जो शम्अ़ जलने के लिये बेताब थी फ़ौरन जल उठी। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ह़सीन तमीमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने जिस शख़्स को भी इस्लाम की दा'वत दी उस ने तरद्दुद और थोड़ा बहुत ग़ौरो फ़िक्र ज़रूर किया, मगर अबू बक्र सिद्दीक़ ऐसे हैं कि जब मैं ने इन्हें इस्लाम की दा'वत दी तो इन्हों ने बिग़ैर किसी तरद्दुद और ग़ौरो फ़िक्र के फ़ौरन कलिमा पढ़ लिया और इस्लाम में दाख़िल हो गए।" (اسد الغابہ، عبد اللہ بن عثمان اسلامہ، ج۳، ص۳۱۷، تاریخ مدینہ دمشق، ج۳۰، ص۴۴)

क़बूले इस्लाम में अ़दमे तरद्दुद की वजह

वाक़ेई हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह बहुत ही अ़ज़ीम ख़ूबी है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम की दा'वत सुनते ही न तो कोई सुवाल किया और न ही इस्लाम के बारे में कोई बात समझने की कोशिश की ह़ालांकि उस वक़्त जिन लोगों को इस्लाम की दा'वत दी जाती थी तो अव्वलन इस में तरद्दुद या सुकूत करते और सानियन इस्लाम के फ़वाइद जानने की लाज़िमन कोशिश करते थे लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किसी क़िस्म का कोई तरद्दुद, सुकूत या सुवाल न किया बल्कि उधर इस्लाम की दा'वत कानों में पड़ी और इधर कलिमए शहादत पढ़ कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए, आप के इस बिला तरद्दुद इस्लाम क़बूल करने की वजह बयान करते हुवे अ़ल्लामा बैहक़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "आप के बिला तरद्दुद क़बूले इस्लाम की वजह येह है कि आप सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्लाम की दा'वत देने से क़ब्ल ही तमाम दलाइल और शवाहिद मुलाह़ज़ा कर चुके थे, इस लिये जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस्लाम की दा'वत दी गई फ़ौरन ही इस्लाम क़बूल फ़रमा लिया।" (دلائل النبوۃ للبیھقی، باب من تقدم اسلامہ، ج۲، ص۱۶۴، تاریخ الخلفاء، ص۲۷)

www.dawateislami.net

एक और हैरत अंगेज़ बात

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बिला चूनो चरां इस्लाम क़बूल करना अगर्चे अ़जीब बात है लेकिन इस से ज़ियादा हैरत अंगेज़ बात येह है कि इस्लाम क़बूल करने से क़ब्ल नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ पेश आने वाले कई वाक़िआत जैसे ग़ारे हिरा में सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام का वही ले कर हाज़िर होना, ग़ैबी आवाज़ों का सुनना, हैवानात व जमादात का आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम करना वग़ैरा पेश आए कि जिन को सुन कर एक आ़म आदमी अपनी सोच के मुत़ाबिक़ इन्हें कभी तस्लीम न करे, लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऐसे वाक़िआत सुन कर भी ज़र्रा भर शक का इज़्हार न किया बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तमाम बातों पर बिग़ैर किसी तअम्मुल के सह़ीह़ होने का यक़ीन कर लिया।

अ़ज़मते ईमाने सिद्दीक़े अक्बर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का **अल्लाह** तआ़ला पर ईमान निहायत मोह़कम और अ़ज़ीम था, आप को ईमान की ह़क़ीक़त का गहरा इदराक था। कलिमए तौह़ीद आप के रगो पे में सरायत कर गया था, आप के दिलो दिमाग़ पर ईमान व यक़ीन ही की हुक्मरानी थी, कलिमए तौह़ीद के आसार व नताइज आप के आ'ज़ा व जवारेह़ पर भी मुरत्तब हुवे और इन्ही आसार की रोशनी में आप ने अपनी ह़याते मुस्तआ़र की। आप आ'ला अख़्लाक़ से आरास्ता और घटया अख़्लाक़ से पाको साफ़ थे। आप शरीअ़ते इलाही को मज़बूती से थामने और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हिदायत व रहनुमाई की इक़्तिदा की बड़ी शदीद तड़प रखते थे। आप का ईमान बिल्लाह सरगर्मी व नशात़, अ़ज़्म व हिम्मत, जह्दे मुसलसल, अ़मले पैहम, मुजाहदे, जिहाद व तर्बिय्यत, इ़ज़्ज़त, तरक़्क़ी और आ़ली मर्तबे का बाइ़स था, आप के दिल में **अल्लाह** तआ़ला और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़ज़मत के बारे में ऐसा ना क़ाबिले तस्ख़ीर ईमान व यक़ीन था कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم बल्कि तमाम ज़मीन वालों में से किसी का ईमान आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ईमान के हम पल्ला नहीं। चुनान्चे, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : لَوْوُزِنَ اِیْمَانُ اَبِیْ بَکْرٍ بِاِیْمَانِ اَھْلِ الْاَرْضِ لَرَجَحَ بِھِم या'नी अगर ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ईमान तमाम ज़मीन वालों के ईमान के साथ वज़्न किया जाए तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ईमान इन सब के ईमान से ज़ियादा वज़्नी हो।"

(شعب الایمان، باب القول فی زیادۃ الایمان، الحدیث:٣٦،ج ١، ص ٦٩)

और इस रिवायत की एक नज़ीर येह भी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सक़फ़ी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि दो आलम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "مَنْ رَاٰی مِنْکُمْ رُؤْیًا؟ या'नी तुम में से किसी ने ख़्वाब देखा है?" एक सहाबी ने अ़र्ज़ किया : "जी हां या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने ख़्वाब देखा कि आस्मान से एक मीज़ान नाज़िल हुवा और उस में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का वज़्न किया गया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से वज़्न में भारी रहे। फिर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का वज़्न किया गया तो सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का पलड़ा वज़्नी रहा। फिर हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का वज़्न किया गया तो हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से भारी साबित हुवे। फिर वोह मीज़ान उठा ली गई।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस ख़्वाब से कबीदा ख़ातिर हुवे फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "خِلَافَةُ نُبُوَّةٍ ثُمَّ يُؤْتِي اللّٰهُ الْمُلْكَ مَنْ يَّشَاءُ या'नी येह नबुव्वत की ख़िलाफ़त है, फिर अल्लाह तआला जिसे चाहेगा बादशाही अ़ता फ़रमाएगा।"

(سنن ابی داود، کتاب السنۃ، باب فی الخلفاء، الحدیث:٤٦٣٥، ج ٤، ص ٢٧٥، کشف الخفاء، حرف اللام، الحدیث:٢١٢٧، ج ٢، ص ١٤٩)

सिद्दीक़े अक्बर और अव्वलिय्यते क़बूले इस्लाम

सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ पहले ईमान लाए

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : "أَوَّلُ مَنْ أَسْلَمَ أَبُوْ بَكْرٍ الصِّدِّيْقُ या'नी सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाले हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।" (سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب علی بن ابی طالب، الحدیث:٣٧٥٦، ج ٥، ص ٤١١)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा पहले ईमान लाए

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "إِنَّ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلِيُّ بْنُ أَبِيْ طَالِبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ या'नी जो शख़्स सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सब से पहले ईमान लाए वोह हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم हैं।"

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، اولکم وارداعلی۔۔۔الخ، الحدیث:۴۷۱۸، ج۴، ص۱۱۰)

सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा पहले ईमान लाई

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन हुवैरस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "كَانَ أَوَّلُ مَنْ أَسْلَمَ مِنَ الرِّجَالِ عَلِيًّا وَ مِنَ النِّسَاءِ خَدِيْجَة या'नी मर्दों में सब से पहले हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم और औ़रतों में हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सब से पहले ईमान लाईं।" (المعجم الکبیر، مالک بن حویرث، الحدیث:۶۴۸، ج۱۹، ص۲۹۱ ملتقطا)

ज़ैद बिन ह़ारिसा पहले ईमान लाए

हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "أَنَّ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ زَيْدُ بْنُ حَارِثَة या'नी हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से पहले इस्लाम लाए।"

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، اول من اسلم زید۔۔۔الخ، الحدیث:۵۰۰۳، ج۴، ص۲۲۶)

तमाम अक़्वाल में मुत़ाबक़त

इमामुल फुक़हाए वल मुह़द्दिसीन इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा नो'मान बिन साबित رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इन तमाम अक़्वाल में मुत़ाबक़त यूं मन्क़ूल है कि "मर्दों में सब से पहले इस्लाम लाने वाले हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं और बच्चों में सब से पहले इस्लाम लाने वाले हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم

www.dawateislami.net

हैं और औ़रतों में सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाली ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं।" इमाम तिर्मिज़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से भी येही मन्क़ूल है और ग़ुलामों में सब से पहले ईमान लाने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।

(تاریخ الخلفاء، ص ٢٦، سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب، ج ٥، ص ٤١١)

सिद्दीक़े अक्बर का इज़्हार व ए'लाने इस्लाम

सब से पहले इज़्हारे इस्लाम

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : "सब से पहले सात आदमियों ने अपना इस्लाम ज़ाहिर किया। (1) सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (3) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर (4) इन की वालिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना सुमय्या (5) ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद (6) ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब (7) और ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم)"

(سنن ابن ماجۃ، فضل سلمان وابی ذر والمقداد، الحدیث: ١٥٠، ج ١، ص ٩٩)

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "सब से पहले जिन लोगों ने अपना अ़क़ीदए इस्लाम ज़ाहिर किया उन में से एक हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم थे और दूसरे सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।"

(الریاض النضرۃ، ج ١، ص ٨٨)

सिद्दीक़े अक्बर और दा'वते इस्लामी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़बूले इस्लाम के लम्ह़ए अव्वल ही से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल में तब्लीग़े दीन और तरवीजे ह़क़ का बे पनाह जज़्बा पैदा हो गया था और इस अहम काम में वोह प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के निहायत ही मुख़्लिस और इन्तिहाई सच्चे मुआ़विन थे, ज़बान से कलिमए शहादत पढ़ते ही उन्हों ने अपने आप को इस्लाम की नश्रो इशाअ़त और तौह़ीदे

www.dawateislami.net

इलाही की तरवीज के लिये वक़्फ़ कर दिया था, किसी वक़्त भी उन के दिल से इशाअ़ते इस्लाम का जज़्बा ओझल न होता था, वोह चूंकि हर तृबक़े के लोगों में लाइक़े एह़तिराम गर्दाने जाते थे और मक्कए मुकर्रमा के तक़रीबन हर ख़ासो आ़म से उन का तअ़ल्लुक़ था इस लिये बिला झिजक ईमान लाते ही नेकी की दा'वत की धूमें मचानी शुरूअ़ कर दीं, अव्वलन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ऐसे क़रीबी ताजिर दोस्तों को इस्लाम की दा'वत दी जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर मुकम्मल ए'तिमाद करते थे और आप की शख़्सिय्यत उन की नज़र में बिल्कुल बे दाग़ सफ़ेद चादर की मानिन्द थी। चुनान्चे,

आठ अफ़राद का क़बूले इस्लाम

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिस दिन इस्लाम लाए उसी दिन वोह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान, ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर और ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) के पास पहुंचे और उन पर इनफ़िरादी कोशिश फ़रमा कर इस्लाम की दा'वत पेश की और उन्हें भी दाख़िले इस्लाम कर लिया, फिर दूसरे दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह और ह़ज़रते सय्यिदुना अरक़म बिन अबिल अरक़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) पर इस्लाम पेश किया तो उन्हों ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया।

(الاصابة فی تمییز الصحابة، حرف العین المهملة، عثمان بن عثمان الثقفی، ج ۴، ص ۳۷۷، تاریخ مدینة دمشق، ج ۳۰، ص ۴۹)

एक अहम वज़ाह़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा बाला वोह तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर इस्लाम लाए इन तमाम की सीरत में इन के क़बूलिय्यते इस्लाम के मख़्सूस वाक़िआ़त भी मिलते हैं, जिन्हें पढ़ कर येह इश्तिबाह होता है कि शायद येह ह़ज़रात ब ज़ाते ख़ुद सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे, दर अस्ल मज़्कूरए बाला सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ज़मानए जाहिलिय्यत में भी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तिजारत व

www.dawateislami.net

मरासिम के ह़वाले से दोस्त थे इसी वजह से इस्लाम लाने के बा'द सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन पर इनफ़िरादी कोशिश फ़रमाई और उन्हें इस्लाम की दा'वत पेश की और जब वोह क़ल्बी त़ौर पर मुत़मइन हो गए तो उन्हें बारगाहे रिसालत में भेज दिया या उन्हें खुद ले कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए।

हुवे फ़ारूक़ व उ़स्मान व अ़ली जब दाख़िले बैअ़त
बना फ़ख़्रे सलासिल सिलसिला सिद्दीक़े अक्बर का
बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का
है यारे ग़ार, मह़बूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

सब से पहले मुबल्लिग़े इस्लाम

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से पहले इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाने का ए'ज़ाज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ही को ह़ासिल है क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सब से पहले इस्लाम क़बूल फ़रमाया और जिस दिन इस्लाम क़बूल फ़रमाया उसी दिन से तब्लीग़े इस्लाम भी शुरूअ़ फ़रमा दी। (تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۴۹)

काश ! हम भी नेकी की दा'वत देने वाले बनें

سُبْحَانَ اللہ عَزَّوَجَلَّ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को नेकी की दा'वत का किस क़दर जज़्बा था कि दामने मुस्त़फ़ा में पनाह मिलते ही फ़ौरन दूसरों को भी दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दामने करम से वाबस्ता करने की धुन लग गई। इन्हें कितना ज़बरदस्त एह़सास था, कितनी क़द्र थी इस्लाम की, ऐ काश ! हमारे दिल में भी नेकी की दा'वत की अहम्मिय्यत जा गुज़ीं हो जाए। काश ! हम भी अपने उन भोले भाले इस्लामी भाइयों को राहे जन्नत की त़रफ़ ले कर चलने की कोशिश तेज़ तर कर दें जो गुनाहों की अन्धेरी वादियों में भटक रहे हैं। ऐ काश ! हमें भी फ़िरंगी फ़ेशन की यलग़ार में घिरे हुवे मुसलमानों को दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नतों की त़रफ़ बुलाने का जज़्बा नसीब हो जाए। इस

www.dawateislami.net

मदनी काम या'नी नेकी की दा'वत को आ़म करने का एक मुअस्सिर ज़रीआ़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत भी है। दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में हफ़्ते में एक दिन मख़्सूस कर के दुकानों, घरों वग़ैरा पर नेकी की दा'वत पेश की जाती है। बा'ज़ इस्लामी भाई हफ़्ते में दो बार, तीन बार भी बल्कि रोज़ाना भी इस की सआ़दत ह़ासिल करते हैं और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'ज़ उ़श्शाक़ तो जब देखा तन्हा ही नेकी की दा'वत की धूमें मचाते रहते हैं! आइये तन्हा नेकी की दा'वत देने या'नी '**इनफ़िरादी कोशिश**' करने के मुतअ़ल्लिक़ एक ईमान अफ़रोज़ बहार सुनते चलें। चुनान्चे,

एक नाकाम आ़शिक़ की तौबा

बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े मलीर के एक इस्लामी भाई अपनी ज़िन्दगी में आने वाले इन्क़िलाब के बारे में कुछ यूं तह़रीर फ़रमाते हैं : "मैं इस फ़ानी दुन्या की रंगीनियों में खो कर इ़श्क़े मजाज़ी में गिरिफ़्तार हो गया था, परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की याद भुलाए शामो सह़र इ़श्क़े मजाज़ी की गुमराहियों में बसर कर रहा था। ब ज़ाहिर अय्यामे ज़िन्दगी बड़े ही ह़सीन और रंगीन गुज़र रहे थे। एक रोज़ मुझे येह क़ियामत ख़ैज़ ख़बर मिली की उस के घर वालों ने उस की शादी कहीं और कर दी है। इस के बा'द मेरी ज़िन्दगी तो गोया मातम कदा बन कर रह गई, उस की यादें बदन को दर्द और आंखों को रत-जगा दे गईं, सारी सारी रात उसी की याद में जाग कर गुज़ार देता, इ़श्क़ के हाथों मजबूर हो कर आख़िरत के साथ साथ, अपनी दुन्या भी दाव पर लगाने में मसरूफ़ हो गया और बिल आख़िर **मेरा भी अन्जाम वोही हुवा जो इ़श्क़े मजाज़ी में शैत़ान के हाथों खिलौना बनने वाले सेंकड़ों नाकाम व ना मुराद आ़शिक़ों का हुवा करता है** इ़श्क़ की आग बुझाने और माज़ी की तल्ख़ यादों को दिल से भुलाने की ख़ात़िर मैं ने नशे का सहारा लेना शुरूअ़ कर दिया। इ़श्क़ में नाकामी की वजह से मेरे होशो ह़वास खो चुके थे, **नशे की ऐसी लत पड़ चुकी थी कि मैं चरस, अफ़्यून, शराब, हेरोइन, सम्द बोन्ड, पेट्रोल और नशा आवर इन्जेक्शन जैसी मोहलिक मनशिय्यात का आ़दी बन गया।** अपने फ़ासिद गुमान में क़ल्बी सुकून पाने की ख़ात़िर शायद ही कोई नशा हो जो मैं ने न किया हो। ज़िन्दगी से इस क़दर मायूस और बेज़ार हो चुका था कि مَعَاذَ الله **मैं ने कई बार ख़ुदकुशी करने की भी कोशिश की**

www.dawateislami.net

और इस की तक्मील की ख़ातिर डेटोल, पेट्रोल और तेज़ाब तक पिया लेकिन सांसों की गिनती अभी पूरी न हुई थी और यक़ीनन ज़िन्दगी अभी मेरा मुक़द्दर थी येही वजह है कि हर मरतबा अपने इरादे में नाकामी का मुंह देखना पड़ा। ख़ैर ! वक़्त का मरहम आहिस्ता आहिस्ता मेरे ज़ख़्मों को भरता रहा, एक रोज़ यूं ही अपने दोस्त की दुकान पर बैठा दिल ही दिल में रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में नई ज़िन्दगी की दुआ मांग रहा था कि रब عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी पर क़ुरबान जाइये कि इतनी नाफ़रमानियों के बा वुजूद उस ने मुझे रुस्वा न किया और मेरी झोली गोहरे मुराद से भर दी, हुवा कुछ यूं कि मेरी मुलाक़ात दा'वते इस्लामी के महके महके मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता एक इस्लामी भाई से हो गई। उन की मीठी मीठी बातें सुन कर मेरे दिल में अज़् सरे नौ जीने की उमंग जाग उठी और यूं उन की **इनफ़िरादी कोशिश** की बरकत से 29 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म को मुझे दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** आने की सआ़दत हासिल हो गई। यहां हर सू सब्ज़ सब्ज़ इमामे वाले आ़शिक़ाने रसूल को देख कर मेरे सारे ग़म ग़लत़ हो गए, मैं ख़ुद को हल्का मह़सूस करने लगा और हाथों हाथ 30 रोज़ा इजतिमाई ए'तिकाफ़ में शरीक हो गया। उन इस्लामी भाई की इनफ़िरादी कोशिश और दौराने ए'तिकाफ़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की महब्बत की ब दौलत मुझ गुनाहगार को भी रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखने की सआ़दत हासिल हुई, **मदनी माहोल की बरकत से मेरे सर से इश्क़े मजाज़ी का भूत उतर गया, दिल से बुरे ख़यालात का ख़ातिमा हो गया, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़, बदन पर सुन्नत के मुताबिक़ मदनी लिबास सजा लिया** और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ पंज वक़्ता नमाज़ का पाबन्द बन गया और ता दमे तह़रीर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा मदनी मक़्सद कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है**" के जज़्बे के तह़त मदनी कामों में मसरूफ़ हूं।

www.dawateislami.net

छोड़े बद मस्तियां, और नशे बाज़ियां
जामे उल्फ़त पिये, क़ाफ़िले में चलो
ऐ शराबी तू आ, आ जूआरी तू आ
सब सुधरने चलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर का इस्लाम की दा'वत देने का अन्दाज़

हज़रते सय्यिदुना इब्ने इस्हाक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम लाते ही इस का इज़्हार भी फ़रमा दिया नीज़ इस की दा'वत देना भी शुरूअ़ कर दी। चूंकि आप अपनी क़ौम में निहायत ही नर्म दिल, लोगों के दुख दर्द में शरीक होने वाले और सब की पसन्दीदा शख़्सिय्यत थे और आप क़ुरैश के ह़सबो नसब और इन की हर अच्छाई बुराई से अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ थे, आप एक मश्हूर और खुश अख़्लाक़ ताजिर भी थे, क़ुरैश के तमाम छोटे बड़े लोग इल्मी व तिजारती ख़ूबियों नीज़ पाकीज़ा सोह़बत के सबब आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते और आप की सोह़बत से फ़ैज़याब होते तो आप उन पर इनफ़िरादी कोशिश करते, इस्लाम की ख़ूबियां बयान फ़रमाते और उन्हें इस्लाम की दा'वत देते।" इस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने पास आने वालों में से कई मो'तमद ह़ज़रात पर इनफ़िरादी कोशिश कर के उन्हें भी इस्लाम में दाख़िल कर लिया।

इबादतो रियाज़त देख कर क़बूले इस्लाम

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इब्तिदाए इस्लाम में अपने घर के सेह़न में एक मस्जिद बनाई थी, जहां वोह क़ुरआने पाक की तिलावत करते और नमाज़ पढ़ा करते थे, लोग आप के इस रूह़ परवर मन्ज़र को देख कर आप के आस पास इकठ्ठे हो जाते, आप की तिलावते क़ुरआन, इबादतो रियाज़त और ख़ौफ़े ख़ुदा में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रोना लोगों को बहुत मुतअस्सिर करता, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस अ़मल के सबब कई लोग इस्लाम में दाख़िल हुवे। (الریاض النضرۃ، ج۱، ص۹۲)

www.dawateislami.net

इस्लाम की ता़क़त बे मिसाल ता़क़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और हि़मायत का जज़्बा सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दिल में पैदा फ़रमाया और इस्लाम की सच्ची मह़ब्बत से पूरी दुन्या के इन्सानों से क़ब्ल इन्ही का क़ल्बे साफ़ी आश्ना हुवा था, इन्हों ने रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم), दीने इस्लाम और मुसलमानों की ता़क़त बढ़ाने के लिये जो कोशिशें की वोह इस ह़क़ीक़त का मुंह बोलता सुबूत है कि अगर ख़ुलूसे क़ल्ब से ईमान के साथ तअ़ल्लुक़ क़ाइम कर लिया जाए तो इस सिफ़त के ह़ामिल शख़्स को दुन्या की कोई ता़क़त अपने सामने झुका नहीं सकती, **इस्लाम की ता़क़त बे मिसाल ता़क़त** है इसे क़बूल करने वाला अगर दिल में जज़्बए सादिक़ रखता हो तो वोह भी बे पनाह ता़क़त का ह़ामिल हो सकता है आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बे मिसाल सीरत हमारे सामने मौजूद है जिस में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपने अक़्वाल व अफ़्आ़ल दोनों के ज़रीए़ तब्लीग़े इस्लाम का परचम बुलन्द फ़रमाया और येह क़ियामत तक हमारे लिये मश्अ़ले राह है ।

सिद्दीक़े अक्बर के वालिदैने करीमैन

आप के वालिद का तआ़रुफ़

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के वालिदे मोह़तरम का नाम **उ़स्मान** बिन आ़मिर बिन अ़म्र बिन का'ब बिन सा'द बिन तैम बिन मुर्रह बिन का'ब बिन लुअय्य बिन ग़ालिब बिन फ़ह्र क़ुरशी तैमी और कुन्यत **अबू क़ह़ाफ़ा** है । फ़त्हे़ मक्का के रोज़ इस्लाम लाए, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बैअ़त की, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ात के बा'द भी ज़िन्दा रहे और इन के वारिस हुवे, इस्लाम में किसी ख़लीफ़ा के बतौ़रे वालिद वारिस बनने का सब से पहले इन्हें ए'ज़ाज़ ह़ासिल हुवा । आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में वफ़ात पाई ।

(تہذیب الاسماء واللغات للنووی، باب العین والثاء المثلثۃ، ج ۱ ، ص ۲۹۶ تا ۲۹۷)

www.dawateislami.net

आप के वालिद का क़बूले इस्लाम

हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से रिवायत है कि जब नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़त्हे मक्का से क़ब्ल शहर के बाहर वादी ज़ीतुवा में ठहरे हुवे थे, हज़रते सय्यिदुना अबू क़हाफ़ा उस्मान बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी सब से छोटी बेटी से कहा : "ऐ बेटी ! मुझे जबले अबू क़ुबैस पर ले चलो।" छोटी बच्ची से इस लिये कहा कि उस वक़्त आप की नज़र तक़रीबन ज़ाइल हो चुकी थी, दोनों पहाड़ पर चढ़े तो आप ने पूछा : "बेटी ! तुम्हें क्या नज़र आ रहा है ?" बच्ची ने कहा : "बाबा ! शहर के बाहर एक क़ाफ़िला है।" बोले : "क्या येह कोई लश्कर है ?" बच्ची बोली : "एक आदमी नज़र आ रहा है जो क़ाफ़िले के आगे पीछे आ जा रहा है।" कहने लगे : "बेटी येह लश्कर का सिपह सालार है।" बच्ची कहने लगी : "बाबा ! अब क़ाफ़िला मुन्तशिर हो गया है।" बोले : "बेटी मुझे जल्दी से घर ले चलो।" बच्ची आप को ले कर घर की तरफ़ चल दी। नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शहर में फ़ातेहाना दाख़िल हुवे और मस्जिदे हराम में तशरीफ़ फ़रमा हुवे तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद हज़रते सय्यिदुना अबू क़हाफ़ा उस्मान बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ले कर आप की ख़िदमत में हाज़िर हुवे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

"هَلَّا تَرَكْتَ الشَّيْخَ فِي بَيْتِهِ حَتّٰى أَكُوْنَ أَنَا آتِيْهِ فِيْهِ" या'नी अबू बक्र ! इन को घर ही में रहने देते हम खुद इन के पास जाते।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अर्ज़ किया :

"يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ! هُوَ أَحَقُّ أَنْ يَمْشِيَ إِلَيْكَ مِنْ أَنْ تَمْشِيَ أَنْتَ إِلَيْهِ" या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह इस बात के ज़ियादा हक़दार हैं कि आप की ख़िदमत में हाज़िर हों न कि आप इन के पास तशरीफ़ ले जाएं।" चुनान्चे, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद को अपने सामने बिठाया और उन के सीने पर हाथ फेर कर फ़रमाया : "इस्लाम क़बूल करो।" इतना फ़रमाना था कि वोह बे साख़्ता कलिमा पढ़ने लगे और दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए। (مسند امام احمد، حدیث اسماء بنت ابی بکر، الحدیث:۲۷۰۲۳، ج۱۰، ص ۲۷۴)

www.dawateislami.net

आप की वालिदा का तआरुफ़

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए मोहतरमा का नाम सलमा बिन्ते सख़र बिन आमिर बिन का'ब बिन सा'द बिन तैम बिन मुर्रह और कुन्यत "**उम्मुल ख़ैर**" है। येह लफ़्ज़न और मा'नन दोनों तरह उम्मुल ख़ैर या'नी भलाई की अस्ल ही हैं और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद के चचा की बेटी हैं। इब्तिदाए इस्लाम में ही **ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आलमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअत कर के मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गई थीं, फिर मदीनए मुनव्वरा में ही इस्लाम पर दुन्याए फ़ानी से तशरीफ़ ले गईं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल हज़रते सय्यिदुना अबू क़ुहाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पहले जमादिस्सानी सिने 13 हिजरी में हुवा।

(تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۳۰، ص ۱۴، الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، کتاب النساء، وفصل فیمن عرف بالکنیۃ، حرف الخاء المعجمۃ، ج ۸، ص ۳۸۶، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۷۳)

आप की वालिदा का क़बूले इस्लाम

आग़ाज़े इस्लाम में जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबा की ता'दाद अड़तीस हो गई तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ए'लान व इज़्हारे इस्लाम के लिये इजाज़त तलब की, इजाज़त मिलने पर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को ख़ुत़बए इस्लाम देने के लिये खड़े हुवे और वहां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी तशरीफ़ फ़रमा थे। मुशरिकीने मक्का ने जब मुसलमानों को खुल्लम खुल्ला दा'वते इस्लाम देते देखा तो उन का ख़ून खोल उठा और वोह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व दीगर मुसलमानों पर टूट पड़े और उन्हों ने मुसलमानों को मारना पीटना शुरूअ़ कर दिया, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी निहायत ही बुरी तरह तकालीफ़ पहुंचाईं कि आप का चेहरा पहचाना नहीं जाता था, नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बेहोश हो गए। आप की वालिदा और उम्मे जमील बिन्ते ख़त्ताब येह दोनों आप को सहारा दे कर सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले गईं। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी वालिदा आप की ख़िदमत में आई हैं इन का अपने वालिदैन के साथ

www.dawateislami.net

रविय्या बहुत अच्छा है। आप अ़ज़ीम हस्ती हैं मैं चाहता हूं आज येह यहां से मह़रूम न जाएं लिहाज़ा आप इन के लिये दुआ़ फ़रमाएं **अल्लाह** तआ़ला इन्हें दौलते ईमान से सरफ़राज़ फ़रमाए, मुझे यक़ीन है कि **अल्लाह** तआ़ला आप के वसीले से इन्हें दोज़ख़ की आग से मह़फ़ूज़ फ़रमाएगा।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के लिये दुआ़ फ़रमाई और उन्हें इस्लाम की दा'वत दी। चुनान्चे, वोह मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गईं।

(تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۳۰، ص ۴۹، البدایۃ والنہایۃ، تسمیۃ ابی بکر وطلحۃ، ج ۲، ص ۳۶۹)

तस्दीक़ के सबब बख़्श दिया गया

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ईमान लाने का तफ़्सीली वाक़िआ़ कुछ यूं है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात के इब्तिदाई हिस्से में अपनी वालिदए मोह़तरमा के साथ सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कुछ गुफ़्तगू फ़रमाई, रात तवील हो गई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा सो गईं। जब उन्हों ने लौटने का इरादा किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हारा क्या ह़ाल है ?" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं तो ख़ैरिय्यत से हूं मगर येह मेरी मां है, इस के बिग़ैर मेरा चारा नहीं, ऐ तमाम लोगों के सरदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप इन के लिये दुआ़ फ़रमाइये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन को इस्लाम की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे।" पस आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने हाथों को कुशादा किया, होंटों से धीमी धीमी आवाज़ निकाली और उन के लिये दुआ़ की तो वहां मौजूद एक सह़ाबिये रसूल का कहना है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा को ह़ालते नींद में कलिमए शहादत पढ़ते सुना।" और जब वोह बेदार हुईं तो बुलन्द आवाज़ से पढ़ा : "اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ" या'नी मैं गवाही देती हूं कि **अल्लाह**

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और (ह़ज़रते सय्यिदुना) मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की वालिदए माजिदा को कलामे रसूलुल्लाह की तस्दीक़ की वजह से बेदारी से पहले ही बख़्शा दिया गया।

(الروض الفائق، ص۷)

सिद्दीक़े अक्बर की अज़वाज (बीवियां) और अवलाद

अज़वाज की ता'दाद

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की अज़्वाज की ता'दाद चार है आप ने दो[2] निकाह़ मक्कए मुकर्रमा में किये और दो[2] मदीनए मुनव्वरा में।

पहला निकाह़ और इस से अवलाद

पहला निकाह़ क़ुरैश के मश्हूर शख़्स अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा की बेटी उम्मुल क़ुतैला से हुवा बा'ज़ के नज़्दीक इस का नाम उम्मे क़तला है, येह क़ुरैश के क़बीलए बनू आ़मिर बिन लुअय्य से तअ़ल्लुक़ रखती थी। इस से आप के एक बड़े बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और एक बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا पैदा हुईं।

दूसरा निकाह़ और इस से अवलाद

दूसरा निकाह़ उम्मे रूमान (ज़ैनब) बिन्ते आ़मिर बिन उ़वैमिर से हुवा येह क़बीलए फ़राश बिन ग़नम बिन किनाना से तअ़ल्लुक़ रखती थीं, इन से एक बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और एक बेटी उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا पैदा हुईं। ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर अज़्वाजे मुत़ह्हरात को उ़मरह के लिये ले कर जाने वाले येही ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ही थे।

जो हूरे ऐन को देखना चाहे....!

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे रूमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का विसाल 6 सिने हिजरी में हुवा। जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का इन्तिक़ाल हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब,

www.dawateislami.net

दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तदफ़ीन में शरीक थे, आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا की क़ब्रे अन्वर में दाख़िल हुवे और इन के बारे में इरशाद फ़रमाया : “जो हूरे ऐन में से किसी औ़रत को देखना चाहे वोह इसे देख ले।” बा'ज़ उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا ने ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म के दौर में इन्तिक़ाल फ़रमाया, तज़्किरतुल क़ारी में है कि पहला क़ौल अस्सह़ है या'नी आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا ने सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक दौर में ही इन्तिक़ाल फ़रमाया। (سیرت سید الانبیاء، ص ۳۹۳)

तीसरा निकाह़ और इस से अवलाद

तीसरा निकाह़ ह़बीबा बिन्ते ख़ारिजा बिन ज़ैद से हुवा, इन से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सब से छोटी बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا पैदा हुई।

चौथा निकाह़ और इस से अवलाद

चौथा निकाह़ सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस से हुवा येह ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा थीं, जंगे मौता में शाम के अन्दर ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत हो गई तो इन से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ ने निकाह़ कर लिया। जब येह नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज का सफ़र करते हुवे 25 ज़ुल क़ा'दा को ज़ुल ह़ुलैफ़ा में पहुंचीं तो आप के बेटे मुह़म्मद की विलादत हो गई, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ भी साथ ही थे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا से इरशाद फ़रमाया : “ग़ुस्ल कर के ह़ज के अरकान अदा करती रहो, हां का'बे का त़वाफ़ न करना (क्यूंकि त़वाफ़ के लिये यक़ीनन मस्जिदे ह़राम में दाख़िल होना पड़ेगा और नफ़ास वाली औ़रत का मस्जिद में दाख़िला ममनूअ़ है) आप वोह पहली ख़ातून हैं जिन्हें इस्लाम में येह शरई मस्अला दरपेश आया यूं क़ियामत तक येह मस्अला आप के सबब से नाफ़िज़ हो गया। आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا की पाक दामनी की शहादत ख़ुद ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दी। जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

ने दुन्या से पर्दा फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने आप से निकाह़ कर लिया, इस त़रह़ आप के बेटे मुह़म्मद की परवरिश ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाई। (الرياض النضرة،ج ا ،ص٢٦٢)

अवलाद का तज़्किरा फ़ज़ीलत से ख़ाली नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अवलाद का तज़्किरा अगर्चे सीरत के लवाज़िमात में से नहीं, मगर जब किसी का नसब बयान किया जाए तो अवलाद की त़रफ़ ज़ेह्न माइल हो ही जाता है कि **अवलाद का तज़्किरा भी फ़ज़ीलत से ख़ाली नहीं,** क्यूंकि अवलाद का नेक होना भी वालिदैन की सरफ़राज़ी, इ़ज़्ज़तो अ़ज़्मत और फ़ख़्र का बाइ़स होता है। जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद और ख़ुद आप के ख़साइस में येह भी है कि आप की चार पुश्तें मुतवातिर दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत से फ़ैज़ याफ़्ता हैं और इन्हें शरफ़े सह़ाबिय्यत ह़ासिल है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अवलाद की ता'दाद छे है, तीन बेटियां और तीन बेटे। तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

पहले बेटे : सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बक्र

येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सब से बड़े बेटे हैं, क़दीमुल इस्लाम और सह़ाबिये रसूल भी हैं। मक्का, हुनैन और त़ाइफ़ की फ़ुतूह़ात में सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साथ रहे हैं। हिजरते नबवी में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़ुरैश की दिन भर की ख़बरें रात को ग़ारे सौर में पहुंचाते और रात ग़ार में गुज़ार कर सुब्ह़ ही सुब्ह़ अन्धेरे में मक्का आ जाते। सफ़रे हिजरत का रहबर **अ़ब्दुल्लाह** बिन अरैक़त़ जब नबिय्ये अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मदीनए मुनव्वरा पहुंचा कर वापस लौटा और आप को इन दोनों के मन्ज़िले मक़्सूद पर पहुंचने की इत्तिलाअ़ दी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इयाले सिद्दीक़ी को ले कर मदीनए मुनव्वरा पहुंच गए। और अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही के दौरे ख़िलाफ़त में दुन्याए फ़ानी से दारे आख़िरत तशरीफ़ ले गए। ग़ज़्वए त़ाइफ़ में एक तीर लगने से ज़ख़्मी हुवे जिसे **अबू मिह़्जन सक़फ़ी** ने चलाया था, वोह ज़ख़्म ठीक हो गया

www.dawateislami.net

लेकिन बा'द में फिर हरा हो गया इसी सबब से आप की शहादत हुई । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिका़ल शव्वालुल मुकर्रम सिने 11 हिजरी में हुवा और तर्के में सिर्फ़ सात दीनार छोड़े । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अवलाद का सिलसिला नहीं चला ।

(الاستیعاب فی معرفة الاصحاب، باب عبد اللہ بن ابی بکر، ج ۳، ص ۱۱، الاصابة فی معرفة الصحابة، عبد اللہ بن ابی بکر، ج ۴، ص ۲۴)

दूसरे बेटे : सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र

इन की कुन्यत अबू **अ़ब्दुल्लाह** है, सुल्ह़े हुदैबिय्या के मौक़अ़ पर ईमान लाए, हिजरते मदीना की सआ़दत भी ह़ासिल की, कातिबे वह़ी मुक़र्रर हुवे, बहुत ही बहादुर थे । दौरे जाहिलिय्यत और दौरे इस्लाम दोनों में इन की बहादुरी के वाक़िआ़त बहुत मश्हूर हैं और ख़ुसूसन फ़ुतूह़ाते शाम में इन की जंगी महारत और जज़्बए जिहाद क़ाबिले सताइश है, इराक़ का मश्हूर शहर बसरा आप ही के हाथों फ़त्ह़ हुवा । जंगे बद्र में कुफ़्फ़ार के साथ थे, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन पर और इन की वालिदा सय्यिदतुना उम्मे रूमान बिन्ते ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर अपना ख़ुसूसी फ़ज़्लो करम फ़रमाया कि दोनों इस्लाम की सआ़दत से मुशर्रफ़ हुवे, आप की वालिदा ने भी हिजरत की । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात 53 सिने हिजरी में मक्कए मुकर्रमा के एक पहाड़ के क़रीब हुई, आप की हमशीरा उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप के जसदे ख़ाकी को ह़रमे का'बा में लाईं और आप को वहीं दफ़्न किया गया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की और ईमान से मुशर्रफ़ हुवे ।

सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र की सआ़दत मन्दी

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी अ़लालत के आख़िरी अय्याम में तर मिस्वाक इस्ति'माल फ़रमाई । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह सआ़दत मन्दी है कि जो मिस्वाक सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्ति'माल फ़रमाई वोह आप ही के पास थी । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से वोह मिस्वाक ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

www.dawateislami.net

ने इशारए नबवी के मुताबिक़ ली इसे अपने दातों से नर्म किया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश की आप ने ख़ूब मिस्वाक फ़रमाई और उस से ज़ाइद फ़रमाई जितनी आदते शरीफ़ा थी । इस के बा'द वोह दोबारा हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को दे दी, हज़रते सय्यिदतुना उम्मुल मोअमिनीन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि दुन्या के इस आख़िरी दिन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे लुआबे दहन को हुज़ूरे अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लुआबे दहन से मिला दिया जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आख़िरत का पहला दिन था । (سیرت سید الانبیاء، ص ۲۰۲، مدارج النبوۃ، ج ۲، ص ۴۲۶)

तीसरे बेटे : सय्यिदुना मुहम्मद बिन अबी बक्र

आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की कुन्यत **अबुल क़ासिम** है और क़ुरैश के बड़े पारसा लोगों में शुमार होता है । आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की विलादत हज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर हुई । आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की परवरिश अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाई । हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने आप को मिस्र का गवर्नर बनाया था मगर वहां का चार्ज संभालने से क़ब्ल हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का विसाल हो गया । हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने भी इन्हें आ़मिले मिस्र बनाया था ।

पहली बेटी : सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा बिन्ते अबी बक्र

आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की सगी बहन हैं, आप की विलादत बिअ़सते नबवी के चौथे साल हुई नीज़ नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप से दस बिअ़सते नबवी में निकाह फ़रमाया या'नी निकाह के वक़्त आप की उ़म्र छे साल थी । आप उम्मुल मोअमिनीन या'नी तमाम मुसलमानों की मां हैं और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के लिये येह भी एक अ़ज़ीम शरफ़ है कि आप की येह बेटी उम्मुल मोअमिनीन हैं । आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दीगर तमाम अज़्वाज के मुक़ाबले में बहुत लाडली थीं और सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप से बहुत महब्बत फ़रमाया करते थे । (سیرت سید الانبیاء، ص ۱۲۰، ۹۴)

www.dawateislami.net

हक़्क़े महर सिद्दीक़े अक्बर ने पेश किया

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा हिजरत फ़रमाई और उसी साल सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की काशानए नबुव्वत में रुख़्सती हुई और बारगाहे रिसालत में आप के वालिद हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बतौरे हक़्क़े महर साढ़े बारह ऊक़िया या'नी कमो बेश पांच सो दिरहम नज़्र किये। हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक पियाला दूध से सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की दा'वते वलीमा फ़रमाई।

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفة الصحابة، ذکر اداء الصداق، الحدیث: ۲۷۷۳، ج۵، ص۲، مدارج النبوة، ج۲، ص۲۹-۷۰ ملخصاً)

इल्मो फ़ज़्ल में सब से बढ़ कर

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ौजा होने के बाइस आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इल्मी हवाले से भी बारगाहे रिसालत से कसीर फ़ैज़ हासिल किया, सहाबिय्यात में सब से बढ़ कर इल्मो फ़ज़्ल वाली थीं और बड़े बड़े जय्यिद सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी कई मसाइल में आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ही की तरफ़ रुजूअ़ करते थे। ख़ुसूसन इस्लामी बहनों के मसाइल को बयान करने के हवाले से तमाम आलमे इस्लाम पर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का बहुत बड़ा एहसान है।

आप से मरवी अहादीसे मुबारका

आप से मरवी अहादीस की ता'दाद कमो बेश 2210 है इन में से तक़रीबन 1174 अहादीस बुख़ारी व मुस्लिम के दरमियान मुत्तफ़िक़ अ़लैह (या'नी इमाम बुख़ारी व इमाम मुस्लिम दोनों ने बयान की) हैं। जब कि फ़क़त सहीह बुख़ारी में 54 और सहीह मुस्लिम में 69 अहादीस इन के इलावा हैं। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا 63 साल और चन्द माह की उम्र में सिने 57 हिजरी में इन्तिक़ाल फ़रमा गईं।

ए'तिमाद और राज़दारी की आ'ला मिसाल

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की लाडली ज़ौजा होने के साथ साथ राज़दार भी थीं और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के राज़ वोह अपने वालिदैन से भी पोशीदा रखती थीं, चुनान्चे,

www.dawateislami.net

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन के पास तशरीफ़ लाए। आप फ़त्हे मक्का के लिये रवानगी की ग़रज़ से गेहूं छान रहीं थीं और चूंकि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को येह मुआ़मला मख़्फ़ी रखने का हुक्म दिया था। सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन से दरयाफ़्त किया : "یَابُنَیَّۃُ! لِمَ تَصْنَعِیْنَ ھٰذَا الطَّعَامِ؟ या'नी ऐ बेटी ! तुम येह खाने का सामान क्यूं तय्यार कर रही हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने सुकूत फ़रमाया और कोई जवाब न दिया। फिर आप ने पूछा : "اَیُرِیْدُ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ اَنْ یَّغْزُوَ؟ या'नी क्या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़्वे का इरादा रखते हैं ?" इस सुवाल पर भी सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ामोश बैठी रहीं। इसी त़रह़ सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कई सुवालात पूछे लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बिल्कुल ख़ामोश बैठी रहीं। सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी बेटी की मुसलसल ख़ामोशी देखी तो समझ गए कि येह तर्बिय्यत याफ़्ता बेटी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का राज़ कभी अफ़्शा नहीं कर सकती। चुनान्चे, वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह से मत़्लूबा मा'लूमात ह़ासिल कर लीं। (البدایۃ والنہایۃ، ج۳، ص۴۷۵)

सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा की बरकत

एक सफ़र में सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का हार मदीनए त़य्यिबा के क़रीब किसी मन्ज़िल में गुम हो गया, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस मन्ज़िल पर पड़ाव डाला ताकि हार मिल जाए, न मन्ज़िल में पानी था न ही लोगों के पास, लोग ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की शिकायत लाए, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास तशरीफ़ लाए, देखा कि राह़तुल आ़शिक़ीन, इमामुल मुत्तक़ीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की आग़ोश में अपना सरे मुबारक रख कर आराम फ़रमा रहे हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर सख़्ती का इज़्हार किया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

www.dawateislami.net

ने अपने आप को जुम्बिश से बाज़ रखा कि कहीं ऐसा न हो कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चश्माने मुबारका ख़्वाब से बेदार हो जाएं चुनान्चे, सुब्ह़ हो गई और नमाज़ के लिये पानी अ़द्मे दस्तयाब, उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने लुत़्फ़ो करम से आयते तयम्मुम नाज़िल फ़रमाई और लश्करे इस्लाम ने सुब्ह़ की नमाज़ तयम्मुम के साथ अदा की। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़सैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "مَاھِیَ بِاَوَّلِ بَرَکَتِکُمْ یَااٰلَ اَبِیْ بَکْرٍ" या'नी ऐ अवलादे अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا येह तुम्हारी पहली बरकत नहीं है। (मत़लब येह कि मुसलमानों को तुम्हारी बहुत सी बरकतें पहुंची हैं) सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि इस के बा'द जब ऊंट उठाया गया तो हार ऊंट के नीचे से मिल गया। (गोया ह़िक्मते इलाही येही थी कि सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हार गुम हो जाने के सबब मुसलमान ऐसी जगह ठहर जाएं जहां पानी न हो और फिर रब की त़रफ़ से हुक्मे तय्यमुम नाज़िल हो और ता क़ियामत मुसलमानों के लिये आसानी और सहूलत मुहय्या की जाए।) (صحیح البخاری، کتاب التیمم، باب التیمم، الحدیث: ۳۳۴، ج ۱، ص ۱۳۳ ملخصا)

दूसरी बेटी : सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सब से बड़े बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की सगी बहन हैं और आप ही ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सब से बड़ी बेटी हैं, हिजरत के मौक़अ़ पर ज़ादे सफ़र बांधने के लिये कोई कपड़ा न था आप ने ही अपने कमर बन्द के दो टुकड़े कर के बांधा था उस वक़्त से आप **ज़ातुन्नत़ाक़ैन** के लक़ब से मश्हूर हो गईं। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन से मक्कए मुकर्रमा में निकाह़ किया जिस से मुतअ़द्दिद अवलाद हुई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने सो साल उ़म्र पाई आख़िरी उ़म्र में बीनाई जाती रही और मक्कए मुकर्रमा में विसाल हुवा। आप के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की और मक़ामे सह़ाबिय्यत पर फ़ाइज़ हुवे।

www.dawateislami.net

तीसरी बेटी : सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सब से छोटी बेटी हैं, आप अपनी वालिदा हबीबा बिन्ते ख़ारिजा बिन ज़ैद के पेट में थीं कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हो गया और ब वक़्ते विसाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्हीं की पैदाइश की बिशारत और विरासत की वसिय्यत फ़रमाई थी[1] और यूं सिद्दीक़े अक्बर की वफ़ात के बा'द उम्मे कुल्सूम पैदा हुईं। हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निकाह़ किया। (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص۲۶۷)

नस्ल दर नस्ल सह़ाबी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घराने को एक ऐसा शरफ़ ह़ासिल हुवा जो इस घराने के इ़लावा किसी और मुसलमान घराने को ह़ासिल नहीं हुवा। इन का शरफ़ येह था कि येह ख़ुद भी सह़ाबी, इन के वालिद भी सह़ाबी, इन के बेटे भी सह़ाबी और फिर इन के पोते भी सह़ाबी, इन की बेटियां भी सह़ाबिय्यात, इन के नवासे भी सह़ाबी।

वालिद और अवलाद दोनों सह़ाबी

हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हम सिर्फ़ चार ऐसे अफ़राद को जानते हैं जो ख़ुद भी मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुवे और शरफ़े सह़ाबिय्यत पाया और इन के बेटों ने भी इस्लाम क़बूल कर के शरफ़े सह़ाबिय्यत ह़ासिल किया। इन चारों के नाम येह हैं : (1) अबू क़ह़ाफ़ा उ़स्मान बिन उ़मर (2) अबू बक्र **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़स्मान (3) अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र (4) और मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم

(المعجم الکبیر، نسبۃ ابی بکر الصدیق واسمہ، الحدیث:۱۱، ج۱، ص۵۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1)....तफ़्सीली वाक़िआ़ इसी किताब के मौज़ूअ़ '**करामाते सिद्दीक़े अक्बर**' करामत नम्बर 2 सफ़ह़ा 536 पर मुलाह़ज़ा कीजिये।

www.dawateislami.net

शजरए ख़ानदाने सिद्दीक़े अक्बर

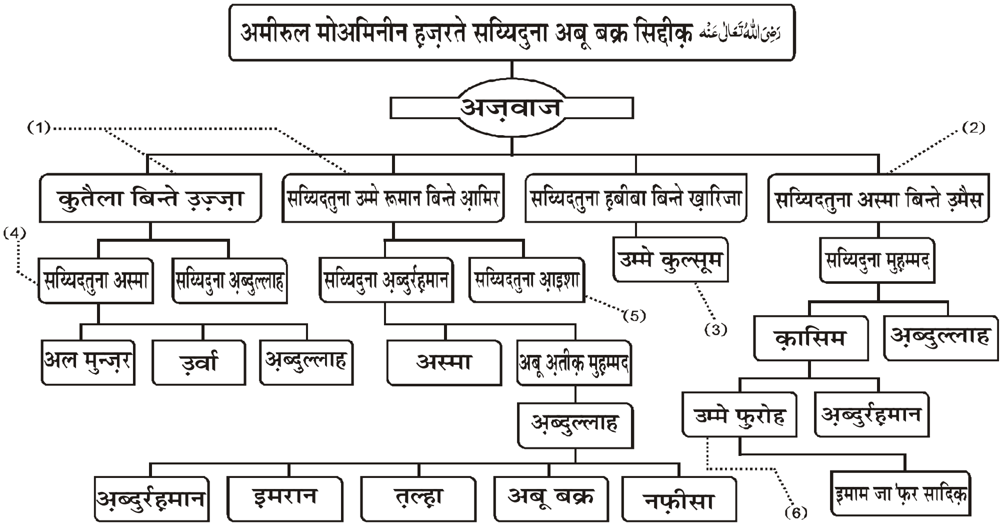

(1)....इन दोनों से ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़मानए जाहिलिय्यत में जब कि बक़िय्या दो अज़्वाज से ज़मानए इस्लाम में निकाह़ फ़रमाया था, कुतैला बिन्ते उ़ज़्ज़ा ने क़बूले इस्लाम नहीं किया था इस लिये आप ने उसे त़लाक़ दे दी थी।

(2)....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पहले ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के निकाह़ में थीं उन की शहादत के बा'द अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप से निकाह़ फ़रमाया और इन के इन्तिक़ाल के बा'द अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप से निकाह़ फ़रमाया।

(3)....इन से अ़शरए मुबश्शरा के सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निकाह़ फ़रमाया था।

(4).....इन से अ़शरए मुबश्शरा के सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना **ज़ुबैर बिन अ़व्वाम** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निकाह़ फ़रमाया था।

(5)....आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ज़ौजए **रसूलुल्लाह** और तमाम मुसलमानों की मां हैं।

(6)....इन से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बाक़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निकाह़ फ़रमाया।

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर की अहले बैत से रिश्तेदारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह प्यारे सहाबी हैं जो नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सफ़र व हज़र में हर वक़्त साथ होते थे, और हर वक़्त जल्वए महबूब इन के पेशे नज़र होता था, इसी त़रह दीगर तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से अपने क़ुलूब को तरो ताज़ा रखा करते थे।

सहाबा वोह सहाबा जिन की हर सुब्ह ईद होती थी
ख़ुदा का क़ुर्ब ह़ासिल था नबी की दीद होती थी

सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की इसी इ़श्क़ो मह़ब्बत से मा'मूर ह़याते त़य्यिबा को आज सारी दुन्या के मुसलमान अपनी ह़यात के लिये मे'यार समझते हैं और इसी मुनव्वर शाहराह पर चलते हुवे जन्नत की त़रफ़ गामज़न हैं और उ़श्शाक़ तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ना'लैने मुबारक के बारे में भी येह वालिहाना जज़्बात रखते हैं :

जो सर पे रखने को मिल जाए ना'ले पाके हुज़ूर
तो फिर कहेंगे कि हां ताजदार हम भी हैं

जब सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नूरानी तल्वों को चूमने वाली ना'लैने शरीफ़ैन का येह अदबो एह़तिराम है तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले बैते अत़हार जो कि सरवरे कौनो मकां, वारिसे ज़मीनो आस्मां, मह़बूबे रब्बे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ून मुबारक हैं इन का अदबो एह़तिराम और इन से अ़क़ीदत व मह़ब्बत का क्या आ़लम होगा !

आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن अहले बैते अत़हार की बारगाह में नज़्रानए अ़क़ीदत पेश करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में ह़ुसैन और ह़सन फूल

www.dawateislami.net

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा से ले कर अपनी वफ़ात तक कभी भी अहले बैत की ख़िदमत में कमी न आने दी, बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अहले बैत से येह ख़ुसूसी मह़ब्बत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अवलाद में भी मुन्तक़िल होती रही और यूं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अहले बैत से मज़बूत़ रिश्तेदारी क़ाइम हो गई । इस रिश्तेदारी की इब्तिदा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़ुद ही फ़रमाई थी, जिस की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है :

(1) सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा का रसूलुल्लाह से अ़क़्दे मुबारक

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी लाडली शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का निकाह़ 10 बिअ़सते नबवी, शव्वालुल मुकर्रम के महीने में अपने मह़बूब आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से किया । उस वक़्त सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की उ़म्र छे साल थी । निकाह़ के तीन साल बा'द शव्वालुल मुकर्रम ही के महीने में 9 साल की उ़म्र में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की नबिय्ये अकरम नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के काशानए अक़्दस में रुख़्सती हुई । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को 9 साल और पांच माह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त ह़ासिल रही, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की उ़म्र अठ्ठारह साल थी ।

(تہذیب التہذیب، من اسمہ عبداللہ، ج۴، ص۲۹۸، سیرت سیدالانبیاء، ص۱۲۰)

(2) रसूलुल्लाह और सिद्दीक़े अक्बर हम ज़ुल्फ़

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के ग़म ख़्वार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजए मोह़तरमा उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना बिन्ते ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا येह दोनों वालिदा की त़रफ़ से बहनें थीं, इन की वालिदए मोह़तरमा का नाम 'हिन्द बिन्ते औ़फ़' है और इन्हें 'ख़ौला बिन्ते औ़फ़' भी कहा जाता है । यूं इस मुबारक रिश्ते से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हम ज़ुल्फ़ हुवे ।

www.dawateislami.net

۞.....सय्यिदतुना मैमूना बिन्ते हिन्द बिन्ते औफ़। ज़ौजए **रसूलुल्लाह**

۞.....सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते हिन्द बिन्ते औफ़। ज़ौजए सिद्दीक़े अक्बर

(الطبقات الکبری لابن سعد، ج٨، ص١٠٤، ٢٢٣)

(3) सिद्दीक़े अक्बर के नवासे रसूलुल्लाह के भतीजे

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नवासे हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के भतीजे हैं, क्यूंकि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी और हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दादी हज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं।

۞....**अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब...सफ़िय्या बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब।

۞....**अ़ब्दुल्लाह** बिन अस्मा बिन्ते अबी बक्र अस्सिद्दीक़।

۞....**अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर बिन सफ़िय्या बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब।

(4) सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा सिद्दीक़े अक्बर के नवासे की फूफी दादी

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजा उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नवासे हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर की फूफी दादी हैं और यूं सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दो रिश्ते हुवे : हज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ज़ौज होने की वजह से फूफा दादा हुवे और हज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के भतीजे होने की वजह से चचा हुवे।

۞....**अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर बिन सफ़िय्या बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब।

۞....**अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर बिन अ़व्वाम बिन ख़ुवैलद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।

۞....उम्मुल मोअमिनीन ख़दीजतुल कुब्रा बिन्ते ख़ुवैलद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।

(سیر اعلام النبلاء، عبد اللہ بن زبیر، ج٤، ص٤٦٢)

www.dawateislami.net

(5) सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर के नवासे सय्यिदुना इमामे ह़सन के दामाद

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नवासे या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन की वालिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हैं येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दामादे मोह़तरम हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मुल ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा हैं। लिहाज़ा इन से होने वाली अवलाद अपने वालिद की त़रफ़ से "**सिद्दीक़ी**" और वालिदा की त़रफ़ से "**अ़लवी व फ़ात़िमी व ह़सनी**" है।

(6) सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा व सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर के बेटे में रिश्तेदारी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं जिन की वालिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निकाह़ फ़रमाया। चुनान्चे,

۞.....ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सौतेले बेटे हुवे। अलबत्ता इन से होने वाली तमाम अवलाद सिद्दीक़ी ही कहलाएगी।

۞....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वोह अवलाद जो ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से है जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन व ह़ुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) वग़ैरा, येह तमाम ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सौतेले बहन भाई हुवे।

www.dawateislami.net

۞.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से दो बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना औ़न और ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हैं, येह दोनों ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अख़्याफ़ी या'नी मां शरीक भाई हुवे और वालिद की त़रफ़ से अ़लवी कहलाएंगे।

۞....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दीगर अज़्वाज से होने वाली अवलाद और ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से होने वाली अवलाद अ़लाती या'नी बाप शरीक बहन भाई हुवे और वालिद की त़रफ़ से अ़लवी कहलाएंगे।

(7) सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा व सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर दोनों की रिश्तेदारी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के साहि़ब ज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ज़रते सय्यिदतुना शहरबानू رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा दोनों आपस में सगी बहनें थी। या'नी सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों की बहूएं आपस में सगी बहनें थीं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़रीस बिन जाबिर जअ़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शाहे ईरान यज़्द जर्द बिन शहरयार की दो बेटियां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में भेजी तो आप ने इन में से बड़ी बेटी का निकाह़ अपने बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमा दिया और छोटी बेटी का निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमा दिया। इन से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा हुवे और ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा हुवे। यूं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम ज़ुल्फ़ हुवे। (لباب الانساب والالقاب والاعقاب، ابناء علی العلویۃ الجعفریۃ والعقیلیۃ، ج ۱، ص ۲۲)

www.dawateislami.net

सय्यिदतुना शहरबानू के नाम की वजहे तस्मिय्या

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने जब अपने बेटे इमाम हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का निकाह़ फ़रमा दिया तो इन को मुबारक बाद देने के लिये इन दोनों के पास तशरीफ़ लाए और इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि इन का नाम क्या है ? अ़र्ज़ किया : "कैहान बानू" फ़रमाया : "इस का क्या मत़लब है ?" अ़र्ज़ किया : سَيِّدَةُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَة "या'नी दुन्या व आख़िरत की सरदार ।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : سَيِّدَةُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَاطِمَةُ بِنْتُ رَسُوْلِ الله صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "या'नी दुन्या व आख़िरत की सरदार तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बेटी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا हैं । फिर इन का नाम तब्दील कर के سَيِّدَةُ الْبَلَدَة या'नी "शहर बानू" रख दिया और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इसी नाम से मश्हूर हो गईं । (لباب الانساب والالقاب والاعقاب، ابناء علی، العلوية الجعفرية والعقيلية، ج ١، ص ٢٢)

(8) हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ का नसब

हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की वालिदए मोह़्तरमा का इस्मे गिरामी हज़रते सय्यिदतुना उम्मे फ़ुरोह बिन्ते क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अबी बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) है । जब कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के वालिदे गिरामी का इस्मे मुबारक हज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बाक़र बिन अ़ली ज़ैनुल आ़बिदीन बिन हुसैन बिन अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) है । यूं आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वालिदा की त़रफ़ से हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और वालिद की त़रफ़ से हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से जा मिलते हैं । या'नी आप वालिदा की त़रफ़ से "सिद्दीक़ी" और वालिद की त़रफ़ से "अ़लवी व फ़ातिमी" हैं ।

۞.....सय्यिदुना जा'फ़र बिन उम्मे फ़ुरोह बिन्ते क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन **अबी बक्र सिद्दीक़** ।

۞....सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद बाक़र बिन अ़ली ज़ैनुल आ़बिदीन बिन हुसैन बिन अ़लिय्युल मुर्तज़ा । (اللباب في تهذيب الأنساب، باب الصاد المهملة والالف، ج ٢، ص ١٤١، شرح العقائد، ص ٣٢٨)

www.dawateislami.net

(9).....सय्यिदुना इमामे हुसैन सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर के दामाद

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पोती या'नी हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा बिन्ते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा हैं। यूं हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दामादे मोह़तरम हुवे। लिहाज़ा इन से होने वाली अवलाद अपने वालिद की त़रफ़ से "अ़लवी व फ़ात़िमी" और वालिदा की त़रफ़ से "सिद्दीक़ी" है।

(الطبقات الکبری لابن سعد، تسمیۃ نساء اللواتی---الخ، ج۸، ص ۳۴۲ ملخصا)

ख़ानदाने सिद्दीक़े अक्बर और ख़ानदाने अहले बैत में मह़ब्बत का अनोखा अन्दाज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ानदान और अहले बैत में मह़ब्बत का एक ऐसा अनोखा अन्दाज़ भी देखने में आया जो इस बात का बय्यिन सुबूत है कि इन दोनों मुबारक ख़ानदानों में ज़ाहिरी रिश्तेदारी के इ़लावा बहुत ही गहरी उल्फ़त व मह़ब्बत का बात़िनी रिश्ता भी क़ाइम था वोह यूं कि इन दोनों ख़ानदानों के कई अफ़राद के नाम मुश्तरक या'नी एक ही जैसे थे और इस बात की अहम्मिय्यत से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि जब कोई अपने बच्चों के नाम रखता है तो उ़मूमन उन लोगों के नाम पर रखता है जो इसे बहुत ही ज़ियादा पसन्द हों और उन लोगों के नाम पर नाम रखने से बचता है जो इसे नापसन्द हों। ख़ानदाने सिद्दीक़े अक्बर और ख़ानदाने अहले बैत में मह़ब्बत के इस अनोखे अन्दाज़ को मुलाह़ज़ा कीजिये :

(1) हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अपना नाम "**अ़ब्दुल्लाह**" और आप के सब से बड़े बेटे का नाम भी "**अ़ब्दुल्लाह**" है। इसी त़रह़ हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के एक बेटे का नाम भी "**अ़ब्दुल्लाह**" है और हज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भी एक एक बेटे का नाम भी "**अ़ब्दुल्लाह**" है।

www.dawateislami.net

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक बेटे का नाम **"मुह़म्मद"** है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के एक बेटे का नाम **"मुह़म्मद"** है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक बेटे का नाम भी **"मुह़म्मद"** है।

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक बेटे का नाम **"अ़ब्दुर्रह़मान"** है। इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक बेटे का नाम भी **"अ़ब्दुर्रह़मान"** है।

(4) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नवासे का नाम **"क़ासिम"** है और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक बेटे का नाम भी **"क़ासिम"** है।

(5) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सब से छोटी बेटी का नाम **"उम्मे कुल्सूम"** है। जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की दो बेटियों का नाम भी **"उम्मे कुल्सूम"** है।

(6) ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के एक बेटे का नाम "अबू बक्र" है और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के एक बेटे मुह़म्मद असग़र की कुन्यत **"अबू बक्र"** है। (मुलख़्ख़स अज़ सवानहे करबला, स. 126)

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में हुसैन और ह़सन फूल
अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इ़तरत रसूलुल्लाह की

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

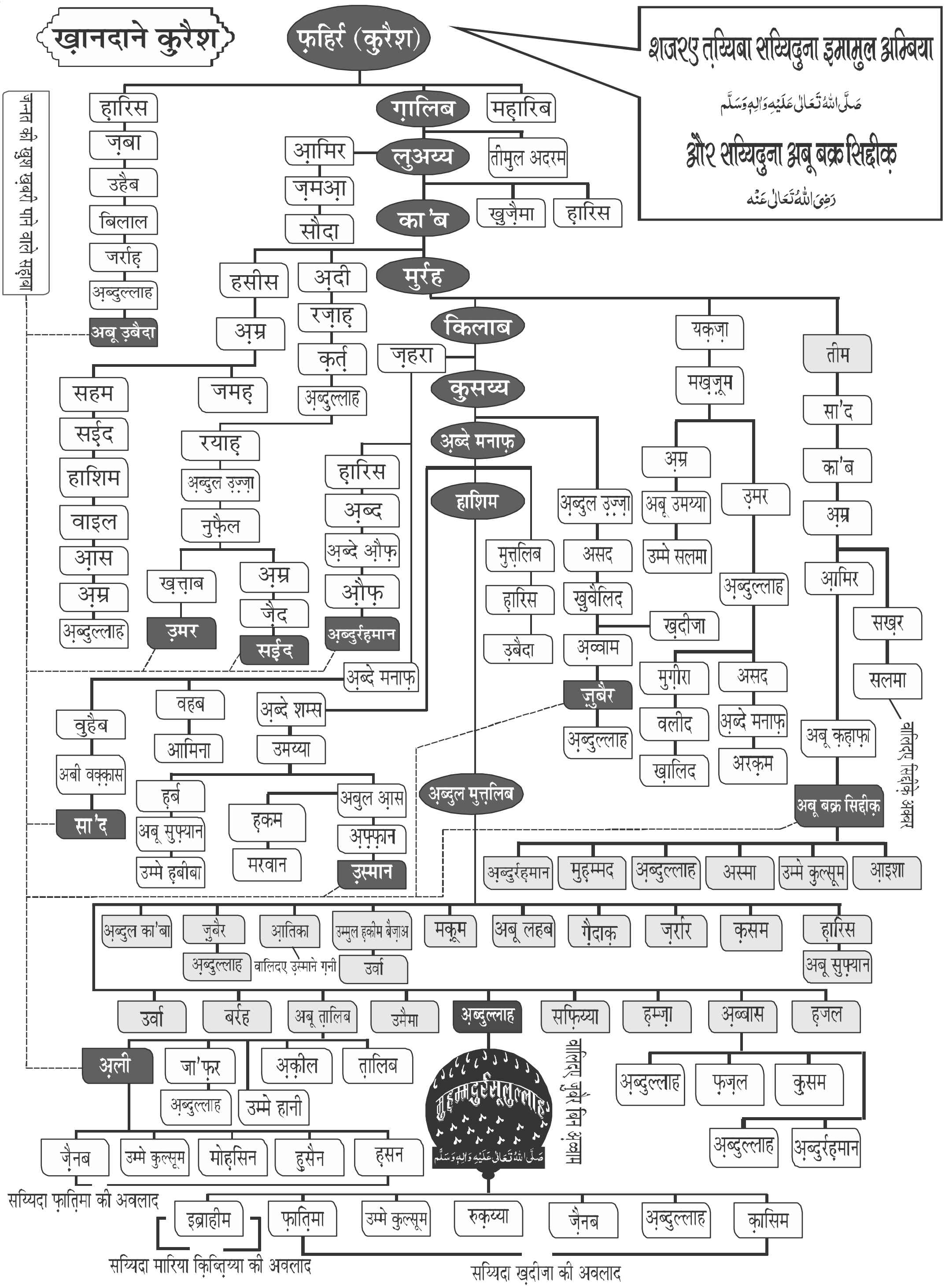

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर के भाई

कुतुबे सियर व अहादीस में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिर्फ़ दो भाइयों का इजमालन तआ़रुफ़ मिलता है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा गया : "आप के वालिद अबू बक्र का नाम क्या है?" उन्हों ने कहा : "**अ़ब्दुल्लाह**" अ़र्ज़ किया : "लोग तो आप को अ़तीक़ कहते हैं?" फ़रमाया : "मेरे दादा अबू क़ुहाफ़ा के तीन बेटे थे। आप ने इन के नाम **अ़तीक़, मोअ़य्यतिक़** और **मोअ़त्तिक़** रखे।" (المعجم الکبیر، نسبۃ ابی بکر الصدیق واسمہ، الحدیث: ۲، ج۱، ص۵۳)

सिद्दीक़े अक्बर की बहनें

पहली बहन : सय्यिदतुना उम्मे फ़ुरोह बिन्ते अबी क़ुहाफ़ा

येह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पहली सौतेली बहन हैं और इन की वालिदा का नाम हिन्द बिन्ते नुक़ैद बिन बुहै़र बिन अ़ब्द बिन क़ुसय है। इन से तीन बेटे मुह़म्मद, इस्ह़ाक़ और इस्माईल और दो बेटियां ह़बाबा और क़ुरैबा पैदा हुईं।

दूसरी बहन : सय्यिदतुना क़ुरैबा बिन्ते अबी क़ुहाफ़ा

येह भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सौतेली बहन थीं और इन की वालिदा भी हिन्द बिन्ते नुक़ैद बिन बुहै़र बिन अ़ब्द बिन क़ुसय हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन का निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन सा'द बिन उ़बादा बिन दलीमुस्सा'दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से किया लेकिन इन से कोई अवलाद नहीं हुई।

तीसरी बहन : सय्यिदतुना उम्मे आ़मिर बिन्ते अबी क़ुहाफ़ा

येह भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सौतेली बहन थीं और इन की वालिदा भी हिन्द बिन्ते नुक़ैद बिन बुहै़र बिन अ़ब्द बिन क़ुसय हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन का निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से किया जिन से सिर्फ़ एक बेटी जुईफ़ा पैदा हुई। (الطبقات الکبری، تسمیۃ النساء المسلمات المبایعات من قریش، ج۸، ص۱۹۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अवसाफ़े सिद्दीक़े अक्बर

बहादुरी, सख़ावत, मुख़्तलिफ़ उलूम, तक़्वा, फ़रामीन, दुआएं वसिय्यतें वग़ैरा

www.dawateislami.net

सिद्दीके़ अक्बर के अवसाफे़ ह़मीदा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ़मूमन येह देखने में आया है कि अ़क्ल मन्दी जहां इन्सान की रोशन ज़मीरी का बाइ़स बनती है वहां बा'ज़ दफ़्आ़ उसे ग़लत़ राहों पर भी गामज़न कर देती है, लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह ख़ास फ़ज़्लो करम और एह़सान था कि वोह अपने गिर्द फैली हुई गुमराहियों, ग़लत़ रुसूम व रवाज, अख़्लाक़ी व मुआ़शरती बुराइयों और अपनी क़ौम के ना रवा सुलूक से हमेशा दामन कुशां रहे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अख़्लाके़ रज़ीला से पाक साफ़ होने के साथ साथ अवसाफे़ ह़मीदा से भी मुत्तसिफ़ थे । बुलन्द अख़्लाक़, आ़ली किरदार, सलामत रु, मिलन सार, वा'दे के सच्चे, अ़ह्द के पक्के और निहायत ही ईमानदार ताजिर थे, आप के तमाम दोस्त, अह़बाब, रिश्तेदार आप के मह़ासिन व कमालात का बर-मला ए'तिराफ़ करते थे और इन्ही ख़ूबियों की बिना पर मक्कए मुकर्रमा और इस के कुर्बो जवार में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मह़ब्बत व इ़ज़्ज़त की निगाह से देखा जाता था । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तमाम ख़साइल के जामेअ़ थे । चुनान्चे,

तीन सो साठ ख़साइल

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अच्छी ख़स्लतें तीन सो साठ हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस की ज़ात में एक ख़स्लत पैदा फ़रमा देता है और इसी के सबब उसे जन्नत में भी दाख़िल फ़रमा देता है ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या मेरे अन्दर भी इन में से कोई ख़स्लत मौजूद है ?" इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! तुम्हारे अन्दर तो सारी ख़स्लतें मौजूद हैं ।"

(تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۱۰۳)

www.dawateislami.net

पीरे कामिल और मुरीदे कामिल

मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **"फ़तावा रज़विय्या शरीफ़"** में फ़रमाते हैं : "औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि पूरी काइनात में मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जैसा न कोई पीर है और न अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه जैसा कोई मुरीद।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 11 स. 326)

अ़क़्ल है तेरी सिपर, इश्क़ है शमशीर तेरी
मेरे दरवेश ! ख़िलाफ़त है जहांगीर तेरी
मा सिवा अल्लाह के लिये आग है तक्बीर तेरी
तू मुसलमां हो तो तक़्दीर है तदबीर तेरी
की मुह़म्मद से वफ़ा तू ने तो हम तेरे हैं
येह जहां चीज़ है क्या, लौह़ो क़लम तेरे हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर की इफ़्फ़त व पाक दामनी

शराब को अपने ऊपर ह़राम कर रखा था

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ज़मानए जाहिलिय्यत में भी अ़रबों में राइज मुतअ़द्दिद उ़यूब और अख़्लाक़ी बे राह रवियों से मुकम्मल त़ौर पर बचे हुवे थे और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की नफ़ीस फ़ित़रत में ही ऐसी ग़लीज़ चीज़ों की नफ़रत बसी हुई थी, ख़ुसूसन शराब जैसी उम्मुल ख़बाइस शै को आप ने कभी भी हाथ न लगाया। चुनान्चे,

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ज़मानए जाहिलिय्यत में भी शराब को अपने ऊपर ह़राम कर रखा था और आप ने न तो ज़मानए जाहिलिय्यत में शराब पी और न ही ज़मानए इस्लाम में। (معرفة الصحابة لابی نعیم، معرفة نسبة الصدیق، ج ۱، ص ۵۸)

www.dawateislami.net

शराब से सख़्त नफ़रत हो गई

एक मरतबा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसे शख़्स के पास से गुज़रे जो शराब के नशे में मदहोश था, वोह गन्दगी में अपना हाथ डालता और उसे अपने मुंह के क़रीब करता जब उस की बद बू महसूस होती तो दूर कर देता, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह देखा तो इरशाद फ़रमाया : "इसे मा'लूम ही नहीं कि येह क्या कर रहा है ?" बस इस के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शराब से सख़्त नफ़रत हो गई और इसे अपने ऊपर हराम कर लिया।

(جمع الجوامع، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث:۸۸،ج ۱۱، ص ۲۶، حلیۃ الاولیاء، الرقم:۱۰۱۴۰، ج ۷، ص ۱۸۴)

इ़ज़्ज़त व ग़ैरत की हि़फ़ाज़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल आ़लिय्या रय्याही़ عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی से रिवायत है फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : "क्या आप ने ज़मानए जाहिलिय्यत में कभी शराब पी है ?" फ़रमाया : "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं।" जब वजह पूछी गई तो इरशाद फ़रमाया : "मैं अपनी इ़ज़्ज़त और ग़ैरत की हि़फ़ाज़त के लिये शराब नहीं पिया करता था क्यूंकि जो शराब पीता है उस की इ़ज़्ज़तो ग़ैरत दोनों ज़ाएअ़ हो जाती हैं।" जब सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इस बात का इ़ल्म हुवा तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो दफ़्आ़ इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र ने सच कहा।"

(کنز العمال، کتاب الفضائل، باب فضائل الصحابۃ، فضل الصدیق، الحدیث:۳۵۵۹۳، ج ۶، الجزء:۱۲، ص ۲۲۰)

कभी कोई बेहूदा शे'र न कहा

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, फ़रमाती हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़मानए जाहिलिय्यत और ज़मानए इस्लाम दोनों में कभी कोई (बेहूदा) शे'र नहीं कहा।" (تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۳۰، ص ۳۳۴)

निहायत मुत्तक़ी व पारसा सिद्दीक़े अक्बर हैं
तक़ी हैं बल्कि शाहे अतक़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं

www.dawateislami.net

सिद्दीके़ अक्बर की आ़जिज़ी व इन्किसारी

ख़लीफ़ा होने के बा वुजूद इन्किसारी

हज़रते सय्यिदतुना अनीसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा बनने के तीन साल पहले और ख़लीफ़ा बनने के एक साल बा'द भी हमारे पड़ोस में रहे, मह़ल्ले की बच्चियां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास अपनी बकरियां ले कर आतीं, आप उन की दिलजूई के लिये दूध दोह दिया करते थे। हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सा'द वग़ैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) बयान करते हैं कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा बनाया गया तो मह़ल्ले की एक बच्ची आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आई और कहने लगी : "अब तो आप ख़लीफ़ा बन गए हैं, आप हमें दूध दोह कर नहीं देंगे।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "क्यूं नहीं ! अब भी मैं तुम्हें दूध दोह कर दिया करूंगा और मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम से यक़ीन है कि तुम्हारे साथ मेरे रविय्ये में किसी क़िस्म की कोई तब्दीली नहीं आएगी।" चुनान्चे, ख़लीफ़ा बनने के बा'द भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन बच्चियों को दूध दोह कर दिया करते थे। (تهذيب الاسماء واللغات، باب ابی بکر، فصل فی علمه وزهده وتواضعه، ج ٢، ص ٤٨٠)

सलाम की ख़ुसूसिय्यत पर इज़हारे तअ़ज्जुब

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर यूं सलाम अ़र्ज़ किया : "ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा ! आप पर सलाम हो।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निहायत ही तअ़ज्जुब के साथ इरशाद फ़रमाया : "इतने लोगों में तुम ने सिर्फ़ मुझे ख़ास कर के सलाम किया ?" (चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही तवाज़ोअ़ फ़रमाते थे इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस बात को नापसन्द फ़रमाया कि मजलिस में इन्हें कोई ख़ास कर के सलाम करे।) (مصنف ابن ابی شيبة، کتاب الادب، باب من کان يکره اذا اسلم۔۔۔الخ، الحديث: ٢، ج ٦، ص ١٣٥)

www.dawateislami.net

लश्कर के साथ साथ पैदल चलते रहे

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन सईद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुल्के शाम की त़रफ़ चन्द लश्कर भेजे । इन में हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का लश्कर भी था इन्हें मुल्के शाम के चौथाई हिस्से का अमीर मुक़र्रर किया गया था । इन की रवानगी के वक़्त हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इन्हें छोड़ने के लिये इन के साथ साथ पैदल चल रहे थे और येह घोड़े पर सुवार थे । हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : ''إِمَّاأَنْ تَرْكَبَ وَإِمَّاأَنْ أَنْزِلَ या'नी ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा ! या तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सुवार हो जाएं या मैं अपने घोड़े से उतर जाता हूं ।'' आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ''مَاأَنْتَ بِنَازِلٍ وَلَاأَنَا بِرَاكِبٍ إِنِّي أَحْتَسِبُ خُطَايَ هَذِهِ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ या'नी न तो तुम अपने घोड़े से उतरोगे और न ही मैं सुवार होऊंगा बल्कि मैं तो अपने इन क़दमों को राहे ख़ुदा में शुमार करता हूं ।'' (موطاامام مالک، کتاب الجہاد، باب النہی عن قتل النساء، الحدیث:۱۰۰۴، ج۲، ص۸)

अ़वामी उमूर की अदाएगी

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रात के वक़्त मदीनए मुनव्वरा के किसी मह़ल्ले में रहने वाली एक नाबीना बुढ्ढी औ़रत के घरेलू काम काज कर दिया करते थे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के लिये पानी भर लाते और उस के तमाम काम सर अन्जाम देते, ह़स्बे मा'मूल एक मरतबा बुढ़िया के घर आए तो येह देख कर हैरान रह गए कि सारे काम इन से पहले ही कोई कर गया था । बहर ह़ाल दूसरे दिन थोड़ा जल्दी आए तो भी वोही सूरते ह़ाल थी कि सब काम पहले ही हो चुके थे, जब दो तीन दिन ऐसा हुवा तो आप को बहुत तश्वीश हुई कि ऐसा कौन है जो मुझ से नेकियों में सबक़त ले जाता है ? चुनान्चे एक दिन आप दिन में ही आ कर कहीं छुप गए और जब रात हुई तो देखा कि ख़लीफ़ए वक़्त अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए और उस नाबीना

www.dawateislami.net

बुढ़िया के सारे काम कर दिये। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़े हैरान हुवे कि ख़लीफ़ए वक़्त होने के बा वुजूद ऐसी इन्किसारी ! इरशाद फ़रमाया : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही तो हैं जो मुझ से नेकियों में सबक़त ले जाते हैं।"

(کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابة، فضل الصديق، الحديث: ۳۵۶۰۲، ج ۱۲، ص ۲۲۱)

ज़ईफ़ी में येह क़ुव्वत है ज़ईफ़ों को क़वी कर दें
सहारा लें ज़ईफ़ो अक़्विया सिद्दीक़े अक्बर का

बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का
है यारे ग़ार, महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

सिद्दीक़े अक्बर की ख़ुद्दारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बसा अवक़ात ऐसा भी होता है कि आ़जिज़ी व इन्किसारी करने वाला अपनी बे एह़तियात़ी के सबब लोगों की नज़र में ख़ुद्दारी खो बैठता है लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शख़्सिय्यत वोह है जो निहायत ही मुन्कसिरुल मिज़ाज होने के साथ साथ ख़ुद्दारी में भी अपनी मिसाल आप थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने किसी भी मौक़अ़ पर अपनी ख़ुद्दारी को हाथ से न जाने दिया। चुनान्चे,

ऊंटनी की नकील भी ख़ुद उठाते

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मलैका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ से ऊंटनी की नकील गिर पड़ती तो उसे उठाने के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना हाथ ऊंटनी पर मारते और उसे बिठा देते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के रुफ़क़ा अ़र्ज़ करते कि "हुज़ूर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमें हुक्म दिया होता तो हम येह उठा कर पेशे ख़िदमत कर देते।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते : "إِنَّ حَبِيبِي رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَمَرَنِي أَنْ لَا أَسْأَلَ النَّاسَ شَيْئًا या'नी मेरे प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे हुक्म दिया था कि मैं किसी से सुवाल न करूं।"

(مسند امام احمد، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۶۵، ج ۱، ص ۳۴)

www.dawateislami.net

ख़लीफ़ा होने के बा वुजूद खुद्दारी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सब से बड़ी खुद्दारी येह है कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मन्सबे ख़िलाफ़त पर जल्वा अफ़रोज़ हुवे तो बैतुल माल से अपने लिये कोई वज़ीफ़ा मुक़र्रर करने के बजाए तिजारत को तरजीह़ दी और बाज़ार की त़रफ़ चल पड़े लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़बरदस्ती इस बात पर राज़ी किया कि आप की तिजारत उमूरे ख़िलाफ़त में मुख़िल होगी लिहाज़ा हम आप के लिये बैतुल माल से वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर देते हैं। (تاریخ الخلفاء، ص ۵۹)

सिद्दीक़े अक्बर का ह़िल्म व बुर्दबारी व रह़्म दिली

आस्मानों में ह़लीम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया : "उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस ने आप को मबऊ़स फ़रमाया है ! सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़मीन की निस्बत आस्मानों में ज़ियादा मश्हूर हैं और आस्मानों में इन का नाम **ह़लीम** है।" (الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۸۲ ملخصا)

सिद्दीक़े अक्बर की अहले बैत पर शफ़्क़त

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़े अ़स्र पढ़ कर बाहर निकले और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم भी आप के साथ थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से गुज़रे जो उस वक़्त बच्चों के साथ खेल रहे थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निहायत ही शफ़्क़त से उन्हें उठा कर अपनी

www.dawateislami.net

गर्दन पर बिठा लिया और फ़रमाया : "मुझे मेरे वालिद की क़सम ! तू मेरे महबूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुशाबेह है। अपने वालिद हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मुशाबेह नहीं।" येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मुस्कुराने लग गए। (صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب صفة النبی، الحدیث: ۳۵۴۲، ج۲، ص۴۸۶)

जा़रो क़ितार रो पड़े

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान अस्बहाई رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) जब छोटे से मदनी मुन्ने थे, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास आए, आप उस वक़्त ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मिम्बर पर रौनक़ अफ़रोज़ थे, हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने चूंकि हमेशा मिम्बर पर अपने नानाजान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही को बैठे देखा था इस लिये एक नए शख़्स को देख कर अपनी नन्ही सोच के मुता़बिक़ कहने लगे : "आप मेरे बाबा जान की जगह से नीचे उतरो।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने येह गवारा न फ़रमाया कि शहज़ादए अहले बैत की दिल शिकनी हो, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़ौरन नीचे तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया : "ऐ ह़सन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه तू ने सच कहा येह तेरे बाबा जान ही की जगह है।" फिर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को फ़र्ते़ महब्बत से उठा कर अपनी गोद में बिठा लिया और गोया इस मदनी मुन्ने ने प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र कर के एक आ़शिक़े सादिक़ के दिल के तार छेड़ दिये, महबूब के साथ बीते हुवे वोह अनमोल अय्याम याद आ गए, महबूब की मीठी और दिलरुबा अदाएं याद आ गईं, ज़ब्त़ का बन्धन टूट गया और जुदाई के वोह जज़्बात जो बड़ी मुश्किल से दिल में रुके हुवे थे आंसूओं की सूरत में आंखों से बह निकले और फ़िराक़े यार में ज़ारो क़ित़ार रो पड़े। हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने जब अमीरुल मोअमिनीन को ज़ारो क़ित़ार रोते देखा तो वोह भी परेशान हो गए, और दिल में येह ख़याल आया कि शायद अमीरुल मोअमिनीन इस लिये रोए हैं कि मैं ने इसे सिखाया है तो फ़रमाने लगे : "ख़ुदा की क़सम ! येह मेरे हुक्म से नहीं हुवा।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने आप की त़रफ़ प्यार भरे अन्दाज़ में देख कर

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "तुम ने सच कहा **वल्लाह** मैं तुम्हें मुत्तहिम नहीं करता कि तुम्हारे कहने पर इस ने येह कहा।" (या'नी मदनी मुन्ना है अगर कह भी दिया तो कोई बात नहीं आप परेशान न हों।) (كنزالعمال، كتاب الخلافة مع الامارة، الباب الاول فى خلافة الخلفاء، الحديث: ١٤٠٨١، ج٣، الجزء:٥، ص٢٤٦)

क्यूं आंख लड़ाई थी, क्यूं बात बनाई थी
अब रुख़ को छुपा बैठे कर के मुझे दीवाना
बे ख़ुद किये देते हैं अन्दाज़े हिजाबाना
आ दिल में तुझे रख लूं ऐ जल्वए जाना नां
सरकार के जल्वों से रोशन है दिले नूरी
ता हश्र रहे रोशन नूरी का येह काशाना

मिम्बरे मुनव्वर के ज़ीने का एहतिराम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह रहे कि मज़्कूरा बाला हिकायत में जनाबे सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मिम्बर पर बैठने का ज़िक्र है मगर येह वोह जगह नहीं थी जहां सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हयाते तृय्यिबा में तशरीफ़ रखते थे क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान फ़रमाते हैं कि ज़िन्दगी भर हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बरे मुनव्वर पर उस जगह नहीं बैठे जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा होते थे, इसी तरह हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जगह और हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जगह पर जब तक ज़िन्दा रहे कभी भी नहीं बैठे। (تاريخ الخلفاء، ص٥٥)

यक़ीनन मम्बए ख़ौफ़े ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं
हक़ीक़ी आशिक़े ख़ैरुल वरा सिद्दीक़े अक्बर हैं

www.dawateislami.net

ख़ुलफ़ाए राशिदीन और मिम्बरे रसूल

आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या** जिल्द 8, सफ़हा 343 पर मिम्बरे रसूल की वज़ाहत करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस मिम्बर के तीन ज़ीने उस तख़्त के इलावा थे जिस पर बैठा जाता है। हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दरजए बाला पर ख़ुत्बा फ़रमाया करते, सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने दूसरे पर पढ़ा, फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने तीसरे पर, जब ज़माना ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का आया फिर अव्वल पर ख़ुत्बा फ़रमाया, सबब पूछा गया, फ़रमाया : "अगर दूसरे पर पढ़ता लोग गुमान करते कि मैं सिद्दीक़ का हम सर हूं और तीसरे पर तो वहम होता कि फ़ारूक़ के बराबर हूं। लिहाज़ा वहां पढ़ा जहां येह एहतिमाल मुतसव्विर ही नहीं।" अस्ल सुन्नत अव्वल दरजे पर क़ियाम है। हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अदब की बिना पर ऐसा किया और हज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के अदब की ख़ातिर।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर रसूलुल्लाह के राज़दार

रसूलुल्लाह के राज़ का पास

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की लख़्ते जिगर हज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا हज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के निकाह़ में थीं। जब ग़ज़वए बद्र में हज़रते सय्यिदुना ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه शहीद हो गए तो हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के निकाह़ के सिलसिले में हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से गुफ़्तगू का इरादा फ़रमाया। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े

www.dawateislami.net

आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं ने अपनी बेटी ह़फ़्सा के मुआ़मले में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात की और उन से अपनी बेटी के निकाह़ के मुआ़मले की बात की तो उन्हों ने जवाब दिया कि मैं ग़ौर करूंगा, फिर जब दोबारा मेरी उन से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने निकाह़ का इरादा न होना ज़ाहिर फ़रमाया। मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस सिलसिले में मुलाक़ात की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सुकूत फ़रमाया और कोई जवाब न दिया मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुक़ाबले में आप का रविय्या पसन्द न आया। (क्यूंकि आप दोनों में मह़ब्बत का गहरा रिश्ता था) चन्द दिनों के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़फ़्सा के निकाह़ का पैग़ाम भेजा तो मैं ने अपनी बेटी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के निकाह़ में दे दी। जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! शायद मेरे सुकूत पर आप नाराज़ हैं ?" मैं ने कहा : "जी हां।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाने लगे : "ऐ उ़मर ! मुझे कोई उ़ज़्र तो नहीं था। मगर मेरे सुकूत की अस्ल वजह मेरे दिल में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक राज़ था और वोह येह कि नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार ह़फ़्सा (से निकाह़ करने) का ज़िक्र किया था और मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह राज़ फ़ाश नहीं करना चाहता था वरना आप को अस्ल वजह ज़रूर बता देता और अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم निकाह़ न फ़रमाते तो यक़ीनन मैं उन से अ़क़्द (निकाह़) कर लेता।" (صحیح البخاری، کتاب المغازی، شھود الملائکۃ بدر، الحدیث: ۴۰۰۵، ج۳، ص۲۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर की ग़ैरते ईमानी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़म ह़ालात में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही नर्म मिज़ाज थे ऐसे मा'लूम होता था कि सख़्ती, ख़फ़गी और ग़ुस्से से तो आश्ना ही नहीं हैं, धीमे अन्दाज़ में आहिस्ता आहिस्ता बात करते मगर इस्लाम के मुआ़मले में इन्तिहाई ग़ैरत मन्द और बहुत सख़्त थे। मदीनए मुनव्वरा के यहूदियों और

www.dawateislami.net

मुनाफ़िक़ों को इस्लाम के मुतअ़ल्लिक़ तमस्ख़ुराना और तन्ज़िय्या बातें करने की आ़दत थी। जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उन से इस त़रह़ की बातें सुनते तो आप के ग़ुस्से की इन्तिहा न रहती। नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हिजरत कर के जब मदीना तशरीफ़ लाए तो मुसलमानों और यहूदियों के दरमियान येह मुआ़हदा तै पाया कि यहूदी और मुसलमान अपने अपने दीन की नश्रो इशाअ़त में आज़ाद होंगे और अपने अपने अत़वार पर अ़मल करने में कोई फ़रीक़ किसी फ़रीक़ की राह में रुकावट नहीं बनेगा। यहूदियों का इब्तिदा में येह ख़याल था कि वोह मुहाजिरीन पर असर अन्दाज़ हो कर इन्हें मदीनए मुनव्वरा के दो मश्हूर और बड़े क़बीलों **औस** और **ख़ज़रज** के ख़िलाफ़ इस्ति'माल करेंगे, लेकिन कुछ ही दिनों बा'द उन्हें मा'लूम हो गया कि वोह अपने इस मक़्सद में कामयाब नहीं हो सकेंगे क्यूंकि मुहाजिरीन और अहले मदीना के दरमियान ऐसा मज़बूत़ तअ़ल्लुक़ क़ाइम हो गया था जो हरगिज़ मुन्क़त़अ़ नहीं हो सकता था और इस की वजह येह थी कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुहाजिरीन व अन्सार में रिश्तए उख़ुव्वत क़ाइम फ़रमा दिया था। लिहाज़ा यहूदियों ने येह ख़याल तो दिल से निकाल दिया अलबत्ता मुसलमानों के ख़िलाफ़ इस त़रह़ कमर बस्ता हो गए कि इस्लाम का मज़ाक़ उड़ाने लगे और येह उन का रोज़ाना का मा'मूल था। इसी पस मन्ज़र में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरते ईमानी की एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत मुलाह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे,

ग़ैरते सिद्दीके़ अक्बर और यहूदी आ़लिम

एक दिन चन्द यहूदी अपने एक आ़लिम के मकान में बैठे थे जिस का नाम फ़ख़्ख़ास था, इत्तिफ़ाक़ से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी वहां तशरीफ़ ले आए, यहूदियों के इस ग्रुप को ग़नीमत जान कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वहां इस्लाम की तब्लीग़ शुरूअ़ कर दी और फ़ख़्ख़ास से फ़रमाया :

اِتَّقِ اللّٰهَ وَأَسْلِمْ فَوَاللّٰهِ إِنَّكَ لَتَعْلَمُ أَنَّ مُحَمَّدًا لَرَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ

جَاءَكُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِهٖ تَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَكُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيْلِ

"या'नी ऐ फ़ख़्ख़ास ! **अल्लाह** से डर और उस पर ईमान ले आ, **अल्लाह** की क़सम !

www.dawateislami.net

तुम्हें मा'लूम है कि मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, और उसी की त़रफ़ से तुम्हारे पास वोह ह़क़ ले कर आए हैं जैसा कि तुम्हारी किताब तौरात में लिखा हुवा है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के येह अल्फ़ाज़ सुन कर फ़ख़्ख़ास ने तमस्ख़ुर आमेज़ मुस्कुराहट के साथ जवाब दिया : "ऐ अबू बक्र ! कान खोल कर सुन ! हमें तुम्हारे ख़ुदा से किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं, हां ! तुम्हारे ख़ुदा को ज़रूर हमारी ज़रूरत है, हम उस की त़रफ़ नहीं झुकते बल्कि वोह हमारी त़रफ़ झुकने पर मजबूर है, हमें उस की मदद की कोई ज़रूरत नहीं हां उसे हमारी मदद की ज़रूर ह़ाजत है अगर वोह हमारी मदद से बे नियाज़ होता तो कभी हमारे माल बत़ौरे क़र्ज़ हम से न मांगता और तुम्हारा ख़ुदा हमें सूद लेने से तो मन्अ़ करता है लेकिन ख़ुद हमें सूद देता है अगर वोह हम से बे नियाज़ होता तो हमें सूद क्यूं देता।" फ़ख़्ख़ास की येह गुफ़्त्गू निहायत ही घटया और कुफ़्रो ज़लालत से ग़लीज़ व इन्तिहाई अह़मक़ाना बकवास पर मुश्तमिल थी, उस का मक़्सद क़ुरआने पाक की आयात का मज़ाक़ उड़ाना था, जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की येह बकवास सुनी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरते ईमानी जोश मारने लगी और इतना शदीद ग़ुस्सा आया कि बरदाश्त से बाहर हो गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़त्अ़न इस बात की परवाह न की, कि मेरे सामने यहूदियों का कोई आ़लिम खड़ा है या जाहिल, घुमा कर इस ज़ोर से उस के मुंह पर थप्पड़ मारा कि उसे **दिन में भी तारे नज़र आ गए !!!**

इरशाद फ़रमाया :

"لَوْلَا الَّذِيْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ مِنَ الْعَهْدِ لَضَرَبْتُ عُنُقَكَ या'नी ऐ ख़ुदा के दुश्मन ! अगर मुसलमानों और यहूदियों के दरमियान मुआ़हदा न होता तो मैं तेरी गर्दन उड़ा देता।"

(تفسیر کبیر، پ۳، آل عمران:۱۸۲، ج۳، ص۴۴۶، مشکل الآثار للطحاوی، باب بیان مشکل ماروی عن رسول اللہ---الخ، الحدیث:۱۹۴۸، ج۱، الجزء:۲، ص۲۳۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई कितनी ह़ैरान कुन बात है कि एक त़रफ़ तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही नर्म दिल और मुतह़म्मिल मिज़ाज हैं और दूसरी त़रफ़ येह ह़ालत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और कलामे इलाही के ख़िलाफ़ कोई बात सुनना गवारा नहीं अगर्चे बात करने वाला कितना ही बड़ा आदमी हो। ह़क़ीक़त येह

www.dawateislami.net

है कि येह इन की ग़ैरते ईमानी और इस बात की दलील है कि आयाते क़ुरआनिय्या के ख़िलाफ़ तमस्ख़ुर और रसूले ख़ुदा पर इस्तिहज़ा सुनना इन के लिये मुमकिन न था।

رُحَمَآءُ بَيْنَهُم की एक तफ़्सीरे जमील
हैं اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّار यारे मुस्तफ़ा
मज़्हरे शाने रिसालत पैकरे सिद्क़ो वफ़ा
वाह क्या हैं साहिबे किरदार यारे मुस्तफ़ा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ैरते सिद्दीक़े अक्बर और आप के वालिद

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के वालिद अबू क़हाफ़ा ने (क़बूले इस्लाम से पहले) एक बार सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में ना ज़ेबा कलिमात कह दिये तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने उन्हें इतने ज़ोर से धक्का दिया कि वोह दूर जा गिरे, बा'द में आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सारा माजरा सुनाया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! क्या वाक़ेई तुम ने ऐसा किया ?" अर्ज़ किया : "जी हां !" फ़रमाया : "आयिन्दा ऐसा न करना।" अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर उस वक़्त मेरे पास तल्वार होती तो मैं उन का सर क़लम कर देता।" उस वक़्त सूरतुल मुजादला की आयत नम्बर 22 आप के हक़ में नाज़िल हुई :

﴿لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَ اَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَ يُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۲۲﴾﴾ (پ۲۸، المجادلة:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं **अल्लाह** और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ालफ़त की अगर्चे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों येह हैं जिन के दिलों में **अल्लाह** ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी तरफ़ की रूह से उन की मदद की और

www.dawateislami.net

उन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहें इन में हमेशा रहें **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी येह **अल्लाह** की जमाअ़त है सुनता है **अल्लाह** ही की जमाअ़त कामयाब है।" (تفسیر روح المعانی، پ۲۸، المجادلۃ:۲۲، الجزء:۲۸، ص۳۲۳)

ग़ैरते सिद्दीक़े अक्बर और आप के बेटे

ग़ज़वए बद्र में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम क़बूल करने से पहले मुशरिकीन के साथ इस्लाम के ख़िलाफ़ बर सरे पैकार थे, जब वोह इस्लाम ले आए तो एक रोज़ हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से यूं हम कलाम हुवे : "अब्बा जान ! मैदाने बद्र में आप मेरी तलवार की ज़द में तो आए लेकिन मैं ने आप से क़त्ए नज़र की और आप को बाप समझ कर छोड़ दिया।" येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **ग़ैरते इमानी** से भरपूर जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : لٰکِنَّکَ لَوْ اَھْدَفْتَ لِیْ لَمْ اَنْصَرِفْ عَنْکَ "लेकिन तू मेरा हदफ़ बनता तो मैं तुझ से ए'राज़ न करता।" (या'नी ऐ बेटे ! उस दिन तुम ने तो मुझे इस लिये छोड़ दिया कि मैं तुम्हारा बाप हूं, लेकिन अगर तुम मेरी ज़द में आ जाते तो मैं कभी न देखता कि तुम मेरे बेटे हो बल्कि उस वक़्त तुम्हें दुश्मने रसूल समझ कर तुम्हारी गर्दन उड़ा देता)

(نوادرالاصول، الاصل الخامس والعشرون والمائۃ، الحدیث:۷۱۰، ج۱، ص۴۹۶۔۴۹۷، تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۱۲۸)

ग़ैरते सिद्दीक़े अक्बर और आप की बेटी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हर मुआ़मला प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की ख़ातिर होता था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस मुआ़मले में अपने वालिदैन और अवलाद वग़ैरा का भी लिहाज़ न फ़रमाते थे। चुनान्चे, एक दफ़्आ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी बेटी हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बुलन्द आवाज़ सुनाई दी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह कहते हुवे सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को थप्पड़ मारने के लिये हाथ उठा कर आगे बढ़े : اَلَا اَرَاکِ تَرْفَعِیْنَ صَوْتَکِ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم "या'नी येह मैं क्या देख रहा हूं कि तुम

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने अपनी आवाज़ बुलन्द कर रही हो ?" येह ह़ालत देख कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को थप्पड़ मारने से रोका। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه इसी त़रह़ ग़ुस्से की ह़ालत में वापस तशरीफ़ ले गए। दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़ौरन सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से फ़रमाया : "كَيْفَ رَأَيْتِنِي أَنْقَذْتُكِ مِنَ الرَّجُلِ" देखा ! मैं ने तुम्हें उन से किस त़रह़ बचाया।" चन्द दिनों के बा'द सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه काशानए नबवी में ह़ाज़िर हुवे तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को बाहम राज़ी और ख़ुश देखा तो बारगाहे रिसालत में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : أَدْخِلَانِي فِي سِلْمِكُمَا كَمَا أَدْخَلْتُمَانِي فِي حَرْبِكُمَا या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस त़रह़ आप ने मुझे अपनी शकर रन्जी में शरीक किया था इसी त़रह़ मुझे अपनी सुल्ह़ (ख़ुशी) में भी शरीक फ़रमा लीजिये।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "قَدْ فَعَلْنَا قَدْ فَعَلْنَا या'नी हम ने आप को शरीक कर लिया ! शरीक कर लिया !"

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب ماجاء فی المزاح، الحدیث: ۴۹۹۹، ج۴، ص۳۹۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर की जुरअत व बहादुरी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने जैसे ही इस्लाम क़बूल फ़रमाया और इस की तब्लीग़ खुले आ़म शुरूअ़ की तो मुशरिकीने मक्का आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه और सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जानी दुश्मन बन गए, आप दोनों को अज़िय्यत में मुब्तला करना उन के नज़्दीक एक ज़रूरी अम्र था, लेकिन आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त और इन की ह़िमायत व मदद को उस्सासे ईमान क़रार दे रखा था और येह उस्सास ही ह़क़ीक़ी ईमान है, यक़ीनन सच्चा और ह़क़ीक़ी मुसलमान वोही है जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत के मुक़ाबिल अपनी जान, माल अवलाद वग़ैरा किसी चीज़ की क़त़अ़न परवाह न करे और

www.dawateislami.net

न ही दुन्या की ज़ाहिरी इ़ज़्ज़त व वजाहत उस की राह में ह़ाइल हो, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह बे मिसाल किरदार आप की बे नज़ीर **जुरअत व बहादुरी** है जिस का इन्हों ने हर मौक़अ़ पर शानदार मुज़ाहरा फ़रमाया, येही वजह है कि सह़ाबए किराम عَلَیۡھِمُ الرِّضۡوَان आप की जुरअत व बहादुरी के तज़्किरे करते नज़र आते हैं। चुनान्चे,

सब से ज़ियादा बहादुर

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡھَہُ الۡکَرِیۡم ने ख़ुत़्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ग़ज़्वए बद्र के रोज़ हम ने दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत और निगहदाश्त के लिये एक साइबान बनाया ताकि कोई काफ़िर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला कर के तक्लीफ़ न पहुंचा सके। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम में से कोई भी आगे नहीं बढ़ा, सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नंगी तल्वार हाथ में लिये आगे तशरीफ़ लाए और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास खड़े हो गए और फिर किसी काफ़िर को येह जुरअत न हो सकी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब भी फटके। इस लिये हम में सब से ज़ियादा बहादुर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही हैं।"

(کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، فضل الصدیق، الحدیث: ۳۵۶۸۵، ج۶، الجزء: ۱۲، ص ۲۳۵)

मुशरिकीन से रसूले ख़ुदा का दिफ़ाअ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वह़्दानिय्यत का ए'लान करने के बा'द जब मुशरिकीन ने आप को और हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अज़िय्यतें पहुंचाना शुरूअ़ कीं उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुशरिकीन की त़रफ़ से पहुंचाई जाने वाली तकालीफ़ को बड़े सब्रो तह़म्मुल के साथ बरदाश्त किया और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का निहायत ही जुरअत व बहादुरी के साथ मुशरिकीन के शर से दिफ़ाअ़ भी किया। चुनान्चे,

बद बख़्तो ! हलाक हो जाओ

हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से पूछा गया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मुशरिकीन के हाथों सब से

www.dawateislami.net

ज़ियादा तक्लीफ़ कब पहुंची ? फ़रमाया : "एक बार मुशरिकीन मस्जिदे ह़राम में बैठे सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और दीने इस्लाम के मुतअ़ल्लिक़ तबसेरा कर रहे थे कि अचानक ख़ुद हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी वहां तशरीफ़ ले आए, जब उन्हों ने आप को देखा तो सब ने आप को घेर लिया। वोह आप से जो भी पूछते आप सच बयान फ़रमा देते। कहने लगे : "तुम हमारे ख़ुदाओं के मुतअ़ल्लिक़ फ़ुलां फ़ुलां बात नहीं करते ?" फ़रमाया : "हां ! कहता हूं।" बस येह सुनना था कि वोह आप पर पिल पड़े और आप को तक्लीफ़ें देना शुरूअ़ कर दीं। एक शख़्स दौड़ता हुवा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचा और कहा : "तुम्हारे दोस्त को मुशरिकीन तकालीफ़ पहुंचा रहे हैं उन की मदद को पहुंचो।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दौड़ते हुवे मस्जिद में आए, देखा कि मुशरिकीन हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पकड़े हुवे हैं। आप ने आते ही इरशाद फ़रमाया : "**अरे बद बख़्तो ! हलाक हो जाओ**, क्या तुम ऐसे शख़्स को क़त्ल करना चाहते हो जो कहता है कि मेरा रब सिर्फ़ **अल्लाह** है।" मुशरिकीन ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को छोड़ कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पकड़ कर मारना शुरूअ़ कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाती हैं : "जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस आए तो आप की तकालीफ़ और ज़ख़्मों का येह ह़ाल था कि आप के सर मुबारक पर कहीं हाथ लगाया जाता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ुल्फ़ों के बाल उखड़ कर हाथ के साथ ही आ जाते थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते जाते थे : "یَارَبِّ ذُوالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام ! तू बड़ी बरकतों वाला है।"

(نوادرالاصول، الاصل الثانی عشروالمائتان، الحدیث:۱۰۷۵، ج۲، ص۷۷۸)

एक पागल से सामना

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **का'बतुल्लाह** शरीफ़ जा रहे थे कि क़ुरैश के एक पागल ने आप के सर पर मिट्टी डाल दी। इतने में वहां से वलीद बिन मुग़ीरा या आ़स बिन वाइल गुज़रा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की त़रफ़ देख कर कहा :

www.dawateislami.net

"इस बे वुक़ूफ़ की गन्दी ह़रकत तुम ने देख ली ?" तो वोह कहने लगा : "इस के ज़िम्मेदार तुम खुद हो (या'नी तुम्हें किस ने कहा था कि अपने आबाओ अजदाद का दीन छोड़ कर मुसलमान हो जाओ, येह तुम्हारे मुसलमान होने की सज़ा है) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने येह सुना तो तीन बार बारगाहे खुदावन्दी में अ़र्ज़ किया : "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू सब से बड़ा ह़लीम है।"

(البدایۃ والنہایۃ، ج ۲، ص ۴۵۲، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۹۴)

गर्दन में कपड़े का फन्दा

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से पूछा कि "मुशरिकीन ने ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सब से बड़ी तक्लीफ़ कब दी ?" फ़रमाया : "एक बार मैं ने देखा कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **का'बतुल्लाह** शरीफ़ में नमाज़ अदा फ़रमा रहे हैं, इतने में उ़क़्बा बिन अबी मुई़त़ ने आ कर आप की गर्दन में कपड़े का फन्दा डाल दिया और उसे ज़ोर से खींचने ही वाला था कि अचानक वहां ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه आ गए और उ़क़्बा को दोनों कन्धों से पकड़ कर दूर फेंका और आप को छुड़ा लिया। फिर फ़रमाया : "क्या तुम ऐसे शख़्स को क़त्ल करना चाहते हो जो कहता है कि मेरा रब सिर्फ़ अल्लाह है और इस पर तुम्हारे सामने अपने रब की त़रफ़ से क़वी दलाइल भी पेश कर चुका है।"

(صحیح البخاری، فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی لو کنت۔۔۔الخ، الحدیث: ۳۶۷۸، ج ۲، ص ۵۲۴، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۹۴)

मेरे मह़बूब का क्या ह़ाल है ?

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि आग़ाज़े इस्लाम में जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा की ता'दाद अड़तीस हो गई तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ए'लान व इज़्हारे इस्लाम के लिये इजाज़त त़लब की, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! हम अभी ता'दाद में कम हैं।" मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه इस्रार फ़रमाते रहे यहां तक कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने इज़्हारे इस्लाम की इजाज़त मर्हमत फ़रमा दी। चुनान्चे मुसलमान मस्जिदे ह़राम के आस पास के अ़लाक़े में फैल गए, हर शख़्स अपने ख़ानदान को इस्लाम की दा'वत पेश करने लगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों को ख़ुत़्बए इस्लाम देने के लिये खड़े हुवे और वहां रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी तशरीफ़ फ़रमा थे। इस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ए'लानिय्या लोगों को **अल्लाह** और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ बुलाने वाले पहले ख़त़ीब का शरफ़ ह़ासिल हुवा। मुशरिकीने मक्का ने जब मुसलमानों को खुल्लम खुल्ला दा'वते इस्लाम देते हुवे देखा तो उन का ख़ून खोल उठा और वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व दीगर मुसलमानों पर टूट पड़े और उन्हों ने मुसलमानों को मारना पीटना शुरूअ़ कर दिया, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी निहायत ही बुरी त़रह़ मारा और इन्हें पाउं से रौंदा ह़त्ता कि उ़त्बा बिन रबीआ़ ख़बीस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़रीब आया और अपने नापाक जूते आप के मुबारक चेहरे पर मारने लगा और आप के पेट पर चढ़ कर उछल कूद करने लगा और आप को मार मार के इतना ज़ख़्मी कर दिया कि आप का चेहरा पहचाना नहीं जाता था, नीज़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बेहोश हो गए। जब आप के क़बीले बनू तैम के लोगों को पता चला तो वोह दौड़ते हुवे आए और मुशरिकीन को आप से दूर किया, और एक कपड़े में डाल कर आप के घर ले गए, आप की तश्वीशनाक ह़ालत देख कर उन्हें ऐसा लगा कि आप ज़िन्दा न रह पाएंगे इस लिये उन्हों ने बैतुल्लाह में आ कर ए'लान किया कि "**अगर अबू बक्र ज़िन्दा न रहे तो हम इन के बदले में उ़त्बा बिन रबीआ़ को ज़रूर क़त्ल करेंगे।**" येह ए'लान कर के वोह दोबारा आप के पास आ गए, आप के वालिद अबू क़ुह़ाफ़ा और बनू तैम के लोग बहुत परेशान थे, मुसलसल आप से गुफ़्तगू करने की कोशिश कर रहे थे। बिल आख़िर दिन के आख़िरी ह़िस्से में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को होश आ गया। जब उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त की तो आप की ज़बान से सब से पहला जुम्ला येह निकला कि "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस ह़ाल में हैं?" आप की येह बात सुन कर क़बीले के कई लोग नाराज़ हो कर चले गए कि जिस की ख़ात़िर येह नौबत आई अभी तक उसी का नाम ले रहे हैं। लोगों ने आप की वालिदा उम्मुल ख़ैर को कहा कि "इन्हें कुछ खिलाएं पिलाएं।" आप की वालिदा जब कुछ खाने पीने के लिये कहतीं तो आप सिर्फ़ एक ही जुम्ला कहते :

www.dawateislami.net

"रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस ह़ाल में हैं ? मुझे सिर्फ़ उन की ख़बर दो।" येह ह़ालत देख कर आप की वालिदा कहने लगीं : "**अल्लाह** की क़सम ! मुझे आप के दोस्त की ख़बर नहीं कि वोह किस ह़ाल में हैं ?" आप ने कहा : "आप उम्मे जमील बिन्ते ख़त्ताब (या'नी उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहन और ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा) के पास चली जाएं और उन से हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में दरयाफ़्त करें। आप की वालिदा दौड़ी दौड़ी उम्मे जमील बिन्ते ख़त्ताब के पास आईं और कहा कि "मेरा बेटा अबू बक्र आप से अपने दोस्त मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह के बारे में पूछ रहा है कि वोह कैसे हैं ?" (उम्मे जमील भी इस्लाम तो ला चुकी थीं चूंकि इन्हें अभी इस्लाम ख़ुफ़्या रखने का हुक्म था इस लिये) इन्हों ने कहा : "मैं अबू बक्र और उन के दोस्त **मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह** को नहीं जानती, हां ! अगर आप चाहें तो मैं आप के साथ आप के बेटे के पास चलती हूं।" दोनों ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचीं तो उम्मे जमील बिन्ते ख़त्ताब आप को ज़ख़्मी और निढाल देख कर बे साख़्ता पुकार उठीं : "ख़ुदा की क़सम ! उन लोगों ने फ़ासिक़ों और काफ़िरों की ख़ातिर आप को येह अज़िय्यत दी है मुझे उम्मीद है कि **अल्लाह** तआ़ला उन से ज़रूर बदला लेगा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से येही पूछा कि : "**रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस ह़ाल में हैं ?" उन्हों ने आप की वालिदा की त़रफ़ इशारा किया कि येह सुन रही हैं। आप ने फ़रमाया : "इन की फ़िक्र न करो तुम बयान करो।" उन्हों ने कहा : "आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मह़फ़ूज़ हैं और बिल्कुल ख़ैरिय्यत से हैं।" आप ने पूछा : "हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस वक़्त कहां हैं ?" उन्हों ने जवाब दिया : "दारे अरक़म में तशरीफ़ फ़रमा हैं।" फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! मैं उस वक़्त तक न कुछ खाऊंगा और न पियूंगा जब तक सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ब ज़ाते ख़ुद न देख लूं।" बहर ह़ाल जब सब लोग चले गए तो आप की वालिदा और उम्मे जमील बिन्ते ख़त्ताब येह दोनों आप को सहारा दे कर सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले गईं। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इस आ़शिक़े ज़ार को देखा तो आबदीदा हो गए और आगे बढ़ कर थाम लिया, इन के बोसे लेने लगे। येह पुर बहार मुआ़मला देख कर तमाम मुसलमान भी फ़र्ते जज़्बात में आप की त़रफ़ लपके। आप को ज़ख़्मी देख कर

www.dawateislami.net

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर बड़ी रिक़्क़त त़ारी हुई। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान, मैं ठीक हूं बस चेहरा थोड़ा ज़ख़्मी हो गया है।" जिस दिन आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को तकालीफ़ दी गईं उसी रोज़ आप की वालिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मुल ख़ैर सुलमी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا और ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه भी इस्लाम ले आए थे।

(تاريخ مدينه دمشق، ج ٣٠، ص ٤٩، البداية والنهاية، ج ٢، ص ٣٦٩)

मुह़म्मद की महब्बत में हज़ारों ज़ुल्म सहते थे
ख़ुदा पर थी नज़र उन की ज़बां से कुछ न कहते थे
नहीं सरकार ! ज़ाती दुश्मनी मेरी किसी से भी
मेरी है आप की ख़ातिर लड़ाई या रसूलल्लाह !
येही है जुर्म मेरा आप का मैं अदना ख़ादिम हूं
है मैं ने आप से ही लौ लगाई या रसूलल्लाह !
किसी सूरत भटक सकता नहीं मैं तेरी उल्फ़त से
मुझे ह़ासिल है तेरी रहनुमाई या रसूलल्लाह !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

त़वाफ़े का'बा से रोक दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि उस दिन सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुशरिकीने मक्का से सब से ज़ियादा अज़िय्यत पहुंची थी जब आप चाश्त के वक़्त त़वाफ़े का'बा फ़रमा रहे थे कि मुशरिकीन आप के रास्ते में ह़ाइल हो गए और त़वाफ़ से रोक दिया और आप के दोनों कन्धे पकड़ कर झन्झोड़ते हुवे बोले : "क्या तुम ही हो जो हमें अपने आबाओ अजदाद के ख़ुदाओं की परस्तिश से मन्अ़ करते हो ?" आप ने फ़रमाया : "हां ! मैं ऐसा ही करता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه आप के पीछे पीछे थे, जब येह मुआ़मला देखा तो फ़ौरन सामने आ गए और रोते हुवे इरशाद

www.dawateislami.net

फ़रमाने लगे : "क्या तुम ऐसे शख़्स को मारना चाहते हो जो येह कहता है कि मेरा मा'बूद सिर्फ़ एक **अल्लाह** है और वोह अपनी नबुव्वत पर वाज़ेह़ दलाइल भी पेश कर चुका है, अगर वोह ग़लत़ बयानी और झूट से काम लेता है तो येह खुद उस के लिये वबाल है और अगर वोह अपनी बात में सच्चा है तो उस की बात मान लेने में तुम्हारी आ़क़िबत की खै़र है।"

(السنن الکبری للنسائی، سورۃ غافر، الحدیث:۱۱۴۶۲، ج۶، ص۴۴۹، نوادرالاصول، الاصل الثانی عشر والمائتان الحدیث:۱۰۷۵، ج۲، ص۷۷۷، الریاض النضرۃ، ج۲، ص۹۴)

दुश्मन की नज़रों से ओझल

ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि जब येह आयत नाज़िल हुई : "تَبَّتْ یَدَاۤ اَبِیْ لَهَبٍ وَّ تَبَّ ؕ (پ۳۰، اللھب:۱) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तबाह हो जाएं अबू लहब के दोनों हाथ और वोह तबाह हो ही गया।" तो अबू लहब की बीवी उम्मे जमील औ़रा बिन्ते ह़र्ब चीख़ती चिंगाड़ती हाथ में पथ्थर लिये आई और कहने लगी : "हम अपनी मज़म्मत करने वाले की मुख़ालफ़त करते हैं, उस के दीन के दुश्मन हैं और जिस बात की वोह दा'वत दे रहा है उसे कभी तस्लीम न करेंगे।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिदे ह़राम में जल्वा गर थे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी आप के साथ ही थे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे अपनी त़रफ़ आते देख कर कहा : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह औ़रत आप की त़रफ़ आ रही है कहीं आप को देख न ले।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह हरगिज़ मुझे न देख सकेगी, फिर आप ने क़ुरआन पढ़ना शुरूअ़ कर दिया और उस की नज़रों से ओझल हो गए क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पारह 15 सूरए बनी इस्राईल, आयत 45 में इरशाद फ़रमाता है : "وَ اِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَیْنَكَ وَ بَیْنَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ऐ मह़बूब ! तुम ने क़ुरआन पढ़ा हम ने तुम पर और उन में कि आख़िरत पर ईमान नहीं लाते एक छुपा हुवा पर्दा कर दिया।" जब वोह औ़रत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आ कर खड़ी हुई तो नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को न देख पाई, बोली : "अबू बक्र ! तेरे दोस्त ने मेरी मज़म्मत की है।" फ़रमाया : "रब्बे का'बा की क़सम ! उन्हों ने हरगिज़ तेरी मज़म्मत नहीं की।" तो वोह येह कहती हुई चली गई कि "सारे क़ुरैश को पता है कि मैं उन के सरदार की बेटी हूं।"

(تاریخ الاسلام للذھبی، ج۱، ص۱۴۶، المطالب العالیۃ للعسقلانی، کتاب التفسیر، سورۃ تبت، الحدیث:۳۷۹۷، ج۸، ص۳۰۶، الریاض النضرۃ، ج۱، ص۹۵)

www.dawateislami.net

आले फ़िरऔ़न के मोमिन से बेहतर

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم इरशाद फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं ने देखा कि कुफ़्फ़ारे कु़रैश ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गु़यूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को घेरे रखा है और आप को मुख़्तलिफ़ कि़स्म की तक्लीफ़ें दे रहे हैं, एक शख़्स आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दस्त दराज़ी कर रहा है तो दूसरा निहायत ही सख़्ती से ज़दो कोब कर रहा है और वोह साथ ही साथ येह बकवास भी करता जा रहा है कि "तू ही है जिस ने तमाम ख़ुदाओं को छोड़ कर एक ख़ुदा बना लिया है।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! उस वक़्त प्यारे आक़ा, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कोई भी क़रीब न गया सिवाए हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के, आप एक कु़रैशी को पीटते और दूसरे को धक्का देते तीसरे पर दबाव डालते हुवे सब को पीछे हटाने लगे और साथ साथ येह भी फ़रमाते जाते : "अफ़्सोस है तुम पर ! ऐसी शख़्सिय्यत को शहीद करना चाहते हो जिस का कहना है कि मेरा रब **अल्लाह** है।"

येह फ़रमाने के बा'द हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने ऊपर से चादर उठाई और ज़ारो क़तार रोने लगे और इतना रोए कि आप की रीश मुबारक आंसूओं से तर हो गई, फिर इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें ख़ुदा का वासित़ा दे कर पूछता हूं मुझे बताओ कि "आले फ़िरऔ़न का मोमिन बरतर था या हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ?" तमाम लोग ख़ामोश रहे। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मुझे जवाब क्यूं नहीं देते ? ख़ुदा की क़सम ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की हयाते तय्यिबा का एक लम्हा आले फ़िरऔ़न के मोमिन जैसे शख़्स के हज़ारों लम्हात से बेहतर है, अरे वोह शख़्स तो अपने ईमान को छुपाया करता था और येह पाकीज़ा हस्ती अपने ईमान का ए'लानिय्या इज़्हार करती थी।"

(مسند البزار، وسما روی محمد بن عقیل عن علی، الحدیث: ۷۶۱، ج۳، ص ۱۴، تاریخ الخلفاء، ص ۲۸)

www.dawateislami.net

आले फ़िरऔ़न का मोमिन कौन था ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला ह़दीस में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने आले फ़िरऔ़न के जिस मोमिन का ज़िक्र फ़रमाया है वोह क़िब्ती़ क़ौम का एक फ़र्द था जो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान ला चुका था लेकिन उस ने अपना ईमान छुपाया हुवा था, अपनी क़ौम को अपने ईमान से आगाह नहीं किया था उस ने जब सुना कि फ़िरऔ़न अपने रुफ़क़ा के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को क़त्ल करने के मन्सूबे बना रहा है तो उस ने उन को इस इरादे से बाज़ रखने की तलक़ीन शुरूअ़ की, पहले तो उस ने उन्हें झिड़का कि "तुम मूसा (عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के दरपे क्यूं हो ? उस ने तुम्हारा क्या जुर्म किया है ? उस ने कौन सी क़ानून शिकनी की है ? महज़ इस लिये तुम उसे क़त्ल करना चाहते हो कि वोह कहता है : मेरा परवर दगार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है और उस ने अपने अ़क़ीदे की ह़क़्क़ानिय्यत दलाइल व मो'जिज़ात से साबित कर दी है। तुम्हारा मुआ़शरा तो बड़ा तरक़्क़ी याफ़्ता है तुम उन के ज़ाती अ़क़ीदे में क्यूं दख़्ल देते हो ? उन को अपने ह़ाल पर छोड़ दो। अगर बिलफ़र्ज़ वोह ग़लत़ है तो खुद ही अपने अन्जाम तक पहुंच जाएगा हमें अपने हाथ उस के ख़ून से रंगने की क्या ज़रूरत है ?" इस मोमिन का ज़िक्र पारह 24, सूरतुल मोअमिन, आयत नम्बर 28 में यूं किया गया है :

﴿وَ قَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ یَكْتُمُ اِیْمَانَهٗۤ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ یَّقُوْلَ رَبِّیَ اللّٰهُ وَ قَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَیِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَ اِنْ یَّكُ كَاذِبًا فَعَلَیْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَ اِنْ یَّكُ صَادِقًا یُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِیْ یَعِدُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یَهْدِیْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और बोला फ़िरऔ़न वालों में से एक मर्दे मुसलमान कि अपने ईमान को छुपाता था क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो कि वोह कहता है मेरा रब **अल्लाह** है और बेशक वोह रोशन निशानियां तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से लाए और अगर बिलफ़र्ज़ वोह ग़लत़ कहते हैं तो उन की ग़लत़ गोई का वबाल उन पर और अगर वोह सच्चे हैं तो तुम्हें पहुंच जाएगा कुछ वोह जिस का तुम्हें वा'दा देते हैं बेशक **अल्लाह** राह नहीं देता उसे जो ह़द से बढ़ने वाला बड़ा झूटा हो।"

www.dawateislami.net

सब से पहले पलटने वाले मुहाफ़िज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी वफ़ाओं के महकते फूल जो सरवरे दो आलम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में निछावर किये इस का एक अज़ीम मुज़ाहरा जंगे उहुद के दिन देखा गया जब ख़ारा शिगाफ़ तल्वारें मैदाने कारज़ार में चल रही थीं, हर तरफ़ जंगी ना'रों का शोर बरपा था इन होशरुबा मनाज़िर में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक कोहे बे सुतून नज़र आ रहे थे और हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अपनी जान को तश्ते इख़्लास में रख कर पेश कर रहे थे, वोह उहुद की जंग जिस में सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की जानी कुरबानियां देख कर शेरों का पित्ता भी पानी हो रहा था हज़रते सय्यिदुना मुस्अब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए तृय्यिबा के पहले मुअ़ल्लिमे अ़लम बरदारे इस्लाम, नीज़ हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी जामे शहादत नोश कर चुके थे, यक़ीनन इन जांकाह व जिगर फ़रसा मनाज़िर को देख कर जिगर को थामना मुश्किल हो जाता है ऐसे में सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जंग में इस तरह मसरूफ़ हुवे कि लड़ते लड़ते बहुत दूर निकल गए अगर कोई महबूबे खुदा के क़रीब था तो वोह सिर्फ़ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही थे । चुनान्चे, उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है, फ़रमाती हैं : "उहुद के दिन जब तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से जुदा हो गए थे तो सब से पहले सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आप की हिफ़ाज़त के लिये हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस पलटे ।" (تاریخ مدینۃ دمشق، ج۲۵، ص۷۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर की सख़ावत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने न सिर्फ़ इस्लाम की तब्लीग़ की बल्कि दीने इस्लाम की मदद व नुस्रत के लिये खुले दिल से

www.dawateislami.net

अपना ज़ाती माल भी ख़र्च किया, मज़्लूम व मसाकीन मुसलमानों की जो माली इमदाद आप ने की उस दौर में किसी ने न की, आ'ला दरजे के सख़ी और निहायत ही वसीअ़ ज़र्फ़ थे। मुशरिकीने मक्का उन लोगों को ख़ास तौ़र पर बे दर्दी के साथ ज़ुल्मो सितम का हदफ़ बनाते थे जिन का तअ़ल्लुक़ कमज़ोर घरानों से होता या जो ग़ुलामी की ज़िन्दगी बसर करते थे और कोई उन का पुरसाने ह़ाल न था, ऐसे मज़्लूम व मक़्हूर और सितम ज़दा लोगों को ज़ुल्मो सितम और क़ह्‌रो जब्र से आज़ाद करवाना आप की आ'ला सिफ़ात में शामिल था बल्कि आप मज़्लूमीन व मुस्तह़िक़ीन की तलाश में रहा करते थे जहां कोई ऐसा शख़्स मिलता उस की मदद करना अपने ऊपर लाज़िम कर लेते, जिस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी गुफ़्तार में ह़लीम थे इसी त़रह़ अपनी आ़दातो अत़्वार में भी मुसलमानों के सच्चे मुईन थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सख़ावत के चन्द गोशे पेशे ख़िदमत हैं :

आयते मुबारका और सख़ावते सिद्दीके़ अक्बर

﴿الَّذِیْ یُؤْتِیْ مَالَهٗ یَتَزَكّٰى﴾(پ۳۰،اللیل:۱۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "जो अपना माल देता है कि सुथरा हो।" येह आयत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की माली सख़ावत पर दलील है और मुफ़स्सिरीने किराम का इस बात पर इजमाअ़ है कि येह आयते मुबारका आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही के ह़क़ में नाज़िल हुई।

इस्लाम की माली ख़िदमत

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि एक कारोबारी आदमी थे और कपड़े का वसीअ़ कारोबार करते थे, लिहाज़ा जिस दिन इस्लाम लाए आप के पास चालीस हज़ार दिरहम या दीनार थे, सारे के सारे राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दिये।

(الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، عبداللہ بن ابی قحافۃ، الرقم: ۱۶۵۱، ج۳، ص۹۴، تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۶۶)

आ़क़िबत अल्लाह के ज़िम्मए करम पर

एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सदक़ा ले कर ह़ाज़िर हुवे और छुपा कर इसे पेश किया और अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर ही मेरी आ़क़िबत मौक़ूफ़ है।"

(حلیۃ الاولیاء، ابوبکر الصدیق، الحدیث: ۲۹، ج ۱، ص ۲۶)

रसूलुल्लाह की माली ख़िदमत

इस्लाम क़बूल करने के बा'द से हिजरते मदीना तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम की माली ख़िदमत करते रहे लिहाज़ा हिजरत के वक़्त आप के पास कुल माल पांच या छे हज़ार दिरहम था जो आप ने अपने साथ ले लिये। (और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर सर्फ़ कर दिये।) (السیرۃ النبویۃ لابن ہشام، ہجرۃ الرسول، ابوقحافۃ و اسماء بعد ہجرۃ ابی بکر، ج ۱، ص ۴۴۱)

रसूले ख़ुदा की गवाही

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इतनी माली ख़िदमत की, कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद इरशाद फ़रमाया : "मुझे किसी के माल ने इतना फ़ाइदा न दिया जितना अबू बक्र सिद्दीक़ के माल ने दिया।"

(سنن ابن ماجۃ، کتاب السنۃ، باب فی فضائل اصحاب رسول اللہ، الحدیث: ۹۴، ج ۱، ص ۷۲)

अपने ही माल जैसा तसर्रुफ़

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के माल में अपने माल जैसा ही तसर्रुफ़ फ़रमाते थे।

(المصنف لعبد الرزاق، کتاب الجامع، باب اصحاب النبی، الحدیث: ۲۰۴۸۴، ج ۱۰، ص ۲۲۲)

मुसलमानों की माली ख़िदमत

ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने माली ख़िदमत का ऐसा अ़ज़ीम मुज़ाहरा फ़रमाया कि तारीख़ में इस की मिसाल नहीं मिलती, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना सारा माल इस्लाम और मुसलमानों पर निछावर कर दिया ह़त्ता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे तो बबूल के कांटों वाला चोग़ा पहने हुवे थे।

(تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۳۰، ص ۷۱)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर का गुलामों को आज़ाद करना

ख़ैर ख़्वाही का बे मिसाल जज़्बा

हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ऐसे सात गुलाम ख़रीद कर आज़ाद किये जिन्हें राहे ख़ुदा में बहुत तकालीफ़ दी जाती थीं। इन में हज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी और सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी हैं। (مجمع الزوائد، کتاب المناقب، باب جامع من فضلہ، الحدیث: ۱۴۳۴۰، ج ۹، ص ۳۵)

सात गुलामों के नाम

हज़रते हिशाम बिन उ़र्वा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने राहे ख़ुदा में सताए जाने वाले जिन गुलामों को ख़रीद कर आज़ाद किया उन के नाम येह हैं : (1) सय्यिदुना बिलाल (2) सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा (3) सय्यिदुना ज़ुबैर (4) सय्यिदतुना उम्मे उ़बैस (5) सय्यिदतुना नहदिय्या (6) उन की बेटी (7) और इब्ने अ़म्र बिन मोमिल की लौंडी। (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) (الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۳۳)

100 ऊक़िया सोना

हज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस्लाम लाने के बा'द बहुत अज़िय्यतें दी जाती थीं, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को पांच ऊक़िया (तक़रीबन 32 तोले) सोना अदा कर के ख़रीदा तो फ़रोख़्त करने वालों ने कहा : "अबू बक्र ! अगर तुम सिर्फ़ एक ऊक़िया सोने पर अड़ जाते तो हम इतनी क़ीमत में ही इसे फ़रोख़्त कर देते।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "अगर तुम सो ऊक़िया सोना मांगते तो मैं वोह भी दे देता और बिलाल को ज़रूर ख़रीदता।"

(الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۳۳)

www.dawateislami.net

सख़्त आज़माइश

हज़रते सय्यिदुना बिलाले हबशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन की वालिदा का नाम हमामा है, येह सच्चे मोमिन और पाकीज़ा दिल गुलाम थे, इन का मालिक **उमय्या बिन ख़लफ़** इन्हें सख़्त कड़कती धूप में ले जा कर मक्का से बाहर दहकती हुई रैत पर चित लिटा कर सीने पर एक बड़ा पथ्थर रख देता और कहता : "**मुहम्मद** का इन्कार करो हमारे ख़ुदाओं की परस्तिश करो, नहीं तो यूंही बिलकते मर जाओगे।" हज़रते सय्यिदुना बिलाले हबशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सिर्फ़ येही जवाब देते : "**اَحَد اَحَد** (या'नी **अल्लाह** सिर्फ़ एक है, वोह ला शरीक है) बसा अवक़ात सय्यिदुना वरक़ा बिन नौफ़ल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का वहां से गुज़र होता तो सय्यिदुना बिलाले हबशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आवाज़ सुन कर वोह भी **اَحَد اَحَد** पुकार उठते, फिर वोह उमय्या से मुख़ातब होते : "अगर तुम ने इसे इसी तरह जान से मार दिया तो मुझे इन्तिहाई सदमा होगा।" (الرياض النضرة، ج ۱، ص ۱۳۳ تا ۱۳۴)

हज़रते सय्यिदुना बिलाल की आज़ादी

एक दिन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस जगह से गुज़रे जहां हज़रते सय्यिदुना बिलाले हबशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ुल्म का निशाना बनाया जा रहा था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक्की घर **बनी जुमह** में था। आप ने उमय्या बिन ख़लफ़ को डांटते हुवे कहा : "इस मिस्कीन को सताते हुवे तुझे **अल्लाह** से डर नहीं लगता ? कब तक ऐसा करता रहेगा ?" वोह कहने लगा : "अबू बक्र ! तुम ने ही इसे ख़राब (या'नी मुसलमान) किया है तुम ही इसे छुड़ा लो।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मेरे पास बिलाल से ज़ियादा तन्दुरुस्त व तुवाना गुलाम है, बिलाल मुझे दे कर वोह तुम ले लो।" कहने लगा : "मन्ज़ूर है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुछ रक़म और गुलाम के इवज़ उन्हें ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मज़ीद छे ऐसे गुलाम आज़ाद किये। सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा, सय्यिदतुना उम्मे उ़बैस, सय्यिदतुना ज़ुबैरा। सय्यिदतुना ज़ुबैरा को जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आज़ाद किया तो इन की बीनाई ज़ाइल हो गई। क़ुरैश ने येह देख कर कहा : "लात व उ़ज़्ज़ा ने इस की बीनाई सल्ब कर ली है।" सय्यिदतुना ज़ुबैरा कहने लगीं : "येह झूट कहते हैं, बैतुल्लाह की क़सम ! लात व उ़ज़्ज़ा न तो किसी को नफ़्अ़ दे सकते हैं और न ही कोई नुक़्सान।" येह कहना था कि इन की बीनाई लौट आई। इसी तरह

www.dawateislami.net

सय्यिदतुना नहदिय्या और इन की बेटी दोनों बनी अ़ब्दुद्दार की एक औ़रत की लौंडियां थीं एक रोज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां से गुज़रे तो देखा कि इन की मालकिन ने इन दोनों को चक्की पर काम करने के लिये भेजा हुवा है और वोह गुस्से में कह रही थी : "ख़ुदा की क़सम मैं इन दोनों को कभी आज़ाद नहीं करूंगी।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ फ़ुलां औ़रत ! क़सम न उठा।" उस ने कहा : "ऐ अबू बक्र ! तू ने ही इन्हें ख़राब किया है (या'नी मुसलमान बना दिया है) तू ही इन्हें आज़ाद करवा ले।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इन की कितनी क़ीमत है ?" जैसे ही उस ने क़ीमत बताई आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की अदाएगी कर दी और इरशाद फ़रमाया : "येह दोनों आज़ाद हैं।" फिर इन दोनों से फ़रमाया : "इस की चक्की इसे वापस कर दो।" वोह दोनों कहने लगीं : "काम से फ़ारिग़ हो कर या अभी ?" फ़रमाया : "जैसे तुम्हारी मरज़ी।" इस के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक और लौंडी के पास से गुज़रे, जो **बनी अ़दी** के एक ख़ानदान **बनी मौमल** के हां ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास थी वोह उसे बहुत सख़्त तक्लीफ़ें दिया करते थे ताकि वोह इस्लाम छोड़ दे क्यूंकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस वक़्त इस्लाम नहीं लाए थे, जब उसे मार मार कर थक जाते तो कहते : "मैं ने तुझ पर रह़म कर के नहीं छोड़ा, मैं थक गया हूं अभी, फिर सज़ा दूंगा।" वोह भी इन्हें बुरा भला कहती। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस लौंडी को भी ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। (الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۳۴)

शाने सिद्दीक़े अक्बर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायात से मा'लूम होता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही शफ़ीक़ व मेहरबान थे, किसी मोमिन को तक्लीफ़ में मुब्तला न देख सकते थे, बल्कि अपने मालो मताअ़ को उस की जान पर फ़ौक़िय्यत देते थे। इसी वजह से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सात(7) गुलामों को ख़रीद कर आज़ाद फ़रमा दिया। दूसरा येह कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शुरूअ़ से ही नेक ख़स्लत थे और कुफ़्फ़ार भी जानते थे कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नेकियों में सबक़त करते हैं।

www.dawateislami.net

अल्लाह और उस का रसूल ही काफ़ी है

एक बार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया कि "अपना माल राहे ख़ुदा में जिहाद के लिये सदक़ा करो।" इस फ़रमाने आ़लीशान की ता'मील में मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने ह़स्बे तौफ़ीक़ अपना माल राहे ख़ुदा में जिहाद के लिये तसद्दुक़ किया। मगर आ़शिक़े अक्बर, यारे ग़ारे मुस्त़फ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना सारा माल ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप को देख कर बहुत ख़ुश हुवे और इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! घर वालों के लिये क्या छोड़ कर आए हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मह़ब्बत भरे लहजे में यूं अ़र्ज़ किया : "يَارَسُوْلَ اللّٰہ! اَبْقَیْتُ لَھُمُ اللّٰہَ وَرَسُوْلَہ" या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं अपने घर का सारा माल ले कर आप की बारगाह में ह़ाज़िर हो गया हूं और घर वालों के लिये **अल्लाह और उस का रसूल ही काफ़ी है।**" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह मन्ज़र देख कर ह़ैरान रह गए और कहने लगे कि "मैं कभी भी अबू बक्र सिद्दीक़ से आगे नहीं बढ़ सकता।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب عن رسول اللہ، باب فی مناقب ابی بکر وعمر، الحدیث: ۳۶۹۵، ج۵، ص۳۸۰، سنن دارمی، کتاب الزکوۃ، باب الرجل یتصدق ماعندہ، الحدیث: ۱۶۶۰، ج۱، ص۴۸۰، تاریخ الخلفاء، ص۳۰)

घर बार लुटा कर कहते हैं अल्लाह नबी ही काफ़ी है
क्या बात उजागर कहते हैं सिद्दीक़े अक्बर मेरे हैं

क्या पेश करें जानां क्या चीज़ हमारी है
येह दिल भी तुम्हारा है येह जां भी तुम्हारी है

मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रह़मते आ़लम
मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सिद्दीके अक्बर और मुख़्तलिफ़ उ़लूम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दीगर सिफ़ात के जामेअ़ होने के साथ साथ कई उ़लूम में भी महारत रखते थे । क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह मुख़्तलिफ़ उ़लूम का फ़ैज़ प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ब ह़ालते रुइय्यत खुद अ़त़ा फ़रमाया था । चुनान्चे,

दूध से भरा पियाला

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं ने ख़्वाब में देखा कि मुझे दूध से भरा एक पियाला पेश किया गया तो मैं ने उस से इतना पिया कि पेट भर गया और मेरे जिस्म की तमाम रगों में दूध गर्दिश करने लगा । जो बच गया वोह मैं ने अबू बक्र को दे दिया ।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان फ़ौरन ख़्वाब की ता'बीर समझ गए और अ़र्ज़ किया : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दूध से मुराद वोह इ़ल्म होगा जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को अ़त़ा फ़रमाया और आप ने अपना बचा हुवा वोही इ़ल्म ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़त़ा फ़रमा दिया ।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''तुम ने दुरुस्त कहा ।''

(صحیح ابن حبان، اخبارہ صلی اللہ علیہ وسلم عن مناقب الصحابۃ، ذکر ابی بکر بن ابی قحافۃ، الحدیث: ۶۸۱۵، ج۲، الجزء: ۹، ص۳)

इ़ल्मे कु़रआन और सिद्दीके अक्बर

कु़रआन के सब से बड़े आ़लिम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में कु़रआन का सब से ज़ियादा इ़ल्म रखने वाले थे, इसी लिये हु़ज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का इमाम मुक़र्रर फ़रमाया, क्यूंकि खुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, हम गुनाहगारों के त़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''किसी क़ौम की इमामत का सब से ज़ियादा ह़क़दार वोह है जो **किताबुल्लाह** का सब से बड़ा आ़लिम है ।'' और ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा

www.dawateislami.net

सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस क़ौम में अबू बक्र हों उस क़ौम के लिये जाइज़ नहीं कि वोह इन के इ़लावा किसी को इमाम बनाए।" और इमामत का वोही ह़क़दार है जो क़ुरआन का सब से बड़ा आ़लिम हो, लिहाज़ा साबित हुवा कि सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ क़ुरआन के सब से बड़े आ़लिम हैं।

(صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب من احق بالامامۃ، الحدیث: ۲۸۹، ص ۳۳۷، سنن الترمذی، کتاب المناقب عن رسول اللہ، باب فی مناقب ابی بکر وعمر کلیھما، الحدیث: ۳۶۹۳، ج ۵، ص ۳۷۹، تاریخ الخلفاء، ص ۳۱ تا ۳۲)

इ़ल्मे ह़दीस और सिद्दीक़े अक्बर

ज़मानए नबवी में मुसलमानों को जब भी कोई शरई मस्अला दरपेश आता तो वोह फ़ौरन बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो जाते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन की रहनुमाई फ़रमाते लेकिन आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मसाइले शरइय्या में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाते थे क्यूंकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ही ह़दीस के बहुत बड़े आ़लिम थे। चुनान्चे,

ह़दीस के बहुत बड़े आ़लिम

जलीलुल क़द्र मुह़द्दिस व मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़दीस के बहुत बड़े आ़लिम थे, जब कभी किसी मौक़अ़ पर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को कोई मस्अला दरपेश होता तो सब ही आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ रुजूअ़ करते तो आप उन्हें दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीसे त़य्यिबा सुनाते जो आप के क़ल्बो बात़िन में नक़्श होती थीं। उ़मूमन ज़रूरत के वक़्त वोह ह़दीसे पाक पेश करते जिस के मुतअ़ल्लिक़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को इ़ल्म नहीं होता था और क्यूं न हो कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ तो बिअ़्सते नबवी से ले कर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी तक सफ़र व ह़ज़र हर जगह आप की सोह़बत में ही रहे।

www.dawateislami.net

अह़ादीस के मुआ़मले में सब से पहले एह़तियात़ करने वाले

ह़ज़रते अ़ल्लामा शम्सुद्दीन ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه वोह पहले शख़्स हैं जिन्हों ने सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अह़ादीसे मुबारका लेने में सब से पहले एह़तियात़ फ़रमाई ।" (تذکرۃ الحفاظ للذھبی، ج ۱، ص ۹)

बहुत कम अह़ादीस मरवी होने की वजह

अगर्चे आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ह़दीस के बहुत बड़े आ़लिम थे लेकिन आप से बहुत कम अह़ादीस मरवी होने की वजह येह है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه थोड़ा ही अ़र्सा ज़िन्दा रहे अगर आप की मुद्दते ख़िलाफ़त मज़ीद त़ूल पकड़ती तो यक़ीनन आप से बे शुमार अह़ादीसे मरवी होतीं, आप से ह़दीसे नक़्ल करने वालों ने हर ह़दीस नक़्ल कर ली लेकिन आप की मुद्दते ख़िलाफ़त में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से कोई भी इस बात का मोह़ताज न था कि वोह आप से वोही रिवायत आगे नक़्ल करे जिस में वोह बज़ाते ख़ुद आप के साथ शरीक है इस लिये सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से सिर्फ़ वोही अह़ादीस नक़्ल करते थे जो उन के पास नहीं होती थीं । (تاریخ الخلفاء، ص ۳۲)

इ़ल्मे ता'बीर और सिद्दीक़े अक्बर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अह़ादीसे मुबारका में है कि इ़ल्मे ता'बीर या'नी ख़्वाबों की ता'बीर का इ़ल्म ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का एक इ़ल्मी मो'जिज़ा था और येह एक बदीही बात है कि जो चीज़ **नबिय्यल्लाह** का मो'जिज़ा होती है वोह यक़ीनन अफ़्ज़ल व आ'ला हुवा करती है । इ़ल्मे ता'बीर एक ऐसा इ़ल्म है जिस को जानने के लिये कई उ़लूम की मा'रिफ़त ज़रूरी है । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

www.dawateislami.net

दीगर उ़लूम के साथ साथ इ़ल्मे ता'बीर में भी माहिर थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उम्मते मुह़म्मदिय्या के सब से बड़े **मुअ़ब्बिर** या'नी ख़्वाबों की ता'बीर बयान करने वाले का ए'ज़ाज़ ह़ासिल था। चुनान्चे,

इ़ल्मे ता'बीर में महारत

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द उम्मत में सब से बड़े **मुअ़ब्बिर** या'नी ख़्वाबों की ता'बीर बयान करने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।"

(کنزالعمال، کتاب المعیشۃ، باب التعبیر، الحدیث:۴۲۰۰۴، ج۸، الجزء:۱۵، ص۲۱۹)

इ़ल्मे ता'बीर में महारत का राज़

इ़ल्मे ता'बीर में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की महारत का राज़ येह है कि आप ने येह इ़ल्म ख़ुद **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सीखा है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे ख़्वाबों की ता'बीर बताने का हुक्म दिया गया है नीज़ येह भी हुक्म दिया गया है कि येह इ़ल्म मैं अबू बक्र को सिखाऊं।" (تاریخ الخلفاء، ص۳۳)

ता'बीर बताने के लिये आप की तक़र्रुरी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने न सिर्फ़ इ़ल्मे ता'बीर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सीखा बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुद इन्हें इस काम के लिये मुक़र्रर फ़रमाने का हुक्म दिया गया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे इस बात का हुक्म दिया गया है कि ख़्वाबों की ता'बीर बताने के लिये अबू बक्र सिद्दीक़ को मुक़र्रर करूं।" (الروض الانیق فی فضل الصدیق، الحدیث التاسع والعشرون، ص۸۷)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर और ख़्वाबों की ता'बीर

आंगन में तीन चांद

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ख़्वाब देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के आंगन में तीन चांद आ गिरे हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने अपना येह ख़्वाब बयान किया। आप ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम्हारा ख़्वाब सच्चा है तो इस की ता'बीर येह है कि तुम्हारे घर में रूए ज़मीन की तीन बेहतरीन शख़्सिय्यत की तदफ़ीन होगी।" जब हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ आइशा ! येह तेरे ख़्वाब वाले तीन चांदों में सब से बेहतर चांद हैं।"

(الریاض النضرۃ،ج۱،ص۱۶۱،جمع الجوامع،مسندابی بکر الصدیق،الحدیث:۹۴۵،ج۱۱،ص۱۹۰)

सियाह व सफ़ेद बकरियां

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुर्हबील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन अपना ख़्वाब बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "मैं ने देखा कि मैं एक कूंएं से पानी निकाल रहा हूं, तो कुछ सियाह बकरियां मेरे पीछे पीछे आ गईं, फिर चन्द सफ़ेद बकरियां इन काली बकरियों के पीछे आ गईं और सफ़ेद बकरियां बढ़ते बढ़ते इतनी ता'दाद में हो गईं कि सियाह बकरियां इन में दिखाई न देती थीं।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस ख़्वाब की मैं ता'बीर बयान करता हूं, सियाह बकरियां अ़रब के लोग हैं जो आप पर ईमान लाएंगे, जब कि सफ़ेद बकरियों से मुराद आप पर ईमान लाने वाले अ़जमी लोग हैं जिन की इतनी कसीर ता'दाद आप पर ईमान लाएगी कि उन की कसरत की वजह से अ़रब दिखाई नहीं देंगे।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

की येह ता'बीर सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इसी त़रह़ की ता'बीर सह़री के वक़्त फ़िरिश्ते ने भी बताई है।" (تاریخ الخلفاء، ص۸۳، الریاض النضرۃ، ج۱، ص۱۶۰)

बारगाहे इलाही में पहले ह़ाज़िरी

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने शह्हाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक ख़्वाब देखा और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से यूं इरशाद फ़रमाया : "ऐ सिद्दीक़ ! मैं ने ख़्वाब देखा है कि हम दोनों एक साथ दौड़े फिर मैं तुम से अढ़ाई ज़ीने आगे निकल गया।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ख़्वाब की ता'बीर बयान करते हुवे अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला आप को अपने जवारे रह़मत में पहले त़लब करेगा (या'नी आप मुझ से पहले दुन्या से तशरीफ़ ले जाएंगे) और मैं आप के बा'द अढ़ाई साल ज़िन्दा रहूंगा।" (تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۲۱۸، الطبقات الکبری لابن سعد، ذکر الغار والھجرۃ الی المدینۃ، ج۳، ص۱۳۲)

ह़ालते ह़ैज़ में ज़ौजा से सोह़बत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : "ह़ुज़ूर ! मैं ने ख़्वाब देखा है कि मैं ख़ूनी पेशाब कर रहा हूं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तू अपनी बीवी के पास ह़ालते ह़ैज़ में जाता है, **अल्लाह** तआ़ला से मुआ़फ़ी मांग और दोबारा ऐसा न कर।"

(مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الایمان والنذور والکفارات، یقع علی المراۃ وھی حائض ماعلیہ، الحدیث:۴، ج۳، ص۴۸۸)

आप की ता'बीर, ज़बाने नबुव्वत से तस्दीक़

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि एक शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने ख़्वाब में देखा कि बादल के एक टुकड़े से शहद और घी टपक रहा है और लोग अपने

www.dawateislami.net

हाथों के चुल्लू बना कर उस शहद और घी को लेने की तगो दो कर रहे हैं, कोई ज़ियादा ले रहा है और कोई बहुत कम। फिर मैं ने आस्मान से एक रस्सी लटकी देखी, जिसे आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पकड़ कर ऊपर चढ़ गए, आप के बा'द एक शख़्स आया और रस्सी पकड़ कर ऊपर चढ़ गया, फिर एक और शख़्स आया और वोह भी रस्सी पकड़ कर ऊपर चढ़ गया, इस के बा'द तीसरा शख़्स आया और उस ने ऊपर चढ़ना चाहा तो रस्सी टूट गई, फिर वोह रस्सी जुड़ गई और वोह भी ऊपर चढ़ गया।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ख़्वाब सुनने के बा'द अ़र्ज़ किया : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर आप की इजाज़त हो तो इस ख़्वाब की ता'बीर मैं बयान करूं ?'' सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''हां अबू बक्र ! बयान करो।'' अ़र्ज़ करने लगे : ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बादल से मुराद इस्लाम है, घी और शहद से मुराद क़ुरआन, इस की मिठास और नर्मी है और जो लोग इसे ले रहे हैं वोह क़ुरआन की तिलावत करने वाले हैं कि कोई क़ुरआने पाक की तिलावत ज़ियादा करेगा और कोई बहुत कम। आस्मान से लटकी हुई रस्सी से मुराद वोह राहे ह़क़ है जिस पर आप क़ाइम हैं, और आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रिफ़्अ़त व बुलन्दी अ़ता फ़रमाई। आप के बा'द एक शख़्स आएगा जो इसी रास्ते पर चलता रहेगा और वोह भी कामयाब हो जाएगा, इस के बा'द भी एक शख़्स बिग़ैर किसी परेशानी के कामयाबी ह़ासिल कर लेगा, अलबत्ता इस के बा'द जो तीसरा शख़्स आएगा उसे इस राह में तकालीफ़ और परेशानियां लाह़िक़ होंगी लेकिन बिल आख़िर वोह भी कामयाबी का ज़ीना तै कर लेगा।''

(صحیح مسلم، کتاب الرویا، باب فی تاویل الرویا، الحدیث: ۲۲۶۹، ص ۱۲۴۶، صحیح البخاری، من لم یر الرؤیا لاول عابر۔۔الخ، الحدیث: ۷۰۴۶، ج ۴، ص ۴۲۴)

आयिन्दा काफ़िर हो जाने की पेशनगोई

उ़लमाए ह़क़ के रहबर, इल्मो अ़मल के अ़ज़ीम पैकर, बिइज़्ने रब्बे दावर ग़ैब की बातों से बा ख़बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िदमते सरापा इल्मो ह़िक्मत में ह़ाज़िर हो कर रबीआ़ बिन उमय्या बिन ख़लफ़ ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने कल रात ख़्वाब देखा है कि मैं सर सब्ज़ जगह पर था फिर बन्जर ज़मीन में पहुंच गया जहां कोई

www.dawateislami.net

पैदावार नहीं है और येह भी देखा है कि दोनों हाथ मिल गए और तौक़ की त़रह़ गर्दन में लटक गए हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर तू ने वाक़ेई येह ख़्वाब देखा है तो इस की ता'बीर येह है कि तू इस्लाम को छोड़ कर कुफ़्र इख़्तियार करेगा (या'नी मुर्तद हो जाएगा) अलबत्ता मेरे मुआ़मलात दुरुस्त रहेंगे और मेरे दोनों हाथ दुन्या की आलाइशों से पाक रहेंगे।" रावी कहते हैं कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में रबीआ़ मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا से रूम पहुंचा और क़ैसरे रूम के यहां जा कर नसरानी या'नी क्रिस्चैन हो गया। (تعبیرُ الرؤیا، ص ۵۴)

इ़ल्मे अन्साब और सिद्दीक़े अक्बर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! इस्लाम के इब्तिदाई दौर में कोई शो'बए रेकॉर्ड नहीं था ह़ालांकि जाएदादे मन्क़ूला व ग़ैरे मन्क़ूला और ख़ानदानी विरासत की तक़्सीम के लिये ऐसे रेकॉर्ड का होना ना गुज़ीर है, इसी त़रह़ निकाह़ की ह़िल्लत व ह़ुरमत, सुबूते रज़ाअ़त वग़ैरा उमूर के लिये अन्साब का जानना निहायत ही ज़रूरी है और उस वक़्त चूंकि काग़ज़ भी ईजाद नहीं हुवा था कि इस में ऐसे तमाम रेकॉर्ड मह़फ़ूज़ कर लिये जाते। इन ह़ालात में पेश आमद मसाइल के ह़ल के लिये एक ऐसे शख़्स की सख़्त ज़रूरत थी जो काग़ज़ी रेकॉर्ड के मुतबादिल अपने ज़ाती ह़ाफ़िज़े की मदद से जुम्ला क़बाइले अ़रब के अन्साब को अच्छी त़रह़ जाने और पूरी मा'लूमात को एक पूरे शो'बे की त़रह़ सह़ीह़ और बर वक़्त इस्ति'माल भी करे, इस तमाम क़बाइले अ़रब में सिर्फ़ एक शख़्सिय्यत को येह ए'ज़ाज़ ह़ासिल था कि वोह इन तमाम खुसूसिय्यात की जामेअ़ थी और वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्साबे अ़रब या'नी अ़रबों के नसब के बहुत बड़े आ़लिम थे बिल खुसूस क़बाइले क़ुरैश के माहिरे अन्साब थे, चुनान्चे,

इ़ल्मे अन्साब के उस्ताद

ह़ज़रते इब्ने इस्ह़ाक़, ह़ज़रते या'क़ूब बिन उ़त्बा رَحِمَهُمُ اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِم से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़अ़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पूरे अ़रब खुसूसन क़बीलए क़ुरैश के

www.dawateislami.net

नसब बयान करने में महारत रखते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : "मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इल्मे नसब हासिल किया है इस इल्म में मेरे वोही उस्ताद हैं क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पूरे अ़रब के माहिरे अन्साब थे।"

(الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، باب جبیر، ج ۱، ص ۳۰۴)

अन्साबे क़ुरैश में आप से मुशावरत

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की हिज्व करो, क्यूंकि इन पर अपनी हिज्व तीरों की बोछाड़ से ज़ियादा तक्लीफ़ देह है।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने रवाहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ पैग़ाम भेजा कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की हिज्व करो। उन्हों ने कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की हिज्व की लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पसन्द न आई। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ पैग़ाम भेजा और फिर हज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ पैग़ाम भेजा, जब हज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए तो आते ही अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अब वक़्त आ गया है आप ने शेर की त़रफ़ पैग़ाम भेजा है जो अपनी दुम से मारता है।" फिर अपनी ज़बान निकाल कर इस को हिलाने लगे और साथ ही अ़र्ज़ करने लगे : "उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को ह़क़ दे कर भेजा है ! मैं उन को अपनी ज़बान से इस त़रह़ चीर फाड़ कर रख दूंगा जिस त़रह़ चमड़े को फाड़ते हैं।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ ह़स्सान ! जल्दी न करो क्यूंकि तुम क़ुरैश की कैसे हिज्व करोगे जब कि मैं भी क़ुरैश से हूं, मेरे चचा का बेटा अबू सुफ़्यान भी क़ुरैश से है, लिहाज़ा तुम अबू बक्र सिद्दीक़ से मश्वरा कर लो क्यूंकि वोह **क़ुरैश के माहिरे अन्साब** हैं।" हज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास गए और उन से इस मुआमले में मुशावरत की, उन्हों ने फ़रमाया : "हिज्व से फ़ुलां फ़ुलां को निकाल दो और फ़ुलां फ़ुलां को शामिल कर लो।" हज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर लौट आए और बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर

www.dawateislami.net

हो कर अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप का नसब अलग कर दिया गया है, उस ज़ात की क़सम ! जिस ने आप को ह़क़ दे कर भेजा है मैं आप को उन से इस त़रह़ निकाल लूंगा जिस त़रह़ आटे में से बाल खींच लिया जाता है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ुरैश की हिज्व की तो क़ुरैश ने सुन कर कहा : "ह़स्सान के इन अश्आ़र को सुन कर लगता है कि इन की अबू बक्र ने मुआ़वनत की है।" जब सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह अश्आ़र सुने तो इरशाद फ़रमाया : "ह़स्सान ने कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की हिज्व कर के मुसलमानों को शिफ़ा दी या'नी इन का दिल ठन्डा कर दिया और कुफ़्फ़ार के दिलों को बीमार कर दिया या'नी उन्हें बहुत सख़्त तक्लीफ़ दी।" (صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابہ، باب فضائل حسان بن ثابت، الحدیث: ۲۴۹۰، ص ۱۳۵۲، اسد الغابہ، باب الحاء والسین، حسان بن ثابت، ج ۲، ص ۸، الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، حسان بن ثابت الانصاری، ج ۱، ص ۴۰۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ न सिर्फ़ अन्साबे क़ुरैश के माहिर थे बल्कि क़बाइले क़ुरैश के मुख़्तलिफ़ अफ़राद की इनफ़िरादी सिफ़ात पर भी अच्छी त़रह़ मुत्तलअ़ थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़ल्मे अन्साब में महारत पर दाल्ल एक मुनफ़रिद वाक़िआ़ पेशे ख़िदमत है। चुनान्चे,

इ़ल्मे अन्साब में महारत का ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم बयान फ़रमाते हैं कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़बाइले अ़रब के पास पहुंच कर उन्हें अपना तआ़रुफ़ करवाने और इस्लाम की दा'वत पेश करने का हुक्म दिया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने साथ ले लिया और मुख़्तलिफ़ मजालिसे अ़रब का दौरा किया। (ग़ालिबन येह वोह मजालिस थीं जहां अ़रबी लोग अय्यामे ह़ज में अपने अपने ख़ैमों के अन्दर बैठ कर सियासी उमूर पर तबादिलए ख़याल किया करते थे) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم बयान फ़रमाते हैं कि हम एक आ़म लोगों

www.dawateislami.net

की मजलिस में पहुंचे तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आगे बढ़े क्यूंकि वोह हमेशा नेकी में आगे आगे ही रहते थे और इल्मे अन्साब में भी माहिर थे, आप ने अहले मजलिस को सलाम किया और उन से पूछा कि :

۞.....“तुम्हारा तअ़ल्लुक़ किस क़ौम से है ?” वोह बोले : “**बनू रबीआ़** से ।”

۞.....आप ने फ़रमाया : “**बनू रबीआ़** के किसी बड़े क़बीले से हो या छोटे क़बीले से ?” वोह कहने लगे : “बड़े क़बीले से ।”

۞......आप ने फ़रमाया : “कौन से बड़े क़बीले से ?” कहने लगे : “हम **ज़ुहले अक्बर** से हैं ।”

۞......आप ने पूछा : “**औ़फ़** तुम ही में से है जिस के बारे में येह मश्हूर है कि **औ़फ़** के सहराओं में गर्मी नहीं ।” कहने लगे : “ऐसा **औ़फ़** हम में से नहीं ।”

۞.....आप ने पूछा : “**जस्सास बिन मुर्रह** तुम में से है जो लड़ने भड़ने में बड़ा तेज़ और ख़ुसूसन पड़ोसियों का बड़ा दुश्मन है ?” वोह बोले : “नहीं ।”

۞.....आप ने पूछा : “**बिस्ताम बिन क़ैस** झन्डे वाला और ज़िन्दों को ख़त्म करने वाला तुम में से है ?” कहने लगे : “नहीं ।”

۞.....आप ने पूछा : “बादशाहों की जानें लेने और उन्हें क़त्ल करने वाला **हौफ़ज़ान** तुम में से है ?” बोले : “नहीं ।”

۞......आप ने पूछा : “मुनफ़रिद इमामा बांधने वाला **मुज़्दलिफ़** तुम में से है ?” उन्हों ने कहा : “नहीं ।”

۞.....आप ने पूछा : “**बनी कन्दा** के बादशाहों के नन्हाल तुम में से हैं ?” कहने लगे : “नहीं ।”

۞.....आप ने पूछा : “तुम शाहाने **बनी लख़्म** के सुसराल हो ?” बोले : “नहीं ।”

۞......हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : “फिर तुम **ज़ुहले अक्बर** की अवलाद हरगिज़ नहीं हो सकते बल्कि तुम लोग **ज़ुहले असग़र** से हो ।”

www.dawateislami.net

(कि जहले अक्बर की तो मैं ने कई निशानियां तुम से पूछीं और तुम ने सब के जवाब नफ़ी में दिये, अगर तुम जहले अक्बर में से होते तो इन में मौजूद कोई एक बात तो तुम्हें मा'लूम होती, लिहाज़ा तुम्हारा झूट ज़ाहिर हो गया।)

येह सुन कर **बनू शैबान** क़बीले का **दग़फ़ल** नामी एक नौजवान जिस की दाढ़ी नई नई निकल रही थी उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर येह शे'र पढ़ा :

اِنَّ عَلٰی مَسَائِلِنَا اَنْ نَسْئَلَہٗ ـــ وَالْعَبْءُ لَا تَعْرِفُہٗ اَوْ تَحْمِلُہٗ

"या'नी आप ने जो पूछना था पूछ लिया अब हमें भी अपने सुवाल पूछने का पूरा हक़ है क्यूंकि कहा जाता है गठड़ी को या तो पहचानो ही नहीं अगर पहचान लिया है तो फिर उसे उठा लो और उस के मालिक तक पहुंचाओ।"

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि माहिरे अन्साब थे और खुसूसन क़बाइले क़ुरैश के अन्साब की मा'रिफ़त में तो आप का कोई सानी न था, आप ने उन से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के सुवालात कर के उन के झूट को ज़ाहिर फ़रमा दिया था अपनी इसी रुस्वाई की वजह से उस नौजवान ने बदला लेने के लिये येह शे'र पढ़ा और उस का मक़्सद येह था कि तुम ने तो हम से बहुत से सुवालात किये और हम ने इन के जवाबात भी दिये अब तुम्हारा येह हक़ बनता है कि हमारे भी सुवालों के जवाब दो या येह कि तुम हम से कोई सुवाल ही न करते, फिर उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को परेशान करने के लिये मुख़्तलिफ़ अक़्साम के उलटे सीधे सुवालात करना शुरूअ़ किये और कहने लगा :

۞...."ऐ मोहतरम ! तुम अपना तआरुफ़ कराओ कि तुम कौन हो ?" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं क़ुरैश से हूं और मुझे अबू बक्र कहते हैं।"

۞....नौजवान : "वाह क्या बात है ! तुम तो शराफ़त व अमारत वाले ठहरे, मगर क़ुरैश के किस क़बीले से हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "तैम बिन मुर्रह की अवलाद से।"

www.dawateislami.net

۞.....नौजवान : "क़सम ब ख़ुदा ! आप घड़ा भरने पर क़ादिर हैं या'नी आप का नसब बहुत अच्छा है । क्या **क़ुसय्य** तुम ही में से है जिस ने **फ़हिरी** क़बाइल इकट्ठे किये और वोह क़ुरैश में सरदार होने का दा'वेदार भी है ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "नहीं ।"

۞....नौजवान : "**हाशिम** तुम ही में से है जिस ने अपनी क़ौम के लिये सरीद तय्यार की जब कि उस के लोग दुबले पतले हो चुके थे ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "नहीं ।"

۞......नौजवान : "आस्मानी परन्दों को दाना डालने वाला, अन्धेरी रातों में चमकते चेहरे वाला **अ़ब्दुल मुत्तलिब** भी तुम ही में से है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "नहीं ।"

۞.....नौजवान : "क्या लोगों को मुसीबतों में धकेलने वाले तुम ही हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "नहीं ।"

۞.....नौजवान : "क्या चोकीदारी करने वाले भी तुम ही लोग हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "नहीं ।"

۞....नौजवान : "क्या आब रसानी या'नी घरों में पानी पहुंचाने का काम भी तुम ही लोग करते हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "नहीं ।"

۞....नौजवान : "क्या बह्स मुबाहसा और मश्वरे करने वाले तुम ही लोग हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "नहीं ।"

۞.....नौजवान : "क्या आप ही लोग **अहले रिफ़ादा** या'नी ग़रीब हुज्जाज की ज़ियाफ़त करने वाले हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "नहीं ।"

येह कह कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बेज़ारी से अपनी ऊंटनी की लगाम खींच कर चल दिये तो बनी शैबान के उस नौजवान ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तंग करने के लिये एक और शे'र पढ़ा :

www.dawateislami.net

صَادَفَ دَرْءُ السَّيْلِ دَرْءًا يَدْفَعُهُ۔۔۔يَهِيضُهُ حِينًا وَحِينًا يَصْدَعُهُ

"या'नी शेर अपने से बड़े शेर से टकरा कर इस त़रह़ मग़लूब हो गया कि जब उस पर बोझ पड़ा तो बोझ पड़ने से उसी वक़्त फट गया।" और साथ ही कहने लगा : "अगर तुम कुछ देर मज़ीद ठहरते तो मैं ज़रूर तुम्हें क़ुरैश के बारे में बताता।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह सारा माजरा देख कर मुस्कुरा दिये। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से अ़र्ज़ की : "इस देहाती नौजवान से आप को बड़ी क़बीह़ गुफ़्तगू करना पड़ी।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जवाब दिया : "ऐ अबुल ह़सन ! हर मुसीबत के ऊपर एक मुसीबत है और मुसीबत बोलने के साथ मोक्ल है।" (या'नी जहां बोले वहीं मुसीबत आ गई) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "फिर हम एक और मजलिस में गए जो पढ़े लिखे और बा वक़ार लोगों की मजलिस थी, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आगे बढ़े और उन्हें सलाम किया और पूछा कि : "आप लोगों का किस क़ौम से तअ़ल्लुक़ है ?" वोह बोले : "शैबान बिन सा'लबा की अवलाद से।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ देख कर अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! येह लोगों के सरदार हैं।" वहां मजलिस में मफ़रूक़ बिन अ़म्र, हानी बिन क़ुबैसा, मुस्नी बिन ह़ारिसा और नो'मान बिन शरीक भी मौजूद थे। इन सरदारों में **मफ़रूक़** ह़ुस्नो जमाल में और गुफ़्तगू करने में बहुत तेज़ था उस के बालों की दो चोटियां पुश्त पर लटक रही थीं। चूंकि वोह सामने ही बैठा था इस लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उसी से गुफ़्तगू शुरूअ़ कर दी और पूछा : "तुम्हारी ता'दाद कितनी है ?" वोह बोला : "हम हज़ार से ज़ाइद हैं। और इतनी ता'दाद कभी कम लोगों से मग़लूब नहीं होती।" (बल्कि इसे मग़लूब करने के लिये इतनी ही ता'दाद की ज़रूरत है) आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने पूछा : "तुम लोग अपना दिफ़ाअ़ कैसे करते हो ?" तो वोह बोला : "हम इस की तय्यारी और कोशिश करते रहते हैं और यक़ीनन हर क़ौम तय्यारी

www.dawateislami.net

करती है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "दुश्मनों से तुम्हारी लड़ाई की क्या कैफ़िय्यत होती है ?" वोह कहने लगा : "जब दुश्मन से हमारा मुक़ाबला होता है तो मैदाने जंग में हम से बढ़ कर कोई ग़ज़बनाक नहीं होता। हम अपने जंगी घोड़ों को अपनी अवलाद पर और अस्लिहा जम्अ करने को ऐशो इशरत पर तरजीह देते हैं और मदद तो **अल्लाह** की तरफ़ से होती है जो कभी हमें फ़त्ह दिलाती है और कभी हमारे दुश्मनों को।" फिर उस ने हमारी तरफ़ देखते हुवे कहा : "आप लोग शायद कुरैश से हैं।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम्हारे पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल की ख़बर तो पहुंची होगी।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ इशारा करते हुवे फ़रमाया : "येह वोही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल हैं।" मफ़रूक़ कहने लगा : "हां हमें इस बारे में कुछ इत्तिलाआत तो मिल रही हैं। बहर हाल ऐ क़रशी भाई ! येह बताओ आप लोग किस बात की दा'वत दे रहे हो ?" जैसे ही उस ने येह पूछा तो प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें इस्लाम की दा'वत पेश करने के लिये आगे तशरीफ़ ले आए और उन के क़रीब ही बैठ गए। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े हो कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर अपने कपड़ों से साया करने लगे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें इस बात की दा'वत देता हूं कि तुम गवाही दो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, उस का कोई शरीक नहीं और **मुहम्मद** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और उस के रसूल हैं और मैं तुम्हें इस बात की भी दा'वत देता हूं कि तुम लोग मेरी मदद करो क्यूंकि कुरैश ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की मुख़ालफ़त करते हुवे उस के रसूल को झुटलाया और हक़ की बजाए बातिल इख़्तियार किया हालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़नी या'नी बे परवाह है और वोही ता'रीफ़ के लाइक़ है।" मफ़रूक़ बोला : "इस के इलावा और आप किस बात की दा'वत देते हैं ? वैसे आप का कलाम तो बहुत ही उम्दा है।" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पारह 8 सूरतुल अन्आम की 151 ता 153 आयाते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَیْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَیْــٴًـا وَّ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًاۚ وَ لَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَ اِیَّاهُمْۚ وَ لَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ مَا بَطَنَۚ وَ لَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا

www.dawateislami.net

بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ۝۱۵۱ وَ لَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ
اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ وَ
بِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ۝۱۵۲ وَ اَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا
السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ۝۱۵۳﴾ (پ۸، الانعام: ۱۵۱ تا ۱۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम फ़रमाओ आओ मैं तुम्हें पढ़ सुनाऊं जो तुम पर तुम्हारे रब ने ह़राम किया येह कि उस का कोई शरीक न करो और मां बाप के साथ भलाई और अपनी अवलाद क़त्ल न करो मुफ़्लिसी के बाइ़स हम तुम्हें और उन्हें सब को रिज़्क़ देंगे और बे ह़याइयों के पास न जाओ जो उन में खुली हैं और जो छुपी और जिस जान की **अल्लाह** ने ह़ुरमत रखी उसे नाह़क़ न मारो येह तुम्हें ह़ुक्म फ़रमाया है कि तुम्हें अ़क़्ल हो, और यतीमों के माल के पास न जाओ मगर बहुत अच्छे त़रीक़े से जब तक वोह अपनी जवानी को पहुंचे और नाप और तोल इन्साफ़ के साथ पूरी करो हम किसी जान पर बोझ नहीं डालते मगर उस के मक़्दूर भर और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहो अगर्चे तुम्हारे रिश्तेदार का मुआ़मला हो और **अल्लाह** ही का अ़हद पूरा करो येह तुम्हें ताकीद फ़रमाई कि कहीं तुम नसीह़त मानो और येह कि येह है मेरा सीधा रास्ता तो इस पर चलो और, और राहें न चलो कि तुम्हें उस की राह से जुदा कर देंगी येह तुम्हें ह़ुक्म फ़रमाया कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले।"

येह आयत सुन कर मफ़रूक़ बोला : "आप लोग और किस बात की दा'वत देते हैं ? और अभी जो आप ने कलाम पढ़ा येह किसी ज़मीन वाले का कलाम नहीं है।"

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयाते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ الْاِحْسَانِ وَ اِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى وَ يَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ وَ الْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ۝۹۰﴾

(پارہ ۱۴، سورۃ النحل، آیت ۹۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** ह़ुक्म फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी और रिश्तेदारों के देने का और मन्अ़ फ़रमाता है बे ह़याई और बुरी बात और सरकशी से, तुम्हें नसीह़त फ़रमाता है कि तुम ध्यान करो।"

मफ़रूक़ बोला : "ख़ुदा की क़सम ! आप ने तो बेहतरीन अख़्लाक़ और निहायत ही उ़म्दा आ'माल की दा'वत दी है, यक़ीनन आप को झुटलाने और मुख़ालफ़त करने वाली

www.dawateislami.net

क़ौम ने आप पर सरीह़ बोहतान बांधा है।" साथ ही मफ़रूक़ ने हानी बिन क़ुबैसा की ताईद ह़ासिल करने के लिये उस की त़रफ़ देखते हुवे कहा : "येह हानी बिन क़ुबैसा हमारे शैख़ और हमारे दीन के आ़लिम हैं।"(या'नी येह भी मेरी ताईद करेंगे) हानी बिन क़ुबैसा कहने लगा : ऐ क़ुरशी भाई ! हम लोगों ने आप की सारी गुफ़्तगू सुनी है, हमें करना तो येही चाहिये कि साबिक़ा दीन को छोड़ कर आप की इत्तिबाअ़ करें और आप के साथ ऐसी मजलिस में बैठ कर गुफ़्तगू करें जिस की इब्तिदा व इन्तिहा न हो (या'नी बस आप की प्यारी प्यारी गुफ़्तगू ही सुनते रहें), ता हम ऐसा करने में अन्जाम पर ग़ौर किये बिग़ैर किसी की राए मानने में जल्दी करना होगा और यक़ीनन जल्द बाज़ी में किये जाने वाले फ़ैसले उ़मूमन ग़लत़ होते हैं। (हम येह फ़ैसला फ़िल ह़ाल इस लिये नहीं कर सकते कि) हमारे पीछे एक क़ौम है जिस की मरज़ी के ख़िलाफ़ हम कोई अ़हद नहीं कर सकते लिहाज़ा ऐसा करते हैं कि अभी हम भी चलते हैं और आप भी तशरीफ़ ले जाएं, आप भी सोचियें और हम भी मज़ीद इस पर ग़ौरो फ़िक्र करते हैं।" फिर उस ने मुस्नी बिन ह़ारिसा की ताईद ह़ासिल करने के लिये उस की त़रफ़ देखते हुवे कहा : "येह मुस्नी बिन ह़ारिसा हैं हमारे बुज़ुर्ग और जंगी सिपह सालार हैं।" (या'नी येह भी मेरी ताईद करेंगे) मुस्नी कहने लगा : "ऐ क़ुरशी भाई ! "तुम्हारी दा'वत सुन कर हमारा भी वोही जवाब है जो हानी बिन क़ुबैसा ने दिया क्यूंकि हम दो सोकनों यमामा और सुमामा के दरमियान फंसे हुवे हैं।" सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह दो सोकनें कौन सी हैं ?" कहने लगा : "एक त़रफ़ किसरा की नह्रें हैं और दूसरी त़रफ़ अ़रब का पानी। किसरा की मुख़ालफ़त मुआ़फ़ नहीं हो सकती और न ही वहां कोई उ़ज़्र क़बूल होगा क्यूंकि हमारा उन से मुख़ालफ़त न करने पर मुआ़हदा है, जब कि अ़रब की मुख़ालफ़त मुआ़फ़ हो सकती है और यहां उ़ज़्र क़बूल हो सकता है। आप ने जिन बातों की हमें दा'वत दी है येह तो वोह बातें हैं जिन्हें अ़रब और किसरा दोनों के बादशाह पसन्द नहीं करते, अब अगर आप येह चाहते हैं कि हम आप की दा'वत क़बूल करें और आप की अ़रब के ख़िलाफ़ मुआ़वनत करें तो ऐसा हम कर सकते हैं क्यूंकि हमारा इन से कोई मुआ़हदा नहीं है।" सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह सुन कर इरशाद फ़रमाया : "तुम ने बड़ा अच्छा जवाब दिया है क्यूंकि साफ़ और सच्ची बात कही है, मगर **अल्लाह** के दीन का सिर्फ़ वोही मददगार हो सकता है जो मुकम्मल त़ौर पर इस दीन में दाख़िल हो जाए।" फिर इरशाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया : “अच्छा येह बताओ कि अगर कुछ अ़र्से बा’द (ग़लबए इस्लाम के सबब) उन की ज़मीन, घर बार, मालो मताअ़, उन की औ़रतें वग़ैरा सब कुछ तुम्हारे क़ब्ज़े में आ जाए तो क्या तुम इस्लाम क़बूल कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ व तक़्दीस करोगे ?” नो’मान बिन शरीक ने कहा : “ख़ुदा की क़सम ! फिर हम मुसलमान हो कर आप की ग़ुलामी में आ जाएंगे।” इस पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّ مُبَشِّرًا وَّ نَذِيْرًاۙ﴿۴۵﴾ وَّ دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِيْرًا﴾ (پ۲۲،الاحزاب:۴۶،۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : “ऐ ग़ैब की ख़बरें बताने वाले (नबी) बेशक हम ने तुम्हें भेजा ह़ाज़िर नाज़िर और ख़ुश ख़बरी देता और डर सुनाता और **अल्लाह** की त़रफ़ उस के हुक्म से बुलाता और चमका देने वाला आफ़्ताब।”

येह कह कर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ थामे उठ खड़े हुवे और इरशाद फ़रमाया : “जाहिलिय्यत में भी बा’ज़ लोगों का अख़्लाक़ कितना अच्छा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन ही कुफ़्फ़ार में से बा’ज़ के हाथों बा’ज़ के शर को दफ़्अ़ फ़रमाएगा और बा’ज़ को बा’ज़ से दूर रखेगा।” ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : “फिर हम क़बीलए औस व ख़ज़रज की मजलिस में पहुंचे और उन्हें भी इस्लाम की दा’वत पेश की और उस वक़्त तक वापस न लौटे जब तक उन्हों ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त न कर ली। और इस सफ़र में मैं ने देखा कि प्यारे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुख़्तलिफ़ मजालिस से होने वाले मुकालमात और इ़ल्मुल अन्साब में महारत वाली भरपूर गुफ़्त्गू से बहुत ज़ियादा ख़ुश हुवे।” (کنز العمال، کتاب الفضائل، باب فضائل الصحابة، فضل ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۳۵۹۷۹،ج۶، ص ۲۳۲ تا ۲۳۴)

नेकी की दा’वत के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला रिवायत से नेकी की दा’वत के कई मदनी फूल ह़ासिल हुवे : (1) चन्द इस्लामी भाइयों का इकठ्ठे हो कर नेकी की दा’वत के लिये अपने अ़लाक़े में मुख़्तलिफ़ लोगों के पास जाना और उन्हें नेकी की दा’वत पेश करना

www.dawateislami.net

प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सुन्नते मुबारका है। (2) जब भी किसी के पास जाएं तो सब से पहले सलाम करें, हो सके तो जब बस में सुवार हों, किसी अस्पताल में जाना पड़ जाए, किसी होटल में दाख़िल हों, जहां लोग फ़ारिग़ बैठे हों, जहां जहां मुसलमान इकठ्ठे हों सलाम कर दिया करें कि सलाम में पहल करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा सदी बिन अ़जलान अल बाहिली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "लोगो में **अल्लाह** तआ़ला के ज़ियादा क़रीब वोही शख़्स है जो उन्हें पहले सलाम करे।" (سنن ابوداود، کتاب الادب، باب فی فصل من۔۔۔الخ، الحدیث:۵۱۹۷، ج۴، ص۴۴۹)

आज कल अगर कोई किसी के पास आ कर सलाम कर भी देता है तो जाते हुवे "मैं चलता हूं, ख़ुदा ह़ाफ़िज़, अच्छा, बाए बाए" वग़ैरा कलिमात कहता है लिहाज़ा मजलिस के इख़्तिताम पर इन सब अल्फ़ाज़ के बजाए सलाम किया करें। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं : "जिस वक़्त तुम में से कोई किसी मजलिस की त़रफ़ पहुंचे, सलाम कहे। अगर ज़रूरत मह़सूस करे, वहां बैठ जाए। फिर जब खड़ा हो सलाम कहे इस लिये कि पहला सलाम दूसरे से ज़ियादा बेहतर नहीं है।" (سنن الترمذی، کتاب الاستئذان، باب ماجاء فی۔۔۔الخ، الحدیث:۲۷۱۵، ج۴، ص۳۲۴)

(3) जब भी किसी को नेकी की दा'वत पेश की जाए तो अव्वलन रहनुमा इस्लामी भाई तआ़रुफ़ वग़ैरा की तरकीब बनाए और बा'द में दाई दा'वत दे कि इस त़रह़ गुफ़्तगू करने में आसानी होती है और जिसे नेकी की दा'वत पेश की जा रही है वोह भी तवज्जोह के साथ दा'वत को सुनता और क़बूल करता है। (4) तआ़रुफ़ करवाने और नेकी की दा'वत देने वाले दो अफ़राद हों या'नी एक इस्लामी भाई रहनुमा हो जिस का काम सिर्फ़ येह हो कि वोह अपना तआ़रुफ़ पेश करे और सामने वालों से तआ़रुफ़ ले और फिर दूसरा इस्लामी भाई नेकी की दा'वत पेश करे। जैसा कि मज़्कूरए बाला रिवायत में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने तआ़रुफ़ वग़ैरा की तरकीब बनाई और ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नेकी की दा'वत पेश की। (5) जिसे नेकी की दा'वत देनी है अगर वोह कोई बात कहे तो उसे भी सुना जाए कि आप उस की बात सुनेंगे तो वोह आप की दा'वत

www.dawateislami.net

को सुनेगा। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस नौजवान की गुफ़्त्गू सुनी। (6) अलबत्ता अगर सामने वाला फ़ुज़ूल गुफ़्त्गू करना शुरूअ़ कर दे और वक़्त के ज़ाएअ़ होने का ख़दशा हो तो ए'राज़ किया जाए। (7) नेकी की दा'वत देने के बा'द इस को क़बूल करवाने में जल्दी न की जाए बल्कि तरग़ीब से काम लिया जाए और मुख़ात़ब के आ'ज़ार को भी सुना जाए जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुख़ात़ब के आ'ज़ार को सुन कर ह़िक्मते अ़मली के साथ उन का ह़ल इरशाद फ़रमाया।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने भी नेकी की दा'वत के अ़ज़ीम जज़्बे के तह़त अपने मुतअ़ल्लिक़ीन को हफ़्ते में एक दिन अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वाला मदनी इन्आ़म अ़त़ा फ़रमाया है और सेकड़ों इस्लामी भाई इस सआ़दत से फ़ैज़याब हो रहे हैं। इसी ज़िम्न में एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है। चुनान्चे,

ग़ैर मुस्लिमों का क़बूले इस्लाम

ज़िल्अ़ ग़ाज़ी पूर (यूपी, हिन्द) के शहर ग्राम चोकियां के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1426 हिजरी ब मुत़ाबिक़ एप्रील सि. 2005 ईसवी में हिन्द के मशहूर शहर बम्बई में होने वाले मदनी क़ाफ़िला कोर्स के दौरान एक मदनी क़ाफ़िला 3 दिन के लिये कुर्लाखानी की एक मस्जिद में ठहरा हुवा था। तीसरे दिन मदनी क़ाफ़िले के आ़शिक़ाने रसूल अ़स्र की नमाज़ के बा'द "**अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत**" के सिलसिले में एक ह़ज्जाम की दुकान पर पहुंचे जहां चन्द मॉडर्न नौजवान ख़ुश गप्पियों में मसरूफ़ थे, रहनुमा इस्लामी भाई ने आगे बढ़ कर जूं ही मदनी क़ाफ़िले का तआ़रुफ़ करवाया तो **दाई** या'नी नेकी की दा'वत देने वाले इस्लामी भाई ने फ़ौरन दर्द भरे अन्दाज़ में नेकी की दा'वत देना शुरूअ़ कर दी। नेकी की दा'वत के बा'द उन्हें मस्जिद चलने की दा'वत दी तो उन्हों ने इन्कार किया मगर **आ़शिक़ाने रसूल** के मह़ब्बत भरे इस्रार पर बिल आख़िर वोह नमाज़ के बा'द होने वाले बयान में शिरकत करने पर राज़ी हो गए। नमाज़ के बा'द जूं ही बयान का आग़ाज़ हुवा वोह सभी आ मौजूद हुवे। एक इस्लामी भाई ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का रिसाला "**क़ब्र का इमतिह़ान**" पढ़ कर सुनाया, बयान के

www.dawateislami.net

इख़्तिताम पर दौलते ईमान की अहम्मिय्यत उजागर करते हुवे ईमान की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र करते रहने का ज़ेह्न दिया और साथ ही साथ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की तरग़ीब भी दिलाई जिस पर उन नौजवानों ने मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत का इज़्हार किया, इस के बा'द वोह मस्जिद से बाहर चले गए। अभी चन्द साअ़तें ही गुज़री होंगी कि वोह दोबारा पलट आए। उन के चेहरों के तअस्सुरात किसी बड़े इन्क़िलाब का पता दे रहे थे, वोह लोग कहने लगे : "हम ग़ैर मुस्लिम हैं, आप हमें कलिमए त़य्यिबा पढ़ा कर मुसलमान कर दीजिये ! हम दाइरए इस्लाम में दाख़िल होना चाहते हैं।" **अमीरे क़ाफ़िला ने फ़ौरन कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ पढ़ा कर उन सब को मुसलमान कर दिया।** फिर अमीरे क़ाफ़िला ने ह़ल्क़ा ब गोशे इस्लाम होने पर ख़ुशी का इज़्हार करते हुवे उन्हें मुबारक बाद दी और पूछा कि किस बात से मुतअस्सिर हो कर आप ने दीने इस्लाम क़बूल किया तो कहने लगे बयान में क़ब्र के ह़ालात सुने कि अच्छे काम करने वालों के साथ वोह क्या मुआ़मला करती है और बुरे काम करने वालों के साथ कैसा भयानक सुलूक करती है जब कि हमारे मज़्हब में इस का कोई तसव्वुर नहीं नीज़ इस्लामी ता'लीमात के मुत़ाबिक़ आप का सुन्नत का आईनादार लिबास और बे मिसाल किरदार बिल ख़ुसूस निगाहें झुका कर चलना, मह़ब्बत और नर्मी से गुफ़्तगू करना, दूसरों को ह़क़ीर न जानना, अपने दीन से मह़ब्बत करना और दीनो ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ना देख कर दिलो दिमाग़ ने गवाही दी कि **अहले इस्लाम ही ह़क़ व सच के दाई और राहे नजात के राही हैं,** यूं हम दीने इस्लाम से मुतअस्सिर हुवे और इस्लाम क़बूल कर लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ फिर उन नौ मुस्लिम इस्लामी भाइयों ने हाथों हाथ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र इख़्तियार कर लिया और दो दिन बा'द जब ज़ाती ज़रूरियात का सामान लेने अपने अपने घर गए तो वापसी पर इन के हमराह दो नौजवान और भी थे। वोह दोनों भी दीने इस्लाम क़बूल कर के दारैन की सरफ़राज़ियां ह़ासिल करने के ख़्वाहिश मन्द थे चुनान्चे, मदनी क़ाफ़िले के आ़शिक़ाने रसूल ने मौक़अ़ ग़नीमत जानते हुवे उन्हें भी हाथों हाथ कलिमए त़य्यिबा पढ़ा कर कुफ़्रो शिर्क के तपते रेगिस्तान से निकाल कर शजरे इस्लाम की ठन्डी छाओं के नीचे ला खड़ा किया और यूं اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िले में होने वाले **अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की बरकत** से कई ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम की सर्मदी ने'मत नसीब हो गई।

www.dawateislami.net

काफ़िरों को चलें, मुशरिकों को चलें
दा'वते दीन दें, क़ाफ़िले में चलो
दीन फैलाइये, सब चले आइये
मिल के सारे चलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इल्मे तौह़ीद और सिद्दीक़े अक्बर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इल्मे ता'बीर और इल्मे अन्साब में माहिर होने के साथ इल्मे तौह़ीद की मा'रिफ़त भी रखते थे बल्कि बारहा प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इल्मे तौह़ीद के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्त्गू भी फ़रमाते रहते थे । चुनान्चे,

इल्मे तौह़ीद के मुतअ़ल्लिक़ मुकालमा

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं कई बार बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों को इल्मे तौह़ीद के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्त्गू करते हुवे देखा । काफ़ी देर तक दोनों के दरमियान एक अ़जमी शख़्स की त़रह़ बैठा रहा लेकिन उन की गुफ़्त्गू को न समझ सका ।" (الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۵۱)

सिद्दीक़े अक्बर और फ़त्वा नवेसी

ज़मानए नबवी के मुफ़्तियाने किराम

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया कि "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में कौन फ़तवे दिया करता था ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं सिर्फ़ दो शख़्सिय्यात को जानता हूं और वोह शैख़ैने करीमैन या'नी ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हैं, इन दो के इलावा मेरे इ़ल्म में कोई नहीं जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में फ़तवा दिया करता हो।" (اسد الغابة، عبد اللہ بن عثمان ابوبکر، علمه، ج ٣، ص ٣٣٠)

सिद्दीक़े अक्बर और किताबते वह़ी

अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कई अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ऐसे हैं जो कातिबे वह़ी थे। बा'ज़ के अस्मा येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र (2) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर (3) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान (4) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (5) ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब (6) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद (7) ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या (8) ह़ज़रते सय्यिदुना ह़न्ज़ला बिन रबीअ़ (9) ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद बिन आ़स (10) ह़ज़रते सय्यिदुना अब्बान बिन सईद (11) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़रमी। (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) (كشف المشكل من حديث الصحيحين، ج ١، ص ٣٧٢)

सिद्दीक़े अक्बर की फ़िरासत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपनी मायानाज़ मशहूरे ज़माना तस्नीफ़ "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द दुवुम के बाब "**नेकी की दा'वत**" हिस्सए अव्वल सफ़ह़ा 370 पर फ़िरासत की ता'रीफ़ कुछ यूं बयान फ़रमाई है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने औलिया के दिलों में वोह चीज़ डालता है जिस से उन्हें बा'ज़ लोगों के ह़ालात का इ़ल्म हो जाता है।" वाक़ेई मोमिन के लिये येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अ़त़ा कर्दा नूर है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मोमिन की फ़िरासत से डरो कि वोह **अल्लाह** के नूर से देखता है।"

(سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة الحجر، الحدیث: ٣١٣٨، ج ٥، ص ٨٨)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस नूर से ब दरजए अतम मा'मूर थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फ़िरासत का एक अनोखा वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर की बे मिसाल फ़िरासत

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (हज्जतुल वदाअ़ से वापस तशरीफ़ लाए और मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुवे और आप) ने यूं ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया : "एक बन्दा है जिसे अल्लाह ने इख़्तियार दिया कि चाहे तो हमेशा दुन्या में रहे और इस की बहारें लूटता रहे और चाहे तो उस के हां तय्यार कर्दा ने'मतों को इख़्तियार कर ले। तो उस बन्दे ने जो उस के रब के पास ने'मतें हैं उन्हें इख़्तियार कर लिया।" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस बात को कोई न समझ सका कि क्या मुआ़मला है ? लेकिन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ता कर्दा फ़हमो फ़िरासत से फ़ौरन समझ गए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखें अश्कबार हो गईं और अ़र्ज़ करने लगे : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे मां–बाप आप पर क़ुरबान।" तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप के येह कलिमात सुन कर बहुत मुतअ़ज्जिब हुवे कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तो सिर्फ़ एक ऐसे शख़्स का तज़किरा किया है जिसे येह इख़्तियार दिया गया। लेकिन ह़क़ीक़त वोही थी जिसे हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी फ़िरासत से पा लिया कि जिस बन्दे को इख़्तियार मिला वोह ख़ुद नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم थे, मगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वाज़ेह़ तौर पर न बताया ताकि लोग ग़मज़दा न हों, लेकिन येह राज़ सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही समझ पाए क्यूंकि वोह फ़हमो फ़िरासत के ए'तिबार से तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में कामिल थे।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی سدوا۔۔۔الخ، الحدیث: ۳۶۵۴، ج۲، ص۵۱۷)

सिद्दीक़े अक्बर की मुआ़मला फ़हमी

मुआ़मला फ़हमी की आ'ला मिसाल

जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के ज़ुल्मो सितम और उन की त़रफ़ से दी जाने वाली तकालीफ़ की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ मक्का से मदीना हिजरत के लिये तशरीफ़ ले जा रहे थे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुवारी पर आगे तशरीफ़ फ़रमा थे और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पीछे बैठे थे। चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तिजारती हवाले से काफ़ी मश्हूर थे और लोगों में आप की जान पहचान भी बहुत थी इस लिये रास्ते से गुज़रने वाले लोग तअ़ज्जुब से पूछते कि "ऐ अबू बक्र ! येह तुम्हारे साथ कौन है ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हिक्मत से भरपूर जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाते : "**هَادٍ يَّهْدِيْنِي** या'नी येह मेरे रहनुमा हैं और रास्ता बताने में मेरी रहनुमाई कर रहे हैं।"

(مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، الحدیث: ۱۲۲۳۶، ج۴، ص۲۴۶)

और ह़क़ीक़त में भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم राहे जन्नत के हादी हैं, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का प्यारा जवाब आप की मुआ़मला फ़ह्मी की भरपूर अ़क्कासी करता है कि उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इस्मे गिरामी बताना या इन का कोई भी तआ़रुफ़ कराना सरासर नुक़्सान देह था इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तोरिया (या'नी ज़ू मा'ना बात) से काम लिया।

जंगी उमूर में मुआ़मला फ़ह्मी

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक लश्कर का सिपह सालार बना कर भेजा, उस लश्कर में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) भी मौजूद थे, जब वोह मक़ामे जंग पर पहुंचे तो हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्म दिया कि लश्कर में आग रोशन न करें। हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह बात पसन्द न आई और हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जाने का इरादा किया तो मुआ़मले की नज़ाकत को समझते हुवे हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को रोक

www.dawateislami.net

दिया और फ़रमाया : “हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को जंगी उमूर में महारत की वजह से हम पर अमीर मुक़र्रर फ़रमाया है।” येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रुक गए।

(السنن الکبری للبیهقی، کتاب السیر، باب ماعلی الوالی من امر الجیش، الحدیث: ۱۷۹۰۰، ج۹، ص۷۰)

सिद्दीक़े अक्बर ब हैसिय्यते मुशीर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की फ़िरासत और मुआ़मले के सबब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप से उमूरे मुस्लिमीन में अक्सर मुशावरत फ़रमाया करते थे बल्कि ख़ुद रब तआ़ला ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मुशावरत करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे,

आप से मुशावरत के लिये हुक्मे इलाही

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं, मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि “ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام मेरे पास आए और कहा कि **अल्लाह** तआ़ला आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मश्वरा करने का हुक्म इरशाद फ़रमाता है।”

(جامع الاحادیث، الهمزة مع التاء، الحدیث: ۳۲۷، ج۱، ص۲۰۵)

मुसलमानों के मुआ़मलात में मुशावरत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अक्सर रात गए तक मुसलमानों के मुआ़मलात पर मुशावरत और गुफ़्त्गू करते रहते थे, एक दिन ह़स्बे मा'मूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आप से मसरूफ़े कलाम रहे, मैं भी बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर था, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए। हम भी बाहर आ गए तो देखा कि एक शख़्स मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा है। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की तिलावते

www.dawateislami.net

कुरआन सुनने लगे और इरशाद फ़रमाया : "अगर कोई कुरआन की तिलावत इसी त़रीक़े और हैअत पर करना चाहे जैसा वोह नाज़िल हुवा तो उसे चाहिये कि वोह **इब्ने उम्मे अ़ब्द** (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की त़रह़ कुरआन पढ़े ।"

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب التفسیر، الحدیث: ۲۸۹۳، ج ۲، ص ۲۴۶، مسند احمد بن حنبل، مسند عمر بخطاب، الحدیث: ۱۷۵، ج ۱، ص ۲۵)

आप का ख़ात़ी होना रब को पसन्द नहीं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुशावरत करना इस बात पर दलालत करता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसीबुर्राए थे और क्यूं न होते कि ख़ुद रब عَزَّوَجَلَّ को भी आप का ख़ात़ी होना या'नी ग़लत़ी करना पसन्द नहीं । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे यमन भेजने से क़ब्ल सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा फ़रमाया, इस मश्वरे में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा व ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर और ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ह़ुज़ैर (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) ह़ाज़िर थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर आप ने मश्वरा त़लब न किया होता तो हम कभी लब कुशाई न करते।" चुनान्चे, हर शख़्स ने अपनी समझ के मुत़ाबिक़ मश्वरा दिया। नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ मुआ़ज़ ! इन मश्वरों के बारे में तुम क्या कहते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "मुझे अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए पसन्द आई है।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला को अबू बक्र सिद्दीक़ का ख़ात़ी होना (या'नी ग़लत़ी करना) पसन्द नहीं है।"

(المعجم الکبیر، معاذ بن جبل الانصاری۔۔۔الخ، الحدیث: ۱۲۴، ج ۲۰، ص ۶۷)

आप का मश्वरा और रसूलुल्लाह की ताईद

जब अहले सक़ीफ़ ने अपने इस्लाम का ए'लान कर दिया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के लिये अमान तह़रीर फ़रमा दी । और इन पर किसी को

www.dawateislami.net

अमीर मुक़र्रर करना चाहा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मश्वरा दिया कि "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबिल आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीर मुक़र्रर फ़रमाएं।" हालांकि वोह उ़म्र में अभी छोटे थे। सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : "يَا رَسُوْلَ اللهِ إِنِّي رَأَيْتُ هٰذَا الْغُلَامَ مِنْ أَحْرَصِهِمْ عَلَى التَّفَقُّهِ فِي الْإِسْلَامِ، وَتَعَلُّمِ الْقُرْآنِ या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने देखा है येह नौजवान इस्लाम का गहरा फ़ह्म ह़ासिल करने और कुरआने करीम सीखने का सब से बढ़ कर ख़्वाहिश मन्द है।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबिल आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का मा'मूल था कि जब इन के वफ़्द के लोग दो पहर को चले जाते तो येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर दीन के मुतअ़ल्लिक़ सुवालात करते और कुरआने करीम सीखते और इस त़रह़ इन्हों ने दीन का तफ़क़्क़ुह (या'नी समझ बूझ) और पुख़्ता इल्म ह़ासिल कर लिया। बा'ज़ अवक़ात ऐसा भी होता कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आराम फ़रमा रहे हैं तो येह सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास चले जाते। रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप से बहुत मह़ब्बत फ़रमाया करते थे। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सिफ़ारिश को क़बूल फ़रमाया और इन्हें बनी सक़ीफ़ का अमीर मुक़र्रर फ़रमा दिया।

(اسد الغابة، عثمان بن ابی العاص، ج۳، ص۲۰۰)

सिद्दीके अक्बर का ख़ौफ़े ख़ुदा

काश ! अबू बक्र भी तेरी त़रह़ होता

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बाग़ में दाख़िल हुवे, दरख़्त के साए में एक चिड़्या को बैठे हुवे देखा तो आप ने एक आहे सर्द दिले पुर दर्द से खींच कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ परन्दे ! तू कितना ख़ुश नसीब है कि एक दरख़्त से खाता है और दूसरे के

www.dawateislami.net

नीचे बैठ जाता है फिर तू बिग़ैर हिसाब किताब के अपनी मन्ज़िल पे पहुंच जाएगा। ऐ काश ! अबू बक्र भी तेरी त़रह़ होता।''

(كنزالعمال، كتاب الفضائل، باب فضائل الصحابة، فصل في تفضيلهم، فضل الصديق، خوفه، الحديث:٣٥٦٩٦، ج٦، الجزء:١٢، ص٢٣٧، شعب الايمان، باب في خوف من الله، الحديث:٧٨٨، ج١، ص٤٨٥)

ता'रीफ़ पर बारगाहे ख़ुदावन्दी में इल्तिजा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़ातिम असमई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى से रिवायत है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ता'रीफ़ की जाती तो बारगाहे ख़ुदावन्दी में इल्तिजा करते हुवे इरशाद फ़रमाते : ''ऐ इलाहल आ़लमीन ! तू मेरी ज़ात को मुझ से बेहतर जानने वाला है और मैं अपनी ज़ात को उन लोगों से बेहतर जानता हूं। ऐ रब्बल आ़लमीन ! मुझे उन लोगों से अच्छा बना दे और मेरे उन तमाम गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा दे जिन का उन्हें इ़ल्म नहीं और मेरे मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ वोह कहते हैं उन पर मेरा मुआख़ज़ा न फ़रमा।''

(كنزالعمال، كتاب الفضائل، باب فضائل الصحابه، فضل الصديق، شمائله واخلاقه، الحديث: ٣٥٦٩٩، ج٦، الجزء: ١٢، ص٢٣٨، تاريخ مدينة دمشق، ج٣٠، ص٣٣٢)

मोमिने सालेह़ का कोई बाल होता

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इमरान जोनी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : **''काश ! मैं एक मोमिने सालेह़ के पहलू का कोई बाल होता।''** (الزهد للامام احمد، زهد ابي بكر الصديق، الرقم: ٥٢٠، ص١٣٨)

काश ! मैं एक दरख़्त होता

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : ''ख़ुदा की क़सम मैं येह पसन्द करता हूं कि मैं येह दरख़्त होता जिसे खाया और काटा जाता।'' (الزهد للامام احمد، زهد ابي بكر الصديق، الرقم: ٥٨١، ص١٤١)

www.dawateislami.net

काश ! मैं सब्ज़ा होता

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, फ़रमाते हैं कि मुझे येह ख़बर मिली कि एक बार हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यूं फ़रमाया : "ऐ काश ! मैं सब्ज़ा होता जिसे जानवर खा जाते ।"

(جمع الجوامع، مسندابی بکر الصدیق، الحدیث: ۱۷۴، ج ۱۱، ص ۴۱، الطبقات الکبری لابن سعد، ذکر وصیۃ ابی بکر، ج ۳، ص ۱۴۸)

शे'र बतौरे नसीहत

हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह शे'र बतौरे नसीहत पढ़ा करते थे :

لَا تَزَالُ تَنْعِي حَبِيْباً حَتّٰى تَكُوْنَهٗ

وَقَدْ يَرْجُو الْفَتٰى الرِّجَا يَمُوْتُ دُوْنَهٗ

या'नी ऐ ग़ाफ़िल नौजवान ! तू अपने दोस्तों के मरने की ख़बर तो देता रहता है क्या कभी सोचा कि एक दिन तू भी इन की तरह बे जान हो जाएगा क्यूंकि बसा अवक़ात कोई नौजवान उम्मीदें पूरी होने से पहले ही सफ़रे आख़िरत पर रवाना हो जाता है ।

(الزہدللامام احمد، زہد ابی بکر الصدیق، الرقم: ۵۹۱، ص ۱۴۲، تاریخ الخلفاء، ص ۸۲)

सब से ज़ियादा डरने वाले

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सीरीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वाहिद शख़्स थे जो ऐसी बात कहने से सब से ज़ियादा डरते जो इन के इल्म में न होती ।"

(الطبقات الکبری لابن سعد، طبقات البدریین، ابوبکر الصدیق، ذکر الغار والهجرۃ الی المدینۃ، ج ۳، ص ۱۳۲)

फ़रमाने रसूल के सबब गिर्या व ज़ारी

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार हम हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में बैठे थे कि पानी और शहद लाया

www.dawateislami.net

गया और जैसे ही आप के क़रीब किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ज़ारो क़ितार रोना शुरूअ़ कर दिया और रोते रहे यहां तक कि तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी रोने लग गए। सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان रो रो कर चुप हो गए लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोते रहे। सहाबा आप को देख कर फिर रोने लग गए, यहां तक कि सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को येह गुमान हुवा कि हमें मा'लूम न हो सकेगा कि क्या बात है ? फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी आंखें साफ़ की तो सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "ऐ **रसूलुल्लाह** के ख़लीफ़ा ! आप को किस चीज़ ने रुलाया ?" फ़रमाया : "एक बार मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बैठा था कि अचानक मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप अपनी ज़ात से कोई शै हटा रहे हैं ह़ालांकि उस वक़्त मुझे कोई शै नज़र नहीं आ रही थी, मैं ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप किस शै को हटा रहे हैं ?" फ़रमाया : दुन्या ने मेरा इरादा किया था मैं ने उस से कहा कि दूर हो जा।" तो उस ने मुझे कहा : "आप ने अपने आप को तो मुझ से बचा लिया लेकिन आप के बा'द वाले मुझ से नहीं बच पाएंगे।" (شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، الحدیث:۱۰۵۱۸، ج۷، ص۳۴۳)

उम्मीद व ख़ौफ़ की आ'ला मिसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़र्रिफ़ बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर आस्मान से कोई बा आवाज़े बुलन्द सदा दे कि जन्नत में सिर्फ़ एक आदमी दाख़िल होगा तो मुझे उम्मीद है कि वोह मैं ही होऊंगा और अगर आस्मान से येह आवाज़ आए कि दोज़ख़ में सिर्फ़ एक ही शख़्स दाख़िल होगा तो मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं वोह भी मैं ही न होऊं।" (اللمع، مترجم، ص۲۳۳)

ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब शदीद तक्लीफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैं दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मौजूद था, क़ुरआने पाक की जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

www.dawateislami.net

﴿مَنۡ یَّعۡمَلۡ سُوۡٓءًا یُّجۡزَ بِهٖ ۙ وَ لَا یَجِدۡ لَهٗ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَلِیًّا وَّ لَا نَصِیۡرًا ﴾ (پ۵، النساء:۱۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "जो बुराई करेगा इस का बदला पाएगा और अल्लाह के सिवा न कोई अपना हिमायती पाएगा न मददगार ।" तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! क्या मैं तुम्हें वोह आयत न सुनाऊं जो मुझ पर अभी नाज़िल हुई है । मैं ने अ़र्ज़ किया : "जी हां क्यूं नहीं **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم !" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येही आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई । जैसे ही मैं ने येह आयते मुबारका सुनी तो (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ के सबब) मुझे ऐसा लगा कि मेरी कमर की हड्डी टूट जाएगी मैं ने दर्द की वजह से अंगड़ाई ली तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! (घबराओ नहीं) तुम और तुम्हारे मोअमिनीन दोस्तों को इस का बदला दुन्या में ही दे दिया जाएगा यहां तक कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ऐसी ह़ालत में मुलाक़ात करोगे कि तुम पर कोई गुनाह नहीं होगा । लेकिन दीगर लोगों के गुनाह जम्अ़ होते रहेगे यहां तक कि उन को क़ियामत के दिन उन का बदला दिया जाएगा ।

(سنن الترمذی، کتاب التفسیر عن رسول اللہ، ومن سورۃ النساء، الحدیث:۳۰۵۰،ج۵، ص۳۱)

सिद्दीके़ अक्बर का तक़्वा व परहेज़गारी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर तक़्वा व मुजाहदा रिज़ाए इलाही के लिये हो तो येही तक़्वा बाइसे नजात है और जब किसी इन्सान का दिल तक़्वा से ख़ाली हो जाए तो उस का सारी उ़म्र रोना भी उसे काम न देगा कि सब से अफ़्ज़ल चीज़ तक़्वा व परहेज़गारी है । चुनान्चे, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "सब से बड़ी इ़बादत फ़िक़्ह या'नी दीन में ग़ौरो फ़िक्र करना और दीन की सब से अफ़्ज़ल चीज़ तक़्वा या'नी परहेज़गारी है ।" (مجمع الزوائد، کتاب العلم، باب فی فضل العلم، الحدیث:۴۷۹، ج۱، ص۳۲۵)

अल्लाह की ह़राम कर्दा अश्या से बचाने वाला तक़्वा

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तीन ख़स्लतें ऐसी हैं कि जिस में इन में से एक भी न हो कुत्ता उस से

www.dawateislami.net

बेहतर है : (1) ऐसा तक़्वा जो उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा अश्या से बचाए (2) ऐसा हिल्म या'नी बुर्दबारी जिस से वोह जाहिल की जहालत का जवाब दे और (3) ऐसा हुस्ने अख़्लाक़ जिस से वोह लोगों के साथ पेश आए।"

(شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی الحلم۔۔۔الخ، الحدیث:۸۴۲۳، ج۶، ص۳۳۹)

सिद्दीक़े अक्बर के ज़ोह्दो तक़्वा पर क़ुरआन की गवाही

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो वोह मुत्तक़ी हैं जिन के तक़्वे को खुद क़ुरआने अ़ज़ीम बयान फ़रमाता है। चुनान्चे, पारह 30 सूरतुल लैल, आयत नम्बर 17 में इरशाद होता है : ﴿وَ سَیُجَنَّبُهَا الْاَتْقَىۙ۝﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और बहुत जल्द इस से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़गार।" इस आयते मुबारका में सब से बड़े परहेज़गार से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। (تفسیر خزائن العرفان، پ۳۰، اللیل:۱۷)

ज़ोह्दो तक़्वा में ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की मिस्ल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَنْظُرَ عَلَى مِثْلِ عِيسَى فِي الزُّهْدِ فَلْيَنْظُرْ إِلَيْهِ" या'नी जो ज़ोह्दो तक़्वा में ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की मिस्ल किसी को देखना चाहे तो वोह अबू बक्र सिद्दीक़ को देख ले।"(الریاض النضرۃ، ج۱، ص۸۲)

आप के पास सिर्फ़ एक फ़ुदकी कपड़ा था

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रफ़ीक़ रहा हूं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक फ़ुदकी कपड़ा था, सुवारी करते हुवे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे कांटों से जोड़ कर ओढ़ लिया करते थे और जब सुवारी न फ़रमाते तो फिर हम दोनों उसे इस्ति'माल किया करते थे।"

(مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب اللباس والزینۃ، فی لبس الصوف، الحدیث:۱، ج۶، ص۳۹)

www.dawateislami.net

पीते ही कै कर दी

तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फै़ज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल, बाब पेट का कुफ़्ले मदीना, स. 774 पर शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तक़्वा व परहेज़गारी का एक अनोखा वाक़िआ़ कुछ यूं तह़रीर फ़रमाते हैं : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ग़ुलाम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में दूध लाया । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे पी लिया । ग़ुलाम ने अ़र्ज़ की : मैं पहले जब भी कोई चीज़ पेश करता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाते थे लेकिन इस दूध के मुतअ़ल्लिक़ कोई इस्तिफ़्सार नहीं फ़रमाया ? येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "येह दूध कैसा है ?" ग़ुलाम ने जवाब दिया कि मैं ने ज़मानए जाहिलिय्यत में एक बीमार पर मन्तर फूंका था जिस के मुआ़वज़े में आज उस ने येह दूध दिया है । ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुन कर अपने ह़ल्क़ में उंगली डाली और दूध उगल दिया । इस के बा'द निहायत आ़जिज़ी से दरबारे इलाही में अ़र्ज़ किया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस पर मैं क़ादिर था वोह मैं ने कर दिया । इस का थोड़ा बहुत ह़िस्सा जो रगों में रह गया है वोह मुआ़फ़ फ़रमा दे ।"

(صحیح البخاری، مناقب الانصار، ایام الجاهلیة، الحدیث: ۳۸۴۲، ج ۲، ص ۵۷۱، منهاج العابدین، الفصل الخامس، البطن وحفظه، ص ۹۷)

मम्बए ख़ौफे़ खु़दा सिद्दीके़ अक्बर हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कितने ज़बरदस्त मुत्तक़ी थे । कुफ़्फ़ार अक्सर कुफ़्रिय्या कलिमात पढ़ कर मरीज़ों पर झाड़ फूंक करते हैं । दौरे जाहिलिय्यत में भी इसी त़रह़ होता था, उस ग़ुलाम ने चूंकि ज़मानए जाहिलिय्यत में दम किया था, लिहाज़ा इस ख़ौफ़ के सबब कि उस ने कुफ़्रिय्या मन्तर पढ़ कर दम किया होगा, उस की उजरत का दूध सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कै कर के निकाल दिया ।

www.dawateislami.net

गुनाह से बाज़ रहने से बढ़ कर कोई तक़्वा नहीं

यक़ीनन फ़राइज़ की अदाएगी के साथ साथ अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हराम कर्दा चीज़ों से बचाने ही का नाम तक़्वा है। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "ऐ अबू ज़र ! **तदबीर** से बढ़ कर कोई **अ़क़्ल** नहीं और **गुनाह** से बाज़ रहने से बढ़ कर कोई **तक़्वा** नहीं और **हुस्ने अख़्लाक़** से बढ़ कर कोई **शराफ़त** नहीं।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الخلق الحسن، الحدیث: ۴۰۵۹، ج۳، ص۳۲۷)

यक़ीनन मम्बए ख़ौफ़े ख़ुदा सिद्दीके़ अक्बर हैं
हक़ीक़ी आ़शिके़ ख़ैरुल वरा सिद्दीके़ अक्बर हैं
निहायत मुत्तक़ी व पारसा सिद्दीके़ अक्बर हैं
तक़ी हैं बल्कि शाहे अतक़िया सिद्दीके़ अक्बर हैं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिद्दीके़ अक्बर और कु़फ़्ले मदीना

ज़बान की सख़्ती की शिकायत

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक बार हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आए तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़बान को पकड़ कर खींच रहे हैं। हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "ऐ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ! येह आप क्या कर रहे हैं ?" फ़रमाया : "येही वोह शै है जिस ने मुझे हलाकतों में डाल दिया है। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस्म का कोई उ़ज़्व ऐसा नहीं जो ज़बान की सख़्ती की शिकायत न करता हो।"

(شعب الایمان، باب حفظ اللسان، فصل فی فضل السکوت۔۔۔الخ، الحدیث: ۴۹۴۷، ج۴، ص۲۴۴)

www.dawateislami.net

कु़फ़्ले मदीना के लिये मुंह में पथ्थर

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ 415 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब '**इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा**' स. 234 पर है : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने मुंह में छोटे छोटे पथ्थर रखते थे, जिन के ज़रीए़ (फ़ुज़ूल) गुफ़्त्गू से परहेज़ करते।"

ज़बान का कु़फ़्ले मदीना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ुज़ूल बात से बचने के मदनी नुस्ख़े की क्या बात है ! वाके़ई अगर ज़बान का कु़फ़्ले मदीना लगाना नसीब हो जाए तो हम बहुत सारे गुनाहों से बच सकते हैं, ज़बान के कु़फ़्ले मदीना के बारे में दो अह़ादीस पेशे ख़िदमत हैं :

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**مَنْ صَمَتَ نَجَا**" या'नी जो चुप रहा उस ने नजात पाई।"

(سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ والرقائق، باب ماجاء فی صفۃ اوانی الحوض، الحدیث: ۲۵۰۹، ج۴، ص۲۲۵)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़ुसीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबियों के ताजदार, रसूलों के सालार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ख़ामोशी पर क़ाइम रहना साठ साल की इबादत से बेहतर है।"

(شعب الایمان، باب حفظ اللسان، فصل فی فضل السکوت۔۔۔ الخ، الحدیث: ۴۹۵۳، ج۴، ص۲۴۵)

जवाबी कारवाई पर शैत़ान की आमद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर वक़्त ज़बान का कु़फ़्ले मदीना लगाने की कोशिश कीजिये ख़ुसूसन जब कोई हम से उलझे या बुरा भला कहे उस वक़्त ख़ामोशी में ही

www.dawateislami.net

आ़फ़िय्यत है अगर्चे शैत़ान लाख वस्वसे डाले कि "तू भी इस को जवाब दे वरना लोग तुझे बुज़दिल कहेंगे, मियां ! शराफ़त का ज़माना नहीं है इस त़रह़ तो लोग तुझे जीने भी नहीं देंगे वग़ैरा वग़ैरा ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस वाक़िए़ पर ग़ौर फ़रमाइये, आप को अन्दाज़ा होगा कि दूसरे के बुरा भला कहते वक़्त ख़ामोश रहने वाला रह़मते इलाही के किस क़दर नज़्दीक तर होता है । चुनान्चे,

किसी शख़्स ने सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुरा कहा, जब उस ने बहुत ज़ियादती की तो इन्हों ने उस की बा'ज़ बातों का जवाब दिया (ह़ालांकि आप की जवाबी कारवाई मा'सिय्यत से पाक थी मगर) सरकारे नामदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वहां से उठ गए । सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे पहुंचे, अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह मुझे बुरा कहता रहा आप तशरीफ़ फ़रमा रहे, जब मैं ने उस की बात का जवाब दिया तो आप उठ गए ।" फ़रमाया : "तेरे साथ फ़िरिश्ता था, जो उस का जवाब दे रहा था फिर जब तू ने ख़ुद उसे जवाब देना शुरूअ़ किया, तो शैत़ान दरमियान में आ कूदा ।" (مسند امام احمد، مسند ابی ھریرۃ، الحدیث: ۹۶۳۰، ج ۳، ص ۴۳۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर और तिलावते क़ुरआन

तिलावत करते हुवे गिर्या व ज़ारी

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि मेरे वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब क़ुरआने पाक की तिलावत फ़रमाते तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने आंसूओं पर इख़्तियार न रहता या'नी ज़ारो क़ित़ार रोने लग जाते । (شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، الحدیث: ۸۰۲، ج ۱، ص ۴۹۳)

www.dawateislami.net

तिलावत में रोना कारे सवाब है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुरआने करीम की तिलावत करते हुवे रोना मुस्तहब है । **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "कुरआने पाक की तिलावत करते हुवे रोओ और रो न सको तो रोने की सी शक्ल बनाओ ।" (سنن ابن ماجه، باب فی حسن الصوت بالقرآن، الحدیث:۱۳۳۷، ج۲، ص۱۲۹)

अ़ता कर मुझे ऐसी रिक़्क़त खुदाया
करूं रोते रोते तिलावत खुदाया

गर्मियों में रोज़े

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन हफ़्स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मुझे ख़बर मिली है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गर्मियों में (नफ़्ली) रोज़े रखते और सर्दियों में छोड़ देते थे । (الزهد للامام احمد، زهد ابی بکر الصدیق، الرقم:۵۸۵، ص۱۴۱ تا ۱۴۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई येह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ह़द दरजा तक़्वा व इख़्लास था कि फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा नफ़्ली रोज़े भी गर्मियों में रखते, अगर आज हम अपनी ह़ालत पर ग़ौर करें तो सर्दियों में फ़र्ज़ रोज़े भी बहुत मशक़्क़त के साथ रखते हैं ह़ालांकि सर्दियों में उ़मूमन दिन बहुत छोटे और रातें बहुत त़वील होती हैं, और दिन में प्यास वग़ैरा भी बहुत कम लगती है जब कि गर्मियों में उ़मूमन दिन बहुत त़वील और रातें बहुत छोटीं होती हैं और दिन में प्यास की शिद्दत भी ज़ियादा होती है । यक़ीनन येह दुन्या की गर्मी आख़िरत की गर्मी के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं कि जब क़ियामत का दिन होगा और सूरज सवा मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, शिद्दते प्यास से ज़बानें बाहर निकल पड़ी होंगी, लोग अपने ही पसीने में डुबकियां लगा रहे होंगे । उस वक़्त की गर्मी बरदाश्त करना यक़ीनन हमारे बस में नहीं, लिहाज़ा दुन्या में ही अच्छे आ'माल कर लीजिये, रब की रिज़ा को ह़ासिल कर लीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मना लीजिये और बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से सायए अ़र्श पाने के लिये आज दुन्या में नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जनाब में सायए अ़र्श की भीक भी मांगते रहिये :

www.dawateislami.net

या इलाही गर्मिये महशर से जब भड़कें बदन
दामने महबूब की ठन्डी हवा का साथ हो

या इलाही जब ज़बानें बाहर आएं प्यास से
साहिबे कौसर शहे जूदो अ़ता का साथ हो

या इलाही सर्द मेहरी पर हो जब ख़ुर्शिदे हश्र
सय्यिदे बे साया के ज़िले लिवा का साथ हो

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** علیہ رحمۃ الرحمٰن के इस मुबारक कलाम (मुनाजात) के तीनों अश्आ़र की बित्तरतीब शर्ह़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "(1) ऐ मेरे मा'बूद ! जब मह़शर बपा होगा और वहां की होशरुबा गर्मी से लोगों के बदन तप और जल रहे होंगे उस वक़्त हम ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा को अपने प्यारे मह़बूब صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के दामने करम की ठन्डी ठन्डी हवा नसीब करना (2) ऐ मेरे पाक परवर दगार ! क़ियामत की ख़ौफ़नाक तपश और जान लेवा प्यास की शिद्दत से जब ज़बानें सूख कर कांटा हो जाएं और बाहर निकल पड़ें ! ऐसे दिल हिला देने वाले माहोल में साहिबे जूदो सख़ावत, मालिके कौसरो जन्नत صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم का साथ नसीब करना, काश ! काश ! काश ! हम प्यास के मारों को साहिबे कौसर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के प्यारे प्यारे हाथों से कौसर के छलकते जाम नसीब हो जाएं (3) ऐ रब्बे करीम ! क़ियामत के तपते हुवे मैदान में कि जब सूरज ख़ूब बिफरा हुवा आग बरसा रहा हो, आह ! ऐसी जान घुलाने वाली सख़्त कड़ी धूप में जब कि भेजे खोल रहे हों, हमारे उस सय्यिदो सरदार صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم जिन का धूप में साया ज़मीन पर न पड़ता था के अ़ज़ीमुश्शान झन्डे का हमें साया अ़ता करना। (आमीन)

(नेकी की दा'वत हि़स्सा अव्वल, स. 235)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

इबादत की मिठास

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "पेट भर कर खाने से इबादत की ह़लावत मफ़्क़ूद (या'नी मिठास ग़ाइब) हो जाती है।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "मैं जब से मुसलमान हुवा हूं कभी पेट भर कर नहीं खाया, ताकि इबादत की ह़लावत (मिठास) नसीब हो और जब से मैं मुसलमान हुवा हूं दीदारे इलाही के जाम पीने के शौक़ में कभी सैर हो कर नहीं पिया।" (منہاج العابدین، الفصل الخامس، البطن وحفظه، ص ۹۳)

भूक की और प्यास की मौला मुझे सोग़ात दे

या इलाही ! ह़श्र में दीदार की ख़ैरात दे

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى का इरशाद है : "इबादत एक फ़न है जिस के सीखने की जगह ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) है और इस का आला भूक है।"

(منہاج العابدین، الفصل الخامس، البطن وحفظه، ص ۹۳)

कई कई रोज़ तक फ़ाक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام में से बा'ज़ कई कई रोज़ तक नहीं खाते थे। चुनान्चे, हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه छे दिन तक कुछ तनावुल न फ़रमाते, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه सात दिन तक न खाते, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के शागिर्दे रशीद ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल जौज़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه सात दिन भूके रहते, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम और ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ تعالى عَلَيْهِما हर तीन दिन के बा'द खाना तनावुल फ़रमाते। येह तमाम ह़ज़रात भूक के ज़रीए आख़िरत के रास्ते पर चलने में मदद ह़ासिल करते थे। (منہاج العابدین، الفصل الخامس، البطن وحفظه، ص ۹۳)

www.dawateislami.net

फ़ाक़ा मस्तों का वासित़ा मौला
बख़्श दे मेरी हर ख़त़ा मौला

पूरे साल भर का फ़ाक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कई कई रोज़ तक भूका रहना हर एक के बस का रोग नहीं, येह इन्हीं ह़ज़रात का ह़िस्सा और इन की करामत थी। ह़क़ीक़त येह है कि इन्हें रूह़ानी ग़िज़ा ह़ासिल थी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से बा'ज़ औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام चालीस चालीस दिन तक नहीं खाते थे बल्कि हमारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने तो बा'ज़ अवक़ात एक एक साल बिग़ैर खाए पिये गुज़ारा है। शहनशाहे बग़दाद हमारे ग़ौसे पाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ख़ुद खिलाता पिलाता था। चुनान्चे,

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت का एक मुबारक शे'र है।

क़समे दे दे के खिलाता है पिलाता है तुझे
प्यारा अल्लाह तेरा चाहने वाला तेरा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर का यौमिया वज़ीफ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बैअ़ते ख़िलाफ़त के दूसरे रोज़ कुछ चादरें ले कर बाज़ार जा रहे थे, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त किया कि "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहां तशरीफ़ ले जा रहे हैं ?" फ़रमाया : "ब ग़रज़े तिजारत बाज़ार जा रहा हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "अब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह काम छोड़ दीजिये, अब आप लोगों के ख़लीफ़ा (अमीर) हो गए हैं।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर मैं येह काम छोड़ दूं तो फिर

www.dawateislami.net

मेरे अहलो इयाल कहां से खाएंगे ?" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस चलिये, अब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के येह अख़्राजात ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तै करेंगे । फिर येह दोनों ह़ज़रात ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास तशरीफ़ लाए और उन से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "आप ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन के अहलो इयाल के वासिते़ एक औसत़ दरजे के मुहाजिर की ख़ूराक का अन्दाज़ा कर के रोज़ाना की ख़ूराक और मौसिमे गरमा व सरमा का लिबास मुक़र्रर कीजिये, लेकिन इस त़रह़ कि जब फट जाए तो वापस ले कर इस के इ़वज़ नया दे दिया जाए ।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये आधी बकरी का गोश्त, लिबास और रोटी मुक़र्रर कर दी । (تاریخ الخلفاء، ص ۵۹)

तर्के कसब किस के लिये अफ़्ज़ल है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی इह़याउल उ़लूम में नक़्ल फ़रमाते हैं : "तर्के कसब (न कमाना) चार क़िस्म के आदमियों के लिये अफ़्ज़ल है : (1) जो इ़बादाते बदनिया में मसरूफ़ रहता है (2) वोह शख़्स जो अह़वाल व मुकाशफ़ात के उ़लूम में बात़िनी सैर और क़ल्बी अ़मल में मश्ग़ूल होता है (3) वोह आ़लिम जो इ़ल्मे ज़ाहिर की तर्बिय्यत करता है, जिस के ज़रीए़ लोगों को उन के दीन के बारे में नफ़्अ़ ह़ासिल होता है, जैसे मुफ़्ती, मुफ़स्सिर, मुह़द्दिस वग़ैरा (4) वोह शख़्स जो मुसलमानों के मुआ़मलात में मसरूफ़ होता है और उस ने इन के कामों की ज़िम्मेदारी उठाई है, जैसे बादशाह, क़ाज़ी, और गवाह ।" येह लोग जब इन अमवाल से किफ़ायत किये जाएं जो (मुसलमानों के) मसालेह़ या'नी भलाइयों के लिये मुक़र्रर हैं या अवक़ाफ़ के माल से फ़ुक़रा व उ़लमा को दिया जाए तो इन के लिये माल कमाने में मश्ग़ूलिय्यत की निस्बत येह उमूर अफ़्ज़ल हैं, इसी लिये सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ वह़ी भेजी गई कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने रब عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द के साथ उस की

www.dawateislami.net

पाकीज़गी बयान करें और सजदा करने वालों में से हो जाएं और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ येह वही नहीं भेजी गई कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ताजिरों में से हो जाएं, क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में येह चारों बातें जम्अ़ थीं बल्कि इस से भी ज़ियादा उमूर कि जो बयान से बाहर हैं, इसी लिये सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को मश्वरा दिया था कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه तिजारत छोड़ दें, जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुसलमानों के उमूर के वली बने थे क्यूंकि येह अ़मल उम्मत के मसाइल के रास्ते में रुकावट बन सकता था और आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बैतुल माल से ज़रूरत के मुताबिक़ लेते थे और आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इसी को बेहतर समझा फिर जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के विसाल का वक़्त क़रीब हुवा तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह माल बैतुल माल की तरफ़ लौटाने की वसिय्यत फ़रमाई लेकिन इब्तिदा में इसे लेना बेहतर समझा।

(احیاء العلوم، کتاب آداب الکسب والمعاش، الباب الاول فی فضل الکسب والحث علیه، جلد ۲، ص ۸۲)

हुसूले इल्मे दीन के लिये सफ़र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दौरे ह़ाज़िर में दीने इस्लाम का निज़ाम या'नी मस्जिद, मद्रसा, जामिआ़ और नेकी की दा'वत वग़ैरा के ह़ालात इन्तिहाई नागुफ़्ता बेह (नाक़ाबिले बयान) हैं। यक़ीनन फ़राइज़ उ़लूम का सीखना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है लेकिन येह नहीं हो सकता कि मिल्लते इस्लामिय्या का हर फ़र्द अपना घर बार छोड़ कर दीने इस्लाम की ता'लीमात व अह़कामात की नश्रो इशाअ़त के लिये सफ़र करे, क्यूंकि इस त़रह़ तो तिजारत, ज़राअ़त और सन्अ़त वग़ैरा में ख़लल वाक़ेअ़ हो जाएगा, लेकिन बिला शुबा येह तो मुमकिन है कि हर अ़लाक़ा व शहर से कुछ न कुछ अफ़राद ह़ुसूले इल्मे दीन और इस की तरवीज के लिये अपने आप को वक़्फ़ कर दें चुनान्चे, पारह 11 सूरतुत्तौबा आयत 122 में इरशाद होता है :

﴿وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْۤا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मुसलमानों से येह तो हो नहीं सकता कि सब के सब निकलें तो क्यूं न हुवा कि इन के हर गुरोह में से एक जमाअ़त निकले कि दीन की समझ ह़ासिल करें और वापस आ कर अपनी क़ौम को डर सुनाएं इस उम्मीद पर कि वोह बचें।

www.dawateislami.net

हज़रते सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती सय्यिद हाफ़िज़ **मुहम्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयत के तह़त "तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में लिखते हैं : हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि क़बाइले अ़रब में से हर हर क़बीले से जमाअ़तें सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुज़ूर हाज़िर होतीं और वोह (लोग) हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दीन के मसाइल सीखते और **तफ़क़्क़ोह** या'नी (इल्मे दीन की समझ बूझ) ह़ासिल करते और अपनी क़ौम के लिये हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी का हुक्म देते और नमाज़, ज़कात वग़ैरा की ता'लीम के लिये उन्हें उन की क़ौम पर मामूर फ़रमाते। जब वोह लोग अपनी क़ौम पर पहुंचते तो ए'लान कर देते कि जो इस्लाम लाए वोह हम में से है और लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ दिलाते और दीन की मुख़ालफ़त से डराते यहां तक कि लोग अपने वालिदैन को छोड़ देते और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हें दीन के तमाम ज़रूरी उ़लूम ता'लीम फ़रमा देते (ख़ाज़िन) येह रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मो'जिज़ए अ़ज़ीमा है कि बिल्कुल बे पढ़े लोगों को बहुत थोड़ी देर में दीन के अह़काम का आ़लिम और क़ौम का हादी बना देते थे।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अख़राजात से ज़ाइद रक़म कम करवा दी

हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की अहलियाए मोह़तरमा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को ह़ल्वा खाने की ख़्वाहिश हुई तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : "हमारे पास इतनी रक़म भी नहीं कि हम ह़ल्वा ख़रीद सकें।" अ़र्ज़ की : "मैं अपने घरेलू अख़राजात में से चन्द दिनों में थोड़े थोड़े पैसे बचा कर कुछ रक़म जम्अ़ कर लूंगी उसी से ह़ल्वा ख़रीद लेंगे।" फ़रमाया : "ठीक है ऐसा कर लेना।" चुनान्चे, आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ की ज़ौजए मोह़तरमा ने रक़म जम्अ़ करना शुरूअ़ की। काफ़ी दिनों बा'द थोड़ी सी रक़म जम्अ़ हो गई, जब उन्हों ने आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को बताया ताकि आप ह़ल्वा ख़रीद लें तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने वोह रक़म ली और बैतुल माल में लौटा दी और फ़रमाया कि "येह हमारे अख़राजात से ज़ाइद है। इस के बा'द आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने आयिन्दा के लिये बैतुल माल से मिलने वाले अख़राजात से इतनी रक़म कम करवा दी।" (الكامل فى التاريخ، ج٢، ص ٢٧١)

www.dawateislami.net

उस का मुशाहरा तो इतना ज़ियादा और मेरा इतना कम...?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत को सुन कर फ़क़त़ ना'रए दादो तह़सीन बुलन्द कर के दिल को खुश कर लेने के बजाए हमें भी तक़्वा और क़नाअ़त का दर्स ह़ासिल करना चाहिये । बिल खुसूस अरबाबे इक़्तिदार व हुकूमती अफ़सरान, नीज़ आइम्मए मसाजिद, दीनी मदारिस के मुदर्रिसीन और मुख़्तलिफ़ इस्लामी शो'बाजात से वाबस्ता इस्लामी भाइयों के लिये इस हिकायत में क़नाअ़त व खुद्दारी अपनाने, हिर्स व त़म्अ़ से खुद को बचाने और अपनी आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये ख़ूब ख़ूब ख़ूब सामाने इब्रत है । काश ! हम सब मह़ज़ नफ़्स की तह़रीक पर मुशाहरे की कमी बेशी या'नी "**उस का मुशाहरा तो इतना ज़ियादा और मेरा इतना कम**" कह कह कर इस त़रह़ के मुआ़मलात में उलझने के बजाए क़लील आमदनी पर क़नाअ़त करते हुवे नेकियों में कसरत के तमन्नाई बन जाएं । सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के तक़्वा व परहेज़गारी और दुन्यवी दौलत से बे रग़बती के मुतअ़ल्लिक़ एक और हिकायत मुलाह़ज़ा कीजिये । चुनान्चे,

वक़्फ़ की चीज़ों के बारे में एह़तियात

इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे अ़र्श मक़ाम, इमामुल हुमाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी वफ़ात के वक़्त उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : "देखो ! येह ऊंटनी जिस का हम दूध पीते हैं और येह बड़ा पियाला जिस में खाते पीते हैं और येह चादर जो मैं ओढ़े हुवे हूं येह सब बैतुल माल से लिया गया है । हम इन से उसी वक़्त तक नफ़्अ़ उठा सकते हैं जब तक मैं मुसलमानों के उमूरे ख़िलाफ़त अन्जाम देता रहूंगा । जिस वक़्त मैं वफ़ात पा जाऊं तो येह तमाम सामान ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को दे देना । चुनान्चे, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इन्तिक़ाल हो गया तो उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने येह तमाम चीज़ें ह़स्बे वसिय्यत वापस कर दीं । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने चीज़ें वापस पा कर फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़म फ़रमाए कि आप ने तो अपने बा'द में आने वालों को थका दिया है ।" (تاریخ الخلفاء، ص۶۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सिद्दीके़ अक्बर की खुशूअ़ व खुज़ूअ़ वाली नमाज़

नमाज़ में खुशूअ़ व खुज़ूअ़

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब नमाज़ में क़ियाम फ़रमाते तो खुशूअ़ व खुज़ूअ़ की वजह से एक सीधी लकड़ी की मानिन्द होते ।

(جمع الجوامع، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۱۶۴، ج ۱۱، ص ۴۰، السنن الکبری للبیھقی، کتاب الصلاۃ، باب ابواب الخشوع فی الصلاۃ، الحدیث: ۳۵۲۲، ج ۲، ص ۳۹۸)

यक्सूई के साथ नमाज़ की अदाएगी

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही खुशूअ़ व खुज़ूअ़ से नमाज़ अदा करने का एहतिमाम किया करते थे, और इबादत निहायत अह़सन अन्दाज़ में अदा करने के शाइक़ थे । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "كَانَ أَبُوْبَكْرٍ لَا يَلْتَفِتُ فِيْ صَلَاتِهٖ या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ के दौरान इधर उधर बिल्कुल मुतवज्जेह नहीं होते थे ।"

(فضائل الصحابۃ للامام احمد، بقیۃ قولہ: مروا أبابکر یصلی بالناس، ج ۱، ص ۲۰۲)

आप ने नमाज़ किस से सीखी ?

अहले मक्का कहा करते थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जुरैज رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने नमाज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ता बिन अबी रबाह़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से सीखी है और इमाम अ़ता ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से सीखी है । सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने नानाए मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से सीखी । और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सीखी थी ।

(فضائل الصحابۃ للامام احمد، بقیۃ قولہ: مروا أبابکر یصلی بالناس، ج ۱، ص ۲۰۸)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर और नमाज़े तहज्जुद

हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "مَتٰی تُوتِرُ या'नी ऐ अबू बक्र ! तुम किस वक़्त वित्र अदा करते हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अर्ज़ किया : "اُوتِرُ مِنْ اَوَّلِ اللَّیْلِ या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं रात के अव्वल हिस्से में पढ़ लेता हूं।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "مَتٰی تُوتِرُ या'नी ऐ उ़मर ! तुम किस वक़्त वित्र अदा करते हो ?" उन्हों ने अर्ज़ किया : "آخِرَ اللَّیْلِ या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं रात के आख़िरी हिस्से में पढ़ लेता हूं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये इरशाद फ़रमाया : "أَخَذَ هٰذَا بِالْحَزْمِ अबू बक्र ने येह त़रीक़ा एह़तियात़ की वजह से इख़्तियार किया।" और हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये इरशाद फ़रमाया : "اَخَذَ هٰذَا بِالْقُوَّةِ या'नी उ़मर ने येह त़रीक़ा क़ुव्वत की बिना पर इख़्तियार किया।"

(سنن ابی داود، کتاب الصلوۃ، باب الوتر قبل النوم، الحدیث: ۱۴۳۴، ج۲، ص ۹۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर और मरीज़ों की इ़यादत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही ग़म ख़्वार थे, और क़ल्बी त़ौर पर इस क़दर रह़्म दिल और ह़स्सास थे कि किसी मुसलमान को बड़ी मुसीबत तो कुजा छोटी सी तक्लीफ़ में देखना भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को गवारा न था। येही वजह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कई ऐसे मुसलमान गुलामों को अपनी ज़ाती रक़म अदा कर के आज़ाद करवाया जो अपने आक़ा के हाथों ज़ुल्मो सितम का निशाना बनते थे। इसी त़रह़ बीमार अस्ह़ाब की ग़म ख़्वारी करते हुवे

www.dawateislami.net

उन की इ़यादत करना भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आ़दत में शामिल था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की इ़यादत करने और इस दौरान होने वाले एक **इ़ल्मी मुकालमे** पर मुश्तमिल, नफ़ीसो लत़ीफ़ और निहायत ही दिलचस्प ह़िकायत पेशे ख़िदमत है। चुनान्चे,

ख़ुलफ़ाए राशिदीन का मदनी मुकालमा

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم बीमार हो गए, जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों से इरशाद फ़रमाया : "ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बीमार हो गए हैं, हमें इन की इ़यादत के लिये ज़रूर जाना चाहिये।" येह सुन कर वोह भी तय्यार हो गए। लिहाज़ा तीनों ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के घर पहुंचे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के मरज़ में कमी आ चुकी थी और आप की त़बीअ़त भी काफ़ी बेहतर हो चुकी थी। दरवाज़ा खोल कर जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन तीनों बुज़ुर्ग हस्तियों को देखा तो ख़ुशी से दिल बाग़ बाग़ हो गया और इन्हें अन्दर बुला लिया। तीनों मदनी मेहमानों को देख कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दरयाए सख़ावत जोश में आ गया। और इन मुबारक मेहमानों की ज़ियाफ़त के लिये अन्दर तशरीफ़ ले गए ताकि कुछ खाने के लिये लाएं लेकिन इन मदनी मेहमानों की ज़ियाफ़त के लिये उस वक़्त घर में कुछ भी न था। अलबत्ता सिर्फ़ एक साफ़ और शफ़्फ़ाफ़ बरतन में फ़क़त़ एक फ़र्द के लिये थोड़ा सा शहद मौजूद था और उस में भी एक काला बाल पड़ा था। बहर ह़ाल आप वोही ले कर इन तीनों मुबारक मदनी मेहमानों की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गए और उस शहद वाले बरतन को सामने रख दिया। जिस बरतन में शहद था वोह सफे़द रंग का था और उस वक़्त बहुत चमक रहा था। सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की इस पुर ख़ुलूस मेज़बानी को देख कर इन तीनों मुबारक मदनी मेहमानों के दिल भी ख़ुशी व मसर्रत से झूम उठे। और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चारों दोस्तों की इस प्यारी मह़फ़िल को मज़ीद ख़ुश गवार बनाने के लिये इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

لَا يَلِيْقُ الْاَ كْلُ قَبْلَ الْمَقَالَةِ कुछ कहने से क़ब्ल खाना लाइक़ नहीं है या'नी हमारे सामने एक सफ़ेद चमक दार बरतन में थोड़ा सा शहद है और इस में भी सियाह बाल है, लिहाज़ा खाने से क़ब्ल इन तीनों चीज़ों या'नी इस बरतन, शहद और सियाह बाल के बारे में सब कुछ न कुछ गुफ़्तगू करेंगे।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह मदनी मश्वरा सब को बहुत पसन्द आया और सब ने रिज़ामन्दी का इज़्हार किया। अलबत्ता येह मुतालबा किया गया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि हम में सब से ज़ियादा अज़ीज़ व मुकर्रम और हमारे सरदार हैं लिहाज़ा गुफ़्तगू की इब्तिदा आप ही से होगी। आप ने फ़रमाया : "ठीक है।" फिर इरशाद फ़रमाया :

اَلدِّيْنُ أَنْوَرُ مِنَ الطَّسْتِ وَذِكْرُ اللّٰهِ تَعَالٰى أَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ وَالشَّرِيْعَةُ أَدَقُّ مِنَ الشَّعْرِ

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीन इस बरतन से भी ज़ियादा नूरानी है, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र इस शहद से भी ज़ियादा मीठा है, और शरीअ़त इस बाल से भी ज़ियादा बारीक है।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यूं लब कुशाई की :

اَلْجَنَّةُ أَنْوَرُ مِنَ الطَّسْتِ وَنَعِيْمُهَا أَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ وَ الصِّرَاطُ أَدَقُّ مِنَ الشَّعْرِ

या'नी जन्नत इस बरतन से भी ज़ियादा नूरानी है, और उस की ने'मतें इस शहद से भी ज़ियादा मीठी हैं, और पुल सिरात़ इस बाल से भी ज़ियादा बारीक है।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यूं गोया हुवे :

اَلْقُرْآنُ أَنْوَرُ مِنَ الطَّسْتِ وَقِرَاءَتُهُ أَحْلَى مِنَ الْعَسَلِ وَ تَفْسِيْرُهُ أَدَقُّ مِنَ الشَّعْرِ

या'नी क़ुरआने पाक इस बरतन से भी ज़ियादा नूरानी है, और इस की तिलावत इस शहद से भी ज़ियादा मीठी है, और इस की तफ़्सीर इस बाल से भी ज़ियादा बारीक है।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने यूं फ़रमाया :

www.dawateislami.net

اَلضَّیْفُ أَنْوَرُ مِنَ الطَّسْتِ وَ کَلَامُ الضَّیْفِ أَحْلٰی مِنَ الْعَسَلِ وَقَلْبُهٗ أَدَقُّ مِنَ الشَّعْرِ

या'नी मेरे घर में तशरीफ़ लाने वाले मेहमान इस बरतन से भी ज़ियादा शफ़्फ़ाफ़ व नूरानी हैं और इन का कलाम इस शहद से भी ज़ियादा मीठा है और इन का दिल इस बाल से भी ज़ियादा बारीक या'नी नाज़ुक है।" (تفسیر روح البیان، تحت سورۃ الرعد، ج۴، ص۳۷۷)

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इतरत रसूलुल्लाह की

अल्लाह मेरा हश्र बू बक्र और उमर
उस्माने ग़नी व हज़रते मौला अ़ली के साथ

पहुंचूं मदीने काश ! इस बे खुदी के साथ
रोता फिरूं गली गली दीवानगी के साथ

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर की अपनी बेटी पर शफ़्क़त

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा किसी ग़ज़्वा से हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो मैं इन के साथ इन के घर गया, क्या देखता हूं कि इन की साहिबज़ादी हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बुख़ार में मुब्तला हैं और लेटी हुई हैं। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के पास तशरीफ़ लाए और उन की इ़यादत करते हुवे पूछा : "मेरी बेटी ! तृबीअ़त कैसी है ?" और फिर (अज़ राहे शफ़्क़त) उन के रुख़्सार पर बोसा दिया। (سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی قبلۃ الخد، الحدیث: ۵۲۲۲، ج۴، ص۴۵۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर और लवाहिक़ीन से ता'ज़िय्यत

ता'ज़िय्यत का मदनी अन्दाज़

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुहम्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब किसी का इन्तिक़ाल हो जाता और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के औलिया

www.dawateislami.net

से ता'ज़िय्यत करते तो यूं फ़रमाते : "तस्कीन में कोई मुसीबत नहीं, रोने धोने का कोई फ़ाइदा नहीं, मौत अपने मा बा'द के लिये आसान और मा क़ब्ल के लिये सख़्त है, तुम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी को याद करो तुम्हारी मुसीबत कम हो जाएगी और तुम्हारा अज्र बढ़ जाएगा।"

(التمهيد لما في المؤطا من المعاني والاسانيد، عبد الرحمن بن قاسم بن محمد، ج ٨، ص ٩٧)

ता'ज़िय्यत करना बाइसे सवाब है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी मुसीबत ज़दा मुसलमान से ता'ज़िय्यत करना भी बाइसे सवाब है। अहादीसे मुबारका में इस की बहुत फ़ज़ीलत बयान हुई है।

चुनान्चे, इस ज़िम्न में तीन अहादीसे मुबारका पेशे ख़िदमत हैं :

(1) "जो बन्दए मोमिन अपने किसी मुसीबत ज़दा भाई की ता'ज़िय्यत करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे करामत का जोड़ा पहनाएगा।"

(سنن ابن ماجة، كتاب الجنائز، باب ما جاء في ثواب من عزى مصابا، الحديث: ١٦٠١، ج ٢، ص ٢٦٨)

(2) हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : मुझे येह ख़बर पहुंची है कि हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में अ़र्ज़ की : "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ वोह कौन है जो तेरे अ़र्श के साए में होगा जिस दिन उस के इलावा कोई साया न होगा ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) वोह लोग जो मरीज़ों की इयादत करते हैं, जनाज़े के साथ जाते हैं और किसी का बच्चा फ़ौत हो जाए उस से ता'ज़िय्यत करते हैं।" (حلية الاولياء، الحديث: ٢٠٧٤، ج ٣، ص ٣٨)

(3) "जो किसी ग़मज़दा शख़्स से ता'ज़िय्यत करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूहों के दरमियान उस की रूह पर रह़मत फ़रमाएगा और जो किसी मुसीबत ज़दा से ता'ज़िय्यत करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े पहनाएगा जिन की क़ीमत (सारी) दुन्या भी नहीं हो सकती।"

(المعجم الاوسط للطبراني، من اسمه هاشم، الحديث: ٩٢٩٢، ج ٦، ص ٤٢٩)

www.dawateislami.net

ता'ज़िय्यत करने के आदाब

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ 1360 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल, हिस्सा चहारुम सफ़हा 852 पर है :

(1) ता'ज़िय्यत मसनून (या'नी सुन्नत) है। (2) ता'ज़िय्यत का वक़्त मौत से तीन दिन तक है, इस के बा'द मकरूह है कि ग़म ताज़ा होगा मगर जब ता'ज़िय्यत करने वाला या जिस की ता'ज़िय्यत की जाए वहां मौजूद न हो या मौजूद है मगर उसे इ़ल्म नहीं तो बा'द में ह़रज नहीं। (3) दफ़्न से पेशतर भी ता'ज़िय्यत जाइज़ है, मगर अफ़्ज़ल येह है कि दफ़्न के बा'द हो या उस वक़्त है कि औलियाए मय्यित जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ न करते हों, वरना उन की तसल्ली के लिये दफ़्न से पेशतर ही करे। (4) मुस्तह़ब येह है कि मय्यित के तमाम अक़ारिब को ता'ज़िय्यत करें, छोटे बड़े मर्द व औ़रत सब को मगर औ़रत को उस के मह़ारिम ही ता'ज़िय्यत करें। ता'ज़िय्यत में येह कहे : **अल्लाह** तआ़ला मय्यित की मग़फ़िरत फ़रमाए और इस को अपनी रह़मत में ढांके और तुम को सब्र रोज़ी (या'नी अ़ता) करे और इस मुसीबत पर सवाब अ़ता फ़रमाए।

(मज़ीद तफ़्सील के लिये बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल, स. 852 मुलाह़ज़ा कीजिये।)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रामीने सिद्दीक़े अक्बर

(1) ख़ुश क़िस्मत शख़्स

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "बहुत ख़ुश क़िस्मत है वोह शख़्स जो इब्तिदाए इस्लाम में (या'नी फ़ितनों के सर उठाने से पहले) दुन्या से चला गया।" (مسند الفردوس، باب الطاء، الحدیث:۳۷۴۷، ج۲، ص۴۶)

काश ! कि मैं दुन्या में पैदा न हुवा होता
क़ब्रो ह़श्र का हर ग़म ख़त्म हो गया होता

www.dawateislami.net

जां-कनी की तक्लीफ़ें ज़ब्ह से हैं बढ़ कर काश !
मुर्ग़ बन के तैबा में ज़ब्ह हो गया होता
आह ! कसरते इस्यां हाए ! ख़ौफ़ दोज़ख़ का
काश ! इस जहां का मैं न बशर बना होता

दुन्या तो निरी आज़माइश है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इस फ़रमान में इब्रत के बे शुमार मदनी फूल हैं, वाक़ेई दुन्या तो निरी आज़माइश है, बल्कि जो इस दुन्या में आ गया यक़ीनन वोह फंस गया। और जो जितना जल्दी ईमान की सलामती के साथ इस से चला गया वोह उतना ही फ़ाइदे में रहा।

चार चीज़ों के सिवा दुन्या मलऊ़न है

सुल्ताने मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "होशयार रहो, दुन्या ला'नती चीज़ है और जो कुछ दुन्या में है वोह मलऊ़न है, सिवाए **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र और उस चीज़ के जो रब तआ़ला के क़रीब कर दे और आ़लिम और त़ालिबे इल्म के।" (سنن الترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی ھوان الدنیا علی اللہ، الحدیث: ۲۳۲۹، ج۴، ص۱۴۴)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : "जो चीज़ **अल्लाह** व रसूल से ग़ाफ़िल कर दे वोह दुन्या है या जो **अल्लाह** व रसूल की नाराज़ी का सबब हो वोह दुन्या है। बाल बच्चों की परवरिश, ग़िज़ा, लिबास, घर वग़ैरा। (शरीअ़त की नाफ़रमानी से बचते हुवे) ह़ासिल करना सुन्नते अम्बियाए किराम है येह दुन्या नहीं।" (مراٰۃ المناجیح، ج۷، ص۱۷)

दौलते दुन्या से बे रग़बत मुझे कर दीजिये
मेरी ह़ाजत से मुझे ज़ाइद न करना मालदार
हुस्ने गुलशन में सरासर है फ़रेब ऐ दोस्तो
देखना है हुस्न तो देखो अ़रब के गुलज़ार

www.dawateislami.net

केन्सर का मरज़ ख़त्म हो गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ानी लज़्ज़तों से अपने आप को बचाने का जज़्बा बढ़ाने और दुन्यवी ने'मतों के सबब होने वाले हिसाबे आख़िरत से ख़ुद को डराने, नेकी की दा'वत का जज़्बा पाने, सुन्नतों पर अ़मल करने, नेकियों का सवाब कमाने, दिल में इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ जलाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ "**फ़िक्रे मदीना**" कर के **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करते रहिये और हर मदनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस मदनी मक़्सद "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है**" के ह़ुसूल की ख़ात़िर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के सुन्नतों की तर्बिय्यत के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये। तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है। चुनान्चे, मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि तक़रीबन तीन साल से मेरी अम्मी जान केन्सर के मरज़ में मुब्तला थीं, हर दो[2] माह बा'द इन के टेस्ट होते थे। अम्मी जान के बढ़ते हुवे मरज़ और रोज़ रोज़ डॉक्टरों के पास चक्कर लगाने की परेशानी मुझ से देखी नहीं जाती थी। ऐसे में रमज़ानुल मुबारक 1430 सिने हिजरी की तशरीफ़ आवरी हुई और मैं ने आ़शिक़ाने रसूल के साथ ए'तिकाफ़ करने की सआ़दत ह़ासिल की, वहां अपनी अम्मी जान के लिये ख़ूब दुआ़ की और मदनी माहोल की बरकत से आ़शिक़ाने रसूल के साथ 12 माह मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत कर ली। 12 रमज़ानुल मुबारक को वालिदा के टेस्ट हुवे और दो दिन बा'द जब रिपोर्टस मिलें तो पढ़ कर मेरी ख़ुशी की इन्तिहा न रही क्यूंकि रिपोर्टस बिल्कुल नोर्मल थीं और तीन साल से

www.dawateislami.net

केन्सर का जो मरज़ अम्मी जान की जान नहीं छोड़ रहा था वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरा हुस्ने ज़न है कि मदनी क़ाफ़िले में 12 माह सफ़र की निय्यत करने की बरकत से ख़त्म हो चुका था।

अल्सर व केन्सर या हो दर्दे कमर
देगा मौला शिफ़ा क़ाफ़िले में चलो
दूर बीमारियां, और परेशानियां
हों ब फ़ज़्ले ख़ुदा, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) पड़ोसी से झगड़ा मत करो

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक बार हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से गुज़रे तो वोह अपने पड़ोसी को डांट रहे थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : "अपने पड़ोसी के साथ झगड़ा मत करो क्यूंकि येह तो यहीं रहेगा लेकिन जो लोग तुम्हारी लड़ाई को देखेंगे वोह यहां से चले जाएंगे और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बातें बनाएंगे।

(کنز العمال، کتاب الصحبۃ، باب فی حقوق تتعلق بصحبۃ الجار، الحدیث: ۲۵۵۹۹، ج۵، الجزء: ۹، ص ۷۹)

पड़ोसी के हुक़ूक़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस्लाम में पड़ोसी के हुक़ूक़ की बहुत अहम्मिय्यत है। नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करने की वसिय्यत करता हूं।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पड़ोसियों के इस क़दर हुक़ूक़ बयान फ़रमाए कि ऐसे लगा जैसे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उसे विरासत में हिस्सेदार बना देंगे। (المعجم الکبیر، محمد زیاد الالھانی عن ابی امامۃ، الحدیث: ۷۵۲۳، ج۸، ص ۱۱۱)

www.dawateislami.net

तीन अहादीसे मुबारका

हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी पड़ोसी के साथ झगड़ने वाले शख़्स को किस त़रह़ अह़सन अन्दाज़ में नेकी की दा'वत पेश की, और वाक़ेई उ़मूमन होता भी ऐसा ही है कि जब पड़ोसी आपस में किसी बात पर झगड़ते हैं तो सरासर इन ही का नुक़्सान होता है क्यूंकि लड़ाई के बा'द भी इन्हें एक साथ ही रहना है, और इन का आपस में झगड़ा करना दीगर लोगों के लिये तमाशा बन जाता है। अह़ादीसे मुबारका में पड़ोसी के कई हुक़ूक़ बयान किये गए हैं चुनान्चे, तीन अह़ादीसे मुबारका पेशे ख़िदमत हैं :

(1) "बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वोह अपने पड़ोसी को अपनी शरारतों से मह़फ़ूज़ न रखे।"

(مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب فی الشیخ المجھول۔۔۔الخ، الحدیث: ۱۳۰۲۷، ج۸، ص۱۴۵)

(2) "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अपने पड़ोसी का इकराम करे, जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الحث علی اکرام الجار۔۔۔الخ، الحدیث: ۴۷، ص۴۴)

(3) "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से बेहतरीन रफ़ीक़ वोह है जो अपने दोस्तों के लिये ज़ियादा बेहतर हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से बेहतरीन पड़ोसी वोह है जो अपने पड़ोसियों के लिये ज़ियादा बेहतर हो।"

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی حق الجوار، الحدیث: ۱۹۵۱، ج۳، ص۳۷۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) रोने जैसी सूरत ही बना लो

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "जो रोने की त़ाक़त रखता हो उसे रोना चाहिये वरना रोने जैसी सूरत ही बना ले।"

(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ، الحدیث: ۸۰۶، ج۱، ص۴۹۳)

www.dawateislami.net

अच्छों की नक़्ल भी अच्छी होती है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 616 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"फ़ैज़ाने सुन्नत"** जिल्द दुवुम, बाब **"नेकी की दा'वत"** सफ़्ह़ा 280 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ का मज़्कूरए बाला फ़रमान ज़िक्र करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन अच्छों की नक़्ल भी अच्छी होती है, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 318 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "फ़ज़ाइले दुआ़" सफ़्ह़ा 81 पर दुआ़ की क़बूलिय्यत के आदाब में से अदब नम्बर 33 है : (दुआ़ के दौरान) "आंसू टपकने में कोशिश करे अगर्चे एक ही क़त़्रा हो कि दलीले इजाबत (या'नी क़बूलिय्यत की दलील) है। रोना न आए तो रोने का सा मुंह बनाए कि नेकों की सूरत भी नेक (या'नी अच्छी) है।" दुआ़ के बयान कर्दा अदब की शर्ह़ में आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : "येह (रोने जैसी) सूरत बनाना ब निय्यते तशब्बोह (या'नी रोने वालों की नक़्क़ाली) अल्लाह عزوجل के ह़ुज़ूर (या'नी बारगाहे इलाही में) है न कि औरों के दिखाने को कि वोह (या'नी लोगों को दिखाने के लिये करना) रिया है और ह़राम, येह नुक्ता याद रहे।

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता
मुझे रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) सह़री का वक़्त

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उ़बैद رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالٰی عنہ मुझ से फ़रमाया करते थे : "मेरे और फ़ज्र

www.dawateislami.net

(या'नी तुलूए़ सुब्हे सादिक़) के मा बैन खड़े हो जाओ ताकि मैं सह़री कर लूं।" या'नी सह़री का वक़्त ख़त्म हो तो बताना। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सफ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : "मेरे सह़री करने तक दरवाज़ा बन्द कर दो।" (تاریخ الخلفاء، ص۷۵)

(5) छोटी सी तक्लीफ़ पर भी अज्र

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से येह भी मन्क़ूल है कि "बिला शुबा मुसलमानों को हर चीज़ पर अज्र दिया जाता है ह़त्ता कि छोटी सी मुसीबत और तस्मे के टूटने पर भी नीज़ उस माल पर भी जो उस की आस्तीन में पड़ा हुवा हो फिर वोह मुसलमान उसे ढूंडता फिरे और उसे उस माल के गुम होने का अन्देशा हो फिर उसे ज़ेह्न पर ज़ोर दे कर ह़ासिल करे।" (الزھد للامام احمد، زھد ابی بکر الصدیق، الرقم:۵۲۵، ص۱۳۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई हर त़रह़ की दुन्यवी तक्लीफ़ व मुसीबत पर सब्र कर के अज्र ह़ासिल करना चाहिये क्यूंकि आफ़ात व बलिय्यात या'नी बलाएं और आफ़तें, गुनाहों के कफ़्फ़ारे और बाइसे तरक़्क़िये दरजात होती हैं। चुनान्चे, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, पैकर जूदो सखा़वत, सरापा रह़मत व राफ़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा करता है तो उस के गुनाह की सज़ा फ़ौरी त़ौर पर उसे दुन्या में दे देता है।"

(مسند امام احمد، مسند المدنیین، حدیث عبد اللہ بن مغفل المزنی، الحدیث:۱۶۸۰۶، ج۵، ص۶۳۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(6) पहले हमारी भी येही ह़ालत थी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए ख़िलाफ़त में अहले यमन का एक वफ़्द ह़ाज़िर हुवा जब उन्हों ने क़ुरआन सुना तो रोने लगे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "पहले हमारी भी येही ह़ालत थी लेकिन अब दिल सख़्त हो गए हैं।"

(المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب ما قالوا فی... الخ، الحدیث:۳، ج۸، ص۲۹۶)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली की तशरीह़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : "तुम्हें येह ख़याल नहीं करना चाहिये कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का दिल अ़रबी बद्दूओं के दिलों से ज़ियादा सख़्त था या आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के कलाम से इस क़दर मह़ब्बत न थी जिस क़दर उन को थी। बल्कि दिल पर बार बार गुज़रने से आप इस के आ़दी हो गए थे और इस का असर कम मा'लूम होता था। क्यूंकि कसरते समाअ़ (बार बार सुनने) की वजह से इस से उन्स ह़ासिल हो गया था क्यूंकि आ़दतन येह बात मुह़ाल है कि सुनने वाला क़ुरआने पाक की आयत सुने जो पहले न सुनी और इस पर रोए और बीस 20 साल तक इसे बार बार पढ़ कर रोता रहे और पहली और आख़िरी ह़ालत में कोई फ़र्क़ न हो। हां कोई नई बात हो तो मुतअस्सिर होगा क्यूंकि हर नई चीज़ में लज़्ज़त होती है और हर नई बात का एक सदमा होता है। हर वोह चीज़ जिस से उल्फ़त हो उस के साथ उन्स होता है जो सदमे के ख़िलाफ़ होता है। इसी लिये ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरादा फ़रमाया कि लोगों को ज़ियादा त़वाफ़ से मन्अ़ कर दें और इरशाद फ़रमाया : "मुझे डर है कि कहीं लोग इस घर (ख़ानए का'बा) से मानूस न हो जाएं और यूं इस की वुक़्अ़त कम हो जाए।" जो शख़्स ह़ज करने आता है और पहली मरतबा ख़ानए का'बा को देखता है वोह रोता है और चिल्लाता है और बा'ज़ अवक़ात बेहोश भी हो जाता है जब उस की निगाह बैतुल्लाह शरीफ़ पर पड़ती है और बा'ज़ अवक़ात वोह महीना भर मक्कए मुकर्रमा में ठहरता है तो वोह बात अपने दिल में नहीं पाता। (احیاء العلوم، کتاب آداب السماع والوجد، ج ۲، ص ۳۶۹)

साह़िबे ह़िल्यतुल औलिया की वज़ाह़त

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन **अ़ब्दुल्लाह** अस्फ़हानी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़रमान "दिल सख़्त हो गए" से मुराद येह है कि दिल मज़बूत़ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त से मुत़मइन हो गए।" (حلیۃ الاولیاء، الحدیث: ۷۵، ج ۱، ص ۶۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

(7) ज़िक्रुल्लाह से ग़फ़्लत का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में एक बड़े परों वाला कव्वा पेश किया गया आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के परों को हाथ लगा कर देखा और इरशाद फ़रमाया : "कोई शिकार उस वक़्त तक शिकार नहीं किया जाता और न ही कोई दरख़्त उस वक़्त तक काटा जाता है जब तक कि **ज़िक्रुल्लाह** से ग़ाफ़िल न हो जाए।"

(مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، کلام ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۱۱، ج۸، ص۱۴۶، الزھد للامام احمد، زھد ابی بکر الصدیق، الرقم: ۵۶۷، ص۱۳۹)

दिलों का इत्मीनान अल्लाह की याद में है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज सारी दुन्या में एक आ़लमगीर बेचैनी पाई जा रही है कोई मुल्क, कोई शहर, और कोई गाउं बल्कि कोई घर ऐसा नहीं जहां बद अमनी और बेचैनी न पाई जाती हो, आज हर शख़्स बेचैनी का शिकार नज़र आ रहा है। आह ! नादान इन्सान शराब व कबाब की मह़फ़िलों, सीनेमा घरों की गेलेरियों, ड्रामा गाहों और न जाने कौन कौन से जिन्सी व रूमानी नाविलों के मुत़ालए में सुकून की तलाश में सरगर्दां है। आख़िर सुकून कहां मिलेगा ? आइये कुरआन से सुवाल करते हैं, ऐ अल्लाह तआ़ला के सच्चे और पाकीज़ा कलाम तू ही हमारी रहनुमाई फ़रमा और हमें इरशाद फ़रमा कि सुकून कहां मिलता है ? जब हम ने कुरआने मजीद की ख़िदमत में इस्तिफ़्सार किया तो जवाब मिला : ﴿اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ ﴿۲۸﴾﴾ (پ۱۳، الرعد:۲۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "सुन लो अल्लाह की याद ही में दिलों का चैन है।" गोया येह बेचैनी और बे इत़मीनानी **ज़िक्रुल्लाह** से ग़फ़्लत की वजह से है। अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र दिल की ग़िज़ा है और दिल अगर अपनी ग़िज़ा न पाए तो बेचैन न हो तो क्या हो ? मा'लूम हुवा कि येह परेशानियां और ह़ैरानियां मह़्ज़ अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से ग़फ़्लत के बाइस हैं।

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही
न पाऊं मैं अपना पता या इलाही

www.dawateislami.net

रहूं मस्तो बे ख़ुद मैं तेरी विला में
पिला जाम ऐसा पिला या इलाही

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(8) रिज़ाए इलाही के सबब दुआ़ क़बूल

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : “एक भाई की दुआ़ दूसरे भाई के ह़क़ में जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर की जाए क़बूल हो जाती है ।” (الزھد للامام احمد، زھد ابی بکر الصدیق، الرقم: ۵۷۴، ص ۱۴۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल उ़मूमन लोगों को येह शिकायत होती है कि हमारी दुआ़एं क़बूल नहीं होतीं, रो रो के दुआ़एं करते हैं तो भी क़बूल नहीं होतीं । लेकिन याद रखिये कि दुआ़ मांगने के भी कुछ आदाब हैं, दुआ़ की क़बूलिय्यत के भी अस्बाब हैं । दुआ़ के तफ़्सीली आदाब जानने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 326 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल, आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن के वालिदे गिरामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की किताब “**फ़ज़ाइले दुआ़**” का मुत़ालआ़ फ़रमाइये ।

सिद्दीक़े अक्बर से मन्क़ूल दुआ़एं

(1) सुब्ह़ो शाम मांगी जाने वाली दुआ़

हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है फ़रमाती हैं कि मेरे वालिदे गिरामी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुब्ह़ो शाम एक दुआ़ मांगा करते थे और वोह दुआ़ येह है : “اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ خَیْرَ عُمْرِیْ آخِرَہٗ وَخَیْرَ عَمَلِیْ خَوَاتِمَہٗ وَخَیْرَ اَیَّامِیْ یَوْمَ اَلْقَاکَ” या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी उ़म्र, अ़मल और मेरे अय्यामे ज़िन्दगी की भलाइयों को मेरी उ़म्र के ख़ातिमे वाले दिन तक बाक़ी रख जब मैं तुझ से मुलाक़ात करूंगा ।” अ़र्ज़ की गई :

www.dawateislami.net

"ऐ अबू बक्र ! आप को येह दुआ मांगने की क्या ज़रूरत है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो सहाबिये रसूल हैं, ثانی اثنین فی الغار हैं ।" फ़रमाया : "बा'ज़ अवक़ात ऐसा होता है कि कोई पूरी ज़िन्दगी जन्नतियों वाले आ'माल करता रहता है लेकिन उस का ख़ातिमा जहन्नमियों वाले अ़मल पर हो जाता है, और ऐसा भी होता है कि कोई पूरी ज़िन्दगी जहन्नमियों वाले आ'माल करता रहता है लेकिन उस का ख़ातिमा जन्नतियों वाले अ़मल पर हो जाता है ।" (या'नी हमेशा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहो)

(کنزالعمال، کتاب الایمان، الباب الاول، الفصل السابع، الحدیث:۱۵۳۷، ج۱، الجزء:۱، ص۱۷۶)

(2) जनाज़ा पढ़ाने के बा'द दुआ

हज़रते सय्यिदुना अबू मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी मय्यित का जनाज़ा पढ़ा लेते तो यूं दुआ फ़रमाते : "اَللّٰھُمَّ عَبْدُکَ اَسْلَمَہُ الْاَھْلُ وَالْمَالُ وَالْعَشِیْرَۃُ وَالذَّنْبُ عَظِیْمٌ وَاَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरे इस बन्दे को इस के अहलो इयाल, मालो मताअ़ और दीगर रिश्तेदारों ने बे यारो मददगार छोड़ दिया है इस के गुनाह बहुत ज़ियादा हैं लेकिन तू ग़फ़ूरुर्रहीम है ।" (इस के तमाम गुनाहों को बख़्श दे) (المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الجنائز، باب ماقالوافی الصلاۃ علی الجنازۃ، الحدیث:۵، ج۳، ص۱۷۷)

(3) जन्नातुन्नईम के आ'ला दरजात

हज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी दुआ में येह फ़रमाया करते थे :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ الَّذِیْ ھُوَ خَیْرٌ فِیْ عَاقِبَۃِ اَمْرِیْ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ مَاتُعْطِیْنِیْ الْخَیْرَ رِضْوَانَکَ وَالدَّرَجَاتِ الْعُلٰی فِیْ جَنَّاتِ النَّعِیْمِ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से उसी शै का सुवाल करता हूं जो मेरी आ़क़िबत के लिये अच्छी हो । ऐ अल्लाह ! तू जो भी मुझे भलाई अ़ता फ़रमा उस का अन्जाम अपनी ख़ुशनूदी और जन्नातुन्नईम के आ'ला दरजात बना दे ।"

(کنزالعمال، کتاب الاذکار، الادعیۃ المطلقۃ، الحدیث:۵۰۲۶، ج۱، الجزء:۲، ص۲۸۴)

(4) अश्या में तमाम ने'मत का सुवाल

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यूं दुआ किया करते थे :

www.dawateislami.net

اَسْاَلُکَ تَمَامَ النِّعْمَةِ فِي الْاَشْيَاءِ كُلِّهَا، وَالشُّكْرُ لَکَ عَلَيْهَا حَتّٰى تَرْضٰى وَبَعْدَ الرِّضَا وَالْخِيَرَةُ فِي جَمِيْعِ مَا يَكُوْنُ فِيْهِ الْخِيَرَةُ بِجَمِيْعِ مَيْسُوْرِ الْاُمُوْرِ كُلِّهَا لَا بِمَعْسُوْرِهَا يَا كَرِيْمُ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से तमाम अश्या में तमाम ने'मत (या'नी जन्नत में दाख़िले और जहन्नम से आज़ादी) का सुवाली हूं, और इस पर मुझे अपना शुक्र अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा ह़त्ता कि तू मुझ से राज़ी हो जाए, और ऐ रब्बे करीम ! मुझे जितने भी भलाई वाले काम हैं उन तमाम की ख़ैर बिग़ैर किसी मुश्किल के आसानी के साथ अ़ता फ़रमा ।'' (كنزالعمال، كتاب الاذكار، الادعية المطلقة، الحديث: ۵۰۳۱، ج ۱، الجزء: ۲، ص ۲۸۵)

(5) ईमाने कामिल, यक़ीने सादिक़ की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद मदायिनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़ में येह कलिमात भी होते थे : ''اَللّٰهُمَّ هَبْ لِيْ إِيْمَانًا وَيَقِيْنًا وَمُعَافَاةً وَنِيَّةً'' या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे ईमाने कामिल, यक़ीने सादिक़, तमाम आफ़ात व बलिय्यात से ह़िफ़ाज़त और सच्ची निय्यत अ़ता फ़रमा ।''

(كنزالعمال، كتاب الاذكار، الادعية المطلقة، الحديث: ۵۰۲۸، ج ۱، الجزء: ۲، ص ۲۸۵)

(6) ह़राम से ह़िफ़ाज़त की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर येह दुआ़ मांगा करते थे :

اَللّٰهُمَّ اَغْنِنَا بِحَلَالِکَ عَنْ حَرَامِکَ، وَاَغْنِنَا مِنْ فَضْلِکَ عَمَّنْ سِوَاکَ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपने ह़लाल के सबब ह़राम से ग़नी फ़रमा और अपने फ़ज़्ल के सबब अपने मा सिवा से ग़नी फ़रमा ।'' (كنزالعمال، كتاب الاذكار، الادعية المطلقة، الحديث: ۵۰۲۹، ج ۱، الجزء: ۲، ص ۲۸۵)

(7) रह़मते इलाही का सुवाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस त़रह़ दुआ़ किया करते थे :

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ بِرَحْمَتِکَ الَّتِیْ لَا تَنَالُ مِنْکَ اِلَّا بِالْخُرُوْجِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से तेरी उस रह़मत का सुवाल करता हूं जो तू अपनी राह में निकलने वालों को अ़ता फ़रमाता है।"

(کنزالعمال، کتاب الاذکار، الادعیۃ المطلقۃ، الحدیث:۵۰۳۰، ج۱، الجزء:۲، ص۲۸۵)

(8) मुझ पर ह़क़ को वाज़ेह़ फ़रमा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दुआ़ओं में से एक दुआ़ येह भी है :

وَارْزُقْنِی اتِّبَاعَهٗ وَاَرِنِی الْبَاطِلَ بَاطِلاً وَارْزُقْنِی اجْتِنَابَهٗ وَ لَا تَجْعَلْهُ مُتَشَابِهًا عَلَیَّ فَاَتَّبِعَ الْهَوٰی

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ पर ह़क़ को वाज़ेह़ फ़रमा और मुझे इस की इत्तिबाअ़ की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और बात़िल को मेरे सामने वाज़ेह़ फ़रमा और मुझे इस से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और इसे मेरे लिये मुश्तबाह न बना कि मैं ख़्वाहिशों की पैरवी करने लगूं।" (احیاء العلوم، کتاب المراقبۃ والمحاسبۃ، بیان حقیقۃ المراقبۃ ودرجاتھا، ج۵، ص۱۳۴)

सिद्दीक़े अक्बर की मुख़्तलिफ़ वसिय्यतें

(1) दस बातों की वसिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुल्के शाम की त़रफ़ एक लश्कर भेजा और उस पर सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीर मुक़र्रर किया और इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें दस चीज़ों की वसिय्यत करता हूं : (1) किसी औ़रत को क़त्ल न करना (2) किसी बच्चे को क़त्ल न करना (3) बुढ्ढे को भी क़त्ल न करना (4) फलदार दरख़्त न काटना (5) आबादी को ख़राब न करना (6) किसी बकरी या ऊंट की कूंचें (या'नी ऐड़ियों के ऊपर मोटे पठ्ठे) न काटना सिर्फ़ खाने के लिये काटनी हों तो इजाज़त है (7) खजूर के दरख़्त न उखाड़ना (8) न ही उन्हें जलाना (9) ख़ियानत न करना (10) कहीं भी बुज़दिली न दिखाना।"

(مصنف عبدالرزاق، کتاب الجہاد، باب عقر الشجر بارض العدو، الحدیث:۹۴۳۷، ج۵، ص۱۳۶، تاریخ الخلفاء، ص۷۶)

www.dawateislami.net

(2) दुन्या से ब क़दरे ज़रूरत ही लेना

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 82 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब اَلزُّھد وَقَصْرُالْاَمَل सफ़्ह़ा 72 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वसिय्यत करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये दुन्या को फैला दिया है तो तुम इस में से ब क़दरे ज़रूरत ही ह़िस्सा लेना ।"

(3) सुब्ह़ो शाम अल्लाह के ज़िम्मए करम पर

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मुझे कुछ वसिय्यत फ़रमाइये । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : ऐ सलमान ! अल्लाह से डरो और जान लो अ़न क़रीब तुम्हें फ़ुतूह़ात ह़ासिल होंगीं, अलबत्ता मैं येह नहीं जानता कि इस से जो तुम्हें ह़िस्सा मिलेगा तुम उसे अपने काम में लाओगे या ज़ाएअ़ कर दोगे ? लेकिन एक बात हमेशा याद रखना कि जिस ने पंजगाना नमाज़ें अदा कीं वोह सुब्ह़ो शाम अल्लाह के ज़िम्मए करम पर होता है और जो अल्लाह के ज़िम्मए करम पर हैं उन में से किसी को क़त्ल न करना, कहीं ऐसा न हो कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे को नोच डालो फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जहन्नम में औंधे मुंह डाल दे ।" (تاریخ الخلفاء، ص ۸۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नामे मुह़म्मद पर अंगूठे चूमना और आंखों पर लगाना

अंगूठे चूम कर आंखों पर लगाना मुस्तह़ब है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे नामी इस्मे गिरामी सुन कर अंगूठे चूम कर आंखों से लगाना जाइज़ व मुस्तह़ब और

www.dawateislami.net

बाइसे रह़मत व बरकत है, नीज़ ऐसा करना ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से साबित है। चुनान्चे,

सिद्दीक़े अक्बर ने अंगूठे आंखों पर लगाए

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मक्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़यैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हैं कि एक बार दस मुह़र्रमुल ह़राम को ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़े जुमुआ़ की अदाएगी के लिये मस्जिदे नबवी तशरीफ़ लाए और एक सुतून के क़रीब तशरीफ़ फ़रमा हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बराबर बैठे थे। मुअज़्ज़िने रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अज़ान देना शुरूअ़ की और जब इन्हों ने "اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہ" कहा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दोनों अंगूठों के नाख़ुनों को अपनी दोनों आंखों पर रखा और कहा : "قُرَّۃُ عَیْنِیْ بِکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ" जब ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अज़ान दे चुके तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! जो शख़्स ऐसा करे जैसा तुम ने किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के अगले पिछले तमाम गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देगा।"

(روح البیان، الاحزاب: ۵۷، ج۷، ص۲۲۹)

सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام ने अंगूठे चूमे

जब ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को जन्नत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात का इश्तियाक़ हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि वोह आप की सुल्ब में हैं और आख़िरी ज़माने में ज़ुहूर फ़रमाएंगे। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दाएं हाथ के कलिमे की उंगली में नूरे मुह़म्मदी चमकाया, तो इस नूर ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की

www.dawateislami.net

तस्बीह़ पढ़ी, इसी लिये इस उंगली का नाम **कलिमे की उंगली** हुवा। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जमाले मुह़म्मदी को ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दोनों अंगूठों के नाखुनों में मिस्ले आईना ज़ाहिर फ़रमाया तो आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपने अंगूठों के नाखुनों को चूम कर अपनी आंखों पर फेरा, पस येह सुन्नत आप की अवलाद में जारी हुई। सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जब येह वाक़िआ़ ज़िक्र किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अज़ान में मेरा नाम सुने और अंगूठे चूम कर आंखों से लगाए तो ऐसा शख़्स कभी भी अन्धा न होगा।" (تفسیر روح البیان، الاحزاب:٥٦، ج٧، ص٢٢٩)

अंगूठे चूम कर आंखों पर लगाने के फ़ज़ाइलो बरकात

(1) शफ़ाअ़ते रसूल का ह़क़दार

अ़ल्लामा दैलमी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आंखों पर अंगूठे लगाने के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ فَعَلَ مِثْلَ مَا فَعَلَ خَلِيْلِي فَقَدْ حَلَّتْ عَلَيْهِ شَفَاعَتِي या'नी जो शख़्स मेरे इस प्यारे दोस्त की त़रह़ करेगा मेरी शफ़ाअ़त उस के लिये ह़लाल हो गई।"

(المقاصد الحسنہ للسخاوی، حرف المیم، الحدیث:١٠٢١، ص٣٩٠، کشف الخفاء، حرف المیم، الحدیث:٢٢٩٤، ج٢، ص١٨٤)

(2) आंखें कभी न दुखेंगी

इमाम सख़ावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स मुअज़्ज़िन से اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله सुन कर कहे : مَرْحَبًا بِحَبِيْبِي وَقُرَّةُ عَيْنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِالله फिर दोनों अंगूठे चूम कर आंखों पर रखे, तो उस की आंखें कभी न दुखेंगी।" (المقاصد الحسنہ للسخاوی، حرف المیم، الحدیث:١٠٢١، ص٣٩١)

www.dawateislami.net

(3) नामे नामी मुसीबत में काम आ गया

हज़रते फ़क़ीह मुहम्मद बिन निसयाबा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में मन्क़ूल है कि एक बार आंधी चली तो इन की आंख में छोटा सा पथ्थर चला गया, इसे निकालने की कोशिश करते तो शदीद दर्द होता, जब मुअज़्ज़िन ने اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہ कहा तो येह कलिमात सुन कर आप ने مَرْحَبًا بِحَبِیْبِي وَقُرَّۃُ عَیْنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِاللّٰہ कहा, फिर दोनों अंगूठे चूम कर आंखों पर लगाए तो इस की बरकत से फ़ौरन वोह पथ्थर आंख से निकल गया और आप को इस आज़्माइश से नजात मिल गई। (المقاصد الحسنہ للسخاوی، حرف المیم، الحدیث: ۱۰۲۱، ص ۳۹۱)

तुम्हारा नाम मुसीबत में जब लिया होगा
हमारा बिगड़ा हुवा काम बन गया होगा

(4) अंगूठे चूमने वाला कभी अन्धा न होगा

हज़रते सय्यिदुना ज़ाहिद बिलाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی से रिवायत है कि सय्यिदुना इमाम हसन رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "जो शख़्स मुअज़्ज़िन से اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہ सुन कर कहे : مَرْحَبًا بِحَبِیْبِي وَقُرَّۃُ عَیْنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِاللّٰہ फिर दोनों अंगूठे चूम कर आंखों पर रखे, वोह कभी अन्धा न होगा और न ही उस की आंखें कभी दुखेंगी।"

(المقاصد الحسنہ للسخاوی، حرف المیم، الحدیث: ۱۰۲۱، ص ۳۹۱)

(5) जन्नत में सरकार के पीछे पीछे

हज़रते अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "अज़ान में पहली मरतबा اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہ सुनने पर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ कहना और दूसरी मरतबा اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہ सुनने पर قُرَّۃُ عَیْنِیْ بِکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ कहना मुस्तहब है। फिर अपने

www.dawateislami.net

अंगूठों को अपनी आंखों पर रखे और कहे : اَللّٰھُمَّ مَتِّعْنِی بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ तो ऐसा करने वाले को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने पीछे पीछे जन्नत में ले जाएंगे ।'' (ردالمحتار علی الدرالمختار، کتاب الصلوۃ، فی کراھۃ تکرار۔۔۔الخ، ج۲، ص۸۴)

(6) जन्नत की सफ़ों में दाख़िला

अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''जो शख़्स अज़ान में اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہ सुन कर अपने अंगूठों के नाख़ुनों को चूमे तो ऐसे शख़्स के लिये सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि मैं उस का क़ाइद बनूंगा और उसे जन्नत की सफ़ों में दाख़िल करूंगा ।'' (ردالمحتار علی الدرالمختار، کتاب الصلوۃ، فی کراھۃ تکرار الجماعۃ فی المسجد، ج۲، ص۸۴)

(7) अंगूठे चूम कर आंखों पर लगाने की बरकत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उ़श्शाक़ तो आज भी नामे नामी इस्मे गिरामी सुन कर अंगूठे चूम कर आंखों पर लगाने की बरकतें लूट रहे हैं, इसी ज़िम्न में एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है। चुनान्चे, बाबुल मदीना (कराची) के अ़लाक़े मलीर हॉल्ट के एक ज़िम्मेदार इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है : ''29 रमज़ानुल मुबारक 1428 सिने हिजरी की बात है, आ़लमी मदनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** बाबुल मदीना कराची में इजतिमाई ए'तिकाफ़ के पुर कैफ़ मनाज़िर थे और नमाज़े फ़ज्र के बा'द मो'तकिफ़ीन इस्लामी भाई शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के दीदार की बरकतें लूट रहे थे। ए'तिकाफ़ के जदवल के मुत़ाबिक़ शजरए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या पढ़ा जाने लगा तो मैं पहली सफ़ में आ कर बैठ गया। सब इस्लामी भाई मिल कर बुलन्द आवाज़ से शजरए आ़लिय्या क़ादिरिय्या रज़विय्या के मन्ज़ूम दुआ़इय्या अश्आ़र पढ़ रहे थे जब सरकारे मदीना सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र मुबारक

www.dawateislami.net

आया तो **मैं ने अपने अंगूठे चूम कर आंखों से लगाएं** । यका यक मुझ पर गुनूदगी त़ारी हो गई, सर की आंखें तो क्या बन्द हुई मेरे दिल की आंखें खुल गईं । मैं ने देखा कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हमराह शजरा शरीफ़ पढ़ने वाले तमाम इस्लामी भाई सुन्हरी जालियों के रू बरू ह़ाज़िर हैं । हमारे मदनी आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वहां अपने उ़श्शाक़ को शरबते दीदार पिला रहे हैं । ह़ाज़िरीन शजरए आ़लिय्या के दुआ़इय्या अश्आ़र पढ़ रहे थे और हमारे मीठे मीठे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने दस्ते पुर अन्वार बुलन्द किये इन दुआ़इय्या अश्आ़र पर आमीन फ़रमा रहे थे ।" سُبْحَانَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

आंखों का तारा नामे मुह़म्मद
दिल का उजाला नामे मुह़म्मद
दौलत जो चाहो दोनों जहां की
कर लो वज़ीफ़ा नामे मुह़म्मद
रखो लह़द में जिस दम अ़ज़ीज़ो
मुझ को सुनाना नामे मुह़म्मद
पूछेगा मौला है लाया क्या क्या?
मैं येह कहूंगा नामे मुह़म्मद
अपने जमीले रज़वी के दिल में
आजा समा जा नामे मुह़म्मद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तीसरा बाब

हिजरते सिद्दीक़े अकबर

हिजरते ह़बशा, हिजरते मदीना और इस से मुतअ़ल्लिक़ा वाक़िआ़त

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर और हिजरते ह़बशा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुफ़्फ़ारे मक्का और अहले कुरैश हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जानी दुश्मन हो चुके थे और आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और दीगर मुसलमानों को त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें देते रहना उन का वत़ीरा बन चुका था। मुसलमान चूंकि ता'दाद के लिहाज़ से बहुत ही थोड़े थे और इन तक्लीफ़ों का सामना करना इन के बस में नहीं था, इस लिये हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इन जां निसारों और इस्लाम के फ़िदाइयों को हुक्म फ़रमाया कि वोह अपनी ह़िफ़ाज़त के लिये क़रीबी मुल्क ह़बशा हिजरत कर जाएं क्यूंकि ह़बशा अ़रबों के लिये कोई नया मुल्क नहीं था बल्कि कुरैश की वोह एक क़दीम तिजारत गाह थी। इस के इ़लावा ह़बशा के ताजिरों ने कुरैश के ताजिरों को कई त़रह़ की तिजारती सहूलतें और मुराआ़त भी दे रखी थीं, अपने इन्ही पुराने मरासिम और तिजारती तअ़ल्लुक़ात के ह़वाले से मुसलमानों को ह़बशा की जानिब हिजरत करने का हुक्म दिया गया। इस हिजरते ह़बशा का एक फ़ाइदा तो येह था कि मुसलमान वहां के इन्साफ़ पसन्द और आ़दिल हुक्मरान के पास जा कर कुफ़्फ़ारे मक्का के मज़ालिम से मुमकिना ह़द तक मह़फ़ूज़ हो जाएंगे और साथ ही मुसलमान उस मुल्क में तब्लीग़े इस्लाम का फ़रीज़ा भी अदा करते रहेंगे जिस से मुसलमानों की अफ़रादी क़ुव्वत में इज़ाफ़ा होगा। बहर ह़ाल मुसलमान आहिस्ता आहिस्ता ह़बशा की त़रफ़ हिजरत करने लगे और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने भी 5 बिअ़्सते नबवी ब मुत़ाबिक़ सि. 614 ई. हिजरते ह़बशा का इरादा फ़रमाया और घर से हिजरत के लिये निकल पड़े। अगर्चे हिजरत मुकम्मल न की लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की हिजरते ह़बशा का वाक़िआ़ निहायत ही दिलचस्प है। चुनान्चे,

मेरे रब की अमान ही काफ़ी है

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "मैं ने जब से होश संभाला अपने वालिदैन को दीने इस्लाम से मुशर्रफ़ पाया और कोई दिन ऐसा न होता था जिस दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

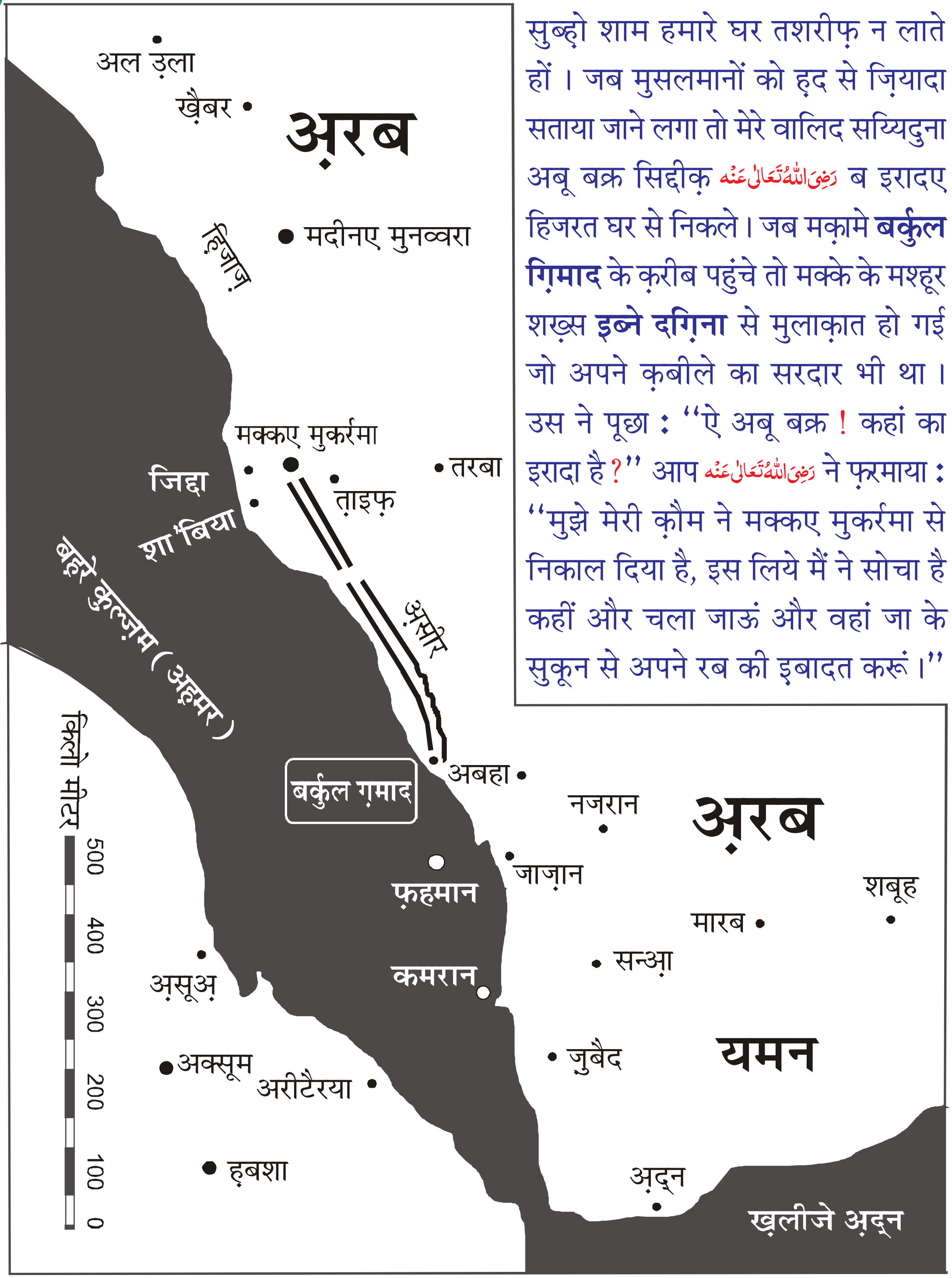

सुब्ह़ो शाम हमारे घर तशरीफ़ न लाते हों। जब मुसलमानों को ह़द से ज़ियादा सताया जाने लगा तो मेरे वालिद सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ब इरादए हिजरत घर से निकले। जब मक़ामे **बर्कुल ग़िमाद** के क़रीब पहुंचे तो मक्के के मश्हूर शख़्स **इब्ने दग़िना** से मुलाक़ात हो गई जो अपने क़बीले का सरदार भी था। उस ने पूछा : "ऐ अबू बक्र ! कहां का इरादा है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे मेरी क़ौम ने मक्कए मुकर्रमा से निकाल दिया है, इस लिये मैं ने सोचा है कहीं और चला जाऊं और वहां जा के सुकून से अपने रब की इबादत करूं।"

www.dawateislami.net

इब्ने दग़िना चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़मत व शराफ़त से अच्छी त़रह़ वाक़िफ़ था, फ़ौरन समझ गया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ कुफ़्फ़ारे मक्का ने ज़ियादती की है लिहाज़ा उस ने फ़र्ते़ मह़ब्बत से अपने जज़्बात का इज़्हार करते हुवे कहा : "ऐ अबू बक्र ! तुम कहीं नहीं जाओगे, तुम्हारे जैसा आदमी न तो किसी को घर से निकाल सकता है और न ही उसे अपने घर से निकाला जा सकता है क्यूंकि तुम फ़ुक़रा की मदद, रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक, बे कसों की कफ़ालत, मेहमानों की मेज़बानी और राहे ह़क़ में पेश आने वाली मुसीबतों पर लोगों की बहुत मदद करते हो, मैं तुम्हारे साथ हूं और तुम्हें अपनी अमान में रखूंगा। वापस चलो और अपने ही अ़लाक़े में अपने रब की इबादत करो।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **इब्ने दग़िना** की दरख़्वास्त पर उस के साथ ही मक्कए मुकर्रमा वापस आ गए। जब शाम हुई तो **इब्ने दग़िना** क़ुरैश के बड़े बड़े सरदारों के पास गया और उन को मलामत करते हुवे कहने लगा : "बड़े अफ़्सोस की बात है ! अबू बक्र जैसे शरीफ़ शख़्स को तुम ने शहर छोड़ने पर मजबूर कर दिया ! ऐसे अ़ज़ीम लोगों से तो शहरों को बसाया जाता है न कि इन्हें शहर बदर किया जाता है। याद रखो ! मेरे होते हुवे ऐसा शख़्स न तो ख़ुद शहर छोड़ कर जा सकता है और न ही किसी में हिम्मत है कि इसे शहर से बाहर निकलने पर मजबूर करे। अरे कम बख़्तो ! सोचो, तुम एक ऐसे अ़ज़ीम शख़्स को शहर से निकालना चाहते हो जो फ़क़ीरों की मदद, रिश्तेदारों से सिलए रेह़्मी और मसाइबो आलाम में लोगों की मदद करता है।" **इब्ने दग़िना** की इस सर ज़निश पर क़ुरैश के सरदारों में से किसी को इन्कार की जुरअत न हुई अलबत्ता उन्हों ने येह कहने की जसारत ज़रूर की, कि "ऐ **इब्ने दग़िना** ! ठीक है हम तुम्हारे कहने पर अबू बक्र को शहर बदर होने पर मजबूर नहीं करेंगे लेकिन हमारी भी एक शर्त़ है वोह येह कि तुम अबू बक्र से कह दो अपने रब की इबादत, नमाज़ वग़ैरा जो कुछ भी करना है सिर्फ़ अपने घर में ही करे और हां ! इसे जो करना है आहिस्ता आवाज़ में करे ताकि हमें कोई परेशानी न हो क्यूंकि हमें डर है कि इस की इबादत वग़ैरा को देख कर कहीं हमारे बीवी बच्चे फ़ितने में मुब्तला न हो जाएं।" **इब्ने दग़िना** ने उन की येह शर्त़ क़ुबूल कर ली और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी इस मुआ़हदे से आगाह कर दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चन्द दिनों तक तो वैसा ही किया लेकिन इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैरते ईमानी ने गवारा न किया कि छुप कर इबादतो रियाज़त करूं लिहाज़ा आप ने अपने

www.dawateislami.net

घर के सेहन में एक मस्जिद बना ली और उस में नमाज़ की अदाएगी व कुरआने पाक की तिलावत वग़ैरा शुरूअ़ कर दी। मुशरिकीन की औ़रतें और बच्चे आप के गिर्द जम्अ़ हो जाते और खुश हो कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़बादतो रियाज़त को बड़े इन्हिमाक से देखते क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही रक़ीकुल क़ल्ब थे, जब कुरआने पाक की तिलावत करते तो बे इख़्तियार रोने लग जाते। सरदाराने कुरैश ने जब अपनी औ़रतों और बच्चों की ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़बादत व रियाज़त में दिलचस्पी देखी तो ग़ुस्से में तिलमिला उठे और फ़ौरन **इब्ने दग़िना** को बुलाया। जब वोह उन के पास गया तो कहने लगे : "**ऐ इब्ने दग़िना** देखो ! हम ने तुम्हारी वजह से अबू बक्र को इजाज़त दी थी कि वोह अपने घर में बैठ कर इ़बादत वग़ैरा करता रहे मगर वोह तो ह़द से बढ़ गया है, उस ने अपने घर के सेहन में मस्जिद भी बना ली है और हमारे मुआ़हदे में येह बात भी शामिल थी कि वोह जो करेगा आहिस्ता आवाज़ से करेगा लेकिन अब तो उस ने बुलन्द आवाज़ से कुरआन की तिलावत भी शुरूअ़ कर दी है और इस से हमारे बच्चों और औ़रतों के गुमराह हो जाने का ख़त़रा है। अब हम सिर्फ़ तुम्हारी वजह से उसे आख़िरी वॉर्निंग दे रहे हैं कि अगर वोह अपनी इ़बादत वग़ैरा अपने घर ही में कर सकता है तो ठीक ! वरना वोह तुम्हारी अमान से निकल जाएगा।" **इब्ने दग़िना** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया और कहने लगा : "ऐ अबू बक्र ! मैं ने तुम से कुफ़्फ़ारे कुरैश की त़रफ़ से जो मुआ़हदा किया था वोह यक़ीनन तुम्हें याद होगा, अब तुम्हारे पास सिर्फ़ दो ऑपशन हैं : एक तो येह कि तुम इस मुआ़हदे की पासदारी करो और जैसा कुरैश कहते हैं वैसा ही करो। दूसरा येह कि अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते तो फिर मेरी त़रफ़ से मा'ज़िरत क़बूल करो, मैं तुम्हारे मुआ़मले में कुछ नहीं कर सकता क्यूंकि मैं भी एक सरदार हूं मुझे येह गवारा नहीं कि मेरे मुतअ़ल्लिक़ अहले अ़रब येह कहें कि **इब्ने दग़िना** ने किसी शख़्स के मुआ़मले में मुआ़हदा किया था लेकिन उस की बात की कोई अहम्मिय्यत न रही।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "ठीक है ! मुझे तुम्हारी अमान की कोई ज़रूरत नहीं, **मेरे लिये मेरे रब की अमान ही काफ़ी है।**"

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی واصحابہ الی المدینۃ، الحدیث: ۳۹۰۵، ج۲، ص ۵۹۱)

www.dawateislami.net

हबशा की दो हिजरतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हबशा की जानिब दो हिजरतें की गईं, पहली हिजरत पांच बिअ्सते नबवी को हुई, इस में बारह सहाबए किराम और पांच सहाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم शामिल थीं। जब कि दूसरी हिजरते हबशा बिअ्सते नबवी के पांचवें साल के आख़िर में या छटे साल की शुरूअ़ में की गई, इस हिजरत में तिरासी सहाबए किराम और ग्यारह क़ुरशी और सात ग़ैर क़ुरशी सहाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ने शिरकत की, बा'ज़ उ़लमाए किराम ने फ़रमाया कि इस में शिरकत करने वालों की ता'दाद मज़्कूरए बाला ता'दाद से ज़ाइद थी। (سیرت سید الانبیاء، ص۹۷تا۹۸)

तारीख़े इस्लाम का एक मुन्फ़रिद और अ़जीब वाक़िआ़

सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की पहली और दूसरी हिजरते हबशा के बा'द क़ुरैश ने हबशा के बादशाह सय्यिदुना नज्जाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दरबार में अहले ईमान को वापस लाने के लिये सिफ़ारती राबिता किया, दोनों त़रफ़ से राबिते़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ शामिल थे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन पर ख़ुसूसी करम फ़रमाया और इन्हों ने नज्जाशी बादशाह के हाथ पर इस्लाम क़बूल कर लिया। और दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो कर दरजए सहाबिय्यत पर फ़ाइज़ हुवे। इस त़रह़ येह तारीख़े इस्लाम का एक मुन्फ़रिद और अ़जीब वाक़िआ़ ज़ुहूर पज़ीर हुवा कि सहाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ताबेई या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना नज्जाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के हाथ पर ईमान क़बूल किया।

(شرح الزرقانی علی المواھب اللدنیۃ، الھجرۃ الاولی الی الحبشۃ، ج۱، ص۵۰۶ ملخصا)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हबशा की इन दोनों हिजरतों के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत का हुक्म इरशाद फ़रमाया तो जिन लोगों ने हबशा की त़रफ़ हिजरत की थी वोह भी मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर गए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ भी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मईय्यत में मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत के लिये रवाना हो गए।

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर और हिजरते मदीना

हिजरते रसूलुल्लाह में हिक्मत

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन मुहम्मद क़स्तलानी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی हिजरते मदीना की हिक्मत बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं कि "दो आलम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मदीनए मुनव्वरा की तरफ़ हिजरत का हुक्म इस लिये इरशाद फ़रमाया कि अश्या आप के ज़रीए मुशर्रफ़ हों न येह कि आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन के ज़रीए शरफ़ हासिल करें, अगर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा ही में रहते और वहीं आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल होता तो येह वहम हो सकता था कि मक्कए मुकर्रमा की वजह से आप को शरफ़ हासिल हुवा क्यूंकि मक्कए मुकर्रमा को हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम व इस्माईल عَلَيۡهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ज़रीए शरफ़ हासिल हो चुका था, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरादा फ़रमाया कि आप का शरफ़ ज़ाहिर हो तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मदीनए तय्यिबा की तरफ़ हिजरत का हुक्म दिया, जब आप ने उस की तरफ़ हिजरत फ़रमाई तो वोह मदीनए तय्यिबा आप के ज़रीए मुशर्रफ़ हो गया हत्ता कि इस बात पर इजमाअ़ है कि ज़मीन का वोह हिस्सा जो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आ'ज़ाए मुबारका से मस है वोह तमाम मक़ामात हत्ता कि अ़र्श व कुरसी से भी अफ़्ज़ल है।"

(المواهب اللدنية، المقصد الاول، هجرته، ج ١، ص ١٤٥، فتاوى رضويه، ج ١٠، ص ٧١١)

हिजरते मदीना किस तारीख़ को हुई ?

इमाम हाकिम رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं कि "बैअ़ते उ़क़्बा के तीन महीने बा'द या इस के क़रीब क़रीब नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हिजरत फ़रमाई।" और इमाम इब्ने इस्हाक़ رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیۡه फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यकुम रबीउ़ल अव्वल (सि. 622 ई.) जुमा'रात की रात को मक्कए मुकर्रमा से निकल कर ग़ारे सौर में तशरीफ़ ले गए। ग़ारे सौर में आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه के साथ तीन रातें

www.dawateislami.net

या'नी जुमुआ़, हफ़्ता और इतवार की रातें क़ियाम फ़रमाया। वहां से पीर की रात 5 रबीउ़ल अव्वल को मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ रवाना हुवे।

(المواھب اللدنیۃ، المقصد الاول، ھجرتہ، ج ۱ ، ص ۱۴۵ ، سیرت سید الانبیاء، ص ۲۳۱)

मक़ामे हिजरत का तअ़य्युन

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुसलमानो ! मुझे तुम्हारी हिजरत का अ़लाक़ा दिखाया गया है, मक्कए मुकर्रमा से हिजरत कर के जहां तुम ने बसेरा करना है वहां दो पथरीले मैदानों के दरमियान वाके़अ़ एक नख़्लिस्तान है।" (صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی واصحابہ الی المدینۃ، الحدیث: ۳۹۰۵، ج ۲، ص ۵۹۲)

हिजरत के लिये मदीना ही का तअ़य्युन क्यूं ?

नबुव्वत के तेरहवें साल हिजरत और इस के इब्तिदाई वाक़िआ़त रूनुमा हुवे, कुफ़्फ़ारे कु़रैश के ज़ुल्मो सितम के सबब हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस इन्तिज़ार में रहे कि अल्लाह तआ़ला कोई ऐसा सबब पैदा फ़रमा दे और कोई ऐसी क़ौम मिल जाए जो दीने इस्लाम की नासिर व मुअय्यिद हो और दीने इस्लाम के दुश्मनों के मुआ़रिज़ व मुतसादिम रहे। इसी लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुख़्तलिफ़ क़बाइले अ़रब के मजमओं में तशरीफ़ ले जाते और उन्हें दीने इस्लाम की दा'वत देते, लेकिन वोह साफ़ जवाब देते कि अगर आप के क़बीले के लोग आप को तस्लीम कर लें तो हम भी तस्लीम कर लेंगे। बहर ह़ाल मुख़्तलिफ़ वुफ़ूद आते और मुख़्तलिफ़ तबसेरे करते और चले जाते, एक बार ह़ज के मौसिम में ख़ज़रज क़बीले का एक मदनी क़ाफ़िला मक्कए मुकर्रमा आया, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें इस्लाम की दा'वत पेश की तो उन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुसरत का अ़हद क़बूल कर के मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ लौट गए इस को **'बैअ़ते अ़क़्बए ऊला'** कहते हैं, क्यूंकि येह बैअ़त मिना की पहाड़ी में अ़क़्बा के क़रीब हुई जिसे जमरतुल अ़क़्बा भी कहते हैं। जब येह मुबारक जमाअ़त मदीनए मुनव्वरा पहुंची तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़िक्र

www.dawateislami.net

मुबारक का मदीनए मुनव्वरा की मजालिस और घरों में बहुत चर्चा हुवा और ख़ूब इस्लाम की इशाअ़त हुई। अगले साल हज पर फिर एक मदनी क़ाफ़िला आया, इस बार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के साथ अह़कामे शरईय्या सिखाने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को मदीनए मुनव्वरा रवाना किया, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने वहां ख़ूब अह़कामे इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाई और फिर तक़रीबन क़बीलए औस व ख़ज़रज के पांच सो, एक रिवायत के मुत़ाबिक़ तीन सो अफ़राद का मदनी क़ाफ़िला ले कर ह़ाज़िर हुवे और इन सब ने इस्लाम क़बूल किया और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नुस्रत का अ़हद किया इसे '**अ़क़्बए सानिय्या**' कहते हैं। क़ाफ़िले के ए'तिबार से येह '**अ़क़्बए सालिसा**' है येह तीसरा क़ाफ़िला था, बहर ह़ाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वत को फ़िल फ़ौर क़बूल करने, इन की नुस्रत व ह़िमायत का अ़हद करने वाली क़ौम का तअ़ल्लुक़ मदीनए मुनव्वरा से था, और वहां इस्लाम को बहुत पज़ीराई मिली और उन से मुसलमानों को कोई ख़दशा नहीं था इस लिये हिजरत के लिये मदीना शरीफ़ मुतअ़य्यन किया गया। (مدارج النبوۃ، ج ۲، ص ۵۲)

मुसलमानों को हिजरत का हुक्म

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान के बा'द सब लोग मदीनए मुनव्वरा (जो उस वक़्त यसरब के नाम से मश्हूर था) की त़रफ़ हिजरत करते रहे, क्यूंकि वोही ऐसा नख़्लिस्तान है जो दो[2] रेगिस्तानों के मा बैन वाक़ेअ़ है और हिजरते अव्वल के मुसलमान या'नी मक्का से ह़बशा हिजरत कर के जाने वाले भी मदीनए मुनव्वरा पहुंचना शुरूअ़ हो गए। (صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی واصحابہ الی المدینۃ، الحدیث: ۳۹۰۵، ج ۲، ص ۵۹۲)

इधर मक्के में दुन्या तंग थी ईमान दारों पर
कि रौंदे जा रहे थे फूल के से जिस्म ख़ारों पर
नबुव्वत ने इजाज़त दी थी कि यसरब चले जाओ
वत़न वालों के इस ज़ुल्मो ता'दी से अमां पाओ
सह़ाबा पे अगर्चे क़हर के बादल बरसते थे
बिचारे सांस आज़ादी को लेने को तरसते थे

www.dawateislami.net

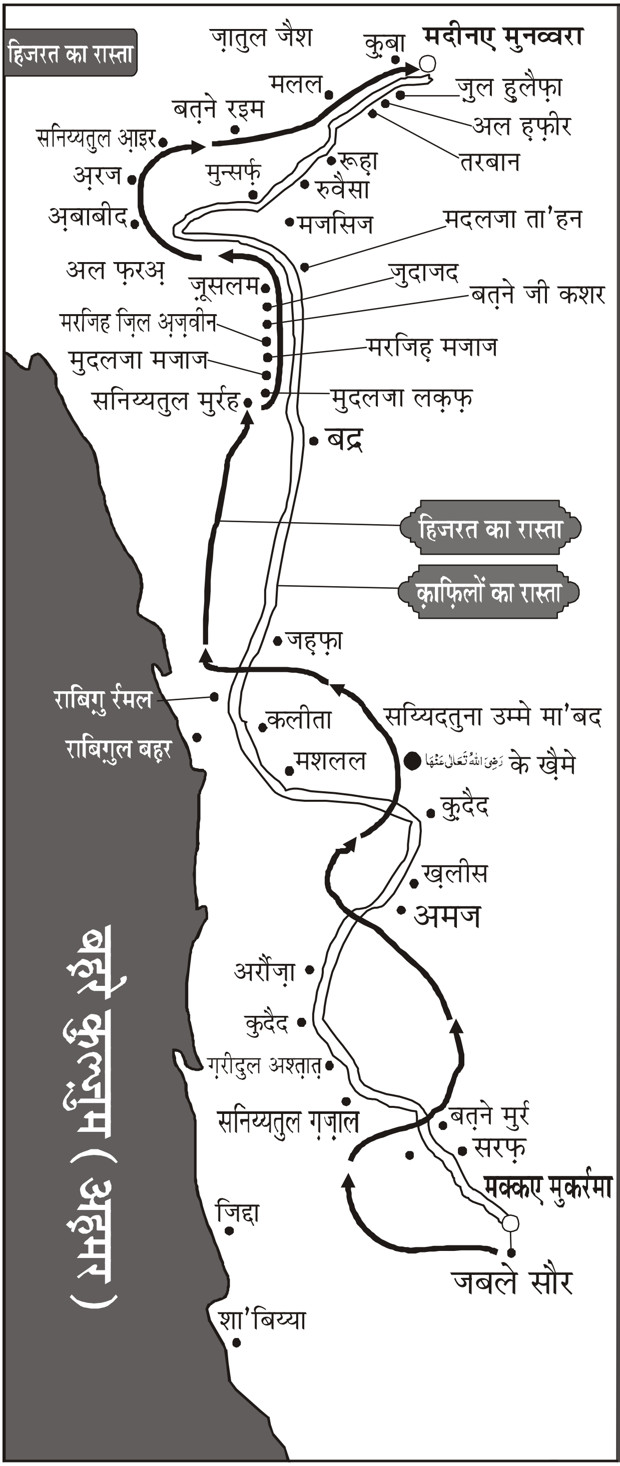

हिजरत का रास्ता

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

सरकारे मदीना राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब कुफ़्फ़ारे मक्का के ज़ुल्मो सितम से तंग आ कर मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के साथ हिजरत फ़रमाई तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह रास्ता इख़्तियार न फ़रमाया जिसे उ़मूमन लोग मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा जाने के लिये इस्ति'माल किया करते थे क्यूंकि उस रास्ते में आबादी बहुत ज़ियादा थी और कुफ़्फ़ारे मक्का ने आप दोनों को पकड़ने या मुख़बरी करने वाले के लिये सो ऊंट बत़ौरे इन्आ़म देने का ए'लान भी कर दिया था। इस लिये आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुश्मनों के शर से मह़फ़ूज़ रहने के लिये वोह रास्ता इख़्तियार फ़रमाया जिस में आबादी बहुत कम थी। मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा हिजरत के रास्ते का तफ़्सीली नक़्शा ....मुलाह़ज़ा कीजिये।

www.dawateislami.net

न था आसान, मुंह अपने वत़न से मोड़ कर जाना
रसूले पाक को मक्के में तन्हा छोड़ कर जाना
मगर फ़रमाने मह़बूबे ख़ुदा, फ़रमाने बारी था
मुसलमानों का शैवा, शैवए त़ाअ़त गुज़ारी था

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर का इरादए हिजरत

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से चूंकि मुसलमानों को हिजरत का हुक्म मिल चुका था इस लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी मदीनए त़य्यिबा हिजरत का इरादा किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से फ़रमाया : "अभी ठहर जाओ ! क्यूंकि उम्मीद है मुझे भी हिजरत की इजाज़त मिल जाएगी।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़र्ते मसर्रत से अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे बाप आप पर क़ुरबान ! क्या आप को ऐसी उम्मीद है ?" फ़रमाया : "हां" तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हिजरत की सआ़दत ह़ासिल करने के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रुक गए, और जो दो ऊंटनियां आप के पास थीं उन्हें चार माह तक कीकर के पत्ते खिला कर फ़र्बा करते रहे ताकि वोह सफ़रे हिजरत में काम आएं।

घर में रसूलुल्लाह की आमद

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : हम एक रोज़ अपने घर में बैठे थे कि एक शख़्स ने आ कर कहा : "ऐ अबू बक्र ! वोह देखो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चेहरे पर चादर डाले तशरीफ़ ला रहे हैं।" येह ऐसा वक़्त था जिस में आप हमारे हां तशरीफ़ न लाते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे बाप आप पर कुरबान ! ज़रूर कोई ख़ास बात है जब ही तो आप इस वक़्त कड़कती धूप में तशरीफ़ लाए हैं ।" ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "आप ने अन्दर आने की इजाज़त चाही और फिर अन्दर तशरीफ़ ले आए, इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! अपने पास से दीगर लोगों को हटा दो ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे बाप आप पर कुरबान ! यहां सिर्फ़ आप की शरीके ह़यात आ़इशा ही हैं ।" फ़रमाया : "मुझे हिजरत की इजाज़त मिल गई है ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे बाप आप पर कुरबान ! क्या मुझे भी आप की हमराही का शरफ़ मिलेगा ?" फ़रमाया : "हां ! तुम ही मेरे रफ़ीक़े सफ़र होगे ।"

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی واصحابہ الی المدینۃ، الحدیث: ۳۹۰۵، ج۲، ص ۵۹۲)

हिजरते मदीना और कुफ़्फ़ार का नापाक मन्सूबा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुफ़्फ़ारे कुरैश मुसलमानों पर ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़ने के बा वुजूद इस्लाम के तेज़ी से फैलने पर तशवीश में मुब्तला थे, फिर मुसलमानों की मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत उन के लिये मज़ीद तशवीश का बाइ़स बन गई कि मुसलमान मदीनए मुनव्वरा जा कर कहीं उन के ख़िलाफ़ जंगी तय्यारियां न शुरूअ़ कर दें लिहाज़ा उन्हों ने हु़ज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को مَعَاذَ اللّٰہ शहीद करने का नापाक मन्सूबा बनाया और इस की तक्मील के लिये मुख़्तलिफ़ क़बाइल के चन्द नौजवानों को तय्यार कर के काशानए नबुव्वत का मुह़ासरा कर लिया लेकिन वोह अपने नापाक मक़्सद में कामयाब न हो सके, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप की हि़फ़ाज़त फ़रमाई और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ब ख़ैरो आफ़िय्यत उन के सामने से तशरीफ़ ले गए और अपने काशानए अक़्दस से निकल कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर तशरीफ़ ले गए और पूरा दिन ठहरने के बा'द अगली रात मक्कए मुकर्रमा से हिजरत कर के ग़ारे सौर की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए ।

(السیرۃ الحلبیۃ، باب عرض رسول اللہ۔۔۔الخ، ج۲، ص ۳۶، تفسیر روح البیان، تحت سورۃ التوبۃ، آیت ۴۰، ج۳، ص ۴۳۱، سبل الھدی والرشاد، الباب الرابع فی ھجرۃ رسول اللہ، ج۳، ص ۲۳۹)

www.dawateislami.net

सो 100 ऊंट ब तौरे इन्आम

सारे मुशरिकीने मक्का आप की तलाश में निकले और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर पहुंचे, उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا खाना तय्यार कर रही थीं, मुशरिकीने मक्का को देख कर इन्हों ने "दिया" रोशन कर दिया ताकि इस के धूएं की बू सालन की ख़ुश्बू पर ग़ालिब हो जाए और कुफ़्फ़ार को शक न गुज़रे। कुफ़्फ़ार ने इन दोनों मुबारक हस्तियों के मुतअ़ल्लिक़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा : कहा : "मैं तो काम कर रही हूं।" येह सुन कर मुशरिकीन चले गए और सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शहीद करने वाले के लिये 100 ऊंट देने का ए'लान कर दिया। (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۱۰۲)

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने बड़े बड़े शह सुवारों से भी इन सो ऊंटों वाले इन्आ़म का मुआ़हदा कर लिया था। और मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के माबैन उन अ़लाक़ों में भी इस की इत्तिलाअ़ दे दी थी जिन से आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने गुज़रना था।

सिद्दीक़े अक्बर की ऊंटनी की पेशकश

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास चूंकि दो ऊंटनियां थीं, लिहाज़ा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोनों में जो सब से बेहतर थी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश कर दी और अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप पर मेरे मां-बाप क़ुरबान ! आप इस पर सुवारी फ़रमाइये।" सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं अपनी सुवारी के सिवा किसी पर न बैठूंगा।" अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह आप ही की है।" फ़रमाया : "नहीं ! बल्कि मैं इसे ख़रीदूंगा और वोह क़ीमत दूंगा जिस पर तुम ने इसे ख़रीदा है।"

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی واصحابہ الی المدینۃ، الحدیث: ۳۹۰۵، ج ۲، ص ۵۹۳، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۰۰)

मैं तो मालिक ही कहूंगा कि हो मालिक के ह़बीब
या'नी मह़बूबो मुह़िब में नहीं मेरा तेरा

www.dawateislami.net

ऊंटनी आठ सो दिरहम में ख़रीदी

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से वोह ऊंटनी आठ सो दिरहम में ख़रीदी मगर क़र्ज़, मगर येह साबित नहीं कि येह क़र्ज़ सिद्दीक़े अक्बर ने वुसूल किया या नहीं ? अगर किया होगा तो आप ही पर ख़र्च किया होगा ।" (مرآۃ المناجیح، ج۸، ص۴۴۸)

ऊंटनी ख़रीदने में हिक्मत

(1) हज़रते अ़ल्लामा मुहिब त़बरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : "नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से ऊंटनी इस लिये ख़रीदी ताकि आप की हिजरत का सवाब ख़ास आप के लिये हो इस में कोई दूसरा शरीक न हो । वरना ऊंटनी को क़ीमतन लेने की कोई ज़रूरत न थी क्यूंकि सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के माल को अपना माल समझते थे और इस में अपने माल जैसा ही तसर्रुफ़ फ़रमाते थे ।"

(الریاض النضرۃ، ج۱، ص۱۰۰)

(2) हज़रते अ़ल्लामा इब्ने हजर अ़स्क़लानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : "सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से ऊंटनी इस लिये ख़रीदी ताकि आप की हिजरत ख़ास आप ही के माल से हो ।"

(فتح الباری، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی واصحابہ الی المدینۃ، ج۸، ص۲۰۰)

हिजरत के रफ़ीक़े सफ़र

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास हाज़िर हुवे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : "मेरे साथ हिजरत कौन करेगा ?" अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप के साथ अबू बक्र हिजरत करेंगे और वोह सिद्दीक़ हैं ।" (کنز العمال، کتاب الھجرتین، الحدیث:۴۶۲۸۴، ج۸، الجزء:۱۶، ص۲۸۵، الریاض النضرۃ، ج۱، ص۱۰۴)

www.dawateislami.net

सिद्दीके़ अक्बर के ख़ुशी के आंसू

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रोज़ाना हमारे पास तशरीफ़ लाते थे कभी तो सुब्ह़ तशरीफ़ लाते और कभी शाम। फिर जब वोह दिन आया जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को हिजरत की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हिजरत में रफ़ाक़त के लिये अ़र्ज़ किया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "हां तुम मेरे साथ रहोगे।" ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं: "मुझे इस से पहले इस बात का शुऊ़र भी न था कि कोई ख़ुशी के मारे भी रोता है। लेकिन उस दिन फ़र्ते़ जज़्बात से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आंखें भीग गईं।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۱۰۱)

सफ़र के लिये ज़ादे राह

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं: "हम ने दोनों के ज़ादे सफ़र के लिये जल्दी जल्दी जो हो सका तय्यार कर दिया और चमड़े की एक थैली में थोड़ा सा खाना रख दिया।" (صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی و اصحابہ الی المدینۃ، الحدیث ۳۹۰۵:ج ۲،ص ۵۹۳)

बेटी की ख़िदमत गुज़ारी

ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाती हैं: "सुल्ताने मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और मेरे वालिदे माजिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब हमारे घर से हिजरत के सफ़र पर रवाना होने वाले थे तो मैं ने इन का खाना तय्यार किया, रोटी और पानी का बरतन बांधने के लिये कोई कपड़ा घर में न था, मैं ने अपने वालिद से कहा: "मेरे कमर बन्द के सिवा और कोई कपड़ा घर में नहीं है।" इन्हों ने फ़रमाया: "इसे दरमियान से फाड़ दो, एक में पानी का बरतन और दूसरे में खाना बांध दो।" मैं ने ऐसे ही किया उस दिन से मुझे ذَاتُ النِّطَاقَیْن या'नी दो कमर बन्द वाली कहा जाने लगा।" (चुस्ती ह़ासिल करने के लिये जो कपड़ा कमर में बांधा जाता है उसे कमर बन्द कहते हैं।) (صحیح البخاری، کتاب الجھاد والسیر، باب حمل الزاد فی الغزو، الحدیث: ۲۹۷۹،ج ۲،ص ۳۰۴)

www.dawateislami.net

एक अहम मदनी फूल

उ़मूमन ऐसा होता है कि मुसाफ़िर अपने लिये ज़ादे सफ़र का भी ख़ास एहतिमाम करता है, लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़श्क़ पर कुरबान ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घर से पानी का एक मशकीज़ा, एक खाल और कुछ पैसे भी अपने हमराह लाए थे, लेकिन वोह अपने लिये नहीं बल्कि अपने मह़बूब और प्यारे दोस्त जनाबे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये, और अपने लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को लाए थे। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8 स. 164 बित्तसर्रुफ़)

परवाने को चराग़ तो बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा का रसूल बस
मर ही जाऊं मैं अगर इस से जाऊं दो क़दम
क्या बचे बीमारे ग़म क़ुर्बे मसीह़ा छोड़ कर

सर ज़मीने मक्का से ख़िताब

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़मरा ज़ुहरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़्वरह टीले पर खड़े हुवे और सर ज़मीने मक्का से यूं ख़िताब फ़रमाया : ''ऐ मक्के की ज़मीन ! ख़ुदा की क़सम ! तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सारी ज़मीनों से ज़ियादा प्यारी और मह़बूब जगह है और अगर मुझे कुफ़्फ़ार यहां से तकालीफ़ दे कर न निकालते तो मैं हरगिज़ तुझ से न निकलता।''

(سنن الترمذی، کتاب المناقب عن رسول اللہ، فضل فی مکۃ، الحدیث: ۳۹۵۱، ج۵، ۴۸۶)

नबी ने ख़ानए का'बा को देखा और फ़रमाया
ऐ प्यारे तेरी मेरी फ़ुर्क़त का वक़्त है आया
तेरे फ़रज़न्द अब मुझ को यहां रहने नहीं देते
तेरी पाकीज़गी का वा'ज़ तक कहने नहीं देते
जुदाई आ़रिज़ी है फिर भी मुझ को बे क़रारी है
कि तू और तेरी रफ़ाक़त मुझ को दुन्या से प्यारी है

www.dawateislami.net

सिद्दीके़ अक्बर की अनोखी आरज़ू

जब महबूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े महशर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक्का से हिजरत कर के रात के वक़्त निकल पड़े । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी आप के साथ थे, जो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कभी आगे चलते और कभी पीछे, कभी दाएं, कभी बाएं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : "یَا اَبَابَکْر! مَالَکَ تَمْشِی سَاعَۃً بَیْنَ یَدَیَّ وَسَاعَۃً خَلْفِی या'नी ऐ अबू बक्र ! येह क्या है, कभी तुम मेरे आगे चलते हो और कभी पीछे, तुम पहले तो कभी इस त़रह़ नहीं चले ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे जब ख़ौफ़ आता है कि कोई दुश्मन आगे घात लगाए न बैठा हो तो आप के आगे चलने लगता हूं और जब येह ख़याल आता है कोई पीछा करने वाला पीछे से ह़म्ला आवर न हो तो आप के पीछे चलने लग जाता हूं ।" दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "یَا اَبَابَکْر! لَوْ کَانَ شَیْءٌ اَحْبَبْتَ اَنْ یَکُوْنَ لَکَ دُوْنِی या'नी ऐ अबू बक्र ! क्या तुम येह पसन्द करते हो कि अगर कोई तक्लीफ़ पहुंचे तो तुम्हें पहुंचे मुझे कुछ न हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "نَعَم! وَالَّذِیْ بَعَثَکَ بِالْحَقِّ مَا کَانَتْ لِتَکُنْ مِنْ مَلِمَّۃٍ اِلَّا اَحْبَبْتُ اَنْ تَکُوْنَ لِیْ دُوْنَکَ" जी हां ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस रब्बे ज़ुल जलाल की क़सम जिस ने आप को ह़क़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! मैं तो येह पसन्द करता हूं कि कोई भी तक्लीफ़ व मुसीबत हो तो मुझे पहुंचे लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुछ भी न हो ।"

(دلائل النبوۃ، باب خروج النبی مع صاحبہ ابی بکر، ج ۲، ص ۴۷۶)

यूं मुझ को मौत आए तो क्या पूछना मेरा
मैं ख़ाक पर, निगाह दरे यार की त़रफ़

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर की उंगली का ज़ख़्मी होना

हज़रते सय्यिदुना जुन्दब बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सुफ़्यान अ़लक़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ग़ार की त़रफ़ जा रहे थे तो रास्ते में उन के हाथ पर ज़ख़्म आ गया, जिस से ख़ून साफ़ करते हुवे वोह येह कह रहे थे : هَلْ اَنْتِ اِلَّا اِصْبَعٌ دَمِيْتِ وَفِىْ سَبِيْلِ اللهِ مَالَقِيْتِ या'नी ऐ उंगली ! तुझ से सिर्फ़ ख़ून ही तो बहा है, और तुझे जो तक्लीफ़ आई है क्या वोह **अल्लाह** की राह में नहीं ?" (سیر اعلام النبلاء، الرقم ۱۵۱۸ ، یحی بن آدم بن سلیمان، ج۸، ص ۳۴۱)

ग़ारे सौर में दाख़िला

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात भर अपने पैरों की उंगलियों पर चलते रहे ताकि क़दमों के निशान न साबित हों जिस के सबब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमैने मुबारका जा बजा ज़ख़्मी हो गए, जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप के क़दमों की तक्लीफ़ देखी तो आप को कन्धों पर उठा लिया और ग़ार के दहाने तक ले आए, वहां आप को उतारा, फिर अ़र्ज़ किया : "पहले मैं ग़ार में जाता हूं, अगर कोई चीज़ होगी तो आप से पहले मुझे नुक़्सान देगी, अबू बक्र अन्दर गए और उसे अच्छी त़रह़ साफ़ किया, ग़ार में मौजूद तमाम सुराख़ों को (एक कपड़े के ज़रीए) बन्द किया, कोई मूज़ी शै न पाई तो आप को उठा कर ग़ार में ले आए और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप की गोद में सर रख कर इस्तिराहत फ़रमाने लगे। अलबत्ता ग़ार में एक सूराख़ बाक़ी रह गया और उसी में सांप था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को डर हुवा कि कहीं कोई मूज़ी शै निकल कर रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ न पहुंचाए इन्हों ने उस पर अपने पाऊं की ऐड़ी रख दी, तो उस सूराख़ में मौजूद सांप ने आप के पाउं पर डस लिया, आप ने जुम्बिश न की, कि कहीं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आराम में ख़लल वाक़ेअ़ न हो जाए मगर तक्लीफ़ के सबब आंसू छलक पड़े और दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नर्म व नाज़ुक मुबारक रुख़्सार के बोसे लेने लगे।

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बेदार हो गए और फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! क्या बात है ?" अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सांप ने डस लिया है ।" फ़रमाया : "لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا या'नी ऐ अबू बक्र ! ग़म न करो, बेशक **अल्लाह** तआ़ला हमारे साथ है ।" पस आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस बात से **अल्लाह** तआ़ला ने अबू बक्र के दिल पर सुकून नाज़िल कर दिया । और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के उस हिस्से पर अपना लुआ़बे दहन (या'नी थूक शरीफ़) लगाया तो फ़ौरन आराम मिल गया ।"

(مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب والفضائل، الفصل الثالث، الحدیث:۶۰۳۴، ج۳، ص۳۳۸، دلائل النبوۃ، باب خروج النبی مع صاحبہ ابی بکر، ج۲، ص۴۷۷، تفسیر روح البیان، التوبۃ:۴۰، ج۳، ص۴۳۴)

न क्यूं कर कहूं या ह़बीबी अग़िस्नी !
इसी नाम से हर मुसीबत टली है

मन्ज़िले सिद्क़ो इश्क़ के रहबर हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की अ़ज़मत और ग़ारे सौर वाले वाक़िए़ की त़रफ़ इशारा करते हुवे किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा :

यार के नाम पे मरने वाला, सब कुछ सदक़ा करने वाला
ऐड़ी तो रख दी सांप के बिल पर, ज़हर का सदमा सह लिया दिल पर
मन्ज़िले सिद्क़ो इश्क़ का रहबर, येह सब कुछ है ख़ातिरे दिलबर

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सिद्दीक़े अक्बर के ह़क़ में जन्नत की दुआ़

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नोऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्बहानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने ग़ारे सौर में मौजूद तमाम सुराख़ अपने कपड़े के ज़रीए़ बन्द कर दिये, जब सुब्ह़ हुई तो हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! तुम्हारा कपड़ा कहां है ?"

www.dawateislami.net

उन्हों ने सुराख़ बन्द करने वाला सारा माजरा बयान कर दिया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के ह़क़ में यूं दुआ़ फ़रमाई : " اَللّٰھُمَّ اجْعَلْ اَبَابَکْرٍ مَعِيَ فِي دَرَجَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन अबू बक्र को जन्नत में मेरे साथ जगह अ़ता फ़रमा।" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि "बेशक आप के रब ने आप की दुआ़ क़बूल फ़रमा ली है।" (حلیۃ الاولیاء، الحدیث:۱۷، ج۱، ص۶۷)

सिद्दीक़ी ह़ज़रात के अंगूठे में निशान

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ 64 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले '**आ़शिक़े अक्बर**' सफ़ह़ा 56 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अवलाद को '**सिद्दीक़ी**' बोलते हैं, इन के पाउं के अंगूठे में आज भी सांप के काटने का निशान नज़र आना मुमकिन है। मगर दिखाई न देने पर किसी सिद्दीक़ी साहि़ब की सिद्दीक़िय्यत पर बद गुमानी जाइज़ नहीं कि हर एक में येह अ़लामत वाज़ेह़ नहीं होती। सगे मदीना عُفِیَ عَنْہ ने एक सिद्दीक़ी आ़लिम साहि़ब से '**अंगूठे का निशान**' दिखाने की दरख़्वास्त की तो कहा कि मेरे वालिद साहि़ब رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने खुरच कर ज़ाहिर किया था मगर अब फिर छुप गया है। मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْحَنَّان '**मिरआतुल मनाजीह़**' जिल्द **8** सफ़ह़ा **359** पर फ़रमाते हैं : "बा'ज़ सालिह़ीन को फ़रमाते सुना गया कि जो शैख़ सिद्दीक़ी (सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के शहज़ादे जो कि सह़ाबी थे उन या'नी) ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की अवलाद से हैं, उन्हें सांप या तो काटता नहीं, अगर काटे तो (ज़ह्र) असर नहीं करता। (येह) उस लुआ़ब शरीफ़ का असर है (जो कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अंगूठे पर ग़ारे सौर में सांप के डसने की जगह लगाया था) और इन की अवलाद के पाउं के अंगूठे में 'सियाह तिल' होता है ह़त्ता कि अगर मां–बाप दोनों की त़रफ़ से शैख़ सिद्दीक़ी हो तो दोनों पाउं के अंगूठे में तिल होगा। मैं ने बहुत (से)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़ी हज़रात के पाउं के अंगूठे में येह तिल देखे हैं। ग़रज़ येह कि येह अ़जीब मो'जिज़ात हैं।" (या'नी सिद्दीक़ियों को सांप का न काटना, काटे तो ज़ह्र का असर न करना और आज तक पाउं के अंगूठे में तिल का पाया जाना येह सब सरकारे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक लुआ़ब के मो'जिज़ात हैं।)

ज़ईफ़ी में येह कुव्वत है ज़ईफ़ों को क़वी कर दें
सहारा लें ज़ईफ़ो अक़्विया सिद्दीक़े अक्बर का
बयां हों किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का
कि यारे ग़ार है मह़बूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

बारे नबुव्वत

फ़त्ह़े मक्का के दिन सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ानए का'बा में मौजूद तमाम बुतों को गिराया, चन्द बुत जो बुलन्द जगह पर थे वोह रह गए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मौजूद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप अपने क़दमे नाज़ मेरे कन्धों पर रखिये और इन बुतों को गिरा दीजिये।" हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! तुम में बारे नबुव्वत उठाने की ताक़त नहीं, तुम मेरे कन्धों पे आओ और इन बुतों को गिराओ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म बजा लाते हुवे आप के कन्धों पर आए और बुतों को गिरा दिया। (مدارج النبوۃ، ج۲، ص۲۹۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ौर फ़रमाइये ! बैतुल्लाह शरीफ़ में हुज़ूरे अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाएं कि : "ऐ अ़ली ! तुम बारे नबुव्वत न उठा सकोगे।" और हिजरत की रात दुश्वार गुज़ार चट्टानें हैं, मीलों मील का सफ़र है और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अ़र्ज़ करें : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप मेरे कांधों पर सुवार हो जाएं तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के कांधों पर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुवार हो जाएं वहां येह न फ़रमाया कि : "ऐ अबू बक्र ! तुम बारे नबुव्वत न उठा सकोगे।" और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आप को अन्धेरी रात में कांधों पर उठा कर पहाड़ पर चढ़ रहे हैं, येह किस क़दर ताक़त व शुजाअ़त है।

www.dawateislami.net

سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की शुजाअ़त येह है कि हिजरत की रात हुज़ूर इमामुल अम्बिया, मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बिस्तर पर आराम फ़रमाएं और दुश्मनों से क़त्अ़न कोई ख़ौफ़ न खाएं, और सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की शुजाअ़त येह है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने कांधों पर उठा कर पहाड़ की चोटी तक पहुंच जाएं। जभी तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की शुजाअ़त को ख़ुद बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "ऐ लोगो ! तमाम लोगों में सब से ज़ियादा बहादुर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हैं।"

(كنز العمال، باب فضائل الصحابة، فضل الصديق، الحديث: ٣٥٦٩٠، ج٦، الجزء: ١٢، ص٢٣٥)

आ़शिक़े रसूल सांप

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस सांप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पाउं मुबारक पर डसा वोह सांप एक आ़शिक़े रसूल सांप था। चुनान्चे, मन्क़ूल है कि एक रोज़ एक सांप ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : "या रूह़ल्लाह ! मक्कए मुकर्रमा को कौन सा रास्ता जाता है ?" आप बड़े हैरान हुवे और इरशाद फ़रमाया : "ऐ सांप ! तुझे मक्कए मुकर्रमा से क्या काम ?" उस सांप ने गोया अपने इ़श्क़ का इज़्हार करते हुवे अ़र्ज़ की : "हुज़ूर छे सो(600) साल से मैं अपने मह़बूब ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत दिल में लिये तड़प रहा हूं और उन से मिलने के लिये बे क़रार हूं। बस अब तो मह़ब्बत का ग़लबा हो चुका है और मह़ब्बत इ़श्क़ में तब्दील हो चुकी है, सुना है कि मेरे मह़बूब मक्कए मुकर्रमा की वादी में तशरीफ़ लाएंगे और वहां से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा जाएंगे और इस सफ़र में वोह एक पहाड़ के अन्दर ग़ारे सौर में भी ठहरेंगे, यक़ीनन मैं मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा तो जाने से रहा कि वहां इन्सानों की आबादी है बस मह़बूब से मुलाक़ात और ज़ियारत का एक ही त़रीक़ा है कि मैं उस ग़ार में पहुंच जाऊं और अपने मह़बूब की आमद का इन्तिज़ार करूं। इस लिये आप से मक्कए मुकर्रमा का रास्ता पूछ रहा हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : "मेरे और उन के दरमियान

www.dawateislami.net

छे सो(600) साल का ज़माना है, क्या तू इतने अ़र्से तक वहां इन्तिज़ार करेगा ?" उस सांप ने अ़र्ज़ की : "अगर्चे अ़र्सा बहुत त़वील है लेकिन मैं ना उम्मीद नहीं हूं।" आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उसे मक्के का रास्ता बता दिया और वोह आ़शिक़े रसूल सांप शौक़े ज़ियारत लिये वहां से रवाना हुवा और ग़ारे सौर में पहुंच गया। ग़ार में पहुंच कर उस ने सत्तर 70 सूराख़ किये। उस का मक़्सद येह था कि अगर मुशाहदए मह़बूब में एक रास्ता बन्द कर दिया जाए तो दूसरे रास्ते से मुशाहदा कर सके क्यूंकि वोह सांप जानता था कि अगर मेरे जैसा दीदार का त़ालिब आ़शिक़ ग़ार में मौजूद है तो मह़बूब के साथ भी एक आ़शिक़ है जो मह़बूब की ह़िफ़ाज़त का ज़िम्मेदार है। बहर ह़ाल जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़ार के तमाम सूराख़ बन्द कर दिये और जो एक सूराख़ रह गया था उस पर भी अपनी ऐड़ी रख दी तो उस आ़शिक़ सांप ने हर सूराख़ को चेक किया, एक सूराख़ के मुंह पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नर्म नर्म ऐड़ी नज़र आई तो उस ने अव्वलन इस पर अपना सर रगड़ा ताकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पाउं हटा लें, मगर आप ने पाउं न हटाया तो उस सांप को इस के बिग़ैर कोई रास्ता न दिखाई दिया कि पाउं पर काटे ताकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पाउं हटा लें, उस ने बार बार पाउं को काटा मगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पाउं न हटाया। (معارج النبوۃ، رکن چھارم، ص۸)

इमामे इश्क़ो मह़ब्बत, यारे माहे रिसालत ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सफ़रे हिजरत की बे मिसाल उल्फ़त व अ़क़ीदत को सराहते हुवे आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

सिद्दीक़ बल्कि ग़ार में जां इस पे दे चुके
और ह़िफ़्ज़े जां तो जान फ़ुरूज़े ग़ुरर की है

हां ! तू ने उन को जान, उन्हें फेर दी नमाज़
पर वोह तो कर चुके थे जो करनी बशर की है

साबित हुवा कि जुम्ला फ़राइज़ फ़ुरूअ़ हैं
अस्लुल उसूल बन्दगी उस ताजवर की है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

आप जैसा वफ़ादार दोस्त नहीं

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब ग़ार में नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की पहली रात आई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने साथी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : क्या तुम सोए हो ?" अ़र्ज़ किया : "नहीं या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं तो आप के रुख़े ज़ैबा पर नज़रें जमाए बैठा हूं, आप कैसे हैं ?" फ़रमाया : "मैं ने उस त़रफ़ एक सूराख़ में किसी को ह़रकत करते देखा है, मुझे अन्देशा है कि कोई उल्लू (या सांप) वग़ैरा निकल कर मुझे या तुम्हें नुक़्सान न पहुंचा दे।" सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "वोह सुराख़ है कहां ?" नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की निशान देही की जिस पर सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वहां अपनी ऐड़ी रख दी, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ सिद्दीक़ ! **अल्लाह** तुझ पर रह़मत नाज़िल करे, जब लोगों ने मुझे झुटलाया तो तुम ने मेरी तस्दीक़ की, जब लोगों ने मुझे दर बदर करना चाहा तो तुम ने मेरी मदद की, जब लोगों ने मुझे झुटलाया उस वक़्त तुम मुझ पर ईमान लाए, फिर ग़ार में वह़शत के वक़्त तुम ने मुझ से उन्स किया, तो किसी शख़्स को तुम सा दोस्त मिल सकता है ?" (الریاض النضرۃ،ج ۱، ص ۱۰۸)

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ग़ार तक आ पहुंचे

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और जनाबे सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पीछा करते हुवे क़दमों के निशानात की मदद से ग़ार तक आ पहुंचे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ग़ार के बाहर इन दोनों के क़दमों के निशानात अपनी क़ुदरत से मिटा डाले, चुनान्चे, उन्हें पता न चल सका कि ग़ार के अन्दर कोई मौजूद है। उन में से एक शख़्स ग़ार के मुंह पर बैठ कर पेशाब करने लगा। तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लगता है काफ़िरों ने हमें देख लिया है।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "नहीं अबू बक्र ! अगर इन्हों ने हमें देखा होता तो येह शख़्स हमारी त़रफ़ मुंह कर के हमारे सामने पेशाब न करता।" बहर ह़ाल कुफ़्फ़ार वापस चले गए। (الریاض النضرۃ،ج ۱، ص ۱۰۲)

www.dawateislami.net

ग़ारे सौर की अन्दरूनी साख़्त

हकीमुल उम्मत **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ग़ारे सौर की हैअत के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "इस ग़ार के दो दरवाज़े हैं, कुफ़्फ़ार उस दरवाज़े पर पहुंचे जिस से हुज़ूर दाख़िल हुवे थे। इस दरवाज़े की लम्बाई एक हाथ है चौड़ाई सिर्फ़ एक बालिश्त। येह फ़क़ीर उस ग़ार शरीफ़ से निकलते वक़्त दरवाज़े में फंस गया था रगड़ से कुछ सर के बाल अड़ गए वहां पहले बहुत सूराख़ थे मगर अब कोई सूराख़ नहीं है। अन्दर छे सात आदमियों के बैठने की जगह है इस ग़ार में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया था कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर कुफ़्फ़ार अपने क़दमों को देख लें तो हमें भी देख लें। फ़रमाया : ﴿لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا﴾ (پ۱۰،التوبۃ:۴۰) जो क़ुरआने करीम ने नक़्ल फ़रमाया, जनाबे सिद्दीक़ को तो इस ग़ार में मार या'नी सांप ने काटा। ह़ैरत है कि कुफ़्फ़ार ने जो कुछ कहा हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अन्दर सब कुछ सुन लिया मगर इन ह़ज़रात ने जो अन्दर बातें कीं वोह कुफ़्फ़ार न सुन सके। ह़ालांकि फ़ासिला एक ही था येह है हुज़ूर का मो'जिज़ा ! ! ! जनाबे सिद्दीक़े अक्बर को उस वक़्त अपनी जान का ख़ौफ़ नहीं था अपनी जान तो आप पहले ही फ़िदा कर चुके थे कि अकेले अन्धेरे ग़ार में घुस गए सांप से कटवा लिया, ख़ौफ़ हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तक्लीफ़ का था येह ख़ौफ़ बेहतरीन इ़बादत था जिस पर सारी इ़बादात क़ुरबान हों।" (مرآۃ المناجیح،ج۸،ص۱۶۲-۱۶۳،۲۵۶ماخوذا)

बेटे की ख़िदमत गुज़ारी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लख़्ते जिगर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत होशयार और ज़हीन नौजवान थे, रात अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ग़ार में गुज़ारते और सुब्ह़ अन्धेरे मुंह मक्कए मुकर्रमा आ पहुंचते थे, अहले मक्का येही तसव्वुर करते कि येह रात उन्हों ने मक्कए मुकर्रमा ही में गुज़ारी, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़

www.dawateislami.net

कुरैश जो बातें भी करते येह सारा दिन उन्हें नोट करते और रात को ग़ार में पहुंच कर इन दोनों मुबारक हस्तियों की ख़िदमत में पेश कर दिया करते थे।

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب هجرة النبی واصحابه الی المدینة، الحدیث:۳۹۰۵،ج۲،ص۵۹۳)

ग़ुलाम की ख़िदमत गुज़ारी

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ारे सौर वाले पहाड़ के आस पास दिन भर बकरियां चराते रहते, और रात को ग़ार में दूध ले कर पहुंच जाते थे, येह दोनों मुबारक हस्तियां दूध पी कर रात आराम से गुज़ारती, और वोह ग़ुलाम सुब्ह बकरियां हांक कर दोबारा उन्हें चराने के लिये ले जाता, तीन रातों तक येही सिलसिला चलता रहा।

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ہجرة النبی و اصحابه الی المدینة، الحدیث:۳۹۰۵،ج۲،ص۵۹۳)

सय्यिदुना आमिर बिन फ़ुहैरा कौन थे ?

हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहले तुफ़ैल बिन अब्दुल्लाह के ग़ुलाम थे और उसी की मिल्किय्यत में थे। जब इस्लाम की दौलत से मालामाल हुवे तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप को ख़रीद कर आज़ाद फ़रमा दिया। ग़ज़्वए बद्र और ग़ज़्वए उहुद में भी शिरकत की सआदत हासिल की।

जसदे मुबारक से एक नूर निकला

'बीरे मऊना' के सानेहा में चालीस बरस की उ़म्र में जामे शहादत नोश फ़रमाया। इन को शहीद करने वाले सय्यिदुना आमिर बिन तुफ़ैल हैं जो बा'द में इस्लाम ले आए और दरजए सहाबिय्यत पर फ़ाइज़ हुवे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि : "जब मैं ने हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर नेज़े से पहला वार किया तो उन से एक नूर निकला।" बा'दे अज़ां हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन तुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दरबारे नबवी में हाज़िर हुवे और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस्तिफ़्सार किया :

www.dawateislami.net

"या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह कौन थे जो शहीद हुवे तो मैं ने देखा कि उन्हें आस्मान और ज़मीन के दरमियान उठा लिया गया यहां तक कि आस्मान उन से नीचे रह गया।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "वोह आ़मिर बिन फ़ुहैरा थे।" (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) (الاستيعاب فی معرفة الاصحاب، الرقم:١٣٤٦، ج٢، ص٣٤٥، الاصابة فی معرفة الصحابة، الرقم:٤٤٣٣، ج٣، ص٤٨٢)

वाक़िअ़ए ग़ारे सौर क़ुरआने पाक से

क़ुरआने पाक में भी इस मुबारक वाक़िए का तज़्किरा मौजूद है। चुनान्चे, पारह 10 सूरतुत्तौबा, आयत 40 में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذْ اَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ اِذْ هُمَا فِي الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَاَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ؕ وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "अगर तुम महबूब की मदद न करो तो बेशक अल्लाह ने उन की मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुवा सिर्फ़ दो जान से जब वोह दोनों ग़ार में थे जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक अल्लाह हमारे साथ है तो अल्लाह ने उस पर अपना सकीना (इत्मीनान) उतारा और उन फ़ौजों से उस की मदद की जो तुम ने न देखीं और काफ़िरों की बात नीचे डाली अल्लाह ही का बोलबाला है और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है।"

सकीना किसे कहते हैं ?

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : "फ़िरिश्तों की एक जमाअ़त का नाम सकीना है चूंकि इन के उतरने से मोमिन के दिल को सुकून व चैन ह़ासिल होता है इस लिये इसे सकीना कहते हैं मोमिन पर बा'ज़ ख़ास हालात में भी और ख़ास इबादात के मौक़अ़ पर भी येह फ़िरिश्ते उतरते हैं रब तआ़ला हिजरत के ग़ार का वाक़िआ़ बयान फ़रमाते हुवे हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

www.dawateislami.net

के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाता है : "فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ सिद्दीक़े अक्बर को उस वक़्त हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का बहुत ग़म और कुफ़्फ़ार का अन्देशा था इसी लिये इन पर सकीना उतरी, ख़याल रहे कि बुज़ुर्गों के तबर्रुकात से भी सुकूने क़ल्बी नसीब होता है इन्हें भी रब तआ़ला ने सकीना फ़रमाया है चुनान्चे, ताबूते सकीना जिस में ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा व हारून عَلَيْهِمَا السَّلَام के तबर्रुकात इमामा ना'लैन वग़ैरा थे इन के मुतअ़ल्लिक़ रब तआ़ला फ़रमाता है :

﴿فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ بَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَ اٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ﴾ (پ۲، البقرۃ:۲۴۸)

बा'ज़ लोग क़ब्रों पर तिलावते क़ुरआने पाक कराते हैं ताकि इस तिलावत से मय्यित को सुकूने क़ल्बी नसीब हो इस का माख़ज़ येह ह़दीस है और बा'ज़ लोग अपनी क़ब्रों में अपने बुज़ुर्गों के तबर्रुकात इमामा वग़ैरा और अपना शजरा, आयाते क़ुरआनिय्या रख देने की वसिय्यत करते हैं ताकि सुकूने क़ब्र मय्यसर हो इन का माख़ज़ क़ुरआने करीम की मज़्कूरा आयत है सह़ाबए किराम ने अपने कफ़नों में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नाख़ुन, बाल, तहबन्द शरीफ़ रखवाए, ख़ुद हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी बेटी बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के कफ़न में अपना तहबन्द शरीफ़ रखा। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 224)

ह़याते सिद्दीक़ का एक दिन और एक रात

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ज़िक्र छिड़ गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रोते हुवे फ़रमाया : "मेरी येह तमन्ना है कि ऐ काश ! मेरे तमाम आ'माले सालेह़ा के बदले में मुझे सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का एक दिन और एक रात का अ़मल दे दिया जाए,

उन का एक रात का अ़मल तो हिजरत के मौक़अ़ पर था जब वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ग़ार को चले थे, वहां पहुंचने पर सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब तक मैं अन्दर न जाऊं आप दाख़िल न हों, अगर इस में कोई नुक़्सान देह चीज़ होगी तो आप से पहले मुझ तक पहुंचेगी।" तो वोह अन्दर गए, ग़ार साफ़ किया, ग़ार में चारों त़रफ़ सूराख़ थे, जिन्हें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने तहबन्द के टुकड़े कर के पुर किया। दो

www.dawateislami.net

सूराख़ रह गए इन पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना पाउं रख दिया और अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अन्दर तशरीफ़ ले आइये।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दाख़िल हुवे और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की गोद में सरे अन्वर रख कर इस्तिराह़त फ़रमाने लगे, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सूराख़ में से किसी ज़हरीली चीज़ ने डस लिया। मगर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नींद में ख़लल आ जाने के ख़ौफ़ से उन्हों ने ज़रा जुम्बिश तक न की, मगर आंसू टपक पड़े जो रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़े अन्वर के बोसे लेने लगे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हुवे और फ़रमाया : "अबू बक्र ! तुम्हें क्या हुवा ?" अ़र्ज़ किया : "किसी (सांप) ने डस लिया, आप पर मेरे मां-बाप क़ुरबान !" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुतअस्सिरा जगह पर लुआ़बे दहन लगाया तो वोह बिल्कुल ठीक हो गया।

और एक दिन का अ़मल येह है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या से पर्दा फ़रमाया तो अ़रब क़बाइल मुर्तद हो गए वोह कहने लगे कि "हम ज़कात नहीं देंगे।" सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अगर वोह ज़कात की एक रस्सी भी न देंगे तो मैं उन से जिहाद करूंगा, मैं ने (या'नी सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने) अ़र्ज़ किया : "ऐ ख़लीफ़ए रसूल ! लोगों से नर्मी बरतें।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे फ़रमाया : "तुम जाहिलिय्यत में बड़े सख़्त थे, अब इस्लाम में आ कर इतने नर्म क्यूं हो गए हो ? वह़ी ख़त्म हो चुकी और दीन मुकम्मल हो चुका, अब किसी नर्मी का सुवाल ही पैदा नहीं हो सकता, क्या मेरे ज़िन्दा होते हुवे दीन में कमी कर दी जाएगी ?"

(جامع الاصول فی احادیث الرسول، الکتاب السابع فی الغدر، الباب الرابع، الفرع الثانی فی فضائل الرجال علی الانفراد، الحدیث: ۶۴۲۶، ج۸، ص ۴۵۸)

काइनात की मुन्फ़रिद इ़बादत

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "जनाबे सिद्दीक़ की येह ख़िदमत ऐसी मक़्बूल हुई कि سُبْحَانَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जब जनाबे सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का सर मुबारक अपने ज़ानू पर रख कर बैठे होंगे और ख़ूब जी भर भर कर चेहरए अन्वर को देखते होंगे उस वक़्त उन के दिल का क्या ह़ाल होगा वोह उस रात ऐसी इ़बादत कर रहे थे जो फ़र्श व अ़र्श पर कोई न कर रहा था। उन का ज़ानू हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की रह़ल बनी थी सामने जमाले यार था।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 163)

www.dawateislami.net

पूरी ज़िन्दगी के जुम्ला आ'माल से बेहतर

हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में कुछ लोगों के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ किया गया कि वोह आप को हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर फ़ज़ीलत देते हैं। येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फूट फूट कर रोने लगे और इरशाद फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक रात और एक दिन की नेकी मेरी ज़िन्दगी के जुम्ला नेक आ'माल से कहीं बेहतर है, अगर कहो तो तुम्हें सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक दिन और एक रात बतलाऊं ?" अ़र्ज़ किया गया : "अमीरल मोअमिनीन ! ज़रूर बतलाइये।"

फ़रमाया : "रात तो वोह है जब महबूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े महशर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा से हिजरत कर के रात के वक़्त निकल पड़े। सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी आप के साथ थे, जो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कभी आगे चलते और कभी पीछे, कभी दाएं कभी बाएं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : "अबू बक्र ! येह क्या है, तुम पहले तो कभी इस त़रह़ नहीं चले ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "मुझे जब ख़ौफ़ आता है कि कोई दुश्मन आगे घात लगाए न बैठा हो तो आप के आगे चलने लगता हूं और जब येह ख़याल आता है कि कोई पीछा करने वाला पीछे से हम्ला आवर न हो तो आप के पीछे चलने लग जाता हूं, और चूंकि अम्न नहीं इस लिये दाएं बाएं भी चल रहा हूं।" हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात भर अपने पैरों की उंगलियों पर चलते रहे ताकि क़दमों के निशान न साबित हों जिस के सबब आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़दमैने मुबारक जा बजा ज़ख़्मी हो गए, जब सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप के क़दमों की तक्लीफ़ देखी तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कन्धों पर उठा लिया और ग़ार के दहाने तक ले आए, वहां आप को उतारा फिर अ़र्ज़ किया : "ग़ार में पहले मैं जाता हूं, अगर कोई चीज़ होगी तो आप से पहले मुझे नुक़्सान देगी।" सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अन्दर गए और कोई मूज़ी शै न पाई तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उठा कर ग़ार में ले आए, जहां एक सूराख़ था, जिस में बिच्छू और सांप थे, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को डर हुवा कि कहीं कोई मूज़ी शै निकल

www.dawateislami.net

कर रसूले ख़ुदा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तक्लीफ़ न पहुंचाए उन्हों ने उस पर अपना क़दम रख दिया, तो उस सूराख़ में मौजूद सांप ने आप के क़दम पर डस लिया, आप ने जुम्बिश न की, कि कहीं हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आराम में ख़लल वाक़ेअ़ न हो जाए मगर तक्लीफ़ के सबब आंसू छलक पड़े, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! ग़म न कर, बेशक **अल्लाह** तआ़ला हमारे साथ है।" पस आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इस बात से **अल्लाह** तआ़ला ने सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल पर सुकून नाज़िल कर दिया तो येह थी अबू बक्र की एक रात।

और दिन वोह है जिस में सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्तिक़ाल फ़रमाया, और कई अ़रब क़बाइल मुर्तद हो गए तो इस मौक़अ़ पर मेरे मन्अ़ करने के बा वुजूद ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कमाले फ़हम व फ़िरासत और दूरअन्देशी से काम लेते हुवे मुर्तद क़बाइल के ख़िलाफ़ जिहाद कर के इस फ़ितने को हमेशा के लिये ज़मीं बर्द कर दिया।" इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर फ़ज़ीलत देने वालों को एक तहदीद आमेज़ (या'नी सख़्त अल्फ़ाज़ वाला) ख़त लिखा जिस में उन्हें आयिन्दा ऐसा करने से सख़्ती से मन्अ़ फ़रमा दिया।

(دلائل النبوۃ، باب خروج النبی مع صاحبہ ابی بکر الصدیق، ج ۲، ص ۴۷۶-۴۷۷)

कबूतरों के ह़क़ में दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्अ़ब मक्की عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म और ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शा'बा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم की सोह़बत ह़ासिल की और इन सब से येह ह़दीस सुनी कि "जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ार में थे तो **अल्लाह** तआ़ला के हुक्म से इस के मुंह पर एक दरख़्त पैदा हो गया जिस से वोह छुप गए और ख़ुदा तआ़ला के हुक्म से मकड़ी ने जाला भी बुन दिया और **अल्लाह** तआ़ला ही के हुक्म से दो जंगली कबूतरियां ग़ार के मुंह पर आ कर बैठ गईं। क़बाइले क़ुरैश के नौजवान लाठियां, डन्डे और तल्वारें लिये दोनों की तलाश में सरगर्दां ग़ार तक आ पहुंचे, और उन का फ़ासिला सिर्फ़ चालीस हाथ रह गया, तो उन में से एक नौजवान ग़ार का

www.dawateislami.net

अन्दरूनी जाइज़ा लेने के लिये आगे बढ़ा तो उस ने देखा कि दो कबूतरियां ग़ार के मुंह पर घोंसला बनाए हुवे हैं वोह वापस चला गया, उस के साथियों ने कहा : "तुम ने ग़ार में क्यूं नहीं झांका ?" वोह कहने लगा : "ग़ार के मुंह पर तो दो कबूतरियों ने घोंसले बनाए हुवे हैं, अन्दर कोई नहीं है क्यूंकि अगर कोई अन्दर गया होता तो घोंसला कैसे क़ाइम रहता ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ार में उस आदमी की येह बात सुन ली और जान लिया कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन दोनों कबूतरियों के सबब इस ग़ार से इस मुसीबत को दूर कर दिया है । आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के ह़क़ में दुआ़ फ़रमाई, चुनान्चे, **अल्लाह** तआ़ला ने कबूतरों का इस ख़िदमत के सिले में ह़रमे का'बा और ह़रमे नबवी में बसेरा बना दिया ।" (المعجم الكبير، مسند ابو مصعب المكي، الحديث:١٠٨٢، ج٢٠، ص٤٤٣)

ग़ार पर ख़ुदाई पहरा लगा दिया गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन दोनों मुक़द्दस हस्तियों की ह़िफ़ाज़त के ज़ाहिरी अस्बाब भी पैदा फ़रमा दिये कि जूंही जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मइय्यत (या'नी हमराही) में ग़ारे सौर में दाख़िल हुवे तो ख़ुदाई पहरा लगा दिया गया कि ग़ार के मुंह पर मकड़ी ने जाला तन दिया और किनारे पर कबूतरी ने अन्डे दे दिये । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 680 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**मुकाशफ़तुल कुलूब**" के सफ़्ह़ा 132 पर है : येह सब कुछ कुफ़्फ़ारे मक्का को ग़ार की तलाशी से बाज़ रखने के लिये किया गया, उन दो कबूतरों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसी बे मिसाल जज़ा दी कि आज तक ह़रमे मक्का में जितने कबूतर हैं वोह उन्हीं दो(2) की अवलाद हैं, जैसे उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त की थी वैसे ही रब عَزَّوَجَلَّ ने भी ह़रम में उन के शिकार पर पाबन्दी आ़इद फ़रमा दी ।

फ़ानूस बन के जिस की ह़िफ़ाज़त हवा करे
वोह शम्अ़ क्या बुझे जिसे रोशन ख़ुदा करे

जब कुफ़्फ़ारे कुरैश ने वहां कबूतरों का घोंसला और उस में अन्डे देखे तो कहने लगे : अगर इस ग़ार में कोई इन्सान मौजूद होता तो न मकड़ी जाला तनती न कबूतरी अन्डे

www.dawateislami.net

देती। कुफ़्फ़ार की आहट पा कर आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कुछ घबरा गए और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अब दुश्मन हमारे इस क़दर क़रीब आ गए हैं कि अगर वोह अपने क़दमों पर नज़र डालेंगे तो हमें देख लेंगे।" हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ﴿لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا﴾(پ۱۰،التوبۃ:۴۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ग़म न खा बेशक **अल्लाह** हमारे साथ है।"

आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن मक्के मदीने के सुल्तान, सरवरे ज़ीशान, सरकारे दो जहां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस मो'जिज़ए आ़लीशान और ख़्वारिये दुश्मनान को बयान करते हुवे फ़रमाते हैं :

जान हैं, जान क्या नज़र आए
क्यूं अ़दू गिर्दे ग़ार फिरते हैं
वोह सूए लाला ज़ार फिरते हैं
तेरे दिन ऐ बहार फिरते हैं

फिर आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर सकीना उतर पड़ा कि वोह बिल्कुल ही मुत़मइन और बे ख़ौफ़ हो गए और चौथे दिन यकुम रबीउ़न्नूर बरोज़ दो शम्बा (या'नी पीर शरीफ़) हुज़ूरे नामदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ार से बाहर तशरीफ़ लाए और मदीनए मुनव्वरा रवाना हो गए।

(माख़ूज़ अज़ अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन, स. 303 ता 304)

वाह रे मकड़ी तेरा मुक़द्दर....!

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कामयाब व बा मुराद हुवे और तलाश करने वाले कुफ़्फ़ारे बद अत़वार नाकाम व ना मुराद हुवे। मकड़ी ने जुस्तजू का दरवाज़ा बन्द कर के ग़ार का दहाना या'नी मुंह ऐसा बना दिया कि वहां तक सुराग़ रसानों (या'नी जासूसों) की सोच भी न पहुंच सकी और वोह मायूस हो कर वापस पलटे और मकड़ी को ला ज़वाल सआ़दत मयस्सर आई जिस को "**मुकाशफ़तुल क़ुलूब**" में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने नक़ीब عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْحَسِیْب ने

www.dawateislami.net

कुछ यूं बयान किया : “रेशम के कीड़ों ने ऐसा रेशम बुना जो हुस्न में यक्ता (या'नी बे मिसाल) है मगर वोह मकड़ी इन से लाख दरजे बेहतर है इस लिये कि उस ने ग़ारे सौर में सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये ग़ार के दहाने (या'नी मुंह) पर जाला बुना था । (मुकाशफ़तुल कुलूब, स. 57)

ग़ार के उस पार समन्दर नज़र आया

बा'ज़ सीरत निगारों ने लिखा है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने जब दुश्मन के देख लेने का ख़दशा ज़ाहिर किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “अगर येह लोग इधर से दाखि़ल हुवे तो हम उधर से निकल जाएंगे ।” आ़शिके़ अक्बर सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने जूं ही उधर निगाह की तो दूसरी त़रफ़ एक दरवाज़ा नज़र आया जिस के साथ एक समन्दर ठाठें मार रहा था और ग़ार के दरवाज़े पर एक कश्ती बन्धी हुई थी । (मुकाशफ़तुल कुलूब, स. 58)

तुम हो ह़फ़ीज़ो मुग़ीस, क्या है वोह दुश्मन ख़बीस
तुम हो तो फिर ख़ौफ़ क्या तुम पे करोड़ों दुरूद
आस है कोई न पास, एक तुम्हारी है आस
बस है येही आसरा तुम पे करोड़ों दुरूद

मुसीबत में आक़ा से मदद मांगना सह़ाबा का त़रीक़ा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सरवरे ज़ीशान, रह़मते आ़लमिय्यान, शाहे कौनो मकान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मो'जिज़ए राह़त निशान मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि ग़ारे सौर की दूसरी त़रफ़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निगाहे पुर अन्वार की बरकत से यारे ग़ार व यारे मज़ार رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को कश्ती व समन्दर नज़र आए और यूं फ़ैज़ाने रिसालत से आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه चैन व राह़त मह़सूस फ़रमाने लगे । इस वाक़िए़ से मज़ीद येह भी पता चला कि मह़बूबे रब्बुल इ़बाद, राह़ते हर क़ल्बो नाशाद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़ाजत व मुसीबत के वक़्त त़लबे इमदाद सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का त़रीक़ा है ।

वल्लाह ! वोह सुन लेंगे फ़रयाद को पहुंचेंगे
इतना भी तो हो कोई जो आह करे दिल से

www.dawateislami.net

फ़रयाद उम्मती जो करे हाले ज़ार में
मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

ग़ार में जन्नत का पानी

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ग़ार में जनाबे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे, जब सख़्त प्यास लगी तो उन्हों ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ग़ार में अन्दर तक जाओ और पानी पी आओ ।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं अन्दर गया और दूध से ज़ियादा सफ़ेद, शहद से ज़ियादा मीठा और मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार पानी पी कर आया ।" आप ने फ़रमाया : "पी आए ?" अ़र्ज़ किया : "जी" फ़रमाया : "अबू बक्र ! तुम्हें बिशारत न दूं ?" अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्यूं नहीं !" फ़रमाया : "अल्लाह तआ़ला ने जन्नती नहरों के निगरान फ़िरिश्ते से फ़रमाया है कि जन्नतुल फ़िरदौस से ले कर ग़ारे सौर तक नहर बना दो ताकि अबू बक्र सैराब हो जाए ।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "क्या अल्लाह के हां मेरी इतनी क़द्रो मन्ज़िलत है ?" फ़रमाया : "हां ! इस से भी ज़ियादा है, और मुझे क़सम है उस ख़ुदा की जिस ने मुझे हक़ के साथ मबऊ़स फ़रमाया ! तुम से बुग़्ज़ व ह़सद रखने वाला जन्नत में न जाएगा । ख़्वाह सत्तर अम्बिया के आ'माले सालिहा का ह़ामिल हो ।" (تاریخ مدینۃ دمشق،ج٣٠،ص١٥٠)

सिद्दीक़ की कहानी सिद्दीक़ की ज़बानी

हज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेरे वालिद हज़रते सय्यिदुना आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से तेरह[13] दिरहम में कजावा ख़रीदा और फ़रमाया : "अपने बर ख़ुरदार, बराअ से कहिये कि इसे हमारे घर तक छोड़ आए ।" हज़रते सय्यिदुना आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "हरगिज़ नहीं पहले आप मुझे सफ़रे हिजरत का ह़ाल सुनाएं । आप लोग कैसे मक्कए

www.dawateislami.net

मुकर्रमा से निकले और मुशरिकीन की तलाश के बा वुजूद उन के शर से कैसे महफ़ूज़ रहे ?" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़िस्सए हिजरत सुनाना शुरूअ़ किया और फ़रमाया : हम मक्के से निकल कर रात भर चलते रहे, जब ज़ोहर हो गई और गर्मी अपनी आख़िरी ह़द को पहुंच गई तो मैं ने चारों त़रफ़ निगाह दौड़ाई कि कहीं साया नज़र आए और पनाह ली जा सके, अचानक मुझे एक बड़ी चट्टान दिखाई दी, मैं ने उस तक पहुंच कर देखा कि अभी उस का कुछ साया बाक़ी था, मैं ने वहां जगह साफ़ की और कपड़ा बिछाया और बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم यहां आ कर आराम फ़रमा लीजिये।" आप वहां तशरीफ़ लाए और लेट गए, मैं माह़ोल का जाइज़ा लेने लगा कि कोई आ तो नहीं रहा। देखा तो एक चरवाहा गर्मी की शिद्दत से बचने के लिये मेरी त़रफ़ चट्टान के साये के लिये बकरियां हांकते हुवे आ रहा है, जैसे ही वोह क़रीब आया तो मैं ने पूछा : "तुम किस के ग़ुलाम हो ?" उस ने एक मक्की या मदनी शख़्स का नाम लिया कि मैं उस का ग़ुलाम हूं। फिर मैं ने कहा : "तुम्हारी बकरियों में दूध है ?" बोला : "हां !" मैं ने कहा : "क्या मेरे लिये दूध दोह सकते हो ?" उस ने कहा : "हां !" फिर उस ने दूध दोहने के लिये एक बकरी दबोच ली। मैं ने कहा : "इस के थनों से गर्दो ग़ुबार साफ़ करो और अपने हाथ भी अच्छी त़रह़ साफ़ कर लो।" चुनान्चे, उस ने मेरे हुक्म की ता'मील की और दूध दोह कर एक कटोरा भर लिया। नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये मेरे पास पानी का एक बरतन भी था जिस से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पानी भी नोश फ़रमाते और वुज़ू वग़ैरा भी किया करते थे। मैं दूध ले कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप आराम फ़रमा रहे थे, मैं ने जगाना मुनासिब न समझा लिहाज़ा वहीं बैठ कर आप के जागने का इन्तिज़ार करने लग गया। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हुवे तो मैं ने दूध में पानी मिला कर उसे ठन्डा किया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश करते हुवे अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नोश फ़रमाइये :" "तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे नोश फ़रमाया। जब आप पी चुके तो इरशाद फ़रमाया : "क्या चलने का वक़्त नहीं हुवा ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्यूं नहीं।" फिर हम ने अपना सफ़र दोबारा शुरूअ़ कर दिया।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب المهاجرین وفضلهم، الحدیث:۳۶۵۲، ج۲، ص۵۱۶)

www.dawateislami.net

राहबर की ख़िदमत गुज़ारी

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने क़बीलए बनी वाइल के एक आदमी को जो क़बीलए बनी अ़ब्द बिन अ़दी से तअ़ल्लुक़ रखता था अपने साथ मज़दूर रख लिया, वोह रास्तों का बड़ा शनासा, बेहतरीन राहबर और आ़स बिन वाइल का ह़लीफ़ और क़ुरैश के दीन पर था। आप लोगों ने उसे दोनों ऊंटनियां बत़ौरे अमानत दे दीं, और उस से तीन दिन के बा'द वक़्ते सुब्ह़ ग़ार के बाहर दोनों सुवारियां लाने का वा'दा ले लिया। चुनान्चे, वोह तीन दिन बा'द ह़स्बे वा'दा वहां आ गया और सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه समेत तीनों को ले कर साह़िले समन्दर के रास्ते मदीने चला गया। (صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی و اصحابہ الی المدینۃ، الحدیث:۳۹۰۵، ج۲، ص۵۹۳)

ग़ारे सौर से मदीना को रवानगी

ग़ारे सौर से रवानगी कब हुई ?

ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم यकुम रबीउ़ल अव्वल जुमा'रात की रात को मक्कए मुकर्रमा से निकल कर ग़ारे सौर में मुक़ीम हुवे, तीन रातें या'नी जुमुआ़ हफ़्ता और इतवार की रातें ग़ार में क़ियाम फ़रमाया, फिर वहां से पीर की रात 5 रबीउ़ल अव्वल (सि. 622 ईसवी) को आ़ज़िमे मदीना हुवे और 12 रबीउ़ल अव्वल, पीर के रोज़ चाश्त के वक़्त मदीनए मुनव्वरा में नुज़ूल फ़रमाया। (سیرت سید الانبیاء، ص۲۳۱)

सिद्दीक़े अक्बर के लिये रिज़वाने अक्बर की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ार से बाहर तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने रिकाब थाम ली और ऊंटनी की लगाम भी हाथ में ले ली तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को दुआ़ देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तुम्हें रिज़वाने अक्बर देगा।" (الریاض النضرۃ، ج۱، ص۱۲۵)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर का ह़िक्मत भरा जवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा हिजरत फ़रमाई तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ देखने में पक्की उ़म्र के लगते और लोगों में मा'रूफ़ भी थे, जब कि नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन की निस्बत जवान और लोगों में मा'रूफ़ न थे, तो रास्ते में मिलने वाला कोई भी शख़्स जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ पूछता कि येह कौन हैं ? तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़िक्मत भरा जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाते : ''هٰذَا الرَّجُلُ یَهْدِیْنِی السَّبِیْلَ या'नी येह मेरे राहनुमा हैं रास्ते के मुआ़मले में मेरी राहनुमाई करते हैं।'' तो लोग येह समझते कि शायद इन्हों ने सफ़र के लिये कोई राहबर ले लिया है। ह़ालांकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मक़्सद येह था कि ''येह भलाई का रास्ता बताने वाले हैं।''

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب هجرة النبی واصحابه الی المدینة، الحدیث: ۳۹۱۱، ج۲، ص۵۹۲)

सय्यिदतुना उम्मे मा'बद के घर मो'जिज़े का ज़ुहूर

ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन हुबैश बिन ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन के ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और राहबर अ़ब्दुल्लाह बिन अरीक़त़ लैसी येह चारों मक्कए मुकर्रमा से ब क़स्दे हिजरत मदीनए मुनव्वरा को रवाना हुवे, (ग़ारे सौर में तीन दिन क़ियाम के बा'द वहां से चले) और मदीनए मुनव्वरा व मक्कए मुकर्रमा के दरमियान एक बस्ती **क़ुदैद** में सय्यिदतुना **उम्मे मा'बद** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ुज़ाइय्या के दो ख़ैमों पर गुज़र हुवा, जिन का पूरा नाम **उम्मे मा'बद** आ़तिका बिन्ते ख़ालिद ख़ुज़ाइय्या था। आप एक ज़ईफ़ ख़ातून थीं, अपने ख़ैमे में बैठी रहतीं और मुसाफ़िरों को खाना, पानी वग़ैरा दे दिया करतीं थीं। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के साथियों ने इन से खजूर या गोश्त का पूछा कि अगर इन के पास है तो ख़रीद लें। मगर इन के पास येह चीज़ें न थीं, जब कि इन ह़ज़रात के पास जो

www.dawateislami.net

कुछ ज़ादे राह था वोह भी ख़त्म होने को था। अचानक सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नज़रे मुबारका ख़ैमे के एक कोने में बंधी बकरी पर पड़ी, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**उम्मे मा'बद** ! येह बकरी कैसी है ?" इन्हों ने अ़र्ज़ किया : "येह दीगर बकरियों के साथ चरने को नहीं जा सकती।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "दूध देती है ?" कहने लगीं : "दूध देने की उ़म्र से गुज़र चुकी है।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्या तुम इजाज़त देती हो कि मैं इस का दूध दोह लूं ? अ़र्ज किया : "मेरे मां-बाप आप पर कुरबान ! क्यूं नहीं ? अगर आप को लगता है कि येह दूध दे देगी तो शौक़ से दोह लें।" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बकरी को पकड़ कर उस के थनों पर हाथ फेरा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिया और दुआ़ की तो थन दूध से इतने भर गए कि उन से ख़ुद ब ख़ुद दूध टपकना शुरूअ़ हो गया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बरतन मंगवा कर उसे दोहना शुरूअ़ किया तो देखते ही देखते वोह बरतन मुंह तक भर गया, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सय्यिदतुना **उम्मे मा'बद** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهَا को पिलाया फिर अपने साथियों को दिया सब के सब सैर हो गए, आख़िर में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी नोश फ़रमाया। दोबारा दोहा तो बरतन फिर भर गया, और यूं सय्यिदतुना **उम्मे मा'बद** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهَا के बरतन दूध से छलकने लगे। बहर हा़ल आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूध वहीं छोड़ा और दोबारा सफ़र शुरूअ़ कर दिया। शाम को सय्यिदतुना **उम्मे मा'बद** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهَا के शोहर **अबू मा'बद** बकरियां चरा कर वापस आए, और ख़ुश्क व नातुवां बकरियां इन के आगे आगे थीं, घर के बरतन में दूध देख कर इन्हें बड़ा तअ़ज्जुब हुवा और कहने लगे : "**उम्मे मा'बद** येह क्या है ? घर में एक बकरी है, वोह भी ख़ुश्क और दोहने वाला भी कोई नहीं, येह इतना सारा दूध कहां से आया ?" सय्यिदतुना **उम्मे मा'बद** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهَا बोलीं : "बात दर अस्ल येह है कि आज हमारे यहां एक मुबारक शख़्सिय्यत तशरीफ़ लाई थीं और येह सब उन्हीं की बरकतें हैं।" सय्यिदुना **अबू मा'बद** ने कहा : "वोह कौन थे ? मुझे उन का हुल्या बताओ।" वोह कहने लगीं : "ख़न्दा पेशानी, नूरानी चेहरा, ख़ुश अख़्लाक़, न पेट बड़ा, न सर छोटा, हुस्नो जमाल का पैकर, सियाह और लम्बी आंखें, आवाज़ में रो'ब, लम्बी गर्दन, घनी दाढ़ी, अब्रू बारीक और बाहम मिले हुवे, चुप रहें तो पुर वक़ार लगें, बोलें तो हिलते होंट दिल मोह लें, दूर से देखो तो हुस्न का पैकर, क़रीब से देखो तो मुजस्समए जमाल, गुफ़्तगू वाज़ेह और सादा व मीठी,

www.dawateislami.net

न ज़रूरत से ज़ियादा बोलें न कम और जब लब कुशाई फ़रमाएं तो ऐसा कलाम जैसे लड़ी में मोती पिरो दिये गए हों, दरमियाना क़द आंख को भाए जो न तो ह़द से ज़ियादा और न ही कम, मुख़्तलिफ़ क़द के तीन आदमी खड़े हों तो जिस का क़द दिल को भाए वोही आप का सरापा है।" आप का हुल्या बयान करने के बा'द सय्यिदतुना **उम्मे मा'बद** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बोलीं : "उन के साथ ख़िदमत गुज़ार साथी भी थे, अगर वोह कोई बात कहते तो इन के साथी चुप हो जाते और कोई हुक्म करते तो उसे पूरा कर दिखाने के लिये सुरअ़त का मुज़ाहरा करते, आने वाले बुज़ुर्ग बड़े नर्म ख़ू, मख़्दूम और ग़ुरूर व तकब्बुर से ना आशना थे।" येह सुन कर **अबू मा'बद** बोले : "ख़ुदा की क़सम ! येही वोह क़ुरैशी जवान हैं जिन की मक्का शहर में धूम पड़ी है, मैं ने अ़ज़्मे मुसम्मम कर लिया है कि अगर क़िस्मत ने साथ दिया तो ज़रूर इन की ग़ुलामी इख़्तियार करूंगा।" बा'द में आप मुसलमान हो गए थे। बा'ज़ रिवायात में येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में ही घर तशरीफ़ लाए और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना **उम्मे मा'बद** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और आप दोनों उसी वक़्त मुसलमान हो गए थे।

(الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۱۷، شرح السنۃ، کتاب الفضائل، باب جامع صفاتہ، الحدیث: ۳۵۹۸، ج ۷، ص ۴۹، سیرت سید الانبیاء، ص ۲۳۵)

सय्यिदतुना उम्मे मा'बद की मुबारक बकरी

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में आ़मुर्रमादह तक वोह बकरी इसी त़रह़ सुब्ह़ो शाम कसरत से दूद देती रही, आ़मुर्रमादह 8 सिने हिजरी को कहते हैं। इस साल को आ़मुर्रमादह कहने की वजह येह है कि इस साल ऐसा शदीद क़ह़त़ पड़ गया कि जंगलों और बियाबानों से ख़ूराक ख़त्म हो गई, वह़शी जानवर आबादियों का रुख़ करने लगे, जानवरों का गोश्त खाने के क़ाबिल न रहा यहां तक कि अगर कोई आदमी बकरी ज़ब्ह़ करता तो गोश्त के ख़राब होने के बाइ़स उस से नफ़रत करने लगता, ऐसी हवा चलती कि राख की रंगत का ग़ुबार चीज़ों पर पड़ जाता। रमाद अ़रबी में राख को कहते हैं इस लिये इसे आ़मुर्रमादह या'नी **राख वाला साल** कहते हैं।

(سیرت سید الانبیاء، ص ۲۳۵، السیرۃ الحلبیۃ، باب الھجرۃ الی المدینۃ، ج ۲، ص ۶۲)

www.dawateislami.net

जिन्न के महब्बत भरे अश्आर

हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि जब नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तशरीफ़ ले गए तो क़ुरैश का एक गुरौह जिस में अबू जहल भी था, हमारे पास आए और दरवाज़े पर खड़े हो गए, मैं जब बाहर निकली तो वोह कहने लगे : "तुम्हारा बाप अबू बक्र कहां है ?" मैं ने कहा : "मुझे उन का इल्म नहीं कि वोह इस वक़्त कहां हैं।" अबू जहल ने जो निहायत बे ह़या और ख़बीस इन्सान था मेरे मुंह पर ऐसा ज़ोरदार त़मांचा रसीद किया जिस से मेरे कान की बालियां टूट कर नीचे जा गिरीं। फिर वोह चले गए, और हमें तीन दिन तक कोई इल्म न था कि हमारे वालिद और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कहां गए हैं यहां तक कि एक जिन्न मक्के के नशेबी अ़लाक़े से अ़रबी लहजे में कुछ अश्आ़र गुनगुनाता हुवा नज़र आया, जिन का तर्जमा येह है : (1) इन्सानों का परवर दगार ख़ुदा तआ़ला उन दोनों साथियों को बेहतर जज़ा अ़ता फ़रमाए जो **उम्मे मा'बद** के दो ख़ैमों में उतरे हैं। (2) वोह नेकी ले कर वहां उतरे और फिर चल दिये तो जो शख़्स **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हम सफ़र बना है वोह बड़ा ही कामयाब है। (3) **उम्मे मा'बद** के ख़ानदान बनू का'ब को उन की इस औ़रत **उम्मे मा'बद** का मकान मुबारक हो जो मोमिनों के लिये जाए पनाह है। (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۱۰۳)

पीछा करने वाले का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (हज़रते सय्यिदतुना **उम्मे मा'बद** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर से) मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ रवाना हुवे तो सुराक़ा बिन मालिक बिन जा'शम ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पीछा किया। अबू जहल और दीगर कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने उस से एक सो ऊंटों की शर्त़ लगा रखी थी कि अगर वोह सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को (مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) शहीद कर दे या इन में से किसी एक को क़ैदी बना कर हमारे पास ले आए तो हम उसे सो ऊंट बत़ौरे इन्आ़म देंगे। वोह अपने

www.dawateislami.net

घोड़े पर सुवार हो कर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब पहुंच गया, जब दो या तीन नेज़ों का फ़ासिला बाक़ी रह गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुश्मन हम तक आ पहुंचा है ।" सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के लिये दुआ़ फ़रमाई : "ऐ अल्लाह ! जिस चीज़ के ज़रीए़ से तू चाहता है हमें इस से बचा ।" तो फ़ौरन उस के घोड़े की अगली दोनों टांगें ज़मीन में धंस गईं । एक रिवायत में येह है कि घोड़ा पेट तक ज़मीन में धंस गया । लाख कोशिश के बा वुजूद जब छुटकारा न पा सका तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में अ़र्ज़ की : "मुझे मुआ़फ़ कर दीजिये और मेरे लिये दुआ़ कीजिये, मैं वा'दा करता हूं कि आप दोनों को कोई नुक़्सान नहीं पहुंचाऊंगा बल्कि आप की तलाश में जो दीगर लोग मेरे पीछे पीछे आ रहे हैं उन से भी इस बात को मख़्फ़ी रखूंगा । एक रिवायत में यूं है कि जब नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुराक़ा के लिये बद दुआ़ फ़रमाई तो फ़ौरन उस का घोड़ा पेट तक ज़मीन में धंस गया वोह घोड़े से नीचे उतर आया और कहने लगा : "ऐ **मुह़म्मद** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मैं ख़ूब जानता हूं येह आप की दुआ़ का असर है । आप अल्लाह से मुझे नजात दिलवा दें, ख़ुदा की क़सम ! मैं आप की तलाश में आने वाले कुफ़्फ़ार को अन्धा कर दूंगा, उन का रास्ता बदल दूंगा, येह मेरे तीरों का तरकश भी ले लें और अ़न क़रीब आप फ़ुलां मक़ाम से गुज़रेंगे वहां मेरी बकरियां और ऊंट हैं, आप वहां से जितने चाहें ले लें ।" नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तेरे ऊंटों की हमें कोई ज़रूरत नहीं ।" चुनान्चे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के ह़क़ में दुआ़ फ़रमाई तो उस का घोड़ा ज़मीन की पकड़ से आज़ाद हो गया ।

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی واصحابہ الی المدینۃ، الحدیث: ۳۶۵۲-۳۹۰۸، ج۲، ص۵۱۲-۵۹۵، سیرت سید الانبیاء، ص۲۳۶)

सुराक़ा बिन मालिक का क़बूले इस्लाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पकड़ने के लिये बत़ौरे इन्आ़म सो ऊंटों का ए'लान किया तो कई जवान इस के ह़ुसूल के लिये निकल पड़े लेकिन इन में सिर्फ़ सुराक़ा

www.dawateislami.net

बिन मालिक ही ऐसे थे जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तक पहुंच पाए और अपनी आंखों से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मो'जिज़ा भी देखा। सुराक़ा उस वक़्त तो मुसलमान नहीं हुवे मगर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़ज़मते नबुव्वत और इस्लाम की सदाक़त का सिक्का उन के दिल में बैठ गया। जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़त्हे मक्का और ग़ज़्वए त़ाइफ़ व हुनैन से फ़ारिग़ हो कर मक़ामे **जिइर्राना** में पड़ाव किया तो सुराक़ा बिन मालिक बारगाहे नबुव्वत में ह़ाज़िर हुवे और अपने क़बीले की बहुत बड़ी जमाअ़त के साथ इस्लाम क़बूल कर लिया।

(مدارج النبوت، باب چهارم، ج ۲، ص ۶۲ وشرح الزرقانی علی المواهب اللدنیة، قصة سراقة، ج ۲، ص ۱۴۵ ملخصاً)

किस्रा के सोने के कंगन

येह वोही ह़ज़रते सय्यिदुना सुराक़ा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हैं जिन के बारे में दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने इ़ल्मे ग़ैब से ग़ैब की ख़बर देते हुवे येह इरशाद फ़रमाया था कि "ऐ सुराक़ा! तेरा क्या ह़ाल होगा जब तुझे मुल्के फ़ारस के बादशाह किस्रा के दो कंगन पहनाए जाएंगे?" इस इरशाद के बरसों बा'द जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में ईरान फ़त्ह़ हुवा और किस्रा के कंगन दरबारे ख़िलाफ़त में लाए गए तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ताजदारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रमान की तस्दीक़ के लिये वोह कंगन ह़ज़रते सय्यिदुना सुराक़ा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को पहना दिये और फ़रमाया कि "قُلْ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ سَلَبَهُمَا كِسْرَى بْنِ هُرْمُزَ وَاَلْبَسَهُمَا سُرَاقَةَ بْنَ مَالِكٍ اَعْرَابِيًّا مِنْ بَنِىْ مُدْلِجٍ" या'नी ऐ सुराक़ा! येह कहो कि अल्लाह बहुत बड़ा है अल्लाह तआ़ला ही के लिये ह़म्द है जिस ने इन कंगनों को बादशाहे फ़ारस किस्रा से छीन कर बनू मदलज के सुराक़ा बदवी को पहना दिये।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दौर में 24 सिने हिजरी में वफ़ात पाई। (شرح الزرقانی علی المواهب اللدنیة، قصة سراقة، ج ۲، ص ۱۴۵)

दामने मुस्त़फ़ा से जो लिपटा यगाना हो गया
जिस के हुज़ूर हो गए उस का ज़माना हो गया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना बुरैदा अस्लमी से मुलाक़ात

नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब मदीनए मुनव्वरा के कु़र्बो नवाह़ में पहुंचे तो ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा बिन ह़सीब अस्लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की आप से मुलाक़ात हो गई, इन के साथ इन की क़ौम के तक़रीबन 70 या 80 अफ़राद भी थे जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही की तलाश में निकले थे, क्यूंकि अबू जह्ल और दीगर कुफ़्फ़ारे मक्का ने ए'लाने आ़म के साथ साथ इन्हें भी مَعَاذَ اللّٰه आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शहीद करने के लिये आमादा किया था और सो ऊंटों के इन्आ़म का भी वा'दा किया था।

आप का क़बूले इस्लाम

नबिय्ये करीम, रऊफु़र्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा बिन ह़सीब अस्लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का सामना हुवा तो उन्हें आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़े अन्वर पर नूरे नबुव्वत नज़र आया। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम्हारा नाम क्या है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "**बुरैदा**" नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ुरूफ़ से अच्छा मा'ना मुराद लेने वाली अपनी आ़दते करीमा के मुत़ाबिक़ "**बुरैदा**" की अस्ल "**बरूदा**" या'नी ठन्डक से सलामती व सुकून मुराद लिया। सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया : "قَدْ بَرَدَ اَمْرُنَا وَصَلَحَ या'नी हमारा मुआ़मला ठन्डा हो गया जिस का अन्जाम सुल्ह़ है।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर पूछा : "कौन से क़बीले से हो ?" अ़र्ज़ किया : "क़बीलए बनी अस्लम से।" फ़रमाया : "**सलिम्ना** या'नी हमारे लिये सलामती है।" फिर पूछा : "बनी अस्लम की कौन सी शाख़ से हो ?" अ़र्ज़ किया : "बनी सहम से।" फ़रमाया : "اَصَبْتَ سَهْمَكَ या'नी तू ने अपना ह़िस्सा पा लिया।" मुराद येह थी कि तू ने इस्लाम से अपना ह़िस्सा पा लिया। इस के बा'द सय्यिदुना बुरैदा अस्लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने आप से पूछा : "आप कौन हैं ?" फ़रमाया : "मैं **मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह, अल्लाह** का रसूल हूं।" आप की गुफ़्तगू से सय्यिदुना बुरैदा अस्लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बहुत मुतअस्सिर हुवे। आप और आप की क़ौम के जितने अफ़राद आप के हमराह थे तमाम मुशर्रफ़ बा इस्लाम हो गए। इस के बा'द ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना बुरैदा अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बाक़ी सफ़रे हिजरत में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ही रहे। जब नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा की हुदूद में दाख़िल हो गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये सफ़ेद जोड़े नज़्र व हदिय्या किये और अपनी क़ौम की सर ज़मीन की तरफ़ लौट गए। ग़ज़्वए उहुद के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा आ गए और वहीं सुकूनत इख़्तियार कर ली। (مدارج النبوۃ، ج ۱، ص ۱۲، سیرت سید الانبیاء، ص ۲۳۶)

मदीनए मुनव्वरा में आमद

रसूलुल्लाह का मदनी जुलूस

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब ग़ारे सौर से तशरीफ़ लाए थे तो उस वक़्त आप के साथ सिर्फ़ तीन अफ़राद थे, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, आप के ग़ुलाम हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और रास्ते की राहनुमाई करने वाला **अ़ब्दुल्लाह** बिन अरीक़त़ लैसी। लेकिन हज़रते सय्यिदुना बुरैदा अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन के क़बीले के लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया तो अब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मुसलमानों का एक जम्मे ग़फ़ीर था जो मदनी जुलूस की शक्ल इख़्तियार कर गया। हज़रते सय्यिदुना बुरैदा अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस जुलूस की मदनी क़ियादत के लिये बारगाहे रिसालत में यूं अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल होते वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक झन्डा होना चाहिये।" नीज़ इन्हों ने अपना इ़मामा शरीफ़ सर से उतारा, अपने नेज़े पर बांध कर उसे झन्डा बना दिया और उस झन्डे को लहराते हुवे नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे आगे चलने लगे। और यूं येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का शाहाना मदनी जुलूस मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल हुवा। (مدارج النبوۃ، ج ۱، ص ۱۲)

आमदे मुस्तफ़ा....मरह़बा....मरह़बा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन उ़वैमिर बिन सा'दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मेरी क़ौम के कई लोगों ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से येही रिवायत किया है कि "जब हम

www.dawateislami.net

ने सुना कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्कए मुकर्रमा से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा पहुंच रहे हैं तो हम आप की आमद की उम्मीद पर रोज़ाना नमाज़े फ़ज्र के बा'द शहरे मदीना से बाहर मक़ामे **ह़िरा** में आ कर आप के इन्तिज़ार में बैठ जाते, ख़ुदा की क़सम ! जब धूप से बचने और सर छुपाने को कोई जगह न रहती तो हम घरों में आ जाते, उन दिनों गर्मी भी ज़ोरों पर थी ।

निकल कर शहर से ख़ल्क़त क़ुबा तक चल के आई थी
तमन्ना रंगे ह़सरत बन के आंखों में समाई थी
हुवा करती थीं फ़र्शे राह उठ कर बार बार आंखें
हमातन इन्तिज़ार आंखें, हमातन इन्तिज़ार आंखें

जिस दिन सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहुंचना था, हम ह़स्बे मा'मूल कड़कती दो पहर तक इन्तिज़ार में बैठे रहे और इस के बा'द जब हम घरों में चले गए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए सब से पहले आप को एक यहूदी ने देखा जो हमें रोज़ाना आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन्तिज़ार में बैठे देखा करता था, वोह बुलन्द आवाज़ से पुकारने लगा : "ऐ बनू क़ीला (औस व ख़ज़रज) ! तुम्हारा मक़्सद आ पहुंचा ।"

उठा गुल लीजिये ज़र्रों के घर में आफ़्ताब आया
ज़मीनो आस्मां का नूर जिस के हम रिकाब आया
इकट्ठे हो गए हर सम्त से त़ालिबे ज़ियारत के
शुआओं की त़रह़ से गिर्द ख़ुर्शिदे रिसालत के

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन उ़वैमिर बिन सा'दा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस्तिक़्बाल के लिये दौड़े आए, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ एक दरख़्त के नीचे तशरीफ़ फ़रमा थे, हम में से अक्सर लोगों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पहले ज़ियारत नहीं

www.dawateislami.net

की थी, लेकिन शौके़ महब्बत में लोग उमड़ते चले आ रहे थे और किसी को येह मा'लूम न था कि दरख़्त के नीचे बैठी दोनों हस्तियों में से ख़ादिम कौन है और आक़ा कौन ? यहां तक कि जब सरकार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ऊपर से साया ख़त्म हुवा तो उसी वक़्त हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठे और अपनी चादर से आप को साया करने लगे, तब हमें सहीह पता चला कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कौन से हैं और जनाबे रिसालते मआब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शख़्सिय्यत कौन सी है ! (الریاض النضرہ، ج ۱، ص ۱۲۰)

मुहिब और महबूब की पहचान

हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन जुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो मुसलमानों ने सर ज़मीने मदीना से दूर बद्र के नज़दीक सहरा के किनारे आप का इस्तिक़्बाल किया, आप उन्हें ले कर दाएं रास्ते पर चले और रबीउ़ल अव्वल में बरोज़ पीर बनू अ़म्र बिन औ़फ़ के हां जा के क़ियाम फ़रमाया। नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और ख़ामोशी से बैठ गए, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े रहे, कई अन्सारी जिन्हों ने क़ब्ल अज़ीं सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को न देखा था, सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ही मर्जअ़ व मावा समझते थे, जब सूरज सर पर आ गया तो सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उठे और अपनी चादर से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर साया कर के खड़े हो गए उस वक़्त लोगों ने नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सहीह त़रह पहचाना।

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی و اصحابہ الی المدینۃ، الحدیث: ۳۹۰۶، ج ۲، ص ۵۹۴، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۲۲)

www.dawateislami.net

मुहि़ब और मह़बूब को न पहचानने की वजह

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को पहचानने में लोगों के इश्तिबा का एक सबब तो येही था कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه उ़म्र में अगर्चे छोटे थे लेकिन आप पर सिन रसीदा होने के आसार नुमायां थे, इस लिये लोग पहचान न कर सके। दूसरा लत़ीफ़ सबब येह था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका वोह ज़ात है जिस पर हर लम्ह़ा रब عَزَّوَجَلَّ के अन्वार व तजल्लियात की बारिश होती ही रहती है। और मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा हिजरत के इस त़वील सफ़र में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ साथ तन्हा रहे, ख़ुसूसन ग़ारे सौर की तन्हाइयों में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर होने वाली अन्वारो तजल्लियात की बरसात में आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه भी ख़ूब नहाते रहे और बह़रे नूर में ग़ोत़ा ज़नी फ़रमाते रहे इन ही अन्वारो तजल्लियात की चमक ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के इस मुक़द्दस वुजूद में झलक रही थी और नूरे नबुव्वत की ज़िया पाशियों से चेहरए सिद्दीक़े अक्बर जगमग जगमग कर रहा था। नीज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ए'लाने इस्लाम से ले कर हिजरत तक सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की शख़्सिय्यत ऐसी थी जिस ने हर हर क़दम पर अपने मह़बूब का साथ दिया, सब से पहले इस्लाम लाए, सब से पहले तस्दीक़ की, मुश्किल वक़्त में ह़ौसला दिया, मुशरिकीन से आप का दिफ़ाअ़ किया, आप को उन के शर से मह़फ़ूज़ रखा, अपना तन, मन, धन, आल, अवलाद सब कुछ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते बा बरकत पर क़ुरबान कर दिया, गोया आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपनी ज़ात को ज़ाते मुस्त़फ़ा में फ़ना कर दिया था, इसी वजह से मदीना पहुंचने पर लोगों को ब ज़ाहिर दो वुजूद नज़र आ रहे थे लेकिन ज़ाहिरी व बात़िनी सूरत व सीरत में वोह एक ही वुजूद था येही वजह थी कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में लोग इम्तियाज़ ही न कर सके।

फ़ना इतना तो हो जाऊं मैं तेरी ज़ाते आ़ली में
जो मुझ को देख ले उस को तेरा दीदार हो जाए

www.dawateislami.net

मक़ामे क़ुबा में क़ियाम और मस्जिद की ता'मीर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा में नुज़ूले इजलाल से क़ब्ल मक़ामे "क़ुबा" में दस से कुछ ज़ाइद रातें क़ियाम फ़रमाया। क़ुबा में अपने क़ियाम के दिनों में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस्जिदे क़ुबा की ता'मीर फ़रमाई। इस मस्जिद की ता'मीर में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के हमराह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ब नफ़्से नफ़ीस शिर्कत फ़रमाई। इसी मश्ग़ूलिय्यत की बिना पर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ुबा में दस से कुछ ज़ाइद शब क़ियाम फ़रमाया। (سیرت سید الانبیاء، ص۲۳۷)

इस्लाम की सब से पहली मस्जिद

मस्जिदे क़ुबा इस्लाम में ता'मीर होने वाली पहली ऐसी मस्जिद है जिस में हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़लल ए'लान सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان समेत नमाज़ अदा फ़रमाई। नीज़ येह पहली मस्जिद है जो आ़म मुसलमानों के लिये ता'मीर की गई। अगर्चे इस से पहले भी इस्लाम में कई मसाजिद बनाई गईं थीं, लेकिन वोह आ़म मुसलमानों के लिये वक़्फ़ न थीं, जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मस्जिद जो आप ने मक्कए मुकर्रमा में अपने घर के सेह़न में तय्यार की थी।

(شرح الزرقانی علی المواھب اللدنیۃ، خاتمۃ فی وقائع۔۔۔الخ، ج۲، ص۱۵۵)

मस्जिदे क़ुबा के फ़ज़ाइल

मस्जिदे क़ुबा के बारे में आयते मुबारका

मस्जिदे क़ुबा की शान अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने पाक में ख़ुद बयान फ़रमाई चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ یَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ فِیْهِ ؕ فِیْهِ رِجَالٌ یُّحِبُّوْنَ اَنْ یَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَ اللّٰهُ یُحِبُّ الْمُطَّهِّرِیْنَ۝﴾ (پ۱۱، التوبۃ:۱۰۸)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक वोह मस्जिद कि पहले ही दिन से जिस की बुन्याद परहेज़गारी पर रखी गई है वोह इस क़ाबिल है कि तुम उस में खड़े हो उस में वोह लोग हैं कि ख़ूब सुथरा होना चाहते हैं और सुथरे **अल्लाह** को प्यारे हैं।"

एक नमाज़ का सवाब एक उ़मरह के बराबर

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो अपने घर से वुज़ू कर के मस्जिदे क़ुबा में आए फिर इस मस्जिद में नमाज़ पढ़े उसे एक उ़मरे का सवाब दिया जाएगा।" (مسند امام احمد، مسند المکیین، الحدیث: ۱۵۹۸۱، ج۵، ص ۴۱۱)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन ज़ुहैर अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**صَلَاةٌ فِي مَسْجِدِ قُبَاءَ كَعُمْرَةٍ** या'नी मस्जिदे क़ुबा में एक नमाज़ अदा करना एक उ़मरे के बराबर है।" (سنن ابن ماجة، کتاب اقامة الصلوة، باب ماجاء فی الصلوة فی مسجد قباء، الحدیث: ۱۴۱۱، ج۲، ص ۱۷۵)

मस्जिदुल जुमुआ़ में नमाज़े जुमुआ़

मस्जिदे क़ुबा की ता'मीर फ़रमा कर जुमुआ़ के दिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ुबा से शहरे मदीना दाख़िल हुवे, रास्ते में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़बीलए बनी सालिम की मस्जिद में पहला जुमुआ़ अदा फ़रमाया। येही वोह मस्जिद है जो आज तक "**मस्जिदुल जुमुआ़**" के नाम से मश्हूर है। अहले शहर को ख़बर हुई तो हर त़रफ़ से लोग जज़्बाते शौक़ में मुश्ताक़ाना इस्तिक़्बाल के लिये दौड़ पड़े। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दादा अ़ब्दुल मुत्त़लिब के ननहाली रिश्तेदार "**बनू नज्जार**" हथयार लगाए क़ुबा से शहर तक सफ़ें बांधे मस्ताना वार चल रहे थे। आप रास्ते में तमाम क़बाइल की मह़ब्बत का शुक्रिय्या अदा करते और सब को ख़ैरो बरकत की दुआ़एं देते हुवे चले जा रहे थे। शहर क़रीब आ गया तो अहले मदीना के जोश व ख़रोश का येह आ़लम था कि पर्दा नशीन ख़वातीन मकानों की छतों पर चढ़ गईं।

www.dawateislami.net

ना'रए रिसालत : या रसूलल्लाह !

हज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : "जब सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीना तशरीफ़ लाए तो मर्द, औ़रतें आप की ज़ियारत के लिये छतों पर चढ़ गए, छोटे बच्चे और ग़ुलाम रास्तों में फैल गए और येह सब लोग ना'रए रिसालत या'नी **या मुह़म्मद ! या रसूलल्लाह !** की सदाएं लगा रहे थे ।" (صحیح مسلم، کتاب الزھدوالرقائق، باب فی حدیث الھجرۃ، الحدیث:۲۰۱۴، ص۱۶۰۸)

मुसलमानों के बच्चे बच्चियां मसरूर थे सारे
गली कूचे ख़ुदा की ह़म्द से मख़मूर थे सारे
नबुव्वत की सुवारी जिस त़रफ़ से हो के जाती थी
दुरूदो ना'त के नग़मात की आवाज़ आती थी

मदीने में अव्वलन क़ियाम की सआ़दत

तमाम क़बाइले अन्सार जो रास्ते में थे इन्तिहाई जोशे मसर्रत के साथ ऊंटनी की मुहार थाम कर अ़र्ज़ करते : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप हमारे घरों को शरफ़े नुज़ूल बख़्शें मगर आप उन सब मुह़िब्बीन से येही फ़रमाते कि मेरी ऊंटनी की मुहार छोड़ दो जिस जगह ख़ुदा को मन्ज़ूर होगा उसी जगह मेरी ऊंटनी बैठ जाएगी ।

हर इक मुश्ताक़ था प्यारे नबी की मेहमानी का
तमन्ना थी शरफ़ बख़्शें मुझी को मेज़बानी का
सभी प्यारे हो तुम, हर एक से मुझ को मह़ब्बत है
जहां नाक़ा ठहर जाए वहीं जाए इक़ामत है
रुकी यकबारगी नाक़ा ब हुक्मे ह़ज़रते बारी
जहां इक सम्त बसते ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी

www.dawateislami.net

चुनान्चे, जिस जगह आज मस्जिदे नबवी शरीफ़ है उस के पास ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मकान था उसी जगह सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ऊंटनी बैठ गई और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त से आप का सामान उठा कर अपने घर में ले गए और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्ही के मकान पर क़ियाम फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऊपर की मन्ज़िल पेश की मगर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (मुलाक़ातियों की आसानी का लिह़ाज़ फ़रमाते हुवे) नीचे की मन्ज़िल को पसन्द फ़रमाया।

मुहाजिरीन व अन्सार के माबैन मुवाख़ात

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुहाजिरीन व अन्सार में दो त़रह़ की मुवाख़ात या'नी भाईचारा क़ाइम फ़रमाया : (1) हिजरते मदीना से क़ब्ल मुहाजिरीन का मुहाजिरीन के साथ (2) और हिजरते मदीना के बा'द मुहाजिरीन का अन्सार के साथ। मुहाजिरीन में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुवाख़ात ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ और अन्सार में आप की मुवाख़ात ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ारिजा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ क़ाइम फ़रमाई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ारिजा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दामाद भी हैं कि इन की बेटी सय्यिदतुना ह़बीबा बिन्ते ख़ारिजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप के निकाह़ में थीं।

(السیرۃ الحلبیۃ، باب الھجرۃ الی المدینۃ، ج۲، ص ۱۲۴، ۱۲۵)

www.dawateislami.net

मदीने में सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर का क़ियाम

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए मुनव्वरा के क़ुर्बो जवार में सुन्ह़ नामी एक अ़लाक़े में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ारिजा बिन जै़द बिन ज़ुहैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास क़ियाम फ़रमाया और यहीं तिजारत भी शुरूअ़ फ़रमा दी। चन्द दिनों बा'द आप के अहले ख़ाना भी, मदीनए मुनव्वरा पहुंच कर यहीं क़ियाम पज़ीर हो गए।

(الطبقات الکبری لابن سعد، ذکر الغار والھجرۃ الی المدینۃ، ج۳، ص ۱۳۰)

सिद्दीक़े अक्बर को मदीने में बुख़ार हो गया

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मदीनए मुनव्वरा में क़ियाम के कुछ ही दिनों के बा'द मेरे वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ शदीद बुख़ार में मुब्तला हो गए। जब मैं इ़यादत के लिये उन के पास आई तो मेरे वालिदे माजिद सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ येह शे'र पढ़ रहे थे :

كُلُّ امْرِئٍ مُصَبَّحٌ فِي أَهْلِهِ
وَالْمَوْتُ أَدْنٰى مِنْ شِرَاكِ نَعْلِهِ

"या'नी हर शख़्स अपने अहलो इ़याल में सुब्ह़ करता है, ह़ालांकि मौत उस के जूते के तस्मे से भी ज़ियादा क़रीब होती है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : "मैं घबरा कर दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुई और अपने वालिदे माजिद का ह़ाल बयान किया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में यूं दुआ़ फ़रमाई :

اَللّٰهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الْمَدِينَةَ كَحُبِّنَا مَكَّةَ أَوْ أَشَدَّ اللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي صَاعِنَا وَفِي مُدِّنَا وَصَحِّحْهَا لَنَا وَانْقُلْ حُمَّاهَا إِلَى الْجُحْفَةِ

"या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू मदीनए त़य्यिबा को भी हमारे नज़्दीक ऐसा ही मह़बूब बना दे जैसा कि मक्कए मुकर्रमा था बल्कि इस से भी ज़ियादा, यहां की आबो हवा को सिह़्ह़त बख़्श कर दे। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यहां के नाप तोल में भी बरकत अ़त़ा फ़रमा और बुख़ार को यहां से जुह़्फ़ा की त़रफ़ मुन्तक़िल फ़रमा।"

www.dawateislami.net

इन ही अय्याम में खुद ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और दीगर कई सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को मदीनए त़य्यिबा की आबो हवा मुवाफ़िक़ न आने की वजह से बुख़ार हो गया, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ का येह असर हुवा कि आज पूरे ह़िजाज़ में आबो हवा के लिह़ाज़ से मदीनए मुनव्वरा बेहतरीन जगह है।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل المدینۃ، باب کراھیۃ النبی۔۔۔الخ، الحدیث: ۱۸۸۹، ج ۱، ص ۶۲۱ تا ۶۲۲، السنن الکبری، کتاب الجنائز، باب قول العائد للمریض کیف تجدک، الحدیث: ۶۵۹۴، ج ۳، ص ۵۳۶، مدارج النبوۃ، ج ۲، ص ۱۱۹)

ऐ ख़ाके मदीना तेरा कहना क्या है
तुझे क़ुर्बे शाहे मदीना मिला है

मस्जिदे नबवी की क़ीमत सिद्दीक़े अक्बर के माल से

मदीनए मुनव्वरा में तशरीफ़ लाने के बा'द सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस्जिदे नबवी की ता'मीर भी शुरूअ़ फ़रमा दी। मस्जिदे नबवी की जगह दो यतीम बच्चों ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल और ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की थी जिस में लोग खजूरें सुखाया करते थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह ज़मीन ख़रीद ली और उस की क़ीमत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के माल से अदा फ़रमाई।

(سیرت سید الانبیاء، ص ۲۴۶، وفاء الوفا، ج ۱، ص ۳۲۴)

सिद्दीक़े अक्बर के नवासे की विलादत

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ लाने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मक्कए मुकर्रमा भेजा ताकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले बैते किराम और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के अहले ख़ाना को मदीनए मुनव्वरा ले कर आएं, दोनों इन्हें मदीनए मुनव्वरा ले कर आ गए, इन में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की साहिबज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी थीं, जो उम्मीद से थीं। जब आप क़ुबा में पहुंचीं तो उन के हां

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत हुई । नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुक्म दिया कि अपने नवासे के कान में अज़ान दें ।

मुसलमानों का इज़्हारे फ़रह़त व मसर्रत

इन की विलादत पर मुसलमानों ने शदीद फ़रह़त व मसर्रत का इज़्हार किया, क्यूंकि इन्हें यहूदियों की जानिब से येह ख़बर मिल चुकी थी कि उन्हों ने सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथियों पर जादू कर दिया है जिस के असर से हिजरत के बा'द इन के हां कोई लड़का पैदा न हो सकेगा । इस वाक़िए़ से पहले अन्सार में हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुतवल्लिद हुवे थे, तो मुसलमानों ने इन की विलादत पर भी ख़ुशी मनाई थी, इस पर यहूदी कहने लगे हम ने मुहाजिरीन पर जादू किया है अन्सार पर जादू नहीं किया । इस के बा'द जब मुहाजिरीन में हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत हुई तो मुसलमानों को बहुत ख़ुशी हुई ।

वाह क्या बात है सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की !

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत के बा'द आप की वालिदा हज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इन्हें बारगाहे रिसालत में ले कर ह़ाज़िर हुईं और रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गोद में डाल दिया । सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के मुंह में लुआ़बे दहन डाला । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पेट में जो चीज़ सब से पहले गई वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का लुआ़बे दहन था । इस के बा'द नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खजूर ले कर उसे चबाया और फिर इन के मुंह में डाल कर दुआ़ए बरकत फ़रमाई ।

(سیر اعلام النبلاء، عبد اللہ بن زبیر، ج۴، ص ۴۶۱، سیرت سید الانبیاء، ص ۲۴۹)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की सआ़दतें

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मलीका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्र किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "**अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर के क्या कहने ! येह तो क़ारिये क़ुरआन हैं, पाक दामन मुसलमान हैं, इन के वालिद तो जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, इन की वालिदा ह़ज़रते अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं, इन के नाना यारे ग़ारे **रसूलुल्लाह**, जनाबे सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, इन की ख़ाला उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं, इन की दादी ह़ज़रते सफ़िया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं (जो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी हैं) । (سیر اعلام النبلاء، عبد اللہ بن الزبیر، ج۴، ص۴۲۲)

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर का वालिहाना इश्क़े रसूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नवासे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह ख़ुश नसीब सह़ाबी हैं जिन्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ून मुबारक पीने की सआ़दत ह़ासिल हुई । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मेरे वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पछने लगवा रहे थे, जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ारिग़ हुवे तो मुझे इरशाद फ़रमाया : "اِذْهَبْ بِهٰذَا الدَّمِ فَاهْرِقْهُ حَيْثُ لَا يَرَاكَ اَحَدٌ" या'नी ऐ **अ़ब्दुल्लाह** ! इस ख़ून को ऐसी जगह डाल दो जहां किसी की तुम पर नज़र न पड़े ।" फ़रमाते हैं : "जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह फ़रमा कर तशरीफ़ ले गए तो मैं ने वोह ख़ून मुबारक पी लिया ।" जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ लाए तो मुझ से इस्तिफ़्सार फ़रमाया :

www.dawateislami.net

مَا صَنَعْتَ الدَّمَ؟ "या'नी ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तुम ने ख़ून के साथ क्या किया ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : عَمَدتُّ اِلَى اَخْفَى مَوْضِعٍ عَلِمْتُ، فَجَعَلْتُهُ فِيْهِ या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं एक ख़ुफ़्या जगह को जानता था जहां किसी की भी नज़र नहीं पड़ेगी मैं ने वोह ख़ून वहां डाल दिया है।" सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ौरन समझ गए और इरशाद फ़रमाया : لَعَلَّکَ شَرِبْتَ "यक़ीनन तुम ने उसे पी लिया है।" मैं ने अ़र्ज़ किया : وَيْلٌ لِّلنَّاسِ مِنْكَ، وَوَيْلٌ لَّكَ مِنَ النَّاسِ "जी हां या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم" फ़रमाया : "लोगों को तुम से कुछ पहुंचेगा और तुम्हें लोगों से कुछ पहुंचेगा।" (मुराद येह है कि तुम्हारे साथ भी वोही मुआ़मलात होंगे जो मेरे साथ हुवे, लोग तुम से ए'राज़ करेंगे, झुटलाएंगे, सब व शितम करेंगे और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तक्लीफ़ें देंगे, और तुम भी लोगों के लिये बहुत बहादुर और ताक़तवर साबित होगे, और फिर वाक़ेई रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुराद के मुताबिक़ हुवा) शारेहीन फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह का मुबारक ख़ून नोश करने के सबब सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बहुत ज़ियादा क़ुव्वत वाले हो गए थे। (سیر اعلام النبلاء، عبداللہ بن زبیر، ج۴، ص ۴۲۱)

सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा की रुख़्सती

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा में हिजरत से तीन साल क़ब्ल, ए'लाने नबुव्वत के दसवें साल उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से निकाह़ फ़रमाया और उस वक़्त आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की उ़म्र छे बरस थी। हिजरत के सात माह बा'द शव्वालुल मुकर्रम में आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हां रुख़्सती हुई उस वक़्त आप की उ़म्र नव साल थी और नव साल ही आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मईय्यत ह़ासिल रही। यूं सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की उ़म्र अठ्ठारह साल थी। (سیرت سید الانبیاء، ص ۲۵۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

चौथा बाब

ग़ज़वाते सिद्दीक़े अकबर

ग़ज़वए बद्र, ग़ज़वए उहुद, ग़ज़वए तबूक, हुदैबिय्या, मुख़्तलिफ़ वाक़िआत

www.dawateislami.net

ग़ज़वात में शिर्कत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन्तिहाई नर्म मिज़ाज थे, अगर इन की अपनी ज़ात का मुआमला होता तो अफ़्वो दर गुज़र से काम लेते और किसी को ज़र्रा बराबर तक्लीफ़ न पहुंचाते लेकिन अगर मुआमला, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अज़्मते इस्लाम या मुसलमानों का होता तो आप की ग़ैरत जोश में आ जाती और क़त्अ़न किसी चीज़ की परवाह न करते बल्कि बातिल के सामने अड़ जाते और डट कर उस का मुक़ाबला फ़रमाते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तक़रीबन तमाम ग़ज़वात में ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शिर्कत की सआदत ह़ासिल की। जंगी उमूर में महारत, बहादुरी व दिलैरी और इन की हिम्मत बे मिसाल थी, इसी वजह से बारगाहे रिसालत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिफ़ाई मुशीरे ख़ास का दरजा ह़ासिल था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते तृय्यिबा का जंगी पहलू भी निहायत शानदार है। हिजरते मदीना के बा'द मुसलमानों को खुल कर नेकी की दा'वत आ़म करने का मौक़अ़ मुयस्सर आया लेकिन कुफ़्फ़ारे मक्का को दा'वते ह़क़ की तशहीर कब गवारा थी लिहाज़ा ह़क़ का प्रचार रोकने के लिये येह लोग कई मन्सूबे बनाने लगे ह़त्ता कि इन लोगों ने अपने नापाक अ़ज़ाइम को पायए तक्मील तक पहुंचाने के लिये मदीनए मुनव्वरा के यहूदियों को भी अपने साथ मिला लिया और उन्हें मुसलमानों की ईज़ा रसानी पर उभारना शुरूअ़ कर दिया, तमाम बातिल कुव्वतों ने बाहमी इत्तिह़ाद से मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग का भयानक मन्सूबा बनाया। ह़क़ व बातिल के इस पहले बा ज़ाबिता मा'रके में दीगर सह़ाबा के साथ साथ ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी अहम किरदार अदा किया। चुनान्चे,

ग़ज़वए बद्र और सिद्दीक़े अक्बर

मैदाने बद्र में आप का बुलन्द हौसला

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "जंगे बद्र के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब येह मुलाहज़ा फ़रमाया

www.dawateislami.net

कि मुशरिकीन की ता'दाद तो हज़ार के क़रीब है जब कि मुसलमान सिर्फ़ तीन सो उन्नीस हैं (और ब रिवायाते दीगर तीन सो तेरह थे) तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हाथ उठा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर गिर्या व ज़ारी करते हुवे यूं दुआ फ़रमाई : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने जो वा'दा मुझ से किया था उसे पूरा फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर येह मुठ्ठी भर मुसलमान ख़त्म हो गए तो ज़मीन में तेरी इबादत करने वाला कोई न होगा।" हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस दुआ में मश्ग़ूल रहे हत्ता कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चादर कन्धे से ढलक कर नीचे गिर गई। गोया मुसलमानों की अफ़रादी कुव्वत कमज़ोर होने के सबब तक़रीबन तमाम मुसलमान उस वक़्त बहुत आज़माइश में थे, क्यूंकि जंगी साज़ो सामान भी न होने के बराबर था और मुसलमानों की इस बे सरो सामानी को खुद कुरआने पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पारह 4 सूरए आले इमरान, आयत नम्बर 123 में यूं इरशाद फ़रमाया : ﴿وَ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّ اَنْتُمْ اَذِلَّةٌۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ۝۱۲۳﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और बेशक **अल्लाह** ने बद्र में तुम्हारी मदद की जब तुम बिल्कुल बे सरो सामान थे तो **अल्लाह** से डरो कि कहीं तुम शुक्र गुज़ार हो।"

इस वक़्त तमाम मुसलमानों में सिर्फ़ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ऐसे थे जिन्हों ने मुसलमानों के डूबते हौसलों को सहारा दिया, क्यूंकि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जानते थे कि अगर आज मुसलमान कमज़ोर पड़ गए तो दुन्या से इस्लाम का नामो निशान ख़त्म हो जाएगा लिहाज़ा आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने तमाम मुसलमानों की ढारस बंधाने और उन के कमज़ोर हौसलों को बुलन्द करने के लिये हिम्मत से काम लिया और दुआ में मश्ग़ूल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल, बीबी आमिना के महकते फूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चादर मुबारक उठा कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कांधे पर रखी और आप की पुश्ते अत़हर से लिपट गए। अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप बहुत दुआ कर चुके, अब बस फ़रमाइये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपना वा'दा ज़रूर पूरा फ़रमाएगा।" उस वक़्त येह आयते करीमा नाज़िल हुई :

﴿اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ۝۹﴾ (پ۹، الانفال:۹)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "जब तुम अपने रब से फ़रयाद करते थे तो उस ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम्हें मदद देने वाला हूं हज़ार फ़िरिश्तों की कि़तार से।" बा'दहू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरिश्तों के ज़रीए आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मदद फ़रमाई।

(سنن الترمذی، تفسیر القرآن عن رسول اللہ، باب ومن سورۃ الانفال، الحدیث:۳۰۹۲، ج۵، ص۵۵تا۵۶، صحیح مسلم، کتاب الجھادوالسیر، باب الامدادبالملائکۃفی غزوۃبدروایاحۃالغنائم، الحدیث:۱۷۶۳، ص۹۶۹)

सिद्दीके़ अक्बर की ग़ैरते ईमानी जोश में आ गई

उस वक़्त जंगों का येह दस्तूर था कि इब्तिदा में दोनों लश्कर अपनी ताक़त का मुज़ाहरा करने और दूसरे लश्कर पर अपनी धाक बिठाने के लिये माहिर शह सुवारों को एक एक कर के मुक़ाबले पर भेजते थे। कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बेटे अ़ब्दुर्रह़मान ने (जो उस वक़्त मुसलमान नहीं हुवे थे और कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से लड़ रहे थे) मुसलमानों को मुक़ाबले के लिये ललकारा कि "कौन है जो मुझ से मुक़ाबला करेगा ?" अपने ग़ैर मुस्लिम बेटे को देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ग़ैरते ईमानी जोश में आ गई और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मुक़ाबले पर जाने के लिये उठ खड़े हुवे लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को बैठने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे इजाज़त अ़ता फ़रमाएं।" तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से इरशाद फ़रमाया : "مَتِّعْنَا بِنَفْسِكَ يَا اَبَابَكْرٍ! اَمَا تَعْلَمُ اَنَّكَ عِنْدِيْ بِمَنْزِلَةِ السَّمْعِ وَالْبَصَرِ" या'नी ऐ अबू बक्र ! अभी तो हमें तुम्हारी ज़ात से बहुत से फ़ाइदे उठाने हैं तुम्हें मा'लूम नहीं कि मेरे नज़्दीक तुम्हारी ह़ैसिय्यत ब मन्ज़िला कान और आंख के है।"

(الریاض النضرۃ، ج۱، ص۱۸۵، ۱۸۶، المستدرک علی الصحیحین، ھجرۃعبدالرحمن بن ابی بکرقبل الفتح، الحدیث:۶۰۵۸، ج۴، ص۵۹۸)

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** वाके़ई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल बीबी आमिना के महकते फूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से जो अल्फ़ाज़े मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये निकले थे तारीख़ इस बात की गवाह है कि वैसा ही हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के दौरे ख़िलाफ़त में शजरए इस्लाम फलता और फूलता गया।

www.dawateislami.net

मौला अ़ली के वालिहाना जज़्बात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم बारगाहे रिसालत में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के मक़ामो मर्तबे से बा ख़ूबी आगाह थे येही वजह है कि जब हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जंग करने के लिये तल्वार ले कर घोड़े पर सुवार हुवे तो हज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के घोड़े की लगाम थाम ली और इसी मज़्कूरा बाला वाक़िए को याद दिलाते हुवे अ़र्ज़ किया : “ऐ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह ! मैं भी आप से वोही कहूंगा जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था, अपनी तल्वार नियाम में कर लें, हमें अपनी जान के ख़त़रे से न डराएं और मदीने को वापस लौट जाएं। अगर आप शहीद हो गए तो हमारा सारा निज़ाम दरहम बरहम हो जाएगा। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वापस लौट आए।

(البدایة والنهایة، ج۵، ص ۱۹، کنزالعمال، کتاب الخلافة مع الامارة، الباب الاول فی خلافة الخلفاء، الحدیث: ۱۴۱۲۲، ج۳، الجزء: ۵، ص ۲۶۴)

मैदाने बद्र में सिद्दीक़े अक्बर की शुजाअ़त

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अ़क़ील رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم ने एक दफ़्आ़ इस्तिफ़्सार फ़रमाया : “बताओ ! सब से ज़ियादा बहादुर कौन है ?” लोगों ने अ़र्ज़ किया : “हुज़ूर आप ही हैं।” फ़रमाया : “मैं तो अपने बराबर वाले से लड़ता हूं, इस सूरत में, मैं सिर्फ़ बहादुर हुवा न कि सब से ज़ियादा बहादुर। मैं तो सब से ज़ियादा बहादुर का पूछ रहा हूं कि वोह कौन है ?” लोगों ने अ़र्ज़ किया : “हुज़ूर आप ही इरशाद फ़रमाइये।” फ़रमाया : “गज़्वए बद्र के रोज़ हम ने दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत और निगह दाश्त के लिये एक साइबान बनाया, और आपस में मश्वरा किया कि इस साइबान में निगहबानी के फ़राइज़ कौन सर अन्जाम देगा ताकि कोई काफ़िर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला कर के तक्लीफ़ न पहुंचा सके। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम

www.dawateislami.net

में से कोई भी आगे नहीं बढ़ा, सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नंगी तल्वार हाथ में लिये आगे तशरीफ़ लाए और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास खड़े हो गए और फिर हम ने देखा कि किसी काफ़िर को येह जुरअत न हो सकी कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब भी फटके और बिल फ़र्ज़ किसी ने ऐसी जुरअत का मुज़ाहरा करने की कोशिश भी की तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुंह की खाई इस लिये हम में सब से ज़ियादा बहादुर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही हैं।"

(کنزالعمال،حرف الفاء،باب فضائل الصحابۃ،فصل الصدیق، الحدیث: ۳۵۶۸۵،ج۲، الجزء: ۱۲، ص۲۳۵، مفھوما)

बद्र के क़ैदियों से फ़िद्या लेने की तजवीज़

जंगे बद्र के उस अ़ज़ीम मा'रके में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपनी नूरानी मख़्लूक़ फ़िरिश्तों के ज़रीए़ मुसलमानों की मदद फ़रमाई और उन्हें फ़त्ह़ व नुस्रत अ़त़ा फ़रमाई। इस जंग में तक़रीबन 70 ग़ैर मुस्लिम क़ैदी बना कर लाए गए। इन में ऐसे भी लोग थे जो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के रिश्तेदार थे, लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इन क़ैदियों के बारे में मश्वरा त़लब फ़रमाया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशीरे ख़ास ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا थे। येह दोनों प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जां निसार और मुख़्लिस तरीन रफ़ीक़ थे नीज़ निहायत ही सोच समझ कर और इन्तिहाई ग़ौरो फ़िक्र के बा'द ही बात किया करते थे, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मश्वरा देते हुवे अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन लोगों ने आप की तक्ज़ीब की, आप को त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें दे कर मक्कए मुकर्रमा से हिजरत करने पर मजबूर किया, येह कुफ़्र के सरदार और सर परस्त हैं आप इन की गर्दनें उड़ाएं। इन से फ़िद्या लेने की कोई ज़रूरत नहीं क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप को फ़िदये से ग़नी फ़रमा दिया है, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को अ़क़ील पर और ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ब्बास पर और मुझे मेरे रिश्तेदार पर मुक़र्रर कर दीजिये ताकि हम ख़ुद ही इन की गर्दनें उड़ाएं।" लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमानों की मौजूदा ह़ालत से भी वाक़िफ़ थे और कुफ़्फ़ार की

www.dawateislami.net

आयिन्दा रूनुमा होने वाली साज़िशों पर भी कड़ी नज़र रखने वाले थे इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हिक्मत से भरपूर ऐसा मदनी मश्वरा दिया कि जो सब को पसन्द आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह आप की क़ौम और क़बीले के ही लोग हैं, मेरी राए में इन क़ैदियों से फ़िदया ले कर इन्हें रिहा कर दिया जाए।” आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मदनी मश्वरे में मुसलमानों के लिये बहुत से फ़वाइद पोशीदा थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़याल था (1) क़ैदियों से फ़िदया लें ताकि मुसलमानों की माली मुआ़वनत हो जाए। (2) अगर इन्हें क़त्ल कर दिया जाए तो हो सकता है इन के दिल में येह ख़याल पैदा हो कि मुसलमानों ने अपनी ज़ाती दुश्मनी की बिना पर इन्हें क़त्ल किया, लेकिन फ़िदया लेने की सूरत में कुफ़्फ़ार के सामने इस्लामी हुस्ने सुलूक का एक और पहलू आश्कार हो जाए। (3) फ़िदया ले कर रिहा करने से क्या मा'लूम इन के दिल इस्लाम की त़रफ़ माइल हो जाएं और येह मुसलमान हो जाएं और मुसलमानों की अफ़रादी व फ़ौजी क़ुव्वत को मज़ीद तक़विय्यत मिले। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस मश्वरे को पसन्द करते हुवे क़बूल फ़रमाया और काफ़िर क़ैदियों को फ़िदया ले कर रिहा फ़रमा दिया। और तमाम लोगों ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस मदनी मश्वरे पर अ़मल करने की बरकत से इन्ही क़ैदियों में से कई लोग मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए और मुसलमानों की अफ़रादी क़ुव्वत में भी मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया।

(تفسیر خزائن العرفان، پارہ ١٠، الانفال: ٦٧، صحیح مسلم، باب الامداد بالملائکۃ فی غزوۃ بدر واباحۃ الغنائم، الحدیث: ١٧٦٣، ص ٩٧٠ ملخصا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ज़वए उहुद और सिद्दीक़े अक्बर

ग़ज़वए उहुद में वालिहाना जज़्बए जिहाद

कुफ़्फ़ार को जंगे बद्र में मुसलमानों के हाथों इ़ब्रत नाक शिकस्त हुई थी, जिस का उन्हें बहुत अफ़्सोस था और इस ज़िल्लत आमेज़ पस्पाई का बदला लेने के लिये उन्हों ने कई क़बीलों और बड़े बड़े रईसों को भी अपने साथ मिला लिया, इस त़रह़ उन की अफ़रादी

www.dawateislami.net

कु़व्वत में कई गुना इज़ाफ़ा हो गया। उन के पास जंगी साज़ो सामान, घोड़े, ऊंट, ज़िरह पोश सिपाहियों की बड़ी ता'दाद थी।

चुनान्चे, सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना **नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى **'तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान'** में इरशाद फ़रमाते हैं कि जंगे बद्र में शिकस्त खाने से कुफ़्फ़ार को बड़ा रन्ज था, इस लिये उन्हों ने ब क़स्दे इन्तिक़ाम एक बड़ा लश्कर मुरत्तब कर के फ़ौज कशी की, जब रसूले करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर मिली कि लश्करे कुफ़्फ़ार मक़ामे उहुद में उतरा है तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मश्वरा फ़रमाया। इस मश्वरे में **अ़ब्दुल्लाह** बिन उबय बिन सुलूल मुनाफ़िक़ को भी बुलाया गया जो इस से क़ब्ल कभी किसी मश्वरे में न बुलाया गया था अक्सर अन्सार और **अ़ब्दुल्लाह** बिन उबय बिन सुलूल ने येह राए दी कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए तृय्यिबा में ही ठहरे रहें और जब कुफ़्फ़ार यहां आएं तब उन से मुक़ाबला किया जाए येही सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मरज़ी थी लेकिन बा'ज़ अस्हाब की राए येह हुई कि मदीनए तृय्यिबा से बाहर निकल कर लड़ना चाहिये और इसी पर उन्हों ने इस्रार किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दौलत सराए अक़्दस (या'नी अपने घर) में तशरीफ़ ले गए और अस्लेहा (या'नी जंगी लिबास वग़ैरा) ज़ेबे तन फ़रमा कर बाहर तशरीफ़ लाए। अब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख कर उन अस्हाब को नदामत हुई (जिन्हों ने मदीनए तृय्यिबा से बाहर निकल कर लड़ने का मश्वरा दिया और इस पर इस्रार भी किया) उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप को राए देना और इस पर इस्रार करना हमारी ग़लती थी लिहाज़ा हमारी इस ग़लती को मुआ़फ़ फ़रमाइये और आप को जो मुनासिब हो वोही कीजिये।" नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नबी के लिये सज़ावार नहीं कि हथयार पहन कर जंग से क़ब्ल उतार दे।" मुशरिकीन मैदाने उहुद में बुध, जुमा'रात को पहुंचे थे और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जुमुआ़ के रोज़ बा'द नमाज़े जुमुआ़ एक अन्सारी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर रवाना हुवे और पन्दरह शव्वाल 3 हिजरी बरोज़ इतवार (या हफ़्ता) उहुद में पहुंचे, यहां नुज़ूल फ़रमाया। और पहाड़ का एक दर्रा जो लश्करे इस्लाम के पीछे था इस तरफ़ से अन्देशा था कि किसी वक़्त दुश्मन पुश्त पर से आ कर हम्ला न कर दे, हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन जुबैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه

www.dawateislami.net

को पचास[50] तीर अन्दाज़ों के साथ वहां मामूर फ़रमाया कि अगर दुश्मन इस त़रफ़ से ह़म्ला आवर हो तो तीरबारी कर के उस को दफ़्अ़ कर दिया जाए। और हुक्म दिया कि किसी ह़ाल में यहां से न हटना और इस जगह को न छोड़ना ख़्वाह फ़त्ह़ हो या शिकस्त। **अ़ब्दुल्लाह** बिन उबय बिन सुलूल मुनाफ़िक़ जिस ने मदीनए त़य्यिबा में रह कर जंग करने की राए दी थी जब उस ने देखा कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरी राए के ख़िलाफ़ किया है तो वोह बहुत बरहम हुवा और कहने लगा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नौ उ़म्र लड़कों का कहना तो माना और मेरी बात की परवा न की, उस के साथ तीन सो[300] मुनाफ़िक़ थे उन से इस ने कहा कि "जब दुश्मन लश्करे इस्लाम के मुक़ाबिल आ जाए उस वक़्त तुम सब भाग जाना ताकि लश्करे इस्लाम में इन्तिशार पैदा हो जाए और तुम्हें देख कर और लोग भी भागना शुरूअ़ कर दें।" मुसलमानों के लश्कर की कुल ता'दाद मअ़ इन मुनाफ़िक़ीन के एक हज़ार थी और मुशरिकीन तीन हज़ार। बहर ह़ाल उहुद की इस जंग में जैसे ही मुक़ाबलए आ़म शुरूअ़ हुवा तो अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ अपने तीन सो[300] मुनाफ़िक़ों को ले कर भाग निकला और नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सात सो[700] सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ रह गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ग़ैब से इन की मदद फ़रमाई और इन सब को साबित क़दमी अ़त़ा फ़रमाई यहां तक कि मुशरिकीन को ज़बर दस्त शिकस्त हुई। इस जंग में रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त के लिये एक जमाअ़त साथ साथ रही जिस में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़बू बक्र व अ़ली व अ़ब्बास व त़लह़ा व सा'द (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) थे। येह वोही जंग है जिस में नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दन्दाने अक़्दस शहीद हुवा और चेहरए अक़्दस पर ज़ख़्म भी आया। (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, सूरए आले इ़मरान, आयत नम्बर 121 बित्तसर्रुफ़)

सब से पहले पलटने वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि "उहुद के दिन जब तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जुदा हो गए तो सब से पहले आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه वापस पलटे।" (تاریخ مدینۃ دمشق،ج۲۵،ص۷۵)

www.dawateislami.net

ग़ज़वए उहुद की ह़सीन याद और अश्कबारी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 56 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले 'ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ' के सफ़ह़ा 41 पर है : "उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि जब अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ग़ज़वए उहुद की याद सताती तो आप रोने लगते और फ़रमाते कि येह दिन तो था ही ह़ज़रते त़लह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का । जब मैं सब से पहले हुज़ूर नबिय्ये पाक साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा तो मैं ने देखा कि एक शख़्स बड़ी बहादुरी व जवांमर्दी से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त कर रहा है, मेरे दिल में आया कि ख़ुदा करे येह त़लह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हों, और वोह वाक़ेई त़लह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही थे । और मुझे उस वक़्त सब से बढ़ कर येही शै मह़बूब थी कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त पर इस जवांमर्दी से जान निछावर करने वाला मेरी क़ौम का एक फ़र्द है ।" (تاریخ اسلام للامام الذھبی،ج۲،ص۱۹۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हुदैबिय्या और सिद्दीक़े अक्बर

रसूलुल्लाह का ख़्वाब

शव्वालुल मुकर्रम 6 सिने हिजरी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ अम्न के साथ मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुवे, कोई ह़ल्क़ किये हुवे, कोई क़स्र किये हुवे है और का'बए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िल हुवे, का'बा की कुंजी ली, त़वाफ़ फ़रमाया और उ़मरह किया । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को इस मुबारक ख़्वाब

www.dawateislami.net

की ख़बर दी तो सब बहुत खुश हुवे। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उ़मरह का क़स्द फ़रमाया और एक हज़ार चार सो सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ यकुम ज़ी क़ा'दा 6 हिजरी को रवाना हो गए। मक़ामे ज़ुल हुलैफ़ा पहुंच कर वहां मस्जिद में दो[2] रक्अ़तें पढ़ कर उ़मरह का एह़राम बांधा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ अक्सर सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने एह़राम बांधा, अलबत्ता बा'ज़ अस्ह़ाब ने जह़्फ़ा से एह़राम बांधा।

हुदैबिय्या क्या है ?

हुदैबिय्या मक्कए मुकर्रमा से मग़रिब की सम्त में छोटे से गाऊं का नाम है जो मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से बारह मील की मसाफ़त पर वाके़अ़ है, येह जिद्दा और मक्कए मुशर्रफ़ा के दरमियान है। इस जगह पर एक कूंआं है जिसे हुदैबिय्या कहते थे, इस वजह से इस बस्ती का नाम भी हुदैबिय्या पड़ गया, आज-कल इस कूंएं को "बीरे शुमैस" कहा जाता है।

(سیرت سید الانبیاء، ص ۱۲۷)

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के वुफ़ूद की आमद

यहां कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की त़रफ़ से मुसलमानों का इरादा मा'लूम करने के लिये कई जासूस भेजे गए, और कई वुफ़ूद आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात करते रहे, बहर ह़ाल जितने भी वुफ़ूद कुफ़्फ़ार की त़रफ़ से आए उन सब ने वापस जा कर येही बयान किया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उ़मरह के लिये तशरीफ़ लाए हैं, जंग का इरादा नहीं है। लेकिन उन्हें यक़ीन न आया, आख़िरे कार उन्हों ने **उ़र्वा बिन मसऊ़द सक़फ़ी** को जो त़ाइफ़ के बड़े सरदार और अ़रब के निहायत मुतमव्विल (मालदार) शख़्स थे तह़क़ीके़ ह़ाल के लिये भेजा। उन्हों ने वहां सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का इ़श्क़ो मह़ब्बत और ऐसी जांनिसारी देखी कि बा'द में वोह अपने क़बीले के कई लोगों समेत मुशर्रफ़ बा इस्लाम हो गए। बहर ह़ाल उन के साथ पेश आने वाला ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ग़ैरते ईमानी का एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ पेशे ख़िदमत है। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर की ग़ैरते ईमानी

उ़र्वा बिन मसऊ़द सक़फ़ी जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से वोही गुफ़्तगू फ़रमाई जो दीगर लोगों के साथ फ़रमाई थी कि हमारा इरादा जंग का नहीं बल्कि हम तो उ़मरह करने आए हैं, वग़ैरा वग़ैरा। येह सुन कर उन्हों ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ग़ैर मुनासिब गुफ़्तगू की। उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बिल्कुल क़रीब ही मौजूद थे और उन की सारी गुफ़्तगू सुन रहे थे, उन के आख़िरी अल्फ़ाज़ सुनना थे कि गुस्से की शिद्दत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रंग तब्दील हो गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की **ग़ैरते ईमानी जोश में आ गई** और **उ़र्वा बिन मसऊ़द** की निहायत ही सख़्त अल्फ़ाज़ में सरज़निश की। बल्कि ऐसे अल्फ़ाज़ में सरज़निश की, कि उन का सांस ख़ुश्क हो गया और वोह कहने लगे : "येह कौन है ?" लोगों ने बताया कि येह **रसूलुल्लाह** के रफ़ीक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।

सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शा'बा का वालिहाना इ़श्क़

उ़र्वा बिन मसऊ़द सक़फ़ी फिर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से गुफ़्तगू करने लगे, दौराने गुफ़्तगू वोह बार बार **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दाढ़ी मुबारका को हाथ लगाते। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ही ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शा'बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ खड़े थे, **उ़र्वा बिन मसऊ़द सक़फ़ी** ने जब दोबारा हाथ लगाया तो उन्हों ने अपनी तल्वार का दस्ता उन के हाथ पर मार कर निहायत ही गुस्से से कहा : "**रसूलुल्लाह** की मुबारक दाढ़ी से अपना हाथ पीछे कर।" **उ़र्वा बिन मसऊ़द** ने पूछा : "येह कौन है ?" तो लोगों ने बताया कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शा'बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शा'बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस ईमान अफ़रोज़ रविय्ये ने **उ़र्वा बिन मसऊ़द** के होश उड़ा दिये और वोह सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के इस ह़ैरत अंगेज़ इ़श्क़ो मह़ब्बत को देख कर ह़ैरान व परेशान हो कर वापस क़ुरैश के पास आ गए।

www.dawateislami.net

उ़र्वा बिन मसऊ़द सक़फ़ी के तअस्सुरात

आप ने क़ुरैश को सारी सूरते ह़ाल से आगाह करते हुवे कहा कि : "**मुह़म्मद** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के अस्ह़ाब उन से बहुत मह़ब्बत करते हैं और उन के लिये जान देने से भी गुरैज़ नहीं करते। जब वोह दस्ते मुबारक धोते हैं तो उन के अस्ह़ाब तबर्रुक के लिये ग़साला शरीफ़ ह़ासिल करने के लिये टूट पड़ते हैं, अगर कभी थूकते हैं तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उसे ह़ासिल करने की कोशिश करते हैं और जिसे वोह ह़ासिल हो जाता है वोह अपने चेहरों और बदन पर बरकत के लिये मलता है, कोई बाल जिस्मे अक़्दस का गिरने नहीं पाता अगर कभी जुदा हुवा तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस को बहुत अदब के साथ ले लेते हैं और अपनी जान से भी ज़ियादा अ़ज़ीज़ रखते हैं, जब आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) कलाम फ़रमाते हैं तो सब ही साकित हो जाते हैं। आप (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के अदबो ता'ज़ीम से कोई शख़्स नज़र ऊपर को नहीं उठा सकता। मैं बड़े बड़े बादशाहाने फ़ारस व रूम व मिस्र के दरबारों में गया हूं, मैं ने किसी बादशाह की येह अ़ज़मत नहीं देखी जो **मुह़म्मद मुस्त़फ़ा** (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उन के अस्ह़ाब में है, मुझे अन्देशा है कि तुम उन से मुक़ाबला कर के कामयाब न हो सकोगे।" क़ुरैश ने कहा : "ऐसी बात मत कहो, हम इस साल उन्हें वापस कर देंगे वोह अगले साल आएं।" **उ़र्वा** ने कहा कि : "मुझे अन्देशा है कि तुम्हें कोई मुसीबत न पहुंच जाए।" येह कह कर वोह अपने हमराहियों के साथ त़ाइफ़ वापस चले गए और इस वाक़िए के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें मुशर्रफ़ ब इस्लाम फ़रमाया।

(صحیح البخاری، باب کتاب الشروط، الشروط فی الجهاد۔۔۔الخ، الحدیث: ۲۷۳۲، ۲۷۳۱، ج۲، ص۲۲۵، تفسیر خزائن العرفان، پ۲۶، الفتح: ۱، ص۹۳۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बैअ़ते रिज़्वान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी हुदैबिय्या के मक़ाम पर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से बबूल के एक दरख़्त के नीचे बैअ़त ली, इस को बैअ़ते रिज़्वान कहते हैं, जिस का ज़िक्र क़ुरआने मजीद में यूं किया गया :

﴿لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ﴾ (پ۲۶، الفتح: ۱۸)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक **अल्लाह** राज़ी हुवा ईमान वालों से जब वोह उस पेड़ के नीचे तुम्हारी बैअ़त करते थे।"

बैअ़ते रिज़वान से कुफ़्फ़ार ख़ौफ़ज़दा हो गए

बैअ़त की ख़बर से कुफ़्फ़ार ख़ौफ़ज़दा हुवे और उन के अहले राए ने येही मुनासिब समझा कि सुल्ह़ कर लें, चुनान्चे, सुल्ह़ नामा लिखा गया और चूंकि येह मक़ामे हुदैबिय्या में लिखा गया था इस लिये "**सुल्ह़े हुदैबिय्या**" के नाम से मश्हूर हो गया और सुल्ह़ नामे में येह तै पाया कि मुसलमान इस साल वापस मदीने चले जाएं और अगले साल आ कर उ़मरह कर लें मुसलमानों के लिये येह शर्त़ सख़्त तक्लीफ़ का बाइ़स थी ख़ुसूसन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ास त़ौर पर इसे मुसलमानों की तौहीन समझा और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم व ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोनों के सामने अपने जज़्बात का इज़्हार किया। चुनान्चे,

सुल्ह़े हुदैबिय्या पर सिद्दीक़े अक्बर का इत़्मीनान

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सच्चे नबी नहीं ?" फ़रमाया : "क्यूं नहीं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "क्या हम ह़क़ पर और हमारा दुश्मन बात़िल पर नहीं ?" फ़रमाया : "क्यूं नहीं।" मैं ने अ़र्ज़ की : "फिर हम दीन के मुआ़मले में इतने पस्त क्यूं हो गए ?" सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं और उस की मरज़ी के ख़िलाफ़ नहीं चल सकता वोही मेरा मददगार है।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह नहीं फ़रमाया था कि हम अ़न क़रीब त़वाफ़े का'बा करेंगे ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क्यूं नहीं लेकिन क्या मैं ने येह कहा था कि इसी साल ह़ज करेंगे ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "नहीं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम ज़रूर आओगे और का'बे का त़वाफ़ करोगे।"

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि फिर मैं हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आया और अ़र्ज़ की : "ऐ अबू बक्र ! क्या येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सच्चे नबी नहीं ?" फ़रमाया : "क्यूं नहीं ?" मैं ने कहा : "क्या हम ह़क़ पर और हमारा दुश्मन बात़िल पर नहीं ?" फ़रमाया : "यक़ीनन ऐसा ही है।" मैं ने कहा : "फिर हम दीन के मुआ़मले में इतना दबाव क्यूं तस्लीम कर रहे हैं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! बिला शुबा वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, उस के नाफ़रमान नहीं हो सकते। यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन का मददगार है, आप अपनी जगह साबित क़दम रहें। ख़ुदा की क़सम ! वोह ह़क़ पर हैं।" मैं ने कहा : "क्या वोह येह नहीं फ़रमाते थे कि हम अ़न क़रीब त़वाफ़ का'बा करेंगे ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाने लगे : "क्यूं नहीं, क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया था कि तुम इसी साल त़वाफ़ करोगे ?" मैं ने कहा : "नहीं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तो यक़ीन रखो तुम आयिन्दा साल ज़रूर आओगे और **बैतुल्लाह** शरीफ़ का त़वाफ़ करोगे।"

(صحیح البخاری، کتاب الشروط، باب الشروط فی الجهاد۔۔۔الخ، الحدیث: ۲۷۳۲، ۲۷۳۱، ج۲، ص۲۲۶ تا ۲۲۷، تفسیر خزائن العرفان، پ:۲۶، الفتح: ۱، ص ۹۳۹)

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर की मदनी सोच

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस इत़्मीनान बख़्श जवाब और रविय्ये से बिल्कुल वाज़ेह़ है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुल्ह़े हुदैबिय्या और इस की तमाम शराइत़ से बिल्कुल मुत़्मइन थे, इस की सब से बुन्यादी वजह येह थी कि सुल्ह़े हुदैबिय्या दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तै फ़रमाई थी और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की किसी बात से इख़्तिलाफ़ न करते थे, इन्हें यक़ीने कामिल था कि येह शराइत़ सुल्ह़ के लिह़ाज़ से इस्लाम और मुसलमानों के लिये बहुत मुफ़ीद साबित होंगी और इन्हें मान लेना चाहिये क्यूंकि इन की येह मदनी सोच थी बल्कि तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की भी येही मदनी सोच हुवा करती थी कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का कोई काम मुसलमानों के मफ़ाद के ख़िलाफ़ हो ही नहीं सकता, और वाक़ेई आगे चल कर सुल्ह़े हुदैबिय्या का जो नतीजा निकला उस ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इत़्मीनाने क़ल्बी की मुकम्मल तस्दीक़ कर दी।

www.dawateislami.net

सहाबा में सब से बढ़ कर साइबुर्राए

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इसी सुल्हे हुदैबिय्या के मौक़अ़ पर जब सुल्ह़नामा लिखा जा रहा था तो कुफ़्फ़ारे कुरैश के तर्जुमान सुहैल बिन अ़म्र ने मुआ़हदे में بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ और "**मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह**" के बजाए "**मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह**" लिखने का इस्रार किया कि येह दोनों बातें कुरैश तो तस्लीम न करते थे। बहर ह़ाल बा'द में कुफ़्फ़ारे कुरैश के येही तर्जुमान सुहैल बिन अ़म्र मुसलमान हो गए।

सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुल्हे हुदैबिय्या में ह़िक्मत और सय्यिदुना सुहैल बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्रे ख़ैर करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "दौरे इस्लाम में कोई भी फ़त्ह़, हुदैबिय्या की फ़त्ह़ से बढ़ कर अ़ज़ीम नहीं है लेकिन उस दिन कई लोगों की फ़ह्म व फ़िरासत **अल्लाह** तआ़ला और उस के नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के माबैन मुआ़मले को समझने से क़ासिर रही, ह़क़ीक़त येह है कि लोग जल्दबाज़ी का मुज़ाहरा करते हैं, जब कि **अल्लाह** तआ़ला ऐसा नहीं फ़रमाता बल्कि वोह उस वक़्त तक मोहलत देता है जब तक मुआ़मलात उस मत़लूबा ह़द तक नहीं पहुंच जाते जो वोह चाहता है। मैं ने सुल्हे हुदैबिय्या में मुशरिकीन के तर्जुमान सुहैल बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर देखा कि वोह कुरबान गाह के क़रीब खड़े हैं और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कुरबानी के ऊंट पेश कर रहे हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने हाथों से उन ऊंटों को नह़्र कर रहे हैं फिर जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सर के बाल मुंडवाए तो मैं ने देखा कि सुहैल बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मूए मुबारक चुन चुन कर अपनी आंखों पर रख रहे हैं, जब कि इन्हों ने सुल्हे हुदैबिय्या के मौक़अ़ पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ और "**मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह**" लिखने की इजाज़त नहीं दी थी। इस मन्ज़र का आंखों के सामने आना था कि मैं बे इख़्तियार उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान करने लगा जिस ने इन्हें हिदायते इस्लाम से सरफ़राज़ फ़रमाया।"

(यक़ीनन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में सब से बढ़ कर साइबुर्राए और अ़क़्लो दानिश में सब से कामिल थे)

www.dawateislami.net

सुल्हे़ हुदैबिय्या के नताइज

इस सुल्ह़ के नतीजे में मुसलमानों के लिये फ़ुतूह़ात का दरवाज़ा खुल गया और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगले साल या'नी 11 रमज़ानुल मुबारक 8 हिजरी को बड़ी शानो शौकत के साथ तक़रीबन दस हज़ार सह़ाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के साथ मदीनए मुनव्वरा से मक्कए मुकर्रमा को रवाना हुवे और चन्द रोज़ बा'द 20 रमज़ानुल मुबारक को फ़त्ह़े अ़ज़ीम के साथ मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुवे इसी का नाम फ़त्ह़े मक्का है ।

रसूलुल्लाह का शाहाना मदनी जुलूस

मक्कए मुकर्रमा में मुसलमान इस शान से दाख़िल हुवे कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी ऊंटनी ''क़स्वा'' पर सुवार थे और आप एक सियाह रंग का इमामा बांधे हुवे थे । आप के पीछे ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बैठे हुवे थे । आप के एक जानिब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और दूसरी जानिब ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه थे । इस सफ़र में आप के साथ दो उम्महातुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा और ह़ज़रते सय्यिदतुना मैमूना (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) भी थीं और आप के चारों त़रफ़ जोशो ख़रोश में भरा हुवा हथयारों में डूबा हुवा लश्कर था जिस के दरमियान को कुब्बए नबवी था । इस शाहाना जुलूस के जाहो जलाल के बा वुजूद ताजदारे रिसालत शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने तवाज़ोअ़ का येह आ़लम था कि आप सूरए फ़त्ह़ की तिलावत फ़रमाते हुवे इस त़रह़ सर झुकाए हुवे ऊंटनी पर बैठे थे कि आप का सरे अन्वर ऊंटनी के पालान से बार बार लग जाता था । आप की येह कैफ़िय्यते तवाज़ोअ़, खुदावन्दे कुद्दूस का शुक्र अदा करने और उस की बारगाहे अ़ज़मत में अपनी इज्ज़ो नियाज़मन्दी का इज़्हार करने के लिये थी ।

(شرح الزرقانی علی المواھب اللدنیة، کتاب المغازی، باب غزوة الفتح الاعظم، ج ۳، ص ۴۳۲-۴۳۴، سیرت سید الانبیاء، ص ۴۶۳)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर और घोड़ दौड़

घोड़ों और ऊंटों की दौड़

6 सिने हिजरी ब मुताबिक़ 627 ईसवी में सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने घोड़ों की दौड़ कराई, सधाए हुवे घोड़ों के लिये दौड़ का फ़ासिला ज़ियादा रखा और ग़ैर सधाए हुवे घोड़ों के लिये कम। हज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सधाए हुवे घोड़ों की दौड़ **हैफ़ा** से शुरूअ़ कराई और इस की आख़िरी ह़द **सनिय्यतुल वदाअ़** रखी, ग़ैर सधाए हुवे घोड़ों की दौड़ **सनिय्यतुल वदाअ़** से मस्जिदे **बनी ज़ुरैक़** तक कराई। हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने भी इस दौड़ में ह़िस्सा लिया। ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि **हैफ़ा** से **सनिय्या** पांच या छे मील है। जब कि **सनिय्यतुल वदाअ़** और मस्जिदे बनी ज़ुरैक़ का दरमियानी फ़ासिला एक मील है। इसी साल सरवरे काइनात फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऊंटों की दौड़ भी कराई।

सिद्दीक़े अक्बर के घोड़े की जीत

इस घोड़ दौड़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के घोड़े ने भी ह़िस्सा लिया और वोह दूसरे घोड़ों से आगे निकल गया और उस ने सबक़त ह़ासिल की, येह दोनों दौड़ें इस्लाम में सब से पहली दौड़ें थीं।

आ'राबी का ऊंट सबक़त ले गया

ऊंटों की दौड़ में सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऊंटनी '**क़स्वा**' ने भी ह़िस्सा लिया, एक आ'राबी का ऊंट "**क़स्वा**" से सबक़त ले गया। क़स्वा नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ऊंटनी थी इस से पहले कोई चोपाया इस से आगे न निकल सका था, मुसलमानों पर येह अम्र निहायत गिरां गुज़रा लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला पर ह़क़ है कि जिस चीज़ को रिफ़्अ़त अ़ता फ़रमाए उसे पस्ती दे दे।" (سیرت سید الانبیاء، ص ۳۹۲)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ग़ज़्वए तबूक और सिद्दीक़े अक्बर

माहे रजब सिने 9 हिजरी में दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहूरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़्वए तबूक के लिये रवाना हुवे। येह आख़िरी मुहिम थी जिस में सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब नफ़्से नफ़ीस शरीक हुवे। तबूक मुल्के शाम की जानिब एक जगह का नाम है मदीनए मुनव्वरा और इस के दरमियान चौदह रोज़ और दिमश्क़ और इस के मा बैन दस दिनों का फ़ासिला है आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस मुहिम पर जुमा'रात के रोज़ मदीनए मुनव्वरा से रवाना हुवे। (سیرت سید الانبیاء، ص ۱۷۴)

ग़ज़्वए तबूक का सबब

अ़रब का ग़स्सानी ख़ानदान जो क़ैसरे रूम के ज़ेरे असर मुल्के शाम पर हुकूमत करता था चूंकि वोह ईसाई था इस लिये क़ैसरे रूम ने उस को अपना आलए कार बना कर मदीनए मुनव्वरा पर फ़ौज कशी का अ़ज़्म कर लिया। चुनान्चे, मुल्के शाम के जो सौदागर रौग़ने ज़ैतून बेचने मदीना शरीफ़ आया करते थे। उन्हों ने ख़बर दी कि क़ैसरे रूम की हुकूमत ने मुल्के शाम में बहुत बड़ी फ़ौज जम्अ़ कर दी है। और उस फ़ौज में रूमियों के इलावा क़बाइले लख़्म व जुज़ाम और ग़स्सान के तमाम अ़रब भी शामिल हैं। इन ख़बरों का तमाम अ़रब में हर त़रफ़ चर्चा था और रूमियों की इस्लाम दुश्मनी कोई ढकी छुपी चीज़ नहीं थी इस लिये इन ख़बरों को ग़लत़ समझ कर नज़र अन्दाज़ कर देने की भी कोई वजह नहीं थी। इस लिये हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी फ़ौज की तय्यारी का हुक्म दे दिया। चूंकी सख़्त गर्मी का मौसिम था और रास्ता भी निहायत ही दुश्वार गुज़ार था इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तमाम क़बाइले अ़रब से फ़ौजें और माली इमदाद त़लब फ़रमाई। (شرح الزرقانی علی المواھب اللدنیة، ثم غزوة تبوک، ج ۴، ص ۶۸-۷۲)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर की माली क़ुरबानी

अल्लाह और उस का रसूल ही काफ़ी है

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया कि "अपना माल राहे खुदा में जिहाद के लिये सदक़ा करो।" इस फ़रमाने आ़लीशान की ता'मील में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने ह़स्बे तौफ़ीक़ अपना माल राहे खुदा में जिहाद के लिये तसद्दुक़ किया। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दस हज़ार मुजाहिदीन का साज़ो सामान तसद्दुक़ किया और दस हज़ार दीनार ख़र्च किये। इस के इ़लावा नव सो ऊंट और सो घोड़े मअ़ साज़ो सामान फ़रमाने रसूल पर **लब्बैक** कहते हुवे पेश कर दिये। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि "मेरे पास भी माल था मैं ने सोचा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर दफ़्आ़ इन मुआ़मलात में मुझ से सबक़त ले जाते हैं इस बार ज़ियादा से ज़ियादा माल सदक़ा कर के इन से सबक़त ले जाऊंगा।" चुनान्चे, वोह घर गए और घर का सारा माल इकठ्ठा किया इस के दो ह़िस्से किये एक घर वालों के लिये छोड़ा और दूसरा ह़िस्सा ले कर बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया। सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! घर वालों के लिये क्या छोड़ के आए हो ?" अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आधा माल घर वालों के लिये छोड़ आया हूं।" इतने में आ़शिक़े अक्बर, यारे ग़ारे मुस्त़फ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपना माल ले कर बारगाहे रिसालत में इस त़रह़ ह़ाज़िर हुवे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक बिल्कुल सादा सी क़ुबा पहनी हुई है जिस पर बबूल के कांटों के बटन लगाए हुवे हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप को देख कर बहुत ख़ुश हुवे और इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! घर वालों के लिये क्या छोड़ कर आए हो ?" बस ! मह़बूब का येह पूछना था कि गोया

www.dawateislami.net

आ़शिक़े सादिक़ का दिल इ़श्क़ो मह़ब्बत की महक से झूम उठा, फ़ौरन ही समझ गए कि बात कुछ और है, क्यूंकि मह़बूब तो जानता है कि मेरे आ़शिक़े सादिक़ ने तो उस वक़्त भी अपनी जान, माल, आल, अवलाद सब कुछ क़ुरबान कर दिया था जब मक्कए मुकर्रमा में ह़िमायत करने वाले न होने के बराबर थे बल्कि अक्सर लोग जानी दुश्मन बन गए थे, और मह़बूब के कलाम को क्यूं न समझते कि येह तो वोह आ़शिक़ थे जो हर वक़्त इस मौक़अ़ की तलाश में रहते थे कि बस मह़बूब कुछ मांगे तो सही ! सब कुछ क़दमों में ला कर क़ुरबान कर दें :

क्या पेश करें जानां क्या चीज़ हमारी है
येह दिल भी तुम्हारा है येह जां भी तुम्हारी है

येह तो वोह आ़शिक़े सादिक़ थे जिन्हों ने कभी अपने माल को अपना समझा ही नहीं, बल्कि जो कुछ इन के पास होता उसे मह़बूब की अ़त़ा समझते और क्यूं न समझते कि :

मैं तो मालिक ही कहूंगा कि हो मालिक के ह़बीब
या'नी मह़बूबो मुह़िब में नहीं मेरा तेरा

फ़ौरन समझ गए कि मह़बूब की चाहत कुछ और है ग़ालिबन मह़बूब येह कहना चाहते हैं कि ऐ मेरे आ़शिक़ ! मैं तो तेरे इ़श्क़ को जानता हूं, आज दुन्या को बता दे कि इ़श्क़ किसे कहते हैं ! बस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मह़ब्बत भरे लहजे में यूं अ़र्ज़ किया : "یَارَسُوْلَ اللّٰہ! اَبْقَیْتُ لَھُمُ اللّٰہَ وَرَسُوْلَہ" या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं अपने घर का सारा माल ले कर आप की बारगाह में ह़ाज़िर हो गया हूं और घर वालों के लिये **अल्लाह और उस का रसूल ही काफ़ी है ।**" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह मन्ज़र देख कर ह़ैरान रह गए और कहने लगे कि "मैं कभी भी अबू बक्र सिद्दीक़ से आगे नहीं बढ़ सकता ।"

www.dawateislami.net

परवाने को चराग़ तो बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा और रसूल बस

दे के सब कुछ फिर भी बच गया मेरे लिये
इक ख़ुदा मेरे लिये, इक मुस्त़फ़ा मेरे लिये

मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रह़मते आ़लम
मैं जी रहा हूं ज़माने में आप ही के लिये

सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने देखा कि इतने में ख़ालिक़े काइनात के क़ासिदे ख़ुसूसी ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیۡہِ السَّلَام वैसा ही लिबास ज़ेबे तन किये बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे जो आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने ज़ेबे तन फ़रमाया हुवा था। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ जिब्रील ! येह क्या पहना हुवा है ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आज तमाम फ़िरिश्तों को भी हुक्म फ़रमाया है कि आज वैसा ही लिबास पहनें जैसा आप के आ़शिक़े सादिक़ ने पहना हुवा है। और साथ ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन्हें सलाम इरशाद फ़रमाता है और इस्तिफ़्सार फ़रमाता है कि येह अपने रब से इस ह़ाल में राज़ी हैं या नाराज़ ?" येह पैग़ामे मह़ब्बत सुनते ही ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ वज्द में आ गए और इन पर रिक़्क़त त़ारी हो गई, अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं भला अपने रब से कैसे ना ख़ुश हो सकता हूं।" फिर तीन बार फ़रमाया : "मैं अपने रब से राज़ी हूं, मैं अपने रब से राज़ी हूं, मैं अपने रब से राज़ी हूं।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب عن رسول اللہ، باب فی مناقب ابی بکر وعمر،الحدیث:۳۶۹۵، ج۵، ص۳۸۰، تاریخ الخلفاء، ص۳۰، سنن الدارمی، کتاب الزکوۃ، باب الرجل یتصدق ما عندہ، الحدیث: ۱۶۶۰، ج۱، ص۴۸۰)

www.dawateislami.net

घर बार लुटा कर कहते हैं अल्लाह नबी ही काफ़ी है
क्या बात उजागर कहते हैं सिद्दीक़े अक्बर मेरे हैं
जब जागेगा क़ल्बे मोमिन हर दिल से सदा येह आएगी
सिद्दीक़े अक्बर मेरे हैं सिद्दीक़े अक्बर मेरे हैं

तबूक और इस का दुश्वार गुज़ार रास्ता

ग़ज़्वए तबूक तंगी व तुर्शी और मौसिमे गर्मा की शिद्दत व ह़रारत के ज़माने में पेश आया नीज़ अ़लाक़ा ख़ुश्क साली की लपेट में था, और फल पक चुके थे। लोगों को फलों और सायादार दरख़्तों में क़ियाम पसन्द था। इस ह़ालत में सफ़र करना सब ना पसन्द करते थे इलावा अज़ीं उन के पास ज़ादे राह और सुवारियों की क़िल्लत थी। तबूक तक पहुंचने के लिये शाम के अ़ज़ीम सह़रा को तै करने में चालीस रोज़ चलना पड़ता है और इतने ही अय्याम वापसी पर लगते थे। जहां न कोई दरख़्त है और न साया, पानी भी बहुत कम मिक्दार में दस्तयाब होता है, लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के दिलों को मज़बूत़ रखा। येही वजह है कि इस ग़ज़्वे को जैशुल उ़स्रह (तंगदस्ती का लश्कर) भी कहते हैं और चूंकि मुनाफ़िक़ों को इस ग़ज़्वे में बड़ी शर्मिन्दगी और शर्मसारी उठानी पड़ी थी। इस वजह से इस का एक नाम ग़ज़्वए फ़ाज़िह़ा (रुस्वा करने वाला ग़ज़्वा) भी है। यक़ीनन ऐसे कठिन रास्ते में मुसलमानों को सख़्त तक्लीफ़ का सामना करना पड़ा। ख़ुसूसन पानी की क़िल्लत ने तो सभी को परेशान कर दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत में दुआ़ के लिये अ़र्ज़ गुज़ार हुवे और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुसूसी करम फ़रमाया। चुनान्चे,

सिद्दीक़े अक्बर और मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हम शदीद गर्मी के मौसिम में तबूक के लिये निकले। दौराने सफ़र हम ने एक जगह पड़ाव डाला। वहां हमें

www.dawateislami.net

इस क़दर शिद्दत की प्यास लगी कि हमें येह गुमान होने लगा कि हमारा वक़्ते अजल क़रीब आ पहुंचा है। प्यास की शिद्दत से हम इस ह़द तक मजबूर हो गए कि हम में से कोई आदमी प्यास बुझाने के लिये अपना ऊंट ज़ब्ह़ करता और उस की ओझड़ी को निचोड़ कर उस में से निकलने वाले पानी को पी लेता और जो पानी बाक़ी बचता उसे अपने पहलू पर बांध लेता। मुसलमानों की येह ह़ालत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से देखी न गई और वोह मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही के लिये बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और यूं दर ख़्वास्त की : يَارَسُوْلَ اللّٰہ! اِنَّ اللّٰہَ قَدْ عَوَّدَکَ فِی الدُّعَاءِ خَیْرًا فَادْعُ اللّٰہ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल ! यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ को क़बूल फ़रमाता है, और आप को ख़ैरो बरकत से नवाज़ता है लिहाज़ा आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ फ़रमाइये।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "اَتُحِبُّ ذٰلِکَ؟" या'नी ऐ अबू बक्र ! क्या तुम्हारी इसी में ख़ुशी है ? अ़र्ज़ किया : "जी हां या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! चुनान्चे, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ के लिये अपने हाथ उठा दिये और दुआ़ मांग कर अभी हाथ नीचे भी न किये थे कि आस्मान पर अब्रे रह़मत गरजने लगा, पहले हल्की हल्की बारिश हुई, फिर मूसलाधार बारिश बरसने लगी। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अपने बरतनों को पानी से भर लिया। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह मो'जिज़ा था कि जहां हम थे सिर्फ़ वहीं बारिश हो रही थी हमारे इर्द गिर्द बारिश का नामो निशान नहीं था।

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب الطھارۃ، معجزۃ النبی فی نزول الماء۔۔۔الخ، الحدیث: ۵۸۲، ج ۱، ص ۳۸۴، سیرت سید الانبیاء، ص ۱۷۴)

सब से बड़ा झन्डा सिद्दीक़े अक्बर के हाथ में

दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ तीस हज़ार मुजाहिदीन का लश्कर था जब लश्करे इस्लाम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ियादत में सनिय्यतुल वदाअ़ नामी मक़ाम पर जम्अ़ हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ाइदीन,

www.dawateislami.net

जर्नलों और कमान्डरों को मुन्तख़ब फ़रमाया और उन्हें मुख़्तलिफ़ झन्डे अ़ता फ़रमाए इस मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सब से बड़ा झन्डा अ़ता फ़रमाया। मगर दूर दूर तक रूमी लश्करों का कोई पता नहीं चला। वाक़िआ़ येह हुवा कि जब रूमियों के जासूसों ने क़ैसर बादशाह को ख़बर दी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तीस हज़ार का लश्कर ले कर तबूक में आ रहे हैं तो रूमियों के दिलों पर इस क़दर हैबत छा गई कि वोह जंग से हिम्मत हार गए और अपने घरों से बाहर न निकल सके। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बीस दिन मक़ामे तबूक में क़ियाम फ़रमाया और अत़राफ़ व जवानिब में अफ़्वाजे इलाही का जलाल दिखा कर और कुफ़्फ़ार के दिलों पर इस्लाम का रो'ब बिठा कर मदीनए मुनव्वरा वापस तशरीफ़ लाए और तबूक में कोई जंग नहीं हुई।

(مدارج النبوت، ج ۲، ص ۳۴۹ مختصراً، تلقیح فهوم اهل الاثر لابن جوزی، باب تسمیة المشهورین بالذکر من أصحاب رسول الله ـــ الخ، ص ۲۷، تاریخ مدینة دمشق، ج ۲، ص ۳۶)

ख़ुश बख़्त सह़ाबी

ग़ज़्वए तबूक में ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** ज़ुलबजादैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा न किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शहादत हुई न वफ़ात हुई। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** ज़ुलबजादैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक ग़रीब मुहाजिर थे और अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم में से थे। येह ग़ज़्वए तबूक में शामिल हुवे और इन को बुख़ार आ गया। ब वक़्ते वफ़ात इन के पास दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो इन्हों ने बड़ी ह़सरत से अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरा मक़्सद शहादत ही है और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे लिये दुआ़ फ़रमा दी है कि "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने इस के ख़ून को कुफ़्फ़ार पर ह़राम कर दिया है।" तो क्या मैं शहादत से मह़रूम रहूंगा ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब तुम जिहाद के लिये निकले हो तो अगर बुख़ार में भी मर जाओगे तो भी तुम शहीद ही होगे।" इस के बा'द बुख़ार ही में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुलबजादैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हो गया। (مدارج النبوة، ج ۲، ص ۳۷۷)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर का ईमान अफ़रोज़ तबसेरा

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ शरीक था। एक दफ़्आ़ मैं आधी रात के वक़्त उठा तो मैं ने लश्कर में एक जानिब कुछ रोशनी देखी। मैं सूरते ह़ाल मा'लूम करने के लिये एक त़रफ़ गया तो मैं ने देखा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) मौजूद हैं और सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुल बजादैन मुज़्नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वफ़ात पा चुके हैं। इन्हें दफ़्न करने के लिये सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان क़ब्र खोद चुके हैं। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन की क़ब्रे मुबारक में ब नफ़्से नफ़ीस (या'नी ख़ुद) उतरे हुवे हैं और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इन की मय्यित को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब क़ब्र में उतार रहे हैं जब कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे हैं : "اَدْنِيَا اِلٰى اَخِيْكُمَا या'नी इसे अपने भाई के क़रीब कर दो।" चुनान्चे, उन्हों ने इन की मय्यित को आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ बढ़ा कर नीचे उतार दिया। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की मय्यित को पहलू के बल किया तो फ़रमाया : اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَمْسَيْتُ رَاضِيًا عَنْهُ فَارْضَ عَنْهُ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं इस आख़िरी रात तक इस से राज़ी था, तू भी इस से राज़ी हो जा।" हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह रूह़ परवर मन्ज़र देख कर अपने ईमान अफ़रोज़ जज़्बात का इज़्हार करते हुवे यूं फ़रमाया : "وَاللّٰهِ لَوَدِدْتُ اَنِّيْ صَاحِبُ الْحُفْرَةِ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरी येह ख़्वाहिश है कि इस क़ब्र में **अ़ब्दुल्लाह** ज़ुल बजादैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जगह मैं होता।"

(المعجم الاوسط، من اسمه مسعدة، الحديث: ۹۱۱۱، ج۶، ص ۳۷۱، حلية الاولياء، الحديث: ۳۷۲، ج۱، ص ۱۲۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

जैशे सिद्दीक़े अक्बर

कई मुशरिकीन को वासिले जहन्नम किया

हज़रते सय्यिदुना सलमह बिन अकूअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक लश्कर का सिपह सालार मुक़र्रर कर के कुफ़्फ़ार की सरकोबी के लिये रवाना किया तो मैं भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्कर में शामिल था, हम ने कई मुशरिकीन को क़त्ल किया और बहुत से क़ैदी भी बने। हम ने किसी मुश्किल घड़ी में एक दूसरे को बा ख़बर रखने के लिये **अमित अमित** के अल्फ़ाज़ मुक़र्रर कर रखे थे। मेरे हाथ से सात मुशरिकीन जहन्नम रसीद हुवे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बनी फ़ुज़ारा से जिहाद के लिये रवाना फ़रमाया उस वक़्त भी मैं आप के साथ था, जब हम पानी के क़रीब पहुंचे तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रात वहां क़ियाम किया, नमाज़े फ़ज्र अदा करने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हम्ला करने का हुक्म दिया, हम ने मुशरिकीन पर भरपूर हम्ला किया इस जंग में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथों कई मुशरिकीन वासिले जहन्नम हुवे।"

(الطبقات الکبری لابن سعد، سریۃ ابی بکر الصدیق الی بنی کلاب بنجد، ج۲، ص۹۰)

सिद्दीक़े अक्बर मुसलमानों के अमीरुल हज

सिद्दीक़े अक्बर पहले अमीरुल हज

11 रमज़ानुल मुबारक सिने 8 हिजरी को फ़त्हे मक्का हुई और फ़त्हे मक्का के अगले साल या'नी 9 हिजरी ज़ी क़ा'दा के महीने में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी जगह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीरुल हज मुक़र्रर फ़रमाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तीन सो300 मुसलमानों के साथ फ़रीज़ए

www.dawateislami.net

हज की अदाएगी के लिये मदीनए मुनव्वरा से रवाना हो कर मक्कए मुकर्रमा पहुंचे। नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप के साथ बीस[20] ऊंट रवाना फ़रमाए इन के गलों में अपने दस्ते अक्दस से हार डाले और इन पर निशान लगाए, इन ऊंटों पर हज़रते सय्यिदुना नाजिया बिन जुन्दब अस्लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को निगरान मुक़र्रर फ़रमाया। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने पांच[5] ऊंट अपनी तरफ़ से भी ज़ब्ह करने के लिये साथ ले लिये। हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने भी उस साल हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ हज किया और हदी के कई जानवर साथ ले लिये। (صحیح البخاری، کتاب المغازی، حج ابی بکر بالناس۔۔۔الخ، الحدیث:۴۳۶۳، ج۳، ص۱۲۸، سیرت سید الانبیاء، ص۵۳۳، مدارج النبوۃ، ج۲، ص۳۷۷)

सरकार ने हज क्यूं न किया ?

उस साल नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ज़वात के मुआमले में इन्हिमाक, मुख़्तलिफ़ वुफ़ूद की आमद और उन को अह़कामे शरइय्या सिखाने की मसरूफ़िय्यत के बाइस हज में शिरकत न फ़रमा सके, इस लिये अपनी जगह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को अमीरुल हज मुक़र्रर फ़रमाया। (مدارج النبوت، ج۲، ص۳۷۷)

सूरए बराअत के लिये हज़रते अ़ली की रवानगी

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के पीछे हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को रवाना फ़रमाया ताकि लोगों को सूरए बराअत पढ़ कर सुनाएं और येह ए'लान करें कि इस साल के बा'द आयिन्दा कोई मुशरिक हज नहीं कर सकेगा और न कोई बरहना हो कर **बैतुल्लाह** का त़वाफ़ कर सकेगा। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के हज को रवाना होने से थोड़ा अ़र्सा पहले उसी साल पारह 10 सूरतुत्तौबा की आयत नम्बर 28 नाज़िल हुई : ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ईमान वालो ! मुशरिक निरे नापाक हैं तो इस बरस के बा'द वोह मस्जिदे ह़राम के पास न आने पाएं।" हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه

www.dawateislami.net

अ़रज के मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जा मिले। अ़रज मदीनए मुनव्वरा से दूर 78 मील के फ़ासिले पर एक बस्ती का नाम है।

(السیرۃ النبویۃ لابن ہشام، اختصاص الرسول علیا---الخ، المجلد الثانی، ص ۴۶۱)

ऊंटनी की बिल बिलाहट

अ़रज के मक़ाम पर सुब्ह़ के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ऊंटनी मुबारका की बिल-बिलाहट सुनी तो फ़रमाया : "येह तो क़स्वा की आवाज़ है।" (बा'ज़ रिवायात में अ़ज़्बा का ज़िक्र है येह भी आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ऊंटनी थी) देखा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم उस पर सुवार थे उन से पूछा गया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को ह़ज का अमीर बनाया है ? तो उन्हों ने जवाब दिया : "मैं अमीर नहीं बल्कि मामूर हूं और मुझे तो सूरए बराअत लोगों के सामने पढ़ने के लिये भेजा गया है नीज़ लोगों के साथ मुआ़हदों के ख़ातिमे के लिये रवाना किया है।" (مدارج النبوۃ، ج ۲، ص ۳۷۸، سیرت سید الانبیاء، ص ۵۳۳)

एक अहम वज़ाह़त

याद रहे कि येह ह़ज ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अमारत में अदा किया गया था। कुफ़्फ़ार से मुआ़हदे के ख़ातिमे का ए'लान अगर्चे ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी कर सकते थे लेकिन नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा क्यूंकि अ़रब का दस्तूर था कि जब किसी मुआ़हदे के ख़ातिमे का ए'लान करना होता तो मुआ़हदा करने वाला ख़ुद आता या उस के ख़ानदान का कोई फ़र्द उस की त़रफ़ से आ कर ए'लान करता। अहले बैते नबवी में चूंकि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही सब से अफ़्ज़ल थे इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिख़ाब किया गया। (السیرۃ النبویۃ لابن ہشام، اختصاص الرسول علیا---الخ، المجلد الثانی، ص ۴۶۱)

www.dawateislami.net

हज्जतुल वदाअ़ में सिद्दीक़े अक्बर की रफ़ाक़त

हिजरत के दसवें साल नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़ज़्मे हज फ़रमाया, इस हज का नाम **हज्जतुल वदाअ़** है। इस सफ़रे हज में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हम रिकाब थे। दूसरे बहुत से सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी साथ शरीक थे नीज़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ भी साथ ही थीं। इस हज के मौक़अ़ पर मैदाने अ़रफ़ात में मुसलमान बहुत बड़ी ता'दाद में जम्अ़ थे। येह वोही मक़ाम था, जहां कुछ अ़र्से क़ब्ल क़ुरैश का कोई शख़्स आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हम कलाम होना भी पसन्द न करता था लेकिन ख़ुदा की क़ुदरत है कि आज यहां एक लाख से ज़ियादा सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जम्अ़ थे। इस हज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर मुख़्तलिफ़ सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर मुख़्तलिफ़ मसाइल भी पूछ रहे थे।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حجۃ الوداع، ج۳، ص۱۳۷، سیرت سید الانبیاء، ص۵۲۲)

हज्जतुल वदाअ़ के अस्मा और इन की वजहे तस्मिय्या

10 सिने हिजरी में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज अदा फ़रमाया इसे **हज्जतुल वदाअ़, हज्जतुल इस्लाम, हज्जतुल बलाग़, हज्जतुत्तमाम वल कमाल** भी कहते हैं। (1) **हज्जतुल वदाअ़** कहने की वजह येह है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों को अल वदाअ़ कहा और वसिय्यत फ़रमाई कि मेरे बा'द कुफ़्र की त़रफ़ न लौट जाना नीज़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से गवाही ली कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पैग़ामात इन तक पहुंचा दिये हैं। (2) **हज्जतुल इस्लाम** कहने की वजह येह है कि मदीनए मुनव्वरा में हज की फ़र्ज़िय्यत के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ येही हज किया। (3) **हज्जतुल बलाग़** कहने की वजह येह है कि नबिय्ये करीम,

www.dawateislami.net

रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अह्कामे शरअ़ लोगों तक पहुंचा दिये । (4) **हुज्जतुत्तमाम वल कमाल** इस लिये कहते हैं कि इस हज में वुक़ूफ़े अ़र्फ़ा के दिन पारह 6 सूरतुल माइदह की आयत नम्बर 3 नाज़िल हुई :

﴿اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَیْكُمْ نِعْمَتِیْ وَ رَضِیْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًا﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया ।" वाज़ेह रहे कि हिजरत से पहले मक्की दौर में दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर साल हज फ़रमाया करते थे, लेकिन हिजरत के बा'द मदीनए मुनव्वरा में हज की फ़र्ज़िय्यत के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ येही हज फ़रमाया । (سیرت سید الانبیاء، ص ۵۲۱، السیرۃ الحلبیۃ، ج۳، ص۳۶۰)

हज्जतुल वदाअ़ में सहाबए किराम की ता'दाद

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चूंकि अपने इस हज की इत्तिलाअ़ अत़राफ़ के तमाम अ़लाक़ों में भेज दी थी इस लिये लोग हर त़रफ़ से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हज करने के लिये उमड़ आए। अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि : "उस दिन हुज्जाजे किराम की ता'दाद ह़िसाब और गिनती से बाहर थी ।" अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : "उस हज में आगे पीछे दाएं बाएं जिधर निगाह उठती सुवार और पैदल ही दिखाई देते थे इस सफ़र में इतने आदमी जम्अ़ थे कि इन की ता'दाद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी को मा'लूम नहीं। अलबत्ता एक रिवायत की रू से इन की ता'दाद एक लाख चौदह हज़ार और दूसरी रिवायत के मुत़ाबिक़ एक लाख चोबीस हज़ार सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इस सफ़र में नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह थे।" और बा'ज़ दीगर रिवायात के मुत़ाबिक़ एक लाख तीस हज़ार थी, येह ता'दाद उन सहाबए किराम के इ़लावा थी जो मक्कए मुकर्रमा में मौजूद थे और यमन से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ आए थे । (سیرت سید الانبیاء، ص ۵۲۲، بحوالہ شرح سفر السعادت، ص ۳۲۷)

www.dawateislami.net

शहज़ादए सिद्दीक़े अक्बर की विलादत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ुल हुलैफ़ा में थे। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अहलियाए मोहतरमा हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उम्मीद से थीं, इन के हां शहज़ादए सिद्दीक़े अक्बर हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादत हो गई। (سیرت سید الانبیاء، ص ۵۲۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जैशे उसामा बिन ज़ैद की तय्यारी व रवानगी

फ़रीज़ए ह़ज अदा करने के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ ले गए। चन्द रोज़ बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुल्के शाम पर ह़म्ला करने के लिये फ़ौज तय्यार करने का हुक्म दिया और इस फ़ौज का सर-बराह ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मुक़र्रर फ़रमाया और इस में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जैसे जलीलुल क़द्र सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मौजूद थे। येह लश्कर मदीनए मुनव्वरा से रवाना हो कर अभी क़रीब के एक मक़ाम जुर्फ़ तक पहुंचा था कि इन्हें दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़लालत की इत्तिलाअ़ मिली येह इत्तिलाअ़ सुन कर लश्कर जुर्फ़ ही में रुक गया। (الروض الانف، باب بعث اسامة، ج۴، ص۳۸۵)

जैशे उसामा बिन ज़ैद का पस मन्ज़र

जंगे मौता और ग़ज़्वए तबूक के बा'द इस्लाम और ईसाइय्यत के दरमियान बढ़ने वाले इख़्तिलाफ़ात और यहूदी फ़ितना अंगेज़ी के बाइस रूमी और शामी फ़ौज के अ़रब पर ह़म्ला आवर होने के ख़त़रात काफ़ी ह़द तक बढ़ गए थे। जंगे मौता में मुसलमानों के तीन क़ाइद ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा, ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबू त़ालिब और

www.dawateislami.net

हज़्रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم जामे शहादत नोश फ़रमा चुके थे। और जंगी सूरते ह़ाल मुसलमानों के ख़िलाफ़ हो चुकी थी लेकिन ह़ज़्रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने अपनी ह़िक्मते अ़मली से अपनी फ़ौज को बा ह़िफ़ाज़त मह़फ़ूज़ मक़ाम पर पहुंचा दिया था। इस के बा'द सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद मुसलमानों की फ़ौज के साथ मक़ामे तबूक की त़रफ़ रवाना हुवे लेकिन रूमियों को लड़ने की जुरअत न हुई और वोह अपनी जान बचा कर वापस शाम के अ़लाक़े में चले गए। इस के बा'द रूमियों ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ सख़्त रविय्या इख़्तियार करने का फ़ैसला कर लिया था और वोह सोचने लगे थे कि अ़रब की सरह़दों की त़रफ़ पेश क़दमी की जाए। और उन की इस पेश क़दमी को रोकने और रूमियों के अ़लाक़े शाम पर ह़म्ला करने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लश्करे उसामा की तय्यारी का हुक्म जारी फ़रमाया। अगर मुसलमानों पर रूमी ह़म्ला करते तो मुसलमान फ़ौज अपना दिफ़ाअ़ करती लेकिन दिफ़ाअ़ हमेशा कमज़ोर और ह़म्ला मज़्बूत़ होता है लिहाज़ा सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़म्ले को तरजीह़ दी। येह लश्कर मदीनए मुनव्वरा से रवाना हो कर अभी क़रीब के एक मक़ाम जुर्फ़ तक पहुंचा था कि इन्हें दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़लालत की इत्त़िलाअ़ मिली येह इत्त़िलाअ़ सुन कर लश्कर जुर्फ़ ही में रुक गया। दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़लालत इतनी शदीद हो गई कि आख़िरी अय्याम में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़्रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ को नमाज़ों की इमामत का हुक्म इरशाद फ़रमा दिया। चुनान्चे, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ही मुसलमानों की इमामत करवाते रहे। और क्यूं न हो कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ही को इमामते सुग़रा व इमामते कुब्रा दोनों का इस्तिह़्क़ाक़ ह़ासिल है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

पांचवां बाब

ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अकबर

इमामत, बैअ़ते ख़िलाफ़त, मुख़्तलिफ़ फ़ित्नों का मुक़ाबला, फ़ुतूहात, ख़ुतबात वग़ैरा

www.dawateislami.net

इमामत व ख़िलाफ़त का बयान

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल, सफ़हा 237 पर सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللہِ الْقَوِی इमामत की दो क़िस्में बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : "इमामत दो[2] क़िस्म है : (1) सुग़रा । (2) कुब्रा, इमामते सुग़रा इमामते नमाज़ है । इमामते कुब्रा नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नियाबते मुत़लक़ा, कि हु़ज़ूर (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की नियाबत से मुसलमानों के तमाम उमूरे दीनी व दुन्यवी में ह़स्बे शरअ़ तसर्रुफ़े आ़म का इख़्तियार रखे और ग़ैरे मा'सिय्यत में इस की इत़ाअ़त, तमाम जहान के मुसलमानों पर फ़र्ज़ हो । इस इमाम के लिये मुसलमान, आज़ाद, आ़क़िल, बालिग़, क़ादिर, क़ुरशी होना शर्त़ है । हाशिमी, अ़लवी, मा'सूम होना इस की शर्त़ नहीं ।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को दोनों इमामतों की सआ़दतें ह़ासिल हैं और इमामते सुग़रा या'नी नमाज़ की इमामत तो प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते मुबारका ही में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सोंप दी गई थी और ख़ुद सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को इमाम बनाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया नीज़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजूदगी व ग़ैर मौजूदगी दोनों सूरतों में इमामत के फ़राइज़ सर अन्जाम दिये । और सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के होते हुवे किसी दूसरे को इमाम बनाने की मुमानअ़त ख़ुद इरशाद फ़रमाई । चुनान्चे,

इमामते सुग़रा

किसी और को इमामत का ह़क़ नहीं

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस क़ौम में अबू बक्र सिद्दीक़ हों वहां किसी और को इमामत का ह़क़ नहीं ।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی بکر وعمر رضی اللہ عنہما، الحدیث ۳۶۹۳، ج۵، ص ۳۷۹)

www.dawateislami.net

सरकार की मौजूदगी में इमामत

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़बीलए बनी अ़म्र बिन औ़फ़ के माबैन सुल्ह़ कराने तशरीफ़ ले गए, जब नमाज़ का वक़्त क़रीब आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "क्या आप लोगों को नमाज़ पढ़ाएंगे ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "जी हां।" चुनान्चे, इक़ामत कही गई तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ पढ़ाने लगे। अभी नमाज़ अदा कर ही रहे थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए और सफ़ में शामिल हो गए। लोगों ने **तस्फ़ीक़** की (या'नी बाएं हाथ की पुश्त पर दाएं हाथ की हथेली मार कर आवाज़ पैदा की) ताकि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद की इत्तिलाअ़ हो जाए। लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इतने ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ अदा किया करते थे कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने आस पास की ख़बर ही न होती थी। लिहाज़ा लोगों ने **तस्फ़ीक़** में मुबालग़ा किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की त़रफ़ तवज्जोह की और क्या देखते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़ में मौजूद हैं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी जगह खड़े रहने का इशारा किया, लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आहिस्ता आहिस्ता पीछे आ कर सफ़ में खड़े हो गए और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आगे बढ़ कर लोगों को बक़िय्या नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ मुकम्मल करने के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! जब मैं ने तुम्हें पीछे हटने से मन्अ़ किया था तो फिर तुम्हें किस चीज़ ने पीछे हटने पर मजबूर किया ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अबू क़ुहाफ़ा के बेटे को कैसे येह जुरअत हो सकती है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल की मौजूदगी में लोगों को नमाज़ पढ़ाए।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया : "मैं ने तुम लोगों को **तस्फ़ीक़** में मुबालग़ा करते हुवे देखा है। याद रखो ! जब नमाज़ में इस त़रह़ का कोई मुआ़मला पेश आ जाए तो **तस्बीह़** या'नी سُبْحٰنَ الله कहो क्यूंकि जब **तस्बीह़** कही जाएगी तो इमाम इस की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाएगा, और **तस्फ़ीक़** मह़ज़ औ़रतों के लिये है।"

(صحیح البخاری، کتاب الاذان، من دخل لیؤم الناس فجاء الامام الاول فتاخر الاول، الحدیث: ۶۸۴، ج ۱، ص ۲۴۴ ملتقطا)

सरकार की ग़ैर मौजूदगी में इमामत

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अन्सार के एक क़बीले में सुल्ह़ के लिये तशरीफ़ ले गए। जब नमाज़ का वक़्त आया तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया : "नमाज़ का वक़्त हो चुका है, और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मौजूद नहीं हैं। मैं अज़ान व इक़ामत कहता हूं क्या आप नमाज़ पढ़ाएंगे ?" फ़रमाया : "ठीक है जैसे तुम्हारी मरज़ी।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अज़ान दे दी। फिर इक़ामत कही और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आगे बढ़ कर नमाज़ पढ़ा दी। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे तो रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या आप लोग नमाज़ अदा कर चुके हैं ?" अ़र्ज़ की गई : "जी हां या रसूलल्लाह।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "नमाज़ किस ने पढ़ाई ?" अ़र्ज़ की गई : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "أَحْسَنْتُمْ لَا يَنْبَغِيْ لِقَوْمٍ فِيْهِمْ أَبُوْبَكْرٍ أَنْ يَّؤُمَّهُمْ أَحَدٌ غَيْرَهُ" या'नी तुम ने बहुत अच्छा किया क्यूंकि जिस क़ौम में अबू बक्र हों उन में अबू बक्र के सिवा किसी और को इमाम बनाना जाइज़ नहीं।"

(اتحاف الخیرۃ المھرۃ، کتاب المناقب، باب فضائل ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۸۸۱۲، ج ۹، ص ۲۰۰، سنن الترمذی، کتاب المناقب عن رسول اللہ، فی مناقب ابی بکر وعمر، الحدیث: ۳۶۹۳، ج ۵، ص ۳۷۹)

www.dawateislami.net

इमामत करने का हुक्म

उम्मुल मोअमिनीन सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़बीअ़त ज़ियादा नासाज़ हो गई तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ की इत्तिलाअ़ देने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहो कि नमाज़ पढ़ाएं।" ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : "मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अबू बक्र बड़े रक़ीक़ुल क़ल्ब (नर्म दिल) हैं आप की जगह खड़े होते ही उन पर रिक़्क़त त़ारी हो जाएगी और लोगों को कुछ सुनाई न देगा। बेहतर है कि आप ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह हुक्म फ़रमाएं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर इरशाद फ़रमाया : "जाओ अबू बक्र से कहो कि नमाज़ पढ़ाएं।" ह़ज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से कहा कि आप भी बारगाहे रिसालत में येह गुज़ारिश करें।" उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अबू बक्र बहुत नर्म दिल आदमी हैं। आप की जगह नमाज़ नहीं पढ़ा सकेंगे।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम भी यूसुफ़ वाली औ़रतें हो, जाओ जा कर अबू बक्र से कहो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाए।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب عن رسول اللہ، باب فی مناقب ابی بکر وعمر، رقم الحدیث:۳۶۹۲، ج۵، ص۳۷۹)

तुम भी यूसुफ़ वाली औ़रतें हो

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान "तुम भी यूसुफ़ वाली औ़रतें हो" के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : (1) या तो येह है कि ऐ आ़इशा व ह़फ़्सा ! तुम दोनों कह कुछ रही हो और तुम्हारे दिल में कुछ है, या'नी तुम कह तो येह रही हो कि अबू बक्र को इमामत के लिये न कहूं कि येह नर्म दिल हैं और तुम्हारे दिल में येह है कि अगर अबू बक्र इमामत के लिये मुसल्ले पर खड़े होंगे तो लोग येह समझेंगे कि शायद रसूलुल्लाह का इन्तिक़ाल हो गया है। जैसा कि ज़ुलैख़ा ने

www.dawateislami.net

मिस्री औ़रतों को ब ज़ाहिर दा'वत के लिये बुलाया था लेकिन उस के दिल में कुछ और था। (2) या येह मुराद है कि जैसे मिस्र की औ़रतें ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام को उन की मरज़ी के ख़िलाफ़ अ़मल करने का कहती थी, वैसे ही तुम मुझ से मेरी मरज़ी के ख़िलाफ़ हुक्म सादिर कराना चाहती हो। (3) या येह मुराद है कि तुम भी मिस्र की औ़रतों की त़रह़ अपनी बात मनवाना चाहती हो। (نزهة القاری، کتاب الاذان، ج۲، ص۳۳۶)

रब और मोमिनों दोनों को ना मन्ज़ूर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़मआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मरजुल मौत ने जब शिद्दत इख़्तियार की, उस वक़्त मैं मुसलमानों की एक जमाअ़त के साथ मौजूद था, ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ के लिये अज़ान दी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जाओ और किसी से नमाज़ पढ़ाने के लिये कह दो।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : "मैं बाहर आया तो लोगों में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मौजूद थे अलबत्ता ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मौजूद न थे, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : उठिये और नमाज़ पढ़ाइये।" उन्हों ने उठ कर नमाज़ की इमामत शुरूअ़ की और तक्बीरे तह़रीमा कही। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आवाज़ त़बअ़न ज़ियादा ऊंची थी। इस लिये सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़ौरन सुन ली और सुनते ही इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र कहां हैं? (अबू बक्र के इलावा कोई और इमामत करवाए) येह बात न **अल्लाह** को मन्ज़ूर है न मोमिनों को।" चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुलाया। जब वोह आए तो नमाज़ पढ़ाई जा चुकी थी। इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ही लोगों की इमामत करवाई। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़मआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं मुझ से ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अफ़्सोस है तुम पर! मेरे साथ तुम ने क्या कर दिया? ऐ अ़ब्दुल्लाह! क़सम ब ख़ुदा जब तुम ने मुझे नमाज़ का कहा तो मैं समझा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे नमाज़

www.dawateislami.net

पढ़ाने का हुक्म दिया है वरना मैं कभी नमाज़ न पढ़ाता।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "ख़ुदा की क़सम ! मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी ख़ास आदमी के लिये हुक्म नहीं दिया था, मैं ने तो फ़क़त़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ग़ैर मौजूदगी में आप को ज़ियादा ह़क़दार समझ कर इमामत करने का कह दिया।"

(مسند امام احمد، حدیث عبداللہ بن زمعہ، الحدیث:۱۸۹۲۸، ج۲، ص۳۸۶)

सिद्दीक़े अक्बर का तक़र्रुर ब हैसिय्यते इमाम

9 रबीउ़ल अव्वल जुमुआ़ की रात को दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मरज़ुल वफ़ात ने शिद्दत इख़्तियार कर ली और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर इस के बाइस तीन 3 बार ग़शी त़ारी हो गई। इस वजह से नमाज़े इ़शा के लिये तशरीफ़ न ला सके। और इरशाद फ़रमाया : "مُرُوْا اَبَابَکْرٍ اَنْ یُّصَلِّیَ بِالنَّاسِ या'नी अबू बक्र को हुक्म दो कि वोह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।" (سیرت سید الانبیاء، ص۶۰۰)

सिद्दीक़े अक्बर ने कितनी नमाज़ें पढ़ाईं ?

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म के मुत़ाबिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जगह खड़े हो कर नमाज़ पढ़ाई और बाक़ी तीन दिनों की नमाज़े पंजगाना की इमामत भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ही कराई। इस त़रह़ नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़याते मुबारका में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सतरह नमाज़ों की इमामत फ़रमाई जिस का आग़ाज़ जुमुआ़ की रात की इ़शा की नमाज़ से था और आख़िरी नमाज़ 12 रबीउ़ल अव्वल की फ़ज्र की नमाज़ थी। (سیرت سید الانبیاء، ص۶۰۱)

रसूलुल्लाह ने बैठ कर नमाज़ अदा फ़रमाई

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने मरज़े वफ़ात में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पीछे बैठ कर नमाज़ अदा फ़रमाई।"

(سنن الترمذی، کتاب الصلوۃ، ماجاء اذا صلی الامام--- الخ، الحدیث:۳۶۲، ج۱، ص۳۷۷)

www.dawateislami.net

आख़िरी नमाज़ सिद्दीके़ अक्बर की इमामत में

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आलम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी आख़िरी नमाज़ लोगों के साथ एक कपड़े में लिपटे हुवे हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे अदा फ़रमाई । (سنن النسائی، کتاب الامامۃ، باب صلاۃ الامام خلف رجل، الحدیث: ۷۸۲، ص۱۳۷)

मज़्कूरा अहादीस की शर्ह़

अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मिरक़ातुल मफ़ातीह़ शर्हे़ मिश्कातुल मसाबीह़ में मज़्कूरा दोनों ह़दीसों को बयान करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो नमाज़ बैठ कर अदा फ़रमाई वोह हफ़्ता या इतवार की नमाज़े ज़ोहर थी और इस में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इमाम थे । जब कि वोह नमाज़ जो एक कपड़े में अदा फ़रमाई वोह पीर की नमाज़े फ़ज्र थी और इस नमाज़ की इमामत के फ़राइज़ सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सर अन्जाम दिये । वाज़ेह़ रहे कि येही वोह फ़ज्र की आख़िरी नमाज़ है जो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अदा फ़रमाई इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या से विसाल फ़रमा गए ।''

(مرقاۃ المفاتیح، کتاب الصلوۃ، باب ما علی الماموم من المتابعۃ وحکم المسبوق، الفصل الثالث، ج۳، ص۲۲۹)

नबी की अदा को अदा कर रहा हूं

हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते सिद्दीके़ अक्बर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बयान करती हैं मेरे वालिद (या'नी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) एक ही कपड़े में नमाज़ पढ़ रहे थे, ह़ालांकि इन के दीगर कपड़े भी रखे थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''बेटी ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे पीछे अपनी आख़िरी नमाज़ एक ही कपड़े में अदा फ़रमाई थी (या'नी मैं नबी की अदा को अदा कर रहा हूं) ।''

(مصنف ابن ابی شیبۃ، فی الصلوۃ فی الثوب الواحد، الحدیث: ۳۶، ج۱، ص۳۴۸)

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह का विसाले ज़ाहिरी

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब मस्जिदे नबवी से ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के हुजरए मुबारका में तशरीफ़ ले गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه मुत़्मइन हो गए कि अब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़बीअ़त बेहतर हो गई है। और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपने घर अ़लाक़ा "**सुन्ह़**" में तशरीफ़ ले गए जो मदीनए मुनव्वरा का नवाह़ी अ़लाक़ा कहलाता था। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी की ख़बर शहरे मदीना और इस के गिर्दो नवाह़ में तेज़ी से फैल गई और जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को येह ख़बर पहुंची तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़ौरन अपने घर से मस्जिदे नबवी तशरीफ़ ले आए। चुनान्चे,

अ़ज़ीम सानेह़ा पर सिद्दीके अक्बर का अ़ज़ीम सब्र

उम्मुल मोअमिनीन सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब दुन्या से पर्दा फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अ़लाक़ा "**सुन्ह़**" में मौजूद अपने घर से अपने घोड़े पर तशरीफ़ लाए और मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुवे, किसी से कोई भी बात किये बिग़ैर हमारे घर आ गए जहां दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जसदे मुबारक रखा था। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने चेहरए मुबारका से चादर हटाई, झुक कर इस का बोसा लिया और रोते हुवे इरशाद फ़रमाया : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां-बाप आप पर कुरबान ! **अल्लाह** तआ़ला आप पर दो मौतें जम्अ़ नहीं फ़रमाएगा, बस एक येही मौत है जो आप को आ चुकी।"

(جامع الاصول فی احادیث الرسول، الباب الثانی فی ذکر الخلفاء الراشدین، الحدیث: ۲۰۷۵، ج۴، ص۲۸، صحیح البخاری، کتاب المغازی، مرض النبی ووفاته، الحدیث: ۴۴۵۲، ۴۴۵۳، ج۳، ص۱۵۸)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर का नसीहत आमोज़ ख़ुत्बा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان शिद्दते ग़म से निढाल थे और किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या होगा। ऐसे में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बिखरे हुवे जज़्बात को यक्जा करने और शीराज़े इस्लाम को मुन्तशिर होने से बचाने के लिये एक ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया, जिस से तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को एक दिली सुकून मिल गया। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان शिद्दते ग़म से निढाल थे, ख़ुसूसन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ह़ालत सब से मुख़्तलिफ़ थी और वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात का इन्कार कर रहे थे। जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه लोगों से गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आते ही फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! बैठ जाओ।" मगर वोह न बैठे। तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه लोगों की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और नसीहत आमोज़ ख़ुत्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया :

فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ اللّٰهَ فَإِنَّ اللّٰهَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ

"या'नी तुम में से जो शख़्स रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़बादत करता था तो वोह सुन ले कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए हैं, और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता है तो वोह भी सुन ले कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं आएगी।" फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُؕ اَفَاۡىٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْؕ وَ مَنْ یَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَیْهِ فَلَنْ یَّضُرَّ اللّٰهَ شَیْــٴًـاؕ وَ سَیَجْزِی اللّٰهُ الشّٰكِرِیْنَ﴾ (پ۴، آل عمران:۱۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **मुह़म्मद** तो एक रसूल हैं इन से पहले और रसूल हो चुके तो क्या अगर वोह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या शहीद हों तो तुम उलटे पाउं फिर जाओगे और जो

www.dawateislami.net

उलटे पाउं फिरेगा अल्लाह का कुछ नुक़्सान न करेगा और अ़न क़रीब अल्लाह शुक्र वालों को सिला देगा।"

येह आयते मुबारका सुन कर लोगों को ऐसे लगा कि गोया ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस आयत को पढ़ने से क़ब्ल वोह इसे जानते ही न थे, येह आयत सुनते ही हर शख़्स येही आयत दोहराने लगा और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से येह आयते मुबारका सुन कर मैं ह़ैरान व शशदर रह गया और मुझ पर सक्ता त़ारी हो गया, मेरी टांगों ने मेरा साथ छोड़ दिया और मैं ज़मीन पर गिर गया। बहर ह़ाल आयते मुबारका सुन कर मुझे यक़ीन हो गया कि वाक़ेई आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या से तशरीफ़ ले जा चुके हैं।"

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، مرض النبی ووفاتہ، الحدیث: ۴۴۵۴، ج۳، ص ۱۵۸، عمدۃ القاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی، تحت الحدیث: ۴۴۵۳، ج۲۶، ص ۳۶۷)

सिद्दीक़े अक्बर के सदमे की कैफ़िय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब हम गुनहगारों के त़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी का सब से ज़ियादा ग़म ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को था क्यूंकि ۞ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वोह जां निसार साथी थे जो सब से पहले ईमान लाए थे ۞ हिजरत का सफ़र भी एक साथ ही किया था ۞ ग़ारे सौर में भी इकट्ठे रहे थे ۞ और मदीनए मुनव्वरा भी एक साथ ही पहुंचे थे ۞ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराज़ व हम नशीन थे ۞ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह अव्वलीन शख़्सिय्यत थे जिन के कानों में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़्क़े तर्जुमान से इस्लाम की आवाज़ सब से पहले पड़ी थी ۞ और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ही इस्लाम की तब्लीग़ को अपनी ह़यात का जुज़्ए लाज़िमी बना रखा था ۞ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब अपनी वफ़ाते ज़ाहिरी का इशारा फ़रमाया था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक बन्दे को दुन्या व आख़िरत का इख़्तियार दिया तो उस ने आख़िरत को पसन्द कर लिया, येह इशारा सिर्फ़ और सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही समझ

www.dawateislami.net

सके थे कि इस से सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़ात मुराद ली है और येह सुन कर ज़ारो क़ितार रोने लग गए और अ़र्ज़ किया कि : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर हमारी जानें, हमारा सब कुछ कुरबान।" येह तमाम बातें वाज़ेह़ करती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी का सब से बड़ा सदमा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही को था और वोह इस सदमे से निहायत ग़मगीन थे लेकिन इस के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने जज़्बात को मुन्तशिर न होने दिया।

सिद्दीक़े अक्बर का सब्रो ज़ब्त़

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के मौक़अ़ पर क़ुरआने मजीद की जो आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई और जिस अन्दाज़ से ख़ुत़्बा इरशाद फ़रमाया वोह इस बात की अ़क्कासी करता है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ निहायत ही साबिरो ज़ाबित़ थे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तकालीफ़ व आज़्माइशों के वक़्त अपने दिल पर क़ाबू पाने और मुतवाज़िन रहने की बेह़द क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमाई थी, सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़यात का सब से बड़ा सदमा था लेकिन इसे आप ने बड़ी हिम्मत से बरदाश्त किया, और अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने जज़्बात पर क़ाबू न रख पाते तो इस नाज़ुक वक़्त में कोई किसी को समझाने, सब्र की तल्क़ीन करने वाला न होता और हो सकता था कि ह़ालात बहुत ज़ियादा नाज़ुक हो जाते लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुस्बत रविय्ये से मुआ़मलात बिलकुल दुरुस्त हो गए और मुसलमानों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सब्रो शुक्र और अ़ज़्म व हिम्मत जैसी अ़ज़ीम ने'मतें अ़त़ा फ़रमाईं।

बारगाहे रिसालत में सिद्दीक़े अक्बर की ह़ाज़िरी

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ाज़िरे ख़िदमत हुवे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! सुवाल करो।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या मौत का वक़्त क़रीब आ गया ?" इरशाद फ़रमाया : "मौत का वक़्त क़रीब आ गया और

www.dawateislami.net

बहुत क़रीब आ गया।" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुबारक हो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये तय्यार कर रखा है। काश ! मैं जानता कि आप कहां जा रहे हैं ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़, फिर सिद्रतुल मुन्तहा की त़रफ़, फिर जन्नतुल मावा, अ़र्शे आ'ला और रफ़ीक़े आ'ला की त़रफ़, फिर ख़ुश गवार ज़िन्दगी से मिलने वाले हिस्से की त़रफ़।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ग़ुस्ल कौन देगा ?" इरशाद फ़रमाया : "मेरे घर के मर्दों में से सब से क़रीब तर।" अ़र्ज़ की : "आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को किन कपड़ों में कफ़न दें ?" फ़रमाया : "मेरे इन्ही कपड़ों में और यमनी चादर और मिस्री सफ़ेद कपड़ों में।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर नमाज़ का त़रीक़ा क्या होगा ?" फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रोने लगे और हम भी रो दिये तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बस करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए और तुम्हें अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से अच्छा बदला अ़त़ा फ़रमाए। जब तुम मुझे ग़ुस्ल व कफ़न दे चुको तो मुझे मेरे इसी हुजरे में चारपाई पर रख देना और चारपाई क़ब्र के किनारे रख कर कुछ देर के लिये बाहर चले जाना। सब से पहले मुझ पर मेरा रब عَزَّوَجَلَّ दुरूद (या'नी रह़मत) भेजेगा। ख़ुद इरशाद फ़रमाता है : ﴿هُوَ الَّذِیۡ یُصَلِّیۡ عَلَیۡکُمۡ وَ مَلٰٓئِکَتُهٗ﴾(پ۲۲،الاحزاب:۴۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोही है कि दुरूद भेजता है तुम पर वोह और उस के फ़िरिश्ते। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को मुझ पर दुआ़ए रह़मत की इजाज़त देगा। तमाम मख़्लूक़ में सब से पहले ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मुझ पर नमाज़ पढ़ेंगे (या'नी दुआ़ए रह़मत करेंगे), फिर ह़ज़रते मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام फिर ह़ज़रते इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام पढ़ेंगे। फिर ह़ज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام मलाइका के बड़े बड़े लश्करों के साथ आएंगे। फिर तुम मुझ पर गुरोह दर गुरोह आना और ख़ूब सलाम पेश करना और चीख़ो पुकार और रोने धोने से मुझे अज़िय्यत न पहुंचाना। और तुम में से जो इमाम हो वोह इब्तिदा करे फिर मेरे अहले बैत के क़राबत दार फिर ख़वातीन का गुरोह और फिर बच्चों का गुरोह।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की :

www.dawateislami.net

"आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को क़ब्रे अक़्दस में कौन उतारेगा ?" इरशाद फ़रमाया : "मेरे अहले बैत के क़रीबी लोग और इन के साथ बे शुमार मलाइका होंगे, तुम उन को न देख सकोगे मगर वोह तुम्हें देख रहे होंगे । उठो और मेरी त़रफ़ से बा'द वालों को सलाम पहुंचा दो ।" (احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت ومابعدہ، الباب الرابع فی وفاۃ رسول اللہ۔۔۔الخ، ج۵، ص۲۱۹)

विसाले सरकार और सह़ाबा का हुज़्नो मलाल

जब हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पर्दा फ़रमाया तो लोग मस्जिद में जम्अ़ हो गए और ग़म व अलम से सिसकियां ले ले कर रोने लगे और दुन्या तारीक हो गई । ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पुकारने लगे : "وَا نَبِيَّاهُ ऐ मेरे जलीलुल क़द्र नबी !" ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की फ़रयाद निकली : "وَا اَبَتَاهُ ऐ मेरे अ़ज़ीम बाप !" ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन व ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने सदा लगाई : "وَاجَدَّاهُ ऐ हमारे जद्दे करीम !" और हर मुसलमान ने ग़म व अलम में डूब कर कहा : "وَاحُزْنَاهُ हाए ! हमारा रन्जो अलम !" हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के विसाले पुर मलाल पर शिद्दते ग़म से ख़ुलफ़ाए राशिदीन अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखों से सैले अश्क रवां हो गया ।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुबल्लिग़े इस्लाम ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ शो'ऐब ह़रीफ़ीश رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं : इस दुन्या में रहने की त़म्अ़ क्यूं की जाती है ? ह़ालांकि नबिय्ये मुख़्तार, मह़बूबे ग़फ़्फ़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इस को छोड़ दिया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले पुर मलाल पर जिगर जल रहा है और पलकें आंसूओं में डूब रही हैं, सब्र हाथों से जा रहा है और आंसू बह रहे हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जुदाई की चोट ने तमाम मसाइब को कम कर दिया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रुख़्सत ने

www.dawateislami.net

दोस्तों की ज़िन्दगी बे कैफ़ कर दी। आंसूओं के हार को मुन्तशिर कर दिया। पस्लियों के दरमियान ग़म की आग रोशन कर दी। जमे हुवे आंसूओं को पिघला दिया और ग़म की बुझी हुई आग को भड़का दिया।

तो ऐ ग़मज़दा ! क्या हुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द भी इस दुन्या में हमेशा रहने की तमअ़ करता है? क्या तेरे लिये उन लोगों में इब्रत नहीं जिन्हें गुज़श्ता सालों में महीनों और ज़मानों ने ख़त्म कर दिया? क्या तेरे लिये उन लोगों में कोई ग़ौरो फ़िक्र नहीं जिन्हें तुझ से पहले मौत ने पछाड़ दिया। उन में से कोई बुढ्ढा था तो कोई अधेड़ उ़म्र, कोई नौजवान था तो कोई बच्चा जब कि कोई तो पैदा होते ही राहे आख़िरत पर चल पड़ा। क्या तू ने उन से इब्रत न पकड़ी जिन को तू ने क़ब्रों में दफ़्न किया जैसे दोस्त, अह़बाब, भाई और हमसाए वग़ैरा। तू कब तक मह़्ज़ दुन्यवी तअ़ल्लुक़ात की त़रफ़ मुतवज्जेह रहेगा? गोया तुझे मौत का यक़ीन नहीं! क्या मौत के मुतअ़ल्लिक़ तुझे मोहलत ने धोके में डाला या ज़माने (के ह़ालात) ने तुझ से धोका किया? तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम! मेरी नसीह़त क़बूल कर इस से पहले कि तेरी पेशानी अ़र्क़ आलूद हो, तुझ पर ह़ालते नज़्अ़ और ग़म की कैफ़िय्यत त़ारी हो और मुसलसल आंसू बहाए जाने लगें और तुझे अन्धेरी क़ब्र में डाल दिया जाए जिस में रोशनी बिल्कुल ज़ाहिर न होगी। उस में तो हर जान अपनी कमाई के बदले गिरवी रखी हुई होगी। क्या तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वाज़ेह़ आयाते मुबारका न सुनीं : ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾(پ۲۱، الاحزاب:۲۱) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है। क्या तुझे इस फ़रमाने इलाही ने न डराया? ﴿كُلُّ مَنْ عَلَیْهَا فَانٍ﴾(پ۲۷، الرحمن:۲۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है। क्या ज़माने ने तुझे नसीह़त न की और येह ख़ुदाई फ़ैसला न सुनाया? ﴿كُلُّ نَفْسٍ ذَآىِٕقَةُ الْمَوْتِ﴾(پ۴، آل عمران:۱۸۵) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान को मौत चखनी है। जब मक़ामे मह़मूद पर फ़ाइज़ होने वाली हस्ती صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी विसाल फ़रमा गई, जो **हौज़े कौसर** और **लिवाउल ह़म्द** के मालिक हैं और जिन के लिये बरोज़े क़ियामत शफ़ाअ़त का वा'दा है। तो तू क्या और तेरी ह़ालत कैसी? ऐ ठुकराए और धुतकारे हुवे इन्सान! तेरा सारा नामए आ'माल गुनाहों से सियाह है, तेरे आ'माल को ठुकरा दिया गया है। ऐ फ़ानी ज़माने से धोका खाने वाले और बे क़ुसूरों पर मज़ालिम ढाने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

की क़सम ! ज़ुल्म बहुत बुरा है । ऐ लोगों को अपने ज़ुल्म से डराने वाले ! कल बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सब मज़्लूम (बदला लेने के लिये) जम्अ़ होंगे ।

मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

ऐ मेरे भाइयो ! तुम्हें रग़बत दिलाई गई लेकिन तुम राग़िब न हुवे । तुम्हें ख़ौफ़ दिलाया गया लेकिन तुम मरऊ़ब न हुवे । मौत ने तुम से पहलों को हड़प कर के तुम्हें बेदार किया लेकिन तुम बेदार न हुवे । कु़रआने ह़कीम ने तुम्हें नसीह़त की लेकिन तुम बुराई से बाज़ न आए, न नसीह़त ह़ासिल की । गोया कूच का नक़्क़ारा बजाने वाला तुम्हारी मह़ाफ़िल में निदा दे रहा है : "ऐ सोने वालो ! ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाओ, तुम्हारा बुलावा आ गया है और पुकार रहा है :

जनाज़ा आगे बढ़ कर कह रहा है ऐ जहां वालो !
मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं

क्या मह़बूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल से भी तुम ने कोई इ़ब्रत न पकड़ी ? क्या तुम्हें इस ज़बरदस्त चोट लगने से भी कोई नसीह़त न मिली ? क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ ले जाने से भी तुम्हें अपनी बेहोशी के नशे से इफ़ाक़ा न हुवा ? क्या तुम्हारी मौत के क़रीब होने ने तुम्हें सोच में मुब्तला न किया ? क्या तुम ने अपने से पहले शुरफ़ा की मौत से इ़ब्रत ह़ासिल न की ? क्या तुम्हें अपने मां-बाप और बच्चों को दफ़्न कर के भी ह़सरत त़ारी न हुई ? तुम कैसे लज़्ज़ात से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते हो ह़ालांकि हमारे साह़िबे मो'जिज़ात आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "اِنَّ لِلْمَوْتِ سَکَرَاتٍ या'नी मौत की सख़्तियां बहुत हैं ।" (صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب مرض النّبی ووفاتہ، الحدیث: ۴۴۴۹، ج۳، ص۱۵۷) क्या तुम्हारी ऐ़शो इ़शरत वाली ज़िन्दगी की मिठास कड़वी न हुई ? जब फ़ौत होने वाले ने मौत के वक़्त कहा : "وَاکَرْبَاہُ हाए ! मौत की सख़्ती ।" क्या तुम्हें ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दर्द ने न रुलाया ? जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने वालिदे मोह़तरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल पर कहा : "وَاکَرْبِیْ بِکَرْبِکَ، یَا اَبَتَاہُ या'नी ऐ मेरे अब्बा जान !

www.dawateislami.net

आप की तक्लीफ़ से मुझे कितना ग़म हुवा !" कहां हैं अ़क़्ल वाले ? कहां हैं वोह जो अहम कामों में मश्ग़ूल रहते थे ? कहां हैं जो इस फ़ानी घर में हमेशा रहने के धोके में मुब्तला थे ? जब कि महबूबे ख़ुदा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी इस दुन्या से विसाल फ़रमा गए।

(الروض الفائق، المجلس السادس والاربعون، فی وفاۃ النبی، ص ۲۶۴)

अम्बिया को भी अजल आनी है, मगर ऐसी कि फ़क़त़ आनी है
इसी आन के बा'द उन की ह़यात, मिस्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है
रूह़ तो सब की है ज़िन्दा उन का, जिस्मे पुर नूर भी रूह़ानी है
औरों की रूह़ हो कितनी ही लत़ीफ़, उन के अजसाम की कब सानी है !
पाउं जिस ख़ाक पे रख दें वोह भी रूह़ है पाक है नूरानी है
उस की अज़्वाज को जाइज़ है निकाह़, उस का तर्का बटे जो फ़ानी है
येह हैं ह़य्ये अबदी उन को रज़ा, सिद्क़े वा'दा की क़ज़ा मानी है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रसूलुल्लाह की वफ़ात कब हुई ?

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** में इरशाद फ़रमाते हैं : "और तह़क़ीक़ येह है कि (तारीख़े वफ़ात) ह़क़ीक़तन ब ह़स्बे रुइय्यते मक्कए मुअ़ज़्ज़मा रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की तेरहवीं थी, मदीनए त़य्यिबा में रुइय्यत न हुई लिहाज़ा उन के ह़िसाब से बारहवीं ठहरी। वोही रिवात ने अपने ह़िसाब से रिवायत की और मश्हूर व मक़्बूले जमहूर हुई। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 26, स. 417)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

इमामते कुब्रा, ख़िलाफ़त का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब मक्का से मदीनए मुनव्वरा हिजरत फ़रमाई और वहीं मुस्तक़िल रिहाइश की तरकीब बना ली तो तमाम इन्तिज़ामी उमूर आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ुद ही देखा करते थे और येह सल्त़नते मुस्त़फ़ा न सिर्फ़ मदीना बल्कि पूरे अ़रब पर मुह़ीत़ थी। उस वक़्त तक़रीबन पूरे अ़रब में ही इस्लाम फैल चुका था और तमाम मुसलमान निहायत ही इत्तिह़ाद व इत्तिफ़ाक़ और इन्तिहाई शीराज़ बन्दी के साथ ज़िन्दगी बसर कर रहे थे और आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द इन की इस मदनी ज़िन्दगी से यहूदी, ईसाई और दूसरे ग़ैर मुस्लिम हर वक़्त ख़ौफ़ज़दा रहते थे और मुसलमानों से बेह़द मरऊ़ब थे। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द अब वोह देख रहे थे कि मुसलमानों का क्या ह़ाल होगा और इन के इन्तिज़ामी उमूर का सर-बराह कौन होगा ? क्या मुसलमान अपने आप को इस सदमे में संभाल पाएंगे या नहीं ? लेकिन उन्हें क्या मा'लूम था कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सफ़र व ह़ज़र के साथी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमानों में मौजूद हैं और कुरआने पाक की कई आयाते मुबारका और सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कई अह़ादीसे त़य्यिबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त पर दलालत करती हैं। चुनान्चे,

आयाते मुबारका और ख़िलाफ़ते सिद्दीके़ अक्बर

पहली आयते मुबारका

अ़ल्लामा इब्ने अबी ह़ातिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल ह़मीद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत की है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की ख़िलाफ़त का ज़िक्र **किताबुल्लाह** में मरक़ूम है। फिर इन्हों ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَیَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِی الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَ لَیُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِیْنَهُمُ الَّذِی ارْتَضٰى لَهُمْ وَ لَیُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ یَعْبُدُوْنَنِیْ لَا یُشْرِكُوْنَ بِیْ شَیْــٴًـا ؕ وَ مَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ۝۵۵﴾ (پ۱۸، النور: ۵۵)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "**अल्लाह** ने वा'दा दिया उन को जो तुम में से ईमान लाए और अच्छे काम किये कि ज़रूर उन्हें ज़मीन में ख़िलाफ़त देगा जैसी उन से पहलों को दी और ज़रूर उन के लिये जमा देगा उन का वोह दीन जो उन के लिये पसन्द फ़रमाया है और ज़रूर उन के अगले ख़ौफ़ को अम्न से बदल देगा मेरी इबादत करें मेरा शरीक किसी को न ठहराएं और जो इस के बा'द नाशुक्री करे तो वोही लोग बे हुक्म हैं।"

तफ़्सीरे इब्ने कसीर में है कि येह आयते करीमा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त पर सादिक़ आती है।

(تفسیر ابن کثیر، تحت سورۃ النور، الآیۃ:۵۵، ج۶، ص۷۱، تاریخ الخلفاء، ص۵۰)

दूसरी आयते मुबारका

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अ़याश رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बिला शुबा क़ुरआने पाक की रू से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा हैं। फिर आप ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِیْنَ الَّذِیْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ وَ اَمْوَالِهِمْ یَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا وَّ یَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَۚ۝۸﴾ (پ۲۸، الحشر:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "उन फ़क़ीर हिजरत करने वालों के लिये जो अपने घरों और मालों से निकाले गए **अल्लाह** का फ़ज़्ल और उस की रिज़ा चाहते और **अल्लाह** व रसूल की मदद करते वोही सच्चे हैं।"

फिर फ़रमाया : "जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सादिक़ फ़रमाया हो वोह झूट नहीं बोल सकता।"

तीसरी आयते मुबारका

﴿قُلْ لِّلْمُخَلَّفِیْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰی قَوْمٍ اُولِیْ بَاْسٍ شَدِیْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ یُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِیْعُوْا یُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَ اِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّیْتُمْ مِّنْ قَبْلُ یُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا۝۱۶﴾ (پ۲۶، الفتح:۱۶)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "इन पीछे रह गए हुवे गंवारों से फ़रमाओ अ़न क़रीब तुम एक सख़्त लड़ाई वाली क़ौम की त़रफ़ बुलाए जाओगे कि उन से लड़ो या वोह मुसलमान हो जाएं फिर अगर तुम फ़रमान मानोगे अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब देगा और अगर फिर जाओगे जैसे फिर गए तो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा।"

ह़ज़रते इब्ने अबी ह़ातिम और इब्ने कुतैबा رحمۃ اللہ تعالی علیہما फ़रमाते हैं कि "येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त पर वाज़ेह़ हुज्जत है, क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ही उन्हें लड़ाई की त़रफ़ बुलाया।"

ह़ज़रते शैख़ अबुल ह़सन अल अश्अ़री फ़रमाते हैं कि : "मैं ने अबुल अ़ब्बास इब्ने शरीह़ को येह फ़रमाते हुवे सुना कि क़ुरआने पाक की इस आयत में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त का वाज़ेह़ ए'लान है।" आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "क्यूंकि अहले इ़ल्म का इस पर इजमाअ़ है कि इस आयत के नुज़ूल के बा'द कोई ऐसी जंग नहीं हुई जिस की त़रफ़ औरों ने बुलाया हो सिवाए ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बुलाने के कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को मुर्तद्दीन और मानेईने ज़कात से लड़ाई की दा'वते आ़म दी। लिहाज़ा येह आयते मुक़द्दसा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के वाजिब होने पर दलालत करती है क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह फ़रमाया है कि जो इस से रूगर्दानी करेगा उसे सख़्त अ़ज़ाब में झोंक दिया जाएगा।"

तफ़्सीरे इब्ने कसीर में है कि जो "القوم" की तफ़्सीर येह बयान करते हैं कि इस से मुराद अहले फ़ारस और अहले रूम हैं तब भी इस आयत का मिस्दाक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही ठहरते हैं क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की त़रफ़ लश्कर कुशी फ़रमाई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द इस अम्र की तक्मील ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म व ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के हाथ मुबारक पर हुई। येह दोनों ह़ज़रात ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़र्अ़ हैं। (تاریخ الخلفاء، ص ۴۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अह़ादीसे मुबारका और ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर

अबू बक्र व उ़मर की पैरवी करना

इमाम तिर्मिज़ी और इमाम ह़ाकिम رَحْمَةُاللهِ تعالى عَلَيْهِما ने ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मेरे बा’द अबू बक्र और उ़मर की पैरवी करना।”

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، فی مناقب ابی بکر وعمر، الحدیث: ۳۶۸۲، ج۵، ص ۳۷۴، المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، احادیث فضائل الشیخین، الحدیث: ۴۵۰۸، ج۴، ص ۲۲)

सब दरवाज़े बन्द कर दो

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا يَبْقَيَنَّ فِي الْمَسْجِدِ بَابٌ اِلَّا سُدَّ اِلَّا بَابُ اَبِي بَكْرٍ या’नी मस्जिद में अबू बक्र सिद्दीक़ के दरवाज़े के इलावा सारे दरवाज़े बन्द कर दो।”

(صحیح البخاری، کتاب الصلوۃ، باب الخوخۃ والممر فی المسجد، الحدیث: ۴۶۶، ج ۱، ص ۱۷۷)

उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि येह ह़दीसे मुबारका आप رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िलाफ़त की त़रफ़ इशारा करती है क्यूंकि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ उस दरवाज़े से तशरीफ़ ला कर मुसलमानों को नमाज़ पढ़ाया करेंगे। (تاریخ الخلفاء، ص ۴۶)

सिद्दीक़े अक्बर पर ए’तिमाद

ह़ज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़्इ़म رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि एक औ़रत अपनी किसी ह़ाजत की वजह से बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुई तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे दोबारा आने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। वोह कहने लगी : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर मैं दोबारा आऊं और आप को न पाऊं तो ?” गोया वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुन्या से पर्दा फ़रमाने का ज़िक्र कर रही थी। सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “अगर तू मुझे न पाए तो अबू बक्र के पास चली जाना।”

(صحیح البخاری، فضائل اصحاب النبی، قول النبی لو کنت متخذا خلیلا، الحدیث: ۳۶۵۹، ج ۲، ص ۵۱۸)

www.dawateislami.net

ख़िलाफ़्त के ह़क़्दार, सिद्दीक़े अक्बर

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मरज़े वफ़ात में मुझे इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र और उन के बेटे को बुला लाओ ताकि मैं उन्हें परवानए (ख़िलाफ़त) लिख दूं, मुझे ख़ौफ़ है कि कोई तमन्ना करने वाला अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार करते हुवे येह न कह दे कि मैं ज़ियादा ह़क़्दार हूं क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और मुसलमान अबू बक्र के सिवा किसी से राज़ी न होंगे ।"

(صحیح مسلم، فضائل الصحابہ، من فضائل ابی بکر الصدیق، الحدیث:۲۳۸۷، ص۱۳۰۱)

अपने सदक़ात किसे पेश करें ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि बनू मुस्त़लक़ ने मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास भेजा ताकि मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त करूं कि हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द अपने सदक़ात किसे पेश करें ? मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और येही पूछा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र सिद्दीक़ को ।"

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، امر النبی لابی بکر بامامۃ الناس فی الصلوۃ، الحدیث:۴۵۱۷، ج۴، ص۲۶)

रसूलुल्लाह किसे ख़लीफ़ा मुन्तख़ब फ़रमाते ?

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा गया कि अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी ह़याते त़य्यिबा में सराह़तन किसी को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब फ़रमाते तो किसे फ़रमाते ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ।" अ़र्ज़ किया

www.dawateislami.net

गया : "इन के बा'द किसे बनाते ?" फ़रमाया : "हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को।" अर्ज़ किया गया : "इन के बा'द किसे बनाते ?" फ़रमाया "हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को।"

ख़िलाफ़त की वसिय्यत

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि इन्हों ने सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपने दर्दे सर का ज़िक्र करते हुवे कहा : "हाए मेरा सर !" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ आइशा ! अगर ऐसा हो कि तुम्हारा इन्तिक़ाल मुझ से पहले हो जाए और मैं ज़िन्दा रहूं तो मैं तुम्हारे लिये दुआ़ व इस्तिग़फ़ार करूंगा।" हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : "क्या मैं येह गुमान करूं कि आप मेरे इन्तिक़ाल को पसन्द फ़रमा रहे हैं ताकि जैसे ही मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो आप अपनी दीगर अज़्वाज के साथ वक़्त गुज़ारें।" रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "नहीं ! मेरे तो अपने सर में दर्द हो रहा है। मैं ने तो येह इरादा किया है कि अबू बक्र और इन के बेटे को बुला कर अ़हद ले लूं (या'नी उन्हें ख़िलाफ़त की वसिय्यत कर दूं) वरना कहने वाले कहेंगे (कि फ़ुलां को ख़लीफ़ा बना दो या फ़ुलां को, या मुझे ही बना दो) और तमन्ना करने वाले तमन्ना करेंगे (कि काश मुझे ख़लीफ़ा बना दिया जाए, तो येह ख़िलाफ़त का मुआ़मला शदीद झगड़े का सबब बन जाएगा)। मैं ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** और मुसलमान हज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा किसी से राज़ी न होंगे।"

(صحیح البخاری، کتاب المرضی، قول المریض انی وجع اووا راساہ۔۔۔الخ، الحدیث: ۵۶۶۶، ج۴، ص۱۱)

अबू बक्र के सिवा कोई मन्ज़ूर नहीं

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मरज़ में इज़ाफ़ा हुवा तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से इरशाद फ़रमाया : "मेरे पास हड्डी या लकड़ी की कोई तख़्ती लाओ मैं अबू बक्र के लिये ऐसी चीज़

www.dawateislami.net

लिख दूं जिस में कोई इख़्तिलाफ़ न कर सके।" जब ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जाने के लिये खड़े हुवे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! रहने दो **अल्लाह** और मुसलमान अबू बक्र पर इख़्तिलाफ़ करने से इन्कार कर देंगे।"

(مسند امام احمد، مسند السیدہ عائشۃ رضی اللہ تعالی عنہا، الحدیث: ۲۴۲۵۴، ج۹، ص ۳۰۰)

सब से पहले ख़लीफ़ा, सिद्दीके़ अक्बर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने इरशाद फ़रमाया : "नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या से तशरीफ़ ले जाने से पहले मुझ से इस बात का अ़हद लिया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ा हों फिर इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर इन के बा'द मैं।"

(الریاض النضرۃ، ج۱، ص۵۵)

हम दुन्यवी उमूर में सिद्दीके़ अक्बर से राज़ी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने इरशाद फ़रमाया : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लोगों की इमामत का हुक्म दिया, मैं उस वक़्त मौजूद था मुझे कोई बीमारी भी नहीं थी (मगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इमामत का हुक्म नहीं दिया इस लिये) हम दुन्यावी उमूर के लिये उस शख़्सिय्यत के इन्तिख़ाब पर राज़ी हो गए जिस पर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमारे लिये दीनी उमूर में रिज़ा मन्दी का इज़्हार फ़रमा दिया।"

(کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل الصدیق، الحدیث: ۳۵۲۲۵، ج۲، الجزء۱۲، ص ۲۳۰، تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص ۲۶۵)

आप की ख़िलाफ़त के दो साल

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया :

www.dawateislami.net

"या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं अपनी ज़ात में ऐसी बातें पाता हूं जो लोगों की ना पसन्दीदा हैं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! तुम्हें ज़रूर लोगों के उमूर से वासित़ा पड़ेगा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने अपने सीने में दो निशान भी देखे हैं। इरशाद फ़रमाया : "(इन दोनों से मुराद ख़िलाफ़त के) दो साल हैं।" (الطبقات الکبری لابن سعد، ذکر الغار والھجرۃ الی المدینہ، ج۳، ص ۱۳۲، تاریخ الخلفاء، ص ۴۸)

तरतीबे ख़िलाफ़त

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द किस को अमीर बनाएं ?" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम अबू बक्र को अमीर बनाओ तो उन को दुन्या में अमीन और ज़ाहिद पाओगे और आख़िरत में रग़बत करने वाला। और अगर तुम उ़मर को अमीर बनाओ तो उन को क़वी, अमीन पाओगे और वोह अल्लाह तआ़ला के मुआ़मले में किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा नहीं करेंगे। अगर तुम उ़स्मान को अमीर बनाओ तो उन को दलील व हुज्जत के साथ क़ाइम पाओगे। और अगर तुम अ़ली को उमूर का वाली बनाओ तो उन को हादी व महदी पाओगे।"

(مشکوۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب العشرۃ، الفصل الثالث، الحدیث: ۶۱۳۳، ج۳، ص ۳۶۷)

मुख़्तलिफ़ अक़्वाल और ख़िलाफ़ते सिद्दीके़ अक्बर

ख़िलाफ़ते सिद्दीके़ अक्बर और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने कुछ लोग खाना तनावुल कर रहे थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों के आख़िर में बैठे हुवे एक शख़्स को आंख का इशारा किया और फ़रमाया : "तुम साबिक़ा किताबों में क्या पाते हो ?" उस

www.dawateislami.net

शख़्स ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ होंगे ।"

(تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۳۰، ص ۲۹۶، الخصائص الکبری، اختصاصہ بذکر اصحابہ فی الکتب السابقۃ، ج ۱، ص ۵۲)

खिलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

इमाम हाकिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि मुसलमान जिसे बेहतर समझें वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बेहतर है और जिसे मुसलमान बुरा समझें वोह **अल्लाह** के नज़्दीक बुरा है । तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा बनाने का मश्वरा दिया ।

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، یتجلی اللہ لعبادہ عامۃ ولابی بکر خاصۃ، الحدیث: ۴۵۲۲، ج ۴، ص ۲۸)

खिलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर और हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

इमाम हाकिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने खिलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर को बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ग़ौर से सुन लो ! हम ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ही खिलाफ़त का अहल समझा है ।"

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، امر النبی لابی بکر بامامۃ الناس فی الصلوۃ، الحدیث: ۴۵۱۹، ج ۴، ص ۲۷)

खिलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर और हज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़लीफ़ए रसूल होने में शक नहीं करते थे । वोह तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को "**या ख़लीफ़तुर्रसूल**" कह कर पुकारते थे । वोह ख़ता और गुमराही पर जम्अ़ नहीं हो सकते थे । (تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۳۰، ص ۲۹۷)

www.dawateislami.net

ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ज़ुबैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में भेजा ताकि मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से चन्द चीज़ों के बारे में सुवाल करूं। मैं ने आप से गुज़ारिश की, कि लोगों के इस इख़्तिलाफ़ के बारे में मुझे तसल्ली बख़्श जवाब दें कि : "क्या हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा बनाया था ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह सुन कर सीधे हो कर बैठ गए और इरशाद फ़रमाया : "इस में कोई शक वाली बात है क्या ? तेरे वालिद का साया तुझ पर न रहे, क़सम है उस ज़ाते बर ह़क़ की जिस के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही तो सब से ज़ियादा इ़ल्म वाले और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त रखने वाले और उस ज़ाते बर ह़क़ से ख़ूब डरने वाले थे, अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें ख़िलाफ़त का हुक्म इरशाद न फ़रमाते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर इस ख़िलाफ़त में मौत आना बहुत शदीद होता।"

(اسد الغابۃ، عبد اللہ بن عثمان ابو بکر، خلافتہ، ج۳، ص۳۳۶، تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۲۹۷)

ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर और इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

इमाम बैहक़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इमाम ज़ा'फ़रानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत की है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को येह फ़रमाते सुना कि : "लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त पर इजमाअ़ कर लिया है इस की तफ़्सील यूं है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان परेशान हो गए ता हम उन्हों ने आस्मान की छत के नीचे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ज़ियादा बेहतर कोई हस्ती न पाई लिहाज़ा उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी गर्दनों का मालिक बना दिया।"

(معرفۃ السنن والآثار للبیہقی، ما یستدل بہ علی صحۃ اعتقاد الشافعی، ج۱، ص۱۱۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा आयात व अहादीस और मुख़्तलिफ़ अक़्वाल से येह बात रोज़े रोशन की त़रह़ इयां हो जाती है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द अगर कोई शख़्सिय्यत ख़िलाफ़त व नियाबत की मुस्तहि़क़ थी तो वोह सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ाते मुबारका थी।

मुहाजिरीन व अन्सार की फ़ज़ीलत

कुफ़्फ़ारे मक्का के ज़ुल्मो सितम से तंग आ कर जिन मुसलमानों ने मदीने की त़रफ़ हिजरत की उन्हें **"मुहाजिरीन"** कहा जाता है और मदीने में रहने वाले वोह मुसलमान जिन्हों ने इन मुहाजिरीन मुसलमानों की मदद की उन्हें **"अन्सार"** कहा जाता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन की फ़ज़ीलत, इन सब से अपनी रिज़ामन्दी और आ'ला इन्आ़मो इकराम को अपने पाक कलाम क़ुरआने मजीद में ख़ुद बयान फ़रमाया है।

चुनान्चे, पारह 11, सूरतुत्तौबा, आयत 100 में है :

﴿وَ السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِیْنَ وَ الْاَنْصَارِ وَالَّذِیْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍۙ
رَّضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًاؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ﴿۱۰۰﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और सब में अगले पहले मुहाजिर और अन्सार और जो भलाई के साथ उन के पैरू (पैरवी करने वाले) हुवे **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी और उन के लिये तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें हमेशा हमेशा उन में रहें येही बड़ी कामयाबी है।"

त़बई व फ़ित़री मैलान

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह बात मुसल्लमा है कि फ़ित़री त़ौर पर जब किसी अमारत, मन्सब या ओ़हदे की बात आ जाए तो इन्सान की त़बीअ़त इस बात की त़रफ़ माइल होती है कि मुझे येह ए'ज़ाज़ मिले, या मेरे घर वालों, रिश्तेदारों में से किसी को मिल जाए या कम अज़ कम मेरे क़बीले ही के किसी फ़र्द को मिल जाए, ख़ुसूसन येह बात ज़ेहनी त़ौर पर उस वक़्त ज़ियादा पुख़्ता हो जाती है जब उस में ऐसी ग़ैर मा'मूली बातें हों जो उसे दूसरों से मुमताज़ करती हों।

www.dawateislami.net

अन्सार व मुहाजिरीन में इख़्तिलाफ़ और इस की वजह

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द ख़िलाफ़त व बैअ़त के मुआ़मले में अन्सार व मुहाजिरीन दोनों में कुछ इख़्तिलाफ़ पैदा हो गए। क्यूंकि मुसलमान हमेशा सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रहनुमाई में ज़िन्दगी गुज़ारते आए थे और अब जब कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या से ज़ाहिरी पर्दा फ़रमा लिया था तो मुसलमानों के लिये येह बहुत ही आज़माइश का वक़्त था, इस लिये तमाम मुसलमान जल्द अज़ जल्द किसी को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करना चाहते थे ताकि आगे उसी की रहनुमाई में सारे मुआ़मलात ब त़रीक़े अह़सन निमटाए जा सकें। मुहाजिरीन व अन्सार दोनों का मौक़िफ़ येही था कि ख़लीफ़ा इन ही में से हो क्यूंकि दोनों में कई ऐसी बातें थीं जिन्हें इम्तियाज़ी हैसिय्यत ह़ासिल थी। चुनान्चे,

मुहाजिरीन मुसलमानों का इम्तियाज़

मुहाजिरीन मुसलमानों का इम्तियाज़ येह था कि ۞ इन्हों ने सब से पहले इस्लाम क़बूल किया ۞ इन की सब से बड़ी सआ़दत येह थी कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले बैत और दीगर रिश्तेदार भी इन ही में थे ۞ इन्हों ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का उस वक़्त साथ दिया जब कुफ़्फ़ार हर त़रह़ से आप के मुख़ालिफ़ हो चुके थे ۞ अन्सार को भी इन ही मुहाजिरीन के सबब इस्लाम की दौलत नसीब हुई ۞ अन्सार को इस्लाम की ता'लीमात देने वाले भी येही मुहाजिरीन थे ۞ अन्सार की आपस की दुश्मनियां इन ही के सबब ख़त्म हुईं ۞ अगर ख़लीफ़ा कोई और हुवा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ौम किसी ग़ैर के तह़्त हो जाएगी जो किसी त़रह़ भी रवा नहीं। वग़ैरा वग़ैरा

अन्सार मुसलमानों का इम्तियाज़

जब कि अन्सार मुसलमानों का इम्तियाज़ येह था कि ۞ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अपनी क़ौम ने आप की तक्ज़ीब की लेकिन अन्सार ने आप की तस्दीक़ की

www.dawateislami.net

❁ रसूलुल्लाह की क़ौम ने आप का साथ न दिया लेकिन इन्हों ने साथ दिया और मदद की ❁ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दीगर मुसलमानों को जब मक्कए मुकर्रमा से निकाल दिया गया तो अन्सार ने ही इन को पनाह दी ❁ मक्कए मुकर्रमा के मुसलमान जब हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा आए थे तो अक्सर बे सरो सामान थे उस वक़्त अन्सार ने ही अपने माल के ज़रीए मुसलमानों की माली मुआवनत की ❁ कुफ़्फ़ारे मक्का की इस्लाम दुश्मनी और उन की त़रफ़ से दी जाने वाली तकालीफ़ के सबब जब मुसलमानों के दिल टूटे हुवे थे तो उस वक़्त अन्सार ने ही उन की ढारस बन्धाई और उन्हें हौसला दिया। वग़ैरा वग़ैरा

फ़ज़ीलते अन्सार ब ज़बाने हबीबे परवर दगार

अन्सार की फ़ज़ीलत बयान करते हुवे ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَوْلَا الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَأً مِنَ الْاَنْصَارِ अगर मैं हिजरत न करता तो अन्सार में से होता और لَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا وَشِعْبًا لَسَلَكْتُ وَادِيَ الْاَنْصَارِ وَشِعْبَهَا अगर एक वादी और घाटी में दीगर लोग हों और दूसरी में अन्सार हों तो मैं अन्सार की वादी और घाटी में जाऊंगा। اَلْاَنْصَارُ شِعَارٌ وَالنَّاسُ دِثَارٌ और अन्सार मेरे नज़्दीक उन ह़क़ीक़ी कपड़ों की मानिन्द हैं जो जिस्म के साथ मिले होते हैं जब कि दीगर लोग उन कपड़ों के ऊपर पहने जाने वाले इज़ाफ़ी कपड़ों की त़रह़ हैं !

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، غزوۃ الطائف، الحدیث: ۴۳۳۰، ج۳، ص۱۱۶)

मुहाजिरीन व अन्सार में इख़्तिलाफ़ की ह़क़ीक़ी वजह

अन्सार व मुहाजिरीन दोनों में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان थे, इस लिये सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के पाकीज़ा नुफ़ूस को सामने रखते हुवे मोह़तात़ क़ौल येही है कि इस इख़्तिलाफ़ की ह़क़ीक़ी वजह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नियाबत जैसी अ़ज़ीम ने'मत का ह़ुसूल था न कि दुन्यवी ज़ैबो ज़ीनत जैसी ख़सीस शै की त़रफ़ मैलान।

www.dawateislami.net

सक़ीफ़ा बनू सा'दा में अन्सार का मश्वरा

मुहाजिरीन मुसलमान तो सब के सब हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त पर राज़ी थे, लेकिन मस्अलए ख़िलाफ़त पर मज़ीद ग़ौरो फ़िक्र के लिये अन्सार के बा'ज़ लोगों का मश्वरा सक़ीफ़ा बनी सा'दा में शुरूअ़ हो गया ताकि वोह अपने क़बीले की सब से बड़ी मो'तमद शख़्सिय्यत हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा बनाने के मुतअ़ल्लिक़ कोई फ़ैसला कर सकें। येह मुसलमानों के लिये बहुत नाज़ुक वक़्त था क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मुतअ़द्दिद अकाबिर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان उस वक़्त मस्जिदे नबवी में बैठे थे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस बहुत बड़े सदमे के मुतअ़ल्लिक़ मसरूफ़े गुफ़्तगू थे। जब इन्हें अन्सार के सक़ीफ़ा बनी सा'दा के मश्वरे के मुतअ़ल्लिक़ इल्म हुवा तो हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया : ऐ अबू बक्र ! हमें अपने अन्सार भाइयों के पास जाना चाहिये। ताकि वोह जल्द बाज़ी में कोई ऐसा फ़ैसला न कर बैठें जो मुसलमानों के हक़ में ठीक साबित न हो। चुनान्चे, येह तीनों अकाबिर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان सक़ीफ़ा बनी सा'दा में होने वाले अन्सार के मश्वरे की त़रफ़ तशरीफ़ ले गए।

सक़ीफ़ा बनू सा'दा क्या है ?

इस से मुराद क़बीलए बनू सा'दा का वोह चबूतरा है जिस पर बैठ कर वोह लोग फ़ैसला वग़ैरा किया करते और दीगर मुख़्तलिफ़ उमूर पर तबादिलए ख़याल भी किया करते थे और येह वोह मुबारक चबूतरा है जिसे सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत का शरफ़ ह़ासिल हुवा है। चुनान्चे, एक दिन इसी चबूतरे पर हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने अस्ह़ाब के साथ रौनक़ अफ़रोज़ थे। आप ने हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया कि हमें पानी पिलाओ। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक पियाले में आप को पानी

www.dawateislami.net

पिलाया । ह़ज़रते अबू ह़ाज़िम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि हम लोग ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के यहां मेहमान हुवे तो इन्हों ने वोही पियाला हमारे वासिते़ निकाला और बरकत ह़ासिल करने के लिये हम लोगों ने उसी पियाले में पानी पिया । उस पियाले को उमवी ख़लीफ़ए आ़दिल ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मांग कर अपने पास रख लिया ।

(صحیح مسلم، کتاب الاشربۃ، باب اباحۃ النبیذ الخ، الحدیث: ۲۰۰۷، ص ۱۱۱۲، عمدۃ القاری، کتاب المحاربین، باب رجم الحبلی من الزنی، تحت الحدیث: ۶۸۳۰، ج ۱۶، ص ۲۵۶)

तीनों अकाबिर सह़ाबा की सक़ीफ़ा बनू सा'दा आमद

जैसे ही येह तीनों अकाबिर हस्तियां सक़ीफ़ा बनी सा'दा पहुंचीं तो देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ चादर ओढ़े वहां तशरीफ़ फ़रमा हैं । आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उस वक़्त बीमार थे । अन्सार आप तीनों को देख कर बहुत मुतह़य्यिर हुवे और ख़ामोश हो गए । थोड़ी देर बा'द इन में से एक शख़्स ने उठ कर अन्सार की ता'रीफ़ व तौसीफ़ शुरूअ़ कर दी, जिस का लुब्बे लुबाब येही था कि ख़िलाफ़त अन्सार का ह़क़ है और येह ह़क़ अन्सार को ही मिलना चाहिये । जब वोह शख़्स ख़ामोश हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस का जवाब देना चाहा लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें मन्अ़ फ़रमा दिया । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अन्देशा था कि वोह इस मजलिस में कोई तल्ख़ गुफ़्त्गू न करें क्यूंकि येह मौक़अ़ सख़्ती का नहीं बल्कि नर्म कलामी और तह़म्मुल मिज़ाजी का था और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि अव्वल इस्लाम लाने वाले थे, रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के यारे ग़ार और क़रीब तरीन मुशीर थे और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने जिस्म के टुकड़े की त़रह़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़याल रखते थे और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहुत ही ता'ज़ीम किया करते थे इस लिये फ़ौरन बैठ गए ।

गुफ़्त्गू करने का बेहतरीन त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुख़ात़ब से गुफ़्त्गू करने के बहुत से त़रीक़े हैं ख़ुसूसन उस वक़्त जब कि वोह किसी ऐसे अम्र पर ब ज़िद हो जिस से सख़्त इन्तिशार

www.dawateislami.net

का अन्देशा हो, सब से बेहतर त़रीक़ा येह है कि मुख़ात़ब से इस त़रह़ बात की जाए कि उस के एह़सासात भी मजरूह़ न हों और आप उस तक अपनी बात पहुंचाने में भी कामयाब हो जाएं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इसी बेहतरीन अन्दाज़े गुफ़्त्गू को इख़्तियार फ़रमाया। और अन्सार के सामने एक बयान किया जिस ने अन्सार के दिल जीत लिये। चुनान्चे,

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना के बा'द दो आ़लम के मालिको मुख़्तार मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : "आप लोगों ने जो अपनी फ़ज़ीलत बयान की है आप उसी फ़ज़ीलत के अहल तो हैं, लेकिन अ़रब के दीगर क़बाइल ख़ानदाने क़ुरैश के इ़लावा येह ह़ुकूमत किसी और के लिये बेहतर नहीं समझते क्यूंकि उन का नसब और मक़ाम सब से बेहतर है।"

सिद्दीक़े अक्बर के बयान की तफ़्सील

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सिर्फ़ दो[2] जुम्लों में जो ह़िक्मत भरी गुफ़्त्गू फ़रमाई उस का मफ़्हूम कुछ यूं है कि ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत के वक़्त अ़रबों के लिये अपने आबाओ अजदाद का दीन तर्क करना निहायत ही मुश्किल था, वोह इस का तसव्वुर भी नहीं कर सकते थे कि अपने क़दीम मज़्हब से दस्त बरदार हो जाएं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस वक़्त प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ौम के मुहाजिरीने अव्वलीन के ज़ेहनों में वुस्अ़त पैदा फ़रमाई और उन्हें आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई। उन्हें आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर ईमान लाने, आप का पूरा पूरा साथ देने और अपनी क़ौम के बे पनाह मज़ालिम निहायत ही सब्र के साथ बरदाश्त करने की हिम्मत अ़त़ा फ़रमाई। उन्हें हर क़िस्म के ज़ुल्मो सितम का निशाना बनाया जाता था और उन्हें इस क़िस्म की सज़ाएं दी जाती थीं जिन्हें बयान करना बहुत मुश्किल है, अगर फ़क़त़ किसी को उन सज़ाओं के बारे में थोड़ा सा भी बता दिया जाए

www.dawateislami.net

तो उस के रौंगटे खड़े हो जाएं। लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन मज़्लूमीन को इस क़दर हिम्मतो क़ुव्वत अ़ता फ़रमाई कि वोह कम ता'दाद और दुश्मनों की कसरत के बा वुजूद किसी क़िस्म के ख़ौफ़ व इज़्तिराब में मुब्तला न हुवे, वोह अ़रब की सर ज़मीन में अव्वलीन लोग हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने और रब عَزَّوَجَلَّ के इबादत गुज़ार बन्दे बनने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मिली। वोह रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अव्वलीन **मुहि़ब्ब** और आप के सब से पहले तअ़ल्लुक़ दार हैं, लिहाज़ा येह कहना बिल्कुल बजा होगा कि ख़िलाफ़त के मुस्तहि़क़ वोही लोग हैं और इस मस्अले को सिर्फ़ वोही लोग क़ाबिले इख़्तिलाफ़ क़रार दे सकते हैं जो उन को नहीं समझते या मस्अले के तमाम पहलूओं पर पूरी निगाह नहीं रखते। और ऐ अन्सार की जमाअ़त ! आप वोह लोग हैं जिन की दीनी फ़ज़ीलत और क़बूले इस्लाम में सबक़त से कोई शख़्स इन्कार नहीं कर सकता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को दीन का मुबल्लिग़ और उस के बर गुज़ीदा रसूल का मुआ़विन बना कर अ़ज़मत अ़ता फ़रमाई। रसूले ख़ुदा ने आप के शहर में हिजरत की और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियादा तर अज़्वाजे मुतह्हरात आप लोगों के ख़ानदान से हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की बहुत बड़ी ता'दाद का तअ़ल्लुक़ अन्सार से है। बेशक मुहाजिरीने अव्वलीन के बा'द आप ही का मर्तबा है। इस लिये मुहाजिरीने क़ुरैश के हिस्से में अमारत आएगी और आप के हिस्से में वज़ारत। कोई फ़ैसला आप के मश्वरे के बिग़ैर नहीं किया जाएगा और कोई काम आप की शिर्कत के बिग़ैर अन्जाम नहीं पाएगा। जैसा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे।

फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ पकड़ कर इरशाद फ़रमाया : "मैं आप लोगों के सामने दो क़ुरैशी हस्तियों को पेश करता हूं आप लोग दोनों में से जिस की चाहो बैअ़त कर सकते हो।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि : "ख़ुदा की क़सम ! उस दिन बिग़ैर किसी गुनाह के मेरी गर्दन का उड़ा दिया जाना मुझे इस से कहीं बेहतर नज़र आता था कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के होते हुवे मैं लोगों पर ख़लीफ़ा व ह़ाकिम बनूं।"

(صحیح البخاری، کتاب المحاربین، رجم الحبلی من الزنا اذا احصنت، الحدیث: ۶۸۳۰ ج ۴، ص ۳۴۳ تا ۳۴۷)

www.dawateislami.net

बैअ़त के लिये अपना हाथ बढ़ाइये

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "आप अपना हाथ आगे लाइये, ताकि मैं आप की बैअ़त करूं।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "आप मुझ से अफ़्ज़ल हैं।" आप ने जवाब दिया : "भाई उ़मर ! आप मुझ से ज़ियादा तवाना और त़ाक़तवर हैं।" और बार बार येही फ़रमाते रहे तो हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "आप की फ़ज़ीलत के साथ साथ मेरी कुव्वत भी आप के साथ है।" फिर हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप की बैअ़त कर ली।" (تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۲۷۴، الصواعق المحرقۃ، الباب الاول، ص۱۲)

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा की ताईद

हज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी किताब "मस्नदे इमाम अह़मद बिन ह़म्बल" में हज़रते सय्यिदुना हु़मैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से ह़दीस नक़्ल की है कि सक़ीफ़ा बनी सा'दा के उस इजतिमाअ़ में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अन्सार के फ़ज़ाइल बयान करने के बा'द हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ सा'द ! आप को याद है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप की मौजूदगी में इरशाद फ़रमाया था कि قُرَیْشٌ وُلَاۃُ ھٰذَا الْاَمْرِ ख़िलाफ़त के वाली क़ुरैश हैं। فَبَرُّ النَّاسِ تَبَعٌ لِبَرِّھِمْ وَفَاجِرُھُمْ تَبَعٌ لِفَاجِرِھِمْ नेक लोग उन के नेकों के ताबेअ़ होंगे और फ़ाजिर लोग उन के फ़ाजिरों के ताबेअ़ होंगे।" हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तस्दीक़ और ताईद करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "صَدَقْتَ जी हां ! वाक़ेई रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ऐसा ही इरशाद फ़रमाया था। نَحْنُ الْوُزَرَاءُ وَاَنْتُمُ الْاُمَرَاءُ यक़ीनन हम अन्सार लोग वज़ीर हैं और आप लोग अमीर।"

(مسند امام احمد، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۱۸، ج۱، ص۲۳ ملتقطا)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर के बयान पर सब का इत़मीनान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस तक़रीर पर सब ने इत़मीनान का इज़्हार किया और इन की इस तजवीज़ को कि "**अमारत मुहाजिरीन की** और **वज़ारत अन्सार की** होगी" निहायत मुनासिब क़रार दिया। दोनों के हुक़ूक़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने निहायत ही ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ और निहायत ही उ़म्दा उस्लूब में बयान फ़रमा दिये थे।

(صحیح البخاری، کتاب المحاربین، رجم الحبلی من الزنا اذا احصنت، الحدیث: ۶۸۳۰ ج ۴، ص ۳۴۶ تا ۳۴۷ مختصرا)

बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर और सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त में बहुत अहम किरदार अदा किया। अव्वलन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त की त़रफ़ मैलान ज़ाहिर किया लेकिन उन्हों ने मन्अ़ फ़रमा दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त की जानिब तवज्जोह मबज़ूल करवाई। चुनान्चे,

आप इस उम्मत के अमीन हैं !

सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी मस्नद में रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : अपना हाथ आगे लाइये ताकि मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त करूं। क्यूंकि मैं ने ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को आप के बारे में येह फ़रमाते सुना है कि : "**اَنْتَ اَمِیْنُ ھٰذِہِ الْاُمَّۃِ** आप इस उम्मत के अमीन हैं !" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं उस हस्ती या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कैसे आगे बढ़ सकता हूं जिसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमारा इमाम बनाया हो और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल तक वोह हमारे इमाम ही रहे हों।" (مسند امام احمد، مسند عمر بن خطاب، الحدیث: ۲۳۳، ج ۱، ص ۸۳)

www.dawateislami.net

एक नियाम में एक साथ दो तल्वारें नहीं रह सकतीं

जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सक़ीफ़ा बनी सा'दा में तशरीफ़ ले गए और वहां मौजूद बा'ज़ लोगों में मुख़्तलिफ़ ए'तिराज़ात व तह़फ़्फ़ुज़ात पेश किये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन का बेहतरीन जवाब इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे,

अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा में से एक सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अन्सार ने जब येह बात कही कि : "दो अमीर बना लिये जाएं एक मुहाजिरीन का और एक अन्सार का।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस बात का ब त़रीक़े अह़सन एक ही जुम्ले में जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "जिस त़रह़ एक नियाम में दो तल्वारें एक साथ नहीं रह सकतीं इसी त़रह़ मुसलमानों के दो ख़लीफ़ा एक साथ नहीं हो सकते।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ थाम कर इरशाद फ़रमाया : "जो तीन ख़स्लतें इन्हें ह़ासिल हैं वोह किसी और को ह़ासिल नहीं। (1) اِذْ هُمَا فِی الْغَارِ (2) اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ (3) اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا येह तीन ख़ुसूसिय्यात (या'नी यारे ग़ार होना, रसूलुल्लाह का साह़िब होना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मई़य्यत का होना) किस में हैं ?" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त कर ली और लोगों से फ़रमाया : "तुम भी इन की बैअ़त करो।" तो तमाम लोगों ने भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त कर ली।

(السنن الکبری للنسائی، کتاب المناقب، باب فضل ابی بکر صدیق، الحدیث: ۸۱۰۹، ج۵، ص۳۷، اسد الغابۃ، عبد اللہ بن عثمان خلافتہ، ج۳، ص۳۳۸)

एक अमीर अन्सार से एक मुहाजिरीन से

इमाम निसाई, अबू या'ला और इमाम ह़ाकिम (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم)ने ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि जब शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाले मुबारक हुवा तो अन्सार ने कहा : مِنَّا اَمِيْرٌ وَمِنْكُمْ اَمِيْرٌ एक अमीर हम में से और एक अमीर तुम में से होगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

उ़मर बिन ख़त्ता़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : "ऐ अन्सार ! क्या तुम नहीं जानते कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को लोगों की इमामत कराने का हुक्म दिया था। अब बताओ तो सही ! कि तुम में से कौन है जिस का दिल येह पसन्द करता हो कि वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आगे खड़ा हो ?" अन्सार ने कहा : "ख़ुदा की पनाह ! हमारी क्या जुरअत कि हम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आगे खड़े हों।"

(السنن الکبری للنسائی، کتاب الامامة، باب ذکر الامامة والجماعة، الحدیث: ۸۵۳، ج ۱، ص ۲۷۹، المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفة الصحابة، خلافة ابی بکر، الحدیث: ۴۴۸۰، ج ۴، ص ۱۱)

दो त़रह़ की बैअ़त की गई

ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो[2] त़रह़ बैअ़त की गई :

(1) **बैअ़ते ख़ास्सा** (2) **बैअ़ते आ़म्मा**

बैअ़ते ख़ास्सा सक़ीफ़ा बनी सा'दा में मौजूद मख़्सूस लोगों ने की थी जिन में सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ पर बैअ़त की और ख़ुद ही इसे बयान भी फ़रमाया। चुनान्चे,

सिद्दीक़े अक्बर की बैअ़ते ख़ास्सा

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की बैअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बयान के बा'द इस से पहले कि लोग इन्तिशार का शिकार होते, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की : "अपना हाथ बढ़ाएं।" उन्हों ने हाथ बढ़ाया तो मैं ने बैअ़त की, मुझे देख कर सब मुहाजिरीन ने बैअ़त कर ली और फिर अन्सार भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर टूट पड़े और वहां पर मौजूद तक़रीबन सब ही लोगों ने बैअ़त कर ली।"

(صحیح البخاری، کتاب المحاربین من اھل الکفار، رجم الحبلی من الزنا اذا احصنت، الحدیث: ۶۸۳۰ ج ۴، ص ۳۴۶ ملتقطا)

www.dawateislami.net

अन्सारी क़बीले के सरदार की बैअ़त

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बयान के बा'द सब से पहले हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बैअ़त की इस के बा'द मुहाजिरीन ने बैअ़त की और फिर अन्सार में से सब से पहले अन्सारी क़बीले ख़ज़रज के सरदार हज़रते सय्यिदुना बशीर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने की, और इस के बा'द वहां मौजूद तमाम अन्सार ने भी बैअ़त कर ली। (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۲۴۱)

सब से ज़ियादा मुत्तफ़िक़ा बात

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि : "ख़ुदा की क़सम ! हम ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त से ज़ियादा मुत्तफ़िक़ा बात कोई न देखी।" (الصواعق المحرقۃ،الباب الاول،ص ۱۱)

फ़ातेहे ख़ैबर और बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर

शेरे ख़ुदा का दा'वए ख़िलाफ़त से इन्कार

हज़रते फ़ित़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक शैख़ से रिवायत करते हैं कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल पर एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से अ़र्ज़ की : "ऐ अ़ली ! बाहर निकल कर लोगों में ए'लान कर दो कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें ख़िलाफ़त दे दी है, इस त़रह़ हुकूमत व ख़िलाफ़त कभी किसी और को नहीं मिल सकेगी।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं ने जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा में कोई ग़लत़ बात आप की त़रफ़ मन्सूब नहीं की थी तो अब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तशरीफ़ ले जाने के बा'द मैं ऐसा करूंगा ? ख़ुदा की पनाह।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۲۳۰)

www.dawateislami.net

ख़िलाफ़त की वसिय्यत नहीं की

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم का इरशादे गिरामी है : "अगर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे ख़िलाफ़त की वसिय्यत की होती तो मैं बनू तैम के उन भाइयों या'नी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को मिम्बरे रसूल पर खड़ा न होने देता और उन से दस्त ब दस्त जंग करता अगर्चे मेरे पास एक चादर के सिवा कुछ न होता ।" (تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۴۲، ص ۴۴۲)

ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ से इस्तिह़्कामे इस्लाम

एक बार हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें ख़िलाफ़त का परवाना नहीं दिया । हम उसे ख़ुद अपने त़ौर पर त़लब कर रहे थे, और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को मा'लूम है कि हमारा येह मुत़ालबा दुरुस्त था या ग़लत़ । दुरुस्त था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से होगा, नहीं तो हमारी त़रफ़ से है । इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़िलाफ़त संभाली और दीन को इस्तिह़्काम बख़्शा । फिर हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने भी ऐसे ही किया, ह़त्ता कि दीन ज़मीन पर इस तरह़ इत़मीनान के साथ ठहर गया जैसे ऊंट ज़मीन पर इत़मीनान से गर्दन डाल देता है ।" (مسند امام احمد، ومن مسند علی بن ابی طالب، الحدیث: ۹۲۱، ج ۱، ص ۲۴۳، تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۳۰، ص ۲۹۱)

सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा की बैअ़त

लोगों ने हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की बैअ़त की गुज़ारिश की, क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ात वोह बा बरकत ज़ात थी जिस का तअ़ल्लुक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बिग़ैर किसी वासित़े के था और लोगों का ग़ालिबन येह भी

www.dawateislami.net

ख़याल था कि आप जैसी अ़ज़ीम हस्ती के बैअ़त करने के बा'द हमारे दिलों को भी इत़मीनाने क़ल्बी मिल जाएगा और इस से ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की भी ह़ौसला अफ़्ज़ाई होगी । बहर ह़ाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को पैग़ाम भिजवा कर अपने पास बुला लिया । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान करने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "हम आप की फ़ज़ीलत और आप पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों से बा ख़ूबी आगाह हैं, हमें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से अ़त़ा कर्दा ख़ैर पर कोई ह़सद नहीं ।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आंखें अश्कबार हो गईं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! मुझे अपने रिश्तेदारों की निस्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रिश्तेदारों से मह़ब्बत और अच्छा सुलूक करना कहीं ज़ियादा पसन्दीदा है ।" इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने अ़र्ज़ किया : "मैं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त के लिये पिछले पहर या'नी नमाज़े ज़ोहर का वा'दा करता हूं ।" चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़े ज़ोहर के बा'द लोगों से ख़ित़ाब करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की त़रफ़ से उन ही के अल्फ़ाज़ में वज़ाह़त की । इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने उठ कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सदाक़त, अ़ज़मत और सबक़त बयान की और फिर आगे बढ़ कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त कर ली, सब लोग उठ कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुबारक बाद देने लगे और कहने लगे कि आप ने बिल्कुल सह़ीह़ किया ।

(صحیح مسلم، کتاب الجھاد والسیر، باب قول النبی لانورث۔۔۔الخ، الحدیث: ۱۷۵۹، ص۹۶۶، صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوہ خیبر، الحدیث: ۴۲۴۱، ج۳، ص۹۱ ملخصا)

फ़ारूक़े आ'ज़म का नसीह़त आमोज़ ख़ुत़बा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर खड़े हुवे

www.dawateislami.net

और इरशाद फ़रमाया : "कोई शख़्स इस धोके में न रहे कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त उ़जलत या'नी जल्दी में कर ली गई थी। सुन लो बेशक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त में कोई शर न था और आज तुम में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसा कोई शख़्स नहीं जिस के लिये लोग अपनी गर्दनें झुकाने पर तय्यार हों, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द सारी उम्मत में सब से बेहतर आप ही थे।" (صحیح البخاری، کتاب المحاربین، باب رجم الحبلی من الزنا اذا احصنت، الحدیث: ۶۸۳۰، ج ۴، ص ۳۴۳ تا ۳۴۷ مختصرا)

मुआ़मलाते ख़िलाफ़त के ज़ियादा ह़क़दार

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मैं ने ख़ुत़्बा देते हुवे येह फ़रमाते सुना कि "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुआ़मलाते ख़िलाफ़त के ज़ियादा ह़क़दार हैं लिहाज़ा आगे बढ़ो और इन की बैअ़त करो।" चुनान्चे, वहीं उसी मजलिस में मुसलमानों की एक जमाअ़त ने उन के हाथ पर बैअ़त कर ली और बैअ़ते आ़म्मा का सिलसिला उस वक़्त शुरूअ़ हुवा जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे। (صحیح البخاری، کتاب الاحکام، باب الاستخلاف، الحدیث: ۷۲۱۹، ج ۴، ص ۴۸۰ مختصرا)

सिद्दीक़े अक्बर की बैअ़ते आ़म्मा

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म का एक और ख़ुत़्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जिस रोज़ सक़ीफ़ा बनी सा'दा में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त की गई, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक ख़ुत़्बा दिया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना के बा'द इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मैं ने कल तुम्हें एक बात कही थी जो न मैं ने किताबुल्लाह से ली है और न नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के किसी अ़हद और वसिय्यत से। अलबत्ता मैं ने देखा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन (या'नी ख़िलाफ़ते अबू बक्र सिद्दीक़) की त़रफ़ इशारा फ़रमाया है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने

www.dawateislami.net

तुम्हारे दरमियान नूरे हिदायत रख दिया है जिस से तुम हिदायत पाते हो। अगर इसे मज़्बूती से पकड़े रखोगे तो हिदायत याफ़्ता रहोगे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी हुकूमत का मुआमला एक ऐसे शख़्स के हाथ में दिया है, जो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जां निसार साथी, सानिये असनैन और सब से बढ़ कर ख़िलाफ़त के हक़दार हैं। लिहाज़ा उठो और इन की बैअ़त करो।" वहां मौजूद सब लोगों ने बैअ़त की। सक़ीफ़ा की बैअ़त के बा'द येह पहली बैअ़ते आ़म्मा थी।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، اخبارہ صلی اللہ علیہ وسلم، عن مناقب الصحابۃ۔۔۔الخ، ذکر الخبر المدحض۔۔۔الخ، الجزء التاسع، الحدیث:۶۸۷۳، ج۲، ص۱۵، الریاض النضرۃ، ج۱، ص۲۳۹تا۲۴۰)

बा'दे बैअ़त ख़ुत़्बाते सिद्दीक़े अक्बर

ख़लीफ़ा बनने के बा'द पहला ख़ुत़्बा

बैअ़ते आ़म्मा के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उठ कर सब से पहला ख़ुत़्बा दिया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना के बा'द इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मुझे आप लोगों का अमीर व वाली बनाया गया है, ह़ालांकि मैं आप लोगों से बेहतर नहीं। अगर मैं बेहतर काम करूं तो मेरी मदद करो और अगर कहीं ग़लती करूं तो मेरी इस्लाह़ करो। याद रखो ! خِيَانَةٌ اَلصِّدْقُ اَمَانَةٌ وَالْكِذْبُ या'नी सच बोलना अमानत है और झूट बोलना ख़ियानत। याद रखो ! तुम में से कोई शख़्स कितना ही कमज़ोर हो लेकिन जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मदद से मैं उसे उस का ह़क़ न दिला दूं वोह मेरे सामने बहुत ताक़तवर है और तुम में से कोई शख़्स कितना ही ताक़तवर हो और उस ने किसी का ह़क़ देना हो तो उस से ह़क़ लेने तक वोह मेरे नज़्दीक बहुत कमज़ोर है। (या'नी मेरे होते हुवे किसी कमज़ोर शख़्स की कोई भी ह़क़ तलफ़ी नहीं हो सकती और कोई ताक़त वर शख़्स अपनी ताक़त के बलबूते पर किसी कमज़ोर का ह़क़ तलफ़ नहीं कर सकता।) जिहाद छोड़ देने वाली क़ौम पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़िल्लत मुसल्लत़ कर देता है और बे ह़या क़ौम पर मसाइब नाज़िल फ़रमाता है। जब तक मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त करता रहूं तुम मेरी इत़ाअ़त करते रहना और जब मैं उन की नाफ़रमानी करूं तो तुम पर मेरी कोई इत़ाअ़त नहीं। अब उठो और नमाज़ पढ़ो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप सब लोगों पर रह़्म फ़रमाए।" (الریاض النضرۃ، ج۱، ص۲۳۹تا۲۴۰)

www.dawateislami.net

कोई इस मन्सब को संभाल ले

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि जब हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से बैअ़त ले ली तो उन से ख़िताब करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! "ख़ुदा की क़सम मुझे ज़िन्दगी भर किसी दिन या रात अमारत की ख़्वाहिश नहीं रही, न कभी खुफ़्या और न ही कभी अ़लानिय्या । और न ही मैं ने इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से त़लब किया है । मैं तो एक फ़ितने से डर गया था वरना मुझे अमारत या'नी हुक्मरानी ले कर आराम नहीं मिला बल्कि मुझ पर एक अ़ज़ीम ज़िम्मेदारी आन पड़ी है जो मेरी बरदाश्त से ज़ियादा है मगर येह कि ख़ुदा मुझे इस को निभाने की तौफ़ीक़ दे । मैं तो आज भी चाहता हूं कि आप लोगों में से कोई इस मन्सब को संभाल ले ।" मुहाजिरीन ने आप की इन तमाम बातों की तस्दीक़ की और हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم और हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब मा'लूम हुवा तो इन्हों ने फ़रमाया : "हमारा ए'लान है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही सब से ज़ियादा ख़िलाफ़त के ह़क़दार हैं, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के यारे ग़ार और **सानिये असनैन** हैं हमें आप का शरफ़ मा'लूम है । सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद आप को हमारा इमाम बनाया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुन्या से पर्दा फ़रमाने तक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही हमारे इमाम थे ।"

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، خطبۃ ابی بکر واعتذارہ، الحدیث: ۴۴۷۹، ج۴، ص۱۰، السنن الکبرٰی للبیہقی، کتاب قتال اہل البغی، باب ماجاء فی تنبیہ الامام، الحدیث: ۱۶۵۸۷، ج۸، ص۲۶۳)

मुझे अमारत की कोई चाहत नहीं

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे, क्या देखते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़बान पकड़ कर फ़रमा

www.dawateislami.net

रहे हैं : "इसी ने मुझे मसाइब में मुब्तला किया है।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! मुझे तुम्हारी अमारत की कोई ह़ाजत नहीं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "अल्लाह की क़सम ! हम न आप की बैअ़त तोड़ेंगे न ऐसा मुत़ालबा करेंगे।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۵۱)

बैअ़त की ज़िम्मेदारी से आज़ादी

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जिह़ाफ़ दावूद बिन औ़फ़ बरजमी तमीमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से रिवायत है कि बैअ़ते आ़म्मा के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दरवाज़ा तीन[3] दिन तक बन्द रहा। आप रोज़ाना तशरीफ़ लाते और लोगों को मुख़ात़ब कर के येह इरशाद फ़रमाते : "मैं आप लोगों की बैअ़त की ज़िम्मेदारी से ख़ुद को आज़ाद करता हूं, आप लोग जिस की चाहें बैअ़त कर लें।" लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم जवाबन इरशाद फ़रमाते : "हम न आप को आप की बैअ़त से आज़ाद करेंगे और न ही ख़ुद ऐसा मुत़ालबा करेंगे। जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप को आगे बढ़ाया है तो अब आप को कौन पीछे कर सकता है ?"

(کنز العمال، کتاب الخلافۃ مع الامارۃ، الحدیث: ۱۴۱۵۰، ج ۳، الجزء: ۵، ص ۲۶۱ تا ۲۶۲)

सात दिन तक बैअ़त तोड़ने का कहते रहे

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बाक़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बैअ़त हो जाने के बा'द सात दिन तक लोगों को बैअ़त तोड़ने का कहते रहे। सातवें दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم तशरीफ़ लाए और अ़र्ज़ गुज़ार हुवे कि : "न हम आप से की गई बैअ़त तोड़ेंगे और न ही ऐसा मुत़ालबा करेंगे, अगर हम आप को अहल न समझते तो कभी बैअ़त न करते।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۲۵۲)

www.dawateislami.net

दूसरा ख़ुत्बा, ख़िलाफ़त से अदमे दिल चस्पी का इज़्हार

हज़रते सय्यिदुना हसन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बैअ़त के बा'द नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मिम्बर वाले मक़ाम से नीचे खड़े हुवे और फ़रमाया : "मैं बहुत ज़ईफ़ आदमी हूं, तुम किसी मज़्बूत और तवाना आदमी को मेरी जगह ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर लो।" लोग येह सुन कर मुस्कुराए और अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "हम ऐसा हरगिज़ नहीं कर सकते, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को हर जगह रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त की सआ़दत मिली, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ही इस मन्सब के सब से ज़ियादा ह़क़दार हैं।" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने उन से इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम मेरी येह बात नहीं मानते हो तो फिर कम अज़ कम बेहतर त़रीक़े से मेरी इत़ाअ़त और मुआ़वनत करो और येह बात भी ज़ेहन में रखो कि मैं भी एक बशर हूं, मेरे साथ भी एक शैत़ान है जो मुझे बहकाने की कोशिश करता रहता है। जब तुम मुझे ग़ुस्से की ह़ालत में देखो तो मुझ से दूर रहो।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۲۵۲)

तीसरा ख़ुत्बा, ख़ालिक़ की नाफ़रमानी में किसी की इत्तिबाअ़ नहीं

हज़रते ईसा बिन अ़तिय्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मस्नदे ख़िलाफ़त संभालने के बा'द एक त़वील ख़ुत़्बा दिया और इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अगर तुम मुझे सीधी राह पर पाओ तो मेरी इत्तिबाअ़ करो वरना मुझ से दूर रहो। अगर मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी करूं तो तुम भी मेरी फ़रमां बरदारी करो। अगर तुम मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करते पाओ तो हरगिज़ मेरी इत्तिबाअ़ न करना।" (المعجم الاوسط،من اسمه منتصر،الحدیث:۸۵۹۷،ج۶،ص۲۲۷)

चौथा ख़ुत्बा, सब से बड़ी दानाई

एक रिवायत में यूं है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने लोगों को ख़ुत़्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "मुझे आप लोगों के मुआ़मलात का वाली बना दिया गया है, मगर मैं आप लोगों से बेहतर नहीं हूं लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने पाक

www.dawateislami.net

नाज़िल किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुन्नत के त़रीक़े बताए। ऐ लोगो ! इस बात को समझ लो कि सब से बड़ी दानाई तक़्वा है और सब से बड़ा इज्ज़ फ़िस्क़ो फ़ुजूर है।" (الصواعق المحرقة، الباب الاول، ص ١٢)

नसीह़तों के मदनी फूल

ह़ज़रते राफ़ेउ़ल ख़ैर त़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं मक़ामे उ़ज़ात में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की बारगाह में ह़ाज़िर था, मैं ने अ़र्ज़ की : "आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه मुझे नसीह़त फ़रमाएं।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने दो बार फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म करे और बरकत दे। फ़र्ज़ नमाज़ें बर वक़्त अदा किया करो। ज़कात ख़ुशी से दिया करो। रमज़ान के रोज़े रखो और **बैतुल्लाह** का ह़ज करो। और हां ! कभी ह़ाकिम न बनो।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "ह़ुज़ूर ! आज कल तो ह़ुक्मरान ही उम्मत के बेहतरीन लोग हैं।" इरशाद फ़रमाया : "आज कल अमारत या'नी ह़ुक्मरानी आसान है, लेकिन मुझे येह डर है कि आयिन्दा ज़माने में फ़ुतूह़ात की ज़ियादती के सबब ह़ुकूमतें भी ज़ियादा होंगी और इस त़रह़ मुमकिन है कि ना अहल ह़ुक्मरान भी आएंगे। जब कि कल बरोज़े क़ियामत ह़ाकिम का ह़िसाब लम्बा होगा और अ़ज़ाब ज़ियादा जब कि ग़ैरे ह़ाकिम का ह़िसाब कम और अ़ज़ाब हल्का। इस लिये कि ह़ुक्मरान ही से ज़ियादा ज़ुल्म सरज़द होता है और ज़ालिम ह़ाकिम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ह्द को तोड़ देता है। इन्ही ह़ुक्मरानों में से (अ़द्लो इन्साफ़ करने वाले) बा'ज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब भी होते हैं और बा'ज़ (ज़ुल्मो सितम के सबब) मर्दूदे बारगाहे ख़ुदा भी। ख़ुदा की क़सम ! तुम में से जब कोई शख़्स हमसाए की बकरी या ऊंट क़ब्ज़े में कर ले तो बड़ा ख़ुश होता है कि मैं ने हमसाए की बकरी या ऊंट हथया लिया है, ह़ालांकि ऐसे हमसायों पर अ़ज़ाब नाज़िल करना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़ियादा बड़ा ह़क़ है।" ह़ज़रते राफ़ेउ़ल ख़ैर त़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने पूछा कि : "ह़ुज़ूर ! आप को क्यूं और किन ह़ालात में अमीर बनाया गया ?" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अन्सार की सारी गुफ़्तगू और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ख़ित़ाब की तफ़्सीलात बयान कीं और फ़रमाया : "हम ने इन ह़ालात में बैअ़त क़बूल की क्यूंकि हमें ख़त़रा था कि इस मुआ़मले की वजह से फ़ितना पैदा न हो जाए क्यूंकि येह एक दफ़्आ़ पैदा हो गया तो बार बार सर उठाएगा।" (شعب الايمان، فصل في ماورد من التشديد، الحديث: ٧٤٧٢، ج٦، ص ١٥، الرياض النضرة، ج١، ص ٢٥٣)

www.dawateislami.net

बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर और वालिदे सिद्दीक़े अक्बर

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी पर पूरा मक्कए मुकर्रमा दहल गया और हर त़रफ़ कोहराम मच गया। जब हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदे गिरामी हज़रते सय्यिदुना अबू क़ुहाफ़ा उ़स्मान बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शोर सुना तो पूछा : "येह क्या है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बताया गया कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहूरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या से विसाले ज़ाहिरी फ़रमा गए हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाने लगे : "येह तो बहुत ही बड़ा ह़ादिसा है !" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दरयाफ़्त किया कि "अब ख़लीफ़ा कौन बना है ?" लोगों ने बताया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "बनू अ़ब्दे मनाफ़ और बनू मुग़ीरा इस ख़िलाफ़त पर रिज़ामन्द हैं ?" अ़र्ज़ किया गया : "जी हां।" फ़रमाया : "**لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَى اللّٰهُ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا اَعْطَى**" या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे कुछ अ़त़ा करे उसे कोई नहीं रोक सकता, और जिसे न दे उसे कोई दिलवा नहीं सकता।" (اسد الغابة، عبد الله بن عثمان، خلافته، ج٣، ص ٣٣٩)

बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर कब हुई ?

अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपनी किताब सिफ़तुस्सफ़्‌वह में हज़रते अ़ल्लामा **अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद** बिन उ़मर बिन वाक़िद सहमी अस्लमी वाक़िदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं कि : "हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वग़ैरहुम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले मुबारका के दिन बारह 12 रबीउ़ल अव्वल ब रोज़ पीर 11 ग्यारह सिने हिजरी में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बैअ़त की गई।"

(صفة الصفوة، ذكر خلافة ابي بكر، ج ١، ص ١٣٢)

www.dawateislami.net

सिद्दीके़ अक्बर का त़र्ज़े ख़िलाफ़त निहायत शानदार था

मुअर्रिख़ीन का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़माने ख़िलाफ़त हाथ में लेने के बा'द कभी किसी क़िस्म का हंगामा मुसलमानों में ख़िलाफ़त के मस्अले पर पैदा नहीं हुवा। बनू हाशिम और अन्सार दोनों ने कभी इन की मुख़ालफ़त नहीं की और इन का कोई फ़र्द मुसल्लह़ हो कर या बाग़ी की सूरत में इन के सामने नहीं आया और किसी ने इन के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग नहीं किया। येह बनू हाशिम के लिये भी बहुत बड़े कमाल की दलील है और इस से येह भी अन्दाज़ा होता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का त़र्ज़े ख़िलाफ़त निहायत शानदार और मिसाली नोइय्यत का था जो बे शुमार अच्छाइयों को अपने अन्दर समोए हुवे था।

एक हैरत अंगेज़ बात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! उ़मूमन देखने में आया है कि जब किसी मन्सब वग़ैरा का मुआ़मला हो और दो गुरौहों में तज़ाद हो जाए और उन में से कोई एक बरतरी ह़ासिल कर ले तो दूसरा गुरौह इसे दिल में बिठा लेता है और बा'द में जब कभी उसे मौक़अ़ मिलता है या तो वोह अपनी ज़िल्लत का बदला लेता है या इस मन्सब को दोबारा ह़ासिल करने की तगो दो में लगा रहता है। लेकिन क़ुरबान जाइये सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मदनी सोच पर कि इन की ह़याते त़य्यिबा का एक एक लम्ह़ा सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीने मतीन की सर बुलन्दी और अपने प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर में गुज़रा। येही वजह है कि अन्सार ने सक़ीफ़ा बनी सा'दा में तो बैअ़ते सिद्दीके़ अक्बर से क़ब्ल कुछ तह़फ़्फ़ुज़ात बयान किये थे लेकिन बैअ़त करने के बा'द उन्हों ने बिल्कुल ख़ामोशी इख़्तियार कर ली। अन्सार के छोटे बड़े किसी फ़र्द ने कभी कोई बात नहीं की। यक़ीनन येह मस्अला उन्हों ने क़त़ई त़ौर पर दिल से निकाल दिया था। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ की बैअ़त के मौक़अ़ पर इस मुआ़मले में कोई बात उन की त़रफ़ से सुनने में न आई। अन्सार ने ह़ुसूले ख़िलाफ़त के सिलसिले में किसी से कभी बात

www.dawateislami.net

नहीं की। हालांकि इस नाज़ुक वक़्त में अगर उन के दिल में कोई बात होती तो वोह इस पर अ़मल कर के कुछ न कुछ फ़ाइदा उठा सकते थे। यक़ीनन अन्सार के इस दाइमी मुस्बत रविय्ये से कई बातें रोज़े रोशन की त़रह़ इयां हो जाती हैं :

(1) बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर के वक़्त मुहाजिरीन व अन्सार में जो इख़्तिलाफ़ात हुवे इन तमाम का मक़्सद दुन्यवी अमारत, अपनी ज़ात या अपने क़बीले की बरतरी, अपनी इ़ज़्ज़तो अ़ज़्मत और मद्दे मुक़ाबिल की ज़िल्लत व पस्ती जैसे उमूर का ह़ुसूल नहीं बल्कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नियाबत जैसी अ़ज़ीम ने'मत का ह़ुसूल था।

(2) अन्सार के दिलों में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की येह बात रासिख़ हो गई थी कि ख़लीफ़ा क़ुरैश से ही होगा और अ़रब क़ुरैश के इ़लावा किसी दूसरे क़बीले की ख़िलाफ़त पर इज़्हारे रिज़ामन्दी भी नहीं करेंगे।

(3) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते त़य्यिबा में ख़ुलफ़ा की जिस तरतीब की त़रफ़ इशारा किया था वोही बरह़क़ है और उसी में मुसलमानों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद पोशीदा हैं।

(4) अन्सार ने मुआ़मलए ख़िलाफ़त हमेशा के लिये मुहाजिरीन को सिपुर्द कर के क़ियामत तक आने वाले लोगों को बता दिया कि इस्लाम अम्न व शांती, अपने मफ़ादात को दूसरे मुसलमानों के मफ़ादात के लिये क़ुरबान करने, हर वोह काम जो फ़ितना व फ़साद का बाइ़स बने उसे तर्क करने, और ज़ाती व लिसानी व क़ौमी तअ़स्सुब से बालातर हो कर ज़िन्दगी गुज़ारने का दर्से लत़ीफ़ देता है।

अव्वलीन मुसलमानों का त़र्ज़े ख़िलाफ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ज़माने में मुसलमान इन की बैअ़त पर इस लिये क़ाइम रहे कि इन का नुक़्तए फ़िक्र ख़ालिस अ़रबी रहन सहन का मज़्हर था और वोह उस नुक़्तए फ़िक्र से बिल्कुल जुदागाना नोइय्यत का था जो बा'द के अ़ह्द में मुसलमानों के दिलों में उभर आया था। दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअ़्सत के वक़्त मुसलमान अ़रबी रहन सहन पर क़ाइम थे

www.dawateislami.net

और येही इन के नज़्दीक सह़ीह़ था, इस के बा'द जब मुसलमानों की फ़ुतूह़ात का सिलसिला फैला और दूर दराज़ अ़लाक़ों तक पहुंच गया तो अ़रबों के साथ दीगर मफ़्तूह़ा मुल्कों के लोगों से इख़्तिलात़ हो गया जिस से इन के दिलों में ग़ैर अ़रबी या'नी अ़जमी तअस्सुर पैदा हो गया फिर इन की ज़ेह्नी तब्दीली से ख़िलाफ़त का तसव्वुर भी पहले जैसा न रहा।

इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा में अहले मदीना का इजतिहाद

दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़याते ज़ाहिरी में किसी शख़्स को नामज़द (Nominate) कर के ख़िलाफ़त की वसिय्यत नहीं फ़रमाई, अगर्चे ख़िलाफ़ते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर को वाज़ेह़ इशारों में बयान फ़रमाया। इसी त़रह़ येह भी न बयान फ़रमाया कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द किस त़रीक़े से मुसलमान अपना सर बराह मुन्तख़ब करें ? उस सर-बराह को किस लक़ब से पुकारें ? उस का त़र्ज़े ह़ुकूमत क्या हो ? जमहूरी हो ? शख़्सी हो ? मुलूकिय्यत पर मब्नी हो ? या क़बाइली अन्दाज़ का हो ? उसे अपना सर-बराह ब सूरते बैअ़त मुक़र्रर करें ? या कोई और त़रीक़ा इख़्तियार करें ? जब हम सक़ीफ़ा बनी सा'दा में होने वाले मुसलमानों के इस इजतिमाई मश्वरे, मसलए ख़िलाफ़त के बारे में अन्सार और मुहाजिरीन की मुनाज़अ़त पर ग़ौरो फ़िक्र करते हैं और इसे नज़र व बसर के ज़ावियों में लाते हैं तो इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि ख़लीफ़ए अव्वल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिख़ाब के वक़्त मुहाजिरीन व अन्सार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने इजतिहाद से काम लिया, वरना क़ुरआनो ह़दीस में ख़लीफ़ा वग़ैरा मुन्तख़ब करने के लिये ब ज़ाहिर कोई ह़ुक्म नहीं था और अहले मदीना ने इकट्ठे हो कर इन्हें निहायत दियानत दारी के साथ येह ज़िम्मेदारी सोंप दी और इसे ख़लीफ़ा के लक़ब से पुकारने लगे। अगर उस वक़्त ख़लीफ़ए वक़्त का इन्तिख़ाब सिर्फ़ अहले मदीना पर मौक़ूफ़ न होता बल्कि इस में इर्द गिर्द के क़बाइल भी शामिल हो जाते तो सूरते ह़ाल यक्सर मुख़्तलिफ़ हो जाती और कभी भी वोह फ़वाइद ज़ाहिर न होते जो अब हुवे थे।

दीगर ख़ुलफ़ा के इन्तिख़ाब का त़रीक़ए कार

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिख़ाब का जो त़रीक़ा बरूए कार लाया गया वोह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इन्तिख़ाब के वक़्त इख़्तियार नहीं किया गया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को वसिय्यत की सूरत में ख़लीफ़ा मुक़र्रर कर दिया था, और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वफ़ात के वक़्त इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा के लिये सह़ाबए किराम पर मुश्तमिल एक मजलिस क़ाइम कर दी थी। लेकिन इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत का वाक़िआ़ पेश आया और इस के नतीजे में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की ख़िलाफ़त का क़ियाम अ़मल में आया और इस के बा'द जब ख़िलाफ़ते बनू उमय्या का दौर आया तो इन्तिख़ाबात का त़रीक़ा बिल्कुल बदल गया और बाप के बा'द बेटा और बेटे के बा'द पोता मस्नदे ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होने लगा उस वक़्त उन के नज़्दीक ह़ालात का येही तक़ाज़ा था।

बा'दे बैअ़त इब्तिदाई मुआ़मलात

सिद्दीक़े अक्बर की रिहाइश

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ियाम मदीने के आख़िरी सिरे की आबादी में था, उस आबादी का नाम "सुन्ह़" था। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मकान निहायत ही सादा था जिसे देख कर हर शख़्स आप की सादा ज़िन्दगी का फ़ौरन ही अन्दाज़ा लगा लेता था। जब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़लीफ़ा मुन्तख़ब हो गए तब भी इसी मकान में आप का क़ियाम रहा, इसे मुन्हदिम कर के न तो अच्छा मकान बनाया और न ही इस की तजदीद की, ख़लीफ़ा मुन्तख़ब होने के बा'द छे महीने तक आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोज़ाना इस मकान से मस्जिदे नबवी में आते और ख़िलाफ़त के उमूर निमटाते रहे। दर अस्ल उस वक़्त मस्जिदे नबवी ही को क़स्रे ख़िलाफ़त या दफ़्तरे ख़िलाफ़त की ह़ैसिय्यत ह़ासिल थी। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का एक छोटा सा मकान मदीने के अन्दरूनी ह़िस्से में भी था, मक्के से मदीना हिजरत कर के तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसी में रिहाइश इख़्तियार फ़रमाई, उस मकान में भी आप ने कोई तब्दीली नहीं की वोह भी उसी पहली ह़ालत पर रहा जिस ह़ालत में हिजरत के वक़्त था।

www.dawateislami.net

बैतुल माल से वज़ीफ़े की तक़र्रुरी

हज़रते सय्यिदुना हुमैद बिन हिलाल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि जब हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुवे तो सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के लिये ब हैसिय्यते ख़लीफ़ए रसूल वज़ीफ़ा मुक़र्रर करने पर मश्वरा किया। चुनान्चे, येह तै हुवा कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को पहनने के लिये दो चादरें मिलेंगी, जब वोह पुरानी हो जाएं तो उन्हें नई चादरें दे दी जाएं। सुवारी के लिये एक जानवर की भी तरकीब बनाएं जिस पर वोह सफ़र वग़ैरा करें और ख़लीफ़ा बनने से क़ब्ल जैसा ख़र्चा वोह अपने घर वालों को देते थे, उतना ख़र्चा भी दिया जाएगा।

(الطبقات الکبری لابن سعد، طبقات البدریین من المهاجرین، ذکر بیعۃ ابی بکر، ج۳، ص۱۳۷)

सिद्दीक़े अक्बर का यौमिय्या वज़ीफ़ा

हज़रते सय्यिदुना इब्ने सा'द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हज़रते सय्यिदुना अ़ता बिन साइब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बैअ़ते ख़िलाफ़त के दूसरे रोज़ कुछ चादरें ले कर बाज़ार जा रहे थे, हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने दरयाफ़्त किया कि "आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहां तशरीफ़ ले जा रहे हैं?" फ़रमाया : "ब ग़रज़े तिजारत बाज़ार जा रहा हूं।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "अब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه येह काम छोड़ दीजिये अब आप लोगों के ख़लीफ़ा (अमीर) बन चुके हैं।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "अगर मैं येह काम छोड़ दूं तो फिर मेरे अहलो इ़याल कहां से खाएंगे?" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه वापस चलिये, अब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का येह काम हज़रते अबू उ़बैदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه करेंगे।" फिर येह दोनों हज़रात हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास तशरीफ़ लाए और इन से हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "आप हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और इन के अहलो

www.dawateislami.net

इयाल के वासिते एक औसत दर्जे के मुहाजिर की ख़ूराक का अन्दाज़ा कर के रोज़ाना की ख़ूराक और मौसिमे गर्मा व सर्मा का लिबास मुहय्या कीजिये लेकिन इस तरह कि जब फट जाए तो वापस ले कर नया इस के इवज़ दे दिया जाए।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन के लिये आधी बकरी का गोश्त (सर, पहलू और पाउं), लिबास और रोटी मुक़र्रर कर दी। (تاریخ الخلفاء، ص ۲۱۴)

आप के नए वज़ीफ़े की तक़र्रुरी

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन मुहम्मद बिन मा'बद बिन अब्बास رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा बनने के बा'द सालाना ढाई सो दीनार, रोज़ाना बकरी के गोश्त में से इस का सर, पहलू और पाउं दिया जाता था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह पहले ख़लीफ़ा हैं जिन के लिये इन की रिआया ने ही वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया मगर येह वज़ीफ़ा आप के अहलो इयाल के लिये ना काफ़ी था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना सारा माल भी बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिया था। एक मरतबा आप तिजारत के लिये मदीनए मुनव्वरा के बाज़ार की तरफ़ तशरीफ़ ले गए। इतने में हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए तो देखा कि मस्जिद में कुछ औ़रतें बैठी हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "तुम्हें क्या काम है?" वोह कहने लगीं : "हम अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास एक झगड़े का फ़ैसला करवाने आई हैं।" तो हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तलाश करने निकल पड़े, ढूंडते ढूंडते मदीने के उस बाज़ार में जा पहुंचे जहां हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ब ग़रज़े तिजारत तशरीफ़ लाए हुवे थे। हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन का हाथ पकड़ा और अ़र्ज़ किया कि मस्जिद चलिये कि कुछ औ़रतें आप का इन्तिज़ार कर रही हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मुझे अमारत की कोई ह़ाजत नहीं, मेरे मौजूदा वज़ीफ़े में गुज़र बसर बहुत मुश्किल है।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "हम इस में इज़ाफ़ा कर देंगे।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "क्या येह नहीं हो

www.dawateislami.net

सकता कि तीन सो दीनार सालाना और एक सालिम बकरी मेरा वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया जाए कि येह वज़ीफ़ा मेरे घर वालों को किफ़ायत करेगा।" इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم वहां तशरीफ़ ले आए। उन्हों ने दोनों की गुफ़्त्गू सुन कर फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه का वज़ीफ़ा मैं पूरा करूंगा।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "वाक़ेई ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "जी हां।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "क्या मा'लूम दूसरे मुहाजिरीन इस पर राज़ी होते हैं या नहीं ?" बहर ह़ाल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه इस मुक़र्ररा वज़ीफ़े से मुतअ़ल्लिक़ मुसलमानों की राए मा'लूम करने के लिये मस्जिद में आए, मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर फ़रमाया : "ऐ लोगो ! मेरा साबिक़ा वज़ीफ़ा ढ़ाई सो दीनार और बकरी के कुछ आ'ज़ा थे, अब उ़मर और अ़ली (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) मेरा नया वज़ीफ़ा तीन सो दीनार और एक पूरी बकरी मुक़र्रर कर रहे हैं, क्या आप में से किसी को ए'तिराज़ है ?" सब ने कहा : "हमें कोई ए'तिराज़ नहीं बल्कि येह वज़ीफ़ा सह़ीह़ है।"(الرياض النضرة، ج ۱، ص ۲۵۵)

मेरा माल मुसलमानों के काम आ जाता है

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه ने ख़लीफ़ा बनने के बा'द येह इरशाद फ़रमाया : "मेरी क़ौम जानती है कि मेरा कारोबार इतना वसीअ़ था कि इस से मेरे घर वालों का अच्छा गुज़र बसर हो जाता था लेकिन (मैं ने अपना सारा माल बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिया है और) अब मैं अहले इस्लाम के कामों में मश्ग़ूल हो गया हूं अब मेरे (बैतुल माल में जम्अ़ करवाए गए) माल से मेरी आल भी खाती है और मुसलमानों के काम भी आ जाता है।" (صحيح البخاری، كتاب البيوع، كسب الرجل وعمله بيده، الحديث: ۲۰۷۰، ج ۲، ص ۱۱)

सिद्दीक़े अक्बर और मोहरे रसूल वाली अंगूठी

मौजूदा दौर की त़रह़ पहले भी बादशाहों, वज़ीरों या हुक्मरानों के पास मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात के लिये मोहरें होती थीं। अलबत्ता वोह मोहरें अंगूठी की त़रह़ होती थीं कि

www.dawateislami.net

हाकिम उस अंगूठी को अपने हाथ में पहने रखता और ब वक़्ते ज़रूरत उसे इस्ति'माल में लाता और उस वक़्त के सलातीन बिग़ैर मोहर वाले ख़ुतूत या किसी भी क़िस्म के कवाइफ़ (Documents) क़बूल नहीं करते थे। इसी वजह से जब सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बादशाहों के नाम दा'वते इस्लाम के ख़ुतूत भेजने का इरादा फ़रमाया तो मुख़्तलिफ़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मश्वरा दिया कि "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप भी अपनी एक मोहर वाली अंगूठी बनवा लें।" तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चांदी की एक अंगूठी बनवाई और उस पर एक इबारत भी कन्दा करवाई। चुनान्चे,

अंगूठी पर कन्दा इबारत

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने लिये अंगूठी बनवाने का हुक्म दिया इस पर तीन सत्रों में "**मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह**" इस त़रह नक़्श कराया कि लफ़्ज़े "**अल्लाह**" ऊपर की सत्र में "**रसूल**" दरमियान की सत्र में और "**मुहम्मद**" नीचे वाली सत्र में था।

अंगूठी तय्यार करने वाले सहाबी

इस अंगूठी से आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अजमी बादशाहों की जानिब अपने ख़ुतूत पर मोहर लगाते थे, इस को हज़रते सय्यिदुना **या'ला बिन उमय्या** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तय्यार किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **या'ला बिन मुनया** भी कहते हैं क्यूंकि **उमय्या** आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद का नाम और **मुनया** आप की वालिदा का नाम था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ज़रगर या'नी सुनार थे। (سیرت سید الانبیاء، ص ۳۸۵)

नामे सिद्दीक़ नामे ह़बीब से जुदा न हो

एक मरतबा ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आलमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक अंगूठी अ़ता फ़रमाई और फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"ऐ अबू बक्र ! जाओ और इस पर لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰه लिखवा कर ले आओ ।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मिज़ाजे इश्क़ ने पसन्द न किया कि ज़िक्रे ख़ुदा तो हो लेकिन ज़िक्रे मुस्तफ़ा न हो । लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कातिब को कहा : "इस अंगूठी पर لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰه مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه लिख दो ।" जब वोह अंगूठी तय्यार हो गई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह अंगूठी वापस ले कर आए और बारगाहे रिसालत में पेश कर दी । जब प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा तो उस पर येह इबारत नक़्श थी : لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه اَبُوْبَكْرِ الصِّدِّيْق या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं और अबू बक्र सिद्दीक़ हैं ।" हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अंगूठी पर नक़्श देख कर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! मैं ने तो कहा था कि इस पर لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰه लिखवाओ लेकिन तुम ने इतना ज़ियादा क्यूं लिखवाया ?" आशिक़े अक्बर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने पसन्द न किया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम के साथ आप का नाम न लिखवाया जाए इस लिये मैं ने इस पर لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه लिखवा दिया अलबत्ता येह इबारत اَبُوْبَكْرِ الصِّدِّيْق मैं ने नहीं लिखवाई ।" येह अ़र्ज़ करने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद भी सोच में पड़ गए कि मेरा नाम अंगूठी पर कैसे आ गया ? उसी वक़्त हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो गए और अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अबू बक्र का नाम मैं ने लिखा है, क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पसन्द नहीं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामे मुबारक से हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम जुदा किया जाए ।" (تفسیر کبیر، الفاتحۃ، الباب الحادی عشر، ج ۱، ص ۱۵۳)

ख़ुदा का ज़िक्र करे ज़िक्रे मुस्तफ़ा न करे
हमारे मुंह में हो ऐसी ज़बान ख़ुदा न करे

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर के पास मोहरे नबुव्वत

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो चांदी की मोहर नुमा अंगूठी बनवाई थी आप की ह़याते त़य्यिबा में वोह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक में रही। और आप की वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास रही। और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास रही। इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मिली। फिर हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ से "अरीस" नामी कूंएं में गिर गई। उस कूंएं का सारा पानी निकाल कर उसे तीन दिन तक बहुत तलाश किया गया मगर वोह गोहरे नायाब न मिल सका।

(صحیح مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، لبس النبی خاتما، الحدیث: ۲۰۹۱، ص ۱۱۵۸، صحیح البخاری، کتاب اللباس، باب نقش الخاتم، الحدیث: ۵۸۷۳، ج ۴، ص ۷۰، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۲۳۲)

सिद्दीक़े अक्बर की ज़ाती मोहर वाली अंगूठी

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा कि : "अमीरुल मोअमिनीन सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अपनी अंगूठी पर क्या लिखा हुवा था ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अपनी अंगूठी पर लिखा हुवा था **عبد ذلیل لرب جلیل** या'नी रब्बे जलील का कमज़ोर व आ़जिज़ बन्दा।

(جمع الجوامع، مسند ابی بکر، الحدیث: ۳۶۱، ج ۱۱، ص ۸۴)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

www.dawateislami.net

बा'दे ख़िलाफ़त ह़याते सिद्दीक़े अक्बर

सब से पहला और अहम मस्अला

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द निफ़ाक़ ने अपनी गर्दन उठाई। बा'ज़ क़बाइले अ़रब मुर्तद हो गए, अन्सार ने अपने मराकिज़ को छोड़ दिया, अगर मज़्बूत़ पहाड़ मेरे वालिदे गिरामी पर गिर पड़ते तो आप उन्हें रैज़ा रैज़ा कर देते। अगर वोह किसी नुक्ते पर इख़्तिलाफ़ करते तो मेरे वालिदे गिरामी अपनी फ़ैसला शनास निगाह की ब दौलत उस के करने या न करने का फ़ैसला फ़रमा देते। मसलन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जसदे अत़हर के दफ़्नाने का मस्अला दरपेश हुवा। सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان कहने लगे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कहां दफ़्नाया जाए ? हम में से किसी के पास इस का ह़ल मौजूद न था। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "مَا مِنْ نَبِيٍّ يُقْبَضُ إِلَّا دُفِنَ تَحْتَ مَضْجَعِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ" मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि जो भी नबी वफ़ात पा जाता है उसे उस जगह दफ़्नाया जाता है जहां उस ने वफ़ात पाई हो।" इसी त़रह़ सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मीरास के मुतअ़ल्लिक़ इख़्तिलाफ़ किया उन्हों ने किसी के पास भी इस का ह़ल न पाया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना था कि हम मोअ़शरे अम्बिया हैं हम किसी को वारिस नहीं बनाते। जो पीछे छोड़ जाएं वोह सदक़ा है।"

(كنز العمال، فضل الصديق، الحديث:٣٥٥٩٥، ج٦، الجزء:١٢، ص٢٢٠، تاريخ مدينة دمشق، ج٣٠، ص٣١١)

मुतफ़र्रिद होने के बा वुजूद क़बूलिय्यत

बा'ज़ उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان के माबैन सब से पहले येह इख़्तिलाफ़ हुवा कि शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जसदे

www.dawateislami.net

अत्हर को मक्का में दफ़्न किया जाए क्यूंकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत वहीं हुई। बा'ज़ फ़रमाने लगे कि मस्जिदे नबवी में। बा'ज़ फ़रमाने लगे नहीं बल्कि बक़ीअ़ शरीफ़ में। बा'ज़ का नुक़्तए नज़र येह था कि बैतुल मुक़द्दस में दफ़्न करें क्यूंकि येह अम्बियाए किराम का मदफ़न है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपने खुदा दाद इल्म से इस मस्अले की अ़क़ीदा कुशाई की। अ़ल्लामा इब्ने ज़नजूया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि : ''هٰذِهٖ سُنَّةٌ تَفَرَّدَ بِهَا الصِّدِّيْقُ مِنْ بَيْنِ الْمُهَاجِرِيْنَ وَ الْاَنْصَارِ وَرَجَعُوْا اِلَيْهِ فِيْهَا येह वाहिद ह़दीसे पाक है जिस में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मुहाजिरीन व अन्सार के सामने मुतफ़र्रिद हुवे और तमाम सहाबए किराम ने इसे क़बूल किया।'' (تاریخ الخلفاء، ص ٥٦)

पहले ख़लीफ़ा का पहला जंगी हुक्म

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द जो बग़ावत फूट पड़ी थी और इस के जो मुतवक़्क़ेअ़ नताइज सामने आने वाले थे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इस से ब ख़ूबी आगाह थे, अब सब से अहम मस्अला येह था कि मुख़्तलिफ़ क़िस्म के पैदा होने वाले फ़ितनों को पहले ख़त्म करने की कोशिश की जाए या इस्लाम व ईसाइय्यत के दरमियान इख़्तिलाफ़ात और यहूदी फ़ितना अंगेज़ियों के सबब पैदा होने वाले ख़त्रात और इस्लामी सल्त़नत की सरह़दों की ह़िफ़ाज़त के लिये नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की मईयत में लश्कर रवाना फ़रमाया था उसे दोबारा भेज दिया जाए। वाक़ेई येह एक निहायत ही नाज़ुक वक़्त था कि हर त़रफ़ सरों पर ख़त़रात मंडला रहे थे ऐसे वक़्त में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने बहुत ग़ौर व ग़ौज़ के बा'द लश्करे उसामा बिन ज़ैद की रवानगी का हुक्म जारी फ़रमाया। येह इस्लामी सल्त़नत के **पहले ख़लीफ़ा का पहला जंगी हुक्म** था।

लश्करे उसामा बिन ज़ैद का इजमाली ख़ाका

(1) ''**उबना**'' जो ''**बुलक़ा**'' के क़रीब शराह के अ़लाक़ा और मुल्के शाम में वाक़ेअ़ है में मुक़ीम लोगों की जानिब ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की क़ियादत में येह लश्कर तय्यार किया गया।

www.dawateislami.net

(2) दो आ़लम के मालिको मुख़्तार मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी ह़याते मुबारका का येह सब से आख़िरी सरया था।

(3) 26 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र हफ़्ते के रोज़ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रूमियों के मुक़ाबले के लिये जंग की तय्यारी का हुक्म फ़रमाया, रूमी उस वक़्त मुल्के शाम पर क़ाबिज़ थे। ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को हुक्म दिया कि कल या'नी 27 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र बरोज़ इतवार इस मुहिम पर रवाना हो जाएं।

(4) 30 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र बुध की रात को हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़लालत का आग़ाज़ हुवा। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दर्दे सर और बुख़ार लाहि़क़ हुवा।

(5) जुमा'रात यकुम रबीउ़ल अव्वल को आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते अक़्दस से इन के लिये झन्डा तय्यार फ़रमाया और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को मुहाजिरीन व अन्सार की एक जमाअ़त के हमराह रवाना फ़रमाया।

(6) मुहाजिरीन में से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास, ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन ज़ैद (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) वग़ैरा शामिल थे।

(7) अन्सार में से ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते सय्यिदुना सलमह बिन अस्लम बिन ह़रीस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वग़ैरा थे।

(8) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : लश्करे उसामा की रवानगी का बन्दोबस्त करो। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद उन्हें रुख़्सत फ़रमाया।

(9) ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मक़ामे जुर्फ़ में पड़ाव डाला ताकि लश्कर वहां इकठ्ठा हो सके।

(10) जुर्फ़ ग़ाबा से पीछे एक जगह का नाम है जो मदीनए मुनव्वरा से एक फ़रसख़ (तीन मील) के फ़ासिले पर उहुद पहाड़ के पीछे है।

www.dawateislami.net

(11) सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शिद्दते मरज़ के बारे में सुना तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) और दीगर चन्द सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मदीनए मुनव्वरा वापस लौट आए।

(12) 12 रबीउ़ल अव्वल पीर के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुहिम पर रवानगी की तय्यारी फ़रमा रहे थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल की ख़बर पहुंची इस पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने लश्कर समेत मदीनए त़य्यिबा वापस आ गए।

(13) जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ए रसूल मुन्तख़ब हुवे तो उमूरे ख़िलाफ़त के बारे में पहला हुक्म आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लश्करे उसामा की रवानगी का दिया क्यूंकि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी ज़ाहिरी ह़याते त़य्यिबा में इस का बड़ा एहतिमाम था।

(14) ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यकुम रबीउ़स्सानी को जुर्फ़ के मक़ाम से अपने लश्कर को ले कर रवाना हुवे।

(15) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्कर में तीन हज़ार अफ़राद थे जिन में से सात सो क़ुरैशी और एक हज़ार घोड़े भी थे।

(16) लश्कर **उबना** या **आबल** के मक़ाम पर पहुंचा और मुशरिकीन से ज़बर दस्त जंग की और इन के सरदारों को मौत के घाट उतारा।

(17) औ़रतों और बच्चों को क़ैदी बनाया, उन के माल व अस्बाब को ग़नीमत बनाया।

(18) अहम बात येह है कि इस मुहिम में मुसलमानों का कोई भी जानी नुक़्सान न हुवा, सारा लश्कर सह़ीह़ सलामत माले ग़नीमत समेत वापस मदीनए मुनव्वरा आ गया।

(19) इस जंग के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बिल्कुल जवान थे और आप की उ़म्र अठ्ठारह[18] साल थी। (سیرت سید الانبیاء، ص ۲۲۶)

www.dawateislami.net

लश्करे उसामा को मुहिम पर भेज दो

हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने मरज़ुल मौत में इरशाद फ़रमाया : "اَنْفِذُوْا جَیْشَ اُسَامَۃ लश्करे उसामा को मुहिम पर भेज दो ।" लिहाज़ा लश्करे उसामा चल पड़ा ह़त्ता कि जुर्फ़ के मक़ाम पर पहुंचा । ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजए मोह़तरमा फ़ातिमा बिन्ते क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पैग़ाम भेजा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जल्दी मत करें क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़बीअ़त नासाज़ है । चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लश्कर जुर्फ़ के मक़ाम पर ही ठहरा रहा और वहां से आगे की त़रफ़ न बढ़ा । ह़त्ता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़बर पहुंची कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इन्तिक़ाल हो गया । तब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में आए और अ़र्ज़ की : "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे रवाना फ़रमाया था जब कि मैं येह ह़ालते ग़ैर मुलाह़ज़ा कर रहा हूं मुझे अन्देशा है कि कहीं अ़रब कुफ़्र इख़्तियार न कर लें । अगर उन्हों ने कुफ़्र इख़्तियार किया तो मैं सब से पहले उन से लड़ने वाला होऊंगा । अगर अ़रब काफ़िर न बने तो उन का रास्ता छोड़ दूंगा । मेरी मइय्यत में जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और नेक अफ़राद हैं ।" बा'दे अज़ां ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुत़्बा इरशाद फ़रमाया : "وَاللّٰہِ لَاَنْ تَخْطَفَنِی الطَّیْرُ اَحَبُّ اِلَیَّ مِنْ اَنْ اَبْدَاَ بِشَیْءٍ قَبْلَ اَمْرِ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم ख़ुदा की क़सम ! परन्दों का मुझे नोच लेना मेरे नज़दीक इस बात से ज़ियादा पसन्दीदा है कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान की ता'मील में किसी काम का आग़ाज़ करूं । चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़लीफ़ा मुन्तख़ब होने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रवाना फ़रमा दिया ।"

(تاریخ مدینۃ دمشق، ج۸، ص ۶۲، الطبقات الکبری لابن سعد، الطبقۃ الثانیۃ من المہاجرین، اسامۃ الحب بن زید، ج۴، ص ۵۰)

www.dawateislami.net

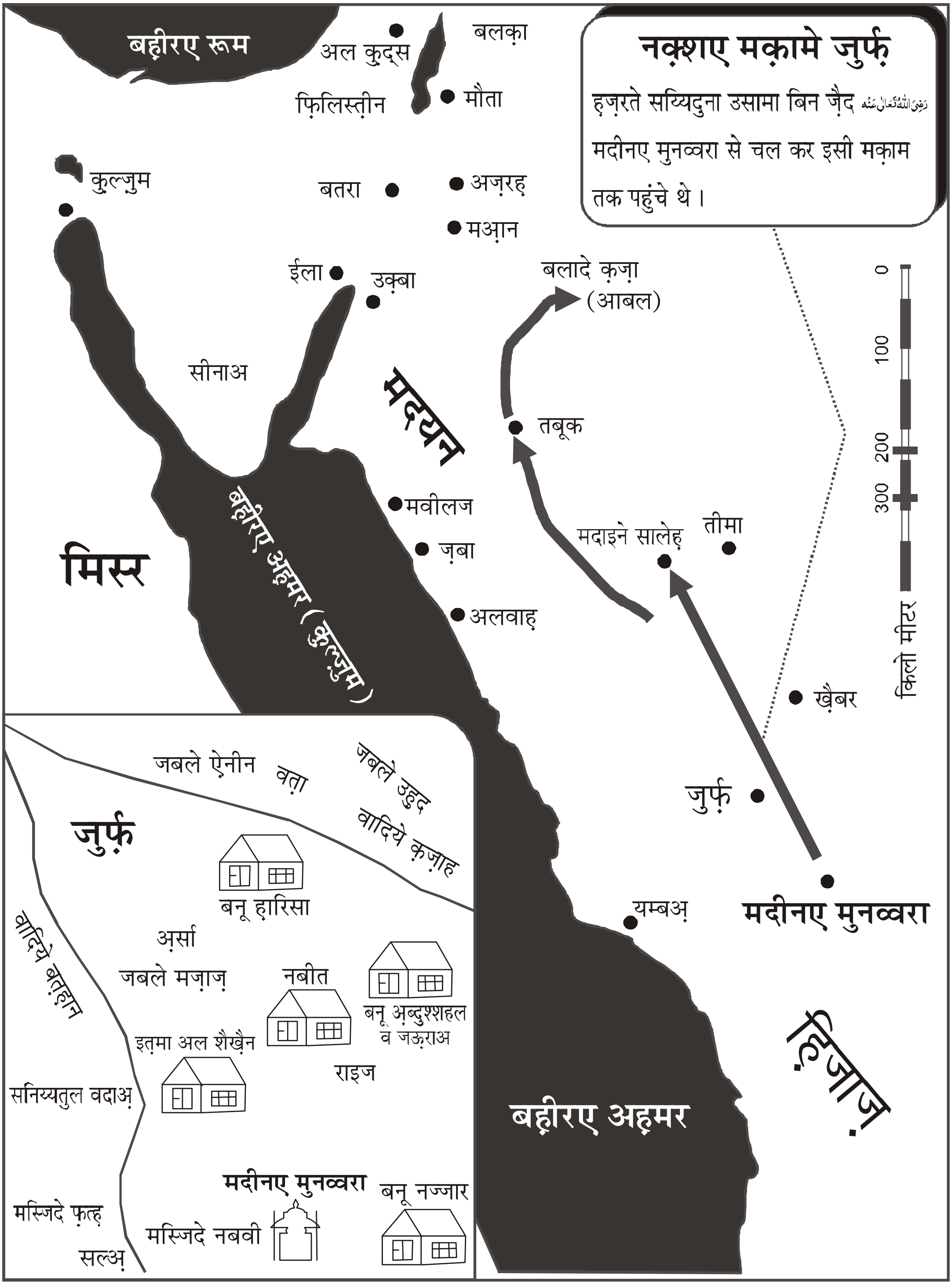

www.dawateislami.net

लश्करे उसामा को नसीह़त आमोज़ ख़ुत़्बा

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लश्करे उसामा की रवानगी के मौक़अ़ पर एक ख़ुत़्बा इरशाद फ़रमाया : ''ऐ मुजाहिदीने इस्लाम ! तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद के लिये निकले हो और दूर दराज़ मक़ाम की त़रफ़ जा रहे हो । इस मौक़अ़ पर मैं तुम्हें दस नसीह़तें करता हूं, ग़ौर से सुनो और इन्हें याद रखो । इन पर अ़मल करना निहायत ज़रूरी है । (1) ख़ियानत न करना । (2) बद अ़हदी न करना । (3) चोरी न करना । (4) मक़्तूलों के आ'ज़ा न काटना, बुढ़ों और औ़रतों को क़त्ल न करना । (5) खजूर के दरख़्त न काटना, न जलाना, कोई भी फलदार दरख़्त न काटना । (6) भेड़ बकरी, गाए या ऊंट को खाने के सिवा ज़ब्ह़ न करना । (7) तुम्हारा गुज़र ऐसे लोगों के पास से होगा जो अपने आप को इ़बादत के लिये वक़्फ़ किये गिरजों और इ़बादत ख़ानों में बैठे अपने मज़हब के मुत़ाबिक़ इ़बादत कर रहे हैं, उन्हें अपने ह़ाल पर छोड़ देना । उन से कोई तअ़र्रुज़ न करना । (8) तुम्हें ऐसे लोगों के पास जाने का मौक़अ़ मिलेगा जो तुम्हारे लिये बरतनों में डाल कर मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खाने पेश करेंगे । **बिस्मिल्लाह** पढ़ कर खाना शुरूअ़ करना । (9) तुम ऐसे लोगों से मिलोगे जिन्हों ने सर का दरमियानी ह़िस्सा तो मुंडवा दिया होगा । लेकिन सर के चारों त़रफ़ बड़ी बड़ी लटें लटकती होंगी, उन्हें तल्वार से क़त्ल कर देना । (10) अपनी ह़िफ़ाज़त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से करना । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें शिकस्त और वबा से मह़फ़ूज़ रखे ।''

इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुसूसन अमीरे लश्कर ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम्हें जो उमूर सर अन्जाम देने की हिदायत फ़रमाई थी वोह पूरी तवज्जोह और मह़नत से सर अन्जाम देना । जंग का आग़ाज़ क़ज़ाआ से करना । बा'दे अज़ां आबल का क़स्द करना । हर सूरत में नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़काम बजा लाना, इस में क़त़अ़न किसी क़िस्म की कोताही नहीं होनी चाहिये ।'' (الکامل فی التاریخ، ذکر انفاذ جیش اسامۃ، ج۲، ص۲۰۰)

www.dawateislami.net

लश्करे उसामा की रवानगी

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : وَالَّذِيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَوْلَا اَنَّ اَبَابَكْرٍ اِسْتُخْلِفَ مَاعُبِدَ اللّٰهُ या'नी क़सम है उस ख़ुदा की जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! अगर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़लीफ़ए रसूल न बनते तो कभी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत न होती।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कई बार येही अल्फ़ाज़ दोहराए। किसी ने कहा : "ऐ अबू हुरैरा ! बस करो।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने विसाले ज़ाहिरी से पहले हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सात सो मुजाहिदीन के साथ शाम की जानिब रवाना फ़रमाया, अभी वोह मदीने के क़ुर्बो जवार में ही थे कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हो गया और मदीने के आस पास वाले क़बाइल मुर्तद्द होने लगे, उस वक़्त सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के गिर्द जम्अ़ हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "आप लश्करे उसामा को हरगिज़ रवाना न फ़रमाएं क्यूंकि अ़रब क़बाइल मुर्तद्द हो रहे हैं।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "وَاللّٰهِ لَوْ عَلِمْتُ اَنَّ السِّبَاعَ تَجُرُّ بِرِجْلِيْ اِنْ لَمْ اَرُدَّهُ مَارَدَدْتُّهُ عَنْ وَجْهٍ وَجَّهَهُ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم या'नी अगर मुझे इल्म हो कि दरिन्दे मुझे पाउं से पकड़ कर घसीटते हुवे ले जाएंगे तब भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का भेजा हुवा लश्कर नहीं रोकूंगा।" इस के बा'द आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को रवाना कर दिया तो वोह जहां भी जाते उन्हें देख कर मुर्तद्द होने वाले या इर्तिदाद का इरादा रखने वाले क़बाइल कहते : "अगर इन के पास क़ुव्वत न होती तो येह कभी अपना मर्कज़ या'नी मदीना छोड़ कर बाहर न निकलते, ज़रूर इन का बड़ा लश्कर मर्कज़ में भी होगा, लिहाज़ा इस लश्कर को रूमियों के पास जाने दिया जाए, अगर येह उन पर ग़ालिब आ गए तो हम भी इन के साथ मिल जाएंगे।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद से लश्करे उसामा लश्करे रूम पर ग़ालिब रहा और सहीह सालिम और माले ग़नीमत समेत लौटा, जिसे देख कर कई मुर्तद क़बाइल राहे रास्त पर आ गए।

(کنز العمال، کتاب الخلافۃ والامارۃ، الباب الاول فی خلافۃ الخلفاء، الحدیث: ۱۴۰۶۲، ج ۳، الجزء: ۵، ص ۲۴۱، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۴۹)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद पर शफ़्क़तो राफ़्त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह प्यारे सह़ाबी हैं जो ज़मानए त़फ़ूलिय्यत या'नी बचपन से ले कर जवानी तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साथ रहे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसी मह़ब्बतें और शफ़्क़तें आप को मिलती रहीं। सुल्ह़े ह़ुदैबिय्या के मौक़अ़ पर अगले साल जब सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उ़मरह के लिये तशरीफ़ ले गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे ऊंट पर सुवार थे और इसी ह़ालत में मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल हुवे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बचपन ही से दिलैर और जुरअत मन्द थे। जंगे उह़ुद के ज़माने में वोह बच्चे थे और उन्हें जिहाद में शामिल नहीं किया गया था लेकिन इस्लामी लश्कर जब मदीने से बाहर निकला तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जज़्बए जिहाद से मग़्लूब हो कर उस लश्कर में शामिल हो गए मगर आप को बहुत छोटा होने के सबब अलग कर दिया गया, अलबत्ता जंगे ह़ुनैन में ख़ूब बहादुरी व शुजाअ़त से लड़े। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह सआ़दत ह़ासिल थी कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप पर ख़ुसूसी शफ़्क़त फ़रमाते थे।

आप की वालिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ऐमन

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा का नाम ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا था। दो आ़लम के मालिको मुख़्तार मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ के वक़्त इन को आज़ाद फ़रमा दिया था इन का निकाह़ पहले ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुवा जिन से ह़ज़रते सय्यिदुना ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा हुवे और इन्ही की निस्बत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की कुन्यत उम्मे ऐमन क़रार पाई वरना आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का अस्ल नाम "बरकत" था। इन के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हुवा जिन से ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पैदा हुवे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

www.dawateislami.net

के बारे में फ़रमाया करते थे : "أُمُّ اَيْمَن اُمِّیْ بَعْدَاُمِّی" या'नी उम्मे ऐमन मेरी मां के बा'द मेरी मां हैं। हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन बिकार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सय्यिदा ख़ातूने जन्नत की वफ़ात से एक माह क़ब्ल हज़रते सय्यिदतुना उम्मे ऐमन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी वफ़ात फ़रमा गई थीं। (تاریخ الاسلام للذهبی، الجزء الثالث، ج۳، ص۴۸تا۴۹، سیرت سید الانبیاء، ص۷۰۲، مدارج النبوت، ج۲، ص۴۹۹)

सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद को अमीर क्यूं मुक़र्रर किया गया ?

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब लश्कर का अमीर मुक़र्रर फ़रमाया उस वक़्त इन की उम्र सिर्फ़ अठ्ठारह 18 साल थी, उस वक़्त कई अकाबिर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी मौजूद थे लेकिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को लश्कर का अमीर मुक़र्रर करने में बहुत सी हिक्मतें पोशीदा थीं। मसलन :

(1) नौजवानों में ख़ुद ए'तिमादी और ज़िम्मेदारी का जज़्बा पैदा हो और उन में येह एहसास भी करवट ले कि वोह फ़ौज के बड़े से बड़े ओहदे पर फ़ाइज़ होने की सलाहिय्यत रखते हैं जैसा कि सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।

(2) इन के वालिद हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रूमियों के हाथों जंगे मौता में शहीद हो गए थे इन को अमीर इस लिये मुक़र्रर किया गया ताकि ख़ूब जज़्बए जिहाद से लड़ें और ख़ुसूसन अपने वालिद का कुफ़्फ़ार से बदला ले सकें।

(3) इन की बहादुरी और शुजाअ़त से मुतअस्सिर हो कर इन के दूसरे हम उम्र नौजवान भी अपने अन्दर जज़्बए जिहाद बेदार करें और जंग में अपने जोहर दिखाएं।

(4) जंग बे पनाह महनत और मशक़्क़त का काम है, जंग में जहां जंगी चालों की अहम्मिय्यत है वहीं इस के लिये अ़ज़्मे जवां की भी ज़रूरत है आप को अमीर इस लिये मुक़र्रर किया गया ताकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को देख कर नौजवान अपने अन्दर इस मशक़्क़त को बरदाश्त करने का हौसला पैदा करें।

www.dawateislami.net

लोगों का लश्करे उसामा भेजने पर ए'तिराज़

बैअ़ते ख़िलाफ़त के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्करे उसामा को दोबारा रवाना करने पर बा'ज़ लोगों ने ए'तिराज़ किया उन के ए'तिराज़ में दो[2] बातें ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं :

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़ुत्बे के बा'द ख़िलाफ़त के मुआ़मले में कोई इख़्तिलाफ़ न रहा था। लिहाज़ा किसी दूर दराज़ ग़ैर मुस्लिम मुल्क के साथ जंगी कारवाई से फ़िलह़ाल बचना चाहिये।

(2) अ़रब में ग़ैर मुतवक़्क़ेअ़ तौर पर बग़ावत व इर्तिदाद का सिलसिला शुरूअ़ हो गया है, बेहतर येह है कि ख़ारिजी उमूर के बजाए इन दाख़िली मुआ़मलात से निमटने के लिये मुअस्सिर इक़्दामात किये जाएं, क्यूंकि इस नाज़ुक मौक़अ़ पर शाम की त़रफ़ लश्कर भेजने से फ़ौज की त़ाक़त मुख़्तलिफ़ मुह़ाज़ों में बट जाएगी, लिहाज़ा मुनासिब येह है कि इस मुआ़मले को कुछ अ़र्से तक मुअख़्ख़र कर दिया जाए।

लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन की राए को तस्लीम करने से इन्कार कर दिया और लश्करे उसामा बिन ज़ैद को रवाना कर दिया।

लश्करे उसामा की रवानगी में ह़िक्मतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ब ज़ाहिर ऐसा मह़सूस होता है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मश्वरों को क़बूल न किया ह़ालांकि वाक़िआ़त व ह़ालात के तनाज़ुर में इन की राए बिल्कुल दुरुस्त थी। लेकिन सह़ीह़ येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्करे उसामा को रवाना करने में कई ह़िक्मतें पोशीदा थीं जो दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के पेशे नज़र न थीं मसलन :

(1) सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिस लश्कर को तय्यार फ़रमा कर रवाना कर दिया था उसे वैसे ही दोबारा रवाना कर दिया जाए कि कहीं हुक्मे रसूल की हुक्म अ़दूली न हो।

(2) अगर लश्करे उसामा को रवाना न किया जाता तो यक़ीनन रूमी ह़म्ला कर देते

www.dawateislami.net

और मुसलमानों को दिफ़ाअ़ करना पड़ता, और चूंकि दिफ़ाअ़ हमेशा कमज़ोर और ह़म्ला मज़बूत़ होता है लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़म्ले को तरजीह़ दी।

(3) लश्करे उसामा रवाना न करने की सूरत में बाग़ी व मुर्तद्द क़बाइल इस ख़ुश फ़हमी में मुब्तला हो जाते कि मुसलमान अपने नबी के विसाल के बा'द बहुत कमज़ोर हो गए हैं इस लश्कर को देख कर उन की येह ख़ुश फ़हमी पानी हो गई।

(4) लश्करे उसामा तक़रीबन 700 सह़ाबए किराम पर मुश्तमिल काफ़ी बड़ा लश्कर था इसे देख कर मुर्तद्द क़बाइल पर येह असर हुवा कि वोह मुसलमानों की अफ़रादी क़ुव्वत से मरऊ़ब हो गए।

(5) मुख़्तलिफ़ फ़ितनों के पैदा होने से मुसलमानों के जो ह़ौसले पस्त हो गए थे इस लश्कर की फ़त्ह़ व नुसरत और माले ग़नीमत के साथ वापसी से वोही ह़ौसले बहुत बुलन्द हो गए और इस्लामी क़ुव्वत में मज़ीद इज़ाफ़ा हो गया।

लश्करे उसामा की जंग का ह़ाल

ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुल्के शाम का अ़ज़्म किया। मई का महीना और सख़्त गर्मी का मौसिम था, तपते सह़राओं और जंगलों में से गुज़रता हुवा येह लश्कर बीस[20] दिन में **बुल्क़ा** के मक़ाम पर पहुंचा। येह वोही मक़ाम था जहां जंगे मौता हुई थी और ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद हुवे थे और ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी त़ालिब और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रवाह़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने यहीं जामे शहादत नोश फ़रमाया था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसी जगह पड़ाव किया और फ़ौज को मुख़्तलिफ़ दस्तों में तक़्सीम कर के आबल और क़ुज़ाआ़ के क़बाइल पर ह़म्ला करने का हुक्म दिया। येह ह़म्ले निहायत कामयाब रहे और बे शुमार काफ़िर रूमियों को मुसलमानों ने क़त्ल किया और बहुत सा माले ग़नीमत मुसलमानों के क़ब्ज़े में आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन ह़म्लों में बेहतरीन जंगी महारत का सुबूत दिया और बहुत आसानी से शुहदाए मौता का इन्तिक़ाम लेने में कामयाब हो गए।

www.dawateislami.net

लश्करे उसामा की वापसी

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मल्फ़ूज़ात की रोशनी में शाम की फ़ौजों के साथ जिहाद किया और उन्हें शेरे बबर की त़रह़ चीर कर रख दिया और बे शुमार माले ग़नीमत ले कर अपने फ़ातेह़ लश्कर के साथ मदीनए मुनव्वरा के क़रीब पहुंचे तो ख़ुद अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बाहर निकल कर इन का इस्तिक़्बाल किया। मदीनए मुनव्वरा में चालीस40 दिन बा'द इन की वापसी हुई थी, बा'ज़ रिवायात के मुत़ाबिक़ सत्तर70 दिन या'नी दो2 महीने दस दिन के बा'द। मुसलमान इस अ़ज़ीमुश्शान फ़त्ह़ से बहुत ख़ुश और रूमी व दीगर मुर्तद क़बाइल सख़्त परेशान व मरऊ़ब हो गए।

सिद्दीक़े अक्बर और इस्लामी निज़ामे हुकूमत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का निज़ामे हुकूमत अ़रबों के ज़ेहनो फ़िक्र के ऐ़न मुत़ाबिक़ और ज़मानए नबवी से बिल्कुल मुत्तसिल ज़माना था। फिर ख़ुद हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बाहम गहरे और मज़बूत़ तअ़ल्लुक़ात थे लिहाज़ा इन की ख़िलाफ़त का वोही निज़ाम था, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने से चला आ रहा था और जिस से अहले मदीना और दूसरे अ़लाक़ों के मुसलमान अच्छी त़रह़ मुतआ़रिफ़ व मानूस हो गए थे। लेकिन जब फ़ुतूह़ात के सिलसिले ने वुसअ़त इख़्तियार की और मुसलमान अ़रब से बाहर निकल कर दूसरे मुल्कों और अ़लाक़ों में फैलते चले गए तो वोह क़दीम निज़ामे हुकूमत आहिस्ता आहिस्ता बदलना शुरूअ़ हो गया यहां तक कि अ़ब्बासी सल्त़नत क़ाइम हो गई और इस के दौरे उ़रूज में ह़ालात में इस दरजे तग़य्युर पैदा हो गया कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़हदे ख़िलाफ़त की कोई शै कहीं नज़र न आती थी। तमाम निज़ामे हुकूमत यक्सर मुतग़य्यर हो गया था।

सिद्दीक़े अक्बर का मुन्फ़रिद निज़ामे हुकूमत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़मानए सल्त़नत और निज़ामे हुकूमत बिल्कुल मुन्फ़रिद नोइय्यत का था। इन के दौर को दो2 जहां के ताजवर, सुल्त़ाने

www.dawateislami.net

बहूरो बर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दीनी सियासत और हुकूमते वक़्त की दुन्यवी सियासत के मजमउ़ल बहूरैन की हैसिय्यत हासिल थी। इस में कोई शुबा नहीं कि उस वक़्त दीन की तक्मील हो चुकी थी और किसी शख़्स को इस में दख़्ल अन्दाज़ होने या किसी मुआ़मले में तब्दीली करने या किसी हुक्म को मन्सूख़ करने का हक़ हासिल नहीं था। लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द अ़रब के हालात काफ़ी हद तक बदल गए थे। इर्तिदाद का फ़ित्ना पैदा हो गया था। मुतअ़द्दिद क़बाइल ने इस्लाम से इन्हिराफ़ की राह इख़्तियार कर ली थी और मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर बग़ावत के आसार फैल गए थे। येह निहायत ख़तरनाक और नाज़ुक मौक़अ़ था अब हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये लाज़िम हो गया था कि वोह इस ख़तरे से निमटने के लिये कोई मज़बूत और जुरअत मन्दाना पॉलीसी अपनाएं। सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी हयाते तय्यिबा के आख़िरी सालों में मुख़्तलिफ़ सल्तनतों के सर-बराहों और क़बीलों के सरदारों के नाम इस्लाम की दा'वत देने का सिलसिला भी शुरूअ़ कर दिया था। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किसी न किसी अन्दाज़ में इसे भी जारी रखने और नतीजा ख़ैज़ बनाने के ख़्वाहां थे। इन्हों ने येह अ़ज़ीम और निहायत ज़रूरी फ़रीज़ा किस त़रह सर अन्जाम दिया, येह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी किस अन्दाज़ में पूरी करने का अ़ज़्म किया, किस त़रीक़े से इस पर अ़मल की दीवारें उस्तुवार कीं, किस त़रीक़े से मुख़्तलिफ़ फ़ित्नों की सरकोबी की, और उन्हें जड़ से उखाड़ फेंका, किस त़रह उन के ख़िलाफ़ अ़मली कारवाई की। हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस प्यारी हयाते तय्यिबा को मुलाहज़ा कीजिये।

सिद्दीक़े अक्बर और मुख़्तलिफ़ क़बाइल का इर्तिदाद व बग़ावत

दो त़रह़ के लोगों से मुक़ाबला

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मन्सबे ख़िलाफ़त संभालते ही जिन लोगों से मुक़ाबला दरपेश था, वोह दो[2] क़िस्म के थे :

(1) वोह लोग जो नज्द, यमन और हज़र मौत वग़ैरा की त़रह मुसैलमा व सुजाह

www.dawateislami.net

वग़ैरा झूटे मुद्दइय्याने नबुव्वत के साथ मुत्तफ़िक़ हो गए थे इन लोगों से लड़ने या क़िताल करने में किसी सहाबी को इख़्तिलाफ़ न था।

(2) वोह क़बाइल जो ज़कात के अदा करने से इन्कार करते थे उन से क़िताल करने को बा'ज़ सहाबा ने ना मुनासिब ख़याल किया था। लेकिन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इज़्हारे राए के बा'द तमाम सहाबा इन की राए से मुत्तफ़िक़ हो गए थे। इन दोनों क़िस्म के लोगों में कुछ फ़र्क़ तो ज़रूर था। लेकिन मुसलमानों ने जब कि दोनों के मुक़ाबले को यक्सां ज़रूरी क़रार दिया तो फिर इन दोनों में कोई फ़र्क़ व इम्तियाज़ बाक़ी न रहा था और हक़ीक़त भी येह है कि दोनों गुरौह दुन्या तलबी और मादिय्यत के एक ही सैलाब में बह गए थे जिन को हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तदबीर व रूहानिय्यत ने ग़र्क़ होने से बचाया और इस तूफ़ाने हलाकत आफ़रीन से नजात दिला कर अ़रब का बेड़ा साहिले फ़ौज़ो फ़लाह़ तक सहीह़ सलामत पहुंचाया।

मुख़्तलिफ़ क़बाइल का मुख़्तलिफ़ किरदार

उस वक़्त अ़रब के बहुत से क़बीले आबाद थे जो इर्तिदाद और बग़ावत के इस संगीन दौर में मुख़्तलिफ़ मुस्बत और मनफ़ी किरदारों के हामिल थे। मसलन :

(1) जो क़बाइल मक्का, मदीना और ताइफ़ के दरमियान आबाद थे, वोह ब दस्तूरे साबिक़ इस्लाम पर क़ाइम रहे और उन में कोई फ़ितना पैदा न हुवा।

(2) मुज़ैना, बनू ग़फ़्फ़ार, जुहैना, अशज, बनू तय्य, बनू इस्लाम और बनू ख़ज़ाआ़ के क़बीलों में भी कोई फ़ितना पैदा न हुवा और उन्हों ने भी इस्लाम तर्क नहीं किया। इन के इलावा बहुत से क़बाइल ने इर्तिदाद की राह इख़्तियार कर ली थी।

(3) जो लोग नए नए मुसलमान हुवे थे या जिन के दिलों पर इस्लामी अह़काम ने पूरा असर नहीं किया, वोह भी मुर्तद और बाग़ी हो गए थे। जैसे क़बीलए बनू अस्लम वग़ैरा

(4) बा'ज़ लोग इस्लाम को तो बिल्कुल सहीह़ मानते थे और इस के किसी जुज़ के मुन्किर न थे। लेकिन मदीनए मुनव्वरा की हाकिमिय्यत मानने को तय्यार न थे, न वोह मदीनए मुनव्वरा के अन्सार की हुकूमत के क़ाइल थे न मुहाजिरीन की। उन के नज़्दीक दोनों गुरौह एक जैसे थे और वोह दोनों को सहीह़ क़रार नहीं देते थे।

www.dawateislami.net

(5) कुछ वोह लोग थे जो इस्लाम को सच्चा मज़्हब समझते थे लेकिन ज़कात अदा करने पर आमादा न थे, उन का ख़याल था कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हयाते तय्यिबा में तो ज़कात अदा करना ज़रूरी था लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल के बा'द इस की ज़रूरत नहीं रही। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल थे आप पर वह़ी नाज़िल होती थी और जो कुछ आप मुसलमानों से त़लब फ़रमाते थे वोह देना ज़रूरी था लेकिन आप की वफ़ात के साथ ही येह फ़रीज़ा साक़ित़ हो गया और अब किसी चीज़ की अदाएगी की ज़रूरत नहीं।

(6) कुछ क़बाइल के अज़्हान में येह शैत़ानी वस्वसा गर्दिश करने लगा कि जब हम उ़श्र देते हैं तो ज़कात क्यूं अदा करें, इस की क़त़्अ़न ज़रूरत नहीं।

(7) जिन क़बीलों ने सिर्फ़ ज़कात अदा करने से इन्कार किया था वोह मदीनए मुनव्वरा के क़ुर्बो जवार के क़बाइल अ़ब्स, ज़बयान, बनू किनाना, बनू ग़त़फ़ान और फ़ज़ारा वग़ैरा थे।

(8) जो क़बाइल इस्लाम से दूर हो गए थे वोह मदीनए मुनव्वरा से काफ़ी दूर थे।

(9) बा'ज़ क़बाइल ने झूटे मुद्दइय्याने नबुव्वत की इत्तिबाअ़ शुरूअ़ कर दी थी। जैसे : बनू असद ने की, बनू तग़्लब और बनू तमीम के बा'ज़ लोगों ने सुजाह़ नामी ख़ातून की, यमामा ने मुसैलमा कज़्ज़ाब की, उ़म्मान ने ज़ुलताह़ लक़ीत़ बिन मालिक की और यमन वालों ने अस्वद अ़नसी की इत्तिबाअ़ शुरूअ़ कर दी। (الکامل فی التاریخ، ج۲، ص۲۰۱ تا ۲۴۸ ماخوذا)

गोया ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारियां संभालते ही गूनां गूं मसाइल और गंभीर उमूर के दरमियान फंस गए, इन तमाम मसाइल को ह़ल करने के लिये और इन से ब त़रीक़े अह़सन निमटने के लिये आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपनी दीनी व दुन्यवी बसीरत का भरपूर इस्ति'माल किया और शजरए इस्लाम को मज़ीद तक़्विय्यत दी। उस वक़्त पैदा होने वाले फ़ितनों और इन के ख़िलाफ़ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की अ़मली कारवाई मुलाह़ज़ा कीजिये :

www.dawateislami.net

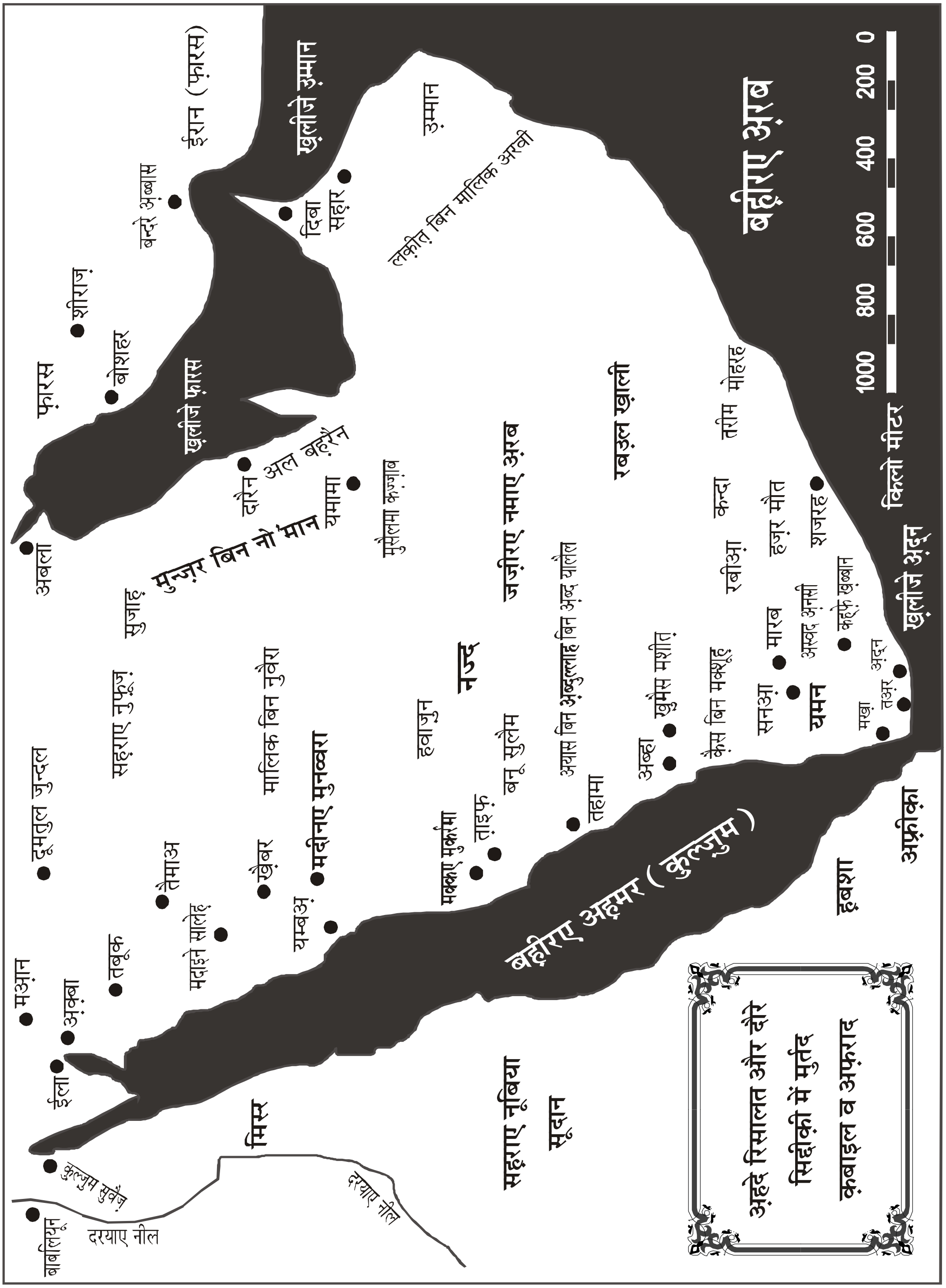

www.dawateislami.net

मुन्किरीने ज़कात से जिहाद

मुन्किरीने ज़कात के इन्कार की वुजूहात

अ़रब के बा'ज़ क़बाइल में येह वबा भी फूट पड़ी कि इन्हों ने ज़कात की अदाएगी से इन्कार कर दिया, इन में भी दो[2] गुरौह थे बा'ज़ तो वोह जो ज़कात की अदाएगी के साथ साथ ज़कात की फ़र्ज़िय्यत के भी मुन्किर थे और यक़ीनन येह लोग फ़र्ज़िय्यते ज़कात के इन्कार के सबब मुर्तद्द हो गए, जब कि बा'ज़ क़बाइल ब ज़ाहिर ज़कात की फ़र्ज़िय्यत के क़ाइल थे लेकिन अदाएगी के मुन्किर थे, और यक़ीनन ज़कात अदा न करने वाला फ़ासिक़ व वाजिबुल क़त्ल है। इन दोनों गुरौहों की ज़कात से इन्कार की कई फ़ासिद वुजूहात थीं। मसलन :

(1) बा'ज़ क़बाइल का येह कहना था कि सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी तक तो ज़कात अदा करने में कोई मुज़ाअक़ा न था, लेकिन आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द अहले मदीना के मुक़र्रर कर्दा अमीर का हम से ज़कात या तावान त़लब करना बिल्कुल ग़लत़ है, न तो हम (ह़ज़रते) अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को ख़लीफ़ा मानते हैं और न ही इन के अह़कामात पर अ़मल करना हमारे फ़राइज़ में शामिल है।

(2) बा'ज़ लोगों का येह नुक्त़ए नज़र था कि ज़कात की अदाएगी नमाज़ की तक्मील के लिये है अगर कोई शख़्स नमाज़ बिल्कुल पूरी और सह़ीह़ पढ़ता है तो उसे ज़कात की अदाएगी की ह़ाजत नहीं चूंकि हम नमाज़ की कामिल अदाएगी करते हैं इस लिये ज़कात अदा नहीं करेंगे।

(3) बा'ज़ क़बाइल का येह मौक़िफ़ था कि जब हमारी काश्त की हुई ज़मीनों में से उ़श्र वुसूल कर लिया जाता है तो फिर हमारे ज़ाती अम्वाल से ज़कात का मुत़ालबा क्यूं किया जाता है ? दोनों में से एक चीज़ ली जाए।

(4) बा'ज़ लोगों ने तो इस लिये भी ज़कात की अदाएगी से इन्कार कर दिया था कि हम अपना कमाया हुवा माल ख़्वाह मख़्वाह क्यूं किसी को दें, कमाएं हम और खाए कोई और ! (الکامل فی التاریخ،ج۲،ص۲۰۱تا۲۴۵ماخوذا)

www.dawateislami.net

इस्लाम में नज़रियए ज़कात

(Concept of Zakat in the Islam)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुन्किरीने ज़कात के फ़ुज़ूल और बेजा ए'तिराज़ात पढ़ कर हर ज़ी शुऊर फ़ौरन समझ जाएगा कि इन ए'तिराज़ात में कोई ह़क़ीक़त नहीं, बल्कि येह तो सरासर शैत़ानी वसाविस हैं जो लोगों को इस्लाम से मुतनफ़्फ़िर करने का बाइस हैं। क्यूंकि **दीने इस्लाम** दुन्या का वोह वाह़िद और ऐसा प्यारा दीन है जो पैदाइश से ले कर क़ब्र में जाने तक हर हर मुआ़मले में लोगों की ऐसी रहनुमाई करता है जो शरई दलाइल के साथ साथ अ़क़्ली त़ौर पर भी मुसल्लमा होती है, या'नी अगर कोई शख़्स शरई दलाइल से क़त़ए़ नज़र इन्साफ़ के साथ फ़क़त़ अ़क़्ल के तराज़ू में इस्लामी अह़कामात को परखे तो वोह बे साख़्ता पुकार उठेगा कि दीने फ़ित़रत दीने इस्लाम ही है। आइये इस्लाम में ज़कात के नज़रिय्ये (Concept) पर एक नज़र डालते हैं :

ज़कात का लुग़वी मा'ना

"ज़कात के लुग़वी मा'ना पाकी के हैं, चूंकि ज़कात निकालने के बा'द बाक़ी माल पाक हो जाता है इस लिये इसे ज़कात कहते हैं। या ज़कात के मा'ना बढ़ने के हैं कि ज़कात निकालने से माल बढ़ता और मह़फ़ूज़ भी रहता है।"

ज़कात की ता'रीफ़

ज़कात "शरीअ़त में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये माल के एक हिस्से का जो शरअ़ ने मुक़र्रर किया है, मुसलमान फ़क़ीर को मालिक कर देना है और वोह फ़क़ीर न हाशिमी हो, न हाशिमी का आज़ाद कर्दा गुलाम और अपना नफ़्अ़ उस से बिल्कुल जुदा कर ले।"

(बहारे शरीअ़त जि.1 स.874)

ज़कात का शरई हुक्म

ज़कात फ़र्ज़ है, इस का मुन्किर काफ़िर और न देने वाला फ़ासिक़ और क़त्ल का मुस्तह़िक़ और अदाएगी में ताख़ीर करने वाला गुनहगार व मर्दूदुश्शहादह है।"

(बहारे शरीअ़त जि.1 स.874)

www.dawateislami.net

ज़कात किस पर फ़र्ज़ है ?

"हर मुसलमान, बालिग़, आ़क़िल, आज़ाद, साहिबे निसाब पर ज़कात फ़र्ज़ है।"

ज़कात किस माल पर है ?

"ज़कात तीन क़िस्म के माल पर है। सोना चांदी, माले तिजारत, और जानवरों पर। ज़कात की अदाएगी साल के गुज़रने पर है।" ज़कात के तफ़्सीली अह़काम जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, हिस्सा 5, स. 886 का मुत़ालआ़ कीजिये।

ज़कात के मुतअ़ल्लिक़ तीन आयाते मुबारका

(1)﴿ لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ الْمَلٰٓىٕكَةِ وَ الْكِتٰبِ وَ النَّبِیّٖنَۚ وَ اٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِی الْقُرْبٰى وَ الْیَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِیْنَ وَ ابْنَ السَّبِیْلِۙ وَ السَّآىٕلِیْنَ وَ فِی الرِّقَابِۚ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَى الزَّكٰوةَۚ وَ الْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْاۚ وَ الصّٰبِرِیْنَ فِی الْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ حِیْنَ الْبَاْسِؕ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ صَدَقُوْاؕ وَ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ۝۱۷۷﴾ (پ۲، البقرۃ:۱۷۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "कुछ अस्ल नेकी येह नहीं कि मुंह मशरिक़ या मग़रिब की त़रफ़ करो हां अस्ली नेकी येह कि ईमान लाए अल्लाह और क़ियामत और फ़िरिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर और अल्लाह की मह़ब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गर्दनें छुड़ाने में और नमाज़ क़ाइम रखे और ज़कात दे और अपना क़ौल पूरा करने वाले जब अ़हद करें और सब्र वाले मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त येही हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची की और येही परहेज़गार हैं।"

(2)﴿ وَ الَّذِیْنَ یَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَ الْفِضَّةَ وَ لَا یُنْفِقُوْنَهَا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِیْمٍ۝۳۴ یَّوْمَ یُحْمٰى عَلَیْهَا فِیْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَ جُنُوْبُهُمْ وَ ظُهُوْرُهُمْؕ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ۝۳۵﴾ (پ۱۰، التوبۃ:۳۵،۳۴)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और इसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते उन्हें ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की, जिस दिन वोह तपाया जाएगा जहन्नम की आग में फिर इस से दाग़ेंगे उन की पेशानियां और करवटें और पीठें येह है वोह जो तुम ने अपने लिये जोड़ कर रखा था अब चखो मज़ा इस जोड़ने का।"

(3) ﴿وَ لَا یَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ بِمَاۤ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَیْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ سَیُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ﴾ (پ۴، اٰل عمران: ۱۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जो बुख़्ल करते हैं उस चीज़ में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दी हरगिज़ उसे अपने लिये अच्छा न समझें बल्कि वोह उन के लिये बुरा है अ़न क़रीब वोह जिस में बुख़्ल किया था क़ियामत के दिन उन के गले का तौक़ होगा।"

ज़कात की अ़दमे अदाएगी पर तीन अहादीसे मुबारका

(1) "जो क़ौम ज़कात न देगी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे क़ह़त़ में मुब्तला फ़रमाएगा।"

(المعجم الاوسط، من اسمه عبدان، الحديث: ۴۵۷۷، ج۳، ص ۲۷۵ تا ۲۷۶)

(2) "दोज़ख़ में सब से पहले तीन शख़्स जाएंगे, उन में एक वोह तवंगर है कि अपने माल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ (ज़कात) अदा नहीं करता।"

(صحیح ابن خزیمة، کتاب الزکاة، باب ذکر ادخال مانع الزکاة النار الخ، الحدیث: ۲۲۴۹، ج۴، ص۸)

(3) "जो शख़्स सोने चांदी का मालिक हो और इस का ह़क़ अदा न करे तो जब क़ियामत का दिन होगा उस के लिये आग के पथ्थर बनाए जाएंगे उन पर जहन्नम की आग भड़काई जाएगी और इन से उस की करवट, पेशानी और पीठ दाग़ी जाएगी, जब ठन्डे होने पर आएंगे फिर वैसे ही कर दिये जाएंगे। येह मुआ़मला उस दिन का है जिस की मिक़्दार पचास हज़ार बरस है यहां तक कि बन्दों के दरमियान फ़ैसला हो जाए, अब वोह अपनी राह देखेगा ख़्वाह जन्नत की त़रफ़ जाए या जहन्नम की त़रफ़ और ऊंट के बारे में फ़रमाया : जो इस का ह़क़ नहीं अदा करता, क़ियामत के दिन हमवार मैदान में लिटा दिया जाएगा और

www.dawateislami.net

वोह तमाम ऊंट सब के सब निहायत फ़रबा हो कर आएंगे, पाउं से उसे रौंदेंगे और मुंह से काटेंगे, जब उन की पिछली जमाअ़त गुज़र जाएगी, पहली लौटेगी और गाए और बकरियों के बारे में फ़रमाया कि उस शख़्स को हमवार मैदान में लिटाएंगे और वोह सब की सब आएंगी, न उन में मुड़े हुवे सींग की कोई होगी, न बे सींग की, न टूटे सींग की और सींगों से मारेंगी और खुरों से रौंदेंगी।" (صحیح مسلم، کتاب الزکوۃ، باب اثم مانع الزکوۃ، الحدیث: ۹۸۷، ص ۴۹۱)

ज़कात की अदाएगी की हिक्मतें और फ़वाइदे कसीरा

(1) सख़ावत इन्सान का कमाल है और बुख़्ल ऐ़ब। इस्लाम ने ज़कात की अदाएगी जैसा प्यारा अ़मल मुसलमानों को अ़ता फ़रमाया ताकि इन्सान में सख़ावत जैसा कमाल पैदा हो और बुख़्ल जैसा क़बीह़ ऐ़ब इस की ज़ात से ख़त्म हो।

(2) जैसे एक मुल्की निज़ाम होता है कि हमारी कमाई में हुकूमत का भी ह़िस्सा होता है जिसे वोह टेक्स के तौ़र पर वुसूल करती है और फिर वोही टेक्स हमारे ही मफ़ाद में या'नी मुल्की इन्तिज़ाम पर ख़र्च होता है बिला तशबीह हमें मालो दौलत और दीगर तमाम ने'मतों से नवाज़ने वाली हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ही की प्यारी ज़ाते पाक है, और ज़कात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ है, जो हमारे ही ग़ुरबा पर ख़र्च किया जाता है।

(3) रब عَزَّوَجَلَّ चाहता तो सब को मालो दौलत अ़ता फ़रमा कर ग़नी कर देता लेकिन उस की मशिय्यत है कि उस ने अपने ही बन्दों में बा'ज़ों को अमीर और दौलत मन्द किया और बा'ज़ों को ग़रीब रखा और अमीरों या'नी साहि़बे निसाब पर ज़कात की अदाएगी लाज़िम कर दी ताकि इस से अमीरों और ग़रीबों में मह़ब्बत व उन्सिय्यत और बाहमी इमदाद का जज़्बा पैदा हो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत को सब मिल बांट कर खाएं और उस का शुक्र अदा करें।

(4) शरीअ़त ने ज़कात फ़र्ज़ कर के कोई अनहोनी चीज़ फ़र्ज़ नहीं की बल्कि अगर हम अपने अत़राफ़ में ग़ौरो फ़िक्र करें तो ज़कात की ह़क़ीक़त हर जगह मौजूद है। जैसे कि फलों का गूदा इन्सान के लिये है मगर छिलका जानवरों का ह़क़ है। गन्दुम में फल हमारा ह़िस्सा मगर भूसा जानवरों का, गन्दुम में भी आटा हमारा है तो भूसी जानवरों की। हमारे

www.dawateislami.net

जिस्म में बाल और नाखुन वगै़रा का हद्दे शरई से बढ़ने की सूरत में अ़लाहिदा करना ज़रूरी है कि येह सब जिस्म की ज़कात या'नी इज़ाफ़ी चीज़ मैल हैं। बीमारी तन्दुरुस्ती की ज़कात, मुसीबत राहत की ज़कात, नमाज़ें दुन्यावी कारोबार की गोया ज़कात हैं।

(5) अगर हर वोह शख़्स जिस पर ज़कात फ़र्ज़ है ज़कात की अदाएगी का इल्तिज़ाम कर ले तो मुसलमान कभी दूसरों के मोहताज न होंगे। मुसलमानों की ज़रूरतें मुसलमानों से ही पूरी हो जाएंगी। और किसी को भीक मांगने की भी हाजत न होगी।

(رسائل نعیمیہ، ص۲۹۸، بتصرف)

मुन्किरीने ज़कात के ख़िलाफ़ जिहाद ज़रूरी था

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाके़ई इस्लाम में ज़कात का मज़्कूरए बाला नज़रिय्या (Concept) पढ़ कर हर शख़्स अन्दाज़ा लगा सकता है कि मुन्किरीने ज़कात के ख़िलाफ़ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का जिहाद फ़रमाना किस क़दर ज़रूरी था। अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस वक़्त इस फ़ितने का क़ल्अ़ क़म्अ़ न करते तो क़ियामत तक ज़कात की अदाएगी और इस के फ़वाइदे कसीरा से मुसलमान महरूम हो जाते और मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा ना पैद हो जाता।

मुन्किरीने ज़कात की सरकोबी

मुहाजिरीन व अन्सार का जंगी लश्कर

हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुहाजिरीन व अन्सार का एक जंगी लश्कर ले कर रवाना हुवे हत्ता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नज्द के बिल मुक़ाबिल एक सर सब्ज़ो शादाब अ़लाके़ में पहुंचे तो उस अ़लाके़ के देहाती लोग मुसलमानों के इस जंगी लश्कर को देख कर अपने बीवी बच्चों समेत भाग गए। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने मश्वरा देते हुवे अ़र्ज़ की : ''या अमीरल मोअमिनीन ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा बच्चों और औ़रतों के पास तशरीफ़ ले जाइये कि वोह सब वहां अकेले हैं। और यहां इस लश्कर पर किसी को अमीर मुक़र्रर फ़रमा दीजिये जो लश्कर के फ़त्हयाब हो कर लौटने तक अमीर ही रहे और उसी की इत़ाअ़त की जाए।''

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस मश्वरे को क़बूल फ़रमाया और हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस लश्कर का अमीर मुक़र्रर फ़रमा दिया और इरशाद फ़रमाया : "जब वोह इस्लाम ले आएं और ज़कात अदा कर दें तो तुम में से जो भी वापस आना चाहे वोह आ जाए ।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मदीनए मुनव्वरा वापस लौट गए ।

(تاریخ مدینۃ دمشق،ج ۲، ص ۵۳، تاریخ الاسلام للذھبی،ج ۳، ص ۲۸)

शरई मुआमले में कोई नर्मी नहीं

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में बा'ज़ क़बाइले अ़रब मुर्तद हो गए और ज़कात देने से इन्कार कर दिया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को जम्अ़ कर के उन से मुशावरत की तो उन में इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ़ हो गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मश्वरा तलब किया तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! अगर आप ने उन लोगों से एक अदना सी ऐसी शै न ली जिसे **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बतौ़रे ज़कात वुसूल फ़रमाते थे तो येह सुन्नते रसूल की मुख़ालफ़त होगी ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह सुन कर इरशाद फ़रमाया : "अच्छा अगर ऐसा है तो मैं उन के ख़िलाफ़ जिहाद करूंगा !" बा'ज़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने उन से नर्मी करने का मश्वरा दिया । येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "वह़ी का सिलसिला ख़त्म हो चुका और अब दीन मुकम्मल है तो क्या मेरे होते हुवे दीन में कोई कमी हो जाएगी ! ख़ुदा की क़सम ! मैं ज़कात और नमाज़ के दरमियान फ़र्क़ करने वालों से ज़रूर जिहाद करूंगा, क्यूंकि ज़कात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ है। ख़ुदा की क़सम ! अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बतौ़रे ज़कात दी जाने वाली एक रस्सी भी अपने पास रखेंगे तो मैं उन से जिहाद करूंगा ।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह रूह़ परवर अन्दाज़े बयान देख कर मुझे यूं लगा जैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सीना जिहाद के लिये खोल दिया है, और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सच फ़रमा रहे हैं ।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الامر بقتال الناس حتی یقولوا لا الہ الا اللّٰہ۔۔۔الخ، الحدیث: ۳۲، ص ۳۲، الریاض النضرۃ،ج ۱، ص ۱۴۷)

www.dawateislami.net

फ़र्ते महब्बत से सर चूम लिया

हज़रते अबू रजा इमरान अ़तारिदी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि मैं मदीनए मुनव्वरा आया तो मैं ने देखा कि एक जगह काफ़ी लोग इकठ्ठे हैं और इन में से एक शख़्स किसी दूसरे का सर चूम रहा है और साथ ही येह भी कह रहा है कि "اَنَا فِدَاؤُکَ لَوْلَا اَنْتَ لَھَلَکْنَا या'नी मैं तुम पर फ़िदा हूं, अगर तुम न होते तो हम तबाह हो जाते।" मैं ने किसी से पूछा : "येह दोनों कौन हैं ?" बताया गया : "येह सर चूमने वाले हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन का सर चूम रहे हैं वोह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, क्यूंकि इन्हों ने ज़कात न देने वालों से जिहाद किया और अब वोह मानेईने ज़कात ज़लील हो कर खुद इन की बारगाह में ज़कात लाए हैं।"

(المنتظم فی تاریخ الملوک والامم، ذکر خبر ردۃ الیمن، ج۴، ص۸۷)

इसाबते राए पर आफ़रीं

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जब हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुन्किरीने ज़कात के ख़िलाफ़ ए'लाने जिहाद किया तो अव्वलन हम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मज़्कूरा ए'लान को नापसन्द किया लेकिन जब इस के अच्छे नताइज को देखा तो बा'द में हम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इसाबते राए पर आफ़रीं कह उठे और ह़क़ीक़त येह है कि अगर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह काम न करते तो ता क़ियामत लोग ज़कात के मुन्किर हो जाते।" (روح البیان، المائدۃ: ۵۱، ج۲، ص۴۰۵)

मौला अ़ली के वालिहाना जज़्बात

जब मुन्किरीने ज़कात के ख़िलाफ़ जिहाद के लिये हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ब ज़ाते खुद घोड़े पर सुवार हो कर तल्वार लहराते हुवे निकले तो हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم आप के घोड़े की लगाम थाम कर अ़र्ज़ गुज़ार

www.dawateislami.net

हुवे : “ऐ ख़लीफ़ए रसूल ! आज मैं आप से वोही बात कहूंगा जो मैदाने उहुद में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाई थी, अपनी तल्वार नियाम में कर लें, हमें अपनी जान के ख़त़रे से न डराएं और मदीने को वापस लौट जाएं। अगर आप शहीद हो गए तो हमारा सारा निज़ाम दरहम बरहम हो जाएगा।” येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वापस लौट आए।

(البدایة والنهایة، ج۵، ص ۱۹، کنزالعمال، کتاب الخلافة مع الامارة، قتاله مع اهل الردة، الحدیث: ۱۴۱۲۲، ج۳، الجزء: ۵، ص ۲۶۴)

सिद्दीक़े अक्बर और मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जिहाद

बग़ावत व इर्तिदाद की वुजूहात

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते त़य्यिबा में मुसलमानों की अफ़रादी त़ाक़त को देख कर बा’ज़ क़बाइल ने ब ज़ाहिर इस्लाम क़बूल कर लिया था लेकिन फिर उन्हों ने मुनाफ़िक़ीन की साज़िशों के बाइ़स इर्तिदाद इख़्तियार कर लिया या’नी दीने इस्लाम से फिर गए। साथ ही चन्द एक कमज़र्फ़ घटया और झूटे मुद्दइय्याने नबुव्वत भी पैदा हो गए। इस पर तुर्रह येह कि कुछ क़बाइल ने ज़कात की अदाएगी में पसो पेश से काम लेना शुरूअ़ कर दिया। इन तमाम फ़ित्नों के पैदा होने की वुजूहात दर्जे ज़ैल हैं :

पहली वजह, इस्लामी ता’लीम में पुख़्ता न होना

दीगर क़बाइल ने इस्लामी ता’लीम में वोह पुख़्तगी ह़ासिल नहीं की थी जो मक्का मदीना और इस के क़ुर्बो जवार के मुसलमानों के दिलों में थी। क्यूंकि इन्हों ने तो इब्तिदा से इन्तिहा तक सब कुछ अपनी आंखों से न सिर्फ़ देखा था बल्कि इस्लाम के लिये सख़्त तरीन तकालीफ़ बरदाश्त कीं और इन्हों ने इस्लाम ही को अपना ओढ़ना, बिछौना बना लिया था। लेकिन जो क़बाइल ख़ुसूसन फ़त्ह़े मक्का के बा’द मुसलमान हुवे उन का मुआ़मला थोड़ा मुख़्तलिफ़ था, बा’ज़ क़बाइल ने तो बिग़ैर सोचे समझे दीगर क़बाइल को

www.dawateislami.net

देखते हुवे इस्लाम क़बूल कर लिया और बिल आख़िर **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द उन्हों ने इस्लाम को तर्क करना शुरूअ़ कर दिया।

दूसरी वजह, बैरूनी अ़वामिल

तर्के इस्लाम और बग़ावत व इर्तिदाद की तह में कुछ बैरूनी अ़वामिल भी कार फ़रमा थे और यक़ीनन बैरूनी अ़वामिल हर मुआ़मले में हर वक़्त अपना असर दिखाते हैं। दर अस्ल मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरा के क़ुर्बो जवार के अ़लाक़े ईरानी और रूमी कुफ़्फ़ार के असरो रुसूख़ से बाहर और इन की सियासी रसाई से महफ़ूज़ थे, लेकिन अ़रब का शुमाली अ़लाक़ा जो मुल्के शाम की हुदूद से मुलहिक़ था और जुनूबी अ़लाक़ा जो ईरान से मिला हुवा था उस दौर की दो अ़ज़ीम सल्तनतों ईरान व शाम के ज़ेरे असर था। सरहदी इत्तिसाल की वजह से इन दोनों मुल्कों के लोगों की एक दूसरे के अ़लाक़ों में आमदो रफ़्त रहती थी और वहां के अ़रब उन की तहज़ीब व सक़ाफ़त से मुतअस्सिर थे। सरहदी अ़लाक़ों के अ़रब सरदार भी रूमियों और ईरानियों के बहुत हद तक ज़ेरे असर थे। क़बाइले अ़रब अ़वाम पर भी उन के असरात ग़ालिब थे, इन हालात में ऐन मुमकिन है कि अ़रब क़बाइल के इर्तिदाद व बग़ावत की वजह शख़्सी आज़ादी और ख़ुद मुख़्तारी के जज़्बात, शुमाली अ़रब में ईसाई और जुनूब व मशरिक़ में मजूसी हुकूमतों से क़ुर्बो इत्तिसाल की दिलों पर ईसाइय्यत और मजूसिय्यत का असर, अपने आबाई मज़हब 'बुत परस्ती' से महब्बत जैसे उमूर कार फ़रमा हों।

तीसरी वजह, अहकामाते शरइय्या में नर्मी

ऐसे मुब्तदी मुसलमान जिन्हों ने अभी अहकामे शरइय्या और इस के फ़वाइद से मुकम्मल आगही हासिल न की थी और दीनी व दुन्यवी उमूर के माबैन फ़र्क़ नहीं कर सकते थे उन्हें अहकामे शरइय्या की ता'मील में दुश्वारी पेश आती थी, लिहाज़ा नबुव्वत के झूटे दा'वेदारों ने इन की इस कमज़ोर सोच का फ़ाइदा उठाते हुवे नबुव्वत के दा'वे के साथ साथ अहकामे शरइय्या में नर्मी कर दी, किसी ने कहा कि مَعَاذَ اللّٰه मैं नबी हूं, तुम पर पांच के

www.dawateislami.net

बजाए सिर्फ़ दो नमाज़ें फ़र्ज़ करता हूं और येही काफ़ी है, किसी ने कहा कि मैं तुम्हें ज़कात मुआफ़ करता हूं वग़ैरा वग़ैरा। लिहाज़ा इन अह़कामे शरइय्या में तह़रीफ़ात के सबब भी कई लोग मुर्तद्द हो कर दाइरए इस्लाम से ख़ारिज हो गए।

चौथी वजह, मुनाफ़िक़ीन का मन्फ़ी किरदार

फ़त्ह़े मक्का के मौक़अ़ पर कई ऐसे लोग भी मुसलमान हुवे जो ब ज़ाहिर तो कलिमा गो थे लेकिन कलिमा पढ़ने के बा'द उन के दिल दीगर मुसलमानों की त़रह़ इस्लाम के नूर से मा'मूर होने के बजाए इस्लाम के बुग़्ज़ व अ़दावत से भरपूर रहे और उन्हों ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द इस्लाम दुश्मनी जैसे अपने अ़ज़ीम मक़्सद को अ़मली जामा पहनाने के लिये मुख़्तलिफ़ क़बाइल को अपना गिरवीदा बनाना शुरूअ़ कर दिया और उन की फ़ासिद ज़ेह्नी तर्बिय्यत शुरूअ़ कर दी। इसी तर्बिय्यत के नतीजे में कुछ क़बाइल मुकम्मल इर्तिदाद को इख़्तियार कर बैठे और बा'ज़ ने इस्लाम के मुसल्लमा उसूलों पर मुख़्तलिफ़ अक़्साम के ए'तिराज़ात शुरूअ़ कर दिये। और फ़ासिद इजतिहाद के ज़रीए मुख़्तलिफ़ मसाइल में तब्दीली करना शुरूअ़ कर दी। मुन्किरीने ज़कात का फ़ितना भी इसी साज़िश का पैदा कर्दा है। (الکامل فی التاریخ، ص ۲۰۱ تا ۲۵۰ ماخوذا)

येह मुर्तद्दीन किस क़िस्म के थे ?

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द जो क़बाइल मुर्तद्द हो गए थे ऐसा नहीं था कि वोह तौह़ीद छोड़ कर शिर्क में मुब्तला हो गए थे और ख़ुदा की जगह बुतों की परस्तिश शुरूअ़ कर दी थी, बल्कि इन मुर्तद्दीन के मुख़्तलिफ़ अह़वाल थे। मसलन : इन में से कई ऐसे थे जो सिर्फ़ और सिर्फ़ ज़कात की फ़र्ज़िय्यत के मुन्किर थे बक़िय्या अह़कामे शरइय्या को तस्लीम करते थे, बा'ज नमाज़ों में तख़्फ़ीफ़ के क़ाइल थे, बा'ज़ पांचों नमाज़ों की फ़र्ज़िय्यत के क़ाइल थे लेकिन उन्हों ने सूअर का गोश्त, शराब और ज़िना वग़ैरा को ह़लाल कर लिया था वग़ैरा वग़ैरा।

झूटे मुद्दइय्याने नबुव्वत की पेशन गोई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाज़ेह़ रहे कि इन मुर्तद्दीन व झूटे मुद्दइय्याने नबुव्वत का पैदा होना कोई अनहोनी बात नहीं थी बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब,

www.dawateislami.net

दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी हयाते तृय्यिबा में ही इस की पेशन गोई फ़रमा दी थी । चुनान्चे, इस ज़िम्न में तीन अहादीस पेशे ख़िदमत हैं :

(1) हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

إِنَّهُ سَيَكُونُ فِي أُمَّتِي كَذَّابُونَ ثَلَاثُونَ كُلُّهُمْ يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ وَأَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّينَ، لَا نَبِيَّ بَعْدِي

या'नी अन क़रीब मेरी उम्मत में तीस कज़्ज़ाब पैदा होंगे और सब के सब नबुव्वत का दा'वा करेंगे हालांकि मैं सब से आख़िरी नबी हूं मेरे बा'द कोई नबी नहीं ।"

(سنن ابی داود، کتاب الفتن والملاحم، باب ذکر الفتن ودلائلها، الحدیث: ۴۲۵۲، ج۴، ص۱۳۳)

(2) हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتّٰى يَخْرُجَ ثَلَاثُونَ كَذَّابًا، مِنْهُمُ الْعَنَسِيُّ وَمُسَيْلَمَةُ وَالْمُخْتَارُ

या'नी क़ियामत उस वक़्त तक क़ाइम न होगी जब तक तीस झूटे नबी ज़ाहिर न हो जाएं और उन झूटे नबियों में से अ़नसी, मुसैलमा और मुख़्तार है ।"

(مصنف ابن ابی شیبه، کتاب الامراء، باب ما ذکر من حدیث الامراء ۔۔۔ الخ، الحدیث: ۵۷، ج۷، ص۲۵۷، مسند ابی یعلی، مسند عبد اللہ بن زبیر، الحدیث: ۶۷۸۲، ج۲، ص۴۵)

(3) दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتّٰى يَخْرُجَ ثَلَاثُونَ كَذَّابًا آخِرُهُمُ الْأَعْوَرُ الدَّجَّالُ**" या'नी क़ियामत उस वक़्त तक क़ाइम न होगी जब तक तीस झूटे नबी ज़ाहिर न हो जाएं और उन झूटे नबियों में सब से आख़िर में काना दज्जाल ज़ाहिर होगा ।"(مسند امام احمد، حدیث سمرة بن جندب، الحدیث: ۲۰۱۹۸، ج۷، ص۲۶۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान के ऐन मुत़ाबिक़ क़ियामत तक येह झूटे नबी तो ज़ाहिर होंगे लेकिन अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौर के तमाम झूटे मुद्दइय्याने नबुव्वत और मुर्तद्दीन से निमटने के लिये एक जामेअ़ लाइह़ए अ़मल तय्यार किया ।

www.dawateislami.net

मुर्तद्दीन से जिहाद का लाइहृए अ़मल

मुर्तद्दीन को सिद्दीक़े अक्बर का मक्तूब

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मदीनए मुनव्वरा में आते ही सब से पहले एक मक्तूब लिखवाया और इस की मुतअ़द्दिद नक़्लें करवा कर क़ासिदों के ज़रीए़ हर मुर्तद्द क़बीले की त़रफ़ भेजा और तमाम लोगों को सुनाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। (الکامل فی التاریخ، ج ۲، ص ۲۰۸)

सिद्दीक़े अक्बर के मक्तूब का मज़मून

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा अबू बक्र की त़रफ़ से हर उस शख़्स को जिस के पास येह मक्तूब पहुंचे ख़्वाह वोह इस्लाम पर क़ाइम हो या इस्लाम से फिर गया हो मा'लूम होना चाहिये कि : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सच्चा नबी बना कर भेजा जो ख़ुश ख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले और ख़ुदा के हुक्म से लोगों को ख़ुदा की त़रफ़ बुलाने वाले हैं और हिदायत के सिराजे मुनीर हैं। जो शख़्स दा'वते इस्लाम को क़बूल करता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को हिदायत देता और कामयाबी के सीधे रास्ते पर चला देता है और जो इन्कार करता है ब हुक्मे इलाही उस की त़रफ़ ब ज़रीअ़ए जिहाद फ़रमां बरदारी के लिये रुजूअ़ किया जाता है। अह़कामे इलाही नाफ़िज़ फ़रमाने, मुसलमानों को नसीह़त करने और अपने फ़राइज़े तब्लीग़ को ब ख़ूबी सर अन्जाम देने के बा'द **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस दुन्या से तशरीफ़ ले गए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की ख़बर क़ुरआने मजीद में पहले ही से दे दी थी : ﴿اِنَّكَ مَیِّتٌ وَّ اِنَّهُمْ مَّیِّتُوْنَ﴾ (پ۲۳، الزمر ۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक तुम्हें इन्तिक़ाल फ़रमाना है और उन को भी मरना है।"

﴿وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُؕ اَفَاۡىٕنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْؕ وَ مَنْ یَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَیْهِ فَلَنْ یَّضُرَّ اللّٰهَ شَیْــٴًـاؕ وَ سَیَجْزِی اللّٰهُ الشّٰكِرِیْنَ﴾ (پ۴، اٰل عمران:۱۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और **मुह़म्मद** तो एक रसूल हैं इन से पहले और रसूल हो चुके तो क्या अगर वोह इन्तिक़ाल फ़रमाएं या शहीद हों तो तुम उलटे पाउं फिर जाओगे और जो

www.dawateislami.net

उलटे पाउं फिरेगा अल्लाह का कुछ नुक़्सान न करेगा और अन क़रीब अल्लाह शुक्र वालों को सिला देगा।" पस जो शख़्स हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पूजता था तो वोह अच्छी तरह सुन ले कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इन्तिक़ाल फ़रमा गए हैं और जो ख़ुदाए वह्दहू ला शरीक की इ़बादत किया करता था तो वोह भी सुन ले कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दा और क़ाइम है न वोह फ़ौत हुवा न होगा, न ही उसे नींद और ऊंघ छू सकती है, वोह अपने हुक्म की निगह दाश्त फ़रमाता है और अपनी जमाअ़त के ज़रीए दुश्मनों से बदला लेने वाला है। मैं तुम्हें ख़ुदा से डरने, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लाए हुवे नूर और ख़ुदा की रह़मत से ह़िस्सा लेने, इस्लाम की हिदायत इख़्तियार करने और दीने इलाही की मज़बूत रस्सी को पकड़ने की वसिय्यत करता हूं। जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हिदायत न दी वोह गुमराह हुवा और जिस को उस ने आ़फ़िय्यत इनायत न की वोह मुसीबत में मुब्तला हुवा। जिस की रब عَزَّوَجَلَّ मदद न करे वोह तन्हा और बे यारो मददगार है। इन्सान जब तक इस्लाम का मुन्किर है दुन्या व आख़िरत में उस का कोई अ़मल मक़्बूल नहीं। मुझे मा'लूम हुवा है कि तुम में से बा'ज़ लोगों ने इस्लाम क़बूल करने और इस के अह़कामात की ता'मील करने के बा'द ख़ुदा से मुंह मोड़ कर जहालत और शैत़ान की इत़ाअ़त की त़रफ़ रुजूअ़ किया है। क्या तुम अल्लाह को छोड़ कर शैत़ान और उस की ज़ुर्रिय्यत को दोस्त बनाते हो जो तुम्हारे दुश्मन हैं ! और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि शैत़ान तुम्हारा दुश्मन है। पस तुम भी उस को अपना दुश्मन बनाओ। क्यूंकि वोह तो अपने गुरौह को तुम्हें दोज़ख़ी बनाने के लिये तय्यार करता है। मैं तुम्हारी त़रफ़ नेकी की पैरवी करने वाले मुहाजिरीन व अन्सार के लश्कर को रवाना करता हूं। मैं ने इन को हुक्म दिया है कि इस्लाम की दा'वत दिये बिग़ैर किसी से मुक़ाबला न करें, जो लोग इस्लाम का इक़रार करें और बुराइयों से बाज़ रहें नेक कामों से इन्कार न करें उन की इआ़नत (मदद) की जाए और जो इस्लाम से इन्कार करें उन का मुक़ाबला किया जाए और उन की कुछ क़द्रो मन्ज़िलत न की जाए और सिवाए इस्लाम के कुछ क़बूल न करें। पस जो शख़्स ईमान लाए उस के लिये बेहतरी है वरना वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को आ़जिज़ नहीं कर सकता। मैं ने अपने क़ासिद को हुक्म दिया है कि मेरे इस ए'लान को मजमअ़ में पढ़ कर सुना दे। जब इस्लामी लश्कर तुम्हारे क़रीब पहुंचे और इन का मुअज़्ज़िन अज़ान दे तो तुम भी उस के मुक़ाबले में अज़ान दो। येह इस बात की

www.dawateislami.net

अ़लामत होगी कि तुम ने इस्लाम को क़बूल कर लिया है तुम पर ह़म्ला न किया जाएगा। अगर तुम ने अज़ान न दी तो तुम से बाज़पुर्स होगी और इन्कार की सूरत में तुम पर ह़म्ला कर दिया जाएगा।

ग्यारह सिपह सालार और ग्यारह झन्डे

इन फ़रामीन को क़ासिदों के हाथ रवाना करने के बा'द अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग्यारह झन्डे तय्यार किये और ग्यारह सिपह सालार मुन्तख़ब फ़रमा कर एक एक झन्डा हर एक सिपह सालार को दिया। बा'ज़ के नज़दीक आठ झन्डे तय्यार किये बहर ह़ाल हर एक के साथ फ़ौजी दस्ता था और आप ने हुक्म दिया कि मक्का व त़ाइफ़ वग़ैरा तमाम मक़ामात से जहां जहां इस्लाम पर साबित क़दम क़बाइल मिलें उन में से चन्द लोगों को उन क़बाइल और उन के घर बार की ह़िफ़ाज़त के लिये छोड़ कर कुछ लोगों को अपने लश्कर में शामिल कर के अपने साथ लेते जाएं।

पहला झन्डा सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद को दिया गया

पहला झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिया और इन्हें हुक्म फ़रमाया कि सब से पहले क़बीलए बनू असद पर चढ़ाई करें और जब इस मुहिम से फ़ारिग़ हो जाएं तो मक़ामे बत़ाह़ की त़रफ़ मालिक बिन नवीरा पर ह़म्ला आवर हों और उस के ख़िलाफ़ जंग करें। वाज़ेह़ रहे कि बनू असद और बनू तमीम वोह क़बाइल थे जो मदीनए मुनव्वरा के क़रीब थे और त़ाक़तवर थे लिहाज़ा ज़रूरी था कि जंग की इब्तिदा उन ही क़बाइल से की जाए ताकि उन की शिकस्त से दूसरे क़बाइल का ह़ौसला टूट जाए।

दूसरा झन्डा सय्यिदुना इ़करमा बिन अबी जहल को दिया गया

दूसरा झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा बिन अबी जहल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को दिया और हुक्म फ़रमाया कि यमामा जा कर क़बीलए बनी ह़नीफ़ा के सरदार मुसैलमा कज़्ज़ाब से जंग करें और येह वोही मुसैलमा कज़्ज़ाब है जिस ने नबुव्वत का झूटा दा'वा किया था।

www.dawateislami.net

तीसरा झन्डा सय्यिदुना शुरहबील बिन हस्ना को दिया गया

तीसरा झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना शुर हबील बिन हस्ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिया और उन्हें हुक्म फ़रमाया कि इब्तिदा में हज़रते सय्यिदुना इकरमा बिन अबी जहल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की मदद करें और यमामा से फ़ारिग़ होने के बा'द हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मदद के लिये हज़र मौत की तरफ़ क़बीलए बनू कन्दा और बनू क़ज़ाआ पर चढ़ाई करें। वाज़ेह रहे कि मुसैलमा कज़्ज़ाब ने हज़रते सय्यिदुना इकरमा बिन अबी जहल और शुर हबील बिन हस्ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के सामने हथयार नहीं डाले थे, इन की मुआवनत के लिये हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आए और कामयाबी हासिल की।

चौथा झन्डा सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद को दिया गया

चौथा झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद अल आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिया और उन्हें हुक्म फ़रमाया कि मुल्के शाम की सरहद पर पहुंच कर वहां के मुर्तद्द क़बाइल को सीधा करो।

पांचवां झन्डा सय्यिदुना अम्र बिन अल आस को दिया गया

पांचवां झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन अल आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़ता फ़रमाया और हुक्म दिया कि मुर्तद्दीन बनू क़ज़ाआ से जिहाद करो।

छटा झन्डा सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन मोहसिन को दिया गया

छटा झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन मोहसिन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिया और उन्हें मुल्क "दबा" के मुर्तद्दीन से जिहाद करने का हुक्म दिया।

सातवां झन्डा सय्यिदुना अर्फ़जा बिन हरसमा को दिया गया

सातवां झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अर्फ़जा बिन हरसमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिया और हुक्म फ़रमाया कि अहले मोहरा की तरफ़ जा कर उन से जिहाद करो।

www.dawateislami.net

आठवां झन्डा सय्यिदुना मअ़न बिन जाबिर को दिया गया

आठवां झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मअ़न बिन जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिया और हुक्म फ़रमाया कि बनू सुलैम और उन के शरीके ह़ाल बनू हवाज़िन के मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जिहाद करो ।

नवां झन्डा सय्यिदुना सुवैद बिन मक़रन को दिया गया

नवां झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुवैद बिन मक़रन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिया और हुक्म फ़रमाया कि यमन तहामा के मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जिहाद करो ।

दसवां झन्डा सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़रमी को दिया गया

दसवां झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिया और हुक्म फ़रमाया कि बह़रैन की त़रफ़ जाओ और वहां के मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जिहाद करो ।

ग्यारहवां झन्डा सय्यिदुना मुहाजिर बिन उमय्या को दिया गया

ग्यारहवां झन्डा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुहाजिर बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दिया और हुक्म फ़रमाया कि सनआ़ की त़रफ़ जाओ और वहां के मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जिहाद करो । (الکامل فی التاریخ، ج۲، ص۲۰۸)

तमाम उमरा के लिये नसीह़त आमोज़ फ़रमान

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग्यारह झन्डे जंगी उमूर में महारत रखने वाले ग्यारह सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को अ़त़ा किये और तमाम उमरा को एक नसीह़त आमोज़ फ़रमान लिख कर दिया जिस का मज़्मून कुछ यूं था : "येह अ़हद नामा **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा अबू बक्र की त़रफ़ से फ़ुलां सिपह सालार को दिया जाता है कि उसे उस का हदफ़ दे कर मअ़ लश्करे इस्लाम मुर्तद्दीन से लड़ने के लिये रवाना किया जा रहा है और उस से दर्जे ज़ैल उमूर में अ़हद लिया जाता है कि वोह इन का पास रखेगा और हरगिज़ इन की मुख़ालफ़त न करेगा ।"

www.dawateislami.net

(1) ज़ाहिरी और बातिनी तौर पर हर हर मुआमले में ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी को मल्हूज़ रखा जाए और किसी भी काम में ख़ुद को ग़नी न समझें।

(2) मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जंग करने से क़ब्ल इतमामे हुज्जत (या'नी आख़िरी दलील व कोशिश) के तौर पर सब से पहले उन्हें इस्लाम की दा'वत दी जाए अगर वोह क़बूल कर लें तो उन से क़त्अ़न लड़ाई न की जाए और अगर वोह दा'वते इस्लाम क़बूल न करें तो उन के ख़िलाफ़ जिहाद किया जाए।

(3) ज़कात व उ़श्र वग़ैरा के मुआ़मले में जो उन पर ज़कात बनती है उन से वोही वुसूल की जाए किसी क़िस्म की ज़ियादती न की जाए।

(4) हुक़ूक़ुल इ़बाद का ख़ास ख़याल रखा जाए जिस का जो ह़क़ बनता है उसे ज़रूर दिया जाए इस में किसी की रिआ़यत न की जाए।

(5) वहां के मुसलमानों को दुश्मनों के साथ जंगो जिदाल करने से रोका जाए और उन्हें अम्न व आश्ती की तल्क़ीन की जाए।

(6) जिस ने अह़कामे ख़ुदावन्दी का इन्कार किया वोह मुर्तद हो गया उस से लड़ाई की जाएगी और जिस ने दा'वत को क़बूल कर लिया वोह मुसलमान और बे क़ुसूर समझा जाएगा।

(7) जो शख़्स ज़बान से मुसलमान हो जाए लेकिन दिल में कुछ और अ़क़ीदा रखता है तो ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ उस की ख़ुद ही पकड़ फ़रमाएगा।

(8) जो लोग अह़कामे शरइय्या के मुन्किर हो कर लड़ाई तक नोबत पहुंचा दें तो वोह इस बात को अच्छी त़रह़ समझ लें कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर मुसलमानों को ही ग़लबा अ़त़ा फ़रमाएगा।

(9) मुर्तद्दीन से जिहाद के बा'द फ़त्ह़ व नुस्रत की सूरत में ह़ासिल होने वाला माले ग़नीमत ख़ुम्स या'नी पांचवां हिस्सा निकाल कर बक़िय्या तक़्सीम कर दिया जाएगा और ख़ुम्स मदीनए मुनव्वरा में हमारे पास भेज दिया जाएगा।

(10) लश्कर के सिपह सालार को इस बात की ताकीद की जाती है कि अपने मातह़त अफ़राद को उ़जलत या'नी जल्दबाज़ी और फ़साद से मन्अ़ करे।

www.dawateislami.net

(11) सिपह सालार अपने लश्कर के हर फ़र्द को अच्छी तरह शनाख़्त कर ले और किसी ग़ैर को अपने लश्कर में क़त्अ़न दाख़िल न होने दे जब तक उस के मुआ़मले में अच्छी तरह छान बीन न कर ले ताकि लश्कर जासूसों के फ़ितने से मह़फ़ूज़ रहे।

(12) हर मुआ़मले में मुसलमानों से नेक सुलूक किया जाए। ख़ुसूसन लश्कर की रवानगी और क़ियाम में लोगों से नर्मी की जाए। इसी त़रह़ निशस्त व बरख़ास्त और गुफ़्त्गू में एक दूसरे के साथ रिआ़यत और नर्मी का पहलू मल्ह़ूज़ रखा जाए।

एक हैरत अंगेज़ बात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बहुत तअ़ज्जुब की बात है कि मुसलमानों की येह पहली हुकूमत थी और हुक्मरानी का इन्हें पहले से क़तअ़न कोई तजरिबा नहीं था, लेकिन अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो भी क़दम उठाते थे हुस्ने इन्तिज़ाम के ए'तिबार से मौजूदा दौर के जदीद हुक्मरानी के उसूलों से कहीं बेहतर था। मौजूदा दौर में हुकूमत के मुख़्तलिफ़ मोह़कमों की तर्बिय्यत के लिये बे शुमार इदारे क़ाइम हैं, जिन पर करोड़ों, अरबों रूपे माहाना ख़र्च होते हैं, उस वक़्त इस क़िस्म का कोई इदारा न था लेकिन हर शो'बे का इन्तिज़ाम इस क़दर शानदार और सह़ीह़ था कि मौजूदा इन्तिज़ामी उमूर के इदारे उन की गर्द को भी नहीं पहुंच सकते। आज के इन्तिहाई ता'लीम याफ़्ता लोग तमाम मुआ़मलात में उन ही के क़ाइम कर्दा उसूलों से रहनुमाई ह़ासिल करने पर मजबूर हैं। यक़ीनन अ़हदे सिद्दीक़ी में इन्तिज़ामी मुआ़मलात का येह बेहतरीन इन्तिज़ाम अ़दीमुल मिसाल और येह अ़हद फ़क़ीदुन्नज़ीर था।

तमाम सिपह सालारों की रवानगी

येह तमाम सिपह सालार सिने 11 हिजरी में मदीनए मुनव्वरा से रवाना हो कर अपने अपने लश्कर के साथ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ से अ़त़ा किये गए झन्डे के साथ अपने अपने मुक़र्ररा अ़लाक़ों की त़रफ़ रवाना हो गए और मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जिहाद का आग़ाज़ फ़रमा दिया। इन की तफ़्सील मुलाह़ज़ा कीजिये :

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर व मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जिहाद मा'रिकए सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद

क़बीलए बनी असद व बनी ग़ित्फ़ान से जिहाद

क़बीलए बनी असद व बनी ग़ित्फ़ान मदीनए मुनव्वरा के क़रीबी क़बाइल थे इन के ख़िलाफ़ जंग के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर किया गया था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रवाना करने से पहले अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक खुसूसी हुक्म भी इरशाद फ़रमाया कि इन पांच अरकाने इस्लाम : (1) कलिमए त़य्यिबा (2) नमाज़ (3) रोज़ा (4) ह़ज्जे बैतुल्लाह (5) ज़कात या इन में से किसी एक के इन्कार करने वालों से लड़ाई करें। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जमादिल आख़िर में अपने साथियों के हमराह चल पड़े और बनू असद व बनू ग़ित़फ़ान से ख़ूब लड़ाई हुई। बहुत से क़त्ल हुवे, बे शुमार गिरिफ़्तार हुवे और बच जाने वाले इस्लाम ले आए ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क्काशा बिन मिह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन अक़्रम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इसी जंग में शहीद हुवे।

(تاریخ الاسلام للذھبی، ج۳، ص۲۸، تاریخ الخلفاء، ص۵۷)

मुख़्तलिफ़ क़बाइल का इजतिमाए अ़ज़ीम

क़बीलए बनू असद के साथ ग़ित़फ़ान, बनू आ़मिर, बनू त़य वग़ैरा दीगर क़बाइल भी जम्अ़ हो गए और यूं कई क़बाइल का इजतिमाए अ़ज़ीम हो गया।

मुर्तद्दीन भाग खड़े हुवे

जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां पहुंचे तो क़बीलए बनू त़य अ़लाह़िदा हो गया और वोह इस्लाम पर क़ाइम रहा। अलबत्ता इस क़बीले के बा'ज़ लोग इर्तिदाद पर क़ाइम रहे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

को और बनू तय क़बीले पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सिपह सालार मुक़र्रर कर के ह़म्ला किया तो मुर्तद्दीन यक लख़्त भाग खड़े हुवे।

सलमा नामी ख़ातून से जंग

जब मुर्तद्दीन का येह लश्कर शिकस्त खा कर भागा तो इन में से गि़त़्फ़ान व सुलैम व हवाज़ुन वग़ैरा क़बाइल के लोग मक़ामे **ह़वाब** में जा कर मुज्तमअ़ हो गए और सलमा बिन्ते मालिक बिन हुज़ैफ़ा नामी औ़रत को अपना सरदार बना लिया। जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लश्कर को उन पर चढ़ाई का हुक्म दिया। सलमा अपने लश्कर को ले कर मुक़ाबले पर आई और एक नाक़ा या'नी ऊंटनी पर सुवार हो कर खुद सिपह सालारी करने लगी। उस की ह़िफ़ाज़त के लिये सो मुह़ाफ़िज़ थे। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस ज़ोर का ह़म्ला किया कि उस की ऊंटनी ज़ख़्मी हो कर गिरी और सलमा मक़्तूल हुई, उस के मक़्तूल होते ही मुर्तद्दीन से मैदान ख़ाली हो गया।

सय्यिदा ख़ातूने जन्नत का विसाले पुर मलाल

मह़बूबे खु़दा, ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी और लाडली शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाले पुर मलाल इसी साल या'नी विसाले नबवी के छे माह बा'द मंगल के दिन 3 रमज़ानुल मुबारक सिने 11 हिजरी को हुवा। विसाल के वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की उ़म्र मुबारक 29 बरस थी और एक रिवायत के मुत़ाबिक़ 24 साल थी, येह इख़्तिलाफ़ सिने विलादत के इख़्तिलाफ़ की वजह से है। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की विलादत एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ए'लाने नबुव्वत से पहले उन दिनों में हुई जब कुरैश मक्कए मुकर्रमा की ता'मीरे नौ कर रहे थे और का'बा की ता'मीर विलादते नबवी के 35 वें बरस हुई। दूसरे क़ौल के मुत़ाबिक़ आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की विलादत, विलादते नबवी के 41 बरस बा'द हुई या'नी नुज़ूले वह़ी के पहले साल। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खु़दा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ निकाह़ के वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की उ़म्र

www.dawateislami.net

19 साल और डेढ़ माह थी, बा'ज़ के नज़्दीक 15 साल और साढ़े पांच माह थी। इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिलसिलए नसब आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से जारी हुवा क्यूंकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की साहिबज़ादी सय्यिदा ज़ैनब رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا की अवलाद वफ़ात पा गई थी।" उसी साल माहे शव्वालुल मुकर्रम में हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अबू बक्र (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) भी वफ़ात पा गए। हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन बकार رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि सय्यिदा ख़ातूने जन्नत की वफ़ात से एक माह क़ब्ल हज़रते सय्यिदतुना उम्मे ऐमन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا भी वफ़ात फ़रमा गईं थीं। (سیرت سیدالانبیاء، ص۲۰۲، تاریخ الخلفاء، ص۵۷)

क़बीलए बनी तमीम के मुर्तद्दीन से जिहाद

बनू तमीम चन्द क़बाइल पर मुश्तमिल और चन्द बस्तियों में सुकूनत पज़ीर थे। इन के अ़लाक़े पर ज़मानए नबवी में चन्द आ़मिल जो कि इन्ही की क़ौम से मुक़र्रर थे, जब वफ़ाते नबवी की ख़बर मश्हूर हुई तो इन में से बा'ज़ मुर्तद्द हो गए और बा'ज़ की आपस में भी जंग हुई। इसी असना में **सुजाह़ बिन्ते ह़रस** ने जो क़बीलए तग़्लब से तअ़ल्लुक़ रखती थी नबुव्वत का दा'वा किया और बनी तग़्लब के बा'ज़ सरदार भी इस के हमराह हो गए। इस ने अपने मुत्तबेईन के लिये पंज वक़्ता नमाज़ तो लाज़िम कर रखी थी, मगर सूअर का गोश्त खाना, शराब पीना और ज़िना करना जाइज़ क़रार दे दिया था। इसी लिये बहुत से ईसाई भी इस के साथ हो गए थे। जब येह बनू तमीम की बस्तियों से निकल कर कमो बेश चार हज़ार के लश्कर के हमराह आगे बढ़ी तो हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ के लश्कर का सुन कर ख़ौफ़ज़दा हो गई। मुसैलमा कज़्ज़ाब ने इसे अपने पास बुलवा कर एक त़वील गुफ़्त्गू के बा'द इस से निकाह़ कर लिया। जब इस के लश्कर का हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से सामना हुवा तो इस के तमाम साथी भाग गए और येह भी फ़रार हो कर क़बीलए बनी तग़्लब में "जज़ीरा" के मक़ाम पर पहुंच कर गुमनामी की ज़िन्दगी बसर करने लगी। जब कि हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने बनू तमीम के अ़लाक़े में पहुंच कर वहां के मुर्तद्दीन से जिहाद किया और उन्हें क़त्ल व गिरिफ़्तार किया। बा'दे अज़ां आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने मुसैलमा कज़्ज़ाब की त़रफ़ रुख़ किया। (الکامل فی التاریخ، ج۲، ص۲۱۴ ملتقطا)

www.dawateislami.net

क़बीलए बनी अस्लम से जिहाद

हज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़र्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि क़बीलए **बनी अस्लम** के कुछ लोग मुर्तद हो गए थे, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन की सरकोबी के लिये रवाना फ़रमाया। इन्हों ने वहां के मुर्तद्दीन से ख़ूब जिहाद किया और वोह सब मक़्तूल हो गए। इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुसैलमा कज़्ज़ाब की सरकोबी के लिये रवाना फ़रमा दिया। (تاریخ مدینۃ دمشق، خالد بن ولید بن مغیرۃ، ج ۱۶، ص ۲۴۰)

मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ जिहाद

दो झूटे नबियों की ख़बर

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब देखा कि सोने के दो कंगन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हथेलियों में रखे गए जो आप को बोझल महसूस हुवे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वही की गई कि इन पर फूंक मारें। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फूंक मारी तो वोह उतर गए। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस की ता'बीर यूं फ़रमाई कि दो झूटे नबी ज़ाहिर होंगे। एक क़बीलए सन्आ़ का अस्वद अ़नसी और दूसरा क़बीलए यमामा का मुसैलमा कज़्ज़ाब। (صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ، الحدیث: ۳۶۲۱، ج ۲، ص ۵۰۷)

मुसैलमा कज़्ज़ाब कौन था ?

इस का पूरा नाम मुसैलमा बिन हबीब, कुन्यत अबू समामा और तअ़ल्लुक़ बनू हनीफ़ा से था, नबुव्वत का दा'वा तो इस ख़बीस ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौर में ही कर दिया था लेकिन लोगों की हिमायत इस ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द

www.dawateislami.net

ह़ासिल की। और येह खुद **रह़मानुल यमामा** कहलाता था इस का कहना येह था कि जो शख़्स मुझ पर वह़ी लाता है उस का नाम रह़मान है। येह मलऊ़न बहुत बुड्ढा, इन्तिहाई मक्कार और ह़ीलाबाज़ था। नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैदाइश से भी पहले पैदा हुवा और क़त्ल के वक़्त इस की उ़म्र एक सो पचास साल थी।

(تهذيب الاسماء واللغات، حرف الميم، الرقم: ۵۷۴، ج ۲، ص ۴۰۰، تاريخ الخلفاء، ص ۵۸، مدارج النبوت، ج ۲، ص ۴۰۶)

बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी

10 सिने हिजरी मुसैलमा कज़्ज़ाब अपनी क़ौम बनी ह़नीफ़ा के वफ़्द के हमराह मदीनए मुनव्वरा आया, वफ़्द के अफ़राद की ता'दाद सतरह थी, मुसैलमा के सिवा बाक़ी सब ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने इस्लाम क़बूल कर लिया। मुसैलमा कहने लगा : "اِنْ جَعَلَ لِي مُحَمَّدٌ الْاَمْرَ مِنْ بَعْدِهٖ تَبِعْتُهٗ या'नी अगर मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने बा'द ख़िलाफ़त मुझे अ़त़ा फ़रमा दें तो मैं इन की इत्तिबाअ़ करूंगा और ईमान क़बूल कर लूंगा।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के पास तशरीफ़ लाए और उस के सर पर खड़े हुवे, दस्ते अक़्दस में खजूर की शाख़ का एक टुकड़ा था, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसैलमा कज़्ज़ाब से फ़रमाया :

لَوْ سَاَلْتَنِي هٰذِهِ الْقِطْعَةَ مَا اَعْطَيْتُكَهَا وَلَنْ تَعْدُوَ اَمْرَ اللّٰهِ فِيكَ وَلَئِنْ اَدْبَرْتَ لَيَعْقِرَنَّكَ اللّٰهُ

"या'नी अगर तू इस टुकड़े की मानिन्द भी त़लब करे तो मैं तुझे न दूंगा और तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में हरगिज़ जारह़िय्यत इख़्तियार नहीं कर सकता और अगर तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में पीठ दिखाई तो वोह ज़रूर तेरी पकड़ फ़रमाएगा।" एक रिवायत में येह है कि उस ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया था लेकिन अपने अ़लाक़े में वापस आ कर मुर्तद्द हो गया और नबुव्वत का दा'वा कर दिया।

(صحيح البخارى، كتاب المناقب، علامات النبوة فى الاسلام، الحديث: ۳۶۲۰، ج ۲، ص ۵۰۶، سيرت سيد الانبياء، ص ۵۷۴، مدارج النبوت، ج ۲، ص ۴۰۶)

मुसैलमा कज़्ज़ाब का मक्तूब

मुसैलमा कज़्ज़ाब जब हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह से वापस गया तो उस ने बा'द में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को एक ख़त़ लिखा जिस का मज़्मून येह था :

www.dawateislami.net

مِنْ مُسَیْلَمَۃِ رَسُوْلِ اللّٰہِ اِلٰی مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللّٰہِ سَلَامٌ عَلَیْکَ اَمَّا بَعْدُ! فَاِنِّیْ قَدْ اُشْرِکْتُ فِی الْاَمْرِ مَعَکَ، وَاِنَّ لَنَا نِصْفَ الْاَرْضِ وَلِقُرَیْشٍ نِصْفَ الْاَرْضِ وَلٰکِنَّ قُرَیْشًا یَعْتَدُّوْنَ

"या'नी अल्लाह के रसूल मुसैलमा की त़रफ़ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ सलाम, नबुव्वत और हुकूमत के मुआ़मले में मुझे आप का शरीक बनाया गया है, आधी ज़मीन हमारी है और आधी कु़रैश की। लेकिन कु़रैश ह़द से तजावुज़ करने वाली क़ौम है।"

रसूलुल्लाह का जवाबी मक्तूब

मुसैलमा के इस झूटे मक्तूब के जवाब में रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो मक्तूब लिखा उस का मज़्मून येह था :

مِنْ مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ اللّٰہِ اِلٰی مُسَیْلَمَۃَ الْکَذَّابِ اَلسَّلَامُ عَلٰی مَنِ اتَّبَعَ الْھُدٰی اَمَّا بَعْدُ! فَاِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰہِ یُوْرِثُھَا مَنْ یَّشَاءُ مِنْ عِبَادِہٖ وَالْعَاقِبَۃُ لِلْمُتَّقِیْنَ

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से सख़्त झूटे मुसैलमा की त़रफ़! बिला शुबा ज़मीन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की है वोह जिसे चाहता है उस की मिल्किय्यत अ़त़ा फ़रमाता है। और बेहतर अन्जाम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने वालों के लिये है।" येह ख़त़ व किताब 10 सिने हिजरी के अवाख़िर में हुई।

(السیرۃ النبویۃ، لابن ھشام، کتاب مسیلمۃ الی رسول اللّٰہ، ج۲، ص۵۰۲، مدارج النبوت، ج۲، ص۲۰۴)

हर मुआ़मला उलटा हो जाता

उ़लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि मुसैलमा कज़्ज़ाब ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ पर ज़ाहिर होने वाले कई मो'जिज़ात देखे थे, लिहाज़ा उस ने भी अपनी नबुव्वत की सच्चाई के लिये वैसा ही करना चाहा लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कु़दरत देखिये कि वोह सारे मुआ़मलात उस के दा'वे के उलट हो जाते ह़त्ता कि अगर वोह किसी की उ़म्र दराज़ी की दुआ़ करता तो वोह शख़्स उसी वक़्त मर जाता, अगर किसी शख़्स की आंखों की रोशनी के लिये दुआ़ करता तो वोह बिल्कुल नाबीना हो जाता, अगर कूंएं में पानी

www.dawateislami.net

की कसरत के लिये थूक डालता तो पानी ग़ाइब हो जाता, किसी आंखों वाले की आंख में थूकता तो वोह अन्धा हो जाता, किसी बकरी के थन पर हाथ फेरता तो उस का दूध ख़त्म हो जाता और वोह थन सूख जाता। किसी बच्चे के सर पर हाथ फेरता तो वोह बिल्कुल गन्जा हो जाता। एक दफ़्आ़ एक शख़्स के दो बेटों के लिये बरकत की दुआ़ की, जब वोह अपने घर आया तो उसे मा'लूम हुवा कि एक कूंएं में गिर गया है और दूसरे को भेड़िये ने खा लिया है। बहर ह़ाल उस मलऊ़न के ऐसे करतूतों के बा वुजूद कई लोग उस की इत्तिबाअ़ में लग गए और उस से बेज़ार न हुवे चूंकि जाहिलों की उस जमाअ़त में ग़रज़ के बन्दे थे और दुन्यवी अग़राज़ के मातहृत उस के पीछे लग गए। (سیرت سید الانبیاء، ص ۵۷۵، مدارج النبوت ج ۲، ص ۴۰۷)

जंगे यमामा और इस का होशरुबा मन्ज़र

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा बिन अबी जहल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उस मुसैलमा की सरकोबी के लिये रवाना फ़रमाया था और फिर ह़ज़रते सय्यिदुना शुरह़बील बिन ह़स्ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन की मदद के लिये भेजा लेकिन इन दोनों के आगे उस ने हथयार न डाले। क्यूंकि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुन्या से तशरीफ़ ले जाने के बा'द मुसैलमा कज़्ज़ाब का कारोबार चमक उठा था, और तक़रीबन एक लाख से ज़ाइद अफ़राद उस के गिर्द जम्अ़ हो गए थे, ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा बिन अबी जहल और ह़ज़रते सय्यिदुना शुरह़बील बिन ह़स्ना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से भी उस की ख़ूब जंग हुई जिस के मुक़ाबले में उस के कई लोग मारे गए, इतने में इन दोनों सह़ाबा की मदद के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी आ पहुंचे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्कर की ता'दाद चोबीस हज़ार थी और मुसैलमा कज़्ज़ाब के पास उस वक़्त चालीस हज़ार फ़ौज थी, फ़रीक़ैन बे जिगरी से लड़े। और जंग का नक़्शा कई बार तब्दील हुवा, कभी ह़ालात मुसलमानों के ह़क़ में हो जाते और कभी कुफ़्फ़ार के।

ثُمَّ بَرَزَ خَالِدٌ وَدَعَا اِلَى الْبِرَازِ وَنَادٰى بِشِعَارِهِمْ وَكَانَ شِعَارُهُمْ يَا مُحَمَّدَاهُ، فَلَمْ يَبْرُزْ اِلَيْهِ اَحَدٌ اِلَّا قَتَلَهٗ

या'नी जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यक़ीन हो गया कि बनू ह़नीफ़ा क़बीले वाले उस वक़्त तक नहीं हटेंगे जब तक मुसैलमा को क़त्ल न किया जाए तो

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ब ज़ाते ख़ुद मैदान में तशरीफ़ लाए और मुक़ाबले के लिये कुफ़्फ़ार के शह सुवारों को त़लब किया और मुसलमानों के शिआ़र या'नी आ़दत के मुत़ाबिक़ **"या मुह़म्मदा"** का ना'रा लगाया और उस वक़्त जंग में मुसलमानों का शिआ़र येह था कि वोह मुश्किल वक़्त में ब आवाज़े बुलन्द ना'रा लगाया करते थे **"या मुह़म्मदा"** या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारी मदद फ़रमाइये। इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी ना'रा लगाया। और फिर दुश्मनों की त़रफ़ से जो भी मुक़ाबले पर आया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की गर्दन उड़ा दी। बिल आख़िर मुशरिकीन को शिकस्त हुई और वोह सारे भाग खड़े हुवे। मुसलमानों की एक जमाअ़त ने उन का तआ़क़ुब किया और बहुत सों को वासिले जहन्नम किया और बहुत सों को गिरिफ़्तार कर के क़ैदी बना लिया नीज़ कसीर माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ आया। येह जंगे यमामा 11 सिने हिजरी में लड़ी गई। (سیرت سید الانبیاء، ص۵۷۵، الکامل فی التاریخ، ج۲، ص۲۲۱)

सह़ाबए किराम का अ़क़ीदए इस्तिमदाद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उस जंग में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ समेत तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मुश्किल घड़ी में ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द मदीनए मुनव्वरा से बहुत दूर **"या मुह़म्मदा"** का ना'रा लगा रहे हैं, या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का येह अ़क़ीदा था कि ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुन्या से तशरीफ़ ले जाने के बा'द दुन्या के किसी भी कोने में तुम पर मुसीबत आ पड़े तो रसूले काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पुकारो। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के इसी अ़क़ीदे की तर्जुमानी करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं :

फ़रयाद उम्मती जो करे ह़ाले ज़ार में
मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

न क्यूं कर कहूं या ह़बीबी अग़िसनी
इसी नाम से हर मुसीबत टली है

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मदद के लिये पुकारना जाइज़ न होता तो यक़ीनन ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه व दीगर तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ऐसा क़त़्अ़न न करते, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ाते गिरामी तो वोह है जिन को दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने "**सैफ़ुल्लाह**" या'नी **अल्लाह** की तल्वारों में से एक तल्वार के ख़ित़ाब से नवाज़ा, जो ऐसे इस्लामी लश्कर का सरदार हो जिस में जय्यिद सहाबए किराम हों, जो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तर्बिय्यत याफ़्ता हों यक़ीनन वोह सरदार किसी ना जाइज़ काम का मुर्तकिब नहीं हो सकता। बल्कि उसे यक़ीने कामिल था कि "**या मुह़म्मदा**" का ना'रा लगाना बाइ़से रह़मत व बरकत है, क्यूंकि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खुद इस की ता'लीम फ़रमाई।

ह़याते त़य्यिबा में मदद त़लब करना

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक नाबीना को दुआ़ ता'लीम फ़रमाई कि बा'दे नमाज़ यूं कहे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُکَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْکَ بِنَبِيِّکَ مُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ يَا مُحَمَّدُ اِنِّي تَوَجَّهْتُ بِکَ اِلَى رَبِّي فِي حَاجَتِي هَذِهِ لِتُقْضَى لِيَ اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِيَّ

"या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तेरी त़रफ़ तवज्जोह करता हूं तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से जो नबिय्ये रह़मत हैं, और या रसूलल्लाह ! मैं आप के वसीले से अपने रब की त़रफ़ इस ह़ाजत में मुतवज्जेह होता हूं कि मेरी ह़ाजत रवाई हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की शफ़ाअ़त मेरे ह़क़ में क़बूल फ़रमा।"

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات عن رسول الله، فی دعاء الضيف، الحديث: ۳۵۸۹، ج۵، ص۳۳۶، سنن ابن ماجة، کتاب الصلوة، باب ماجاء فی صلاة الحاجة، الحديث: ۱۳۸۵، ج۲، ص۱۵۷)

www.dawateislami.net

इस ह़दीसे पाक में साफ़ लफ़्ज़ों में "**या मुह़म्मद**" कहने की ता'लीम दी गई है। अगर इस त़रह़ मदद त़लब करना जाइज़ न होता तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस को कभी ता'लीम न फ़रमाते।

बा'दे ह़यात मदद त़लब करना

इमामे अजल, अबुल क़ासिम सुलैमान बिन अह़मद बिन अय्यूब त़बरानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की किताब **मो'जमुल कबीर** में है कि : एक ह़ाजत मन्द अपनी ह़ाजत के लिये अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ख़िदमत में आता जाता था लेकिन अमीरुल मोअमिनीन उस की त़रफ़ इल्तिफ़ात न फ़रमाते थे, और न उस की ह़ाजत पर नज़र फ़रमाते थे। उस ह़ाजत मन्द शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से इस अम्र की शिकायत की। इन्हों ने फ़रमाया कि : "वुज़ू कर के मस्जिद में दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ो, फिर यूं दुआ़ मांगो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّي اَسْاَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ يَا مُحَمَّدُ اِنِّي اَتَوَجَّهُ بِكَ اِلٰى رَبِّي فَيَقْضِي فِي حَاجَتِي

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तेरी त़रफ़ तवज्जोह करता हूं तेरे नबी मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले से जो नबिय्ये रह़मत हैं, और या रसूलल्लाह ! मैं आप के वसीले से अपने रब की त़रफ़ इस ह़ाजत में मुतवज्जेह होता हूं ताकि मेरी ह़ाजत रवाई हो। फिर अपनी ह़ाजत ज़िक्र कर और शाम के वक़्त मेरे पास आना ताकि मैं भी तेरे साथ अमीरुल मोअमिनीन के पास चलूं।" वोह ह़ाजत मन्द चला गया और जिस त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया था वैसा ही किया। फिर वोह अकेला ही अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की बारगाह में ह़ाज़िर हो गया, दरबान उसे अन्दर ले गया। अमीरुल मोअमिनीन ने उसे अपने साथ मस्नद पर बिठाया और उस की ह़ाजत पूछी, उस शख़्स ने अपनी ह़ाजत अ़र्ज़ की तो अमीरुल मोअमिनीन ने फ़ौरन उस की ह़ाजत पूरी कर दी और इरशाद फ़रमाया कि : "इतने दिनों के बा'द तुम ने अपनी ह़ाजत बयान की, अब जब भी तुम्हें कोई ह़ाजत पेश आए तो हमारे पास चले आया करो।" वोह शख़्स अमीरुल मोअमिनीन के पास से निकल कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मिला और अ़र्ज़ करने लगा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

आप को जज़ाए ख़ैर दे, आप की सिफ़ारिश की वजह से अमीरुल मोअमिनीन ने मेरी ह़ाजत पर नज़र फ़रमाई और मेरी ह़ाजत को पूरा किया।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि : "ख़ुदा की क़सम ! मैं ने तुम्हारे मुआ़मले में अमीरुल मोअमिनीन से कुछ भी नहीं कहा, मगर एक बात ज़रूर है कि मैं ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक नाबीना शख़्स ह़ाज़िर हुवा और अपनी ह़ाजत ज़िक्र की तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे येही दुआ़ ता'लीम फ़रमाई, ख़ुदा की क़सम ! हम उठने भी न पाए थे कि वोह नाबीना शख़्स हमारे पास इस ह़ाल में आया कि गोया वोह कभी अन्धा ही न था ।"

(المعجم الکبیر، ما اسند عثمان بن حنیف، ج ۹، ص ۳۱، فتاوی رضویہ، ج ۲۹، ص ۵۵۰ تا ۵۵۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का शुमार अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है इन्हों ने एक ह़ाजत मन्द को ख़िलाफ़ते उ़स्मानी के ज़माने में येह दुआ़ ता'लीम फ़रमाई, अगर "**या रसूलल्लाह, या मुह़म्मद**" कहना ना जाइज़ होता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कभी येह दुआ़ इरशाद न फ़रमाते। बहर ह़ाल ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ व दीगर अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने जंगे यमामा में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मदद व नुस्रत के लिये ना'रा लगाया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की मदद व नुस्रत फ़रमाई और मुसैलमा कज़्ज़ाब को ज़लीलो रुस्वा फ़रमाया और वोह अपनी नापाक झूटी नबुव्वत के साथ ही वासिले जहन्नम हो गया।

मुसैलमा कज़्ज़ाब का क़त्ल

मुसैलमा के लश्करी जब भागे तो ख़ुद मुसैलमा कज़्ज़ाब भी भाग खड़ा हुवा और एक दीवार के पीछे जा कर छुप गया, लेकिन एक जय्यिद सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना वह़शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे देख लिया और इस ज़ोर का नेज़ा मारा कि उस के सीने के आर पार हो गया, और वोह अपने भयानक अन्जाम को पहुंच गया।

(سیرت سید الانبیاء، ص ۶۰۹، الکامل فی التاریخ، ج ۲، ص ۲۲۲، تاریخ الخلفاء، ص ۵۸)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना वह़शी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कौन थे ?

हज़रते सय्यिदुना वह़शी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वोही सह़ाबी थे जिन्हों ने जंगे बद्र में हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा हज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया था, बा'द में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमान हो गए थे। जब सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपने सामने आने से मन्अ़ फ़रमा दिया, कि उन को देख कर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने चचा याद आ जाया करते थे। लेकिन जब हज़रते सय्यिदुना वह़शी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसैलमा को क़त्ल किया तो बा'द में आप फ़रमाया करते थे कि : "अगर मैं ने **ख़ैरुन्नास** सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा को शहीद किया है तो **शर्रुन्नास** मुसैलमा कज़्ज़ाब को भी क़त्ल किया है।"

(المعجم الکبیر، باب الحاء، الحسین بن علی بن ابی طالب، الحدیث: ۲۹۴۷، ج۳، ص۱۴۶، صحیح ابن حبان، کتاب اخبارہ عن مناقب الصحابہ، ذکر البیان بان وحشیا۔۔۔الخ، الحدیث: ۶۹۷۸، ج۶، الجزء: ۹، ص۴۸۱ ملتقطا)

बरादरे फ़ारूक़े आ'ज़म की शहादत

इस जंगे यमामा में कई जय्यिद सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم भी शहीद हुवे इन में से हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के सगे भाई हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी शामिल हैं, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से उ़म्र में बड़े और इस्लाम लाने में मुक़द्दम थे। इसी त़रह़ ख़त़ीबुल अन्सार हज़रते सय्यिदुना साबित बिन क़ैस बिन शमास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना उ़ब्बाद बिन बशर अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी जामे शहादत नोश किया।

दीगर मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम की शहादत

मुसैलमा कज़्ज़ाब के लश्कर से बीस हज़ार मुशरिकीन इस जंग में मारे गए। हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्कर से एक हज़ार दो सो मुसलमानों को शहादत नसीब हुई जिन में मा क़ब्ल मज़्कूर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के इलावा सह़ाबए किराम की एक जमाअ़त शामिल थी, बा'ज़ के अस्माए गिरामी येह हैं :

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा बिन उ़त्बा, हज़रते सय्यिदुना अबू हुज़ैफ़ा के गुलाम हज़रते सय्यिदुना सालिम, हज़रते सय्यिदुना शुजाअ़ बिन वहब, हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन सह्ल, हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अ़म्र, हज़रते सय्यिदुना तुफ़ैल बिन अ़म्र दूसी, हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन क़ैस, हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन कबीर, हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मख़रमा, हज़रते सय्यिदुना साइब बिन उ़स्मान बिन मज़्ऊ़न, हज़रते सय्यिदुना मअ़न बिन अ़दी, हज़रते सय्यिदुना अबू दजाना सम्माक बिन ख़रशा (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) वग़ैरा वग़ैरा। (سیرت سید الانبیاء، ص ۶۰۹)

अस्वद अ़नसी के ख़िलाफ़ जिहाद

अस्वद अ़नसी कौन था ?

इस का पूरा नाम **अ़ब्हला** बिन का'ब अ़नसी और लक़ब "**ज़ुलख़िमार**" था। बा'ज़ ने "**ज़ुल हि़मार**" भी ज़िक्र किया है। **ख़िमार** अ़रबी में चादर को कहते हैं चूंकि येह अपने चेहरे पर सियाह ओढ़नी डाल कर छुपाए रखता था इस लिये "**ज़ुल ख़िमार**" के लक़ब से मश्हूर हुवा।" और "**ज़ुल हि़मार**" की वजह येह बयान की गई है कि इस का एक सियाह गधा था जिसे इस ने सधाया हुवा था कि वोह गधा इस के सामने सजदा किया करता था। बहर ह़ाल इस की चादर भी सियाह थी और गधा भी सियाह था इस लिये इसे **अस्वद** या'नी "सियाह (या'नी काला)" कहा जाता था। इब्तिदा में येह काहिन था और अ़जीबो ग़रीब बातें इस से ज़ाहिर होती थीं। चर्ब ज़बानी से लोगों को अपना गिरविदा बना लेता था। इस के साथ दो हमज़ाद शैत़ान थे, जो इस को ज़माने की ख़बरें ले के बताते थे।

(سیرت سید الانبیاء، ص ۵۷۵، مدارج النبوت، ج ۲، ص ۳۰۷)

अस्वद अ़नसी कज़्ज़ाब का ज़ुहूर

10 सिने हिजरी यमन में इस कज़्ज़ाब का ज़ुहूर हुवा, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में ही इस ने नबुव्वत का दा'वा कर दिया था। इस का ख़ुरूज ह़ज्जतुल वदाअ़ के बा'द हुवा। अलबत्ता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पहले ही इस के ज़ुहूर की पेशन गोई फ़रमा दी थी। (سیرت سید الانبیاء، ص ۵۷۵)

www.dawateislami.net

अस्वद अ़नसी का उ़रूज

सन्आ़ (यमन) के अ़लाक़े में किस्रा की त़रफ़ से ह़ज़रते सय्यिदुना बाज़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गवर्नर थे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ से येह भी मुशर्रफ़ बा ईमान हो गए थे। नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें इन के मन्सब पर बह़ाल रखा, जब इन का विसाल हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के अ़लाक़े को तीन ह़िस्सों में तक़्सीम किया। एक ह़िस्सा ह़ज़रते सय्यिदुना बाज़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते शहर बिन बाज़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को, दूसरा ह़िस्सा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को और तीसरा ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़त़ा फ़रमाया। अस्वद अ़नसी का उ़रूज इसी दौरान शुरूअ़ हुवा। उस ने अपने लश्कर से सन्आ़ पर क़ब्ज़ा कर लिया। ह़ज़रते शहर बिन बाज़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दिया और उन की ज़ौजा की त़रफ़ निकाह़ का पैग़ाम भेजा। दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक उस की इत्तिलाआ़त पहुंचीं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया जिस त़रह़ हो सके उस के शर को ख़त्म कर दो। (مدارج النبوت، ج۲، ص۴۰۷)

अस्वद अ़नसी का ज़िल्लत आमेज़ क़त्ल

माहे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 11 सिने हिजरी में ही कज़्ज़ाब अस्वद अ़नसी को सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ीरोज़ दैलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वासिले जहन्नम फ़रमाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अस्वद को क़त्ल करने के लिये भेजा, ह़ज़रते फ़ीरोज़ दैलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अस्वद के शहर सन्आ़ (यमन) में पहुंच कर छुप गए और एक रात अस्वद की रिहाइश गाह की दीवार में नक़्ब लगाई और उसे क़त्ल कर दिया ह़ालांकि उस वक़्त एक हज़ार आदमी उस के दरवाज़े पर पहरा दे रहे थे। मौत के वक़्त उस के मुंह से गाए के डकराने की त़रह़ ऊंची आवाज़ निकली उस के पहरेदार उस की त़रफ़ दौड़े लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना बाज़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा मिर्ज़बाना ने कहा : रुक जाओ ! उस के पास कोई नहीं जाएगा क्यूंकि तुम्हारे नबी पर वह़ी नाज़िल हो रही है। इस त़रह़ वोह वासिले जहन्नम हो गया।

(سیرت سید الانبیاء، ص۲۰۸، ۵۷۶، مدارج النبوت، ج۲، ص۴۰۸)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना फ़ीरोज़ दैलमी का तआरुफ़

अस्वद अ़नसी को क़त्ल करने वाले हज़रते सय्यिदुना फ़ीरोज़ दैलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जय्यिद सहाबी और नज्जाशी बादशाह के भान्जे थे। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अस्वद अ़नसी के क़त्ल की ख़बर आप के विसाल से एक दिन और एक रात पहले ही दे दी गई थी। जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को क़त्ल की ख़बर दी तो हज़रते सय्यिदुना फ़ीरोज़ दैलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़िक्रे ख़ैर करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "आज रात अस्वद अ़नसी मारा गया, उसे बा बरकत घराने के बा बरकत मर्द ने क़त्ल किया है।" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह ! वोह कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "वोह फ़ीरोज़ दैलमी है।" फिर इरशाद फ़रमाया : "फ़ीरोज़ कामयाब हो गए।" (سیرت سید الانبیاء، ص۲۰۸، کتاب العقائد، ص۵۰)

अ़ल्क़मा बिन अ़लासा के ख़िलाफ़ जिहाद और इस का क़बूले इस्लाम

क़बीलए बनू कल्ब अ़रब का एक मश्हूर क़बीला था। अ़ल्क़मा बिन अ़लासा का तअ़ल्लुक़ इसी क़बीले से था। उस ने दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में इस्लाम क़बूल कर लिया था, और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़िन्दगी ही में मुर्तद्द हो गया था और मुल्के शाम चला गया था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द वोह अपने क़बीले बनू कल्ब में वापस आया और मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग की तय्यारी करने लगा। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उस के इरादों का इ़ल्म हो चुका था लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के ख़िलाफ़ जिहाद के लिये हज़रते सय्यिदुना क़अ़क़ाअ़ बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रवाना फ़रमाया। लेकिन अ़ल्क़मा बिन अ़लासा मुक़ाबले पर नहीं आया बल्कि वहां से फ़िरार हो गया, उस की बीवी, उस के बेटों और उस के दीगर रुफ़क़ा ने उस के साथ जाने से इन्कार कर दिया और उन्हों ने इस्लाम भी क़बूल कर लिया। बा'द में उस ने भी बारगाहे सिद्दीक़े अक्बर में हाज़िर हो कर तौबा कर ली। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस की तौबा क़बूल कर ली और मुआ़फ़ भी फ़रमा दिया। उस ने न तो मुसलमानों से जंग की थी न ही किसी मुसलमान को क़त्ल किया था। (الکامل فی التاریخ، ج۲، ص۲۱۰ ملتقطا)

www.dawateislami.net

फ़जाह अयास बिन अ़ब्द के ख़िलाफ़ जिहाद

"फ़जाह अयास बिन अ़ब्द या लैल" भी मुर्तद था और इस ने मुसलमानों का क़िताल किया वोह इस त़रह़ कि येह **ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में आया और अ़र्ज़ किया कि "जिस मुर्तद क़बीले से आप का हुक्म होगा मैं जंग करूंगा। आप मेरे लिये अस्लेह़ा फ़राहम कर दें।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस की त़लब के मुत़ाबिक़ इसे अस्लेह़ा दे दिया और एक क़बीले से लड़ने का हुक्म दिया। लेकिन इस ने वोह अस्लेह़ा बनू सुलैम, बनू आ़मिर और बनू हवाज़ुन के मुसलमानों के ख़िलाफ़ भी इस्ति'माल किया और अपनी ज़ाती दुश्मनी की बिना पर मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ भी इस्ति'माल किया और मुतअ़द्दिद मुसलमानों को इस ने क़त्ल किया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मा'लूम हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना त़रीफ़ा बिन ह़ाजिज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़ौज का एक दस्ता दे कर फ़जाह की त़रफ़ रवाना किया। जंग में इस को शिकस्त हुई और गिरिफ़्तार कर के बारगाहे सिद्दीके़ अक्बर में मदीनए मुनव्वरा लाया गया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसे ख़लीफ़ए वक़्त को धोका देने और मुसलमानों को क़त्ल करने जैसे घिनावने जुर्म की पादाश में आग में जलाने और हाथ पाउं बांध कर रज्म करने का सख़्त हुक्म इरशाद फ़रमाया।

(الکامل فی التاریخ، ج ۲، ص ۲۱۱ ملتقطا)

अबू शजरह बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा का इर्तिदाद और क़बूले इस्लाम

अबू शजरह बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा अ़रब की मश्हूर शाइ़रा ख़न्सा का बेटा था। इस ने अपने भाई सुख़्र की याद में निहायत ही दर्दनाक और दिलसोज़ मरीसे कहे थे, क्यूंकि येह अपनी वालिदा की त़रह़ एक बहुत अच्छा शाइ़र था। येह भी मुर्तद्दीन से मिल कर मुर्तद हो गया और इस क़िस्म के अश्आ़र कहने लगा जिन में लोगों के जज़्बात को मुसलमानों के ख़िलाफ़ भड़काया जाता और जंग के लिये तय्यार किया जाता था। उन अश्आ़र में से एक शे'र येह था :

فَرَوَّيْتُ رُمْحِی مِن کَتِيْبَةِ خَالِدٍ
وَاِنِّی لَاَرْجُوْ بَعْدَهَا اَنْ اَعْمَرَا

www.dawateislami.net

"या'नी मैं ने अपना नेज़ा ख़ालिद के लश्कर के ख़ून से सैराब कर दिया है और मुझे उम्मीद है कि मैं आयिन्दा भी इसी त़रह़ करता रहूंगा।" लेकिन जब अबू शजरह ने देखा कि इस के अश्आ़र ख़ालिद के ख़िलाफ़ मुअस्सिर साबित नहीं हुवे और लोग ब कसरत इस्लाम क़बूल कर रहे हैं तो इस ने भी बारगाहे सिद्दीक़े अक्बर में ह़ाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल कर लिया। (الکامل فی التاریخ،ج۲،ص ۲۱۱ تا ۲۱۲)

उम्मे ज़मल के ख़िलाफ़ जिहाद

उम्मे ज़मल कौन थी ?

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को क़बीलए फ़ज़ारा की त़रफ़ लड़ाई के लिये रवाना फ़रमाया और इस में मुसलमानों को फ़त्ह़ नसीब हुई, बनू फ़ज़ारा के बहुत से आदमी क़त्ल कर दिये गए उन में एक उम्मे क़ुरफ़ा नामी औ़रत भी क़त्ल की गई, उस की एक बेटी थी जिस का नाम उम्मे ज़मल था, इसे लौंडी बना लिया गया और येह लौंडी ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ह़िस्से में आई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उसे आज़ाद फ़रमा दिया। उसे अपनी मां के क़त्ल का बहुत अफ़्सोस था, वोह मुसलमानों से अपनी मां के क़त्ल का बदला लेना चाहती थी, अ़हदे सिद्दीक़ी में जब फ़ितनए इर्तिदाद उभरा तो उसे मौक़अ़ मिल गया और बुज़ाख़ा के मैदान में जिन लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से शिकस्त खाई थी, वोह भाग कर उस के पास पहुंच गए और वोह उन को साथ ले कर मुसलमानों के मुक़ाबले में मैदाने जंग में उतर आई।

उम्मे ज़मल का जंगी ऊंट

उस ज़माने में अ़रब अपने पास जंगी ऊंट रखा करते थे जो जंगो क़िताल के मवाक़ेअ़ पर बहुत काम देते थे, इन्हें बा क़ाइदा जंगी तर्बिय्यत दी जाती थी, और येह ऊंट दुश्मन की सफ़ों में घुस जाते थे, इसी क़िस्म का एक ऊंट उम्मे ज़मल के पास भी था जो इसे अपनी

www.dawateislami.net

मां उम्मे कुरफ़ा की त़रफ़ से मिला था। बहर ह़ाल इस ने क़बीलए बुज़ाख़ा के लोगों को ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالٰی عنہ से मुक़ाबले के लिये दोबारा तय्यार करना शुरूअ़ कर दिया। जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالٰی عنہ को इस का इ़ल्म हुवा तो इस लश्कर की सरकोबी के लिये रवाना हो गए।

उम्मे ज़मल से जंग और इस का नतीजा

अब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالٰی عنہ और उम्मे ज़मल की फ़ौजें मैदाने जंग में एक दूसरे के मुक़ाबिल मुकम्मल तय्यारी के साथ खड़ी थीं और दोनों त़रफ़ सूरते ह़ाल बहुत हौलनाक थी, देखते ही देखते जंग शुरूअ़ हो गई। आग़ाज़े जंग ही में फ़रीक़ैन की फ़ौजें एक दूसरे पर टूट पड़ीं। उम्मे ज़मल अपने जंगी ऊंट पर सुवार थी और इश्तिआ़ल अंगेज़ तक़रीरों से अपने फ़ौजियों को जोश दिला रही थी, वोह फ़न्ने ह़र्ब में बहुत महारत रखती थी, लेकिन उसे क्या मा'लूम था कि उस के मुक़ाबले में कोई आ़म शख़्स नहीं बल्कि **सैफ़ुल्लाह** या'नी **अल्लाह** की तल्वार है। उम्मे ज़मल के ऊंट के गिर्द सो 100 ऊंट थे जिन पर बड़े बहादुर और जंग के माहिर फ़ौजी सुवार थे जो उम्मे ज़मल की ह़िफ़ाज़त पर मामूर थे। उधर मुसलमान शह सुवार भी इन्तिहाई ज़ोरदार ह़म्ले कर रहे थे और शुजाआ़ना त़रीक़े से लड़ रहे थे। इन का अस्ल निशाना उम्मे ज़मल थी। उस के क़रीब पहुंचने की इन्हों ने बहुत कोशिश की लेकिन उस के मुह़ाफ़िज़ों ने येह कोशिश नाकाम बना दी। बिल आख़िर मुसलमानों ने एक ऐसा ज़ोरदार ह़म्ला किया कि उस के सारे मुह़ाफ़िज़ों को क़त्ल कर दिया और उस के क़रीब पहुंचते ही तेज़ी के साथ उस के ऊंट की कूंचें काट दीं, अब ऊंट उम्मे ज़मल समेत नीचे गिर गया। उसे फ़ौरन क़त्ल कर दिया गया। जैसे ही वोह क़त्ल हुई उस के सारे फ़ौजियों के ह़ौसले पस्त हो गए और वोह मायूसी के आ़लम में मैदाने जंग से भागने लगे और मुसलमानों ने भी उन को तल्वार की धार पर रख लिया। बिल आख़िर येह फ़ितना भी अपने अन्जाम को पहुंच गया। (الکامل فی التاریخ، ج۲، ص۲۱۱ ملتقطا)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

इर्तिदाद की आख़िरी छे जंगें

मुर्तद्दीने बह्रैन के ख़िलाफ़ जिहाद

बनू अ़ब्दुल क़ैस की इर्तिदाद से तौबा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात 11 सिने हिजरी को रबीउ़ल अव्वल के महीने में हुई। इसी महीने बह्रैन के बादशाह मुन्ज़िर बिन सावी का इन्तिक़ाल हुवा। इस के इन्तिक़ाल के बा'द दूसरे अ़लाक़ों की त़रह़ बह्रैन में भी इर्तिदाद का रेला आ गया और अ़लाक़े के सब लोग मुर्तद्द हो गए, इस के नतीजे में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़रमी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को वहां से निकलना पड़ा और जारूद बिन मा'ला अ़ब्दी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه इस्लाम पर क़ाइम रहे। इन का तअ़ल्लुक़ बनू अ़ब्दुल क़ैस से था, आप ने अपने क़बीले वालों से मुर्तद्द होने की वजह पूछी तो उन्हों ने जवाब दिया : "अगर **मुह़म्मद** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) नबी होते तो कभी वफ़ात न पाते।" आप ने कहा : "तुम्हें मा'लूम है कि **मुह़म्मद** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पहले भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुख़्तलिफ़ अवक़ात में दुन्या में नबी मबऊ़स फ़रमाता रहा है वोह तमाम नबी कहां गए ?" उन्हों ने जवाब दिया : "वोह सब वफ़ात पा गए।" आप ने फ़रमाया : "जिस त़रह़ दूसरे अम्बिया वफ़ात पा गए इसी त़रह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी वफ़ात पा गए।" फिर आप ने कलिमए शहादत पढ़ा तो वोह लोग इतने मुतअस्सिर हुवे कि उन्हों ने भी दोबारा कलिमा पढ़ कर इस्लाम क़बूल कर लिया और अपने इर्तिदाद से तौबा कर ली।

ह़ुत़म बिन ज़बीआ़ का इर्तिदाद

क़बीलए बनू अ़ब्दुल क़ैस के लोगों ने तो इस्लाम क़बूल कर लिया लेकिन दीगर क़बाइल एक शख़्स **ह़ुत़म बिन ज़बीआ़** के जाल में फंस गए और वोह मुर्तद्द ही रहे बल्कि उन्हों ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग की तय्यारी शुरूअ़ कर दी। (الكامل فی التاریخ،ج۲،ص۲۲۵)

www.dawateislami.net

मुर्तद्दीने बह़रैन से जंग

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बह़रैन के मुर्तद्दीन की सरकोबी के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रवाना फ़रमाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बह़रैन पहुंच कर **ह़त़म** के क़रीब पड़ाव डाला और बनू अ़ब्दुल क़ैस को अपनी आमद की इत्तिलाअ़ दे दी। मुर्तद्दीन से मुक़ाबले के लिये ख़न्दक़ खोदी गई और एक रात जब मुर्तद्दीन के लश्कर से शोरो गुल की आवाज़ें आ रही थीं और वोह शराब के नशे में मदहोश थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मौक़अ़ को ग़नीमत जाना और फ़ौज की अच्छी ख़ासी ता'दाद के साथ ख़न्दक़ उ़बूर कर के दुश्मन पर हल्ला बोल दिया। तेज़ी के साथ तल्वारें चलने लगीं। मुर्तद्दीन बिल्कुल बेबस थे बहुत से लोगों ने भागने की कोशिश की लेकिन ख़न्दक़ में गिर गए बे शुमार को क़त्ल किया गया और कसीर ता'दाद में गिरिफ़्तार कर के क़ैदी बना लिये गए। एक जगह बनू हुनैफ़ा के क़ैस बिन आ़सिम ने देखा कि **ह़त़म बिन ज़बीआ़** ज़मीन पर गिरा हुवा है उसे वहीं क़त्ल कर दिया। जिन्हों ने अपने जुर्म का इक़रार कर के तौबा की उन्हें मुआ़फ़ कर दिया गया। इसी त़रह़ बह़रैन का फ़ितना भी ख़त्म हो गया। (الکامل فی التاریخ،ج۲،ص۲۲۷)

मुर्तद्दीने उ़म्मान के ख़िलाफ़ जिहाद

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन मोह़सिन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उ़म्मान की जानिब और अ़रफ़जा बिन हरसमा को अहले मोहरा की जानिब रवाना फ़रमाया था। दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी की ख़बर सुन कर मुल्के उ़म्मान में लक़ीत़ बिन मालिक ने नबुव्वत का दा'वा किया, अहले उ़म्मान और अहले मोहरा मुर्तद्द हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन मोह़सिन हुमैरी, ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा बिन अबी जह्ल और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़रफ़जा बिन हरसमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) तीनों सिपह सालार सह़राए उ़म्मान में मिल कर ख़ैमाज़न हुवे। लक़ीत़ बिन मालिक ने मुसलमानों से जंग करने के लिये अपनी फ़ौज तय्यार कर ली थी। मुसलमानों की फ़ौज में रुअसाए उ़म्मान जो इस्लाम पर साबित क़दम रहे थे वोह भी शामिल थे, लड़ाई शुरूअ़ हुई, इस्लामी लश्कर नशेबी ज़मीन में था और दुश्मनों को बुलन्द ज़मीन पर मौक़अ़ मिल गया था। लक़ीत़ ने

www.dawateislami.net

बड़ी बहादुरी के साथ ह़म्ले किये, लेकिन मुसलमानों के सब्रो इस्तिक़ामत के आगे वोह पस्पा हो गया और उस का लश्कर मुंह मोड़ कर भाग खड़ा हुवा, बिल आख़िर मुसलमानों को फ़त्ह़े अ़ज़ीम नसीब हुई । इस लड़ाई में दस हज़ार दुश्मन मक़्तूल हुवे और चार हज़ार गिरिफ़्तार हुवे और इतना ही माले ग़नीमत मुसलमानों के क़ब्ज़े में आया । सिर्फ़ चन्द रोज़ के बा'द उ़म्मान में इस्लाम क़ाइम हो गया । (الکامل فی التاریخ، ج ۲، ص ۲۲۸ تا ۲۲۹)

मुर्तद्दीने मोहरा के ख़िलाफ़ जिहाद

उ़म्मान में कुछ लोग मोहरा के मुक़ीम थे इन के इ़लावा अ़ब्दुल क़ैस के लोग भी वहां मौजूद थे । अज़्दावर बनी सा'द वग़ैरा क़बाइल भी वहां आबाद थे । येह सब के सब मुर्तद्द हो कर रियासत व अमारत के मुआ़मले में दो गुरौहों के अन्दर मुन्क़सिम हो कर आपस में लड़ाई झगड़ा कर रहे थे । ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा बिन अबी जह्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मोहरा पहुंच कर इन लोगों को इस्लाम की दा'वत दी । इन में से एक गुरौह ने तो इस्लाम क़बूल कर लिया लेकिन दूसरे गुरौह ने जिस का सरदार **मिस्बह़** था इस्लाम क़बूल करने से इन्कार कर दिया और अपने इर्तिदाद पर इस्रार किया । ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा बिन अबी जह्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने गुरौहे मुस्लिम को अपने साथ ले कर मुर्तद्दीन पर ह़म्ला किया और एक मज़बूत़ मुज़ाह़मत के बा'द उस के सरदार को क़त्ल कर दिया और मुसलमानों को फ़त्ह़ नसीब हो गई इस फ़त्ह़ का येह मुस्बत असर ज़ाहिर हुवा कि इर्द गिर्द के तमाम क़बाइल ने ब ख़ुशी इस्लाम क़बूल कर लिया । (الکامل فی التاریخ، ج ۲، ص ۲۲۹ تا ۲۳۰)

यमन के मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जिहाद

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द तक़रीबन पूरे मुल्के यमन में इर्तिदाद फैल गया था, अस्वद अ़नसी का तो ख़ातिमा हो चुका था लेकिन यमन के मुर्तद्दीन में दो मश्हूर सरदार भी थे । एक **क़ैस बिन मकशूह़** और दूसरा **अ़म्र बिन मा'दी कर्ब** । यमन के मुसलमानों को मुर्तद्दीने यमन ने बहुत सताया । मुल्के यमन के अ़लाक़े सन्आ़ की त़रफ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुहाजिर बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मदीनए मुनव्वरा से रवाना फ़रमाया था जो कि मक्का व त़ाइफ़ से मुसलमानों की जमइ़य्यत को हमराह लेते हुवे निहायत तेज़ रफ़्तारी से अ़लाक़ए नजरान में दाख़िल हो कर ख़ैमाज़न हुवे । यमन के दोनों मुर्तद्द सरदार

www.dawateislami.net

पहले ही से तय्यार थे। अम्र बिन मा'दी कर्ब अ़रब का एक मश्हूर सरदार था, जिस की सफ़ शिकनी की तमाम मुल्क में धाक बैठी हुई थी। इस लिये ह़ज़रते सय्यिदुना मुहाजिर बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुश्मनों की बे क़ियास ला ता'दाद अफ़्वाज में अपने आप को मह़सूर देख कर अपने हमराहियों को जुरअत व ग़ैरत दिलाई और उन की हिम्मत बन्धाई, फिर मुर्तद्दीन पर ह़म्ला आवर हुवे। निहायत सख़्त मा'रिका हुवा। लश्करे इस्लाम को ग़लबा ह़ासिल हुवा, क़ैस व अ़म्र दोनों सरदार मुसलमानों की क़ैद में आए। दोनों को बारगाहे सिद्दीक़ी में पेश किया गया तो दोनों ने अपने इर्तिदाद से पशेमानी का इज़्हार किया और तौबा कर के ब ख़ुशी इस्लाम क़बूल कर लिया। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी दोनों को मुआ़फ़ फ़रमा दिया। येह दोनों सरदार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हुक्म से दोबारा यमन वापस आ गए। (الکامل فی التاریخ،ج۲،ص۲۲۸تا۲۳۰)

कन्दा व ह़ज़र मौत के मुर्तद्दीन बाग़ियों के ख़िलाफ़ जिहाद

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द अ़रब में इर्तिदाद ने ज़ोर पकड़ा तो "**कन्दा व ह़ज़र मौत**" के अ़लाक़े भी इस की ज़द में आ गए। कन्दा मह़ल वुक़ूअ़ के ए'तिबार से यमन से मुल्ह़िक़ था इस लिये जब अस्वद अ़नसी ने यमन में नबुव्वत का दा'वा किया तो बाशिन्दगाने कन्दा भी अहले यमन की त़रह़ उस की नबुव्वत को मानने लगे। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन लुबैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जो उस वक़्त ह़ज़र मौत के अमीर थे उन्हों ने इस फ़ित्ने को इब्तिदा में ही ख़त्म करने की कोशिश की इस लिये उन्हों ने इस्लाम पर साबित क़दम क़बाइल को साथ मिला कर लश्कर तय्यार किया और क़बीलए बनू अ़म्र बिन मुआ़विय्या पर ह़म्ला किया और इन की क़ैदी औ़रतों और माले ग़नीमत वग़ैरा ले कर कन्दा के रास्ते चले गए। रास्ते में एक क़बीले से गुज़र रहे थे कि मा'लूम हुवा उस क़बीले के लोग भी बाग़ी हो गए हैं तो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन लुबैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुआ़वनत के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना मुहाजिर बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ पैग़ाम भेजा जो ह़ज़रते सय्यिदुना इकरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ यमन की बग़ावत को ख़त्म कर चुके थे। येह पैग़ाम पहुंचते ही वोह दोनों इन की मदद को आ पहुंचे और बाग़ियों के साथ जंग की गई और बहुत ही ह़िक्मते अ़मली के साथ उन

www.dawateislami.net

पर क़ाबू पा लिया गया, नामी गिरामी सरदारों और क़ैदियों को अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में भेज दिया गया और इस त़रह़ कन्दा व ह़ज़र मौत में भी अम्नो अमान की फ़ज़ा बह़ाल हो गई। ख़ित़्त़ए अ़रब की येह आख़िरी छे जंगें थीं जो बाग़ियों व मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ लड़ी गईं। इस से बग़ावत व इर्तिदाद के तमाम आसार बिल्कुल ख़त्म हो गए। क़बाइले अ़रब ने मदीनए मुनव्वरा की इस्लामी हुकूमत की इत़ाअ़त क़बूल कर ली। (الکامل فی التاریخ،ج ۲، ص ۲۳۳ ملتقطا)

फ़ितनए इर्तिदाद का मुकम्मल ख़ातिमा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! 11 सिने हिजरी के इख़्तिताम और 12 सिने हिजरी की इब्तिदा से पहले पहले या'नी कमो बेश एक साल की मुद्दत में अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुल्के अ़रब के फ़ितनए इर्तिदाद को मुकम्मल त़ौर पर ख़त्म फ़रमा दिया। मुह़र्रमुल ह़राम 11 सिने हिजरी में जज़ीरतुल अ़रब मुशरिकीन व मुर्तद्दीन से बिल्कुल पाको साफ़ हो चुका था और इस के किसी गोशे और ह़िस्से में शिर्क व इर्तिदाद नाम की कोई सियाही बाक़ी न रही थी।

सिद्दीक़े अक्बर सल्त़नते मुस्त़फ़ा के शहनशाह

इन जंगों से अगर कुछ अ़र्से पहले की ह़ालत पर ग़ौर किया जाए तो मदीनए मुनव्वरा व मक्कए मुकर्रमा व त़ाइफ़ के इलावा पूरा अ़रब ग़ुबार आलूद था। लेकिन परवानए शम्ए़ रिसालत और बारगाहे मुस्त़फ़ा के तर्बिय्यत याफ़्ता ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हिम्मत व ह़ौसले का अन्दाज़ा करें कि तने तन्हा इस तमाम तूफ़ान के मुक़ाबले में जिस शानो शौकत और शुजाअ़त के साथ मैदान में निकले क़ियामत तक इस की मिसाल नहीं मिलेगी। इस के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता कि सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक ज़िन्दा मो'जिज़ा थे। इस में शक नहीं कि लश्करे सिद्दीक़ी में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद, ह़ज़रते सय्यिदुना इकरमा बिन अबी जह्ल, ह़ज़रते सय्यिदुना शुरह़बील बिन ह़स्ना, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) जैसे बे नज़ीर मर्दाने अ़रब मौजूद थे। लेकिन अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ किस त़रह़ मदीनए मुनव्वरा में तशरीफ़ फ़रमा होने के बा वुजूद मुल्क के हर ह़िस्से और गोशे की ह़ालत से बा ख़बर थे और किस

www.dawateislami.net

तरह़ फ़ौजी दस्तों के पास इन के अह़काम मुतवातिर पहुंच रहे थे। ब ज़ाहिर येह नज़र आता है कि इन ग्यारह इस्लामी लश्करों ने हर त़रफ़ रवाना हो कर मुल्के अ़रब से फ़ितनए इर्तिदाद को मिटा दिया लेकिन ह़क़ीक़त येह है कि ख़लीफ़तुर्रसूल ने मदीनए त़य्यिबा में बैठे हुवे शाम व नज्द से मस्क़त़ व ह़ज़्र मौत तक और ख़लीज फ़ारस से यमन व अ़दन तक तमाम मुमालिक तने तन्हा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तौफ़ीक़ और उस की अ़त़ा कर्दा तदबीर से चन्द महीने के अन्दर पाको साफ़ कर दिये। इन फ़ितनों की हिम्मत शिकन इब्तिदा में कोई शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा ऐसा न था जो इस की इन्तिहा को देख सकता और सिर्फ़ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वोह बात़िनी बसारत ह़ासिल थी कि इन्हों ने न लश्करे उसामा की रवानगी को मुलतवी करना मुनासिब समझा, न मुन्किरीने ज़कात के मुत़ालबात की परवाह की। येह सब बातें एक रोज़े रौशन की त़रह़ इस बात पर दलालत कर रही हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जा नशीन और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ाइम की हुई **सल्त़नत के शहनशाह** ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही हैं।

झूटे नबियों की ख़ुश फ़ह्मी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़रब के बा'ज़ वोह क़बाइल जिन में झूटे मुद्दइय्याने नबुव्वत पैदा हो गए थे दर अस्ल वोह इस ग़लत़ फ़ह्मी में मुब्तला थे कि अगर क़बीलए क़ुरैश के नबी **मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों से अपनी नबुव्वत मनवाने में कामयाब हो सकते हैं तो दीगर क़बाइल के लोगों में से किसी को भी येह ए'ज़ाज़ ह़ासिल हो सकता है। इन्हों ने इस अहम मस्अले पर ग़ौरो फ़िक्र ही न किया कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह तआ़ला के भेजे हुवे सच्चे रसूल हैं, इसी वजह से आप की दा'वत अ़वाम तो अ़वाम ख़वास को भी अपनी त़रफ़ खींचती और उन के ज़ेह्नो फ़िक्र में जज़्ब हो जाती है। मुआ़शरे में फैली हुई बुराइयों की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिस उस्लूब से निशान देही फ़रमाई इस में कोई आप का मिस्ल न था, वजूदे बारी तआ़ला पर जो दलाइल क़ुरआने मजीद में दिये गए, कौन है जो इस बाब में उस्लूबे क़ुरआन के हज़ारवें हिस्से को भी पहुंच सके ? अ़रब के इन मुद्दइय्याने नबुव्वत की दा'वत सरासर झूट, इफ़्तरा और किज़्ब पर मब्नी थी और बात़िल की

www.dawateislami.net

खोखली बुन्यादों पर उन्हों ने अपनी अपनी नबुव्वत की ऐसी कच्ची दीवारें चुनी थीं जो चन्द ही रोज़ में सदाक़त के रेले में बह गईं। उन का ख़याल था कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सख़्त मुख़ालफ़त की गई, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को और आप के मुत्तबेईन को शदीद सज़ाएं दी गईं, इन से क़त्अ़ तअ़ल्लुक़ किया गया और आख़िर में इन्हें मक्कए मुकर्रमा से निकल जाने और किसी दूसरे मक़ाम की त़रफ़ हिजरत करने पर मजबूर किया गया, इस के बा वुजूद आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कामयाब हुवे। इसी त़रह़ थोड़ी बहुत तक्लीफ़ों के बा'द हमारे सरों पर भी कामयाबी व कामरानी का ताज सजा दिया जाएगा, लेकिन येह उन का वहम था जो चन्द ज़र्बों के बा'द उन के ज़ेहनों से निकल गया।

मजलिसे इन्तिज़ामी उमूर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िलाफ़ते राशिदा के पहले साल का ज़ियादा तर हिस्सा मुर्तद्दीन और बाग़ियों की बग़ावत व इर्तिदाद को ख़त्म करने में गुज़रा। बल्कि तमाम मुसलमानों ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मुआ़वनत की और इस्लामी फ़ौज में शामिल हो कर उन के ख़िलाफ़ जिहाद में मसरूफ़ रहे और इन फ़ितनों को ख़त्म करने में आप का भरपूर साथ दिया। इस लिये इन्हें बार बार मुल्क के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों और क़बीलों में ब ग़रज़े जिहाद भी जाना पड़ा। बग़ावत व इर्तिदाद के ख़िलाफ़ जंग व जिहाद के साथ साथ ममलुकत के इन्तिज़ामी उमूर की त़रफ़ भी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने तवज्जोह मब्ज़ूल किये रखी और मदीनए मुनव्वरा में एक बेहतरीन निज़ाम क़ाइम फ़रमा दिया। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की क़ाइम कर्दा मजलिसे इन्तिज़ामी उमूर की एक झलक मुलाह़ज़ा कीजिये :

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को मदीनए मुनव्वरा के मन्सबे क़ज़ा पर मुतअ़य्यन किया गया, लेकिन अ़जीब इत्तिफ़ाक़ है कि वोह दो साल इस मन्सब पर फ़ाइज़ रहे और इस दौरान कोई मुक़द्दमा इन की शरई अ़दालत में नहीं आया। मदीनए मुनव्वरा से बाहर मुर्तद्दीन और बाग़ियों से जंगें हो रही थीं लेकिन मदीनए मुनव्वरा में किसी क़िस्म की कोई ऐसी शिकायत पैदा न हुई जिस के सबब आप की अ़दालत में किसी को ह़ाज़िर होना पड़ता ।

www.dawateislami.net

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बैतुल माल के निगरान थे, ज़कात व सदक़ात के माल के तमाम मुआ़मलात इन ही के सिपुर्द थे।

(3) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़िम्मे तह़रीर व किताबत का शो'बा था। मुख़्तलिफ़ लोगों के नाम जिन में इन्तिज़ामिय्या और फ़ौज के सब लोग शामिल थे, उन्हें फ़रामीन जारी करना, ज़रूरी उमूर के बारे में उन से ख़त़्तो किताबत करना, उन्हें मुरासिले भेजना और उन के मुरासिलों का जवाब देना आप दोनों ही की ज़िम्मेदारी थी।

(4) मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में दरबारे ख़िलाफ़त की त़रफ़ से जो उ़म्माल और गवर्नर मुक़र्रर किये गए थे उन से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का बा क़ाइदा राबित़ा रहता था, हिदायात देने के लिये उन की त़रफ़ मो'तमद अ़लैह अफ़राद भेजे जाते थे और उन से उन के अ़लाक़ों के ह़ालात भी दरयाफ़्त किये जाते थे।

(5) कोई शख़्स बिग़ैर मश्वरे और इत्त़िलाअ़ के कोई क़दम नहीं उठा सकता था। इर्तिदाद व बग़ावत की जंगों के ज़माने में मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों के क़ाइदीन व उ़म्माल और फ़ौजों के सर बराहों के दरमियान ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की जो ख़त़्तो किताबत होती थी वोह भी कुतुबे तारीख़ में आज तक मह़फ़ूज़ है।

(سیر اعلام النبلاء، الجزء الثانی، ج ۱، ص۷۷ ۴ ملخصا)

बहर ह़ाल आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त का पहला साल निहायत ही मस्रूफ़िय्यत का था। येही वजह है कि ह़ज के मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी जगह ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ताब बिन उसैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अमीरुल ह़ज मुक़र्रर फ़रमाया। कमो बेश एक साल तक इर्तिदाद की जंगें जारी रहीं और इस दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की तवज्जोह इसी त़रफ़ मब्ज़ूल रही। जब सिलसिला ख़त्म हुवा और पूरे अ़रब में अम्नो अमान क़ाइम हो गया और मुकम्मल इस्लामी ह़ुकूमत का क़ियाम अ़मल में आ गया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लामी ता'लीमात को जज़ीरए अ़रब से बाहर आ़म करने और इस की नश्रो इशाअ़त के दाइरे को वुस्अ़त देने का फ़ैसला किया और येही वोह दौर था जहां से इस्लामी फ़ुतूह़ात का आग़ाज़ हुवा।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दौरे सिद्दीक़ी में फ़ुतूहात का आग़ाज़

इराक़ और मुल्हिक़ा अलाक़ों की फ़ुतूहात

जंगे ज़ातुस्सलासिल

जंगे यमामा से फ़राग़त के बा'द अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इराक़ की त़रफ़ पेश क़दमी का हुक्म दिया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब इराक़ रवाना हुवे तो आप के साथ दस हज़ार की फ़ौज थी, जब इराक़ पहुंचे तो सरह़द पर ह़ज़रते सय्यिदुना मुसन्ना बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दो ह़ज़ार फ़ौजियों के साथ इन का इन्तिज़ार कर रहे थे। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यहां फ़ौज को तीन ह़िस्सो में तक़्सीम किया और तीनों को अलग अलग मह़ाज़ों पर जाने का हुक्म इरशाद फ़रमा दिया। फ़ौज के एक ह़िस्से पर ह़ज़रते सय्यिदुना मुसन्ना बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर फ़रमाया। दूसरे ह़िस्से पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुक़र्रर फ़रमाया और तीसरे ह़िस्से की कमान आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुद संभाल ली। ईरान के मश्हूर ह़ाकिम हुरमुज़ की त़रफ़ एक मक्तूब लिखा जिसे पढ़ते ही वोह भी जंग के लिये तय्यार हो गया और जंग के मक़ाम पर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पहले ही पहुंच कर पानी पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां पहुंचे तो आप को ऐसी जगह पड़ाव करना पड़ा जहां पानी मौजूद न था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसलमानों को एक नया जज़्बा अ़त़ा फ़रमाया और मुसलमानों को पानी की फ़िक्र से बे नियाज़ कर दिया। अब हुरमुज़ ने आप को मुक़ाबले के लिये त़लब किया और उस ने पहले से ही कुछ सिपाही छुपा दिये ताकि वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद कर दें लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना क़अ़क़ाअ़ बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस की साज़िश पर मुत्त़लअ़ हो गए और वोह भी ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पीछे पीछे चल पड़े। बहर ह़ाल लड़ाई शुरूअ़ हो गई और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुरमुज़ की गर्दन उड़ा दी। अब फ़रीक़ैन के दरमियान जंग शुरूअ़ हो गई, लेकिन अपने सिपह सालार हुरमुज़ के क़त्ल हो

www.dawateislami.net

जाने की वजह से ईरानी फ़ौज के हौसले टूट चुके थे लिहाज़ा वोह ज़ियादा देर इस्लामी फ़ौज का मुक़ाबला न कर सके और शिकस्त खा कर मैदान छोड़ गए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को अपने करम से फ़त्हे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाई। इराक़ की इस पहली जंग को '**ज़ातुस्सलासिल**' इस लिये कहतें हैं कि '**सलासिल**' अ़रबी में '**सिलसिला**' की जम्अ़ है जिस का मा'ना ज़न्जीर है इस जंग में ईरानी फ़ौज ने अपने आप को एक दूसरे के साथ ज़न्जीरों में जकड़ लिया था ताकि कोई जंग से भागने न पाए, इस लिये इसे **जंगे ज़ातुस्सलासिल** या'नी '**ज़न्जीरों वाली जंग**' कहते हैं। (الکامل فی التاریخ،ج ۲،ص ۲۳۹ ملتقطا)

फ़त्हे हैरह

येह शहर पच्चीस साल क़ब्ल इराक़ी अ़रबों का दारुल हुकूमत था और इस की जो शानो शौकत अ़रबों के दौर में थी अब उसे खो चुका था, इस का हाकिम मिर्ज़बान था, इस शहर के बाशिन्दों और हाकिम को येह मा'लूम था कि हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इस तरफ़ भी रुख़ करेंगे, इस लिये इन्हों ने आप के आते ही दरियाए फ़ुरात का पानी बन्द कर दिया, बहर हाल थोड़ी सी झड़प के बा'द येह लोग बेबस हो गए और जिज़ये पर सुल्ह कर ली और यूं हैरह भी फ़त्ह हो गया। हैरह की फ़त्ह के बा'द हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इसी शहर को मुसलमानों का फ़ौजी मुस्तक़र और गिर्दो पेश के मफ़्तूहा अ़लाक़े का दारुल हुकूमत क़रार दे दिया इस ए'तिबार से हैरह मुसलमानों का पहला दारुल हुकूमत था जो जज़ीरए अ़रब के बाहर बनाया गया। (الکامل فی التاریخ،ج ۲،ص ۲۴۴ ملخصا)

फ़त्हे अम्बार

किस्रा की फ़ौजें हैरह के नवाह़ में दो मक़ामात **अम्बार** और **ऐ़नुल तमर** के मैदानों में थीं, अब चूंकि अ़रब से बाहर मुसलमानों का दारुल हुकूमत हैरह था इस लिये इसे किसी भी वक़्त निशाना बनाया जा सकता था, इस लिये हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ामोश बैठे रहने के बजाए इस की त़रफ़ पेश क़दमी की और इस का मुहासरा कर लिया, थोड़ी बहुत मुज़ाहमत के बा'द वहां के लोगों ने भी हथयार डाल दिये, अम्बार की सुल्ह के बा'द क़ुर्बो जवार की बस्तियों ने भी हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से सुल्ह कर ली। (الکامل فی التاریخ،ج ۲،ص ۲۴۵)

www.dawateislami.net

फ़त्हे ऐ़नुल तमर

अम्बार फ़त्ह हो चुका और इस के इर्द गिर्द के अ़लाक़े भी मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गए तो ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वहां के इन्तिज़ाम के लिये अपना नाइब मुक़र्रर करने के बा'द **ऐ़नुल तमर** का अ़ज़्म किया। जहां ईरान की बहुत बड़ी फ़ौज मअ़ दीगर अ़रब क़बाइल के मौजूद थी, अ़रब क़बाइल मुसलमानों के मुक़ाबिल आए, लड़ाई शुरूअ़ हुई और निहायत तेज़ी के साथ मुसलमानों ने कमन्द फेंकी और उन के सरदार को गिरिफ़्तार कर लिया, अ़रब के बदवी क़बाइल ने अपने सरदार को गिरिफ़्तार होते देखा तो मैदान छोड़ कर भाग गए। मुसलमानों ने उन का तआ़क़ुब किया बे शुमार मक़्तूल हुवे और दीगर अ़रब सरदार जान बचा कर भागने में कामयाब हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन क़ल्ए़ का मुह़ासरा कर लिया और थोड़ी बहुत मुज़ाह़मत के बा'द उन्हों ने भी हथयार डाल दिये और **ऐ़नुल तमर** भी मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया। (الکامل فی التاریخ، ج ۲، ص ۲۴۶ ملتقطا)

फ़त्हे दूमतुल जन्दल

ह़ज़रते इयाज़ बिन ग़नम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ एक साल से दूमतुल जन्दल में मुक़ीम थे क्यूंकि इन्हों ने इस का मुह़ासरा कर रखा था और शहर वालों ने मुसलमान फ़ौजों के इर्द गिर्द मुख़्तलिफ़ क़बाइल बिठा कर इन को घेरे में ले रखा था, या'नी दूमतुल जन्दल वाले भी मह़सूर थे और मुसलमान भी मह़सूर थे, इस लिये मुसलमानों की मदद के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां पहुंचे। आप ने देखा कि हर क़बीले अपने सरदार के मा तह़्त है। बहर ह़ाल जंग शुरूअ़ हुई और उन के दो शह सुवार मुक़ाबले के लिये आए तो मुसलमानों ने उन्हें गिरिफ़्तार कर लिया बाक़ी लोग क़ल्ए़ की त़रफ़ भाग गए, क़ल्ए़ वालों ने दरवाज़ा बन्द कर दिया और बाहर मौजूद लोगों को मुसलमानों की तल्वारों के सिपुर्द कर दिया, क़ल्ए़ के दरवाज़े पर लाशों का ढेर लग गया और क़ल्ए़ का दरवाज़ा खोलना मुमकिन न रहा तो दरवाज़ा उखेड़ दिया गया, अन्दर मौजूद सरदार फ़ौज समेत भाग गया, क़ल्ए़ में मौजूद तमाम बाग़ियों को क़त्ल कर दिया गया। यूं दूमतुल जन्दल भी फ़त्ह हो गया। (الکامل فی التاریخ، ج ۲، ص ۲۴۷ ملتقطا)

www.dawateislami.net

फ़त्हे हुसीद, ख़नाफ़िस, मुसीख़

दूमतुल जन्दल से फ़रागत के बा'द हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना क़अ़क़ाअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हुसीद की तरफ़ रवाना किया, वहां ईरान का लश्कर मौजूद था, उस का सरदार मारा गया, और लश्कर फ़िरार हो गया। येह लोग एक दूसरे शहर **ख़नाफ़िस** की तरफ़ दौड़े, वहां इस से क़ब्ल ईरानी फ़ौज मौजूद थी, उस का सिपह सालार मुसलमानों की आमद की ख़बर सुन कर पहले ही भाग कर **मुसीख़** चला गया था, जहां हुज़ैल बिन इमरान हाकिम था, मुसलमानों ने लड़ाई के बिग़ैर ही ख़नाफ़िस शहर पर क़ब्ज़ा कर लिया। इस के बा'द इस्लामी लश्कर को हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **मुसीख़** जाने की हिदायत की और ख़ुद भी वहां पहुंचे और **मुसीख़** पर रात के वक़्त हम्ला किया वहां का हाकिम हुज़ैल अपने चन्द साथियों के साथ भाग गया, लेकिन उस की फ़ौज के बहुत से लोग क़त्ल हो गए। (الکامل فی التاریخ، ج۲، ص۲۴۸ ملتقطا)

एक अहम बात

अगर हज़रते सय्यिदुना इयाज़ बिन ग़नम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दूमतुल जन्दल पर फ़त्ह पा लेने में कामयाब हो जाते तो हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन की मदद के लिये न भेजा जाता और येह तमाम अ़लाक़े भी फ़त्ह न होते क्यूंकि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का पूरे इराक़ और पूरे शाम को ज़ेरे नगीं करने का क़तअ़न इरादा न था आप तो फ़क़त ईरान और मुल्के शाम की उन सरहदों पर अम्नो अमान क़ाइम करने के ख़्वाहां थे जो मुल्के अ़रब से मिलती हैं ताकि ईरान और रूम की फ़ौजें जज़ीरए अ़रब पर हम्ला न कर सकें। लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कुछ और ही मन्ज़ूर था और हालात इस रुख़ पर चल पड़े थे कि ईरान और रूम पर मुसलमानों की हुकूमत क़ाइम होने लगी।

www.dawateislami.net

फ़िराज़ और इस की जंग

फ़िराज़ वोह मक़ाम है जो इराक़ व शाम के इन्तिहाए शिमाल में वाके़अ़ है। अभी तक रूमियों का ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से वासित़ा न पड़ा था अलबत्ता वोह तमाम ह़ालात से बा ख़बर थे और उन्हों ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जंग के लिये मुख़्तलिफ़ क़बाइल को इकठ्ठा कर के काफ़ी बड़ी जंगी तय्यारी कर रखी थी। ईरानी फ़ौज के इलावा बनू तग़लब, बनू इयाद और बनू नमर वग़ैरा क़बाइले अ़रब भी रूमी फ़ौज की मदद के लिये मैदान में मौजूद थे और येह अ़ज़ीम लश्कर मुसलमानों से जंग के लिये फ़िराज़ के मक़ाम पर पहुंचा। सफ़बन्दी कर दी गई लड़ाई शुरूअ़ होने से क़ब्ल रूमी सिपह सालार ने तमाम क़बाइल को अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा कर दिया ताकि येह पता चल सके कि कौन सा क़बीला तनदेही से लड़ा है। जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसलमानों को चारों त़रफ़ से दुश्मन को घेर कर और एक साथ जम्अ़ हो कर ह़म्ला करने का हुक्म दिया। दर अस्ल रूमी सरदार का येह ख़याल था कि मुख़्तलिफ़ क़बीले लड़ते रहेंगे तो मुसलमान लड़ते लड़ते थक जाएंगे और इन पर क़ाबू पाना आसान हो जाएगा। लेकिन रूमी सरदार इस चाल में कामयाब न हो सका क्यूंकि मुसलमानों ने रूमी फ़ौज को घेर कर एक जगह इकठ्ठा किया और फिर इस तेज़ी से उस पर ह़म्ला किया कि वोह बरदाश्त ही न कर सके और जल्द ही शिकस्त खा कर मैदाने जंग से भागना शुरूअ़ कर दिया। लेकिन मुसलमानों ने दूर तक उन का पीछा किया और उन्हें क़त्ल करते गए। कहा जाता है कि फ़िराज़ की इस जंग में दुश्मन के एक लाख आदमी मारे गए। येह जंग 15 ज़ुल क़ा'दा 12 सिने हिजरी को पेश आई। (الکامل فی التاریخ، ج۲، ص۲۵۰ ملتقطا)

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की बेहतरीन ह़िक्मते अ़मली

इराक़ की इन तमाम फ़ुतूह़ात के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज्जे **बैतुल्लाह** का इरादा किया। अलबत्ता इस बात का ख़ास ख़याल रखा कि मफ़्तूह़ा अ़लाक़ों को येह मा'लूम न हो सके कि मुसलमानों का सिपह सालार यहां से जा चुका है इसी वजह से आप ने आबादी वाले रास्ते के बजाए सह़राई दुश्वार गुज़ार त़वील रास्ता इख़्तियार किया। आप ने अपने ह़ज को इतना ख़ुफ़्या रखा था कि ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भी इल्म में येह बात न आ सकी। ह़ालांकि उसी साल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी ह़ज्जे **बैतुल्लाह** फ़रमाया था और अपने पीछे ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमा कर आए थे। यक़ीनन इस में अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के तर्बिय्यत याफ़्ता अमीर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जंगी व इन्तिज़ामी ह़िक्मते अ़मली का बेहतरीन नुमूना है। (الکامل فی التاریخ، ج۲، ص۲۵۱ ملتقطا)

शाम और मुल्ह़िक़ा अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुल्के शाम की ह़ालत इराक़ की त़रह़ नहीं थी बल्कि येह हर ए'तिबार से त़ाक़त में बहुत ज़ियादा थे। लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस की त़रफ़ बहुत सोच समझ कर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मुशावरत से पेश क़दमी का फ़ैसला फ़रमाया। शाम में लड़ी जाने वाली जंगें भी बहुत ही ख़त़रनाक थीं, जिन के लिये मुसलमानों की त़वील जंगी ह़िक्मते अ़मली भी इन के साथ मुआ़विन थी। फ़ुतूह़ाते शाम से चन्द चीदा चीदा वाक़िआ़त पेशे ख़िदमत हैं :

मुल्के शाम की पहली फ़त्ह़

कुछ अ़र्से से ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी मुख़्तसर सी फ़ौज के साथ शाम की सरह़द पर ख़ैमे गाड़े बैठे थे, दूसरी त़रफ़ इन के मुक़ाबले में रूम का बहुत बड़ा लश्कर था। उन की ता'दाद मुसलमानों के मुक़ाबले में कई गुना ज़ियादा थी, जब कि मुसलमान, उन से क़त़अ़न मरऊ़ब न थे बल्कि इन के ह़ौसले बहुत बुलन्द थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शामी ह़ुदूद में दाख़िले का ह़ुक्म इरशाद फ़रमा दिया। जैसे ही ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शामी ह़ुदूद में दाख़िल हुवे तो रूम और उस के ह़ामी क़बाइल इन्हें देख कर अपने मोरचे छोड़ कर भाग गए। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के ख़ाली मोरचों में गए और उन का छोड़ा हुवा सारा सामान अपने क़ब्ज़े में ले लिया। येह मुल्के शाम में इन की पहली फ़त्ह़ थी।

(الکامل فی التاریخ، ج۲، ص۲۵۲ ملتقطا)

मुल्के शाम की पहली सुल्ह़ और पहली जंग

इराक़ में इस्लामी फ़ौजों ने जो कामयाबी ह़ासिल की, इस से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मुसलमानों के ह़ौसले बहुत बढ़ गए थे। अब रूम की जंग का आग़ाज़ हुवा तो इन्हों ने अपनी हिम्मत व त़ाक़त में बे पनाह इज़ाफ़ा मह़सूस किया और

www.dawateislami.net

दारुल ख़ुलाफ़ा से मुजाहिदीन की मदद के लिये मुसलसल फ़ौजें मुल्के शाम भेजी जाने लगीं। हज़रते सय्यिदुना इकरमा बिन अबी जह्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कन्दा और हज़र मौत की बग़ावतों को ख़त्म कर के यमन और मक्कए मुकर्रमा से होते हुवे मदीनए मुनव्वरा पहुंचे तो सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन्हें हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मदद के लिये मुल्के शाम रवाना फ़रमा दिया। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक और लश्कर तय्यार कर के हज़रते सय्यिदुना ज़ुलकलाअ़ हुमैरी को इस लश्कर का क़ाइद मुक़र्रर फ़रमाया और इन्हें भी मुल्के शाम भेज दिया। बा'दे अज़ां आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **ह़िम्स** का वाली मुक़र्रर कर के एक भारी फ़ौज के साथ शाम जाने की हिदायत फ़रमाई। हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुल्के शाम के लिये रवाना हुवे और अर्ज़े बलक़ा पहुंचे। वहां के कुछ लोगों ने मुज़ाहमत की लेकिन फ़िर सुल्ह़ कर ली। येह मुल्के शाम की पहली सुल्ह़ थी। हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी बलक़ा में क़ियाम किया जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अर्ज़े फ़िलिस्तीन से गुज़रे तो रूमियों और बद्दूओं की एक फ़ौज ने इन पर ह़म्ला कर दिया, लड़ाई हुई लेकिन दुश्मनों को नाकामी का मुंह देखना पड़ा और सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें शिकस्त से दो चार कर दिया। वाज़ेह़ रहे कि हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सरया के बा'द मुल्के शाम की येह पहली जंग थी जो शाम में लड़ी गई। (الکامل فی التاریخ،ج ۲،ص ۲۵۲ تا ۲۵۴ ملتقطا)

सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की शाम की त़रफ़ रवानगी

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को अफ़्वाज दे कर शाम की त़रफ़ भेज दिया था। आप के ज़ेहन में आया कि इस मौक़अ़ पर हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की भी ख़िदमात ली जाएं क्यूंकि वोह ईरान व इराक़ के मह़ाज़ पर कई मरतबा कसीरुत्ता'दाद फ़ौजों का मुक़ाबला कर चुके थे और बड़े बड़े दुश्मनों से इन की पन्जा आज़्माई हो चुकी थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें एक मक्तूब लिखा जिस में दीगर उमूर के साथ साथ शाम की त़रफ़ पेश क़दमी और अपनी फ़ौज के दो ह़िस्से कर के हज़रते सय्यिदुना मुसन्ना बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को एक ह़िस्सा सिपुर्द करने का भी हुक्म था। जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह हुक्म हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

को मिला आप ने वहां जाने की तय्यारी शुरूअ़ कर दी। और अपनी फ़ौज के दो हिस्से कर के दूसरा हिस्सा हज़रते सय्यिदुना मुसन्ना बिन हारिसा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को दे दिया और इराक़ से कूच कर के मुल्के शाम रवाना हो गए।

यरमूक पर तमाम लश्करों का इजतिमाअ़

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन का तमाम लश्कर एक दुश्वार गुज़ार रास्ते से हज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन उ़मैर ताई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की राहनुमाई में मुल्के शाम की सरहद में दाख़िल हो गए। सब से पहले वोह सवी की बस्ती में दाख़िल हुवे और उस पर ह़म्ला कर दिया वहां के बाशिन्दों ने इस्लाम क़बूल कर लिया। इसी त़रह़ तदमुर और मर्जे राहित़ जो ग़स्सानियों का अ़लाक़ा था उस का भी येही ह़ाल हुवा। बहर ह़ाल मर्जे राहित़ से चल कर वोह बसरा पहुंचे जहां हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़, हज़रते सय्यिदुना शुर हबील बिन ह़स्ना और हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) अपनी अपनी फ़ौजों के साथ डेरे डाले हुवे थे। हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें भी अपने साथ मिलाया और बसरा पर ह़म्ला कर के उसे फ़त्ह़ कर लिया और फिर तमाम फ़ौजें यरमूक के मक़ाम पर जम्अ़ हो गईं।

मुसलमानों के लश्कर की मुकम्मल ता'दाद

मुसलमान जब यरमूक में जम्अ़ होना शुरूअ़ हुवे तो इन की ता'दाद सत्ताईस हज़ार थी और जब हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आए तो इन के साथ नव हज़ार की फ़ौज थी यूं सारी ता'दाद तक़रीबन छत्तीस हज़ार हो गई। बा'ज़ ने कहा कि मुकम्मल ता'दाद सेंतीस हज़ार थी और फिर हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के तीन हज़ार के लश्कर मिलाने से कुल चालीस हज़ार हो गई। बहर ह़ाल इन में एक हज़ार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان थे, इन में से तक़रीबन सो के क़रीब बदरी सह़ाबा थे।

रूमी फ़ौज की ता'दाद

रूमी फ़ौज की ता'दाद दो लाख चालीस हज़ार के क़रीब थी और इन के पास अस्लेहा भी बे शुमार था और इन के बहुत बड़े बड़े जर्नल भी मैदान में मौजूद थे, फिर येह

www.dawateislami.net

एक पुरानी तरक़्क़ी याफ़्ता और दुन्या की मश्हूर तरीन हुकूमत थी। बहुत से अ़लाक़ों पर इस का क़ब्ज़ा था। रूमियों ने भी तेज़ी से अपनी सफ़ों को दुरुस्त करना शुरूअ़ कर दिया।

(الکامل فی التاریخ، ج۲، ص۲۵۶ تا ۲۵۸)

दोनों लश्करों में जंग

रूमी सरदार बाहान ने चन्द दस्तों को मुसलमानों के मुक़ाबले के लिये मैदान में निकलने का हुक्म दिया तो जुर्जा हर अव्वल दस्ते की कमान कर रहा था। उस ने मुनासिब मौक़अ़ समझ कर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को आवाज़ दी। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी फ़ौज से बाहर निकल कर आए और उसे मिले। दोनों ने बाहम कुछ गुफ़्त्गू की और फिर अलग अलग हो गए। इस असना में रूमी सिपह सालार को ख़याल गुज़रा कि जुर्जा को आगे बढ़ने के लिये मज़ीद फ़ौज की ज़रूरत है। अब आ़म जंग का आग़ाज़ हुवा और जंग की इब्तिदा में ही रूमियों ने ज़ोरदार ह़म्ला किया। ह़ज़रते सय्यिदुना इकरमा बिन अबी जह्ल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बिल्कुल अपने सामने दस्ता लिये खड़े थे। इन्हों ने जब रूमी ह़म्ले को देखा तो बे क़ाबू हो गए और बा आवाज़े बुलन्द रूमियों से कहा कि मैं ने बड़े बड़े मा'रिके देखे हैं मैं तुम से डरने वाला नहीं हूं, फिर इन्हों ने अपने दस्ते के नौजवानों में जोश और वलवला पैदा किया और इस ज़ोर का ह़म्ला किया कि रूमियों के लिये मैदान में क़दम जमाए रखना दुश्वार हो गया। एक ह़ैरत अंगेज़ बात येह हुई कि दौराने जंग जुर्जा ने अपने इस्लाम का ए'लान कर दिया और अपने दस्ते के साथ मुसलमानों से आ मिला, इस से रूमियों में मज़ीद बद ह़वासी फैल गई और वोह पीछे हटने लगे। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब रूमियों की येह बद ह़वासी देखी तो अपने लश्कर को आगे बढ़ने और दुश्मन पर मज़ीद ह़म्ले करने का हुक्म दिया। पूरा दिन जंग जारी रही बिल आख़िर सूरज के ग़ुरूब होने का वक़्त क़रीब आया तो रूमी फ़ौज में कमज़ोरी के आसार दिखाई देने लगे और उन के सुवारों के चेहरे मुरझा गए। अब वोह भागने की राह ढूंड रहे थे, मगर कोई राह नज़र न आती थी। ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुसलमानों के लश्कर को पीछे हटने का हुक्म दिया जैसे ही लश्कर पीछे हटा तो रूमी फ़ौरन भाग खड़े हुवे, मुसलमानों ने भी उन का पीछा शुरूअ़ कर के उन्हें क़त्ल करना शुरूअ़ कर दिया। उन के बहुत से फ़ौजी ख़न्दक़ में जा गिरे। बहर ह़ाल रूमी निहायत ही ज़िल्लत आमेज़ शिकस्त से दो चार हुवे। (الکامل فی التاریخ، ج۲، ص۲۶۱ تا ۲۶۲)

www.dawateislami.net

फ़त्हे उरदन

रूमियों के लिये जंगे यरमूक निहायत इब्रत व ह़सरत का मूजिब साबित हुई, उन्हों ने अपनी पूरी त़ाक़त इस जंग में झोंक दी थी और तमाम मन्सूबे जो उन्हों ने इस जंग से वाबस्ता कर रखे थे, दम तोड़ गए थे। बादशाहे रूम हरक़िल जंग के मौक़अ़ पर ह़िम्स में मुक़ीम था, उसे अपनी फ़ौज की शिकस्त का मा'लूम हुवा तो किसी को अपना नाइब बना कर ह़िम्स से रुख़्सत हो गया। जंगे यरमूक ख़त्म हुई तो मुसलमानों ने उरदन का रुख़ किया और उसे भी जल्द ही फ़त्ह़ कर लिया।

फ़त्हे अजनादीन

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह ख़बर मिली कि रूमियों की फ़ौजें कसीर ता'दाद में अजनादीन में जम्अ़ हो गई थीं, और अजनादीन के तमाम बाशिन्दे और वोह अ़रब क़बाइल जो शाम में मुक़ीम हैं, रूमी फ़ौजों के साथ मिल कर मुसलमानों से मुक़ाबले की तय्यारी कर रहे हैं। येह ख़बर बड़ी तशवीशनाक थी जिसे सुनते ही ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा जिन जर्राह़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) दिमश्क़ से निकले और अजनादीन को रवाना हो गए। साथ ही ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान, ह़ज़रते सय्यिदुना शुर ह़बील बिन ह़स्ना और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) को पैग़ाम भेजा कि वोह अपने अपने लश्करों को ले कर अजनादीन पहुंच जाएं। इन के अजनादीन पहुंचते ही ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने तमाम फ़ौजों की कमान अपने हाथ में ले ली और फ़ौज को तरतीब देने लगे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुक्म दिया था कि नमाज़े ज़ोहर तक जंग शुरूअ़ न की जाए लेकिन रूमी फ़ौज ने इस से क़ब्ल ही मुसलमानों पर ह़म्ला कर दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़म्ला करने की इजाज़त त़लब की, इजाज़त मिलते ही वोह तेज़ी से दुश्मन पर टूट पड़े और येह ह़म्ला इस क़दर शदीद था कि रूमी फ़ौज इस का मुक़ाबला न कर सकी और मैदान छोड़ने पर मजबूर हो गई। रूमियों के बे शुमार

www.dawateislami.net

आदमी क़त्ल हुवे और मुसलमानों को कसीर माले ग़नीमत हासिल हुवा और दुश्मन का बहुत सारा अस्लेहा भी मुसलमानों के क़ब्ज़े में आया, येह जंग अगर्चे ज़ियादा देर जारी न रही लेकिन नतीजे के ए'तिबार से मुसलमानों के लिये बहुत मुफ़ीद रही।

(الکامل فی التاریخ، ج۲، ص۲۶۵ ملتقطا)

फ़ैज़ाने हयाते सिद्दीक़े अक्बर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अहदे ख़िलाफ़त में मुन्किरीने ज़कात व मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ नीज़ इराक़ और शाम की जो जंगें लड़ी गईं वोह बिलाशुबा दौरे इस्लामी की फ़ैसला कुन जंगें थीं, इन जंगों के सिलसिले में अगर ख़लीफ़ए वक़्त की तरफ़ से ज़र्रा बराबर भी लचक का मुज़ाहरा किया जाता और फ़ोरी तौर पर इन से निमटने की कोशिश न की जाती या इन जंगों में मुख़ालिफ़ीन का पलड़ा भारी हो जाता और मुसलमानों में कमज़ोरी के आसार पैदा हो जाते तो सल्तनते इस्लाम को ना क़ाबिले तलाफ़ी नुक़्सान होता। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को साबित क़दमी की ने'मते उज़्मा से नवाज़ा और इन के दिल में येह बात रासिख़ फ़रमा दी कि इस्लाम के छोटे से छोटे हुक्म का तहफ़्फ़ुज़ भी ज़रूरी है और जो राहें इस के ख़िलाफ़ जाती हैं वोह छोटी हों या बड़ी, उन्हें पूरी ताक़त के साथ बन्द कर देना ख़लीफ़ए वक़्त के फ़राइज़ में शामिल है। येही वजह है कि हम देखते हैं कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जिस अ़ज़्म व इस्तिक़लाल के साथ येह मा'रिके सर किये, जिस हिम्मत व जुरअत से मुख़ालिफ़ीने इस्लाम का क़ल्अ़ क़म्अ़ किया और जिस दानिश मन्दी व हिक्मते अ़मली से अ़मली मन्सूबे बनाए, इस की कोई नज़ीर नहीं। बल्कि इस के बा'द से आज चौदह सो साल तक आने वाले ख़ुलफ़ा, हुकमा व उमरा के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हयाते तय्यिबा मश्अ़ले राह बन गई। गोया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की हयाते मुबारका का येह फ़ैज़ान क़ियामत तक जारी रहेगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर और जम्ए क़ुरआन

जम्ए क़ुरआन का पस मन्ज़र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआने मजीद का जम्अ़ करना बिलाशुबा अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक अ़ज़ीमुश्शान कारनामा है। जम्ए क़ुरआन का पस मन्ज़र जंगे यमामा है जो मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ लड़ी गई। यूं तो इर्तिदाद की तमाम जंगें अपनी जगह बड़ी अहम्मिय्यत की ह़ामिल थीं लेकिन जंगे यमामा इन तमाम जंगों में सब से ज़ियादा ख़त़रनाक थी, इस की एक वजह तो मुसैलमा कज़्ज़ाब मुर्तद्द का ख़ातिमा है कि अ़रब में उस वक़्त इस से बड़ा कोई मुर्तद्द नहीं था और इस जंग में इस फ़ितने का ख़ातिमा हो चुका था और इस जंग की फ़त्ह़ मुसलमानों के लिये जहां बेह़द मसर्रत का बाइ़स थी वहीं येह जंग मुसलमानों के लिये सख़्त ग़म व अफ़्सोस का रेला भी ले कर आई थी कि इस जंग में मुतअ़द्दिद किबार सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और हु़फ़्फ़ाज़े क़ुरआन की बहुत बड़ी ता'दाद जामे शहादत नोश कर चुकी थी और मुसलमानों के लिये येह वोह नुक़्सान था जिस की तलाफ़ी क़त़अ़न ना मुमकिन थी। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बिल ख़ुसूस इस बात का बहुत रन्ज था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा कर्दा बात़िनी बसीरत से जान लिया कि जंगों का सिलसिला तो अभी जारी है और जंगे यमामा की त़रह़ अगली जंगों में भी हु़फ़्फ़ाज़े क़ुरआन की शहादत का सिलसिला जारी रहा तो क़ुरआने पाक हमारे हाथों से जाता रहेगा। इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जम्ए क़ुरआन का मश्वरा दिया जिसे सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़बूल फ़रमा लिया। चुनान्चे,

जम्ए क़ुरआन और इस के मुतअ़ल्लिक़ मुशावरत

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जंगे यमामा के दिनों में मुझे बुलवाया, जब मैं ह़ाज़िर हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी वहां तशरीफ़ फ़रमा थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ह़ज़रते उ़मर बिन

www.dawateislami.net

ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे क़ुरआने करीम के कसीर क़ुर्रा के शहीद होने की इत्तिलाअ़ दी है और साथ ही येह भी मश्वरा दिया कि चूंकि कुफ़्फ़ार से जंगों का सिलसिला अभी जारी है इस लिये डर है कि क़ुर्रा की कसीर ता'दाद शहीद होने से क़ुरआन का कुछ हिस्सा ज़ाएअ़ न हो जाए, लिहाज़ा आप क़ुरआने करीम को जम्अ़ करने का हुक्म दीजिये। लेकिन पहले तो मेरी समझ में येह बात न आई क्यूंकि मैं वोह काम कैसे कर सकता हूं जो काम ख़ुद नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नहीं किया ? बहर हाल इस काम के लिये येह इस्रार करते रहे यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तरह मेरा सीना भी इस बात के लिये खोल दिया और मेरी राए भी इन की राए के मुवाफ़िक़ हो गई और ऐ ज़ैद ! आप अ़क़्लमन्द नौजवान हैं, हमें आप में कोई ऐ़ब नज़र नहीं आता और आप तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास वह़ी लिखा करते थे, इस लिये येह अ़ज़ीम काम आप ही कीजिये और तमाम क़ुरआनी आयात को मुख़्तलिफ़ जगहों से ले कर एक जगह जम्अ़ कर दीजिये।" हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहते हैं : "अगर मुझे पहाड़ उठा कर एक जगह से दूसरी जगह रखने का हुक्म दिया जाता तो येह मेरे लिये क़ुरआन जम्अ़ करने से कहीं ज़ियादा आसान होता। और मुझे भी येह काम समझ में न आया, इस लिये मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) दोनों की बारगाह में अ़र्ज़ की : "आप लोग वोह काम कैसे कर सकते हैं जो काम ख़ुद नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नहीं किया ?" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इसी में बेहतरी है।" बहर हाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप दोनों की तरह मेरा भी सीना कुशादा फ़रमा दिया और मैं ने पूरी कोशिश से हड्डियों, खजूर के पत्तों, सफ़ेद पथ्थरों पर तह़रीर शुदा और लोगों के सीनो में मौजूद क़ुरआन को जम्अ़ करना शुरूअ़ कर दिया। सूरए तौबा की आख़िरी आयात मुझे हज़रते सय्यिदुना ख़ुज़ैमा बिन अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इलावा किसी से न मिलीं।" (और यूं सारा क़ुरआन एक जगह जम्अ़ हो गया इस के बा'द येह जम्अ़ किया हुवा क़ुरआन) हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास रहा फिर हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास और फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की लख़्ते जिगर और प्यारी शहज़ादी उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास रहा।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب جمع القرآن، الحدیث: ۴۹۸۶، ج۳، ص۳۹۸)

www.dawateislami.net

सब से ज़ियादा सवाब के ह़क़दार

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया :

اَعْظَمُ النَّاسِ فِي الْمَصَاحِفِ اَجْرًا اَبُوْبَكْرٍ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَى اَبِيْ بَكْرٍ هُوَ اَوَّلُ مَنْ جَمَعَ كِتَابَ اللّٰه

या'नी मसाहिफ़ में सब से ज़ियादा सवाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन पर रह़्म फ़रमाए कि इन्हों ने सब से पहले क़ुरआने पाक को जम्अ़ फ़रमाया।" (عمدۃ القاری، کتاب فضائل القرآن، باب جمع القرآن، تحت الحدیث: ۴۹۸۶، ج ۱۳، ص ۵۳۴)

सब से पहले जामेए़ क़ुरआन

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला ह़दीसे पाक में सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जामेए़ क़ुरआन फ़रमाया गया है और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी जामेए़ क़ुरआन कहा जाता है, इन दोनों बातों में तत़्बीक़ और जामेए़ क़ुरआन की बेहतरीन व नफ़ीस तह़क़ीक़ के लिये आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का जामेए़ क़ुरआन से मुतअ़ल्लिक़ एक इस्तिफ़्ता के जवाब में दिये गए फ़त्वे का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है :

"क़ुरआने अ़ज़ीम का ह़क़ीक़ी त़ौर पर जम्अ़ फ़रमाने वाला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है कि ख़ुद क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : ﴿اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَ قُرْاٰنَهٗ﴾ (پ۲۹، القیامۃ: ۱۷) बेशक हमारे ज़िम्मे है क़ुरआन का जम्अ़ करना और पढ़ना।" फिर जामेए़ ह़क़ीक़ी या'नी रब عَزَّوَجَلَّ के मज़्हरे अव्वल व अतम व अकमल ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। क्यूंकि जिस ख़ूब सूरत तरतीब पर आज क़ुरआने पाक की तमाम आयाते मुबारका मुसलमानों के हाथों में हैं येही तरतीब लौहे़ मह़फ़ूज़ की है और जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास क़ुरआने पाक पहुंचाया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'लीम के मुत़ाबिक़ उसी

www.dawateislami.net

ज़माने में तमाम आयात अपनी अपनी सूरतों में जम्अ़ हो गईं। क़ुरआने अ़ज़ीम 23 बरस में मुतफ़र्रिक़ आयतें हो कर उतरा, किसी सूरत की कुछ आयात उतरतीं, फिर दूसरी सूरत की आयतें आतीं, फिर सूरते ऊला की नाज़िल होतीं, हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर बार इरशाद फ़रमाते कि येह आयात फ़ुलां सूरत की हैं फ़ुलां आयत के बा'द फ़ुलां के पहले रखी जाएं, इसी त़रह़ सूरए क़ुरआनिय्या मुन्तज़िम होती रहीं और ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुन कर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इसी तरतीब पर इसे नमाज़ों, तिलावतों में पढ़ते। क़ुरआने अ़ज़ीम सिर्फ़ एक वाह़िद लुग़ते क़ुरैश पर नाज़िल हुवा, अ़रब में मुख़्तलिफ़ क़बाइल और इन के लहजे बाहम ह़रकात व सकनात व बा'ज़ अज्ज़ाए कलिमात में मुख़्तलिफ़ थे। और इन के लिये फ़िल फ़ौर अपनी मादरी लुग़त से लुग़ते क़ुरैश में पढ़ना बहुत मुश्किल था लिहाज़ा हुज़ूरे पुरनूर शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने रब से अ़र्ज़ कर के दीगर क़बाइल वालों के लिये उन के लहजों की रुख़्सत ले ली थी। जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام हर रमज़ानुल मुबारक में जिस क़दर क़ुरआने अ़ज़ीम उस वक़्त तक उतर चुका होता हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ इस का दौर करते जो येह सुन्नत अब तक بحمد اللّٰه تعالٰی हुफ़्फ़ाज़े अहले सुन्नत में बाक़ी है और क़ियामत तक اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बाक़ी रहेगी। नुज़ूले क़ुरआन के आख़िरी साल जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने दोबारा सिर्फ़ अस्ले लुग़ते क़ुरैश पर जिस में क़ुरआने मजीद नाज़िल हुवा था हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ दौर किया और इस आख़िरी दौर (जो लुग़ते क़ुरैश पर हुवा) से इस बात की त़रफ़ इशारा है कि वोह रुख़्सत मन्सूख़ और अब सिर्फ़ वोही लुग़त जिस में अस्ल नुज़ूले क़ुरआन हुवा बर क़रार रहेगी। सूरतें अगर्चे ज़मानए अक़्दस में मुरत्तब हो चुकी थीं मगर एक जगह जम्अ़ न थीं, बल्कि मुख़्तलिफ़ परचों, बकरी के शानों वग़ैरहा में मुख़्तलिफ़ जगहों पर मौजूद थीं अलबत्ता उस वक़्त हुफ़्फ़ाज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मुबारक सीनों में मुकम्मल क़ुरआन मह़फ़ूज़ था। ह़त्ता कि नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या से पर्दा फ़रमाया और ख़लीफ़ए बरह़क़ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ज़मानए ख़िलाफ़त में जंगे यमामा वाक़ेअ़ हुई जिस में ब कसरत सह़ाबए किराम ह़ाफ़िज़ाने क़ुरआन शहीद हुवे। तो रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ने अपना येह वा'दा :

www.dawateislami.net

﴿وَ اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ﴾ (پ۱۴، الحجر:۹) "और बेशक हम खुद इस के निगहबान हैं।" पूरा फ़रमाने के लिये सय्यिदुना अमीरुल मोअमिनीन उ़मर बिन अल ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के क़ल्बे करीम में इल्क़ा फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे सिद्दीक़ी में अ़र्ज़ की, कि "जंगे यमामा में बहुत हुफ़्फ़ाज़ शहीद हुवे और मैं डरता हूं कि यूं ही कुरआन मुतफ़र्रिक़ परचों में रहा और हुफ़्फ़ाज़ शहादत पा गए तो बहुत सा कुरआन मुसलमानों के हाथ से जाता रहेगा मेरी राए है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जम्ए़ कुरआन का हुक्म फ़रमाएं।" सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इब्तिदा में इस में तअम्मुल हुवा कि जो फ़े'ल हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न किया हम क्यूं कर करें। सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया कि अगर्चे हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न किया मगर **वल्लाह** वोह काम ख़ैर का है बिल आख़िर सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का भी ज़ेह्न बन गया और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर **किताबुल्लाह** को जम्अ़ करने का फ़रमाने ख़िलाफ़त सादिर फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी वोही शुबा हुवा कि जो काम हुज़ूर सय्यिदुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न किया वोह हम कैसे करें। सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें वोही जवाब दिया कि अगर्चे हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न किया मगर **वल्लाह** वोह काम ख़ैर का है। यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आ'ज़म व ज़ैद बिन साबित व जुम्ला सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के इजमाअ़ से येह मस्अला तै हुवा और कुरआने अ़ज़ीम मुतफ़र्रिक़ जगहों से जम्अ़ कर लिया गया और बद मज़हबों का येह शुबा जिस पर आधी बद मज़हबिय्यत का दारो मदार है कि जो फ़े'ल हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न किया दूसरा क्या इन से ज़ियादा मसालेहे़ दीन जानता है कि इसे करेगा? सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के इज्माअ़ से मर्दूद हो गया। कुरआनी सूरतें अगर्चे मुतफ़र्रिक़ मवाक़ेअ़ से एक मजमूए़ में मुज्तमअ़ हो गई थीं और वोह मजमूआ़ सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, फिर उम्मुल मोअमिनीन सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास था मगर अभी भी इस में तीन काम बाक़ी थे : (1) इन जम्अ़ किये गए मुख़्तलिफ़ सह़ाइफ़ का एक मुस्ह़फ़ में नक़्ल होना। (2) फिर इस मुस्ह़फ़ के नुस्ख़े को इस्लामी

www.dawateislami.net

मुमालिक के बड़े बड़े शहरों में तक़्सीम करना। (3) रुख़्सते साबिक़ा की बिना पर कुरआन के बा'ज़ वोह लहजे जो कुरआने अ़ज़ीम के ह़क़ीक़ी अस्ल **मुनज़्ज़ल मिनल्लाह** साबित मुस्तक़र ग़ैरे मन्सूख़ लहजे से जुदा थे फ़ितने को दूर करने के लिये इन को ख़त्म करना। येह तीनों काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने तीसरे बन्दे अमीरुल मोअमिनीन जामेउ़ल कुरआन जुन्नूरैन सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से लिया और कुरआने अ़ज़ीम का जम्अ़ करना ह़स्बे वा'दए इलाहिय्या ताम व कामिल हुवा इस लिये सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जामेउ़ल कुरआन कहते हैं।" (फ़तावा रज़विय्या, जि.26 स.450 ता 452)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के जम्ए़ कुरआन के इस मुबारक अ़मल से येह बात रोज़े रोशन की त़रह़ इयां हो गई कि अगर्चे कोई काम **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने न किया हो लेकिन अगर वोह भलाई का काम है तो उसे करने में कोई ह़रज नहीं। कई बद मज़्हब व गुमराह फ़िर्क़े का मा'मूलाते अहले सुन्नत जैसे अज़ान वग़ैरा मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर दुरूदो सलाम पढ़ना, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नामे नामी इस्मे गिरामी पर अंगूठे चूमना, मह़ाफ़िल व जुलूसे मीलाद, आ'रासे बुज़ुर्गाने दीन, नज़्रो नियाज़, बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात पर ह़ाज़िरी वग़ैरा पर येह फ़ासिद ए'तिराज़ करना कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तो येह काम न किया ? सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के जम्ए़ कुरआन पर इजमाअ़ से मर्दूद हो गया कि अह़कामे शरइय्या को सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا व दीगर सह़ाबए किराम से ज़ियादा जानने वाला कोई नहीं।

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे हुज़ूर
नज्म हैं और नाव है इ़तरत रसूलुल्लाह की

सब सह़ाबा से हमें तो प्यार है
اِنْ شَآءَاللّٰہ अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर का अन्दाज़े ख़िलाफ़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का तर्ज़े ख़िलाफ़त निहायत ही सादा था। इस के किसी गोशे में कोई उलझाव न था, वजह येह थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वहां के लोगों की समझ बूझ और अ़क़्लो फ़िक्र को हमेशा पेशे नज़र रखा। दूसरी वजह येह थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ज़माना नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने के साथ बिल्कुल मुत्तसिल था जो प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मा'मूलात थे बि ऐ़निही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भी वोही मा'मूलात थे। आख़िरत का तसव्वुर और अपने आ'माल की जवाब देही का ख़याल हर वक़्त उन के ज़ेहन पर त़ारी रहता था। इसी वजह से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी अपने हाथ से अ़द्लो इन्साफ़ के दामन को न छोड़ा। बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के अ़द्लो इन्साफ़ का प्यारा अन्दाज़ और आप के दौरे ख़िलाफ़त की शरई अ़दालत आयिन्दा आने वाले हुक्मरानों के लिये बेहतरीन मश्अ़ले राह है।

सिद्दीक़े अक्बर की शरई अ़दालत

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह पहले इस्लामी चीफ़ जस्टिस हैं जो लोगों के दीन व दुन्यवी मुआ़मलात में उन की शरई रहनुमाई करते नीज़ उन के मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात के फ़ैसले भी फ़रमाते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ैसला करने का अन्दाज़ बहुत ही प्यारा था।

सिद्दीक़े अक्बर के फ़ैसला करने का अन्दाज़

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन महरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शरई अ़दालत में जब कोई फ़रीक़ अपना मुक़द्दमा ले कर आता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रीक़ैन का मौक़िफ़ सुनने के बा'द सब से पहले **किताबुल्लाह**

www.dawateislami.net

में इस का हुक्म तलाश करते, अगर कोई हुक्म मिल जाता तो उसी के मुताबिक़ फ़ैसला फ़रमा देते। वरना अहादीसे मुबारका में इस का हुक्म तलाश करते, अगर अहादीस में कोई हुक्म मिल जाता तो उस के मुताबिक़ फ़ैसला फ़रमा देते वरना इजमाअ़ से इस्तिद्लाल करने के लिये सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मुशावरत फ़रमाते और पूछते कि मुझे येह मस्अला दरपेश है क्या आप में से किसी को मा'लूम है कि इस के मुतअ़ल्लिक़ प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क्या फ़ैसला फ़रमाया है ? बा'ज़ अवक़ात आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास लोगों का एक क़ाफ़िला आता और अ़र्ज़ करता कि इस मुआ़मले में सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस तरह फ़ैसला फ़रमाया है। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه येह सुन कर इरशाद फ़रमाते : "तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हम में ऐसे लोग पैदा फ़रमाए जो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन को याद रखते हैं। अल ग़रज़ मुतअ़ल्लिक़ा मस्अले में किसी से अगर कोई भी ह़दीस मिल जाती तो उस के मुताबिक़ फ़ैसला फ़रमा देते और अगर इस तरह मस्अला ह़ल न होता तो सहाबए किराम को इकठ्ठा करते और मुशावरत से जो बात तै हो जाती उस के मुताबिक़ फ़ैसला फ़रमा देते।" (سنن الدارمی، باب الفتیا وما فیہ من الشدۃ، الحدیث: ۱۶۱، ج ۱، ص ۷۰)

रसूलुल्लाह की मौजूदगी में फ़ैसला कुन राए

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को येह सआ़दत भी ह़ासिल थी कि आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में भी लोगों से ख़िताब किया करते थे और मुख़्तलिफ़ मसाइल पर अपनी राए का इज़्हार करते थे, और कई मुआ़मलात में आप के क़ौल पर ही फ़ैसला होता था या'नी **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी आप ही के क़ौल की ह़िमायत फ़रमाया करते थे। ऐसा ही एक वाक़िआ़ ग़ज़वए हुनैन के मौक़अ़ पर भी पेश आया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं कि ग़ज़वए हुनैन के दिन मैं ने एक मुसलमान को देखा जो एक मुशरिक से नबर्द आज़मा था मुसलमान के पीछे से एक दूसरे मुशरिक ने आ कर उसे धोके से क़त्ल करना चाहा। येह सूरते ह़ाल देख कर मैं पीछे से आने वाले धोके बाज़ मुशरिक पर तेज़ी से झपटा और उस की गर्दन के क़रीब वार किया जिस से उस की ज़िरअ़ कट गई। وَاَقْبَلَ عَلَيَّ فَضَمَّنِي ضَمَّةً وَجَدْتُ مِنْهَا رِيحَ الْمَوْتِ या'नी वोह मुशरिक मेरी तरफ़ पलटा और

www.dawateislami.net

उस ने मुझे दबा कर इतनी ज़ोर से भींचा कि मुझे अपनी मौत का ख़तरा लाहिक़ हो गया।" बहर हाल जैसे ही उस की गिरिफ़्त ढीली पड़ी तो मैं ने उसे परे धकेल दिया और उसे क़त्ल कर दिया। इसी दौरान मुसलमानों के लश्कर में सरासीमगी फैल गई लेकिन मैं ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी जगह डटे हुवे हैं। मैं ने उन से पूछा : "مَا بَالُ النَّاسِ या'नी लोगों को क्या हो गया है?" तो उन्हों ने जवाब दिया : "اَمْرُ اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ या'नी येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ैसला है।" बहर हाल जंग के बा'द तमाम लोग **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जम्अ़ हो गए तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "مَنْ قَتَلَ قَتِيلًا لَهُ عَلَيْهِ بَيِّنَةٌ فَلَهُ سَلَبُهُ या'नी जो शख़्स इस बात का सुबूत फ़राहम कर दे कि फ़ुलां काफ़िर मक़्तूल को उस ने क़त्ल किया है तो मक़्तूल का साज़ो सामान उसी को मिलेगा।" मैं अपने हाथों क़त्ल होने वाले काफ़िर पर किसी की गवाही लेने के लिये खड़ा हुवा और कहा : "مَنْ يَشْهَدُ لِي؟ है कोई जो मेरे इस क़त्ल की गवाही दे।" लेकिन कोई भी खड़ा न हुवा, तो मैं बैठ गया। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा वोही इरशाद फ़रमाया तो मैं फिर खड़ा हुवा लेकिन इस बार भी मेरी गवाही देने के लिये कोई न उठा, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीसरी बार फिर वोही इरशाद फ़रमाया तो मैं एक मरतबा फिर उठा लेकिन इस बार भी कोई गवाह न उठा। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ देख कर इरशाद फ़रमाया : "مَا لَكَ يَا اَبَا قَتَادَةَ या'नी ऐ अबू क़तादा! क्या बात है तुम तीसरी बार खड़े हो रहे हो?" मैं ने बारगाहे रिसालत में सारा माजरा अ़र्ज़ कर दिया। मेरी गुफ़्त्गू सुन कर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठे हुवे लोगों में से एक आदमी ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कहा : "अबू क़तादा सच कह रहे हैं और जिस शख़्स को क़त्ल करने की बात कर रहे हैं उस का सामान और अस्लेह़ा मेरे पास है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अबू क़तादा को अपनी त़रफ़ से कुछ दे कर मेरी त़रफ़ से राज़ी कर दें और येह सामान मुझे दिलवा दें।" इस पर सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ैसला कुन लहजे में फ़रमाया :

لَاهَا اللّٰهِ اِذًا لَا يَعْمِدُ اِلٰى اَسَدٍ مِنْ اُسْدِ اللّٰهِ يُقَاتِلُ عَنِ اللّٰهِ وَرَسُولِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَيُعْطِيكَ سَلَبَهُ

"या'नी ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

के शेरों में से एक ऐसे शेर को महरूम कर दें जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल की हिमायत और तहफ़्फ़ुज़ की जंग लड़ा हो।" **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "صَدَقَ या'नी अबू बक्र ने सच कहा।" सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने उस सामान के इवज़ एक बाग़ ख़रीदा। येह मेरी पहली जाएदाद थी जो मैं ने दौरे इस्लाम में हासिल की। (صحیح البخاری، کتاب المغازی، قول اللہ تعالی۔۔۔الخ، الحدیث: ۴۳۲۲، ج۳، ص۱۱۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का गुफ़्तगू करना और क़सम उठाने में सबक़त करना और फिर इस से बढ़ कर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का आप की गुफ़्तगू की तस्दीक़ करते हुवे आप की कही हुई बात के मुताबिक़ फ़ैसला सादिर फ़रमाना दर हक़ीक़त आप का ही शरफ़ और ख़ुसूसिय्यत है।

मसाइले शरइय्या में इजतिहाद

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में एक मुक़द्दमा पेश हुवा आप ने उस का फ़ैसला करने के लिये **किताबुल्लाह** में इस की अस्ल न पाई न ही **रसूलुल्लाह** की सुन्नत में कोई दलील पाई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं अपनी राए से इजतिहाद करता हूं, अगर येह दुरुस्त हो तो **अल्लाह** की तरफ़ से और अगर येह ग़लत हो तो मेरी तरफ़ से होगा मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़फ़िरत तलब करता हूं।"

(الطبقات الکبری لابن سعد، ذکر الغار والھجرۃ الی المدینۃ، ج۳، ص۱۳۲)

तक़्दीर के मो'तरिज़ पर सर ज़निश

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक नौजवान हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में मस्अला पूछने आया और उस ने तक़्दीर पर ए'तिराज़ करते हुवे कहा : "आप का क्या ख़याल है जब कोई बन्दा ज़िना

www.dawateislami.net

करता है तो क्या वोह भी उस की तक़्दीर में लिखा होता है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "हां ।" उस ने दोबारा कहा : "जब येह तक़्दीर में लिखा हुवा था और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ही मुझ पर मुक़र्रर फ़रमाया तो फिर मुझे सज़ा क्यूं देगा ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलाल में आ गए और इरशाद फ़रमाया : "ऐ बकवास करने वाली के बेटे ! अगर मेरे पास अभी कोई होता तो मैं उसे तेरी नाक काटने का हुक्म दे देता ।"

(کنز العمال، کتاب الایمان والاسلام، الفصل السابع، فی الایمان بالقدر، الحدیث: ۱۵۳۳، ج ۱، الجزء: ۱، ص ۱۷۲)

दिमाग़ में शैतान घुसा है

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में एक शख़्स लाया गया जिस ने अपने बाप का इन्कार कर दिया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "उस के सर पर ज़र्ब लगाओ क्यूंकि उस के दिमाग़ में शैतान घुसा हुवा है ।"

(مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الحدود، فی الراس یضرب فی العقوبۃ، الحدیث: ۱، ج ۲، ص ۱۵۹، تاریخ الخلفاء، ص ۷۲)

चोर के लिये क़त्ल का हुक्म

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दौर में एक चोर लाया गया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के क़त्ल का हुक्म दिया। अ़र्ज़ की गई : "**या रसूलल्लाह** ! इस ने चोरी की है।" येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के हाथ काटने का हुक्म दिया । बा'द में वोही शख़्स हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में चोरी के इल्ज़ाम में लाया गया और उस का एक हाथ और एक पाउं कटा हुवा था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उसे देखते ही इरशाद फ़रमाया : "तेरे लिये क़त्ल का हुक्म ही बेहतर था जो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तेरे लिये जारी फ़रमाया था।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस के क़त्ल का हुक्म दे दिया।

(مسند ابویعلی، مسند ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالی عنہ، الحدیث: ۲۸، ج ۱، ص ۳۳ ملتقطا)

www.dawateislami.net

चोर की इबादत वाली रात

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के पास एक यमनी शख़्स आया जिस का (चोरी की सज़ा पाने के सबब) एक हाथ और पाउं कटा हुवा था, उस ने शिकायत की, कि "यमन के आ़मिल ने (मेरा हाथ और एक पाउं काट कर बिला वजह) मुझ पर बहुत ज़ुल्म किया है।" ह़ालांकि वोह सारी सारी रात इबादत करता था। (उस की इबादत व रियाज़त के सबब) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने फ़रमाया : "तेरी रात तो चोर की रात की त़रह़ नहीं है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ की ज़ौजा ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के ज़ेवरात गुम हो गए सब लोग तलाश करने लगे वोह शख़्स भी सब के साथ मिल कर ज़ेवरात की तलाश में लग गया और साथ ही येह दुआ़ करता रहा : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी पकड़ में ला जिस ने नेक घर वालों के साथ ज़ियादती की है।" तलाशे बिसयार के बा'द मा'लूम हुवा कि वोह ज़ेवर फ़ुलां सुनार के पास हैं, उस सुनार से पूछ गछ की गई कि येह ज़ेवरात उस के पास कहां से आए ? तो उस ने कहा कि ग़ालिबन येह ज़ेवरात एक हाथ पाउं से मा'ज़ूर शख़्स मेरे पास लाया था। लोगों ने फ़ौरन उस शख़्स को पकड़ा और तफ़्तीश करने पर उस ने इक़रारे जुर्म कर लिया या उस के ख़िलाफ़ गवाह क़ाइम हुवे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने उस का बायां हाथ काटने का हुक्म दिया और इरशाद फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! इस ने अपनी ज़ात के लिये जो बद दुआ़ की वोह मेरे नज़दीक इस की चोरी की सज़ा से भी ज़ियादा सख़्त है।"

(السنن الکبری للبیهقی، کتاب السرقة، باب السارق یعود فیسرق ثانیا، الحدیث: ۱۷۲۶۳، ج۸، ص ۴۷۵)

बाग़े फ़दक और सिद्दीक़े अक्बर

फ़दक क्या है ?

"फ़दक" ख़ैबर का एक अ़लाक़ा है इस में खजूर के बाग़ात और चश्मे हैं, येह अ़लाक़ा कुफ़्फ़ार ने बिग़ैर लड़ाई के मुसलमानों के ह़वाले कर दिया था। इस की आमदनी

www.dawateislami.net

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने अहलो इयाल अज़्वाजे मुत़ह्हरात वग़ैरा पर सर्फ़ फ़रमाते थे और तमाम बनी हाशिम को भी इस की आमदनी से कुछ मर्ह़मत फ़रमाते थे, मेहमान और बादशाहों के सुफ़रा की मेहमान नवाज़ी भी इस आमदनी से होती थी, इस से ग़रीबों और यतीमों की इमदाद भी फ़रमाते थे, जिहाद के सामान तल्वार, ऊंट और घोड़े वग़ैरा इस से ख़रीदे जाते थे और अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा की ह़ाजतें भी इसी से पूरी फ़रमाते थे ।

(سنن ابی داود، کتاب الخراج والفیئ۔۔۔الخ، باب فی صفایا ۔۔۔ الخ، الحدیث:۲۹۶۳، ج۳، ص۱۹۳، ۱۹۴ ملتقطاً، مدارج النبوت، ج۲، ص۴۴۵، تاج العروس، ج۲۷، ص۲۹۲)

सिद्दीक़े अक्बर और रसूलुल्लाह की इत्तिबाअ़

जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी हुवा और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मन्सबे ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी बाग़े फ़दक से ह़ासिल होने वाली आमदनी को उन्हीं तमाम मसारिफ़ में ख़र्च किया जिन में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ख़र्च फ़रमाया करते थे, बाग़े फ़दक की आमदनी ख़ुलफ़ाए अरबआ़ के ज़माने तक इसी त़रह़ सर्फ़ होती रही । (سنن ابی داود، کتاب الخراج والفیء، باب فی صفایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث:۲۹۷۲، ج۳، ص۱۹۸)

बा'दे विसाल रसूलुल्लाह का तर्का

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस ज़िन्दगी इस क़दर पाकीज़ा और सादा थी कि कुछ अपने पास रखते ही न थे बल्कि आप की बारगाह में जो भी हदिय्या वग़ैरा पेश किया जाता फ़ौरन उसे अपने अस्ह़ाब में तक़्सीम फ़रमा देते और काशानए अक़्दस में कई कई दिनों तक चूल्हा तक न जलता ।

आ'ला ह़ज़रत अ़ज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इसी पाकीज़ा

www.dawateislami.net

हयात को यूं बयान करते हैं :

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं इन के ख़ाली हाथ में

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ इरशाद फ़रमाते हैं :

कभी जव की मोटी रोटी, तो कभी खजूर पानी
तेरा ऐसा सादा खाना, मदनी मदीने वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन ह़ारिस رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है फ़रमाते हैं :

مَاتَرَکَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ عِنْدَ مَوْتِہٖ دِرْھَمًا وَّلَا دِیْنَارًا وَّلَا عَبْدًا وَّلَا اَمَۃً وَّلَا شَیْئًا اِلَّابَغْلَتَہُ الْبَیْضَاءَ وَسِلَاحَہٗ وَاَرْضًا جَعَلَھَا صَدَقَۃً

"या'नी दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने अपनी वफ़ात के वक़्त न दिरहमो दीनार छोड़ा, न लौंडी व ग़ुलाम, न और कुछ, सिर्फ़ अपना सफ़ेद खच्चर, चन्द हथयार और कुछ ज़मीन छोड़ी और वोह भी आ़म मुसलमानों पर सदक़ा फ़रमा गए।"

(صحیح البخاری، کتاب الوصایا، باب الوصایا۔۔۔الخ، الحدیث: ۲۷۳۹، ج۲، ص ۲۳۱)

बहर ह़ाल आप صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के तर्के में तीन चीज़ें थीं। (1) बाग़े फ़दक, ख़ैबर की ज़मीनें (2) सुवारी का एक जानवर (3) और चन्द हथयार।

शहज़ादिये कौनैन और मीरासे रसूलुल्लाह

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم की लाडली बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالٰی عنہا ने **रसूलुल्लाह** صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم के विसाले ज़ाहिरी

www.dawateislami.net

के बा'द अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को माले फ़ई (बाग़े फ़दक) अ़ता फ़रमाया था इस को बत़ौरे मीरास तक़्सीम फ़रमाएं। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब सद इ़ज़्ज़ व एह़तिराम इरशाद फ़रमाया : ‘‘आप के बाबाजान **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया है : ‘‘**لَانُوْرَثُ مَاتَرَکْنَافَھُوَصَدَقَۃٌ**’’ या'नी हम (अम्बिया) का कोई वारिस नहीं होता, हम ने जो कुछ माल वग़ैरा छोड़ा वोह मुसलमानों पर सदक़ा है।’’ (صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب قرابۃ۔۔۔الخ، الحدیث: ۳۷۱۱۔۳۷۱۲، ج۲، ص۵۳۸، ۵۳۷ وکتاب الفرائض، باب قول النبی لا نورث۔۔۔الخ، الحدیث: ۶۷۲۵۔۶۷۲۶، ج۴، ص۳۱۳ ملتقطاً)

शहज़ादिये कौनैन ने मीरास का मुत़ालबा क्यूं किया ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अगर्चे **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सफ़र व ह़ज़र के साथी थे, लेकिन ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की लख़्ते जिगर थीं, यक़ीनन वोह भी **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान पर मुत्त़लअ़ थीं लेकिन इस के बा वुजूद उन्हों ने मीरास का मुत़ालबा क्यूं किया ? अ़ल्लामा शहाबुद्दीन अह़मद बिन अ़ली बिन ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस बात का जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं कि ‘‘ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इस ह़दीस पर मुत्त़लअ़ थीं लेकिन आप इस ह़दीस को आ़म नहीं समझती थीं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तर्के में से किसी चीज़ का भी कोई वारिस नहीं होगा, इन के नज़्दीक इस ह़दीस का मफ़्हूम येह था कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तर्के में से बा'ज़ चीज़ों का कोई वारिस नहीं होगा और बाक़ी चीज़ों में विरासत जारी होगी और बाग़े फ़दक उस माल

www.dawateislami.net

में से था जिस में विरासत जारी होगी इसी वजह से इन्हों ने विरासत को त़लब फ़रमाया। जब कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म व दिगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इस ह़दीस को उ़मूम पर मह़मूल किया करते थे और इन के नज़्दीक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के किसी माल में विरासत जारी नहीं हो सकती थी।"

(فتح الباری، کتاب فرض الخمس، باب فرض الخمس، الحدیث:۳۰۹۴، ج۷، ص۱۶۴)

शहज़ादिये कौनैन के मुत़ालबे की बरकत

ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से बाग़े फ़दक के मुत़ालबे की येह बरकत ज़ाहिर हुई कि यारे ग़ार, आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बाने ह़क़ से ता क़ियामत आने वाले मुसलमानों तक एक अहम मस्अला पहुंच गया कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के माल में विरासत जारी नहीं होती।

अम्बिया की मीरास न होने की ह़िक्मत

अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی उ़मदतुल क़ारी में इरशाद फ़रमाते हैं : (1) अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मीरास न होने का सबब येह है कि कोई शख़्स इन के मुतअ़ल्लिक़ مَعَاذَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह बद गुमानी न करे कि इन्हों ने अपने रिश्तेदारों के लिये माल जम्अ़ किया है और नबुव्वत का दा'वा और इशाअ़ते दीन की तमाम सई हुसूले माल के लिये थी। (2) एक क़ौल येह भी है कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपनी तमाम तर उम्मत में ब मन्ज़िला बाप होते हैं और इन की तमाम उम्मत इन के लिये ब मन्ज़िला अवलाद है इस लिये इन का सारा माल इन की तमाम अवलाद के लिये सदक़ा कर दिया जाता है, इस लिये दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "مَا تَرَکْنَا فَهُوَ صَدَقَةٌ या'नी हम ने जो कुछ माल वग़ैरा छोड़ा वोह मुसलमानों पर सदक़ा है।"

(عمدۃ القاری، کتاب الفرض الخمس، باب فرض الخمس، ج۲۲، ص۲۱۰)

www.dawateislami.net

अम्बियाए किराम की मीरास इल्म है

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ الْاَنْبِیَاءَ لَمْ یُوَرِّثُوا دِیْنَارًا وَلَا دِرْهَمًا وَرَّثُوا الْعِلْمَ فَمَنْ اَخَذَهُ اَخَذَ بِحَظٍّ وَافِرٍ

"या'नी अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दिरहमो दीनार का वारिस नहीं बनाते बल्कि वोह तो इ़ल्म का वारिस बनाते हैं, लिहाज़ा जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया उस ने पूरा ह़िस्सा पा लिया ।" (سنن الترمذی، کتاب العلم، ابواب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه۔۔۔الخ، الحدیث: ۲۶۹۱، ج۴، ص۳۱۲)

उ़लमा अम्बिया के वारिस हैं

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "اِنَّ الْعُلَمَآءَ وَرَثَةُ الْاَنْبِیَاءِ" या'नी बेशक उ़लमा अम्बिया के वारिस हैं ।"

(سنن ابن ماجة، کتاب السنة، باب فضل العلماء۔۔۔الخ، الحدیث: ۲۲۳، ج۱، ص۱۴۶ ملتقطا)

सिद्दीक़े अक्बर की शहज़ादिये कौनैन से वालिहाना मह़ब्बत

जब ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बीमार हुई तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर तशरीफ़ लाए और इन से मिलने की इजाज़त त़लब की । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : "ऐ फ़ातिमा ! अमीरुल मोअमिनीन सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप से मिलने तशरीफ़ लाए हैं और इजाज़त त़लब फ़रमा रहे हैं ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : "क्या आप इस बात को पसन्द करते हैं कि मैं उन्हें अन्दर आने की इजाज़त दूं ?" फ़रमाया : "जी हां ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इजाज़त दे दी तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए (और पर्दे में इ़यादत वग़ैरा की) फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये इरशाद फ़रमाया : "ब ख़ुदा मेरे तर्क से मेरा मकान, मेरा माल, मेरे अहल

www.dawateislami.net

और मेरे रिश्तेदार और जो कुछ भी है वोह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा के लिये है और ऐ अहले बैत ! आप की रिज़ा के लिये है।" फिर ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की रिज़ा त़लब करते रहे ह़त्ता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا राज़ी हो गईं।

(السنن الکبری للبیھقی، کتاب قسم الفیء والغنیمۃ، باب بیان مصرف اربعۃ، الحدیث:۱۲۷۳۵، ج۶، ص۴۹۱)

शहज़ादिये कौनैन का विसाल

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द तक़रीबन छे माह बा'द 3 रमज़ानुल मुबारक 11 सिने हिजरी ब मुत़ाबिक़ 22 नवम्बर सिने 633 ईसवी ब रोज़ मंगल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا विसाल फ़रमा गईं। उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की उ़म्र मुबारक 29 साल थी। (سیرت سید الانبیاء، ص۲۰۶، تاریخ الخلفاء، ص۵۷)

नमाज़े जनाज़ा सिद्दीक़े अक्बर ने पढ़ाई

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि जब हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साहि़बज़ादी, शहज़ादिये कौनैन सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का इन्तिक़ाल हुवा तो सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) आप की नमाज़े जनाज़ा में तशरीफ़ लाए। सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को नमाज़ पढ़ाने के लिये फ़रमाया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा हैं, मैं आप की मौजूदगी में नमाज़ नहीं पढ़ाऊंगा।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आगे बढ़े और सय्यिदा फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

(جمع الجوامع، مسند ابی بکر، الحدیث:۱۵۳، ج۱۱، ص۳۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ख़ुत्बाते सिद्दीक़े अक्बर

(1) नसीहतों के मदनी फूल

हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन उक़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुत्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : ''तमाम ता'रीफ़ें उस पाक परवर दगार के लिये हैं जो तमाम जहानों का रब है, मैं उस की हम्द करता और उसी से मदद तलब करता हूं और मौत के बा'द के मुआमलात में हम उसी से इज़्ज़त तलब करते हैं, बेशक मेरी और तुम्हारी मौत क़रीब आ चुकी है और मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और बेशक हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के ख़ास बन्दे और प्यारे रसूल हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को हक़ के साथ ख़ुश ख़बरी देने वाला, डर सुनाने वाला और चमकता सूरज बना कर भेजा ताकि आप ज़िन्दों को डराएं और काफ़िरों पर अ़ज़ाब की हुज्जत क़ाइम करें और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त की वोह हिदायत पा गया और जिस ने उन दोनों की ना फ़रमानी की वोह बिल्कुल गुमराह हो गया। ऐ लोगो ! मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने और उस की शरीअ़त की रस्सी को मज़बूती से थामने की वसिय्यत करता हूं जिस के सबब उस ने तुम्हें हिदायत बख़्शी। बेशक कलिमए इख़्लास के बा'द इस्लाम की सब से बड़ी हिदायत येह है कि तुम अपने उस निगरान की इत़ाअ़त करो जिसे तुम्हारे मुआमलात पर मुक़र्रर किया गया है तो जिस ने امربالمعروف ونھی عن المُنکر (नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने) पर मामूर शख़्स की इत़ाअ़त की वोह फ़लाह़ पा गया, और उस ने अपना हक़ अदा कर दिया। नफ़्सानी ख़्वाहिशात से बचो, जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात, लालच और ग़ुस्से से बचा वोह कामयाब हो गया और फ़ख़्र से बचो, क्यूंकि जो मिट्टी से पैदा हुवा और मरने के बा'द भी मिट्टी में ही चला जाएगा कीड़े मकोड़े उसे खा जाएंगे ऐसे शख़्स को फ़ख़्र करने की क्या ज़रूरत है ? नीज़ आज वोह ज़िन्दा है तो कल मर जाएगा। दिन ब दिन लम्ह़ा ब लम्ह़ा नेक आ'माल में लगे रहो और मज़लूम की बद दुआ़

www.dawateislami.net

से बचो, अपने आप को मुर्दा तसव्वुर करो और सब्र करो कि हर अ़मल सब्र के साथ क़ाइम है और डरो कि डरना आख़िरत में मुफ़ीद है और अच्छे आ'माल करो कि आ'माले सालेह़ा मक़्बूल हैं। हर उस चीज़ से डरो जिस के अ़ज़ाब से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें डराया है और हर उस नेक काम में जल्दी करो जिस के मुतअ़ल्लिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम से रह़मत का वा'दा किया है। इन तमाम बातों को ख़ुद भी समझो और दूसरों को भी समझाओ, ख़ुद भी डरो और दूसरों को भी डराओ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने वोह सारी बातें बयान कर दी हैं जिन पर अ़मल कर के साबिक़ा उम्मतें तबाहो बरबाद हुईं और वोह तमाम बातें भी बयान कर दी हैं जिन पर अ़मल कर के वोह नजात पा गईं और उस ने तुम्हारे लिये अपनी पाक किताब में ह़लालो ह़राम, पसन्दीदा व ना पसन्दीदा तमाम उमूर बयान कर दिये हैं, मैं अपने आप को और तुम सब लोगों को नसीह़त करने में कन्जूसी नहीं करता और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही ह़क़ीक़ी मददगार है, नेकी करने की क़ुव्वत और बुराई से बचने की त़ाक़त सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है। जो तुम ने इख़्लास के साथ आ'माल किये वोह यक़ीनन रब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त है और तुम ने अपना ह़िस्सा मह़फ़ूज़ कर लिया है तो तुम क़ाबिले रश्क हो और जो तुम ने नवाफ़िल अदा किये हैं उन्हें नवाफ़िल ही समझो कि वोह तुम्हारे काम आएंगे और तुम्हारे जो दोस्त अह़बाब इस दुन्या से जा चुके हैं उन के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करो जो उन्हों ने कमाया वोह पा लिया जिन्हों ने अच्छे आ'माल किये वोह मरने के बा'द ख़ुश बख़्त हो गए और जिन्हों ने बुरे आ'माल किये वोह बद बख़्त हो गए। बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कोई शरीक नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और मख़्लूक़ के माबैन कोई ऐसा नसब नहीं कि जिस की वजह से अल्लाह उसे ख़ैर अ़त़ा करे। वोह बुराई को मिटा देता है जब कि उस की इत़ाअ़त की जाए और उस ख़ैर में कोई ख़ैर नहीं जिस का अन्जाम जहन्नम हो और उस शर में कोई शर नहीं जिस का अन्जाम जन्नत हो, बस मुझे तुम से येही बातें कहनी थीं। मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने और तुम्हारे लिये मग़फ़िरत त़लब करता हूं और अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजो और तुम सब पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सलामती हो।''

(كنز العمال، كتاب المواعظ، خطب ابی بكر الصديق ومواعظه، الحديث:٤٤١٧٧، ج٨، الجزء:١٦، ص٦٣)

www.dawateislami.net

(2) आसानियों वाले दरवाज़े का कुशादा होना

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन हारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को खुत़्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम तक़्वा व परहेज़गारी इख़्तियार करो तो कोई बईद नहीं कि तुम पर आसानियों के दरवाज़े कुशादा कर दिये जाएं ह़त्ता कि तुम रोटी और घी से सैराब हो जाओ ।"

(کنزالعمال، کتاب المواعظ، خطب ابی بکر الصدیق ومواعظہ، الحدیث: ۴۴۱۷۲، ج۸، الجزء: ۱۶، ص ۶۳)

(3) हया के सबब सर ढांप लेना

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों को खुत़्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या करो, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! मैं साया ह़ासिल करता हूं यहां तक कि मैं जब खुले मैदान में क़ज़ाए ह़ाजत के लिये जाता हूं तो उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या करते हुवे अपना सर ढांप लेता हूं ।"

(کنز العمال، کتاب المواعظ، خطب ابی بکر الصدیق ومواعظہ، الحدیث: ۴۴۱۷۳، ج۸، الجزء: ۱۶، ص ۶۲)

हया के सबब पीठ दीवार से लगाना

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन दीनार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम मैं जब त़हारत ख़ाने में जाता हूं तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ से ह़या के सबब अपनी पीठ दीवार से लगा लेता हूं और अपने सर को ढांप लेता हूं ।"

(کنز العمال، کتاب المواعظ، خطب ابی بکر الصدیق ومواعظہ، الحدیث: ۴۴۱۷۵، ج۸، الجزء: ۱۶، ص ۶۲)

www.dawateislami.net

(4) फ़िक्रे आख़िरत से भरपूर ख़ुत्बा

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन उ़कैम** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक त़वील ख़ुत़्बा दिया, ह़म्दो सना के बा'द इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! मैं तुम्हें परहेज़गारी की वसिय्यत करता हूं और येह भी कि तुम उस ज़ाते बरह़क़ की ऐसी ह़म्दो सना करो जैसी ह़म्दो सना करने का ह़क़ है और येह कि तुम ख़ौफ़े ख़ुदा के साथ साथ उस की रह़मत पर भी नज़र रखो और रब की बारगाह में गिड़ गिड़ा कर मांगो क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन के ख़ानदान वालों की ता'रीफ़ की है चुनान्चे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿اِنَّهُمْ كَانُوْا یُسٰرِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِ وَ یَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّ رَهَبًا ؕ وَ كَانُوْا لَنَا خٰشِعِیْنَ﴾(پ۱۷، الانبیاء:۹۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक वोह भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और ख़ौफ़ से और हमारे हुज़ूर गिड़ गिड़ाते हैं।" ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! अच्छी त़रह़ समझ लो **अल्लाह** तआ़ला ने ह़क़ के बदले तुम्हारी जानों को गिरवी रख लिया है और इस पर तुम से पक्का वा'दा भी ले लिया है और तुम से आख़िरत के बदले दुन्या को ख़रीद लिया है। येह तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की किताब है जिस का नूर नहीं बुझता, इस के अ़जाइबात ख़त्म नहीं होते, उस के क़ौल की तस्दीक़ करो और उस की किताब से नसीह़त ह़ासिल करो, तुम इस नूर से तारीक दिन के लिये रोशनी ह़ासिल करो, उस ने तुम्हें अपनी इ़बादत के लिये पैदा फ़रमाया है और तुम पर **किरामन कातिबीन** फ़िरिश्तों को मुक़र्रर फ़रमा दिया है जो तुम्हारे आ'माल से बा ख़बर हैं। ऐ ख़ुदा के बन्दो ! ख़ूब जान लो कि तुम सुब्ह़ो शाम मौत की त़रफ़ बढ़ रहे हो, तुम से मौत का इ़ल्म पोशीदा रखा गया है, अगर तुम अपने मुक़र्ररा अवक़ात को रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वाले कामों में सर्फ़ कर सकते हो तो ज़रूर करो, मगर **अल्लाह** के हुक्म के बिग़ैर तुम हरगिज़ ऐसा नहीं कर सकते। और मौत के आने से क़ब्ल अपने वक़्त को अच्छे कामों में सर्फ़ कर दो कहीं ऐसा न हो कि येह वक़्त तुम्हें बुरे आ'माल में मसरूफ़ कर दे और कई क़ौमें ऐसी थीं जिन्हों ने अपने क़ीमती वक़्त को ज़ाएअ़ किया और अपने मक़्सद को भूल गईं लिहाज़ा ऐसे लोगों की

www.dawateislami.net

पैरवी से बचो, जल्दी करो और नजात पाने की कोशिश करो, यक़ीनन तुम्हारे पीछे बहुत तेज़ रफ़्तार मौत लगी हुई है जो बहुत जल्द आ कर ही रहेगी ।

(شعب الایمان للبیھقی، باب فی الزھد وقصر الامل، فصل فیما بلغنا عن الصحابة۔۔۔الخ، الحدیث: ۱۰۵۹۴، ج۷، ص ۳۶۴، المستدرک علی الصحیحین، کتاب التفسیر، تفسیر سورۃ الانبیاء، الحدیث: ۳۴۹۹، ج۳، ص ۱۴۰)

(5) कहां हैं ह़सीन चेहरों वाले ?

हज़रते सय्यिदुना अबू यह़्या बिन कसीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَبِیْر से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुत़्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया करते थे : "कहां हैं वोह ख़ूब सूरत ह़सीन चेहरों वाले जो अपनी जवानी से लोगों को हैरान कर दिया करते थे ? कहां हैं वोह बादशाह जिन्हों ने शहर ता'मीर कराए और क़ल्ए बनाए ? कहां हैं वोह जिन्हें मैदाने जंग में फ़त्ह़ अ़त़ा की जाती थी ? हां उन के आ'ज़ा रेज़ा रेज़ा हो चुके हैं ह़त्ता कि ज़माने ने उन्हें बे नामो निशान बना दिया है अब तो क़ब्रों के अन्धेरों में पड़े हैं। ऐ लोगो ! जल्दी करो जल्दी करो, नजात की त़रफ़ बढ़ो नजात की त़रफ़ बढ़ो ।" (حلیة الاولیاء، ابوبکر الصدیق، الحدیث: ۷۶، ج۱، ص ۷۹)

(6) ज़मीन पर रह़मते इलाही का साया

एक दफ़्आ़ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मिम्बर पर ख़ुत़्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते हुवे सुना : "अ़द्लो इन्साफ़ और आ़जिज़ी करने वाला बादशाह ज़मीन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (की रह़मत) का साया और उस का नेज़ा है पस जिस ने बादशाह को अपने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों के मुतअ़ल्लिक़ नसीह़त की (या'नी फ़ाइदा मन्द बात बताई) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ह़श्र अपने सायए रह़मत में फ़रमाएगा जिस दिन उस के सायए रह़मत के इ़लावा कोई साया न होगा और जिस ने बादशाह को अपने और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दों के बारे में धोका दिया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को क़ियामत के दिन रुस्वा करेगा ।" (فضیلة العادلین لابی نعیم اصبھانی، الحدیث ۱۵، ص ۱۲)

वसिय्यते ख़िलाफ़ते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त के मुआ़मले में मुसलमानों में थोड़े बहुत

www.dawateislami.net

इख़्तिलाफ़ हुवे लेकिन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने इन्तिक़ाल से क़ब्ल मुख़्तलिफ़ अकाबिर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की मुशावरत से हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब फ़रमाया ताकि इन के इन्तिक़ाल के बा'द किसी क़िस्म का कोई इख़्तिलाफ़ पैदा न होने पाए और मुसलमान बिग़ैर इन्तिशार के अपने मुआ़मलात को संभाल लें।

ख़िलाफ़त के मुआ़मले में मुशावरत

जब हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़बीअ़त ज़ियादा नासाज़ हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बुला कर इरशाद फ़रमाया : "आप हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहते हैं ?" इन्हों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर ! जिस मस्अले के मुतअ़ल्लिक़ आप मुझ से दरयाफ़्त फ़रमा रहे हैं उसे आप बेहतर जानते हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "फिर भी कुछ तो कहो।" अ़र्ज़ किया : "ख़ुदा की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में जो (अपने बा'द ख़लीफ़ा बनाने की) राए क़ाइम की है वोह इस से भी कहीं ज़ियादा अफ़्ज़ल व आ'ला है।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को त़लब फ़रमाया और इन से भी येही पूछा कि "मुझे उ़मर फ़ारूक़ के बारे में बताइये।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : "हुज़ूर ! आप हम से बेहतर जानते हैं।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "इस के इ़लावा कुछ कहो।" हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "اَللّٰھُمَّ عِلْمِیْ بِہٖ اَنَّ سَرِیْرَتَہٗ خَیْرٌ مِّنْ عَلَانِیَّتِہٖ وَاَنَّہٗ لَیْسَ فِیْنَا مِثْلُہٗ हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में मेरा इ़ल्म येही है कि इन का बात़िन इन के ज़ाहिर से कहीं बेहतर है और हमारे दरमियान इन की मिस्ल कोई नहीं है।" सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना सई़द बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ दीगर मुहाजिरीन व अन्सार से भी मश्वरा किया। हज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया :

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ اَعْلَمُهُ الْخَیْرَ بَعْدَکَ، یَرْضٰی لِلرِّضَا وَیَسْخَطُ لِلسَّخَطِ الَّذِیْ یُسِرُّ خَیْرٌ مِّنَ الَّذِیْ یُعْلِنُ، وَلَنْ یَلِیَ هٰذَا الْاَمْرَ اَحَدٌ اَقْوٰی عَلَیْهِ مِنْهُ

"या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है, मैं आप के बा'द उन्हें सरापा ख़ैर समझता हूं, वोह तो अच्छे काम पर राज़ी और बुरे काम पर नाराज़ होते हैं, जो वोह छुपा कर रखते हैं, इस की बा निस्बत कहीं बेहतर है जो वोह ज़ाहिर करते हैं। हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बा निस्बत कोई भी अम्रे ख़िलाफ़त पर ज़ियादा मज़बूत और कुव्वत वाला हरगिज़ नज़र नहीं आएगा।" (کنزالعمال، کتاب الامارۃ والخلافۃ، خلافۃ امیر المؤمنین عمر۔۔۔الخ، الحدیث: ۱۴۱۷۱، ج۳، الجزء:۵، ص ۲۶۹)

परवानए ख़िलाफ़त ब नाम सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सा'द رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं सह़ाबा का एक क़ाफ़िला हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास उस वक़्त आया जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपना जा निशीन बनाने का तहिय्या कर लिया था। चुनान्चे, कुछ अफ़राद ने लब कुशाई करते हुवे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ किया : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जा निशीन बनाने के बारे में सुवाल किया तो आप क्या जवाब देंगे?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "मुझे बिठाओ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बिठाया गया। इरशाद फ़रमाया : "मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िरी से डरा रहे हो? वोह शख़्स हलाक हुवा जिस ने तुम लोगों की हुकूमत ह़ासिल कर के ज़ुल्म की पूंजी कमाई। मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में येह अ़र्ज़ करूंगा : ऐ अल्लाह! मैं तेरी ज़मीन पर आबाद सारी मख़्लूक़ से बेहतर शख़्स को अपना ख़लीफ़ा बना कर आया हूं। मेरी येह बात दूसरे लोगों तक पहुंचा दो।" येह कह कर आप फिर लैट गए। फिर हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन से हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की जा निशीनी का परवाना दर्जे ज़ैल अल्फ़ाज़ में इमला करवाया :

"अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान निहायत रह़म वाला! येह वोह बात है जो अबू बक्र ने दुन्या से जाते हुवे और आ़लमे आख़िरत में क़दम रखते हुवे कही

www.dawateislami.net

थी। ऐसे पुर ख़त़र वक़्त में काफ़िर कलिमा पढ़ लिया करता है, बद किरदार आदमी तौबा कर लेता है और झूटा इन्सान भी सच्ची बात कह देता है। मैं ने अपने बा'द उ़मर बिन ख़त्त़ाब को तुम पर अमीर बनाया है। तुम पर लाज़िम है कि इस की बात सुनो और इस की इत़ाअ़त करो ! मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, दीने इस्लाम, अपनी और तुम्हारी ज़ात के बारे में कभी कोई कोताही नहीं की। अगर उ़मर ने अ़द्ल किया और येही मुझे उम्मीद है, तो हर आदमी को अपने नेक आ'माल की जज़ा मिलती है और अगर ना इन्साफ़ी की तो हर किसी को गुनाह की सज़ा मिलती है। ता हम मैं ने अपनी त़रफ़ से बेहतर काम कर दिया है। मुझे ज़ाती त़ौर पर इल्मे ग़ैब ह़ासिल नहीं और ज़ालिमों को अ़न क़रीब मा'लूम हो जाएगा कि वोह किस अन्जाम को पहुंचते हैं। وَالسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ।"

(مصنف عبد الرزاق، كتاب المغازی، استخلاف ابی بکر عمر، الحدیث:۹۸۲۷، ج۵، ص ۳۱۱، تاریخ مدینة دمشق، عبد اللہ ویقال عتیق بن عثمان، ج۳۰، ص ۴۱۱)

फिर इस हुक्म नामे को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ले कर बाहर तशरीफ़ ले आए। तमाम लोगों ने बैअ़त की और इस पर रिज़ा व रग़बत का इज़्हार किया। बा'द अज़ां आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को बुला कर नसीह़तों के मदनी फूल इरशाद फ़रमाए।

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म को नसीह़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन **अ़ब्दुल्लाह** बिन साबित़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का वक़्ते विसाल आया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को बुलाया और इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहा करो और याद रखो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के काम जो दिन में होने वाले हैं रात तक पीछे नहीं किये जाते और रात वाले काम दिन पर नहीं छोड़े जाते। नवाफ़िल तब ही क़बूल होते हैं जब फ़राइज़ अदा कर दिये जाएं। रोज़े क़ियामत उसी शख़्स की नेकियां भारी होंगी जो दुन्या में ह़क़ की इत्तिबाअ़ करता था। ऐसे शख़्स के लिये मीज़ाने अ़द्ल का ह़क़ है कि भारी साबित हो और जो ह़क़ से उ़दूल करता रहा उस की नेकियां हल्की होंगी और ऐसे शख़्स के लिये मीज़ान का ह़क़ है कि हलका साबित हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अहले जन्नत का ज़िक्र किया तो निहायत आ'ला सिफ़ात

www.dawateislami.net

के साथ किया और उन के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये। जब मैं उन्हें याद करता हूं तो (ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब) जन्नती न होने से डरता हूं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जहन्नमियों का ज़िक्र किया तो निहायत बुरे आ'माल के साथ किया और उन के बेहतर कामों का बदला उन्हें दुन्या में ही दे दिया। जब मैं उन्हें याद करता हूं तो (रह़मते इलाही के सबब) जहन्नमी न होने की उम्मीद करता हूं। इस लिये बन्दे को ख़ौफ़ और उम्मीद के दरमियान रहना चाहिये इस त़रह़ कि न रह़मत पर कुल्ली तवक्कुल करे (कि बिल्कुल नेकियां करना ही छोड़ दे) और न ही रह़मत से मायूस हो (कि लवाज़िमाते दुन्या से बिल्कुल किनारा कशी इख़्तियार कर ले)। ऐ उ़मर ! अगर तुम ने मेरी वसिय्यत याद रखी तो मौत से ज़ियादा कोई चीज़ तुम्हें मह़बूब न होगी। मगर इसे कोई अपने इख़्तियार में नहीं ला सकता।"

(معرفة الصحابة، معرفة نسبة الصديق، ج ١، ص ٥٩، حلية الاولياء، ابوبكر الصديق، الحديث: ٨٣، ج ١، ص ٧١)

उम्मीद व ख़ौफ़ के दरमियान रहो

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "अगर आप ने मेरी वसिय्यत याद न रखी तो कोई चीज़ आप को मौत से ज़ियादा बुरी नज़र न आएगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने नर्मी के साथ सख़्ती भी रख दी है ताकि मोमिन उम्मीद और ख़ौफ़ के माबैन रहे। मैं जब अहले जन्नत का ज़िक्र करता हूं तो ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी के सबब येह ख़याल आता है कि मैं इन में से नहीं हूं और अहले जहन्नम का तज़्किरा कर के रह़मते इलाही के सबब येही तसव्वुर करता हूं कि मैं इन में से भी नहीं हूं। इस लिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अहले जन्नत का निहायत बेहतर सिफ़ात के साथ और अहले जहन्नम का बेह़द बुरे आ'माल के साथ तज़्किरा फ़रमाया है। जन्नतियों के कुछ गुनाह भी थे जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मिटा दिये और जहन्नमियों के पास नेकियां भी थीं जो ज़ाएअ़ हो गईं।" (تاريخ مدينة دمشق، ج ٣٠، ص ٤١٤)

सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म के ह़क़ में दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वसिय्यतें फ़रमाने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आ़लमे तन्हाई में परवर दगारे आ़लम के हु़ज़ूर दुआ़ के लिये अपने दोनों

www.dawateislami.net

हाथ उठा दिये और यूं दुआ की : "ऐ मेरे परवर दगार ! मैं ने इन लोगों से इन की बेहतरी और इस्लाह़ का इरादा किया है। ऐ मेरे मालिक ! मैं ने जब इन पर फ़ितना व आज़माइश के साया फ़िगन होने का ख़ौफ़ खाया तो इन में येही तदबीर क़ाइम करने की सई़ये जमील की जिसे तू औरों की ब निस्बत ब ख़ूबी जानने वाला है। ऐ मेरी जान के मालिक ! मैं ने इन के लिये इजतिहादे राए किया और अपनी दानिस्त के मुत़ाबिक़ इन पर इन्हीं में से बेहतर, क़वी और नेकी पर ह़रीस शख़्सिय्यत को निगरान बनाया है। ऐ मेरी ज़ीस्त (ज़िन्दगी) के मालिक ! तेरा अम्र यक़ीनी मेरे पास आ चुका। लिहाज़ा तू इन के दरमियान मेरा जा निशीन मुक़र्रर फ़रमा दे। येह तेरे ही तो बन्दे हैं। इन की पेशानियां तेरे दस्ते क़ुदरत में हैं। ऐ **अल्लाह** रब्बल इ़ज़्ज़त ! इन के हुक्मरानों की इस्लाह़ फ़रमा। ऐ रब्बल आ़लमीन ! मेरे वफ़ा शिआ़र दोस्त ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने ख़ुलफ़ाए राशिदीन में से बना और आप की ख़ात़िर आप की रुइय्यत को दुरुस्त फ़रमा।" आमीन (تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۴۱۱ تا ۴۱۲)

फ़िरासते सिद्दीक़े अक्बर

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि "**اَفْرَسُ النَّاسِ ثَلَاثَۃٌ** या'नी तीन शख़्सिय्यात पुख़्ता राए और फ़िरासत के मालिक हैं। इन में से एक ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं कि आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी फ़िरासत के ज़रीए़ ख़लीफ़ा मुक़र्रर फ़रमाया।"

(مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب المغازی، ماجاءفی خلافۃ عمر، الحدیث:۳، ج۸، ۵۷۵)

कामयाब और मुअस्सिर इन्तिज़ामी ढांचा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का एक त़रफ़ इराक़ और शाम के मह़ाज़ पर फ़ौजें भेजना तो दूसरी त़रफ़ माले ग़नीमत की तक़्सीम, बैतुल माल की तन्ज़ीम, उ़म्माले हुकूमत के तक़र्रुर और वसीअ़ अ़लाक़े तक फैली हुई सल्त़नत के इन्तिज़ामी उमूर में इन्हिमाक। बिल्कुल नई सल्त़नत में येह तमाम हमा

www.dawateislami.net

वक़्ती काम और हर आन मस्रूफ़िय्यत के त़ालिब थे और इस से भी अ़जीब तर बात येह थी कि ह़ालात भी बिल्कुल नए क़ालिब में ढल रहे थे, फिर जिन लोगों से सिलसिलए जंग शुरूअ़ था, एक तो उन की तहज़ीब से ना आश्नाई, न उन का सक़ाफ़त से कोई अ़लाक़ा, न उन की तमद्दुन से वाक़िफ़िय्यत और न ही उन की ज़बान से शनासाई थी कि उन के तमाम उमूर बिल्कुल नए और अ़रबों की मुआ़शरत से क़त़ई मुख़्तलिफ़ व मुतज़ाद थे। इन ह़ालात में मुल्क के इन्तिज़ामी मुआ़मलात को चलाना और इन को सह़ीह़ रुख़ पर रखना सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे ज़ीरक व फ़हीम शख़्स का काम ही हो सकता था। येह काम इन्हों ने जितनी थोड़ी मुद्दत में सर अन्जाम दिया कोई बड़े से बड़ा शख़्स इस से कहीं ज़ियादा मुद्दत में भी सर अन्जाम नहीं दे सकता था। इस की एक बड़ी वजह तो येह है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पूरे तेईस साल **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साथ रहे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दो क़ुर्बतें नसीब हुईं जो किसी और को नसीब न हुईं। नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ इन की सोह़बते रफ़ाक़त का ज़माना, ओ़हदए ख़िलाफ़त के कारनामों से कहीं ज़ियादा बाइसे बरकत व अहम्मिय्यत है। ख़िलाफ़त का ताजे ज़र्रीं भी तो इसी रफ़ाक़त की बिना पर आप के सरे मुबारक पर सजाया गया था और येही वोह सवा दो साल का मुख़्तसर तरीन ज़माना था, जिस में उस तेईस साला रफ़ाक़त के समरात का ज़ुहूर हुवा और जिस ने दुन्या की तारीख़ का रुख़ बिल्कुल बदल दिया और मुसलमानों की डगमगाती सुवारी को ला ज़वाल इर्तिक़ा की एक ऐसी शाहराह पर गामज़न कर दिया जिस को ग़ैरों ने भी मे'यार बनाया।

आप की ज़ात बहुत बड़ा मो'जिज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का दौरे हुकूमत बहुत ही क़लील मुद्दत रहा है लेकिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने इस दौरे हुकूमत में इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा से ले कर मुख़्तलिफ़ फ़ितनों की सरकोबी, फ़ुतूह़ाते शाम व इराक़, जम्ए क़ुरआन वग़ैरा बड़े बड़े मुआ़मलात को जिस खुश उस्लूबी से सर अन्जाम दिया इस से येही ज़ाहिर होता है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते मुबारका खुद प्यारे आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक बहुत बड़ा मो'जिज़ा थी। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा के जिस पहलू पर भी नज़र डालते हैं

www.dawateislami.net

इल्मो हिक्मत के बे शुमार अनमोल मदनी फूल चुनने को मिलते हैं, आप ही के अ़हद में इस्लामी फ़ौजी कुव्वत में बेहद इज़ाफ़ा हुवा, इस्लामी तहज़ीब की नश्वो नुमा हुई और किताब व सुन्नत की तरवीज व इशाअ़त के दाइरे वसीअ़ से वसीअ़ तर हुवे। आप की ह़याते त़य्यिबा के येह वोह अ़ज़ीम कारनामे हैं जिन से ग़ैरों के इलावा खुद मुसलमान भी इन्तिहाई मुतअ़ज्जिब थे, जो काम सालों में होना मुश्किल था वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सइये मुसलसल और तदबीर व दानिशमन्दी से चन्द महीनों में तक्मील की मन्ज़िल को पहुंच गया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत के इन ही पहलूओं को देखते हुवे दिल बे साख़्ता येह पुकार उठता है कि ऐसी प्यारी हस्ती जो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़लीफ़ा होने के साथ साथ लोगों की मोह़सिन भी हो, अपने तो अपने, ग़ैर भी जिस के अवसाफ़ की गवाही देते हों, ऐसी हस्ती के वुजूद से दुन्या क़ियामत तक मुस्तफ़ीज़ होती रहे। मगर आह ! मशिय्यते इलाही ही कुछ ऐसी है कि "كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ" या'नी हर जान को मौत का मज़ा चखना है। यक़ीनन काइनात को जिस हस्ती की ज़रूरत है वोह नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही की है लेकिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी दुन्या से वा'दए इलाही के मुत़ाबिक़ तशरीफ़ ले गए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के ख़लीफ़ा मुक़र्रर हुवे उन को भी इस दुन्या से रुख़्सत होना ही था। मा'रिकए अजनादीन जब वुक़ूअ़ पज़ीर हो रहा था उस वक़्त आप मरज़ुल मौत में मुब्तला हुवे और मा'रिके की फ़त्ह़ की ख़ुश ख़बरी जब क़ासिद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में लाया उस वक़्त आप पर नज़्अ़ की कैफ़िय्यत त़ारी थी। बिल आख़िर आख़िरी वसाया और अपने बा'द मुसलमानों के ख़लीफ़ा की नाम ज़दगी के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी 22 जुमादल उख़रा 13 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 22 अगस्त 634 ईसवी अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिले। (اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّآ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ)

बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का
है यारे ग़ार, मह़बूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

छटा बाब

विसाले सिद्दीके अक्बर

मरज़े वफ़ात, विसाले ज़ाहिरी, तजहीज़ो तक्फ़ीन, नमाज़े जनाज़ा, वसिय्यतें वग़ैरा

www.dawateislami.net

मरज़े वफ़ात और सिद्दीक़े अक्बर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात किस सबब से हुई इस बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं :

(1) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कोई क़ल्बी मरज़ लाहिक़ था और इसी के सबब आप का विसाल हुवा । (الرياض النضرة،ج ا ،ص ٢٥٨)

(2) उम्मुल मोअमिनीन सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मरज़ की इब्तिदा सर्दी में ग़ुस्ल करने के बाइस बुख़ार की शक्ल में हुई जो पन्दरह दिन मुतवातिर रहा इस दौरान आप नमाज़ भी न पढ़ा सके और सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपनी जगह इमामत के लिये मुक़र्रर फ़रमाया । लोग आप की इयादत के लिये आने लगे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दिन ब दिन बीमार होते गए । आप बीमारी में येह आयते मुबारका पढ़ते रहते थे : ﴿وَ جَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِیْدُ﴾(پ٢٦،ق:١٩) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ येह है जिस से तू भागता था ।" (المعارف لابن قتيبة، ص ٧٤، الرياض النضرة،ج ا ،ص ٢٥٨)

(3) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को खाने में ज़हर दिया गया था । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना हारिस बिन कल्दह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ज़ीरा (या'नी गोश्त और आटे से तय्यार किया जाने वाला) खाना खाया जो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तोहफ़े के तौर पर किसी ने भेजा था । इस के बा'द येह दोनों अ़लील रहने लगे और साल गुज़रने पर दोनों एक ही साथ दुन्या से तशरीफ़ ले गए । (أسد الغابة، عبدالله بن عثمان، وفاته، ج ٣، ص ٣٤٠)

तीनों अक़्वाल में मुताबक़त

इन अक़्वाल में तआ़रुज़ या'नी टकराव नहीं क्यूंकि हो सकता है वफ़ात शरीफ़ में तीनों अस्बाब जम्अ़ हो गए हों । (نزهة القاری، ج ٢، ص ٨٧٧)

www.dawateislami.net

हाए ज़लील दुन्या

इमाम हाकिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ब रिवायत इमाम शा'बी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : "इस दुन्याए दूं (या'नी ज़लील दुन्या) से हम भला क्या तवक़्क़ोअ़ रखें कि (इस में तो) रसूले खुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी ज़हर दिया गया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ए राशिद हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को भी।" (تاریخ الخلفاء، ص ۶۲)

दुन्या की मह़ब्बत अन्धी होती है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत्बूआ 64 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**आ़शिक़े अक्बर**" सफ़्ह़ा 42 पर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه तह़रीर फ़रमाते हैं :

"**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! वाक़ेई दुन्या की मह़ब्बत अन्धी होती है, इस ज़लील दुन्या की उल्फ़त की वजह से ही सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आ़शिक़े अक्बर सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को ज़हर दिया गया, जब काइनात की सब से बड़ी हस्ती या'नी ज़ाते नबवी को भी ज़लील दुन्या के ना मुराद कुत्तों ने ज़हर देने की नापाक साज़िश की तो अब और कौन है जो अपने आप को इस से मह़फ़ूज़ समझे ! लिहाज़ा बिल ख़ुसूस नामवर उ़लमा व मशाइख़ और मज़हबी पेश्वाओं को ज़ियादा मोह़तात़ रहने की ज़रूरत है। देखिये ना ! इसी कमीनी दुन्या के इ़श्क़ में मस्त हो कर किसी ना बकार ने सय्यिदुल अस्ख़िया, राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, नवासए रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को भी कई बार ज़हर दिया और आख़िर ज़हर ख़ूरानी ही वफ़ात का बाइ़स बनी। नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन बरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मूसा काज़िम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ली रज़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की वफ़ाते ह़सरत आयात का सबब भी ज़हर हुवा।

www.dawateislami.net

आप की वफ़ात का सबबे ह़क़ीक़ी

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इश्क़े रसूले बा कमाल व बे मिसाल की दौलते ला ज़वाल से किस क़दर माला माल थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के शबो रोज़ के अह़वाल, बीबी आमिना के लाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इश्क़े बे मिसाल का **मज़हरे अतम्म** (या'नी कामिल तरीन इज़्हार) हैं। उम्मी नबी, रसूले हाशिमी, मक्की मदनी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक ज़िन्दगी में सन्जीदगी ज़ियादा ग़ालिब आ गई और (तक़रीबन 2 साल 7 माह पर मुश्तमिल) अपनी बक़िय्या ज़िन्दगी के लैलो नहार (या'नी दिन रात) गुज़ारना इन्तिहाई दुश्वार हो गया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यादे सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में बे क़रार रहने लगे, चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : **كَانَ سَبَبُ مَوْتِ أَبِيْ بَكْرٍ مَوْتَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا زَالَ جِسْمُهُ يَجْرِيْ حَتّٰى مَاتَ** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का सबबे ह़क़ीक़ी नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाले ज़ाहिरी था। नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बदन मुसलसल घुलने लगा, और बिल आख़िर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी दुन्या से विसाल फ़रमा गए।"

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر مرض ابی بکر، الحدیث: ۴۴۶۲، ج۴، ص۶)

मर ही जाऊं मैं अगर इस दर से जाऊं दो क़दम
क्या बचे बीमारे ग़म क़ुर्बे मसीह़ा छोड़ कर

सिद्दीक़े अक्बर का ग़मे मुस्त़फ़ा

बारगाहे इलाही के मुक़र्रब और प्यारे दरबारे रिसालत के चमकते दमकते सितारे, सुल्ताने दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों के तारे, दुख्यारों के टूटे दिलों के सहारे ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरवरे काइनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाहिरी वफ़ात के मौक़अ़ पर ग़मे मुस्त़फ़ा में बे क़रार हो कर येह अश्आ़र कहे :

www.dawateislami.net

لَمَّا رَاَیْتُ نَبِیَّنَا مُتَجَدِّلاً

ضَاقَتْ عَلَیَّ بِعَرْضِهِنَّ الدُّوْر

तर्जमा : “जब मैं ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वफ़ात याफ़्ता देखा तो मकानात अपनी वुस्अ़त के बा वुजूद मुझ पर तंग हो गए।”

فَارْتَاعَ قَلْبِیْ عِنْدَ ذَاکَ لِھُلْکِهٖ

وَالْعَظْمُ مِنِّیْ مَا حَیِیْتُ کَسِیْر

तर्जमा : “उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात से मेरा दिल लरज़ उठा और ज़िन्दगी भर मेरी हड्डी शिकस्ता (या'नी टूटी हुई) रहेगी।”

فَارْتَاعَ قَلْبِیْ عِنْدَ ذَاکَ لِھُلْکِهٖ

وَالْعَظْمُ مِنِّیْ مَا حَیِیْتُ کَسِیْر

तर्जमा : “काश ! मैं अपने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल से पहले चट्टानों पर क़ब्र में दफ़्न कर दिया गया होता।” (المواھب اللدنیۃ، المقصد العاشر، الفصل الاول، فی اتمامہ۔۔۔الخ، ج۳، ص۳۹۴)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن दिवाने सालिक में ग़मे मुस्तफ़ा में इस त़रह़ के जज़्बात का इज़्हार करते हुवे फ़रमाते हैं :

जिन्हें ख़ल्क़ कहती है मुस्त़फ़ा, मेरा दिल उन्हीं पे निसार है
मेरे क़ल्ब में हैं वोह जल्वा गर कि मदीना जिन का दियार है
वोह झलक दिखा के चले गए मेरे दिल का चैन भी ले गए
मेरी रूह साथ न क्यूं गई ? मुझे अब तो ज़िन्दगी बार है
वोही मौत है वोही ज़िन्दगी, जो ख़ुदा नसीब करे मुझे
कि मरे तो उन ही के नाम पर, जो जिये तो उन पे निसार है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

काश ! हमें भी ग़मे मुस्तफ़ा नसीब हो !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़े शाहे बहूरो बर, राहे इ़श्क़ो मह़ब्बत के रहबर, आ़शिक़े अक्बर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपनी उल्फ़त व अ़क़ीदत का अश्आ़र में किस क़दर सोज़ो रिक़्क़त के साथ इज़्हार फ़रमाया है, काश ! सरवरे काइनात के वज़ीर व दिलबर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़मे मुस्त़फ़ा में बहने वाले पाकीज़ा आंसूओं के सदक़े हमें भी ग़मे मुस्त़फ़ा में रोने वाली आंखें नसीब हो जाएं ।

हिजरे रसूल में हमें या रब्बे मुस्त़फ़ा
ऐ काश ! फूट फूट के रोना नसीब हो

ख़्वाब में दीदारे मुस्त़फ़ा

आ़रिफ़ बिल्लाह ह़ज़रते अ़ल्लामा इमाम अ़ब्दुर्रह़मान जामी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने अपनी मश्हूर किताब "शवाहिदुन्नबुव्वह" में यारे ग़ार व यारे मज़ार, आ़शिक़े शहनशाहे अबरार ख़लीफ़ए अव्वल ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुबारक ज़िन्दगी के आख़िरी अय्याम का एक ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब नक़्ल किया है इस का कुछ ह़िस्सा बयान किया जाता है : चुनान्चे, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "एक दफ़्आ़ रात के आख़िरी ह़िस्से में मुझे ख़्वाब में दीदारे मुस्त़फ़ा की सआ़दत नसीब हुई, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो सफ़ेद कपडे़ ज़ेबे बदन फ़रमा रखे थे और मैं उन कपड़ों के दोनों किनारों को मिला रहा था, अचानक वोह दोनों कपडे़ सब्ज़ होना और चमकना शुरूअ़ हो गए, उन की दरख़्शानी व ताबानी (या'नी चमक दमक) आंखों को ख़ीरा (या'नी चका चौन्द) करने वाली थी, ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे "اَلسَّلَامُ عَلَیْکُم" कह कर मुसाफ़ह़ा (या'नी हाथ मिलाने) से मुशर्रफ़ फ़रमाया और अपना दस्ते मुक़द्दस मेरे सीनए पुरदर्द पर रख दिया जिस से मेरा इज़्तिराबे क़ल्बी (या'नी दिल का बे क़रार होना) दूर हो गया फिर

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! मुझे तुम से मिलने का बहुत इश्तियाक़ (या'नी ख़्वाहिश) है, क्या अभी वक़्त नहीं आया कि तुम मेरे पास आ जाओ ?" मैं ख़्वाब में बहुत रोया यहां तक कि मेरे अहले ख़ाना को भी मेरे रोने की ख़बर हो गई जिन्हों ने बेदार होने के बा'द मुझे ख़्वाब की इस गिर्या व ज़ारी से मुत्तलअ़ किया। (شواهد النبوة للجامی، ص ۱۹۹)

अपनी वफ़ात की त़रफ़ इशारा

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه बीमार हुवे तो लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की इयादत के लिये आए और अ़र्ज़ करने लगे : "क्या हम आप के लिये त़बीब न लाएं जो आप का मुआइना करे ?" आप ने फ़रमाया : "एक त़बीब ने मुझे देख लिया है।" लोगों ने पूछा : "उस ने आप के मरज़ के बारे में क्या कहा ?" आप ने फ़रमाया : "वोह कहता है : اِنِّیْ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ या'नी मैं जो चाहता हूं करता हूं।" (اسد الغابة، عبد اللہ بن عثمان، زهده وتواضعه وانفاقه، ج ۳، ص ۳۳۲)

मुराद येह थी कि ह़कीम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है, उस की मरज़ी को कोई नहीं टाल सकता, जो उस की मशिय्यत या'नी मरज़ी है वोह ज़रूर होगा, येह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का तवक्कुले सादिक़ था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه रिज़ाए ह़क़ पर राज़ी थे।

जान है इश्क़े मुस्त़फ़ा रोज़ फ़ुज़ूं करे ख़ुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा, नाज़े दवा उठाए क्यूं ?
मैं मरीज़े मुस्त़फ़ा हूं मुझे छेड़ो न त़बीबो !
मेरी ज़िन्दगी जो चाहो, मुझे ले चलो मदीना

दिल मेरा दुन्या पे शैदा हो गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़े साक़िये कौसर, अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर वाक़ेई मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आ़शिक़े अक्बर हैं। ग़मे हिजरे मुस्त़फ़ा व इश्क़े रसूले मुज्तबा में बीमार हो जाना आप के "**आ़शिक़े अक्बर**" होने की दलील है। दिल की कुढ़न और जलन का सबब सिर्फ़

www.dawateislami.net

महबूबे रब्बुल इबाद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद और इन का फ़िराक़ था और एक हम हैं कि हमारा दिल दुन्या की महब्बत, आ़रिज़ी हुस्नो जमाल और चन्द रोज़ा जाहो जलाल ही का शैदा है और इसी के लिये तड़पता, तरसता और नफ़्सानी ख़्वाहिशात पूरी न होने पर हसरत व यास से आहें भरता है।

दिल मेरा दुन्या पे शैदा हो गया
ऐ मेरे अल्लाह येह क्या हो गया
कुछ मेरे बचने की सूरत कीजिये
अब तो जो होना था मौला हो गया
ऐ़ब पोशे ख़ल्क़ दामन से तेरे
सब गुनहगारों का पर्दा हो गया

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ुस्ल देने की वसिय्यत

इन्तिक़ाल से क़ब्ल आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने वसिय्यत फ़रमाई थी कि आप को आप की ज़ौजा हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ग़ुस्ल दें। लिहाज़ा आप की वसिय्यत के मुताबिक़ बा'दे इन्तिक़ाल आप की ज़ौजा हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को ग़ुस्ल दिया। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़रज़न्द हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه और एक रिवायत के मुताबिक़ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के फ़रज़न्द हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अबी बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने पानी डाला। कफ़न पहनाने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को उसी मुबारक चारपाई पर लिटाया गया जिस पर दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आराम फ़रमाया करते थे। येह चारपाई हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की थी। येह 'साज' की लकड़ी से बनी हुई थी जिस पर रोग़न भी किया हुवा था। बा'द में जब हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की मीरास फ़रोख़्त हुई तो हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के आज़ाद कर्दा ग़ुलामों में से किसी ने इसे चार हज़ार दिरहम में ख़रीद कर लोगों की ज़ियारत के लिये वक़्फ़ कर दिया।"

(الریاض النضرۃ،ج۱،ص۲۵۸،تاریخ مدینۃ دمشق،ج۳۰،ص۴۴۴،۴۳۸)

www.dawateislami.net

महबूब से महब्बत का अनोखा अन्दाज़

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि जब मेरे वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो फ़रमाने लगे : "आज कौन सा दिन है ?" हम ने कहा : "आज पीर है।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल किस रोज़ हुवा था ?" हम ने कहा : "पीर के रोज़।" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं चाहता हूं कि आज रात तक दुन्या से रुख़्सत हो जाऊं।" (ताकि मेरे यौमे विसाल की अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के यौमे विसाल के साथ मुवाफ़क़त हो जाए) ब वक़्ते विसाल आप के जिस्मे मुबारक पर एक ही कपड़ा था जिस में सुर्ख़ मिट्टी के धब्बे थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "जब मैं रिह़लत कर जाऊं तो येह कपड़ा धो देना और दो कपड़े मज़ीद साथ मिला कर कफ़न तय्यार कर लेना। मैं ने अ़र्ज़ की : "येह तो पुराने कपड़े हैं ?" आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "नए कपड़े मय्यित के मुक़ाबले में ज़िन्दा के लिये ज़ियादा मुनासिब हैं।" चुनान्चे, पीर की रात आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हुवा और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सुब्ह़ होने से पहले दफ़्न कर दिया गया। (صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب موت یوم الاثنین، الحدیث:۱۳۸۷، ج۱، ص۴۶۸ ملتقطا)

पसन्दीदा दिन और रातें

हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का जब वक़्ते वफ़ात आया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "आज कौन सा दिन है ?" रुफ़क़ा ने जवाब दिया : "पीर का दिन।" तब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "فَاِنْ مِتُّ مِنْ لَیْلَتِی فَلَا تَنْتَظِرُوْا بِی لِغَدٍ فَاِنَّ اَحَبَّ الْاَیَّامِ وَاللَّیَالِی اِلَیَّ اَقْرَبُھَا مِنْ رَسُوْلِ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم" या'नी अगर मैं आज रात वफ़ात पा जाऊं तो मेरी तदफ़ीन में कल का इन्तिज़ार न करना। क्यूंकि मेरे नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा वोह दिन और रातें हैं जो मेरे महबूब आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ुर्बत में गुज़रें।" (مسند امام احمد، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث:۴۵، ج۱، ص۲۹، تاریخ الخلفاء، ص۶۳)

www.dawateislami.net

प्यारे आक़ा के कफ़न से मुताबक़त

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मेरे वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से दरयाफ़्त किया कि "तुम ने दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कितने कपड़ों में कफ़न दिया था ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तीन कपड़ों में कफ़न दिया गया था" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने नीचे बिछे हुवे कपड़े को देखा जिस में ज़ा'फ़रान या मुश्क के धब्बे थे, आप ने फ़रमाया : "इसे कफ़न में रख लेना और दो कपड़े मज़ीद शामिल कर लेना ।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص۲۵۷)

सिद्दीक़े अक्बर का कफ़न

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सफ़ेद कपड़ों में कफ़न दिया गया । चुनान्चे, हज़रते क़ासिम बिन मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का कफ़न सफ़ेद और रंगी हुई चादर का था ।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص۲۵۷)

सफ़रे आख़िरत में मुवाफ़क़त

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात ज़ह्र के औ़द करने (या'नी लौट आने) से हुई । (जो ज़ह्र ग़ज़्वए ख़ैबर के मौक़अ़ पर ज़ैनब बिन्ते ह़ारिस यहूदिय्या ने दिया था । (مدارج النبوۃ ج ۲ ص ۲۵۰) इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात उस वक़्त सांप का ज़ह्र लौट आने से हुई, जिस ने हिजरत की रात ग़ार में आप को डसा था । ह़ज़रते सिद्दीक़ को **फ़ना फ़िर्रसूल** का वोह दरजा ह़ासिल है कि आप की वफ़ात भी हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात का नुमूना है, पीर के दिन में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात और पीर का दिन गुज़ार कर शब में ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात के दिन शब को चराग़ में तेल न था, ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के वक़्त घर में कफ़न के लिये पैसे न थे । येह है फ़ना ।"

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8 स. 295)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ह़ज़रात ने रसूले अन्वर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मह़बूबे ह़बीबे दावर, आ़शिक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के आख़िरत के सफ़र में मुवाफ़क़त मुलाह़ज़ा फ़रमाई कि शाहे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के घर ब वक़्ते विसाल चराग़ में तेल न था, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जां निसार सिद्दीक़े ख़ुश ख़िसाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का ह़ाल येह था कि बे वफ़ा दुन्या की फ़ानी दौलत के पीछे भागने के बजाए सरमायए इ़श्क़ो मह़ब्बत को समेटा, अपने आप को तक्लीफ़ों में रखना गवारा किया और इसी ह़ालत को राह़ते हर दो सरा (या'नी दोनों जहां का सुकून) जाना।

जान है इ़श्क़े मुस्त़फ़ा रोज़ फ़ुज़ूं करे ख़ुदा
जिस को हो दर्द का मज़ा नाज़े दवा उठाए क्यूं ?

मा'लूम हुवा बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में साह़िबे क़द्रो मन्ज़िलत वोह नहीं जिस के पास मालो दौलत की कसरत है बल्कि साह़िबे शराफ़त व फ़ज़ीलत और ज़ियादा ज़ी इ़ज़्ज़त वोह है जो ज़ियादा तक़्वा व परहेज़गारी की दौलत से माला माल है जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पारह 26, सूरतुल ह़ुजुरात की आयत 13 में फ़रमाने इ़ज़्ज़त निशान है : ﴿اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है।"

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नज़्अ़ के वक़्त आप की कैफ़िय्यत

जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की रिह़लत का वक़्त क़रीब आया तो उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا आप के पास आईं। देखा कि आप पर नज़्अ़ की कैफ़िय्यत त़ारी है, इन्हों ने अपनी मौत को याद करते हुवे कहा : "आह जब एक रोज़ मुझ पर भी येही नज़्अ़ का आ़लम त़ारी होगा।" येह कहते हुवे आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا पर रिक़्क़त त़ारी हो गई। आप की येह कैफ़िय्यत देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मेरी बेटी ! इस के इ़लावा और क्या हो सकता है, **अल्लाह** का इरशाद है : ﴿وَ جَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और आई मौत की सख़्ती ह़क़ के साथ येह है जिस से तू भागता था।" (الرياض النضرة،ج۱،ص۱۵۰)

www.dawateislami.net

आख़िरी कलिमाते तृय्यिबा

हालते नज़्अ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान से जो कलिमात अदा हुवे वोह येह थे : "رَبِّ تَوَفَّنِیۡ مُسۡلِماً وَّاَلۡحِقۡنِیۡ بِالصّٰلِحِیۡنَ या'नी ऐ पाक परवर दगार ! मुझे इस्लाम पर मौत अ़ता फ़रमा और मुझे नेक लोगों के साथ मिला।" और कुछ देर बा'द ही आप दारुल फ़ना से दारुल बक़ा की त़रफ़ कूच फ़रमा गए। (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۲۵۸)

आप के वालिद के तअस्सुरात

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के वक़्त आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़ुह़ाफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मक्कए मुकर्रमा में ब क़ैदे ह़यात थे जब इन्हें इस सानिह़े की इत्तिलाअ़ मिली तो फ़रमाने लगे : "ब ख़ुदा येह बहुत बड़ा नुक़्सान है।" इस के बाद आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ छे माह और कुछ दिन ज़िन्दा रहे और मुह़र्रमुल ह़राम की चौदह तारीख़ (ब मुत़ाबिक़ 10 मार्च 635 ईसवी) को मक्कए मुकर्रमा में तक़रीबन 97 साल की उ़म्र में वफ़ात पा गए। (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۲۶۲)

सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा का तारीख़ी ख़ुत़्बा

ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन सफ़्वान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हुवा तो मदीने की फ़ज़ा में रन्जो ग़म के आसार थे, हर शख़्स शिद्दते ग़म से निढाल था, हर आंख से अश्क रवां थे, सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان पर इसी त़रह़ परेशानी के आसार थे जैसे हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त थे, सारा मदीना ग़म में डूबा हुवा था। फिर जब ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ग़ुस्ल देने के बा'द कफ़न पहनाया गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم तशरीफ़ लाए और कहने लगे : आज के दिन नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा हम से रुख़्सत हो गए। फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास खड़े हो गए और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के अवसाफ़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ऐ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

आप पर रह़्म फ़रमाए, आप **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बेहतरीन रफ़ीक़, अच्छे मुह़िब, बा ए'तिमाद रफ़ीक़ और मह़बूबे खुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के राज़ दां थे। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मश्वरा फ़रमाया करते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों में सब से पहले मोमिन, ईमान में सब से ज़ियादा मुख़्लिस, पुख़्ता यक़ीन रखने वाले और मुत्तक़ी व परहेज़गार थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दीन के मुआ़मलात में बहुत ज़ियादा सख़्ती और **अल्लाह** के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सब से ज़ियादा क़रीबी दोस्त थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सोह़बत सब से अच्छी थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मर्तबा सब से बुलन्द था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारे लिये बेहतरीन वासित़ा थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का अन्दाज़े ख़ैर ख़्वाही, दा'वत व तब्लीग़ का त़रीक़ा, शफ़्क़तें और अ़त़ाएं **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रह़ थीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बहुत ज़ियादा ख़िदमत गुज़ार थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और इस्लाम की ख़िदमत की बेहतरीन जज़ा अ़त़ा फ़रमाए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीने मतीन और नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बहुत ज़ियादा ख़िदमत की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत के शायाने शान आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जज़ा अ़त़ा फ़रमाए। जिस वक़्त लोगों ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को झुटलाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ फ़रमाई, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हर फ़रमान को ह़क़ व सच जाना और हर मुआ़मले में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ फ़रमाई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने करीम में आप को सिद्दीक़ का लक़ब अ़त़ा फ़रमाया, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

﴿وَالَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَ صَدَّقَ بِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ﴾(پ۲۴، الزمر:۳۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो येह सच ले कर तशरीफ़ लाए और वोह जिन्हों ने इन की तस्दीक़ की येही डर वाले हैं।

(इस आयत में صَدَّقَ بِهٖ से मुराद सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ या तमाम मोअमिनीन हैं)

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم ने मज़ीद फ़रमाया : ऐ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिस वक़्त लोगों ने बुख़्ल किया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सख़ावत की, लोगों ने मसाइब व आलाम में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साथ छोड़ दिया

www.dawateislami.net

लेकिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बते बा बरकत से बहुत ज़ियादा फ़ैज़याब हुवे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान तो येह है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को सानियसनैन का लक़ब मिला, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ यारे ग़ार हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर सकीना नाज़िल फ़रमाया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हिजरत फ़रमाई, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़ व अमीन और ख़लीफ़ा फ़िद्दीन थे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़िलाफ़त का ह़क़ अदा किया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुर्तद्दों से जिहाद किया, हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द लोगों के लिये सहारा बने, जब लोगों में उदासी और मायूसी फैलने लगी तो उस वक़्त भी आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़ौसले बुलन्द रहे। लोगों ने अपने इस्लाम को छुपाया लेकिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ईमान का इज़्हार किया, जब लोगों में कमज़ोरी आई तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को तक़्विय्यत बख़्शी, उन की ह़ौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई और उन्हें संभाला।

आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमेशा नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ की, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ए बरह़क़ थे, मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़ौसलों को पस्त न कर सके, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुफ़्फ़ार को ज़लील किया, बाग़ियों पर ख़ूब शिद्दत की, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन के लिये ग़ैज़ो ग़ज़ब का पहाड़ थे। लोगों ने दीनी उमूर में सुस्ती की लेकिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब ख़ुशी दीन पर अ़मल किया। लोगों ने ह़क़ बात से ख़ामोशी इख़्तियार की मगर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़लल ए'लान कलिमए ह़क़ कहा, जब लोग अन्धेरों में भटकने लगे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात उन के लिये मनारए नूर साबित हुई। उन्हों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ रुख़ किया और कामयाब हुवे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से ज़ियादा ज़हीनो फ़तीन, आ'ला किरदार के मालिक, सच्चे, ख़ामोश त़बीअ़त, दूर अन्देश, अच्छी राए के मालिक, बहादुर और सब से ज़ियादा पाकीज़ा ख़स्लत थे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम! जब लोगों ने दीने इस्लाम से दूरी इख़्तियार की तो सब से पहले आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही ने इस्लाम क़बूल किया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमानों के

www.dawateislami.net

सरदार थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों पर मुशफ़िक़ बाप की त़रह़ शफ़्क़तें फ़रमाईं, जिस बोझ से वोह लोग थक कर निढाल हो गए थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें सहारा देते हुवे वोह बोझ अपने कन्धों पर लाद लिया। जब लोगों ने बे परवाई का मुज़ाहरा किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ौम की बाग डोर संभाली, जिस चीज़ से लोग बे ख़बर थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे जानते थे और जब लोगों ने बे सब्री का मुज़ाहरा किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब्र से काम लिया। जो चीज़ लोग त़लब करते आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़त़ा फ़रमा देते। लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैरवी करते रहे और कामयाबी की त़रफ़ बढ़ते रहे। और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मश्वरों और ह़िक्मते अ़मली की वजह से उन्हें ऐसी ऐसी कामयाबियां अ़त़ा हुई जो उन लोगों के वहमो गुमान में भी न थीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब और मोमिनों के लिये रह़मत, शफ़्क़त और मह़फ़ूज़ क़ल्आ़ थे। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी मन्ज़िले मक़्सूद की त़रफ़ परवाज़ कर गए, और अपने मक़्सूद को पा लिया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए कभी ग़लत़ न हुई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी बुज़दिली का मुज़ाहरा न किया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत निडर थे, कभी भी न घबराते गोया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जज़्बों और हिम्मतों का ऐसा पहाड़ थे जिसे न तो आंधियां डगमगा सकीं न ही सख़्त गरज वाली बिजलियां मुतज़ल्ज़ल कर सकीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बिल्कुल ऐसे ही थे जैसे हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में फ़रमाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बदन के ए'तिबार से अगर्चे कमज़ोर थे लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन के मुआ़मले में बहुत ज़ियादा क़वी व मज़बूत़ थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने आप को बहुत आ़जिज़ समझते, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रुत्बा बहुत बुलन्द था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों की नज़रों में भी बहुत बा इ़ज़्ज़त व बा वक़ार थे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ता'रीफ़ करते हुवे मज़ीद फ़रमाया : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी किसी को ऐ़ब न लगाया, न किसी की ग़ीबत की और न ही कभी लालच की। बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों पर बहुत ज़ियादा शफ़ीक़ व मेहरबान थे, कमज़ोर व नातुवां लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़दीक मह़बूब और इ़ज़्ज़त वाले होते, अगर किसी मालदार और त़ाक़तवर शख़्स पर इन का ह़क़ होता तो

www.dawateislami.net

उन्हें ज़रूर उन का हक़ दिलवाते। ताक़त और शानो शौकत वालों से जब तक लोगों का हक़ न ले लेते वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक कमज़ोर होते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक अमीरो ग़रीब सब बराबर थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक लोगों में सब से ज़ियादा मुक़र्रब व महबूब वोह था जो सब से ज़ियादा मुत्तक़ी व परहेज़गार था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सिद्क़ व सच्चाई के पैकर थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़ैसला अटल होता, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत मज़बूत़ राए के मालिक और ह़लीम व बुर्दबार थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम सब से सबक़त ले गए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द वाले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुक़ाबला नहीं कर सकते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इन सब को पीछे छोड़ दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी मन्ज़िले मक़्सूद को पहुंच गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बहुत अ़ज़ीम कामयाबी ह़ासिल हुई, (ऐ यारे ग़ार !) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस शान से अपने अस्ली वत़न की त़रफ़ कूच किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़्मत के डंके आस्मानों में बज रहे हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जुदाई का ग़म सारी दुन्या को रुला रहा है। اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّآ اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ

हम हर ह़ाल में अपने रब के हर फ़ैसले पर राज़ी हैं, हर मुआ़मले में उस की इत़ाअ़त करने वाले हैं। ऐ सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जुदाई का ग़म मुसलमानों के लिये सब से बड़ा ग़म है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात अहले इस्लाम के लिये इ़ज़्ज़त का बाइ़स बनी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमानों के लिये बहुत बड़ा सहारा और जाए पनाह थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आख़िरी आराम गाह अपने प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कुर्ब में बनाई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ से अच्छा अज्र अ़त़ा फ़रमाए, और हमें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द सिराते़ मुस्तक़ीम पर साबित क़दम रखे। और गुमराही से बचाए।" (आमीन)

लोग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم का कलाम ख़ामोशी से सुनते रहे। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ामोशी इख़्तियार की तो लोगों ने ज़ारो क़ित़ार रोना शुरूअ़ कर दिया और सब ने बयक ज़बान हो कर कहा : "ऐ ह़ैदरे कर्रार ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिल्कुल सच फ़रमाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिल्कुल सच फ़रमाया।"

(الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۲۶۲ تا ۲۶۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर की नमाज़े जनाज़ा

चार तक्बीरों के साथ जनाज़ा

हज़रते अबू मुहम्मद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का चार तक्बीरों के साथ जनाज़ा पढ़ाया।" (الریاض النضرۃ،ج ١،ص ٢٥٨)

नमाज़े जनाज़ा कहां अदा की गई ?

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से पूछा गया : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की नमाज़े जनाज़ा कहां अदा की गई ?" आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुनव्वर और मिम्बर के दरमियान।" (الریاض النضرۃ،ج ١،ص ٢٥٨)

नमाज़े जनाज़ा किस ने अदा की ?

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से पूछा गया : "आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की नमाज़े जनाज़ा किस ने पढ़ाई।" इरशाद फ़रमाया : "हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने।" (الطبقات الکبریٰ لابن سعد، ذکر وصیۃ ابی بکر،ج ٣،ص ١٥٤، الریاض النضرۃ،ج ١،ص ٢٥٨)

लह़द में किस ने उतारा ?

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उमर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की तदफ़ीन में शरीक था, हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म, हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, हज़रते सय्यिदुना त़लहा बिन **उ़बैदुल्लाह** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने आप को लह़द में उतारा। (الطبقات الکبریٰ لابن سعد، ذکر وصیۃ ابی بکر،ج ٣،ص ١٥٦)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर की तदफ़ीन

किस वक़्त तदफ़ीन की गई ?

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को रात ही में ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हुजरे में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलू में दफ़्न किया गया।

(الطبقات الکبری لابن سعد، ذکر وصیة ابی بکر، ج٣، ص١٥٧، الریاض النضرة، ج١، ص٢٥٨)

रसूलुल्लाह के पहलू में तदफ़ीन

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को वसिय्यत फ़रमाई कि उन्हें हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलूए मुबारक में दफ़्न किया जाए। फिर जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र खोदी गई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सरे मुबारक **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कन्धे मुबारक के बराबर रहा और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की लह़द हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुनव्वर के बराबर मिला दी गई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्रे अन्वर में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब, ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) उतरे थे।

(تاریخ مدینة دمشق، ج٣٠، ص٤٤٧، تاریخ الخلفاء، ص٦٥)

या रसूलल्लाह !...अबू बक्र ह़ाज़िर है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़याते त़य्यिबा के आख़िरी लम्ह़ात में आप की बारगाह में ह़ाज़िर था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो मुझे भी उसी मुबारक बरतन से ग़ुस्ल देना जिस बरतन से

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को गुस्ल दिया गया था। फिर मुझे कफ़न दे कर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर की जानिब ले जाना और बारगाहे रिसालत से यूं इजाज़त त़लब करना : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللهِ! هٰذَا اَبُوْبَكْرٍ يَسْتَاْذِنُ या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर सलाम हो, अबू बक्र आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हैं और इजाज़त चाहते हैं। अगर रौज़ए अक़्दस का दरवाज़ा खुले तो मुझे उस में दफ़्न कर देना और अगर इजाज़त न मिले तो मुसलमानों के क़ब्रिस्तान (जन्नतुल बक़ीअ़) में दफ़्न कर देना।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि ''मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को गुस्ल व कफ़न के मुआ़मलात से फ़ारिग़ होने के बा'द आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की वसिय्यत के मुत़ाबिक़ रौज़ए मह़बूब के दरवाज़े पर ह़ाज़िर हुवा और रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में यूं अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अबू बक्र आप से इजाज़त के त़ालिब हैं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि जैसे ही मेरे अल्फ़ाज़ मुकम्मल हुवे तो मैं ने देखा कि रौज़ए **रसूलुल्लाह** का दरवाज़ा खुल गया और अन्दर से आवाज़ आई : اَدْخِلُوْا الْحَبِيْبَ اِلَى الْحَبِيْب या'नी मह़बूब को मह़बूब से मिला दो।'' चुनान्चे, आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पहलू में दफ़्ना दिया गया।

(الخصائص الکبرٰی، باب حیاتہ فی قبرہ۔۔الخ، ج۲،ص۲۹۲، السیرۃ الحلبیۃ، باب یذکر فیہ مدۃ مرضہ۔۔۔الخ، ج۳، ص۵۱۷،
السیرۃ الحلبیۃ، باب یذکر فیہ مدۃ مرضہ۔۔۔الخ، ج۳، ص۵۱۷، لسان المیزان، حرف العیص ۲۲۱)

तेरे क़दमों में जो हैं ग़ैर का मुंह क्या देखें
कौन नज़रों पे चढ़े देख के तलवा तेरा

सिद्दीक़े अक्बर ह़यातुन्नबी के क़ाइल थे

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़्बूआ़ 64 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले ''**आ़शिक़े अक्बर**'' सफ़्ह़ा 43 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार**

www.dawateislami.net

क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मज़्कूरए बाला रिवायत को ज़िक्र करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं : "**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो** ! ग़ौर फ़रमाइये ! अगर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़िन्दा न जानते तो हरगिज़ ऐसी वसिय्यत न फ़रमाते कि रौज़ए अक़्दस के सामने मेरा जनाज़ा रख कर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इजाज़त त़लब की जाए। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वसिय्यत की और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने उसे अ़मली जामा पहनाया, जिस से साबित होता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और तमाम सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) का येह अ़क़ीदा था कि मह़बूबे परवर दगार, शाहे आ़लम मदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बा'दे विसाल भी क़ब्रे अन्वर में ज़िन्दा व ह़यात और साह़िबे तसर्रुफ़ात व इख़्तियारात हैं।

तू ज़िन्दा है वल्लाह तू ज़िन्दा है वल्लाह
मेरे चश्मे आ़लम से छुप जाने वाले

अ़क़ीदए ह़यातुल अम्बिया

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ब अ़त़ाए रब्बुल अनाम तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ज़िन्दा हैं। चुनान्चे, "इब्ने माजा" की ह़दीसे पाक में है : "اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللّٰهِ حَيٌّ يُّرْزَقُ या'नी बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़राम किया है ज़मीन पर कि अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्मों को ख़राब करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ज़िन्दा हैं, रोज़ी दिये जाते हैं।"

(سنن ابن ماجة، کتاب الجنائز، ذکر وفاته ودفنه، الحديث: ١٦٣٧، ج٢، ص ٢٩١)

अम्बियाए किराम की क़ब्रों में नमाज़

ह़दीसे पाक में है : "اَلْاَنْبِيَاءُ اَحْيَاءٌ فِيْ قُبُوْرِهِمْ يُصَلُّوْنَ या'नी अम्बियाए किराम ह़यात हैं और अपनी अपनी क़ब्रों में नमाज़ पढ़ते हैं।"

(مسند ابی یعلی، ما اسند ثابت البنانی عن انس، الحديث: ٣٤١٢، ج٣، ص ٢١٦)

www.dawateislami.net

गुस्ताख़े रसूल से दूर रहो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ हर मुसलमान का वोही अ़क़ीदा होना ज़रूरी है जो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और अस्लाफ़े उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का था, अगर مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शैत़ान वस्वसे पैदा करने की कोशिश करे और अ़ज़मतो शाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ता'नाज़नी करते हुवे अ़क़्ली दलाइल से क़ाइल करने की नापाक कोशिश करे तो उस से अलग थलग हो जाइये जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 162 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"ईमान की पहचान"** सफ़ह़ा 58 पर आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن आ़शिक़ाने रसूल को ताकीद करते हुवे फ़रमाते हैं : "जब वोह (या'नी गुस्ताख़ाने रसूल) **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में गुस्ताख़ी करें अस्लन (या'नी बिल्कुल) तुम्हारे क़ल्ब में उन (गुस्ताख़ों) की अ़ज़मत, उन की मह़ब्बत का नामो निशान न रहे फ़ौरन उन (गुस्ताख़ों) से अलग हो जाओ, उन (लोगों) को दूध से मख्खी की त़रह़ निकाल कर फेंक दो, उन (बद बख़्तों) की सूरत, उन के नाम से नफ़रत खाओ फिर न तुम अपने रिश्ते, इलाक़े, दोस्ती, उल्फ़त का पास करो न उन की मौलविय्यत, मशैख़िय्यत, बुज़ुर्गी, फ़ज़ीलत को ख़त़रे (या'नी ख़ात़िर) में लाओ । आख़िर येह जो कुछ (रिश्ता व तअ़ल्लुक़) था, **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गुलामी की बिना पर था, जब येह शख़्स उन ही की शान में गुस्ताख़ हुवा फिर हमें उस से क्या इलाक़ा (तअ़ल्लुक़) रहा ?"

(ईमान की पहचान, स. 58)

उन्हें जाना उन्हें माना न रखा ग़ैर से काम
लिल्लाहिल ह़म्द मैं दुन्या से मुसलमान गया
उफ़ रे मुन्किर येह बढ़ा जोशे तअ़स्सुब आख़िर
भीड़ में हाथ से कम बख़्त के ईमान गया

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

गुस्ताख़े सहाबा से दूर रहो

हज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى **"शर्हुस्सुदूर"** में नक़्ल करते हैं : "एक शख़्स की मौत का वक़्त क़रीब आ गया तो उस से कलिमए तृय्यिबा पढ़ने के लिये कहा गया। उस ने जवाब दिया कि मैं इस के पढ़ने पर क़ादिर नहीं हूं क्यूंकि मैं ऐसे लोगों के साथ निशस्तो बरख़ास्त (या'नी उठना बैठना) रखता था जो मुझे सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) के बुरा भला कहने की तल्क़ीन करते थे।"

(شرح الصدور، باب مایقول الانسان فی مرض الموت، ص ۳۸)

क़ब्र में सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर का वसीला काम आ गया

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से शैख़ैने करीमैन या'नी सय्यिदुना सिद्दीक़ व फ़ारूक़ (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) की बुलन्द शानें मा'लूम हुईं, जब इन की तौहीन करने वालों से दोस्ती रखने का येह वबाल कि मरते वक़्त कलिमा नसीब नहीं हो रहा था तो फिर जो लोग ख़ुद तौहीन करते हैं उन का क्या ह़ाल होगा ! लिहाज़ा शैख़ैने करीमैन (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) के गुस्ताख़ों से दूर व नफ़ूर रहना ज़रूरी है। सिर्फ़ आशिक़ाने रसूल व मुहिब्बाने सहाबा व औलिया की सोहबत इख़्तियार कीजिये, इन अ़ज़ीम हस्तियों की उल्फ़त का दिया (या'नी चराग़) अपने दिल में रोशन कीजिये और दोनों जहां की भलाइयों के ह़क़दार बनिये। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों की महब्बत क़ब्रो ह़श्र में बेह़द कार आमद है। चुनान्चे, एक शख़्स का बयान है : "मेरे उस्ताज़ के एक साथी फ़ौत हो गए। उस्ताद साहिब ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : "مافَعَلَ اللهُ بِکَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला किया ?" जवाब दिया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी।" पूछा : "मुन्कर नकीर के साथ कैसी रही ?" जवाब दिया : "उन्हों ने मुझे बिठा कर जब सुवालात शुरूअ़ किये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे दिल में डाला और मैं ने फ़िरिश्तों से कह दिया : "सय्यिदुना अबू बक्र व फ़ारूक़ (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) के वासिते मुझे छोड़ दीजिये।" येह सुन कर एक फ़िरिश्ते ने दूसरे से कहा : "इस ने बड़ी बुज़ुर्ग हस्तियों का वसीला पेश किया है लिहाज़ा इस को छोड़ दो।" चुनान्चे, उन्हों ने मुझे छोड़ दिया और तशरीफ़ ले गए। (شرح الصدور، حدیث عائشۃ، ص ۱۴۱)

www.dawateislami.net

वासित़ा दिया जो आप का
मेरे सारे काम हो गए

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वक़्ते वफ़ात सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर की उ़म्र

दिन के ह़िसाब से 21 जुमादल उख़रा 13 सिने हिजरी ब मुत़ाबिक़ 22 अगस्त 634 ईसवी और रात के ह़िसाब से 22 जुमादल उख़रा ब मुत़ाबिक़ 23 अगस्त पीर और मंगल की दरमियानी रात मग़रिब व ईशा के दरमियान आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात हुई। वफ़ात के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उ़म्र तिरसठ साल थी। गोया नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़लीफ़ा बनने के बा'द जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र को पहुंचे तो आप भी दुन्या से तशरीफ़ ले गए।

(المعجم الکبیر، سن ابی بکر وخطبته، ج ۱، ص ۶۱، الطبقات الکبری لابن سعد، ذکر وصیة ابی بکر، ج ۳، ص ۱۵۱، السنن الکبری للبیھقی، کتاب الجنائز، باب غسل المراۃ زوجھا، الحدیث: ۶۶۶۳، ج ۳، ص ۵۵۷)

कलिमए त़य्यिबा पढ़ कर जन्नत में दाख़िला

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने उन्हें ख़्वाब में देख कर अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप दुन्या में अपनी ज़बान के बारे में हमेशा फ़रमाया करते थे कि इस ने मुझे हलाकतों में डाल रखा है तो मौत के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ?" इरशाद फ़रमाया : "मैं ने इसी ज़बान के साथ कलिमए त़य्यिबा पढ़ा पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया।" (احیاء العلوم، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، بیان منامات تکشف۔۔۔الخ، ج ۵، ص ۲۶۴)

आप की मुद्दते ख़िलाफ़त

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की विलादत आ़मुल फ़ील के तक़रीबन दो साल, चार माह बा'द हुई और आप की मुद्दते ख़िलाफ़त, दो साल तीन माह और दस दिन थी और ब क़ौले बा'ज़ दो साल तीन माह 26 दिन थी और ब क़ौले बा'ज़ दो साल, तीन माह और सात दिन थी।

www.dawateislami.net

हज़रते इब्ने इस्हाक़ رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिह्लत से ठीक दो साल तीन माह और बारह दिन और ब क़ौले बा'ज़ दस या बीस दिन बा'द आप की वफ़ात हुई।"

(الطبقات الکبری لابن سعد، ذکر وصیۃ ابی بکر، ج۳، ص ۱۵۱، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۲۶۱)

अल्लाह आप को हमेशा सुर्ख़ रू रखे

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुहम्मद رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत करते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने वालिदे गिरामी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्रे अन्वर के क़रीब से गुज़रीं तो यूं अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : "ऐ बाबा जान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को हमेशा सुर्ख़ रू रखे और आप की नेक कोशिशें क़बूल फ़रमाए। आप ने दुन्या से ए'राज़ कर के इसे ज़लील और आख़िरत की तरफ़ रुजूअ़ कर के उसे मुअ़ज़्ज़ज़ बना दिया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द आप की कमी एक बड़ा सदमा और आप का दुन्या से जाना एक अ़ज़ीम हादिसा है। आप की जगह हिदायत के लिये कुरआन मौजूद है येही हमारे लिये सब्र की बड़ी वजह है। इस लिये मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से आप की वफ़ात के सदमे का अज्र सब्र के ज़रीए हासिल करूंगी और आप के लिये दुआए मग़फ़िरत करती रहूंगी। فَاِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ وَعَلَیْکَ السَّلَامُ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ आप की जुदाई हमारे लिये बाइसे मसर्रत नहीं न हमें इस पर तक़्दीर से कोई गिला है।" (معجم ابی یعلی، باب الالف، الحدیث: ۸۶، ج ۱، ص ۸۹)

रोज़े महशर मज़ारात मुनव्वर से बाहर आने का हसीन मन्ज़र

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 568 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत**" सफ़्हा 61 पर इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن बयान फ़रमाते हैं : "एक मरतबा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दाहिने (या'नी सीधे)

www.dawateislami.net

दस्ते अक़्दस में ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ लिया और बाएं (या'नी उल्टे) दस्ते मुबारक में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ लिया और फ़रमाया : "هٰكَذَا نُبْعَثُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ या'नी हम क़ियामत के रोज़ यूं ही उठाए जाएंगे।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی بکر وعمر، الحدیث: ۳۶۸۹، ج۵، ص ۳۷۸، تاریخ مدینة دمشق، ج ۲۱، ص ۲۹۷)

महबूबे रब्बे अ़र्श है इस सब्ज़ कु़ब्बे में
पहलू में जल्वा गाह अ़तीक़ो उ़मर की है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

राहे ख़ुदा में आने वाली मुश्किलात का सामना कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे रहबर ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यक़ीनन आ़शिक़े अक्बर हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने इ़श्क़ का इज़्हार अ़मल व किरदार से किया और जब इ़श्क़ की राह, पुर ख़ार और सख़्त दुश्वार गुज़ार हुई तब भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जज़्बए इ़श्क़े शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सरशार रहे, ख़त़ीबे अव्वल का शरफ़ पाते हुवे दीने इस्लाम की ख़ात़िर शदीद तकालीफ़ बरदाश्त करने के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पाए इस्तिक़्लाल में ज़र्रा भर भी लग़्ज़िश न आई। राहे ख़ुदा में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस मुश्किलात भरी ह़यात में हमारे लिये येह दर्स है कि '**नेकी की दा'वत**' की राहों में ख़्वाह कैसे ही मसाइब का सामना हो मगर पीछे हटना कुजा इस का ख़याल भी दिल में न आने पाए।

जब आक़ा आख़िरी वक़्त आए, मेरा सर हो तेरा बाबे करम हो
सदा करता रहूं सुन्नत की ख़िदमत, मेरा जज़्बा किसी सूरत न कम हो

ग़मे दुन्या में नहीं ग़मे मुस्त़फ़ा में रोएं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़श्क़ो मह़ब्बत भरी मुबारक ज़िन्दगी से हमें येह भी दर्स मिलता है कि हमारी आहें और सिस्कियां दुन्या की ख़ात़िर न हों, मह़ब्बते दुन्या में आंसू न बहें, दुन्यवी जाहो ह़श्मत (या'नी शानो शौकत) के

www.dawateislami.net

लिये सीने में कसक पैदा न हो बल्कि हमारे दिल की ह़सरत, हुब्बे नबी हो, आंसू यादे मुस्त़फ़ा में बहें, दुन्या के दीवाने नहीं बल्कि शम्ए रिसालत के परवाने बनें, उन्ही की पसन्द पर अपनी पसन्द क़ुरबान करें और येही ख़्वाहिश हो कि काश ! मेरा माल, मेरी जान मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आन पर क़ुरबान हो जाए, उन से निस्बत रखने वाली हर चीज़ दिल अ़ज़ीज़ हो, जो ख़ुश बख़्त ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारने में कामयाब हो गया तो **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस के लिये दुन्या मुसख़्ख़र और मख़्लूक़ को उस के ताबेअ़ कर देगा, आस्मानों में उस के चर्चे होंगे और सब से बढ़ कर येह कि वोह ख़ुदा व मुस्त़फ़ा का मह़बूब बन जाएगा।

वोह कि इस दर का हुवा ख़ल्क़े ख़ुदा उस की हुई
*वोह कि इस दर से फिरा **अल्लाह** उस से फिर गया*

लेकिन अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! आज के मुसलमानों की अक्सरिय्यत शाहे अबरार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के उस्वए ह़सना को अपना मे'यार बनाने के बजाए अग़्यार के शिआ़र और फ़ेशन पर निसार हो कर ज़लीलो ख़्वार होती जा रही है।

कौन है तारिके आईने रसूले मुख़्तार
मस्लह़त, वक़्त की है किस के अ़मल का मे'यार
किस की आंखों में समाया है शिआ़रे अग़्यार
हो गई किस की निगह त़र्ज़े सलफ़ से बेज़ार
क़ल्ब में सोज़ नहीं, रूह़ में एह़सास नहीं
कुछ भी पैग़ामे मुह़म्मद का तुम्हें पास नहीं

येह कैसा इ़श्क़ और कैसी मह़ब्बत है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो लोग अपने वालिदैन से मह़ब्बत करते हैं वोह उन का दिल नहीं दुखाते, जिन्हें अपने बच्चे से मह़ब्बत होती है वोह उसे नाराज़ नहीं होने देते, कोई भी अपने दोस्त को ग़मज़दा देखना गवारा नहीं करता क्यूंकि जिस से मह़ब्बत होती है

www.dawateislami.net

उसे रन्जीदा नहीं किया जाता मगर आह ! आज के अक्सर मुसलमान जो कि इश्के़ रसूल के दा'वेदार हैं मगर उन के काम महबूबे रब्बुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को शाद करने वाले नहीं, सुनो सुनो रसूले ज़ी वक़ार, दो आलम के ताजदार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''جُعِلَتْ قُرَّةُ عَيْنِي فِي الصَّلٰوةِ या'नी मेरी आंखों की ठन्डक नमाज़ में है।''

(المعجم الکبیر، زیادہ بن علاقۃ عن المغیرۃ، الحدیث: ۱۰۱۲، ج۲۰، ص۴۲۰)

वोह कैसे आशिक़े रसूल हैं जो कि नमाज़ से जी चुरा कर, नमाज़ जान बूझ कर क़ज़ा कर के सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ल्बे पुर अन्वार के लिये तक्लीफ़ व आज़ार का सबब बनते हैं। येह कौन सी महब्बत और कैसा इश्क़ है कि रसूले रफ़ीउश्शान, मदीने के सुल्तान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم माहे रमज़ान के रोज़ों की ताकीद फ़रमाएं मगर खुद को आशिक़ाने रसूल में खपाने वाले इस हुक्मे वाला से रू गर्दानी कर के नाराज़िये मुस्तफ़ा का सबब बनें। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़े तरावीह़ की ताकीद फ़रमाएं मगर सुस्त व ग़ाफ़िल उम्मतियों से न पढ़ी जाए, पढ़ें भी तो रस्मन माहे रमज़ान के इब्तिदाई चन्द दिन और फिर येह समझ बैठें कि पूरे रमज़ानुल मुबारक की नमाज़े तरावीह़ अदा हो गई। प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाएं : ''मूंछें ख़ूब पस्त (या'नी छोटी) करो और दाढ़ियों को मुआफ़ी दो (या'नी बढ़ाओ), यहूदियों की सी सूरत न बनाओ।''

(شرح معانی الآثار للطحاوی، کتاب الکراھۃ، باب حلق الشارب، الحدیث: ۶۴۲۲، ج۴، ص۲۸)

मगर इश्के़ रसूल के दा'वेदार और फ़ेशन के परस्तार दुश्मनाने सरकार जैसा चेहरा बनाएं, क्या येही इश्के़ रसूल है ?

सरकार का आशिक़ भी क्या दाढ़ी मुन्डाता है ?
क्यूं इश्क़ का चेहरे से इज़्हार नहीं होता ?

फ़िक्रे मदीना कीजिये ! **येह कैसा इश्क़ और कैसी महब्बत है** ? कि महबूबे खुश ख़िसाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुश्मनों जैसी शक्लो सूरत व चाल ढाल अपनाने में फ़ख़्र महसूस किया जाए !

वज़्अ में तुम हो नसारा तो तमद्दुन में हुनूद
येह मुसलमां हैं जिन्हें देख के शर्माएं यहूद

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मोह्सिन व करीम और शफ़ीक़ व रहीम आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो हमें हमेशा याद फ़रमाते रहे, बल्कि दुन्या में तशरीफ़ लाते ही आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सजदा किया। उस वक़्त होंटों पर येह दुआ़ जारी थी : "رَبِّ هَبْ لِیْ اُمَّتِیْ या'नी परवर दगार ! मेरी उम्मत मुझे हिबा कर दे।" (فتاوی رضویہ، ج۳۰، ص۷۱۷)

पहले सजदे पे रोज़े अज़ल से दुरूद
यादगारिये उम्मत पे लाखों सलाम

ता क़ियामत 'उम्मती उम्मती' फ़रमाएंगे

मदारिजुन्नबुव्वह जि. 2, सफ़हा 442 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुसम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه वोह शख़्स थे जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ब्रे अन्वर में उतारने के बा'द सब से आख़िर में बाहर आए थे, चुनान्चे, इन का बयान है कि मैं ही आख़िरी शख़्स हूं जिस ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का रूए मुनव्वर, क़ब्रे अत़हर में देखा था, मैं ने देखा कि सुल्त़ाने मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लब्हाए मुबारका जुम्बिश फ़रमा रहे थे (या'नी मुबारक होंट हिल रहे थे) मैं ने अपने कानों को प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दहन (या'नी मुंह) मुबारक के क़रीब किया तो मैं ने सुना कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते थे : ربِّ اُمَّتِی اُمَّتِی (या'नी परवर दगार ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत) नीज़ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "जब मेरी वफ़ात हो जाएगी तो अपनी क़ब्र में हमेशा पुकारता रहूंगा : یا ربِّ اُمَّتِی اُمَّتِی या'नी ऐ परवर दगार ! मेरी उम्मत मेरी उम्मत। यहां तक कि दूसरा सूर फूंका जाए।"

(کنزالعمال، کتاب القیامۃ، الشفاعۃ، الحدیث:۳۹۱۰۸، ج۷، الجزء:۱۴، ص۱۷۸، مدارج النبوۃ، ج۲، ص۴۴۲)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत अपने लिये ईमान की ह़िफ़ाज़त की ख़ैरात त़लब करते हुवे बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं :

जिन्हें मर्क़द में ता ह़श्र उम्मती कह कर पुकारोगे
हमें भी याद कर लो उन में सदक़ा अपनी रह़मत का

www.dawateislami.net

मुहद्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान का फ़रमान

मुहद्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सरदार अह़मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد फ़रमाया करते थे कि हुज़ूरे पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो सारी उ़म्र हमें **उम्मती उम्मती** कह कर याद फ़रमाते रहे, क़ब्रे अन्वर में भी **उम्मती उम्मती** फ़रमा रहे हैं और ह़श्र तक फ़रमाते रहेंगे यहां तक कि मह़शर के रोज़ भी **उम्मती उम्मती** फ़रमाएंगे। ह़क़ येह है कि अगर सिर्फ़ एक बार भी **उम्मती** फ़रमा देते और हम सारी ज़िन्दगी **''या नबी या नबी, या रसूलल्लाह, या ह़बीबल्लाह''** कहते रहें तब भी उस एक बार **उम्मती** कहने का ह़क़ अदा नहीं हो सकता।

जिन के लब पर रहा ''उम्मती उम्मती''
याद उन की न भूल ऐ नियाज़ी कभी
वोह कहें उम्मती तू भी कह या नबी
मैं हूं ह़ाज़िर तेरी चाकरी के लिये

रोज़े क़ियामत फ़िक्रे उम्मत का अन्दाज़

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, हुज़ूर शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''क़ियामत के दिन तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सोने के मिम्बरों पर जल्वा गर होंगे, मेरा मिम्बर ख़ाली होगा क्यूंकि मैं अपने रब के हुज़ूर ख़ामोश खड़ा होऊंगा कि कहीं ऐसा न हो **अल्लाह** मुझे जन्नत में जाने का हुक्म फ़रमा दे और मेरी उम्मत मेरे बा'द परेशान फिरती रहे। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : ऐ मह़बूब ! तेरी उम्मत के बारे में वोही फ़ैसला करूंगा जो तेरी चाहत है। मैं अ़र्ज़ करूंगा : اَللّٰهُمَّ عَجِّلْ حِسَابَهُمْ या'नी ऐ **अल्लाह** ! इन का ह़िसाब जल्दी ले ले (कि मैं इन को साथ ले कर जाना चाहता हूं) येह मुसलसल अ़र्ज़ करता रहूंगा यहां तक कि मुझे दोज़ख़ में जाने वाले मेरे उम्मतियों की फे़हरिस्त दे दी जाएगी (जो जहन्नम में दाख़िल हो चुके होंगे उन की शफ़ाअ़त कर के मैं उन्हें निकालता जाऊंगा) यूं अ़ज़ाबे इलाही के लिये मेरी उम्मत का कोई फ़र्द न बचेगा।''

(كنزالعمال، كتاب القيامة، الشفاعة، الحديث: ٣٩١١١، ج٧، الجزء: ١٤، ص ١٧٨)

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा
रो रो के मुस्त़फ़ा ने दरया बहा दिये हैं

www.dawateislami.net

ऐ आशिक़ाने रसूल ! उम्मत के ग़म ख़्वार आक़ा के क़दमों पर निसार हो जाइये और ज़िन्दगी उन की ग़ुलामी बल्कि उन के ग़ुलामों की ग़ुलामी और दा'वते इस्लामी और इस के मदनी क़ाफ़िलों के अन्दर सफ़र में गुज़ार कर मरने के बा'द की शफ़ाअ़त के ह़क़दार हो जाइये और अपना मुंह बरोज़े क़ियामत नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दिखाने के क़ाबिल बना लीजिये या'नी यहूदो नसारा की सी शक्लो सूरत बनानी छोड़ दीजिये, अपने चेहरे पर एक मुठ्ठी दाढ़ी सजा लीजिये, अंग्रेज़ी बालों के बजाए ज़ुल्फ़ें रख लीजिये और नंगे सर घूमने के बजाए सब्ज़ इमामा शरीफ़ के ज़रीए़ अपना सर "सर सब्ज़" कर लीजिये बस अपने ज़ाहिरो बात़िन पर मदनी रंग चढ़ा लीजिये ।

डर था कि इस्यां की सज़ा अब होगी या रोज़े जज़ा
दी उन की रह़मत ने सदा येह भी नहीं वोह भी नहीं

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अल ह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن हमें समझाते हुवे फ़रमाते हैं :

जो न भूला हम ग़रीबों को रज़ा
याद उस की अपनी आ़दत कीजिये

काश ! हम पक्के आ़शिक़े रसूल बन जाएं

ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के क़दमों की धूल के सदक़े काश ! हम भी सच्चे और पक्के आ़शिक़े रसूल बन जाएं । काश हमारा उठना बैठना, चलना फिरना, खाना पीना, सोना जागना, लेना देना, जीना मरना मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ हो जाए । ऐ काश !

फ़ना इतना तो हो जाऊं मैं तेरी ज़ाते आ़ली में
जो मुझ को देख ले उस को तेरा दीदार हो जाए

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने अन्दर इश्क़े ह़क़ीक़ी की शम्अ़ रोशन करने के लिये तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये और अपने यहां होने वाले हफ़्तावार दा'वते इस्लामी के इजतिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाते रहिये और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कर के फ़िक्रे मदीना करते हुवे रोज़ाना मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार इस्लामी भाई को जम्अ़ करवाते रहिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बेड़ा पार होगा। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी का बच्चा बच्चा **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, तमाम सह़ाबए किराम, अहले बैते उ़ज़्ज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم, औलियाए किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی की ग़ुलामी पर नाज़ां है, जब येह ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा इख़्लास के साथ आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कर के नेकी की दा'वत देते हैं तो बसा अवक़ात कुफ़्फ़ार दामने इस्लाम में आ जाते हैं। चुनान्चे, ख़ानपुर (पन्जाब) के एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी का बयान है कि बाबुल मदीना कराची से सुन्नतों की तर्बिय्यत ह़ासिल करने के लिये तशरीफ़ लाए हुवे मदनी क़ाफ़िले के साथ मुझे भी अ़लाक़ाई दौरा करने का शरफ़ ह़ासिल हुवा। एक दरज़ी की दुकान के बाहर लोगों को इकठ्ठा कर के हम "नेकी की दा'वत" दे रहे थे। जब बयान ख़त्म हुवा तो उसी दुकान के एक मुलाज़िम नौजवान ने कहा : "मैं ईसाई हूं। आप ह़ज़रात की नेकी की दा'वत ने मेरे दिल पर गहरा असर किया है। मेहरबानी फ़रमा कर मुझे इस्लाम में दाख़िल कर लीजिये।" اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह मुसलमान हो गया।"

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सातवां बाब

तफ़्सीर व अहादीस

आप से मन्कूल तफ़्सीरे क़ुरआन व मरवी मुख़्तलिफ़ अहादीसे मुबारका

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर और क़ुरआने पाक की तफ़्सीर

बयाने तफ़्सीर में ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वोह जां निसार सहाबी हैं जो सफ़र व हज़र हर जगह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ साथ ही रहे और यक़ीनन क़ुरआने पाक का नुज़ूल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने ही हुवा और किसी आयत के नुज़ूल के बा'द **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इस की तफ़्सीर बयान करना भी आप से पोशीदा नहीं था लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ख़ौफ़े ख़ुदा का ऐसा ग़लबा था कि कभी भी बिग़ैर इल्म के क़ुरआने पाक की किसी भी आयत का मा'ना बयान करने से सख़्त घबराते। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू क़ासिम बग़वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मलीका رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत किया है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से किसी आयत के बारे में पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "कौन सी ज़मीन मुझे जगह देगी या कौन सा आस्मान मुझे साया देगा जब मैं **किताबुल्लाह** की तफ़्सीर में वोह कहूं जो **अल्लाह तआला** की मन्शा के ख़िलाफ़ हो।"

बिग़ैर इल्म के तफ़्सीर करना

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत किया है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से **अल्लाह** तआला के इस फ़रमान : ﴿وَّ فَاكِهَةً وَّ اَبًّا ۝﴾ (پ۳۰، العبس: ۳۱) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और मेवे और दूब (घास)।" के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया : "कौन सा आस्मान मुझे साया देगा और कौन सी ज़मीन मुझे उठा लेगी अगर मैं **किताबुल्लाह** में वोह शै कहूं जो मैं नहीं जानता।"

www.dawateislami.net

लफ़्ज़े "كَلَالَة" की तफ़्सीर

इमाम बैहक़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और दीगर अफ़राद ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत की है कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से "كَلَالَة" के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "मैं इस का मा'ना बयान करता हूं, अगर दुरुस्त हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से होगा और अगर इस में ख़त़ा हुई तो मेरी और शैत़ान की त़रफ़ से है।" फिर इरशाद फ़रमाया : "كَلَالَة" उस शख़्स को कहते हैं जिस की अवलाद और बाप न हो।"

दो आयतों की तफ़्सीर

इमाम अबू नुऐ़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने "ह़िल्या" में ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद बिन हिलाल رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत की है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपने रुफ़क़ा से इन दोनों आयतों की तफ़्सीर पूछी : ﴿اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا﴾ (پ۲۴، حم السجدة:۳۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "बेशक वोह जिन्हों ने कहा हमारा रब **अल्लाह** है फिर इस पर क़ाइम रहे।" ﴿اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ لَمْ يَلْبِسُوْۤا اِيْمَانَهُمْ﴾ (پ۷، الانعام:۸۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "वोह जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी नाह़क़ की आमेज़िश न की।"

आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के रुफ़क़ा ने अ़र्ज़ किया : "पहली आयते मुबारका की तफ़्सीर येह है कि फिर जब उन्हों ने साबित क़दमी दिखाई और गुनाह न किये। दूसरी आयते मुबारका की तफ़्सीर येह है कि और अपने ईमान को ग़लत़ी में ख़ल्त़ मल्त़ न किया।" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "तुम लोगों ने इन दोनों की तफ़्सीर को ग़ैर मह़ल पर मह़मूल कर दिया।" फिर दोनों आयात की तफ़्सीर करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "उन्हों ने कहा हमारा रब **अल्लाह** है, फिर इस पर साबित क़दमी दिखाई या'नी उस के ग़ैर की त़रफ़ मुतवज्जेह न हुवे और अपने ईमान को शिर्क से आलूदा न किया।"

www.dawateislami.net

एक और आयते करीमा की तफ़्सीर

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़रीर त़बरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपनी तफ़्सीर में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से इस आयत : ﴿لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَ زِيَادَةٌ﴾ (پ۱۱، یونس:۲۶) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी ज़ाइद।" की तफ़्सीर यूं नक़्ल फ़रमाई : "**अल्लाह** तआ़ला के जमाले जहां आरा की ज़ियारत करना।"

(ماخوذ از تاریخ الخلفاء، ص ۷۴)

हर अ़मल का बदला दिया जाएगा

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने बारगाहे नबवी में अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस आयते करीमा के बा'द हम किसी अज्र की उम्मीद रखें ? जब कि हमें अपने हर अ़मल का बदला दिया जाएगा : ﴿لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَ لَاۤ اَمَانِيِّ اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ﴾ (پ۵، النساء:۱۲۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "काम न कुछ तुम्हारे ख़यालों पर है और न किताब वालों की हवस पर जो बुराई करेगा इस का बदला पाएगा।" तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए, क्या तुम बीमार नहीं होते ? क्या तुम तंगदस्ती में मुब्तला नहीं होते ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "क्यूं नहीं ?" फ़रमाया : "येही वोह जज़ा है जो तुम्हें दी जाती है।" (الترغیب والترهیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر...الخ، الرقم:۵۲۶۲، ج۴، ص ۱۴۴)

या इलाही ! रह़्म फ़रमा, ख़ादिमे सिद्दीक़े अक्बर हूं
तेरी रह़मत के सदक़े, वासित़ा सिद्दीक़े अक्बर का

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर से मरवी अहादीस

हज़रते इमाम अबू ज़करिय्या यह्या बिन शरफ़ नववी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इरशाद फ़रमाते हैं कि : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से (कमो बेश) 142 अहादीस रिवायत की हैं। हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते गिरामी की सोहबत और दाइमी रफ़ाक़त के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की क़िल्लते रिवायत का सबब येह है कि इशाअ़ते हदीस, समाअ़ते हदीस, तह़सीले ह़दीस और हिफ़्ज़े ह़दीस में ताबेईन के कमाले ज़ौक़ो शौक़ से क़ब्ल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه इन्तिक़ाल फ़रमा गए।" (تهذیب الاسماء واللغات للنووی، النوع الثانی الکنی، باب ابی بکر، ج ۲، ص ۴۷۳)

सुन्नते रसूल के जय्यिद आ़लिम

हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने क़ज़िय्यए बैअ़त के वक़्त सराहत से (खुल कर) बयान फ़रमा दिया था कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने वोह आयात जो अन्सारे किराम के ह़क़ में नाज़िल हुईं या रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की शानो अ़ज़्मत के बारे में जो ज़िक्र फ़रमा दिया था, इन्हें तफ़्सील से बयान कर दिया है। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का येह वज़ाह़ती बयान इस बात का बय्यिन सुबूत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه सुन्नते रसूल के जय्यिद आ़लिम और क़ुरआने पाक का वसीअ़ इल्म रखने वाले थे। (تاریخ الخلفاء، ص ۲۶)

आप से रिवायत करने वाले सहाबा व सहाबिय्यात

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से सहाबए किराम व ताबेईने उ़ज़्ज़ाम दोनों त़बक़ात ने अहादीस रिवायत की हैं, सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان व सहाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ के अस्मा येह हैं :

www.dawateislami.net

(1)......ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(2)......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم

(3)......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(4)......ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(5)......ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(6)......ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(7)......ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(8)......ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(9)......ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(10)......ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(11)......ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(12)......ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(13)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(14)......ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन ह़ारिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(15)......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(16)......ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अ़रक़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(17)......ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(18)......ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर जुहनी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(19)......ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन ह़सीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

(20)......हज़रते सय्यिदुना अबू बरज़ा अस्लमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(21)......हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(22)......हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(23)......हज़रते सय्यिदुना अबू तुफ़ैल लैसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(24)......हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(25)......हज़रते सय्यिदुना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

(26)......हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا

(27)......हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا

ताबेईन में से दर्जे ज़ैल ह़ज़रात ने आप से अह़ादीस रिवायत कीं :

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ग़ुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना वासित़ बजली رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ । वग़ैरा वग़ैरा (تاریخ الخلفاء، ص۷۲)

आप से मरवी अह़ादीसे मुबारका

"بِسْمِ اللہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" के 19 ह़ुरूफ़ की निस्बत से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी उन्नीस अह़ादीसे मुबारका :

﴾1﴿ जन्नत में दाख़िल न होंगे

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا یَدْخُلُ الْجَنَّۃَ خِبٌّ وَلَا مَنَّانٌ وَلَا بَخِیْلٌ या'नी धोका देने वाला, एह़सान जतलाने वाला, बुख़्ल करने वाला जन्नत में दाख़िल न होंगे ।"

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ عن رسول اللہ، باب ماجاء فی النفقۃ علی الاھل، الحدیث: ۱۹۷۰، ج۵، ص۳۸۸)

www.dawateislami.net

﴾2﴿ मोमिन को नुक़्सान पहुंचाने वाला

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَلْعُونٌ مَنْ ضَارَّ مُؤْمِنًا أَوْ مَكَرَ بِهِ या'नी जिस ने किसी मोमिन को नुक़्सान पहुंचाया उस से फ़रेब किया वोह ला'नती है।'' (سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ عن رسول اللہ، باب ماجاء فی الخیانۃ والغش، الحدیث: ۱۹۴۸، ج۳، ص۳۷۸)

﴾3﴿ नमाज़े सुब्ह़ पढ़ने वाला अल्लाह के ज़िम्मए करम पर

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ صَلَّى الصُّبْحَ فَهُوَ فِي ذِمَّةِ اللّٰهِ فَلَا تُخْفِرُوا اللّٰهَ فِي عَهْدِهِ فَمَنْ قَتَلَهُ طَلَبَهُ اللّٰهُ حَتّٰى يَكُبَّهُ فِي النَّارِ عَلٰى وَجْهِهِ या'नी जिस ने सुब्ह़ की नमाज़ पढ़ी वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम में होता है। तुम अल्लाह से किये हुवे वा'दे ख़त्म न करो जो इस वा'दे को ख़त्म कर लेगा तो अल्लाह उस से मुत़ालबा करेगा ह़त्ता कि उसे आग में औंधे मुंह गिरा देगा।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب المسلمون فی ذمۃ اللہ، الحدیث: ۳۹۴۵، ج۴، ص۳۲۵)

﴾4﴿ मिस्वाक की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''اَلسِّوَاکُ مَطْهَرَةٌ لِلْفَمِ مَرْضَاةٌ لِلرَّبِّ या'नी मिस्वाक मुंह को पाक व साफ़ करने वाली और रब की ख़ुशनूदी का बाइ़स है।'' (مسند امام احمد، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۶۲، ج۱، ص۳۳)

﴾5﴿ दो रक्अ़त नमाज़ सलातुत्तौबा

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَا مِنْ رَجُلٍ يُذْنِبُ ذَنْبًا فَيَتَوَضَّأُ فَيُحْسِنُ الْوُضُوءَ ثُمَّ يُصَلِّي رَكْعَتَيْنِ وَيَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ اِلَّا غَفَرَ لَهُ

''या'नी जो शख़्स कोई गुनाह कर बैठे बा'दे अज़ां अच्छी त़रह़ वुज़ू कर के दो रक्अ़तें पढ़ ले और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने गुनाह की मग़्फ़िरत त़लब करे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमा देता है।'' (مسند امام احمد، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۲، ج۱، ص۱۶)

www.dawateislami.net

﴾6﴿ बख़ील जन्नत में दाख़िल न होगा

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ بَخِيلٌ وَلَا خَبٌّ وَلَا خَائِنٌ وَلَا سَيِّئُ الْمَلَكَةِ या'नी बख़ील, बद ख़्वाह ख़ाइन और अपने मा तह्त से बुराई करने वाला जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।''

(شعب الایمان، باب فی الجود والسخاء، الحدیث: ١٠٨٧٢، ج٧، ص ٤٣١)

﴾7﴿ जुमुआ की फ़ज़ीलत

एक आ'राबी मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा और अर्ज़ किया : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया है : ''اَلْجُمُعَةُ اِلَى الْجُمُعَةِ وَ الصَّلَوَاتُ الْخَمْسُ كَفَّارَاتٌ لِّمَا بَيْنَهُنَّ مَا اجْتُنِبَتِ الْكَبَائِرِ या'नी एक जुमुआ दूसरे जुमुआ तक और पांचों नमाज़ें इन के माबैन तमाम सग़ीरा गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं जब कि गुनाहे कबीरा से बचा जाए।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह्बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''जी हां।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस के बा'द येह फ़रमाया :

اَلْغُسْلُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ كَفَّارَةٌ وَ الْمَشْيُ اِلَى الْجُمُعَةِ كُلُّ قَدَمٍ مِنْهَا كَعَمَلِ عِشْرِيْنَ سَنَةٍ فَاِذَا فَرَغَ مِنْ صَلَاةِ الْجُمُعَةِ اُجِيْزَ بِعَمَلِ مِائَتَيْ سَنَةٍ

''या'नी जुमुए के दिन ग़ुस्ल करना भी कफ़्फ़ारा है और जुमुआ के लिये चलने वाले को हर क़दम पर बीस साल के आ'माले सालिहा के बराबर सवाब मिलता है और जब वोह जुमुआ पढ़ कर फ़ारिग़ हो जाता है तो उसे दो सो साल के आ'माल के बराबर सवाब दिया जाता है।''

(شعب الایمان، باب فی الصلوات، فضل الجمعة، الحدیث: ٣٠٢٠، ج٣، ص ١٠٧)

﴾8﴿ सुब्हो शाम का वज़ीफ़ा

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ किया : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे ऐसे कलिमात सिखाइये जिन्हें मैं सुब्हो शाम और सोते वक़्त पढ़ूं।'' तो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐ अबू बक्र ! येह पढ़ा करो :

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّھَادَۃِ اَوْ قَالَ اللّٰھُمَّ عَالِمَ الْغَیْبِ وَالشَّھَادَۃِ فَاطِرَ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ رَبَّ کُلِّ شَيْءٍ وَ مَلِیکَہٗ اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ اَعُوذُبِکَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي وَشَرِّ الشَّیْطَانِ وَشِرْکِہٖ

या'नी ऐ आस्मानों और ज़मीन के बनाने वाले छुपे और ज़ाहिर के जानने वाले या येह फ़रमाया कि ऐ छुपे और ज़ाहिर के जानने वाले और आस्मानों और ज़मीन के बनाने वाले, ऐ हर शै के रब और इस के मालिक, मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं नफ़्सो शैत़ान के शर और शिर्क से तेरी पनाह मांगता हूं।"

(مسند امام احمد، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۵۱، ج ۱، ص ۳۱)

﴾9﴿ शैत़ान की हलाकत वाले कलिमात

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

عَلَیْکُمْ بِلَا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ وَالْاِسْتِغْفَارِ فَاَکْثِرُوْا مِنْھُمَا فَاِنَّ اِبْلِیْسَ قَالَ: اَھْلَکْتُ النَّاسَ بِالذُّنُوْبِ فَاَھْلَکُوْنِيْ بِلَا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ وَالْاِسْتِغْفَارِ فَلَمَّا رَاَیْتُ ذٰلِکَ اَھْلَکْتُھُمْ بِالْاَھْوَاءِ وَھُمْ یَحْسَبُوْنَ اَنَّھُمْ مُّھْتَدُوْنَ

"या'नी तुम पर لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ और इस्तिग़फ़ार लाज़िम है इन दोनों की कसरत किया करो क्यूंकि शैत़ान ने कहा है कि मैं लोगों को गुनाहों में मुब्तला कर के हलाक करता हूं वोह लोग मुझे لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ और इस्तिग़फ़ार के ज़रीए़ हलाक करते हैं। लिहाज़ा जब मैं ने येह देखा तो उन्हें ख़्वाहिशात में डाल दिया और वोह अपने आप को हिदायत याफ़्ता गुमान करते हैं।"

(مسند ابی یعلی، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۱۳۱، ج ۱، ص ۷۷)

﴾10﴿ अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "مَنْ کَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا اَوْ رَدَّ عَلَيَّ شَیْئًا اَمَرْتُ بِہٖ فَلْیَتَبَوَّاْ مَقْعَدَہٗ مِنَ النَّارِ" या'नी जिस ने मेरी त़रफ़ दानिस्ता झूट की निस्बत की या मेरा हुक्म न माना तो वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।" (المعجم الاوسط، من اسمہ ابراھیم، الحدیث: ۲۸۳۸، ج ۲، ص ۱۴۹)

www.dawateislami.net

﴾11﴿ ज़बान की तेज़ी की शिकायत

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हुवे तो देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़बान को पकड़ कर खींच रहे हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "ऐ ख़लीफ़ए **रसूलुल्लाह** ! येह आप क्या कर रहे हैं ?" फ़रमाया : "اِنَّ هٰذَا اَوْرَدَنِي الْمَوَارِدُ येही ज़बान है जिस ने मुझे आज़्माइशों में डाल रखा है, मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "لَيْسَ شَيْءٌ مِّنَ الْجَسَدِ اِلَّا وَهُوَ يَشْكُوْ ذَرْبَ اللِّسَانِ या'नी जिस्म का हर ह़िस्सा ज़बान की तेज़ी की शिकायत करता है।

(مسند ابی یعلی، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۵، ج ۱، ص ۲۴)

﴾12﴿ बुराई को देख कर न रोकना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ुत़्बा दिया और इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम लोग येह आयते मुबारका तो पढ़ते हो लेकिन इस की ह़क़ीक़ी मुराद नहीं समझते : ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "ऐ ईमान वालो ! तुम अपनी फ़िक्र रखो तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेगा जो गुमराह हुवा जब कि तुम राह पर हो।" (پ ۷، المائدۃ: ۱۰۵) फिर इरशाद फ़रमाया : اِنَّ النَّاسَ اِذَا رَاَوُا الْمُنْكَرَ بَيْنَهُمْ فَلَمْ يُنْكِرُوْهُ يُوْشِكُ اَنْ يَعُمَّهُمُ اللّٰهُ بِعِقَابِهٖ या'नी बेशक लोग जब किसी बुराई को देखें और उसे न रोकें तो क़रीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन सब पर अपना अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाए।" (مسند امام احمد، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۵۳، ج ۱، ص ۳۱)

﴾13﴿ राहे ख़ुदा में गुबार आलूद क़दम

शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "مَنِ اغْبَرَّتْ قَدَمَاهُ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ حَرَّمَهُمَا اللّٰهُ عَلَى النَّارِ या'नी जिस के क़दम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में गुबार आलूद हों तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को जहन्नम की आग पर ह़राम फ़रमा देता है।

(مسند البزار، مما روی عن ابن عمر، الحدیث: ۲۲، ج ۱، ص ۷۷)

www.dawateislami.net

﴾14﴿ झूट से बचो

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : ''یَا أَیُّھَا النَّاسُ إِیَّاکُمْ وَالْکَذِبَ فَإِنَّ الْکَذِبَ مُجَانِبٌ لِلْإِیمَانِ'' या'नी ऐ लोगो ! झूट से बचो क्यूंकि झूट ईमान को दूर कर देता है।'' (مسند امام احمد، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث:۱۶، ج۱، ص۲۲)

﴾15﴿ मुसीबत ज़दा औरत को तसल्ली देना

हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने परवर दगार से अ़र्ज़ की : ''उस शख़्स की क्या जज़ा है जो ऐसी औ़रत से ता'ज़िय्यत करे जिस का बच्चा फ़ौत हो गया हो ?'' इरशाद फ़रमाया : ''أُظِلُّهُ فِيْ ظِلِّيْ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلِّيْ'' या'नी मैं उसे क़ियामत के दिन अपने सायए रह़मत में जगह दूंगा जब मेरे सायए रह़मत के सिवा कोई साया न होगा।''

(کنز العمال، کتاب الموت، الفصل الرابع فی التعزیۃ، الحدیث:۴۲۶۰۲، ج۸، الجزء:۱۵، ص۲۷۷)

﴾16﴿ राहे ख़ुदा में नंगे पाउं चलना

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ बैठे थे कि एक जनाज़ा गुज़रा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस जनाज़े में शिर्कत के लिये खड़े हो गए हम सब भी आप की इत्तिबाअ़ में खड़े हो गए, फिर हम सब ने नमाज़ अदा की। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नमाज़ के बा'द अपने चप्पल उतार दिये। हम ने अ़र्ज़ किया : ''ऐ अमीरल मोअमिनीन ! जब सब लोगों ने अपनी चप्पलें पहन लीं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस वक़्त अपनी चप्पलें उतार दीं इस की क्या वजह है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि '' مَنْ مَشٰی حَافِیًا فِیْ طَاعَةِ اللّٰهِ لَمْ یَسْأَلْهُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ یَوْمَ الْقِیَامَةِ عَمَّا افْتَرَضَ عَلَیْهِ या'नी जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में नंगे पाउं चलेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के रोज़ उस से उस के फ़र्ज़ के मुतअ़ल्लिक़ कुछ दरयाफ़्त न फ़रमाएगा।''

(المعجم الاوسط، من اسمہ محمد، الحدیث:۷۱۸۶، ج۴، ص۳۴۳)

www.dawateislami.net

﴾17﴿ हदीस लिखने की फ़ज़ीलत

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "مَنْ كَتَبَ عَنِّي عِلْماً أَوْ حَدِيْثاً لَمْ يَزَلْ يُكْتَبُ لَهُ الْأَجْرُ مَا بَقِيَ ذٰلِكَ الْعِلْمُ وَ الْحَدِيْثُ" या'नी जो मेरी त़रफ़ से कोई इल्म की बात या ह़दीस लिखे जब तक वोह इल्म या ह़दीस बाक़ी रहेगी उस वक़्त तक उस के लिये अज्र लिखा जाता रहेगा।" (کنزالعمال، کتاب العلم، الاکمال، الحدیث:۲۸۹۴۷، ج۵، الجزء:۱۰، ص۷۹)

﴾18﴿ मुसलमानों पर नर्मी करने वाला

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "مَنْ سَرَّهُ أَنْ يُظِلَّهُ اللّٰهُ مِنْ فَوْرِ جَهَنَّمَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَجْعَلَهُ فِي ظِلِّهِ فَلَا يَكُونَنَّ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ غَلِيظًا، وَلْيَكُنْ بِهِمْ رَحِيمًا" या'नी जिसे येह बात पसन्द हो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम की गर्मी से बचाए और उसे अपने सायए करम में जगह नसीब फ़रमाए तो वोह मुसलमानों पर सख़्ती करने वाला नहीं बल्कि इन पर रह़म करने वाला बने।"

(شعب الایمان، باب فی ان یحب الرجل لاخیہ المسلم ما یحب لنفسہ، فصل فی انظار المعسر والرفق بالمعسر، الحدیث:۱۱۲۶۰، ج۷، ص۵۳۸)

﴾19﴿ मेरी मख़्लूक़ पर रह़म करो

दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "اِنْ كُنْتُمْ تُرِيْدُوْنَ رَحْمَتِيْ فَارْحَمُوْا خَلْقِيْ" या'नी ऐ मेरे बन्दो ! अगर तुम येह चाहते हो कि मैं तुम पर रह़म करूं तो मेरी मख़्लूक़ पर रह़म करो।"

(مکارم الاخلاق للطبرانی، باب فضل الرحمۃ ورقۃ القلب، الحدیث:۱۴، ص۳۲۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

आठवां बाब

ख़ुसूसिय्याते सिद्दीक़े अक्बर

सिद्दीक़े अक्बर की आठ ख़ुसूसिय्यात का तफ़्सीली बयान

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर की ख़ुसूसिय्यात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुसूसिय्यात से मुराद वोह सिफ़ात हैं जो किसी शख़्स की ज़ात में इस त़रह़ पाई जाएं कि उस के इ़लावा किसी दूसरे में न पाई जाएं। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की चन्द ख़ुसूसिय्यात पेशे ख़िदमत हैं :

पहली ख़ुसूसिय्यत, नामे सिद्दीक़

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह अ़ज़ीम सआ़दत ह़ासिल है कि आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने सिर्फ़ आप का नाम सिद्दीक़ रखा, आप के इ़लावा किसी का नाम सिद्दीक़ न रखा।

दूसरी ख़ुसूसिय्यत, रफ़ीक़े हिजरत

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह भी ख़ुसूसिय्यत ह़ासिल है कि जब कुफ़्फ़ारे मक्का के ज़ुल्मो सितम से तंग आ कर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए त़य्यिबा हिजरत फ़रमाई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़े हिजरत थे।

तीसरी ख़ुसूसिय्यत, यारे ग़ार

इसी हिजरत के मौक़अ़ पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह भी ख़ुसूसिय्यत ह़ासिल हुई कि सिर्फ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के यारे ग़ार रहे।

चौथी ख़ुसूसिय्यत, मोअमिनीन की मौजूदगी में इमामत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को तमाम मोअमिनीन की मौजूदगी में नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इ़लावा किसी सह़ाबी को येह सआ़दत ह़ासिल नहीं हुई।

www.dawateislami.net

पांचवीं ख़ुसूसिय्यत, जिब्रीले अमीन की गुफ़्त्गू सुनते

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अक्सर अवक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام की हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ होने वाली गुफ़्त्गू और सरगोशी सुना करते थे लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام को देखा नहीं करते थे।

छटी ख़ुसूसिय्यत, वज़ीरे ख़ास

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस त़रह़ वज़ीरे ख़ास हैं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम उमूर में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुशावरत फ़रमाया करते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सानिये इस्लाम, सानिये ग़ार, ग़ज़्वए बद्र के दिन सानिये अ़रीश (ब ग़रज़े हि़फ़ाज़त तय्यार की गई जगह) और मज़ारे पुर अन्वार में सानिये क़ब्र हैं, हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर किसी को फ़ौक़िय्यत और फ़ज़ीलत नहीं देते थे। (تاریخ الخلفاء، ص ۴۲)

सातवीं ख़ुसूसिय्यत, आप की ता'रीफ़ व तौसीफ़

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और दीगर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने जितनी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मद्ह़ व तौसीफ़ बयान फ़रमाई किसी और सह़ाबी की नहीं की।

आठवीं ख़ुसूसिय्यत, आप की रिज़ा

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह भी सआ़दत ह़ासिल है कि पूरा आ़लम रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहता है और आप वोह अ़ज़ीम सह़ाबी हैं जिन की रिज़ा ख़ुद रब عَزَّوَجَلَّ चाहता है।

(کنزالعمال، کتاب الفضائل، باب فضائل الصحابۃ، فصل فی تفضیلھم، فضل الصدیق، الحدیث: ۳۵۶۵۳، ج۶، الجزء: ۱۲، ص۲۲۸، تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۷۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

नवां बाब

अव्वलिय्याते सिद्दीके अक्बर

सिद्दीके़ अक्बर की उन्नीस अव्वलिय्यात का तफ़्सीली बयान

www.dawateislami.net

अव्वलिय्याते सिद्दीक़े अक्बर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अव्वलिय्यात से मुराद ऐसे उमूर हैं जो किसी की ज़ात से सब से पहले सादिर हों। "**सिद्दीक़े अक्बर आ़शिक़े अक्बर हैं**" (उर्दू) के 19 हुरूफ़ की निस्बत से आप से मुतअ़ल्लिक़ा उन्नीस अव्वलिय्यात :

(1) सब से पहले दोस्त

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम से क़ब्ल भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोस्त थे और क़बूले इस्लाम के बा'द सब से पहला दोस्त होने का शरफ़ भी आप ही को ह़ासिल है। (تاریخ مدینہ دمشق، ج۳۰، ص۴۹)

(2) सब से पहले मुसद्दिक़

सब से पहले जिस शख़्स ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ की या'नी आप को सच्चा ही समझा वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। (مصنف عبد الرزاق، کتاب المغازی، باب ماجاء فی حضر زمزم، ج۵، ص۲۲۲)

(3) सब से पहले मुसलमान

सब से पहले बालिग़ मर्दों में इस्लाम क़बूल करने वाले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही हैं।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب علی بن ابی طالب، الحدیث:۳۷۵۵، ج۵، ص۴۱۱)

(4) सब से पहले इज़्हारे इस्लाम करने वाले

इस्लाम क़बूल करने वालों में सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस्लाम का इज़्हार किया और इस को ए'लानिया सब के सामने बयान किया जिस के सबब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बहुत तकालीफ़ भी दी गई। (تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۴۹)

(5) सब से पहले जामेए क़ुरआन

क़ुरआने पाक को सब से पहले जम्अ़ करने का ए'ज़ाज़ भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही को ह़ासिल है। (مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب فضائل القرآن، اول من جمع القرآن، الحدیث:۱، ج۷، ص۱۹۶)

www.dawateislami.net

(6) सब से पहले मुसम्मा क़ुरआन

क़ुरआने पाक को जम्अ़ कर के सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ही इस को "**मुस्हफ़**" का नाम दिया।"(1) (الکامل فی التاریخ، ج ۲، ص ۲۷۲، تاریخ الخلفاء، ص ۵۹)

(7) सब से पहले ख़लीफ़ा

इस्लाम के सब से पहले ख़लीफ़ए राशिद बनाए जाने का ए'ज़ाज़ भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही को ह़ासिल है।

(8) सब से पहले ख़लीफ़ा पुकारा गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अबी मलीका رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि किसी ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यूं पुकारा : "**یَاخَلِیْفَةَ اللّٰہ** या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़लीफ़ा" इरशाद फ़रमाया : "मैं **रसूलुल्लाह** का ख़लीफ़ा हूं और इसी पर राज़ी हूं।" (مسند امام احمد، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۵۹، ج ۱، ص ۳۳)

(9) सब से पहले नफ़्क़ा की तक़र्रुरी

तारीख़े इस्लाम में सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिआ़या ने ख़िलाफ़त के मुआ़मलात में मस्रूफ़िय्यत के सबब आप का नफ़्क़ा मुक़र्रर किया।

(الکامل فی التاریخ، ج ۲، ص ۲۷۲، تاریخ الخلفاء، ص ۵۹)

(10) सब से पहले ख़तीब

जब आप ने अपने इस्लाम को ज़ाहिर फ़रमाया तो एक ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया यूं आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम के सब से पहले ख़तीब भी हैं। (تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۳۰، ص ۴۹)

---

(1).....वाज़ेह़ रहे कि येह दो जिल्दों के माबैन मुस्ह़फ़ नहीं था बल्कि येह वोह मुख़्तलिफ़ व मुतफ़र्रिक़ सह़ाइफ़ थे जिन्हें सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुख़्तलिफ़ जगहों और मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان से ले कर एक जगह जम्अ़ करवा दिया था और इन तमाम को आप ने मुस्ह़फ़ का नाम दिया। तफ़्सील के लिये इसी किताब "**फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर**" का मौज़ूअ़ "**सिद्दीक़े अक्बर और जम्ए़ क़ुरआन**" स. **415** पर मुलाह़ज़ा कीजिये।

www.dawateislami.net

(11) सब से पहले मुहाफ़िज़

इबतिदाए इस्लाम में सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मुशरिकीने मक्का की तरफ़ से बहुत तकालीफ़ दी गई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुशरिकीने मक्का के शर से आप को बचाया यूं आप को प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहले मुहाफ़िज़ होने का शरफ़ भी हासिल है। (نوادرالاصول للترمذی، الاصل الثانی عشروالمائتان، ج۲، ص۷۷۷)

(12) सब से पहले मुक़ीमे बैतुल माल

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह भी शरफ़ हासिल है कि सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही ने बैतुल माल क़ाइम फ़रमाया। (تاریخ الخلفاء، ص۱۰)

(13) सब से पहले अ़तीक़ लक़ब पाने वाले

इस्लाम में सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ही अ़तीक़ लक़ब अ़ता किया गया।

(الریاض النضرۃ، ج۱، ص۷۷)

(14) सब से पहले मुबल्लिग़े इस्लाम

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से पहले इस्लाम की तब्लीग़ फ़रमाने का ए'ज़ाज़ भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही को हासिल है क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब से पहले इस्लाम क़बूल फ़रमाया और जिस दिन इस्लाम क़बूल फ़रमाया उसी दिन से इस की तब्लीग़ भी शुरूअ़ फ़रमा दी। (تاریخ مدینہ دمشق، ج۳۰، ص۴۹)

(15) सब से पहले मुईने इस्लाम

जानी व माली तौर पर सब से पहले इस्लाम की मुआ़वनत करने वाले भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही हैं इस्लाम लाते ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने चालीस हज़ार दिरहम ख़र्च कर दिये।

(الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، حرف العین، عبد اللہ بن ابی قحافۃ، ج۱، ص۹۴، تاریخ دمشق، ج۳۰، ص۲۶)

www.dawateislami.net

(16) सब से पहले अमीरुल हज

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को हज का अमीर बनाया और इस्लाम में आप ही सब से पहले **अमीरुल हज** बने हैं।

(الریاض النضرۃ،ج ۱، ص ۱۶۳)

(17) अपने वालिद की ह़यात ही में पहले ख़लीफ़ा

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह पहले ख़लीफ़ा हैं जो अपने वालिद की ह़यात ही में ख़लीफ़ा बने और ख़िलाफ़त के उमूर की बाग डौर संभाली। (تاریخ الخلفاء، ص ۶۵، الکامل فی التاریخ، ج ۲، ص ۲۷۲)

(18) ह़याते वालिद में इन्तिक़ाल करने वाले पहले ख़लीफ़ा

और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही वोह पहले ख़लीफ़ा हैं जिन का इन्तिक़ाल इन के वालिद की ह़यात ही में हो गया। वालिद की ह़यात ही में इन्तिक़ाल करने वाले आप पहले ख़लीफ़ा हैं। (تاریخ الخلفاء، ص ۶۵)

(19) इस्लाम की सब से पहली मस्जिद बनाने वाले

कुफ़्फ़ारे मक्का के ज़ुल्मो सितम से तंग आ कर जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़बशा की त़रफ़ हिजरत के लिये रवाना हुवे तो इब्ने दग़िना के रोकने पर दोबारा मक्का वापस तशरीफ़ ले आए और घर में इ़बादत करने लगे। बा'द में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने घर के सिह़्न में एक **मस्जिद** क़ाइम फ़रमाई और इस में इ़बादतो रियाज़त शुरूअ़ फ़रमा दी येह इस्लाम की सब से पहली मस्जिद है जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने घर में क़ाइम फ़रमाई।

(عمدۃ القاری، کتاب الکفالۃ، باب جوار ابی بکر فی عہد النبی، الحدیث: ۲۲۹۷، ج ۸، ص ۲۲۶)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दसवां बाब

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर

आयाते अफ़्ज़लिय्यत, अहादीसे मुबारका और मुख़्तलिफ़ अक्वाले अस्लाफ़

www.dawateislami.net

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहले सुन्नत का इस बात पर इज्माअ़ है कि अम्बिया व रुसुल बशर व रुसुले मलाइका عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द सब से अफ़्ज़ल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं, इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा, इन के बा'द **अ़शरए मुबश्शरा** के बक़िय्या सह़ाबए किराम, इन के बा'द बाक़ी अहले बद्र, इन के बा'द बाक़ी अहले उहुद, इन के बा'द बाक़ी अहले बैअ़ते रिज़्वान, फिर तमाम सह़ाबए किराम (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)

सिद्दीक़, अव्वलीं हैं ख़िलाफ़त के ताजदार
बा'द इन के उ़मर व उ़स्मानो ह़ैदर हैं बिल यक़ीन
अल्लाह अल्लाह इन की अ़ज़मत और शाने सर बुलन्द
अम्बिया के बा'द इन का कोई भी हमसर नहीं

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमारे सरदार हैं, हम में सब से बेहतर और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नज़्दीक हम में सब से ज़ियादा मह़बूब हैं ।" (سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب ابی بکر الصدیق، الحدیث:۳٦۷٦،ج۵، ص ۳۷۲)

मुफ़्तरी की सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इरशाद फ़रमाते हैं : "नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द इस उम्मत में सब से अफ़्ज़ल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं और अगर इस के इ़लावा किसी ने कोई दूसरी बात की तो वोह **मुफ़्तरी** या'नी इल्ज़ाम लगाने वाला है और उस की सज़ा भी वोही है जो इल्ज़ाम लगाने वाले की सज़ा है ।"

(کنزالعمال، کتاب الفضائل، باب فضائل الصحابة، فضل الصدیق، الحدیث:۳۵٦۲۲،ج٦، الجزء:۱۲، ص ۲۲۳، جمع الجوامع، مسند عمر بن الخطاب، الحدیث:۱۰۵۸،ج ۱۱، ص ۲۱۹)

www.dawateislami.net

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना इस्बग़ बिन नबातह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : मैं ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से इस्तिफ़्सार किया : ''इस उम्मत में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से अफ़्ज़ल कौन है ?'' फ़रमाया : ''इस उम्मत में सब से अफ़्ज़ल हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर मैं। (या'नी हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) (الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۵۷)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

फ़रमाते हैं : ''हम **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़मानए मुबारका में सब से अफ़्ज़ल हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शुमार करते, इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को और इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को।''

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب فضل ابی بکر بعد النبی، الحدیث: ۳۶۵۵، ج ۲، ص ۵۱۸، تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۳۰، ص ۳۴۶)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

फ़रमाते हैं कि ''हम **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्हाब में बहुत ज़ियादा मेल जोल रखने वाले थे और हमारी ता'दाद भी बहुत ज़ियादा थी उस वक़्त हम मरातिबे सहाबा यूं बयान किया करते थे, इस उम्मत में नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से अफ़्ज़ल हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं फिर हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ और इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) अफ़्ज़ल हैं। फिर हम ख़ामोश हो जाते।'' (کنز العمال، کتاب الفضائل، جامع الخلفاء، الحدیث: ۳۶۷۱۷، ج ۷، الجزء: ۱۳، ص ۱۰۵)

www.dawateislami.net

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीके़ अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا

फ़रमाते हैं कि "मैं ने अपने वालिदे गिरामी या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से पूछा : "नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से अफ़्ज़ल कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र" मैं ने कहा : "फिर कौन ?" फ़रमाया : "उ़मर"। मुझे ख़दशा हुवा कि अगर मैं ने दोबारा पूछा कि "फिर कौन ?" तो शायद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नाम ले लेंगे, इस लिये मैं ने फ़ौरन कहा : "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही सब से अफ़्ज़ल हैं ?" इरशाद फ़रमाया : "मैं तो एक आ़म सा आदमी हूं।"

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی صلی اللہ علیہ وسلم لو کنت۔۔۔الخ، الحدیث: ۳۶۷۱، ج۲، ص ۵۲۲)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीके़ अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अस्बग़ बिन नबातह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द लोगों में सब से बेहतर कौन है ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।" मैं ने अ़र्ज़ किया : "फिर कौन ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "फिर कौन ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ।" मैं ने अ़र्ज़ की : "फिर कौन ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं।" (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم)

(تاریخ مدینۃ دمشق، ج۴۴، ص ۱۹۶)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीके़ अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आगे चल रहा था तो नबियों के सरदार सरकारे वाला तबार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "ऐ अबू दरदा ! तुम उस के आगे चल रहे हो जो दुन्या व आख़िरत में तुम से बेहतर है, नबियों और मुर्सलीन के बा'द किसी पर न तो सूरज तुलूअ़ हुवा और न ही गुरूब हुवा कि वोह अबू बक्र से अफ़्ज़ल हो।"

(فضائل الصحابة للامام احمد بن حنبل، بقیہ قولہ مروا ابابکر ان یصلی، الرقم:۱۳۵، ج۱، ص۱۵۲)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

हज़रते सय्यिदुना सलमह बिन अक्वअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि "नबी के इलावा तमाम लोगों में सब से अफ़्ज़ल अबू बक्र हैं।"

(جمع الجوامع، الھمزۃ مع الباء، الحدیث:۱۲۰، ج۱، ص۳۸، تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۲۱۲)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام

एक दिन नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया और फिर तवज्जोह फ़रमाई तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नज़र न आए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का नाम ले कर दो[2] बार पुकारा, फिर इरशाद फ़रमाया : "बेशक रूहुल क़ुदुस जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने थोड़ी देर पहले मुझे ख़बर दी कि आप के बा'द आप की उम्मत में सब से बेहतर अबू बक्र सिद्दीक़ हैं।"

(المعجم الاوسط، من اسمہ محمد، الحدیث:۶۴۴۸، ج۵، ص۱۸)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

फ़रमाते हैं कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में आप के नज़्दीक सब से ज़ियादा महबूब कौन है ?" इरशाद फ़रमाया : "आ़इशा"। मैं ने कहा : "मर्दों में ?" फ़रमाया : "इन के वालिद" या'नी अबू बक्र सिद्दीक़। मैं ने पूछा : "फिर कौन ?" इरशाद फ़रमाया : "उ़मर बिन ख़त्ताब।" (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم)

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی لو کنت متخذا، الحدیث:۳۶۶۲، ج۲، ص۵۱۹)

www.dawateislami.net

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

फ़रमाते हैं :

اِذَا تَذَكَّرْتَ شَجْوًا مِنْ اَخِي ثِقَةٍ فَاذْكُرْ اَخَاكَ اَبَا بَكْرٍ بِمَا فَعَلَا

خَيْرُ الْبَرِيَّةِ اَتْقَاهَا وَاَعْدَلَهَا بَعْدَ النَّبِيِّ وَ اَوْفَاهَا بِمَا حَمَلَا

तर्जमा : "जब तुझे सच्चे दोस्त का ग़म याद आए, तो अपने भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कारनामों को याद कर जो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सारी मख़्लूक़ से बेहतर, सब से ज़ियादा तक़्वा और अ़द्ल वाले और सब से ज़ियादा अ़हद को पूरा करने वाले हैं।

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، استنشادہ فی مدح الصدیق، الحدیث: ۴۴۷۰، ج۴، ص۷)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अबू ह़सीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अ़याश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़सीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को येह फ़रमाते सुना : "وَاللّٰهِ مَا وَلَدَ لِآدَمَ بَعْدَ النَّبِيِّيْنَ وَالْمُرْسَلِيْنَ اَفْضَلُ مِنْ اَبِي بَكْرٍ या'नी अम्बिया व मुर्सलीन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की अवलाद में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अफ़्ज़ल कोई पैदा नहीं हुवा।"

(فضائل الصحابۃ للامام احمد بن حنبل، ومن فضائل عمر بن الخطاب من حدیث أبي بکر بن مالك۔۔۔الخ، الرقم: ۵۹۸، ج ۱، ص ۳۹۴)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अ़ल्लामा नस्फ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی

ह़ज़रते इमाम इब्ने हुमाम उ़मर बिन मह़मूद नस्फ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : "नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द अफ़्ज़लुल बशर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) हैं।"

(شرح العقائد النسفیۃ، ص ۳۱۸)

www.dawateislami.net

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीके़ अक्बर ब ज़बाने इमामे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म नो'मान बिन साबित رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द तमाम लोगों से अफ़्ज़ल हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, फिर उ़मर बिन ख़त्ताब, फिर उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान जुन्नूरैन, फिर अ़ली इब्ने अबी तालिब (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) हैं।" (شرح الفقه الاكبر، ص ٦١)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीके़ अक्बर ब ज़बाने इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان व ताबेईने उ़ज़्ज़ाम का इस बात पर इजमाअ़ है कि तमाम उम्मत से अफ़्ज़ल हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, फिर हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान, फिर हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) हैं।" (فتح الباری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب فضل ابی بکر بعد النبی، ج٨، ص١٥)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीके़ अक्बर ब ज़बाने इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया : "अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द लोगों में सब से अफ़्ज़ल कौन है ?" फ़रमाया : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ।"

(الصواعق المحرقة، الباب الثالث، ص٥٧)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीके़ अक्बर ब ज़बाने इमाम तह़ावी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू जा'फ़र तह़ावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "हम **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से पहले हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त साबित करते हैं बाईं तौर कि आप को तमाम उम्मत पर अफ़्ज़लिय्यत व सबक़त ह़ासिल है, फिर इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, फिर हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, फिर हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ख़िलाफ़त साबित करते हैं।" (شرح العقيدة الطحاوية، ص ٤٧١)

www.dawateislami.net

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम अबू बक्र बाक़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "अहले सुन्नत व जमाअ़त अस्लाफ़ का हक़ पहुंचाते हैं वोह अस्लाफ़ जिन को **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया था वोह इन के फ़ज़ाइल बयान करते हैं और इन में जो इख़्तिलाफ़ात वाक़ेअ़ हुवे हैं ख़्वाह छोटों में या बड़ों में अहले सुन्नत व जमाअ़त उन इख़्तिलाफ़ात से अपने आप को दूर रखते हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सब से मुक़द्दम समझते हैं फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ को, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान को फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) को और इक़रार करते हैं कि येह सब ख़ुलफ़ाए राशिदीन व महदिय्यीन हैं और नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब लोगों से अफ़्ज़ल हैं और अहले सुन्नत व जमाअ़त उन तमाम अह़ादीस की तस्दीक़ करते हैं और उन पर दलालत करने वाली और शाने ख़ुलफ़ा में वारिद शुदा अह़ादीस को झुटलाते नहीं हैं जो हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से साबित हैं।" (کتاب التمھید، ص ۲۹۵)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने शैख़ तक़िय्युद्दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "اِنَّ اَبَابَکْر رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ اَفْضَلُ مِنْ سَائِرِ الْاُمَّۃِ الْمُحَمَّدِیَّۃِ وَسَائِرِ اُمَمِ الْاَنْبِیَاءِ وَاَصْحَابِھِم या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तमाम उम्मते मुह़म्मदिय्या से और तमाम अम्बिया की सारी उम्मतों और उन के अस्ह़ाब से अफ़्ज़ल हैं, क्यूंकि आप **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ इस त़रह़ लाज़िम थे जिस त़रह़ साया जिस्म को लाज़िम होता है ह़त्ता कि मीसाक़े अम्बिया में और इसी लिये आप ने सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ की।"

(الیواقیت والجواھر، المبحث الثالث والاربعون، الجزء الثانی، ص ۳۲۹)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने ह़ाफ़िज़ इब्ने अ़ब्दुल बर्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने बा'द जिन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को छोड़ा उन में सब से अफ़्ज़ल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र

www.dawateislami.net

सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं और इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं और इस बात पर उ़लमाए किराम की जमाअ़त का इजमाअ़ है और अहले इ़ल्म के एक बहुत बड़े गुरोह ने कहा है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में सब से अफ़्ज़ल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हैं।

(التمہید لما فی الموطا من المعانی والمسانید، حدیث الرابع عشر، ج۸، ص ۵۵۳)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अ़ल्लामा अ़ब्दुश्शकूर सालिमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

इमामुल मुतकल्लिमीन अ़ल्लामा अबुश्शकूर सालिमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : "अहले सुन्नत व जमाअ़त ने कहा है कि अम्बिया व रुसुल और फ़िरिश्तों के बा'द तमाम मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।" (تمہید ابو شکور سالمی، ص ۳۶۴)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द इमामे बरह़क़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।" (احیاء العلوم، کتاب قواعد العقائد، الرکن الرابع، الاصل السابع، ج ۱، ص ۱۵۸)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम कमालुद्दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "जान लो कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द इमामे बरह़क़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) हैं। और इस पर अह़ादीस से बे शुमार दलाइल मौजूद हैं जो मजमूई तौर पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुक़द्दम होने पर दलालत करते हैं। (الیواقیت والجواھر، المبحث الثالث والاربعون، الجزء الثانی، ص ۳۲۹)

www.dawateislami.net

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ाज़ी इयाज़ मालिकी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हदीसे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआला ने मेरे सहाबा को तमाम जहानों पर मा सिवाए अम्बिया व मुर्सलीन के मुन्तख़ब फ़रमाया है और इन में से चार को मेरे लिये चुन लिया है वोह चार अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली हैं और इन को **अल्लाह** तआला ने मेरा बेहतरीन साथी बनाया और मेरे तमाम सहाबा में ख़ैर है।" (الشفابتعریف حقوق المصطفی،ج۲،ص۵۴)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

महबूबे सुब्हानी शहबाज़े ला मकानी हज़रते शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी हसनी हुसैनी ग़ौसुल आ'ज़म عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : "अशरए मुबश्शरा में से अफ़्ज़ल तरीन चारों ख़ुलफ़ाए राशिदीन हैं और इन में सब से अफ़्ज़ल हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और फिर हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم और इन चारों के लिये नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़िलाफ़त साबित है।"

(الغنیۃ،العقائدوالفرق الاسلامیۃ،ج۱،ص۱۵۷،۱۵۸)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने हाफ़िज़ इब्ने असाकिर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "हुज़ूरे अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द इमामे बरहक़ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ थे **अल्लाह** तआला ने इन के ज़रीए दीन को ग़लबा दिया और इन्हें मुर्तद्दीन पर ग़ालिब किया और मुसलमानों ने इन को ख़िलाफ़त में इसी तरह मुक़द्दम किया है जिस तरह कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को ग़ार में मुक़द्दम किया फिर इमामे बरहक़ हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फिर हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ **अल्लाह** तआला आप के चेहरे को रौनक़ बख़्शे आप

www.dawateislami.net

के क़ातिलीन ने ज़ुल्म व तअ़द्दी से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पस **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द येह अइम्मा हैं।" (تبیین کذب المفتری، باب ما وصف من مجانبتہ لأھل البدع، ص ١٦٠)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम शरफ़ुद्दीन नववी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "अहले सुन्नत का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि सब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से अफ़्ज़ल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हैं।" (شرح صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابہ، ج٨، الجزء: ١٥، ص ١٤٨)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने मुह़म्मद बिन हुसैन बग़वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, उ़मर फ़ारूक़, उ़स्माने ग़नी, अ़ली शेरे ख़ुदा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) अम्बिया व मुर्सलीन के बा'द तमाम लोगों में सब से अफ़्ज़ल हैं और फिर इन चारों में अफ़्ज़लिय्यत की तरतीब ख़िलाफ़त की तरतीब से है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पहले ख़लीफ़ा हैं लिहाज़ा वोह सब से अफ़्ज़ल इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली शेरे ख़ुदा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) अफ़्ज़ल हैं।"

(شرح السنۃ للبغوی، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ج ١، ص ١٨٢)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "اِنَّ الْاِجْمَاعَ اِنْعَقَدَ بَیْنَ اَھْلِ السُّنَّۃِ اَنَّ تَرْتِیْبَھُمْ فِی الْفَضْلِ کَتَرْتِیْبِھِمْ فِی الْخِلَافَۃِ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمْ اَجْمَعِیْن" या'नी अहले सुन्नत व जमाअ़त के दरमियान इस बात पर इजमाअ़ है कि ख़ुलफ़ाए राशिदीन में फ़ज़ीलत उसी तरतीब से है जिस तरतीब से ख़िलाफ़त है।" (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से अफ़्ज़ल हैं कि वोह सब से पहले ख़लीफ़ा हैं इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم)

(فتح الباری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب لو کنت متخذا خلیلا، تحت الحدیث: ٣٦٧٨، ج٧، ص ٢٩)

www.dawateislami.net

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीके़ अक्बर ब ज़बाने इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "अहले सुन्नत व जमाअ़त का इस बात पर इजमाअ़ है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द तमाम लोगों में सब से अफ़्ज़ल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) हैं।" (تاریخ الخلفاء، ص ۳۴)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीके़ अक्बर ब ज़बाने इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की उम्मत के औलियाए किराम में सब से अफ़्ज़ल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।" (الیواقیت والجواہر، المبحث الثالث والاربعون، الجزء الثانی، ص ۳۲۸)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीके़ अक्बर ब ज़बाने इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "येह आयते मुबारका ﴿اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۙ﴾ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इमामत पर दलालत करती हैं, क्यूंकि इन दोनों आयतों का मा'ना है कि "ऐ **अल्लाह** हमें उन लोगों के रास्ते पर चला कि जिन पर तेरा इन्आ़म हुवा।" और दूसरी आयते मुबारका में फ़रमाया : ﴿اَنۡعَمَ اللہُ عَلَیۡہِمۡ مِّنَ النَّبِیّٖنَ وَ الصِّدِّیۡقِیۡنَ﴾ (پ۵، النساء:۶۹) या'नी **अल्लाह** ने नबियों और सिद्दीक़ीन पर इन्आ़म फ़रमाया। और इस बात में किसी क़िस्म का कोई शक व शुबा नहीं कि सिद्दीक़ीन के इमाम और उन के सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही हैं। तो अब आयत का मत़लब येह हुवा कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें हुक्म दिया कि हम वोह हिदायत त़लब करें जिस पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और तमाम सिद्दीक़ीन थे, क्यूंकि अगर वोह ज़ालिम होते तो उन की इक़्तिदा जाइज़ ही न होती लिहाज़ा साबित हुवा कि सूरए फ़ातिह़ा की येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की इमामत पर दलालत करती है।" (التفسیر الکبیر، الفاتحۃ:۶، ۵، ج۱، ص ۲۲۱)

www.dawateislami.net

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम इब्ने हजर हैतमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

अ़ल्लामा इब्ने हजर हैतमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "उ़लमाए उम्मत का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि इस उम्मत में सब से अफ़्ज़ल हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, और उन के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।"

(الصواعق المحرقة، الباب الثالث، ص۵۷)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "ख़ुलफ़ाए अ़रबआ़ की अफ़्ज़लिय्यत इन की तरतीबे ख़िलाफ़त के मुताबिक़ है (या'नी इमामे बरहक़ और ख़लीफ़ए मुत़लक़ हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं और इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना अ़ली इब्ने अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं) तमाम अहले हक़ का इजमाअ़ है कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द सब से अफ़्ज़ल हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और इन के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हैं।" (مکتوبات امام ربانی، دفتر سوم، مکتوب ۱۷، عقیدہ چهاردهم، ص ۳۷)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "वोह क़ौल जिस पर मेरा ए'तिक़ाद है **अल्लाह** के दीन पर मेरा मुकम्मल ए'तिमाद है कि अफ़्ज़लिय्यते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़त़ई है इस लिये कि नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ब त़रीक़े नियाबत इमामत का हुक्म दिया और येह बात दीन से मा'लूम है कि जो इमामत में अव्वली है वोह अफ़्ज़ल है ह़ालांकि वहां हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मौजूद थे और अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी। इस के बा वुजूद नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इमामत के लिये मुतअ़य्यन करना इस बात की दलील है कि अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इ़ल्म में थी यहां तक कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र

www.dawateislami.net

सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसल्ला मुबारक से पीछे हटे और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को आगे किया तो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अबू बक्र के सिवा कोई और इमामत करे **अल्लाह** और सब मोमिन इन्कार करते हैं।" (شرح الفقه الأكبر، ص ۲۴)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अ़ल्लामा क़स्त़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

ह़ज़रते अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद बिन अबू बक्र बिन अ़ब्दुल मलिक क़स्त़लानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "**रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सारी मख़्लूक़ में सब से अफ़्ज़ल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं और इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।"

(ارشاد الساری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عثمان بن عفان، تحت الحدیث: ۳۶۹۸، ج۸، ص ۲۱۵)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने मीर सय्यिद अ़ब्दुल वाह़िद बलग्रामी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "इस पर भी अहले सुन्नत का इजमाअ़ है कि नबियों के बा'द दूसरी तमाम मख़्लूक़ से बेहतर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इन के बा'द सय्यिदुना उ़स्मान ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और इन के बा'द सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।" (سبع سنابل، ص۷)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "ख़ुलफ़ाए अरबआ़ की अफ़्ज़लिय्यत इन की तरतीबे ख़िलाफ़त के मुत़ाबिक़ है या'नी तमाम सह़ाबा से अफ़्ज़ल सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ हैं फिर सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ फिर सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी फिर सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن) हैं।" (تکمیل الایمان، ص ۱۰۴)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने शाह वलिय्युल्लाह मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

फ़रमाते हैं : "और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द इमामे बरह़क़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं फिर ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ फिर ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी फिर ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) हैं।" (تفہیمات الٰہیہ، ج۱، ص ۱۲۸)

www.dawateislami.net

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अ़ल्लामा अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ परहारवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

फ़रमाते हैं : "सूफ़ियाए किराम का भी इस बात पर इजमाअ़ है कि उम्मत में सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ फिर सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ फिर सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी फिर सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم) सब से अफ़्ज़ल हैं।" (النبراس شرح شرح العقائد، ص ۴۹۲)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने पीर महर अ़ली शाह गोलड़वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

फ़रमाते हैं : "आयत ﴿مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ﴾ الآية (پ۲۶، الفتح: ۲۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और इन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं।" में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से खुलफ़ाए अरबआ़ عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की तरतीबे ख़िलाफ़त की तरफ़ वाज़ेह़ इशारा है। चुनान्चे, وَالَّذِیْنَ مَعَهٗ से ख़लीफ़ए अव्वल (ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुराद हैं) اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّار से ख़लीफ़ए सानी (ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ से ख़लीफ़ए सालिस (ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) और تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا ۔۔۔ اِلَخ से ख़लीफ़ए राबेअ़ (ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) के सिफ़ाते मख़्सूसा की तरफ़ इशारा है क्यूंकि मइय्यत और सोह़बत में ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه, कुफ़्फ़ार पर शिद्दत में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه, ह़िल्म व करम में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और इबादत व इख़्लास में ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाए अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ख़ुसूसी शान रखते थे।"

(مہر منیر، ص ۴۲۴، اللباب فی علوم الکتاب، الفتح: ۲۹، ج۱۷، ص ۵۱۷)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "मुर्सलीने मलाइका व रुसुल व अम्बियाए बशर صَلَوَاتُ اللهِ تَعَالٰی وَتَسْلِيْمَاتُه عَلَيْهِم के बा'द ह़ज़राते खुलफ़ाए अरबआ़ رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم तमाम मख़्लूक़े इलाही से अफ़्ज़ल हैं, फिर उन की बाहम तरतीब यूं है कि सब से अफ़्ज़ल सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फिर फ़ारूक़े आ'ज़म फिर उ़स्माने ग़नी फिर मौला अ़ली (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم)" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 28, स. 478)

www.dawateislami.net

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सदरुल अफ़ाज़िल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते मौलाना **मुफ़्ती नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : "अहले सुन्नत व जमाअ़त का इजमाअ़ है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द तमाम आ़लम से अफ़्ज़ल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ हैं इन के बा'द ह़ज़रते उ़मर इन के बा'द ह़ज़रते उ़स्मान और उन के बा'द ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم)" (سوانح کربلا، ص ۳۸)

अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

सदरुश्शरीआ़ ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती **अमजद अ़ली आ'ज़मी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "बा'द अम्बिया व मुर्सलीन, तमाम मख़्लूक़ाते इलाही इन्सो जिन्न व मलक (फ़िरिश्तों) से अफ़्ज़ल सिद्दीक़े अक्बर हैं, फिर उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म, फिर उ़स्माने ग़नी, फिर मौला अ़ली (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم)"(बहारे शरीअ़त, जि.1, स. 241)

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व उ़मर फ़ारूक़ की अफ़्ज़लिय्यत क़त़्ई है

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं : "(ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़ व उ़मर की अफ़्ज़लिय्यत पर) जब इजमाए़ क़त़्ई हुवा तो इस के मफ़ाद या'नी तफ़्ज़ीले शैख़ैन की क़त़इय्यत में क्या कलाम रहा ? हमारा और हमारे मशाइख़े त़रीक़त व शरीअ़त का येही मज़्हब है।" (مطلع القمرین فی ابانۃ سبقۃ العمرین، ص ۸۱)

जहां निहायतें व ग़ायतें ख़त्म वहां मक़ामे सिद्दीक़ शुरूअ़

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं कहता हूं और तह़क़ीक़ येह है कि तमाम अजिल्ला सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मरातिबे विलायत में और ख़ल्क़ से फ़ना और ह़क़ में बक़ा के मर्तबे में अपने मा सिवा तमाम

www.dawateislami.net

अकाबिर औलियाए इ़ज़्ज़ाम से वोह जो भी हों अफ़्ज़ल हैं और उन की शान अरफ़अ़ व आ'ला है इस से कि वोह अपने आ'माल से **ग़ैरुल्लाह** का क़स्द करें, लेकिन मदारिज मुतफ़ावुत हैं और मरातिब तरतीब के साथ हैं और कोई शै किसी शै से कम है और कोई फ़ज़्ल किसी फ़ज़्ल के ऊपर है और सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मक़ाम वहां है जहां निहायतें ख़त्म और ग़ायतें मुन्क़त़अ़ हो गईं, इस लिये कि सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इमामुल क़ौम सय्यिदी मुहि़य्युद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की तसरीह़ के मुत़ाबिक़ पेशवाओं के पेश्वा और तमाम के लगाम थामने वाले और इन का मक़ाम सिद्दीक़िय्यत से बुलन्द और तशरीए़ नबुव्वत से कमतर है और इन के दरमियान और इन के मौलाए अकरम **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरमियान कोई नहीं ।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 28, स. 683)

मस्अलए अफ़्ज़लिय्यत बाबे अ़क़ाइद से है

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं : "बिल जुम्ला मस्अलए अफ़्ज़लिय्यत हरगिज़ बाबे फ़ज़ाइल से नहीं जिस में ज़ुआ़फ़ (ज़ईफ़ ह़दीसें) सुन सकें बल्कि मवाफ़िक़ व शर्हे़ मवाक़िफ़ में तो तस्रीह़ की, कि बाबे अ़क़ाइद से है और इस में इह़ादे सिह़ाह़ (ख़बरे वाहि़द सह़ीह़ ह़दीसें) भी ना मसमूअ़ ।" (फ़तावा रज़विय्या, जि, 5, स. 581)

सिद्दीक़ अव्वलीन हैं ख़िलाफ़त के ताजदार
बा'द इन के उ़मर व उ़स्मानो ह़ैदर हैं बिल यक़ीन
अल्लाह अल्लाह इन की अ़ज़मत और शाने सर बुलन्द
अम्बिया के बा'द इन का कोई हमसर नहीं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर सूफ़िया की नज़र में

सूफ़ी बनने के लिये नक़्शे सिद्दीक़ की इत्तिबाअ़

हुज़ूर दाता गंज बख़्श अ़ली हिजवेरी عَلَیْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : "अगर कोई ह़क़ीक़ी सूफ़ी बनना चाहता है तो उसे चाहिये कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के नक़्शे क़दम पर चले कि सफ़ा सिद्दीक़ की सिफ़त है, क्यूंकि सफ़ा की एक अस्ल है और एक फ़र्अ़। इस की अस्ल येह है कि दिल अग़्यार से मुन्क़त़अ़ हो जाए और इस की फ़र्अ़ येह है कि दिल दुन्या की मह़ब्बत से ख़ाली हो जाए और येह दोनों सिफ़्तें सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की हैं तो जो इस त़रीक़े वाले हैं आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उन के इमाम हैं।" (ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء، ج٣، ص٨٠)

ख़ौफ़ व उम्मीद की आ'ला मिसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़र्रफ़ बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "अगर आस्मान से कोई बा आवाज़े बुलन्द सदा दे कि जन्नत में सिर्फ़ एक ही शख़्स दाख़िल होगा तो मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और उस के फ़ज़्ल से उम्मीद है कि वोह मैं ही होऊंगा और अगर आस्मान से येह आवाज़ आए कि दोज़ख़ में सिर्फ़ एक ही शख़्स दाख़िल होगा तो मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब और इक़ाब के सबब येह डर है कि कहीं वोह भी मैं ही न होऊं।" ह़ज़रते मुत़र्रफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का येह क़ौल नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं कि : "ब ख़ुदा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ और उस की रह़मत से उम्मीद की इस से बढ़ कर कोई मिसाल नहीं मिल सकेगी।" (اللمع فی التصوف، ص٢٣٣)

www.dawateislami.net

सिद्दीके़ अक्बर जैसे बन जाओ

हज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास अ़ता رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान के बारे में पूछा गया : ﴿كُوْنُوْارَبّٰنِيّٖنَ﴾ (پ۳،آل عمران:۷۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "**अल्लाह** वाले हो जाओ।" कि इस फ़रमान में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किन लोगों जैसा होने का हुक्म इरशाद फ़रमा रहा है ? तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : इस आयत में येह हुक्म दिया जा रहा है कि तुम हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه जैसे बन जाओ, क्यूंकि जब **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दुन्या से विसाले ज़ाहिरी हुवा तो तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان शिद्दते ग़म से निढाल थे और कुछ देर के लिये उन्हें ऐसा लगा जैसे अब दुन्या से इस्लाम का नामो निशान ख़त्म हो जाएगा क्यूंकि उस वक़्त मुसलमानों के लिये इस से बढ़ कर कोई सदमा न था। ऐसे कठिन वक़्त में सिर्फ़ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ही ऐसे थे जिन्हों ने निहायत ही सब्रो तहम्मुल और हौसले से काम लेते हुवे अपने जज़्बात पर क़ाबू पाया और बाहर आ कर सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मजमअ़ से येह ख़िताब फ़रमाया कि : "अगर तुम लोग अपने आक़ा हज़रते मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पूजा करते हो तो सुन लो कि वोह विसाल फ़रमा गए हैं और अगर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते हो तो यक़ीन रखो कि वोह ज़िन्दा है और हमेशा ज़िन्दा रहेगा उसे कभी मौत न आएगी।"

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، مرض النبی ووفاتہ، الحدیث: ۴۴۵۴، ج۳، ص ۱۵۸، عمدۃ القاری، ج ۱۲، ص ۳۶۷)

इस से पता चला कि रब्बानी या'नी **अल्लाह** वाला वोही शख़्स हो सकता है जिस के दिल पर हवादिसे ज़माना का कोई असर न हो सके या'नी उस का दिल इस का असर क़बूल न करे ख़्वां पूरी ज़मीन इधर से उधर ही क्यूं न हो जाए। (اللمع فی التصوف، ص ۲۳۴)

सूफ़िया की बोली बोलने वाले पहले शख़्स

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र वासिती رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि : "इस उम्मत की पहली शख़्सिय्यत जिस ने इशारे में सूफ़िया की बोली से काम लिया वोह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه हैं। चुनान्चे, सूफ़ियाए किराम ने इसी बोली से ऐसे ऐसे लताइफ़ अख़्ज़ किये जिस से बड़े बड़े अ़क़्ल मन्द हैरत ज़दा हो कर रह गए।"

www.dawateislami.net

सूफ़िया की पहली बोली सिद्दीक़े अक्बर ने बोली

हज़रते शैख़ अबू नस्र **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ली सिराज तूसी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र वासिती رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने जो येह फ़रमाया है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़बान पर सब से पहले सूफ़िया की बोली ज़ाहिर हुई तो येह उस वाक़िए की त़रफ़ इशारा है कि जब सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने राहे ख़ुदा में माल पेश करने की तरग़ीब दिलाई तो मुख़्तलिफ़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने ह़स्बे इस्तित़ाअ़त अपना अपना माल बारगाहे रिसालत में पेश कर दिया और उस वक़्त हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने घर का सारा सामान ला कर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश कर दिया था और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब पूछा कि : "ऐ सिद्दीक़ ! घर वालों के लिये क्या छोड़ आए हो ?" इस पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सूफ़िया की वोह बोली बोलते हुवे अ़र्ज़ की : **"या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم घर वालों के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم छोड़ कर आया हूं।" (سنن الترمذی، کتاب المناقب عن رسول اللہ، باب فی مناقب ابی بکر وعمر، الحدیث:۳۶۹۵، ج۵، ص۳۸۰)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने इस क़ौल में सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र फ़रमाया और फिर साथ ही हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक ले दिया और ख़ुदा की क़सम ! अ़क़ीदए तौह़ीद रखने वालों के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इनफ़िरादिय्यत बताने का इस से बढ़ कर कोई और इशारा मुमकिन ही नहीं। इलावा अज़ीं आप की ह़याते त़य्यिबा में और भी इशारात मिलते हैं जिन से सूफ़िया ने बहुत लत़ीफ़ मसाइल निकाले हैं। अहले तह़क़ीक़े सूफ़िया इन्हें जानते और ख़ूब समझते हैं। क्यूंकि उन सूफ़िया का इन इशारात से तअ़ल्लुक़ भी है और उन्हों ने इन को अपना भी रखा है। (اللمع فی التصوف، ص۲۳۴)

www.dawateislami.net

हयाते सिद्दीक़ और इशाराते सूफ़िया

इन्ही इशारात में से एक येह भी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी पर जब सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के दिल लरज़ गए और उन्हें आप के विसाल और दुन्या से पर्दा फ़रमाने पर ख़दशा महसूस हुवा कि इस्लाम कहीं ख़त्म ही न हो जाए तो उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया था : "अगर तुम लोग अपने आक़ा हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की पूजा करते हो तो सुन लो कि वोह विसाल फ़रमा गए हैं और अगर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते हो तो यक़ीन रखो कि वोह ज़िन्दा है और हमेशा ज़िन्दा रहेगा उसे कभी मौत न आएगी।" इस में निहायत बारीक इशारा येह था कि आप तौहीदे इलाही पर साबित क़दम थे और येही नहीं बल्कि आप ने तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का भी इस अक़ीदए तौहीद पर यक़ीन मज़बूत फ़रमा दिया।

सूफ़िया की बोली, दूसरी मिसाल

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जो सूफ़िया की बोली बोली उन्हीं बोलियों में से एक बोली येह भी है कि ग़ज़्वए बद्र के मौक़अ़ पर जब नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारगाहे इलाही में इल्तिजा करते हुवे अ़र्ज़ की, कि : "इलाही ! अगर आज येह तेरे मुठ्ठी भर मुख़्लिस बन्दे शहीद हो गए तो इस सर ज़मीन पर तेरी इबादत करने वाला कोई न रहेगा। इलाही ! रह़्म फ़रमा ! करम फ़रमा ! और तू ने जिस मदद का वा'दा फ़रमाया था उसे पूरा फ़रमा।" तो उस वक़्त हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही थे जिन्हों ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की थी : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बारगाहे इलाही में जो इल्तिजा कर चुके वोह काफ़ी है, अब बस कीजिये, इस से ज़ियादा कुछ न कहिये क्यूंकि मुझे यक़ीन है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप से जो वा'दा फ़रमाया है वोह उसे ज़रूर पूरा फ़रमाएगा।" **अल्लाह** तआला ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मदद का जो वा'दा फ़रमाया था इस आयते मुबारका में मज़कूर है :

www.dawateislami.net

﴿اِذْ یُوْحِیْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓىٕكَةِ اَنِّیْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِیْ فِیْ قُلُوْبِ الَّذِیْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَ اضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ؕ﴾ (پ۹، الانفال:۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "जब ऐ मह़बूब तुम्हारा रब फ़िरिश्तों को वह़ी भेजता था कि मैं तुम्हारे साथ हूं तुम मुसलमानों को साबित रखो अ़न क़रीब मैं काफ़िरों के दिलों में हैबत डालूंगा तो काफ़िरों की गर्दनों से ऊपर मारो और उन की एक एक पुर पर ज़र्ब लगाओ।"

(سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ الانفال، الحدیث:۳۰۹۲، ج۵، ص۵۵)

इस आयते मुबारका में वा'दए इमदादे इलाही की तस्दीक़ तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان में से सिर्फ़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही ने की थी, दीगर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم उस वक़्त इन्तिहाई परेशान हो चुके थे, वा'दए इमदादे इलाही की इसी तस्दीक़े क़ल्बी से आप के ईमान की पुख़्तगी और ख़ुसूसी हैसिय्यत का पता चलता है। (اللمع فی التصوف، ص۲۳۵)

एक सुवाल और इस का जवाब

अगर कोई शख़्स येह सुवाल करे कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी हर ह़ालत और कैफ़िय्यत के ए'तिबार से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कामिल व अकमल थे फिर क्या वजह है कि ग़ज़्वए बद्र के दिन आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बे क़रार व बेचैन थे और बारगाहे रब्बुल आ़लमीन में गिर्या व ज़ारी फ़रमा रहे थे, जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बिल्कुल मुत़मइन और पुर सुकून थे बल्कि ख़ुद आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हौसला देते नज़र आ रहे थे ?

इस का जवाब येह है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुक़ाबले में मा'रिफ़ते इलाही के उ़लूम यक़ीनन ज़ियादा जानते और क़वी ईमान के मालिक थे। जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم में सब से ज़ियादा इ़ल्म वाले और क़वी ईमान के मालिक थे। येही वजह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वा'दए इलाही पर ह़क़ीक़ी ईमान की वजह से साबित क़दम थे लेकिन हुज़ूर नबिय्ये

www.dawateislami.net

अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चूंकि **अल्लाह** तआ़ला की मा'रिफ़त का ज़ियादा इ़ल्म रखते थे कि वोह रब عَزَّوَجَلَّ जब्बार व क़ह्हार है, वोह **ग़नी** या'नी बे परवाह है उसे किसी की परवाह नहीं, जब चाहे, जैसे चाहे और जो चाहे कर सकता है। इसी वजह से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बे क़रार थे। क्यूंकि आप को **अल्लाह** तआ़ला के बारे में वोह इ़ल्म था जो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और किसी दूसरे सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को न था। येही वजह थी कि जब शदीद आंधी आती तो बा वुजूद येह कि आंधियां आती ही रहती थीं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए मुबारका का रंग मुतग़य्यर हो जाता था ह़ालांकि उस वक़्त आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ कई सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان होते थे और किसी को कोई परेशानी न होती। फिर हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से खुद येह भी इरशाद फ़रमाया था कि : "जो कुछ मैं जानता हूं तुम्हें उस का इ़ल्म नहीं, अगर तुम जान जाते तो कम हंसते और ज़ियादा रोते और तुम बुलन्द पहाड़ों की त़रफ़ निकल जाते और वहां बारगाहे इलाही में गिड़गिड़ा कर रोते रहते नीज़ तुम्हें अपने बिस्तरों पर भी कभी चैन न आता।" (اللمع فی التصوف، ص ٢٣٦)

सिद्दीक़े अक्बर के तीन इल्हाम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे और मख़्सूस बन्दों के दिल में बा'ज़ अवक़ात सोते या जागते में कोई बात इल्क़ा होती है या'नी दिल में डाली जाती है उसे इल्हाम कहते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه वोह वाह़िद सह़ाबी थे जो दूसरे सह़ाबा के मुक़ाबले में इल्हाम व फ़िरासत की खुसूसिय्यत रखते थे और आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ तीन[3] मौक़ओं पर इल्हाम व फ़िरासत का ज़ुहूर हुवा।

(1) मानेईने ज़कात के ख़िलाफ़ जंग

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द बा'ज़ क़बाइल ने ज़कात की अदाएगी से इन्कार कर दिया तो दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने येह राए दी कि ज़कात रोकने वाले मुर्तद्दों से अभी जंग न की जाए तो

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन से जंग करने पर फ़ौरन तय्यार हो गए और मानेईने ज़कात के बारे में फ़रमाया कि "अगर उन्हों ने रस्सी का एक टुकड़ा भी देने से इन्कार किया जो वोह रसूले खुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में ब तौ़रे ज़कात अदा करते थे तो मैं उन से तल्वार के ज़रीए जिहाद करूंगा।" चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए दुरुस्त साबित हुई और सहा़बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने मुखा़लफ़त में मश्वरा देने के बा वुजूद आप की राए को दुरुस्त तस्लीम किया और आप की राए पर इकट्ठे हो गए क्यूंकि उन्हें पता चल गया था कि आप ही की राए सही़ह है। (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الامر بقتال الناس حتی یقولوا لا الہ الا اللہ ـــ الخ، الحدیث:۳۲، ج ۱، ص ۳۱، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۴۷)

(2) जैशे उसामा की रवानगी

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कुफ़्फ़ार की सरकोबी के लिये अपने इन्तिक़ाल से कुछ अ़र्सा क़ब्ल एक लश्कर ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सर–बराही में रवाना फ़रमाया था जो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन्तिक़ाल के बा'द रास्ते में शशो पन्ज का शिकार हो गया था। जब तमाम सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्कर को वापस बुलाने पर इस्रार किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि : "जिस काम का हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पुख़्ता इरादा फ़रमा लिया था मैं उसे हरगिज़ तब्दील नहीं करूंगा।"

(تاریخ مدینۃ دمشق، ج۸، ص ۶۲، الطبقات الکبری، الطبقۃ الثانیۃ من المہاجرین، ج ۴، ص ۵۰)

(3) क़ब्ले विसाल बेटी की खु़श ख़बरी

आप की फ़िरासत का तीसरा मौक़अ़ वोह था जब ब वक़्ते विसाल आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को वसिय्यत करते हुवे फ़रमाया था कि : "ऐ आ़इशा ! मेरे इन्तिक़ाल के बा'द माले विरासत को अपने दो भाइयों और दोनों

www.dawateislami.net

बहनों सब में बराबर बराबर तक़्सीम कर देना।" हालांकि हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दो भाइयों और सिर्फ़ एक बहन का पता था। सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के निकाह में एक बांदी **बिन्ते ख़ारिजा** भी थीं जो उस वक़्त हामिला थीं और उस ह़म्ल के मुतअ़ल्लिक़ आप ने फ़रमाया था कि वोह बच्ची होगी। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इल्हाम और फ़िरासते कामिल के मुताबिक़ वैसा ही हुवा कि बच्ची की पैदाइश हुई। (تاریخ الخلفاء، الخلفاء الراشدون، ابوبکر الصدیق، فصل فی مرضه الخ، ص ۶۳، شرح الزرقانی علی المؤطا، ج۴، ص ۲۱)

इसी लिये नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे नूरबार है कि : "اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ فَاِنَّهٗ يَنْظُرُ بِنُوْرِ اللّٰه" या'नी मोमिन की फ़िरासत से डरो कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर से देखता है।" (سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة الحجر، الحدیث: ۳۱۳۸، ج۵، ص ۸۸)

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ऐसे और भी कमालात मौजूद हैं जिन का तअ़ल्लुक़ अहले हक़ाइक़ और अहले दिल से है।

सह़ाबा के माबैन इम्तियाज़े सिद्दीके़ अक्बर

۞.....हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन **अ़ब्दुल्लाह** मुज़नी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बारे में आता है कि वोह येह फ़रमाया करते थे कि : "हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तमाम सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) में इस लिहाज़ से इम्तियाज़ नहीं रखते थे कि वोह रोज़े कसरत से रखते और नवाफ़िल ज़ियादा पढ़ते थे बल्कि येह तो उन के दिल में एक ख़ास राज़ था जिस की वजह से वोह इम्तियाज़ रखते थे।"

۞.....किसी सूफ़ी का इस इम्तियाज़ में येह क़ौल मिलता है कि : "आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल में महब्बते ख़ुदावन्दी मौजज़न थी और ख़ुलूस दिल रखते थे।"

۞.....हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में येह भी आता है कि जब नमाज़ का वक़्त दाख़िल हो जाता तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों से फ़रमाते : "ऐ लोगो वोह आग बुझा दो जिसे तुम ने जला रखा है।" (या'नी नमाज़ का वक़्त होते ही जो काम जैसा है वैसा ही छोड़ दो।) (اللمع فی التصوف، ص ۲۳۸)

www.dawateislami.net

खाते ही फ़ौरन क़ै कर दी

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में आता है कि इन्हों ने एक मरतबा शुबे वाला खाना खा लिया था लेकिन इल्म हुवा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़ौरन क़ै कर दी। फिर फ़रमाया : "अगर येह खाना निकालने में मेरी जान भी निकल जाती तो मैं उसे निकाल कर ही दम लेता क्यूंकि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मैं ने सुन रखा है कि जिस पेट में ह़राम का खाना चला जाए तो उस से आग ही बेहतर रहेगी।"

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ایام الجاھلیۃ، الحدیث: ۳۸۴۲، ج ۲، ص ۵۷۱، منہاج العابدین، الفصل الخامس فی البطن وحفظہ، ص ۸۸)

काश मैं एक सब्ज़ा होता

हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़ज़ाबे इलाही और यौमे ह़िसाब के डर से फ़रमाया करते थे : "काश मैं सब्ज़ा होता और चोपाए मुझे खा जाते बल्कि मैं पैदा ही न होता तो बेहतर था।"

(جمع الجوامع، مسند ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۱۷۴، ج ۱۱، ص ۴۱، الطبقات الکبری، ذکر وصیۃ ابی بکر، ج ۳، ص ۱۴۸)

सिद्दीक़े अक्बर और तीन आयतें

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में आता है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे कि मैं ने क़ुरआने करीम की तीन आयात को हमेशा पेशे नज़र रखा :

पहली आयत

अल्लाह तआला क़ुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَاِنْ یَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ یُّرِدْكَ بِخَیْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ؕ یُصِیْبُ بِهٖ مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ۝۱۰۷﴾ (پ ۱۱، یونس: ۱۰۷)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और अगर तुझे **अल्लाह** कोई तक्लीफ़ पहुंचाए तो इस का कोई टालने वाला नहीं उस के सिवा और अगर तेरा भला चाहे तो उस के फ़ज़्ल को रद्द करने वाला कोई नहीं उसे पहुंचाता है अपने बन्दों में जिसे चाहे और वोही बख़्शने वाला मेहरबान है।"

हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "इस आयत से मुझे पता चल गया कि अगर **अल्लाह** तआला मेरा भला करना चाहे तो उस के सिवा भलाई को कोई नहीं रोक सकेगा, लेकिन अगर उस के हुक्म में मेरे लिये तक्लीफ़ लिखी है तो उसे भी उसी के सिवा कोई नहीं टाल सकेगा।"

दूसरी आयत

अल्लाह तआला कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ وَ اشْكُرُوْا لِیْ وَ لَا تَكْفُرُوْنِ۠﴾ (پ۲،البقرۃ:۱۵۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा और मेरा हक़ मानो और मेरी नाशुक्री न करो।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जब मैं ने येह आयत पढ़ ली तो मैं ने **अल्लाह** तआला के सिवा हर चीज़ की याद को तर्क कर दिया और उसी का ज़िक्र करने लगा।"

तीसरी आयत

अल्लाह तआला कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَ مَا مِنْ دَآبَّةٍ فِی الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَ یَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَ مُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ﴾ (پ۱۲،ھود:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़्क़ **अल्लाह** के ज़िम्मए करम पर न हो और जानता है कि कहां ठहरेगा और कहां सिपुर्द होगा सब कुछ एक साफ़ बयान करने वाली किताब में है।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "जब से मैं ने येह आयत पढ़ ली है तो ख़ुदा की क़सम ! मैं ने रोज़ी की फ़िक्र करना छोड़ दी।"

(اللمع فی التصوف، ص ۲۳۹)

www.dawateislami.net

दुन्यादारों की मज़म्मत में सिद्दीक़े अक्बर के अश्आ़र

कहा जाता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुन्यादारों की मज़म्मत में चन्द अश्आ़र फ़रमाए जिन का तर्जमा कुछ यूं है :

"ऐ दुन्या और इस की ज़ैबो ज़ीनत अपना कर नाज़ करने वाले ! सुन ले कि मिट्टी ही मिट्टी की शान है तो इस में अ़ज़मत कैसी ? कोई शरीफ़ आदमी देखना चाहो तो ऐसे बादशाह की त़रफ़ देखा करो जो मिस्कीन नुमा लिबास पहना करता है। येही वोह शख़्स होगा जो लोगों पर मेहरबान होगा और दीनो दुन्या में येही इस्लाह़ कर सकेगा।"

(اللمع فی التصوف، ص ۲۴۰)

सिद्दीक़े अक्बर सब से बेहतर राहनुमा

ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के मुतअ़ल्लिक़ आता है कि आप फ़रमाया करते थे तौह़ीद का मफ़्हूम समझाने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह फ़रमान सब से बेहतरीन राहनुमा है कि : "ज़ाते इलाही कितनी सुथरी है जिस ने अपनी पहचान का सिर्फ़ एक ही बेहतर त़रीक़ा बतला दिया है कि उस की पहचान से आ़जिज़ हो जाओ।" (اللمع فی التصوف، ص ۲۴۰)

सिद्दीक़े अक्बर मुरीदे सादिक़ हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ मुह़्युद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "दूसरों पर फ़ज़ीलत सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दलालत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मुरीदे सादिक़ की त़रह़ होना है जब कि शैख़ की मइय्यत में इस की फ़ुतूह़ात कामिल हो जाएं और इसी वजह से आप मुस्तह़िक़्क़े ख़िलाफ़त हुवे। पस हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वासिले ब ह़क़ नहीं हुवे ह़त्ता कि सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हर त़रह़ से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो गए और

www.dawateislami.net

आप ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुशाहदा एक अ़ब्दे मुख़्लिस की सूरत में किया जिसे अल्लाह तआला की मइय्यत में अगर कोई ह़रकत या सुकून है तो सिर्फ़ उसी की इजाज़त से।

सिद्दीक़े अक्बर की फ़ज़ीलत की बिल फ़े'ल दलील

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर फ़ज़ीलत की बिल फ़े'ल दलील वोह है जो कि अह़ादीस से साबित है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब माल त़लब फ़रमाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सारा माल ला कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में पेश कर दिया। जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने घर का आधा माल पेश कर दिया। (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی بکر وعمر، الحدیث:۳۶۹۵، ج۵، ص۳۸۰)

सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत की वजह येह है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन दोनों के माल में इन के लिये कोई ह़द मुक़र्रर न फ़रमाई बल्कि दोनों पर येह अम्र मख़्फ़ी रखा ताकि हर एक अ़ज़्म के मुत़ाबिक़ काम करे। अगर सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप दोनों के लिये कोई ह़द मुक़र्रर फ़रमाई होती तो येह इस से आगे न बढ़ते और यूं सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत भी सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ज़ाहिर न होती। पस आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस अम्र को मुबहम रखने में सिर्फ़ येही इरादा फ़रमाया कि सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर ज़ाहिर कर के बयान कर दी जाए।

क़ौले सिद्दीक़ में इन्तिहाई अदब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के इस क़ौल में कि "घर वालों के लिये अल्लाह और उस का रसूल छोड़ आया हूं" इन्तिहाई अदब है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अल्लाह तआला के साथ मिलाया।

www.dawateislami.net

और अगर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर उन के माल से कोई चीज़ लौटा दी तो आप ने उसे हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दस्ते करम से क़बूल किया होता क्यूंकि आप ने रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने अहले ख़ाना की किफ़ायत करते छोड़ा है। तो सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने माल में फ़ैसला नहीं किया मगर उस की हैसिय्यत से जिसे माल के मालिक ने अपना नाइब बनाया हो। पस ऐ भाई ! ग़ौर कर कि मरातिबे उमूर के मुतअ़ल्लिक़ सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का इरफ़ान किस क़दर मज़बूत है और इसी वजह से आप ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर फ़ज़ीलत पाई। हालांकि हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़याल था कि आज वोह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से सबक़त ले जाएंगे तो जब येह निस्फ़ माल लाने का वाक़िआ़ रू नुमा हुवा तो सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कहने लगे कि आज के बा'द मैं सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर सबक़त हासिल नहीं कर सकूंगा और येह मक़ाम उन्हें सोंप दिया। फिर रसूले पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर इन के माल में से कोई चीज़ वापस न की और येह इस लिये ताकि महब्बत में सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की सच्चाई पर जो कि आप के इ़ल्म में है हाज़िरीन को मुतनब्बेह फ़रमा दें। पस अगर आप सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर इन के माल में से कुछ वापस कर देते तो सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में येह एहतिमाल राह पा सकता था कि आप के दिल में रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ नर्मी का ख़याल आया। और आप ने सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर इसे बदले के तौर पर इस लिये पेश कर दिया कि आप को मा'लूम हुवा कि सारे का सारा माल देने में उन का नफ़्स हर त़रह से खुला हुवा नहीं है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये ऐसा

www.dawateislami.net

वाक़िआ़ गुज़रा कि वोह एक दफ़्आ़ हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अपना सारा माल ले आए तो आप ने उसे वापस कर दिया और अगर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म रखते कि वोह अपने लिये आप के होते हुवे कोई मिल्किय्यत नहीं देखते जैसे कि सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه थे तो इस पर आप वापस न करते।

इस्तिह़क़ाक़े इमामत का इ़रफ़ान

जान ले कि एक शख़्स के लिये इस्तिह़क़ाक़े इमामत चन्द उमूर के साथ पहचाना जाता है एक येह कि ऐसी शख़्सिय्यत ज़ाहिर कर के मुक़र्रर करे जिस का क़ौल क़बूल करना वाजिब हो। जैसे नबी या इमामे आ़दिल। एक येह कि मुसलमान उस की इमामत पर इजमाअ़ करें और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द बिल इजमाअ़ सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه थे। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जो कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के ज़ाहिर करने पर इमाम हुवे। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه आप ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की नस्स के साथ। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه उस जमाअ़त की नस्स के साथ जिन के दरमियान बाहमी मश्वरे से अम्र मुतअ़य्यन किया गया। बेशक आप ने किसी को ख़लीफ़ा नामज़द नहीं किया। और मो'तबर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा की इमामत पर इजमाअ़ किया। पस येह चारों ख़ुलफ़ाए राशिदीन हैं। (الیواقیت والجواھر، المبحث الثالث والاربعون، الجزء الثانی، ص ۳۲۹ ملخصا)

हुवे फ़ारूक़ व उ़स्मानो अ़ली जब दाख़िले बैअ़त
बना फ़ख़्रे सलासिल सिलसिला सिद्दीक़े अक्बर का

बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का
है यारे ग़ार, मह़बूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ग्यारहवां बाब

करामाते सिद्दीक़े अक्बर

सिद्दीक़े अक्बर की ग्यारह करामात का तफ़्सीली बयान

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर की करामात

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 346 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल, शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी** عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی की किताब "**करामाते सह़ाबा**" सफ़ह़ा 56 से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की चन्द करामात बित्तसर्रुफ़ पेशे ख़िदमत हैं :

ख़ाने में अ़ज़ीम बरकत

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत के तीन मेहमानों को अपने घर लाए और ख़ुद दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो गए और गुफ़्त्गू में मसरुफ़ रहे यहां तक कि रात का खाना आप ने दस्तर ख़्वाने नबुव्वत पर खा लिया और बहुत ज़ियादा रात गुज़र जाने के बा'द मकान पर वापस तशरीफ़ लाए। इन की ज़ौजा ने अ़र्ज़ किया कि "आप अपने घर पर मेहमानों को बुला कर कहां ग़ाइब रहे ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि "क्या अब तक तुम ने मेहमानों को खाना नहीं खिलाया ?" अ़र्ज़ किया : "मैं ने खाना पेश किया मगर इन लोगों ने साहि़बे ख़ाना की ग़ैर मौजूदगी में खाना खाने से इन्कार कर दिया।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने साहि़बज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से नाराज़ी का इज़्हार फ़रमाया फिर आप मेहमानों के साथ खाने के लिये बैठ गए और सब मेहमानों ने ख़ूब शिकम सैर हो कर खाना खा लिया। उन मेहमानों का बयान है कि "**जब हम खाने के बरतन में से लुक़्मा उठाते थे तो जितना खाना हाथ में आता था उस से कहीं ज़ियादा खाना बरतन में नीचे से उभर कर बढ़ जाता था और जब हम खाने से फ़ारिग़ हुवे तो खाना बजाए कम होने के बरतन में पहले से भी ज़ियादा हो गया।**" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुतअ़ज्जिब हो कर अपनी ज़ौजा से फ़रमाया कि "येह क्या मुआ़मला है कि बरतन में खाना पहले से कुछ ज़ाइद नज़र आता है ?" उन्हों ने क़सम खा कर अ़र्ज़ किया : "वाक़ेई

www.dawateislami.net

येह खाना तो पहले से तीन गुना बढ़ गया है। फिर आप उस खाने को उठा कर बारगाहे रिसालत में ले गए। जब सुब्ह हुई तो ना गहां मेहमानों का एक क़ाफ़िला दरबारे रिसालत में उतरा जिस में बारह[12] क़बीलों के बारह सरदार थे और हर सरदार के साथ बहुत से दीगर सुवार भी थे। उन सब लोगों ने येही खाना खाया और क़ाफ़िले के तमाम सरदार और तमाम मेहमानों का गुरौह इस खाने को शिकम सैर खा कर आसूदा हो गया लेकिन फिर भी उस बरतन में खाना ख़त्म नहीं हुवा।

(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ فی الاسلام، الحدیث: ۳۵۸۱، ج ۲، ص ۴۹۵ مختصرا، حجۃ اللہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء۔۔۔الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ...الخ، ج ۲، ص ۲۱۱)

बेटी पैदा होने की बिशारत

(2) हज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने मरज़े वफ़ात में अपनी साहिब ज़ादी उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को वसिय्यत करते हुवे इरशाद फ़रमाया कि "**मेरी प्यारी बेटी! आज तक मेरे पास जो मेरा माल था वोह आज वारिसों का माल हो चुका है और मेरी अवलाद में तुम्हारे दोनों भाई अ़ब्दुर्रहमान व मुहम्मद और तुम्हारी दोनों बहनें हैं लिहाज़ा तुम लोग मेरे माल को क़ुरआने मजीद के हुक्म के मुताबिक़ तक़्सीम कर के अपना अपना हिस्सा ले लेना।** येह सुन कर हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया कि "अब्बा जान! मेरी तो एक ही बहन बीबी **अस्मा** हैं। येह मेरी दूसरी बहन कौन है?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि "मेरी ज़ौजा **बिन्ते ख़ारिजा** जो ह़ामिला है उस के शिकम में लड़की है वोह तुम्हारी दूसरी बहन है।"

(تاریخ الخلفاء، ص ۶۳، حجۃ اللہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء۔۔۔الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ۔۔۔الخ، ص ۲۱۱، المُؤطّا لِلامام مالک، کتاب الاقضیۃ، باب ما لا یجوز من النحل، الحدیث: ۱۵۰۳، ج ۲، ص ۲۷۰)

वाक़ेई लड़की पैदा हुई

इस ह़दीसे पाक के तह़्त हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा मुहम्मद बिन अ़ब्दुल बाक़ी ज़ुरक़ानी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی तह़रीर फ़रमाते हैं: "चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि लड़की पैदा हुई जिस का नाम "**उम्मे कुल्सूम**" रखा गया।" (شرح الزرقانی علی المؤطا، کتاب الاقضیۃ، باب ما لا یجوز من النحل، ج ۴، ص ۶۱)

www.dawateislami.net

दो करामतों का सुबूत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीस के बारे में ह़ज़रते अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबुकी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى ने तह़रीर फ़रमाया कि "इस ह़दीस से अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो करामतें साबित होती हैं :

अव्वल : येह कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को क़ब्ले वफ़ात येह इल्म हो गया था कि मैं इसी मरज़ में दुन्या से रिह़लत करूंगा इस लिये ब वक़्ते वसिय्यत आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह फ़रमाया कि "मेरा माल आज मेरे वारिसों का माल हो चुका है।" **दुवुम :** येह कि ह़ामिला के शिकम में लड़का है या लड़की, और ज़ाहिर है कि इन दोनों बातों का इल्म यक़ीनन ग़ैब का इल्म है जो बिला शुबा व बिल यक़ीन पैग़म्बर के जा निशीन अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो अ़ज़ीमुश्शान करामतें हैं।"

(حجۃ اللہ علی العالمین، الخاتمۃ فی اثبات کرامات الاولیاء الخ، المطلب الثالث فی ذکر جملۃ جمیلۃ۔۔۔الخ، ج۲، ص ۶۱۲)

सिद्दीक़े अक्बर को इल्मे ग़ैब था

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़दीसे मज़्कूरए बाला और अ़ल्लामा ताजुद्दीन सुबुकी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى की वज़ाह़त से मा'लूम हुवा कि माफ़िल अरह़ाम या'नी जो कुछ मां के पेट में है उस का इल्म ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को ह़ासिल हो गया था। लिहाज़ा येह बात ज़ेहन नशीन कर लेनी चाहिये कि क़ुरआने मजीद की सूरए लुक़्मान में जो يَعۡلَمُ مَا فِی الۡاَرۡحَامِ (پ۲۱، لقمن:۳۴) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** जानता है जो कुछ माओं के पेट में है। आया है या'नी ख़ुदा के सिवा कोई इस बात को नहीं जानता कि मां के पेट में क्या है ? इस आयत का येह मत़लब है कि **बिग़ैर ख़ुदा के बताए हुवे कोई अपनी अ़क़्लो फ़ह्म से नहीं जान सकता कि मां के पेट में क्या है ? लेकिन अल्लाह तआ़ला के बता देने से दूसरों को भी इस का इल्म हो जाता है।** चुनान्चे, ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام वह़ी के ज़रीए और औलियाए उम्मत कश्फ़ व करामत के त़ौर पर **अल्लाह** तआ़ला के बता देने से येह जान लेते हैं कि मां के शिकम में लड़का है या लड़की ? मगर **अल्लाह** तआ़ला का इल्म ज़ाती, अज़ली व अबदी और क़दीम है और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام का इल्म अ़त़ाई है। **अल्लाहु अक्बर !** कहां **अल्लाह** तआ़ला का इल्म और कहां बन्दों का इल्म ? दोनों में बे इन्तिहा फ़र्क़ है। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحِمَهُ الله अपनी मश्हूरे ज़माना तफ़्सीर **"ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** पारह 21 सूरए लुक़्मान आयत 34 की तफ़्सीर में इरशाद फ़रमाते हैं : "(अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) जिस को चाहे अपने औलिया और अपने मह़बूबों में से उन्हें ख़बर दार करे । इस आयत में जिन पांच चीज़ों के इ़ल्म की खुसूसिय्यत अल्लाह तबारक व तआ़ला के साथ बयान फ़रमाई गई इन्हीं की निस्बत सूरए जिन्न में इरशाद हुवा "عٰلِمُ الْغَیْبِ فَلَا یُظْهِرُ عَلٰی غَیْبِهٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰی مِنْ رَّسُوْلٍ" ग़रज़ येह कि बिग़ैर अल्लाह तआ़ला के बताए इन चीज़ों का इ़ल्म किसी को नहीं और अल्लाह तआ़ला अपने मह़बूबों में से जिसे चाहे बताए और अपने पसन्दीदा रसूलों को बताने की ख़बर खुद उस ने सूरए जिन्न में दी है खुलासा येह कि इ़ल्मे ग़ैब अल्लाह तआ़ला के साथ ख़ास है और अम्बिया व औलिया को ग़ैब का इ़ल्म अल्लाह तआ़ला की ता'लीम से ब त़रीके़ मो'जिज़ा व करामत अ़त़ा होता है और कसीर आयतें और ह़दीसें इस पर दलालत करती हैं, बारिश का वक़्त और ह़म्ल में क्या है और कल को क्या करे और कहां मरेगा इन उमूर की ख़बरें ब कसरत औलिया व अम्बिया ने दी हैं और कु़रआनो ह़दीस से साबित हैं । ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام के पैदा होने की और ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام को ह़ज़रते यह़्या عَلَيْهِ السَّلَام के पैदा होने की और ह़ज़रते मरयम को ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के पैदा होने की ख़बरें दीं तो इन फ़िरिश्तों को भी पहले से मा'लूम था कि इन ह़म्लों में क्या है और उन ह़ज़रात को भी जिन्हें फ़िरिश्तों ने इत्त़िलाएं दीं थी और इन सब का जानना कु़रआने करीम से साबित है तो आयत के मा'ना क़त़्अ़न येही हैं कि बिग़ैर अल्लाह तआ़ला के बताए कोई नहीं जानता । इस के येह मा'ना लेना कि अल्लाह तआ़ला के बताने से भी कोई नहीं जानता मह़्ज़ बात़िल और सदहा आयात व अह़ादीस के ख़िलाफ़ है ।"

औलियाए किराम को भी इ़ल्मे ग़ैब है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बेशक औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से आयिन्दा होने वाली अवलाद का पता दे सकते हैं । चुनान्चे,

www.dawateislami.net

बेटा पैदा होने की बिशारत

हज़रते शाह **वलिय्युल्लाह** मुहद्दिसे देहलवी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे माजिद हज़रते शाह अ़ब्दुर्रहीम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَرِيۡم फ़रमाते हैं : मैं एक बार हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِی के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत के लिये गया। उन की रूहे मुबारक ज़ाहिर हुई और फ़रमाया : "**तुम्हारे यहां फ़रज़न्द पैदा होगा उस का नाम कुत़्बुद्दीन अह़मद रखना।**" चूंकि ज़ौजा बुढ़ापे को पहुंच गई थीं इस लिये मैं ने ख़याल किया कि शायद इस इरशाद से मुराद बेटे का बेटा या'नी पोता होगा। हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِی मेरे इस दिली ख़याल पर फ़ौरन मुत्त़लअ़ हो गए और फ़रमाया : "मेरी येह मुराद नहीं है बल्कि वोह फ़रज़न्द तुम्हारी सुल्ब से होगा।" शाह **वलिय्युल्लाह** साहिब मज़ीद फ़रमाते हैं : "वालिदे माजिद ने एक मुद्दत के बा'द दूसरी ख़ातून से अ़क़्द या'नी निकाह़ फ़रमाया तो येह कातिबुल हुरूफ़ फ़क़ीर **वलिय्युल्लाह** पैदा हुवा। शुरूअ़ में येह वाक़िआ़ याद न रहा तो **वलिय्युल्लाह** नाम रख दिया और कुछ अ़र्से के बा'द याद आया तो दूसरा नाम (हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِی के फ़रमान के मुत़ाबिक़) **कुत़्बुद्दीन अह़मद** रखा।" (انفاس العارفين، ص ٧٩)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आपने ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मज़ाराते त़य्यिबात पर ह़ाज़िरी देने और उन से फ़ैज़ लेने का बुज़ुर्गों का मा'मूल रहा है। नीज़ येह भी मा'लूम हुवा कि वफ़ात याफ़्ता औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से दिलों का ह़ाल जानते और आयिन्दा की ख़बरें भी इरशाद फ़रमा देते हैं जैसा कि हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा कुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَافِی ने हज़रते शाह अ़ब्दुर्रहीम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡكَرِيۡم को बेटे की विलादत की बिशारत इनायत फ़रमाई।

यहीं पाते हैं सारे अपना मत़लब
हर इक के वासित़े येह दर खुला है
मैं दर दर क्यूं फिरूं दुर दुर सुनूं क्यूं
मेरे आक़ा ! मेरा क्या सर फिरा है !

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि.1 स. 479)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर की करामात के क्या कहने !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की करामात के क्या कहने ! उ़श्शाक़ तो आज चौदह सो साल बा'द भी फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर से फ़ैज़याब हो रहे हैं, चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की करामात के ज़िम्न में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की मश्हूरे ज़माना किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल, बाब **फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह**, स. 45 से एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है :

सिद्दीक़े अक्बर ने मदनी ऑपरेशन फ़रमा दिया

एक आ़शिक़े रसूल का बयान अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में पेशे ख़िदमत है : हमारा मदनी क़ाफ़िला "नाका खारड़ी" (बलूचिस्तान, पाकिस्तान) में सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये ह़ाज़िर हुवा था, मदनी क़ाफ़िले के एक मुसाफ़िर के सर में चार छोटी छोटी गांठें हो गई थीं जिन के सबब उन को आधा सीसी (या'नी आधे सर) का दर्द हुवा करता था। जब दर्द उठता तो दर्द की त़रफ़ वाले चेहरे का ह़िस्सा सियाह पड़ जाता और वोह तक्लीफ़ के सबब इस क़दर तड़पते कि देखा न जाता। एक रात इसी त़रह़ वोह दर्द से तड़पने लगे, हम ने गोलियां खिला कर उन को सुला दिया। सुब्ह़ उठे तो हश्शाश बश्शाश थे। उन्हों ने बताया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझ पर करम हो गया, मेरे ख़्वाब में सरकारे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ब मअ़ चार यार عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان करम फ़रमाया। सरकारे मदीना क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी जानिब इशारा करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया : "इस का दर्द ख़त्म कर दो।" चुनान्चे, यारे ग़ार व यारे मज़ार सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मेरा इस त़रह़ **मदनी ऑपरेशन** किया कि मेरा सर खोल दिया और मेरे दिमाग़ में से चार काले दाने निकाले और फ़रमाया : "बेटा ! अब तुम्हें

www.dawateislami.net

कुछ नहीं होगा।" वाक़ेई वोह इस्लामी भाई बिल्कुल तन्दुरुस्त हो चुके थे। सफ़र से वापसी पर उन्हों ने दोबारा "चेक अप" करवाया। डॉक्टर ने हैरान हो कर कहा : "भाई कमाल है ! तुम्हारे दिमाग़ के चारों दाने ग़ाइब हो चुके हैं।" इस पर उस ने रो रो कर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत और ख़्वाब का तज़्किरा किया। डॉक्टर बहुत मुतअस्सिर हुवा। उस अस्पताल के डॉक्टरों समेत वहां मौजूद 12 अफ़राद ने 12 दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यतें लिखवाईं और बा'ज़ डॉक्टरों ने अपने चेहरे पर हाथों हाथ सरकारे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत की निशानी या'नी दाढ़ी मुबारक सजाने की निय्यत की।

है नबी की नज़र क़ाफ़िले वालों पर
आओ सारे चलें क़ाफ़िले में चलो
सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
लूटने रहमतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

निगाहे करामत की नूरी फ़िरासत

(3) ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते तय्यिबा के बा'द जो क़बाइले अरब मुर्तद हो कर इस्लाम से फिर गए थे उन में से एक क़बीला कन्दा भी था। चुनान्चे, अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस क़बीले वालों से भी जिहाद फ़रमाया और मुजाहिदीने इस्लाम ने उस क़बीले के सरदारे आ'ज़म अश्अस बिन क़ैस को गिरिफ़्तार कर लिया और लोहे की ज़न्जीरों में जकड़ कर उस को दरबारे ख़िलाफ़त में पेश किया। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने आते ही अश्अस बिन क़ैस ने ब आवाज़े बुलन्द अपने जुर्मे इर्तिदाद का इक़रार कर लिया और फिर फ़ौरन ही तौबा कर के सिद्क़ दिल से इस्लाम क़बूल

www.dawateislami.net

कर लिया। अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने खुश हो कर उस का कुसूर मुआफ़ कर दिया और अपनी बहन हज़रते "उम्मे फ़ुरोह" رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से उस का निकाह कर के उस को अपनी क़िस्म क़िस्म की इनायतों और नवाज़िशों से सरफ़राज़ कर दिया। तमाम हाज़िरीने दरबार हैरान रह गए कि मुर्तद्दीन का सरदार जिस ने मुर्तद्द हो कर अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से बग़ावत और जंग की और बहुत से मुजाहिदीने इस्लाम का ख़ूने नाहक़ किया। ऐसे ख़ूं ख़्वार बाग़ी और इतने बड़े ख़तरनाक मुजरिम को अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस क़दर क्यूं नवाज़ा ? लेकिन जब हज़रते सय्यिदुना अश्अस बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सादिक़ुल इस्लाम हो कर इराक़ के जिहादों में अपना सर हथेली पर रख कर ऐसे ऐसे मुजाहदाना कारनामे अन्जाम दिये कि इराक़ की फ़त्ह का सहरा इन्हीं के सर रहा और फिर हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में जंगे क़ादिसिय्या और क़ल्आ मदाइन व जलूला व नहावन्द की लड़ाइयों में इन्हों ने सरफ़रोशी व जांबाज़ी के जो हैरत नाक मनाज़िर पेश किये उन्हें देख कर सब को येह ए'तिराफ़ करना पड़ा कि वाक़ेई अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की **निगाहे करामत की नूरी फ़िरासत** ने हज़रते सय्यिदुना अश्अस बिन क़ैस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात में छुपे हुवे कमालात के जिन अनमोल जोहरों को बरसों पहले देख लिया था वोह किसी और को नज़र नहीं आए थे। यक़ीनन येह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक बहुत बड़ी करामत है। (ازالۃ الخفاء،ج۳،ص۱۴۵)

इसी लिये मश्हूर सहाबी हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आम तौर पर येह फ़रमाया करते थे कि मेरे इल्म में तीन हस्तियां ऐसी गुज़री हैं जो फ़िरासत के बुलन्द तरीन मक़ाम पर पहुंची हुई थीं जिन में से एक अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं कि इन की निगाहे करामत की नूरी फ़िरासत ने हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के कमालात को देख लिया और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अपने बा'द ख़िलाफ़त के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया जिस को तमाम दुन्या के मुअर्रिख़ीन और दानिश्वरों ने बेहतरीन क़रार दिया।

(ازالۃ الخفاء،ج۳،ص۱۲۱)

www.dawateislami.net

कलिमए त़य्यिबा से क़ल्अ़ा मिस्मार

(4) अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में क़ैसरे रूम से जंग के लिये मुजाहिदीने इस्लाम की एक फ़ौज रवाना फ़रमाई और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इस फ़ौज का सिपह सालार मुक़र्रर फ़रमाया। येह इस्लामी फ़ौज क़ैसरे रूम की लश्करी त़ाक़त के मुक़ाबले में इन्तिहाई कमज़ोर मगर जब इस फ़ौज ने रूमी क़ल्ए़ का मुह़ासरा किया और لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ का ना'रा बुलन्द किया तो कलिमए त़य्यिबा की आवाज़ से क़ैसरे रूम के क़ल्ए़ में ऐसा ज़लज़ला आया कि पूरा क़ल्अ़ा मिस्मार हो कर उस की ईंट से ईंट बज गई और दम ज़दन में क़ल्अ़ा फ़त्ह़ हो गया बिलाशुबा येह अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बहुत ही शानदार करामत है क्यूंकि आप ने अपने दस्ते मुबारक से झन्डा बांध कर और फ़त्ह़ की बिशारत दे कर इस फ़ौज को जिहाद के लिये रवाना फ़रमाया था। (ازالۃ الخفاء، ج۳، ص۱۴۸ تا ۱۴۹)

ख़ून में पेशाब करने वाला

(5) एक शख़्स ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया कि "ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! मैं ने येह ख़्वाब देखा है कि मैं ख़ून में पेशाब कर रहा हूं।" आप ने इन्तिहाई ग़ैज़ो ग़ज़ब और जलाल में तड़प कर फ़रमाया कि "तू अपनी बीवी से ह़ैज़ की ह़ालत में सोह़बत करता है लिहाज़ा इस गुनाह से तौबा कर और ख़बरदार ! आयिन्दा हरगिज़ हरगिज़ कभी भी ऐसा मत करना।" वोह शख़्स इस अपने छुपे हुवे गुनाह पर नादिम व शरमिन्दा हो कर हमेशा हमेशा के लिये ताइब हो गया। (تاریخ الخلفاء، ص۸۳)

सलाम से दरवाज़ा खुल गया

(6) जब अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुक़द्दस जनाज़ा ले कर लोग हुजरए मुनव्वरा के पास पहुंचे तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ! ھٰذَا اَبُوْبَکْر येह अ़र्ज़ करते ही रौज़ए मुनव्वरा का बन्द दरवाज़ा यक दम

www.dawateislami.net

खुद ब खुद खुल गया और तमाम हाज़िरीन ने क़ब्रे अन्वर से येह गै़बी आवाज़ सुनी اُدْخِلُوا الْحَبِیْبَ اِلَی الْحَبِیْبِ या'नी हबीब को हबीब के दरबार में दाख़िल कर दो।

(التفسیر الکبیر، الکھف: ۹-۱۲، ج۷، ص۴۳۳)

कश्फे़ मुस्तक़्बिल

(7) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी वफ़ाते अक़्दस से सिर्फ़ चन्द दिन पहले रूमियों से जंग के लिये एक लश्कर की रवानगी का हुक्म फ़रमाया और अपनी अ़लालत ही के दौरान अपने दस्ते मुबारक से जंग का झन्डा बांधा और हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के हाथ में येह निशाने इस्लाम दे कर उन्हें इस लश्कर का सिपह सालार बनाया। अभी येह लश्कर मक़ामे ''जुर्फ़'' में ख़ैमा ज़न था और इस्लामी फ़ौज का इजतिमाअ़ हो ही रहा था कि विसाल की ख़बर फैल गई और येह लश्कर मक़ामे ''जुर्फ़'' से मदीनए मुनव्वरा वापस आ गया। विसाल के बा'द ही बहुत से क़बाइले अ़रब मुर्तद और इस्लाम से मुंह मोड़ कर काफ़िर हो गए नीज़ मुसैलमा कज़्ज़ाब ने अपनी नबुव्वत का दा'वा कर के क़बाइले अ़रब में इर्तिदाद की आग भड़का दी और बहुत से क़बाइल मुर्तद्द हो गए। इस इन्तिशार के दौर में अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तख़्ते ख़िलाफ़त पर क़दम रखते ही सब से पहले येह हुक्म फ़रमाया कि ''जैशे उसामा'' या'नी इस्लाम का वोह लश्कर जिस को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते उ़सामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ेरे क़ियादत रवाना फ़रमाया और वोह वापस आ गया है दोबारा उस को जिहाद के लिये रवाना किया जाए। हज़राते सहाबए किराम बारगाहे ख़िलाफ़त के इस ए'लान से बहुत परेशान हो गए और किसी त़रह़ भी येह मुआ़मला इन की समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसी ख़त़रनाक सूरते ह़ाल में जब कि बहुत से क़बाइल इस्लाम से मुंह मोड़ कर मदीनए मुनव्वरा पर ह़म्लों की तय्यारियां कर रहे हैं और झूटे मुद्दइय्याने नबुव्वत ने जज़ीरतुल अ़रब में लूट मार और बग़ावत की आग भड़का रखी है। इतनी बड़ी इस्लामी फ़ौज का जिस में बड़े बड़े नामवर और जंग आज़मा सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ मौजूद हैं मुल्क से बाहर भेज देना और मदीनए मुनव्वरा को बिल्कुल इस्लामी फ़ौज से ख़ाली छोड़ कर ख़त़रात मोल लेना किसी

www.dawateislami.net

तरह भी अ़क़्ले सलीम के नज़्दीक क़ाबिले क़बूल नहीं हो सकता। चुनान्चे, सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم की एक मुन्तख़ब जमाअ़त (जिस के एक फ़र्द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी हैं) बारगाहे ख़िलाफ़त में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया कि "ऐ जा निशीने पैग़म्बर ! ऐसे मख़्दूश और पुर ख़त़र माह़ोल में जब कि मदीनए मुनव्वरा के चारों त़रफ़ मुर्तद्दीन ने शोरश फैला रखी है यहां तक कि मदीनए मुनव्वरा पर ह़म्ले के ख़त़रात दरपेश हैं। आप ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्कर को रवानगी से रोक दें ताकि इस फ़ौज की मदद से मुर्तद्दीन का मुक़ाबला किया जाए और उन का क़त्अ़ क़म्अ़ कर दिया जाए।" येह सुन कर आप ने जोशे ग़ज़ब में तड़प कर फ़रमाया कि "ख़ुदा की क़सम ! मुझे परन्दे उचक ले जाएं येह मुझे गवारा है लेकिन मैं उस फ़ौज को रवानगी से रोक दूं जिस को अपने दस्ते मुबारक से झन्डा बांध कर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रवाना फ़रमाया था येह हरगिज़ हरगिज़ किसी ह़ाल में भी मेरे नज़्दीक क़ाबिले क़बूल नहीं हो सकता मैं इस लश्कर को ज़रूर रवाना करूंगा और इस में एक दिन की भी ताख़ीर बरदाश्त नहीं करूंगा।" चुनान्चे, आप ने तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के मन्अ़ करने के बा वुजूद उस लश्कर को रवाना कर दिया। ख़ुदा की शान कि जब जोशे जिहाद में भरा हुवा इस्लामी फ़ौज का येह समन्दर मौजें मारता हुवा रवाना हुवा तो अत़राफ़ व जवानिब के तमाम क़बाइल में शौकते इस्लाम का सिक्का बैठ गया और मुर्तद हो जाने वाले क़बाइल या वोह क़बीले जो मुर्तद होने का इरादा रखते थे, मुसलमानों का येह दल बादल लश्कर देख कर ख़ौफ़ व दहशत से लर्ज़ा बर अन्दाम हो गए और कहने लगे कि अगर ख़लीफ़ए वक़्त के पास बहुत बड़ी फ़ौज पहले से मौजूद न होती तो वोह भला इतना बड़ा लश्कर मुल्क के बाहर किस त़रह भेज सकते थे ? इस ख़याल के आते ही वोह जंग जूं क़बाइल जिन्हों ने मुर्तद हो कर मदीनए मुनव्वरा पर ह़म्ला करने का प्लान बनाया था ख़ौफ़ व दहशत से सहम कर अपना प्रोग्राम ख़त्म कर दिया बल्कि बहुत से फिर ताइब हो कर आग़ोशे इस्लाम में आ गए और मदीनए मुनव्वरा मुर्तद्दीन के ह़म्लों से मह़फ़ूज़ रहा और ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का लश्कर मक़ामे "उबनी" में पहुंच कर रूमियों के लश्कर से मसरूफ़े पैकार हो गया और वहां बहुत ही ख़ू रैज़ जंग के बा'द लश्करे इस्लाम फ़त्ह याब हो गया और ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बे शुमार माले ग़नीमत ले कर चालीस दिन के बा'द फ़ातिह़ाना शानो शौकत के साथ मदीनए मुनव्वरा वापस तशरीफ़ लाए और अब तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم

www.dawateislami.net

अन्सार व मुहाजिरीन पर येह राज़ मुन्कशिफ़ हो गया कि ह़ज़रते उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लश्कर को रवाना करना ऐन मस्लह़त के मुत़ाबिक़ था क्यूंकि इस लश्कर ने एक त़रफ़ तो रूमियों की अ़स्करी त़ाक़त को तहस नहस कर दिया और दूसरी त़रफ़ मुर्तद्दीन के ह़ौसलों को भी पस्त कर दिया। (مدارج النبوۃ، ج۲، ص ۴۰۹، ۴۱۱ ملخصا)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक **अ़ज़ीम करामत** है कि मुस्तक़बिल में पेश आने वाले वाक़िआ़त आप पर क़ब्ल अज़ वक़्त मुन्कशिफ़ हो गए और आप ने इस फ़ौज कशी के मुबारक इक़्दाम को उस वक़्त अपनी निगाहे करामत से नतीजा ख़ैज़ देख लिया था जब कि वहां तक दूसरे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का वहमो गुमान भी न पहुंचा। (کرامات صحابہ، ص ۲۲)

मदफ़्न के बारे में ग़ैबी आवाज़

(8) ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के बा'द सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया कि आप को कहां दफ़्न किया जाए ? बा'ज़ लोगों ने कहा कि इन को शुहदाए किराम के क़ब्रिस्तान में दफ़्न करना चाहिये और बा'ज़ ह़ज़रात चाहते थे कि आप की क़ब्र शरीफ़ जन्नतुल बक़ीअ़ में बनाई जाए, लेकिन मेरी दिली ख़्वाहिश येही थी कि आप मेरे इसी हुजरे में सिपुर्दे ख़ाक किये जाएं जिस में सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुनव्वर है येह गुफ़्तगू हो रही थी कि अचानक मुझ पर नींद का ग़लबा हो गया और ख़्वाब में येह आवाज़ मैं ने सुनी कि कोई कहने वाला कह रहा है कि ضُمُّوا الْحَبِیْبَ اِلَی الْحَبِیْب (या'नी ह़बीब को ह़बीब से मिला दो) ख़्वाब से बेदार हो कर मैं ने लोगों से इस आवाज़ का ज़िक्र किया तो बहुत से लोगों ने कहा कि येह आवाज़ तो हम लोगों ने भी सुनी है और मस्जिदे नबवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अन्दर बहुत से लोगों के कानों में येह आवाज़ आई है। इस के बा'द तमाम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ हो गया कि आप की क़ब्रे अत़हर रौज़ए मुनव्वरा के अन्दर बनाई जाए इस त़रह़ आप हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पहलूए अक़्दस में मदफ़ून हो कर अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ुर्बे ख़ास से सरफ़राज़ हो गए।

(شواھد النبوۃ، رکن سادس دربیان شواھد ودلایلی...الخ، ص ۲۰۰)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर का गुस्ताख़ बन्दर बन गया

(9) ह़ज़रते इमाम मुस्तग़्फ़री عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی ने सक़ात से नक़्ल किया है कि हम लोग तीन आदमी एक साथ यमन जा रहे थे कि हमारा एक साथी जो कूफ़ी था वोह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا) की शान में बद ज़बानी कर रहा था, हम लोग उस को बार बार मन्अ़ करते थे मगर वोह अपनी इस ह़रकत से बाज़ नहीं आता था, जब हम लोग यमन के क़रीब पहुंच गए और हम ने उस को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाया, तो वोह कहने लगा कि मैं ने अभी अभी येह ख़्वाब देखा है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे सिरहाने तशरीफ़ फ़रमा हुवे और मुझे फ़रमाया कि : **''ऐ फ़ासिक़ ! ख़ुदावन्दे तआ़ला ने तुझ को ज़लीलो ख़्वार फ़रमा दिया और तू इसी मन्ज़िल में मस्ख़ हो जाएगा।''** इस के बा'द फ़ौरन ही उस के दोनों पाउं बन्दर जैसे हो गए और थोड़ी ही देर में उस की सूरत बिल्कुल ही बन्दर जैसी हो गई। हम लोगों ने नमाज़े फ़ज्र के बा'द उस को पकड़ कर ऊंट के पालान के ऊपर रस्सियों से जकड़ कर बांध दिया और वहां से रवाना हुवे। ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त जब हम एक जंगल में पहुंचे तो चन्द बन्दर वहां जम्अ़ थे। जब उस ने बन्दरों के ग़ोल को देखा तो रस्सी तुड़वा कर येह ऊंट के पालान से कूद पड़ा और बन्दरों के ग़ोल में शामिल हो गया। हम लोग ह़ैरान हो कर थोड़ी देर वहां ठहर गए ताकि हम येह देख सकें कि बन्दरों का ग़ोल उस के साथ किस त़रह़ पेश आता है तो हम ने येह देखा कि येह बन्दरों के पास बैठा हुवा हम लोगों की त़रफ़ बड़ी ह़सरत से देखता था और उस की आंखों से आंसू जारी थे। घड़ी भर के बा'द जब सब बन्दर वहां से दूसरी त़रफ़ जाने लगे तो येह भी उन बन्दरों के साथ चला गया। (شواهد النبوة، رکن سادس دربیان شواهد ودلایلی...الخ، ص ۲۰۳)

सिद्दीक़े अक्बर का गुस्ताख़ ख़िन्ज़ीर बन गया

(10) इसी त़रह़ ह़ज़रते इमाम मुस्तग़्फ़री عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی ने एक मर्दे सालेह़ से नक़्ल किया है कि कूफ़ा का एक शख़्स जो ह़ज़राते सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا) को बुरा भला कहा करता था हर चन्द हम लोगों ने उस को मन्अ़ किया मगर वोह अपनी ज़िद

www.dawateislami.net

पर अड़ा रहा, तंग आ कर हम लोगों ने उस को कह दिया कि तुम हमारे क़ाफ़िले से अलग हो कर सफ़र करो। चुनान्चे, वोह हम लोगों से अलग हो गया जब हम लोग मन्ज़िले मक़्सूद पर पहुंच गए और काम पूरा कर के वत़न की वापसी का क़स्द किया तो उस शख़्स का गुलाम हम लोगों से मिला, जब हम ने उस से कहा कि "क्या तुम और तुम्हारा मौला हमारे क़ाफ़िले के साथ वत़न जाने का इरादा रखते हो ?" येह सुन कर गुलाम ने कहा कि "मेरे मौला का ह़ाल तो बहुत ही बुरा है, ज़रा आप लोग मेरे साथ चल कर उस का ह़ाल देख लीजिये।" गुलाम हम लोगों को साथ ले कर एक मकान में पहुंचा वोह शख़्स उदास हो कर हम लोगों से कहने लगा कि मुझ पर तो बहुत बड़ी इफ़्ताद पड़ गई। फिर उस ने अपनी आस्तीन से दोनों हाथों को निकाल कर दिखाया तो हम लोग येह देख कर ह़ैरान रह गए कि उस के दोनों हाथ ख़िन्ज़ीर के हाथों की त़रह़ हो गए थे। आख़िर हम लोगों ने उस पर तरस खा कर अपने क़ाफ़िले में शामिल कर लिया लेकिन दौराने सफ़र एक जगह चन्द ख़िन्ज़ीरों का एक झुन्ड नज़र आया और येह शख़्स बिल्कुल ही नागहां मस्ख़ हो कर आदमी से ख़िन्ज़ीर बन गया और ख़िन्ज़ीरों के साथ मिल कर दौड़ने भागने लगा मजबूरन हम लोग उस के गुलाम और सामान को अपने साथ कूफ़ा तक लाए। (شواھدالنبوۃ،رکن سادس دربیان شواھدودلایلی...الخ،ص۲۰۴)

सिद्दीके़ अक्बर का गुस्ताख़ कुत्ता बन गया

(12) एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि मैं ने मुल्के शाम में एक ऐसे इमाम के पीछे नमाज़ अदा की जिस ने नमाज़ के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के ह़क़ में बद दुआ़ की। जब दूसरे साल मैं ने उसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ के बा'द इमाम ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के ह़क़ में बेहतरीन दुआ़ मांगी, मैं ने नमाज़ियों से पूछा कि तुम्हारे पुराने इमाम का क्या हुवा ? तो लोगों ने कहा कि : "आप ख़ुद हमारे साथ चल कर उस को देख लीजिये।" मैं जब उन लोगों के साथ एक मकान में पहुंचा तो येह देख कर मुझे बड़ी इ़बरत हुई कि एक कुत्ता बैठा हुवा है और उस की दोनों आंखों से आंसू जारी हैं। मैं ने उस से कहा कि "तुम वोही इमाम हो जो ह़ज़राते शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के लिये बद दुआ़ किया करता था ?" तो उस ने सर हिला कर जवाब दिया कि "हां।" (شواھدالنبوۃ،رکن سادس دربیان شواھدودلایلی...الخ،۲۰۶)

www.dawateislami.net

अल्लाह अक्बर ! سُبْحٰنَ الله क्या अ़ज़ीम शान है सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم की ! बिल खुसूस यारे ग़ारे रसूल अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की । किसी मद्दाहे सहा़बा ने क्या ख़ूब कहा है :

बीच में शम्अ़ थी और चारों त़रफ़ परवाने
हर कोई उस के लिये जान जलाने वाला
दा'वए उल्फ़ते अह़मद तो सभी करते हैं
कोई निकले तो ज़रा रन्ज उठाने वाला
काम उल्फ़त के थे वोह जिन को सहा़बा ने किया
क्या नहीं याद तुम्हें "ग़ार" में जाने वाला

नसीह़त के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आख़िरुज़्ज़िक्र मज़्कूरए बाला तीन रिवायतों से ज़ाहिर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) की मुक़द्दस शान में बदगोई और बद ज़बानी का अन्जाम कितना ख़त़रनाक व इ़ब्रतनाक है ? ऐसे लोग जो शैख़ैने करीमैन के बारे में बदगोई करते हैं ऐसों के लिये येह रिवायात ताज़ियाने इ़ब्रत हैं कि वोह लोग इस से बाज़ आ जाएं वरना कहीं ऐसा न हो कि हलाकतों और बरबादियों के समन्दर में त़ुग़यानी आए और अ़ज़ाबे इलाही का ठाठें मारता समन्दर उन ज़ालिमों को बहा कर नेस्तो नाबूद कर दे । **अल्लाह** करीम हम सब को सहा़बए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان व तमाम **अल्लाह** वालों की महब्बत में ही ईमान व आ़फ़िय्यत के साथ शहादत की मौत अ़त़ा फ़रमाए और उन तमाम की गुस्ताख़ी और गुस्ताख़ों के शर से भी मह़फ़ूज़ फ़रमाए । आमीन

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

आप के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल होने वाली आयाते मुबारका

"वाह क्या शान है ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ की"

के बत्तीस हुरूफ़ की निस्बत से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ कुरआने पाक की 32 आयाते मुबारका :

आयत (1).....तस्दीक़ करने वाले

﴿وَ الَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَ صَدَّقَ بِهٖۤ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ﴾ (پ۲۴، الزمر:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और वोह जो येह सच ले कर तशरीफ़ लाए और वोह जिन्हों ने उन की तस्दीक़ की येही डर वाले हैं।"

मुफ़स्सिरे शहीर इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی अपनी मश्हूर तफ़्सीर "**तफ़्सीरे कबीर**" में इस आयते मुबारका के तह़्त नक़्ल करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने इरशाद फ़रमाया : "इस आयते मुबारका में "**सच लाने वाले**" से मुराद नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते मुबारका है और "**तस्दीक़ करने वाले**" से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते बा बरकत है।" (التفسیر الکبیر، الزمر:۳۳، ج۹، ص۴۵۲)

आयत (2).....यारे ग़ार

﴿ثَانِیَ اثْنَیْنِ اِذْ هُمَا فِی الْغَارِ اِذْ یَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَاۚ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِیْنَتَهٗ عَلَیْهِ﴾ (پ۱۰، التوبۃ:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "सिर्फ़ दो जान से जब वोह दोनों ग़ार में थे जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक **अल्लाह** हमारे साथ है तो **अल्लाह** ने उस पर अपना सकीना (इत़्मीनान) उतारा।" इस आयते मुबारका में "**ثَانِیَ اثْنَیْنِ**" और "**لِصَاحِبِهٖ**" में साह़िब से मुराद बिल इत्तिफ़ाक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ाते बा बरकत है, और ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "**سَكِیْنَتَهٗ عَلَیْهِ**" में "**عَلَیْهِ**" की "ہ" ज़मीर से मुराद भी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं क्यूंकि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कभी सकीना ज़ाइल ही नहीं हुवा। जब कुफ़्फ़ारे मक्का

www.dawateislami.net

के शर की वजह से सरकारे दो आ़लम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ मदीने की त़रफ़ हिजरत के लिये तशरीफ़ ले जाने लगे तो रास्ते में तीन दिन ग़ारे सौर में क़ियाम फ़रमाया, चूंकि कुफ़्फ़ारे मक्का इन के तआ़क़ुब में थे ग़ार के बाहर जब सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुफ़्फ़ार की मौजूदगी को मह़सूस किया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ परेशान हो गए उस वक़्त नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "ऐ अबू बक्र ! तुम्हारा उन दो के बारे में क्या ख़याल है जिन का तीसरा **अल्लाह** है।" वहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने यूं मदद फ़रमाई कि कुफ़्फ़ार अन्धे हो गए और आप दोनों को न देख सके, और एक रिवायत में यूं भी है कि काफ़िर जैसे ही ग़ार में दाख़िल हुवे तो देखा कि एक कबूतरी ने अन्डे दिये हुवे हैं और मकड़ी ने जाला बनाया हुवा है। इस से उन्हों ने येह समझा कि शायद आप दोनों कहीं और तशरीफ़ ले गए हैं।

(تفسیر البیضاوی، البراءۃ: ۴۰، ج۳، ص۱۴۲ ملخصا، تاریخ الخلفاء، ص۳۶)

आयत (3).....बारगाहे रिसालत के मुशीर

﴿فَاعْفُ عَنْهُمْ وَ اسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَ شَاوِرْهُمْ فِی الْاَمْرِۚ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِؕ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِیْنَ﴾ (پ۴، اٰل عمران: ۱۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो तुम इन्हें मुआ़फ़ फ़रमाओ और इन की शफ़ाअ़त करो और कामों में इन से मश्वरा लो और जो किसी बात का इरादा पक्का कर लो तो **अल्लाह** पर भरोसा करो बेशक तवक्कुल वाले **अल्लाह** को प्यारे हैं।"

सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی इस आयत की तफ़्सीर में हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं कि येह आयते मुबारका हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के बारे में नाज़िल हुई। हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ग़नम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से इरशाद फ़रमाया : "अगर तुम दोनों किसी मश्वरे पर मुत्तफ़िक़ हो जाओ तो मैं तुम्हारी मुख़ालफ़त नहीं करूंगा।" (تفسیر الدر المنثور، اٰل عمران: ۱۵۹، ج۲، ص۳۵۹)

www.dawateislami.net

आयत (4).....ख़ौफ़े ख़ुदा

﴿وَ لِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ﴾(پ۲۷،الرحمن:۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं।"

(1) ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन शौज़िब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नाज़िल हुई।" (2) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक रोज़ क़ियामत की हौलनाकियों का ज़िक्र करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "काश ! मैं कोई सब्ज़ा होता जिसे चोपाए खा जाते। काश ! मैं पैदा न हुवा होता।" पस येह आयत नाज़िल हुई। (تفسیر الدرالمنثور،الرحمن:۴۶،ج۷،ص۷۰۶)

आयत (5).....रिज़ाए इलाही के त़ालिब

﴿فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَ اتَّقٰى﴾(پ۳۰،اللیل:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो वोह जिस ने दिया और परहेज़गारी की।"

सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुफ़्ती **मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْہَادِی इन आयाते मुबारका (सूरतुल्लैल की एक ता दस) के तह़्त इरशाद फ़रमाते हैं : "येह आयतें ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ और उमय्या बिन ख़लफ़ के ह़क़ में नाज़िल हुईं जिन में से एक ह़ज़रते सिद्दीक़ **अतक़ा** (सब से बड़े परहेज़गार) हैं और दूसरा उमय्या **अशक़ी** (बड़ा बद बख़्त)। उमय्या बिन ख़लफ़ ह़ज़रते बिलाल को जो उस की मिल्क में थे दीन से मुन्ह़रिफ़ करने (या'नी मुंह फेरने) के लिये त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ें देता था और इन्तिहाई ज़ुल्म और सख़्तियां करता था। एक रोज़ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने देखा कि उमय्या ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को गर्म ज़मीन पर डाल कर तपते हुवे पथ्थर उन के सीने पर रखे हैं और इस ह़ाल में भी कलिमए ईमान उन की ज़बान पर जारी है। आप ने उमय्या से फ़रमाया : "ऐ बद नसीब ! एक ख़ुदा परस्त पर येह सख़्तियां ?" उस ने कहा : "आप को इस की तक्लीफ़ ना गवार हो तो ख़रीद लीजिये।" आप ने गिरां क़ीमत पर उन को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया। इस पर येह सूरत नाज़िल हुई इस में बयान फ़रमाया गया कि तुम्हारी कोशिशें मुख़्तलिफ़ हैं या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

की कोशिश और उमय्या की। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिज़ाए इलाही के त़ालिब हैं और उमय्या ह़क़ की दुश्मनी में अन्धा।"

आयत (6).....सब से बड़े परहेज़गार

﴿وَسَیُجَنَّبُهَا الْاَتْقَی﴾ (پ۳۰، اللیل:۱۷) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "और बहुत जल्द इस से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़गार।"

इस आयत में अतक़ा (सब से बड़ा परहेज़गार) से मुराद सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर हैं। चुनान्चे, इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی तफ़्सीरे कबीर में इरशाद फ़रमाते हैं : "मुफ़स्सिरीने किराम का इस बात पर इजमाअ़ है कि येह आयते मुबारका अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नाज़िल हुई।"

(التفسیر الکبیر، اللیل:۱۷، ج۱۱، ص۱۸۷)

आयत (7).....वसीलए रसूलुल्लाह

﴿هُوَ الَّذِیْ یُصَلِّیْ عَلَیْكُمْ وَ مَلٰٓىٕكَتُهٗ لِیُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِؕ وَ كَانَ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَحِیْمًا﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "वोही है कि दुरूद भेजता है तुम पर वोह और उस के फ़िरिश्ते कि तुम्हें अन्धेरियों से उजाले की त़रफ़ निकाले और वोह मुसलमानों पर मेहरबान है।"

सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़्ती **मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی "**तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इस आयत का शाने नुज़ूल बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि जब आयत اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓىٕكَتَهٗ یُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِیِّ नाज़िल हुई तो ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब आप को **अल्लाह** तआ़ला कोई फ़ज़्लो शरफ़ अ़त़ा फ़रमाता है तो हम नियाज़ मन्दों को भी आप के त़ुफ़ैल में नवाज़ता है ? इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई।

www.dawateislami.net

आयत (8).....नेक ईमान वाले

﴿فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَمَوْلٰىهُ وَجِبْرِیْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَ وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِیْرٌ﴾(پ ۲۸، التحريم:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो बेशक अल्लाह इन का मददगार है और जिब्रील और नेक ईमान वाले और इस के बा'द फ़िरिश्ते मदद पर हैं।"

इस आयते मुबारका में "صَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَ" (नेक ईमान वाले) से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हैं।

(تفسير الدرالمنثور،التحريم:۴، ج۸، ص۲۲۳)

आयत (9).....रिज़ाए इलाही

﴿وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰۤى ۙ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۚ وَلَسَوْفَ یَرْضٰى﴾ (پ۳۰، الليل:۱۹ تا ۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और किसी का उस पर कुछ एह़सान नहीं जिस का बदला दिया जाए, सिर्फ़ अपने रब की रिज़ा चाहता जो सब से बुलन्द है और बेशक क़रीब है कि वोह राज़ी होगा।"

जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बहुत गिरां क़ीमत पर ख़रीद कर आज़ाद किया तो कुफ़्फ़ार को ह़ैरत हुई और उन्हों ने कहा कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ऐसा क्यूं किया ? शायद बिलाल का उन पर कोई एह़सान होगा जो उन्हों ने इतनी गिरां क़ीमत दे कर ख़रीदा और आज़ाद किया, इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई और ज़ाहिर फ़रमा दिया गया कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का येह फ़े'ल मह़्ज़ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के लिये है किसी के एह़सान का बदला नहीं और न उन पर ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वग़ैरा का कोई एह़सान है। ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बहुत से लोगों को उन के इस्लाम के सबब ख़रीद कर आज़ाद किया। (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

www.dawateislami.net

आयत (10).....आपस में भाई-भाई

﴿وَ نَزَعْنَا مَا فِیْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰی سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِیْنَ﴾(پ۱۴،الحجر:۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और हम ने इन के सीनों में जो कुछ कीने थे सब खींच लिये आपस में भाई हैं तख़्तों पर रू बरू बैठे।"

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "येह आयते मुबारका बनू हाशिम, बनू तमीम, बनू अ़दी, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ और हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के बारे में नाज़िल हुई।" हज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र इमाम बाक़र رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه से पूछा गया कि हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से जो येह बात मन्क़ूल है कि येह आयते मुबारका हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ और हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के बारे में नाज़िल हुई दुरुस्त है? इन्हों ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम! येह आयत इन्हीं के बारे में नाज़िल हुई है अगर इन के बारे में नाज़िल नहीं हुई तो फिर किस के बारे में नाज़िल हुई है?" पूछा गया कि इस में तो इन के कीने का ज़िक्र है हालांकि इन के दिलों में तो एक दूसरे के लिये कोई कीना नहीं है? फ़रमाया : "इस कीने से मुराद ज़मानए जाहिलिय्यत वाला कीना है जो इन के क़बाइल बनू अ़दी, बनू तमीम, बनू हाशिम में पाया जाता था जब येह तमाम लोग इस्लाम ले आए, तो कीना ख़त्म हो गया और आपस में शीरो शकर हो गए, नीज़ इन के माबैन इस क़दर उल्फ़त व महब्बत पैदा हो गई कि एक बार हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पहलू में दर्द हुवा तो हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم अपने हाथ को गर्म कर के आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पहलू को टकोर करने लगे। **रब तआ़ला** को येह अदा इतनी पसन्द आई कि इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई।" (تفسیر الدرالمنثور، الحجر:۴۷، ج۵، ص۸۴-۸۵)

www.dawateislami.net

आयत (11).....दुआ़ए सिद्दीक़

﴿وَ وَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًاؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّ وَضَعَتْهُ كُرْهًاؕ وَ حَمْلُهٗ وَ فِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًاؕ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَ بَلَغَ اَرْبَعِیْنَ سَنَةًۙ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِیْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَ عَلٰى وَالِدَیَّ وَ اَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَ اَصْلِحْ لِیْ فِیْ ذُرِّیَّتِیْ ۚۛ اِنِّیْ تُبْتُ اِلَیْكَ وَ اِنِّیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ۝۱۵ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَ نَتَجَاوَزُ عَنْ سَیِّاٰتِهِمْ فِیْۤ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِؕ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِیْ كَانُوْا یُوْعَدُوْنَ۝۱۶﴾ (پ۲۶،الاحقاف:۱۶،۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और हम ने आदमी को हुक्म किया कि अपने मां-बाप से भलाई करे उस की मां ने उसे पेट में रखा तक्लीफ़ से और जनी उस को तक्लीफ़ से और उसे उठाए फिरना और उस का दूध छुड़ाना तीस महीने में है यहां तक कि जब अपने ज़ोर को पहुंचा और चालीस बरस का हुवा, अ़र्ज़ की : **ऐ मेरे रब ! मेरे दिल में डाल कि मैं तेरी ने'मत का शुक्र करूं जो तू ने मुझ पर और मेरे मां बाप पर की और मैं वोह काम करूं जो तुझे पसन्द आए और मेरे लिये मेरी अवलाद में सलाह़ (नेकी) रख, मैं तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया और मैं मुसलमान हूं।** येह हैं वोह जिन की नेकियां हम क़बूल फ़रमाएंगे और इन की तक़्सीरों से दर गुज़र फ़रमाएंगे, जन्नत वालों में सच्चा वा'दा जो उन्हें दिया जाता था।"

येह आयत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के ह़क़ में नाज़िल हुई, आप की उ़म्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से दो साल कम थी, जब ह़ज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की उ़म्र अठ्ठारह साल की हुई तो आप ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत इख़्तियार की, उस वक़्त हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ बीस साल की थी। जब ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की उ़म्र चालीस साल की हुई तो इन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला से येह दुआ़ की। (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान,स. 926)

आयत (12).....राहे ख़ुदा में तकालीफ़

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَیْهِمُ الْمَلٰٓىٕكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَ لَا تَحْزَنُوْا وَ اَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ﴾ (پ۲۴،حم السجدة:۳۰)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक वोह जिन्हों ने कहा हमारा रब **अल्लाह** है फिर इस पर क़ाइम रहे उन पर फ़िरिश्ते उतरते हैं कि न डरो और न ग़म करो और खुश हो उस जन्नत पर जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता था।"

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى "**तफ़्सीरे कबीर**" में इरशाद फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के बारे में नाज़िल हुई क्यूंकि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने राहे ख़ुदा में बहुत तक्लीफ़ें उठाईं लेकिन दीने इस्लाम पर सब्रो इस्तिक़ामत के साथ कारबन्द रहे। (التفسیرالکبیر،فصلت:۳۰،ج۹،ص۵۲۰)

आयत (13).....इत्तिबाअ़ का हुक्म

﴿وَ اتَّبِعْ سَبِیْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَیَّ ۚ﴾ (پ۲۱،لقمٰن:۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और उस की राह चल जो मेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया।"

मुफ़स्सिरे क़ुरआन अ़ल्लामा मह़मूद बिन **अ़ब्दुल्लाह** हुसैनी आलूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस आयते मुबारका के तह़त इरशाद फ़रमाते हैं कि "येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ह़क़ में नाज़िल हुई।" ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि इस आयत में مَنْ اَنَابَ से मुराद सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه हैं इस लिये कि जब आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ईमान लाए तो चूंकि आप नामी गिरामी ताजिर थे उस वक़्त के सियासी ह़ल्क़ों में आप का बहुत असरो रुसूख़ था, नीज़ उस वक़्त के मश्हूर व ग़ैर मश्हूर छोटे बड़े तमाम ताजिरों में आप की एक इम्तियाज़ी ह़ैसिय्यत थी, इस लिये आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ईमान लाने की ख़बर जंगल की आग की त़रह़ बहुत तेज़ी से फैल गई, आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के क़रीबी ताजिर दोस्त अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, सई़द बिन ज़ैद, उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान, त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, ज़ुबैर बिन अ़व्वाम वग़ैरा बहुत ह़ैरान हुवे और इस ह़ैरत अंगेज़ ख़बर की तस्दीक़ के लिये आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और बे यक़ीनी की कैफ़िय्यत में आप से पूछने लगे : "ऐ अबू बक्र ! येह हम ने क्या सुना है आप (ह़ज़रत) **मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह** (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर ईमान ले आए हैं ?" आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने निहायत ही मह़ब्बत भरे अन्दाज़ में अपने क़बूले इस्लाम का वाक़िआ़ सुना

www.dawateislami.net

दिया । बस येह सुनना था कि सभी बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर इस्लाम ले आए, उस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से इस आयते मुबारका का नुज़ूल हुवा और ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़िताब फ़रमाया गया कि ऐ सा'द ! तुम्हारी सआ़दत मन्दी इसी में है कि इस शख़्सिय्यत (या'नी सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की पैरवी करो । (روح المعانی،لقمٰن:۱۵،الجزء:۲۱،ص۱۱۸)

आयत (14).....फ़ज़ीलत वाले

﴿وَ لَا یَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَ السَّعَةِ اَنْ یُّؤْتُوْۤا اُولِی الْقُرْبٰى وَ الْمَسٰكِیْنَ وَ الْمُهٰجِرِیْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ۪ۖ وَ لْیَعْفُوْا وَ لْیَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ یَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ﴾(پ۱۸،النور:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और क़सम न खाएं वोह जो तुम में फ़ज़ीलत वाले और गुन्जाइश वाले हैं क़राबत वालों और मिस्कीनों और **अल्लाह** की राह में हिजरत करने वालों को देने की और चाहिये कि मुआ़फ़ करें और दर गुज़रें क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि **अल्लाह** तुम्हारी बख़्शिश करे और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है ।"

येह आयत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में नाज़िल हुई, जब उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर **अ़ब्दुल्लाह** बिन उबय वग़ैरा मुनाफ़िक़ीन ने तोहमत लगाई तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم निहायत ही मग़मूम हुवे, ह़ज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी बहुत रन्जीदा हुईं, लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दुखी होने का बहुत अफ़्सोस था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के भांजे ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्त़ह़ बिन असासा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उम्मुल मोअमिनीन पर तोहमत लगाने वालों के साथ मुवाफ़क़त की थी और चूंकि वोह बचपन से ही आप की परवरिश में थे और उन का हर छोटा बड़ा ख़र्चा आप बरदाश्त करते थे इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़सम खाई कि मिस्त़ह़ के साथ पहले जैसा सुलूक न रखेंगे इस पर येह आयत नाज़िल हुई, जब येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पढ़ी तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "बेशक मेरी आरज़ू है कि **अल्लाह** मेरी मग़फ़िरत करे और मैं मिस्त़ह़ के साथ जो सुलूक करता था उस को कभी न रोकूंगा ।" चुनान्चे, आप ने उस को जारी फ़रमा दिया । इस आयत

www.dawateislami.net

से ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की फ़ज़ीलत साबित हुई इस से आप की उ़लूए शानो मर्तबत ज़ाहिर होती है कि **अल्लाह** तआ़ला ने आप को **उलूल फ़ज़्ल** (फ़ज़ीलत वाला) फ़रमाया । (تفسیر خزائن العرفان، ص ۶۵۳، تفسیر الدر المنثور، النور: ۲۲، ج ۶، ص ۱۶۲-۱۶۳)

आयत (15).....अवसाफ़े ह़मीदा

﴿اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّیْلِ سَاجِدًا وَّ قَآىٕمًا یَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَ یَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖؕ قُلْ هَلْ یَسْتَوِی الَّذِیْنَ یَعْلَمُوْنَ وَ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَؕ اِنَّمَا یَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ﴾ (پ۲۳، الزمر: ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "क्या वोह जिसे फ़रमां बरदारी में रात की घड़ियां गुज़रीं सुजूद में और क़ियाम में आख़िरत से डरता और अपने रब की रह़मत की आस लगाए क्या वोह नाफ़रमानों जैसा हो जाएगा तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अनजान, नसीह़त तो वोही मानते हैं जो अ़क़्ल वाले हैं ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि येह आयते मुबारका शैख़ैने करीमैन या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के ह़क़ में नाज़िल हुई । (تفسیر الخازن، الزمر: ۹، ج ۴، ص ۵۰، تفسیر معالم التنزیل، الزمر: ۹، ج ۴، ص ۶۳)

आयत (16).....अमान से आने वाला

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ یُلْحِدُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِنَا لَا یَخْفَوْنَ عَلَیْنَاؕ اَفَمَنْ یُّلْقٰى فِی النَّارِ خَیْرٌ اَمْ مَّنْ یَّاْتِیْۤ اٰمِنًا یَّوْمَ الْقِیٰمَةِؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ﴾ (پ۲۴، حم السجدہ: ۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक वोह जो हमारी आयतों में टेढ़े चलते हैं हम से छुपे नहीं तो क्या जो आग में डाला जाएगा वोह भला, या जो क़ियामत में अमान से आएगा, जो जी में आए करो बेशक वोह तुम्हारे काम देख रहा है ।"

इस आयते मुबारका में "**क़ियामत में अमान से आने वाला**" से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नाज़िल हुई । (تفسیر الدر المنثور، فصلت: ۴۰، ج ۷، ص ۳۳۰)

www.dawateislami.net

आयत (17).....राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाला

﴿لَا یَسْتَوِیْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ قٰتَلَؕ اُولٰٓىٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِیْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَ قٰتَلُوْاؕ وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰىؕ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ۠﴾ (پ۲۷، الحدید:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम में बराबर नहीं वोह जिन्हों ने फ़त्हे मक्का से क़ब्ल ख़र्च और जिहाद किया वोह मर्तबे में उन से बड़े हैं जिन्हों ने बा'द फ़त्ह के ख़र्च और जिहाद किया और उन सब से **अल्लाह** जन्नत का वा'दा फ़रमा चुका और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।"

इस आयते मुबारका में "**फ़त्हे मक्का से क़ब्ल ख़र्च करने वाले**" से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हमारे दरमियान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा थे, और आप की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मौजूद थे, उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक ऐसा अ़बा ज़ेबे तन फ़रमाया हुवा था जिस में बबूल के कांटे बत़ौरे बटन के लगाए हुवे थे, उसी वक़्त जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देख रहा हूं कि इन्हों ने ऐसी अ़बा ज़ेबे तन कर रखी है जिस के गिरेबान पर (बटनों के बजाए) बबूल के कांटे लगाए हुवे हैं, इस की क्या वजह है ? तो सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! सिद्दीक़ ने फ़त्हे मक्का से क़ब्ल अपना सारा माल मुझ पर ख़र्च कर दिया है। येह सुन कर जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रब عَزَّوَجَلَّ इन्हें सलाम इरशाद फ़रमा रहा है और येह भी इरशाद फ़रमा रहा है कि अबू बक्र अपनी इस मौजूदा ह़ालत पर मुझ से राज़ी हैं या नाराज़ ? नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र !

www.dawateislami.net

रब عَزَّوَجَلَّ ने आप को सलाम इरशाद फ़रमाया है और येह भी पूछा है कि आप अपने मौजूदा ह़ाल में अपने रब عَزَّوَجَلَّ से राज़ी हैं या नाराज़ ? येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या मैं अपने रब से नाराज़ हो सकता हूं ? हरगिज़ नहीं, मैं अपने रब से राज़ी हूं । (تفسیر ابن کثیر، الحدید:۱۰، ج۸، ص۴۸)

आयत (18).....ग़ैरते ईमानी

﴿لَا تَجِدُ قَوْمًا یُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْیَوْمِ الْاٰخِرِ یُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ لَوْ كَانُوْۤا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِیْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓىٕكَ كَتَبَ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَ اَیَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَ یُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ اُولٰٓىٕكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ﴾ (پ۲۸، المجادلۃ:۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम न पाओगे उन लोगों को जो यक़ीन रखते हैं **अल्लाह** और पिछले दिन पर कि दोस्ती करें उन से जिन्हों ने **अल्लाह** और उस के रसूल से मुख़ालफ़त की अगर्चे वोह उन के बाप या बेटे या भाई या कुम्बे वाले हों येह हैं जिन के दिलों में **अल्लाह** ने ईमान नक़्श फ़रमा दिया और अपनी त़रफ़ की रूह़ से उन की मदद की और इन्हें बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचें नहरें बहें इन में हमेशा रहें **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी येह **अल्लाह** की जमाअ़त है, सुनता है **अल्लाह** ही की जमाअ़त कामयाब है ।"

येह आयते मुबारका भी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़क़ में नाज़िल हुई, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जुरैज رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़ुह़ाफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ज़मानए जाहिलिय्यत में एक बार सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में ना ज़ैबा कलिमात कह दिये तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन्हें इतने ज़ोर से धक्का दिया

www.dawateislami.net

कि वोह दूर जा कर गिरे। बा'द में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सारा माजरा सुनाया तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "क्या वाक़ेई तुम ने ऐसा किया ?" अ़र्ज़ किया : "जी हां !" फ़रमाया : "आयिन्दा ऐसा न करना।" अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अगर उस वक़्त मेरे पास तल्वार होती तो मैं उन का सर क़लम कर देता।" इस पर येह आयते मुबारका नाज़िल हुई। (روح المعانی، المجادلۃ:۲۲، الجزء:۲۸، ص۳۲۳)

आयत (19).....हुक्मे इलाही

﴿وَ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِیَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَ الْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَ الَّذِیْنَ عَقَدَتْ اَیْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِیْبَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ شَهِیْدًا﴾ (پ۵، النساء:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने सब के लिये माल के मुस्तहिक़ बना दिये हैं जो कुछ छोड़ जाएं मां-बाप और क़राबत वाले और वोह जिन से तुम्हारा ह़ल्फ़ बन्ध चुका उन्हें उन का हिस्सा दो बेशक हर चीज़ **अल्लाह** के सामने है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे अ़ब्दुर्रहमान ने जब इस्लाम क़बूल करने से इन्कार किया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़सम उठाई कि उसे विरासत से मह़रूम कर देंगे। बा'द में वोह इस्लाम ले आए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को (येह आयते मुबारका नाज़िल कर के) हुक्म दिया कि अब उन्हें उन का हिस्सा दे दें। (تفسیر الدرالمنثور، النساء:۳۳، ج۲، ص۵۱۱)

आयत (20).....अल्लाह के प्यारे

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَنْ یَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِیْنِهٖ فَسَوْفَ یَاْتِی اللّٰهُ بِقَوْمٍ یُّحِبُّهُمْ وَ یُحِبُّوْنَهٗۤ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِیْنَ٘ یُجَاهِدُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَ لَا یَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآىٕمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ یُؤْتِیْهِ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ﴾ (پ۶، المائدۃ:۵۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़न क़रीब **अल्लाह** ऐसे लोग लाएगा कि वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का

www.dawateislami.net

प्यारा मुसलमानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त **अल्लाह** की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे येह **अल्लाह** का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला इ़ल्म वाला है।''

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم व हज़रते सय्यिदुना ह़सन व क़तादा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से मरवी है कि इस आयते मुबारका में जिन लोगों के अवसाफ़ बयान हुवे वोह हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और इन के अस्ह़ाब हैं जिन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द मुर्तद्द होने और ज़कात से मुन्किर होने वालों से जिहाद किया। (تفسیر الدرالمنثور، المائدۃ:۵۴، ج۳، ص۱۰۲، تفسیر خزائن العرفان، ص۲۲۶)

आयत (21).....चालीस हज़ार दीनार सदक़ा

﴿اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّیْلِ وَ النَّهَارِ سِرًّا وَّ عَلَانِیَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ﴾ (پ۳، البقرۃ:۲۷۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''वोह जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर उन के लिये उन का नेग (अज्र) है उन के रब के पास, उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।''

जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने चालीस हज़ार दीनार इस त़रह़ सदक़ा किये कि दिन में दस हज़ार, रात में दस हज़ार, छुपा कर दस हज़ार और ए'लानिय्या दस हज़ार तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के ह़क़ में येह आयते मुबारका नाज़िल हुई। (تفسیر روح المعانی، البقرۃ:۲۷۴، ج۳، ص۶۲، تفسیر خزائن العرفان، ص۹۶)

आयत (22).....इ़ल्म वाले

﴿اِنَّمَا یَخْشَی اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ غَفُوْرٌ﴾ (پ۲۲، فاطر:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ''**अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला इ़ज़्ज़त वाला।''

अ़ल्लामा मह़मूद बिन **अ़ब्दुल्लाह** हुसैनी आलूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी में इरशाद फ़रमाते हैं कि बा'ज़ अक़्वाल के मुत़ाबिक़ येह आयते करीमा भी ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नाज़िल हुई कि आप पर ख़शिय्यते इलाही का ग़लबा था। (تفسیر روح المعانی، فاطر:۲۸، الجزء:۲۲، ص۴۹۹)

आयत (23).....अहले बैत से मह़ब्बत

﴿ذٰلِكَ الَّذِیْ یُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِؕ قُلْ لَّاۤ اَسْــٴَـلُكُمْ عَلَیْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰىؕ وَ مَنْ یَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِیْهَا حُسْنًاؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ﴾(پ۲۵، الشوری:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "येह है वोह जिस की खुश ख़बरी देता है **अल्लाह** अपने बन्दों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किये तुम फ़रमाओ मैं इस पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की मह़ब्बत और जो नेक काम करे हम उस के लिये इस में और ख़ूबी बढ़ाएं, बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है।"

येह आयते मुबारका भी ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़क़ में नाज़िल हुई क्यूंकि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अहले बैत से बहुत गहरी मह़ब्बत रखते थे।

(تفسیر روح المعانی، الشوری:۲۳، الجزء:۲۵، ص۴۷)

आयत (24).....नेकियों की क़बूलिय्यत

﴿اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَ نَتَجَاوَزُ عَنْ سَیِّاٰتِهِمْ فِیْۤ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِؕ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِیْ كَانُوْا یُوْعَدُوْنَ﴾(پ۲۶، الاحقاف:۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "येह हैं वोह जिन की नेकियां हम क़बूल फ़रमाएंगे और उन की तक़्सीरों से दर गुज़र फ़रमाएंगे जन्नत वालों में सच्चा वा'दा जो उन्हें दिया जाता था।"

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नाज़िल हुई।

(تفسیر الدرالمنثور، الاحقاف:۱۶، ج۷، ص۴۴۱)

आयत (25).....रब की रह़मत

﴿وَ اِذَا جَآءَكَ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِاٰیٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَ اَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ﴾(پ۷، الانعام:۵۴)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जब तुम्हारे हुज़ूर वोह ह़ाज़िर हों जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उन से फ़रमाओ तुम पर सलाम, तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्मए करम पर रह़मत लाज़िम कर ली है कि तुम में जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर इस के बा'द तौबा करे और संवर जाए तो बेशक **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।"

ह़ज़रते अ़ता رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र, उ़मर फ़ारूक़, उ़स्माने ग़नी, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, बिलाल, सालिम बिन अबू उ़बैदा, मुस्अ़ब बिन उ़मैर, ह़म्ज़ा, जा'फ़र, उ़स्मान बिन मज़्ऊन, अ़म्मार बिन यासिर, अरक़म बिन अबुल अरक़म, अबू सलमह बिन अ़ब्दुल असद इन तमाम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के बारे में नाज़िल हुई। (تفسیر الخازن، الانعام:۵۴، ج۲، ص۲۰)

आयत (26).....ईमान वालों का अज्र

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِیْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا﴾ (پ۱۵، الکھف:۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक जो ईमान लाए और नेक काम किये हम उन के नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों।"

येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, उ़मर फ़ारूक़, उ़स्माने ग़नी और अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمْ) के बारे में नाज़िल हुई, इन चारों की मौजूदगी में एक आ'राबी ने सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा : **"या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह आयत किस के बारे में नाज़िल हुई है?" तो इरशाद फ़रमाया : "अपनी क़ौम को बता दो कि येह आयते मुबारका इन चारों के बारे में नाज़िल हुई है।"

(تفسیر المحرر الوجیز، الکھف:۳۰، ج۳، ص۵۱۵)

आयत (27).....तवाज़ोअ़ करने वाले

﴿وَ لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّیَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِیْمَةِ الْاَنْعَامِؕ
فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗۤ اَسْلِمُوْاؕ وَ بَشِّرِ الْمُخْبِتِیْنَ﴾ (پ۱۷، الحج:۳۴)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और हर उम्मत के लिये हम ने एक कुरबानी मुक़र्रर फ़रमाई कि **अल्लाह** का नाम लें उस के दिये हुवे बे ज़बान चोपायों पर तो तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है तो उसी के हुज़ूर गर्दन रखो और ऐ महबूब ख़ुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को।"

येह आयते मुबारका भी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ व उ़स्माने ग़नी व अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) के बारे में नाज़िल हुई।

(تفسیر المحرر الوجیز، الحج:۳۴،ج۴،ص۱۲۲)

आयत (28).....अ़क़्ल वालों को नसीह़त

﴿هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَ لِیُنْذَرُوْا بِهٖ وَ لِیَعْلَمُوْۤا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ لِیَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ﴾(پ۱۳،ابراھیم:۵۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह लोगों को हुक्म पहुंचाना है और इस लिये कि वोह उस से डराए जाएं और इस लिये कि वोह जान लें कि वोह एक ही मा'बूद है और इस लिये कि अ़क़्ल वाले नसीह़त मानें।"

येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बारे में नाज़िल हुई। (تفسیر النکت والعیون، ابراھیم:۵۲،ج۲،ص۳۳۹)

आयत (29).....आवाज़ पस्त करने वाले

﴿اِنَّ الَّذِیْنَ یَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓىٕكَ الَّذِیْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰىؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ عَظِیْمٌ﴾(پ۲۶،الحجرات،۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं **रसूलुल्लाह** के पास वोह हैं जिन का दिल **अल्लाह** ने परहेज़गारी के लिये परख लिया है उन के लिये बख़्शिश और बड़ा सवाब है।"

जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई

﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِیِّ وَ لَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ﴾الآیۃ۔ (پ۲۶،الحجرات:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से और इन के हुज़ूर बात चिल्ला कर न कहो।"

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) और बा'ज़ और सह़ाबा ने बहुत एह़तियात़ लाज़िम कर ली और ख़िदमते अक़्दस में बहुत ही पस्त आवाज़ से अ़र्ज़ मा'रूज़ करते इन ह़ज़रात के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई।

(تفسیر خزائن العرفان، ص۹۴۸، تفسیر البحر المحیط، الحجرات:۳، ج۸، ص۱۰۶)

आयत (30).....इस्लाम की दा'वत

﴿قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا یَنْفَعُنَا وَ لَا یَضُرُّنَا وَ نُرَدُّ عَلٰۤى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِی اسْتَهْوَتْهُ الشَّیٰطِیْنُ فِی الْاَرْضِ حَیْرَانَ۪ لَهٗۤ اَصْحٰبٌ یَّدْعُوْنَهٗۤ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَاؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰىؕ وَ اُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ﴾ (پ۷، الانعام:۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम फ़रमाओ क्या हम **अल्लाह** के सिवा उस को पूजें जो हमारा न भला करे न बुरा और उलटे पाऊं पलटा दिये जाएं बा'द इस के कि **अल्लाह** ने हमें राह दिखाई उस की त़रह़ जिसे शैत़ानों ने ज़मीन में राह भुला दी ह़ैरान है उस के रफ़ीक़ उसे राह की त़रफ़ बुला रहे हैं कि इधर आ, तुम फ़रमाओ कि **अल्लाह** ही कि हिदायत, हिदायत है और हमें हुक्म है कि हम उस के लिये गर्दन रख दें जो रब है सारे जहान का।"

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और आप की ज़ौजा ने अपने बेटे को इस्लाम की दा'वत दी तो येह आयते मुबारका नाज़िल हुई। (تفسیر النکت والعیون، الانعام:۷۱، ج۱، ص۴۱۷)

आयत (31).....हिम्मत वाले काम

﴿وَ جَزٰٓؤُا سَیِّئَةٍ سَیِّئَةٌ مِّثْلُهَاۚ فَمَنْ عَفَا وَ اَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الظّٰلِمِیْنَ۝ وَ لَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓىٕكَ مَا عَلَیْهِمْ مِّنْ سَبِیْلٍ۝ اِنَّمَا السَّبِیْلُ عَلَى الَّذِیْنَ یَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَ یَبْغُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّؕ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ۝ وَ لَمَنْ صَبَرَ وَ غَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ۝﴾ (پ۲۵، الشوری:۴۰تا۴۳)

www.dawateislami.net

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और बुराई का बदला उसी के बराबर बुराई है तो जिस ने मुआ़फ़ किया और काम संवारा तो उस का अज्र **अल्लाह** पर है बेशक वोह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को और बेशक जिस ने अपनी मज़्लूमी पर बदला लिया उन पर कुछ मुआख़ज़ा की राह नहीं, मुआख़ज़ा तो उन्हीं पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सरकशी फैलाते हैं उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है और बेशक जिस ने सब्र किया और बख़्श दिया तो येह ज़रूर हिम्मत के काम हैं।"

येह चारों आयात ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नाज़िल हुई। (تفسیر النکت والعیون، الشوری: ۴۰ تا ۴۳، ج۴، ص ۴۷)

आयत (32).....इत़्मीनान वाली जान

﴿يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىٕنَّةُ ﴿۲۷﴾ ارْجِعِیْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِیَةً مَّرْضِیَّةً ﴿۲۸﴾ فَادْخُلِیْ فِیْ عِبٰدِیْ ﴿۲۹﴾ وَ ادْخُلِیْ جَنَّتِیْ ﴿۳۰﴾﴾ (پ۳۰، الفجر: ۲۷ تا ۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ इत़्मीनान वाली जान, अपने रब की त़रफ़ वापस हो यूं कि तू उस से राज़ी वोह तुझ से राज़ी, फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो और मेरी जन्नत में आ।"

येह आयत भी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में नाज़िल हुई, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब आख़िरी आयत नाज़िल हुई तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत में ही मौजूद थे आप ने येह आयत सुनते ही अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह कितनी प्यारी बात है।" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़न क़रीब (मौत के वक़्त) येह बात तुम्हें कही जाएगी।" (تفسیر النکت والعیون، الفجر: ۲۷ تا ۳۰، ج۴، ص ۴۱۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बारहवां बाब

अहादीसे फ़ज़ाइल

सिद्दीक़े अक्बर की फ़ज़ीलत पर कमो बेश 200 अहादीसे मुबारका

www.dawateislami.net

अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (1)

फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने महबूबे सिद्दीक़े अक्बर

बारगाहे रिसालत में मक़ामो मर्तबा

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने देखा कि **ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم के साथ खड़े थे इतने में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले आए तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आगे बढ़ कर इन से मुसाफ़ह़ा फ़रमाया फिर गले लगा कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुंह को चूम लिया और हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबुल ह़सन ! मेरे नज़्दीक अबू बक्र का वोही मक़ाम है जो **अल्लाह** के हां मेरा मक़ाम है।" (الریاض النضرۃ،ج۱،ص۱۸۵)

सितारों के मिस्ल नेकियां

हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है, फ़रमाती हैं कि एक बार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सर मुबारक मेरी गोद में था और रात रोशन थी, मैं ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या किसी की नेकियां आस्मान के सितारों जितनी होंगी ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जी हां ! वोह उ़मर हैं, जिन की नेकियां इन सितारों जितनी हैं।" हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : "मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फिर मेरे वालिदे माजिद सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नेकियां किस दरजे में हैं ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उ़मर की तमाम नेकियां अबू बक्र की नेकियों में से सिर्फ़ एक नेकी के बराबर हैं।"

(مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، الفصل الثالث، الحدیث:۶۰۶۸، ج۲، ص۴۲۹)

www.dawateislami.net

उम्मुल मोअमिनीन और अक़ीदए इल्मे ग़ैबे मुस्तफ़ा

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْحَنَّان इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : "(जिस वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सरे अक़्दस सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا की गोद में था उस वक़्त) हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا की गोद अर्शे मुअल्ला से अफ़्ज़ल हो गई होगी कि वोह साहिबे क़ुरआन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिहल बनी। (और हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا) के सुवाल से मा'लूम हो रहा है कि हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का अक़ीदा येह था कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हर आस्मान के हर गोशे की ख़बर है और ज़मीन के हर कोना और ता क़ियामत अपने हर उम्मती के हर अमल की ख़बर है क्यूंकि तारे मुख़्तलिफ़ आस्मानों पर हैं और उम्मत की इबादतें ज़मीन के मुख़्तलिफ़ गोशों में दिन के उजाले में रात के अन्धेरे में होंगी, दो चीज़ों की बराबरी या कमी बेशी वोह ही बता सकता है जिसे दोनों की ख़बर हो, येह है हज़रते आइशा सिद्दीक़ा उम्मुल मोअमिनीन (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا) का अक़ीदा।" मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं : "येह है हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का इल्म कि न येह फ़रमाया कि जिब्रीले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) को आने दो पूछ कर बताएंगे, न येह कि क़लम दवात काग़ज़ लाओ टोटल लगा कर कहेंगे, न येह कि ज़रा मुझे सोच कर हिसाब लगा लेने दो बिला तअम्मुल फ़रमाया कि मेरी सारी उम्मत में हज़रते उमर (رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ) वोह हैं जिन की नेकियां ता'दाद में आस्मानों के तारों के बराबर हैं, **येह है हुज़ूर का इल्मे ग़ैबे कुल्ली**।" (मिरआतुल मनाजीह, जि. 8 स. 391)

बारगाहे रिसालत में सिद्दीक़े अक्बर की अहम्मिय्यत

हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन मसऊद رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि जंगे उहुद में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपने बेटे अब्दुर्रहमान को (जो उस वक़्त मुसलमान नहीं हुवे थे और कुफ़्फ़ार की तरफ़ से लड़ रहे थे) मुक़ाबले के लिये ललकारा तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को बैठने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे इजाज़त अ़ता फ़रमाएं, मैं इन के अव्वल दस्ते में घुस जाऊंगा।" तो नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! अभी तो हमें तुम्हारी ज़ात से बहुत से फ़ाइदे उठाने हैं और तुम्हें मा'लूम नहीं कि मेरे नज़दीक तुम्हारी हैसिय्यत ब मन्ज़िला कान और आंख के है।"

(روح البیان، المجادلۃ: ۲۲، ج ۹، ص ۴۱۳، روح المعانی، الجزء: ۲۸، المجادلۃ: ۲۲، ص ۳۲۳، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۸۵، ۱۸۶)

सिद्दीक़े अक्बर और जन्नत

जन्नत के तमाम दरवाज़ों से बुलावा

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने **अल्लाह** की राह में कोई चीज़ दो दो कर के ख़र्च की उसे जन्नत के दरवाज़ों से इस त़रह़ आवाज़ आएगी : "ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! येह दरवाज़ा तेरे लिये बेहतर है।" पस नमाज़ी को **बाबुस्सलात** से, अहले जिहाद को **बाबुज्जिहाद** से, सदक़ात व ख़ैरात करने वाले को **बाबुस्सदक़ह** से और रोज़ादार को **बाबुर्रय्यान** से बुलाया जाएगा।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे-मां बाप आप पर क़ुरबान ! किसी को इन तमाम दरवाज़ों से पुकारा जाए इस की ज़रूरत तो नहीं (क्यूंकि मक़्सूद तो जन्नत में दाख़िला है और वोह किसी एक दरवाज़े से भी पूरा हो जाएगा) लेकिन क्या ऐसे लोग भी होंगे जिन्हें इन दरवाज़ों से बुलाया जाएगा ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! हां और यक़ीनन तुम उन ही लोगों में से हो।"

(صحیح البخاری، کتاب الصوم، الریان للصائمین، الحدیث: ۱۸۹۷، ج ۱، ص ۶۲۵)

www.dawateislami.net

सिद्दीके़ अक्बर की जन्नत में अम्बियाए किराम की मइय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "फ़िरिश्ते अबू बक्र सिद्दीक़ को रोजे़ कि़यामत लाएंगे, और अम्बिया व सिद्दीक़ीन के साथ जन्नत में जगह देंगे।"

(کنز العمال، فضل ابی بکر الصدیق، الحدیث:۳۲۶۲۴، ج۶، الجزء:۱۱، ص۲۵۵)

सिद्दीके़ अक्बर और जन्नती मोटे ताजे़ परन्दे

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बेशक जन्नत में कुछ परन्दे बख़्ती ऊंटों की त़रह़ बडे़ और मोटे ताजे़ होंगे और (जिस त़रह़ ऊंट दरख़्तों से चरते हैं वैसे ही वोह परन्दे) जन्नती दरख़्तों से चरते होंगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वोह तो मोटे ताजे़ परन्दे होंगे।" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हां ! उन को खाने वाला भी उन की त़रह़ आसूदा (या'नी मोटा ताज़ा) होगा और मुझे यक़ीन है कि तुम उन मोटे ताजे़ जन्नती परन्दे खाने वालों में से हो।" (مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، الحدیث:۱۳۳۱۰، ج۴، ص۴۴۱)

सिद्दीके़ अक्बर और जन्नती दरख़्त "तूबा"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि बारगाहे रिसालत में "तूबा" का ज़िक्र हुवा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! तूबा को जानते हो ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही बेहतर जानते हैं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "येह एक जन्नती दरख़्त है जिस की लम्बाई चोड़ाई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है अलबत्ता इस की एक टहनी के साए में एक घुड़ सुवार सत्तर70 साल तक भाग सकता

www.dawateislami.net

है और इस के पत्ते रेशमी हुल्लों की मानिन्द हैं। इन दरख़्तों पर बख़्ती ऊंटों जैसे बड़े और मोटे ताज़े परन्दे बैठते होंगे।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अर्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या वहां इतने बड़े और मोटे ताज़े परन्दे होंगे ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो इन्हें खाएगा वोह भी इन की तरह आसूदा (या'नी मोटा ताज़ा) हो जाएगा और ऐ अबू बक्र ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो तुम इन्हीं में से होगे।" (تفسیر ابن کثیر، الواقعۃ:۱۷، ج۸، ص۱۳)

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : "जन्नत के खाने इस से भी ज़ियादा लज़ीज़ हैं या'नी येह परन्दे तो देखने की ने'मत है अगर वहां के खाने देखो तो वोह इन से कहीं ज़ियादा अच्छे हैं।"

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 7 स. 499)

सिद्दीक़े अक्बर का जन्नत में बुलन्दो बाला महल

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मे'राज की रात जब मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो मैं ने वहां एक बुलन्दो बाला महल देखा जिस पर रेशम के पर्दे लगे हुवे थे, मैं ने कहा : "जिब्रील ! येह किस के लिये है ?" उन्हों ने अर्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह आप के ग़ुलाम व आशिक़े सादिक़ सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का है।" (الریاض النضرۃ، ج۱، ص۱۸۳)

सिद्दीक़े अक्बर के लिये गुलाब जैसी चार सो हूरें

हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआला ने कुछ जन्नती हूरों को फूलों से पैदा फ़रमाया है और उन्हें गुलाबी हूरें कहा जाता है, उन से सिर्फ़ नबी या सिद्दीक़ या शहीद ही निकाह कर सकते हैं और अबू बक्र को ऐसी चार सो400 हूरें दी जाएंगी।" (الریاض النضرۃ، ج۱، ص۱۸۴)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर का जन्नत में पुर तपाक इस्तिक़्बाल

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जन्नत में एक ऐसा शख़्स दाख़िल होगा कि तमाम जन्नत वाले उसे पुकार पुकार कर कहेंगे : मरह़बा ! मरह़बा यहां तशरीफ़ लाइये, यहां तशरीफ़ लाइये।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बड़े तअ़ज्जुब से पूछा : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या हम भी उस शख़्स को देख सकेंगे ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! वोह जन्नती शख़्स तुम ही तो हो।"

(صحیح ابن حبان، اخبارہ عن مناقب الصحابة، ذکر ترحیب اھل الجنة بابی بکر، الحدیث: ٦٨٢٨، ج٦، الجزء: ٩، ص٧)

तमाम आस्मानों में आप का नाम

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझे आस्मानों की सैर कराई गई पस मेरा जिस आस्मान से गुज़र हुवा मैं ने वहां अपना नाम लिखा हुवा पाया और अपने बा'द अबू बक्र का नाम भी लिखा हुवा पाया।"

(مجمع الزوائد، کتاب المناقب، باب ماجاء فی ابی بکر الصدیق، الحدیث: ١٤٢٩٦، ج٩، ص١٩، تاریخ الخلفاء، ص٤٣)

नूरानी क़लम से लिखा हुवा नाम

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने शबे मे'राज अ़र्शे आ'ज़म के गिर्द सब्ज़ जवाहिर पर नूरानी क़लम से لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ اَبُوْبَکْرِ الصِّدِّیْقُ लिखा देखा।" (الریاض النضرة، ج١، ص١٦٧)

www.dawateislami.net

नूरानी झन्डे पर आप का नाम

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला का एक नूरानी झन्डा है जिस पर लिखा है : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه اَبُوْبَكْرِ الصِّدِّيْق" (الرياض النضرة، ج ١، ص ١٢٨)

तीनों अहादीस में मुताबक़त

मज़्कूरा तीनों अहादीस में ह़क़ीक़तन कोई तआ़रुज़ (टकराव) नहीं। मुमकिन है दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के नाम के साथ सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ का नाम हर आस्मान पर भी हो और अ़र्शे आ'ज़म के इर्द गिर्द जवाहिर और नूरानी झन्डे पर भी हो। (الرياض النضرة، ج ١، ص ١٦٧)

मोहसिने काइनात के मोहसिन

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुझ पर जिस किसी का एहसान था मैं ने उस का बदला चुका दिया है, मगर अबू बक्र के मुझ पर वोह एहसानात हैं जिन का बदला **अल्लाह** तआ़ला रोज़े क़ियामत उन्हें अ़ता फ़रमाएगा।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی بکر وعمر، الحدیث: ٣٦٨١، ج ٥، ص ٣٧٤)

नूर से मा'मूर दिल

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के भाई हज़रते सय्यिदुना अ़क़ील बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ के माबैन शकर रन्जी (नाराज़ी) हो गई, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہ उन की नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से नसबी क़राबत की वजह से रू गर्दानी फ़रमाते रहे, अलबत्ता तमाम माजिरा बारगाहे रिसालत में बयान कर दिया। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप से तमाम सूरते ह़ाल दरयाफ़्त फ़रमाने के बा'द

www.dawateislami.net

लोगों में तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : "तुम लोगों और अबू बक्र का क्या मुवाज़ना ? खुदा की क़सम ! तुम में से हर एक के दिल पर अन्धेरा है, सिवाए अबू बक्र सिद्दीक़ के कि इस का **दिल नूर से मा'मूर** है। खुदा की क़सम ! तुम लोगों ने इस्लाम के इबतिदाई ज़माने में मुझे झुटलाया, मगर सिद्दीक़ ने मेरी तस्दीक़ की, तुम ने अपने माल रोक लिये इस ने मेरी ख़ातिर अपना सब कुछ लुटा दिया, और तुम ने मुझे ज़िल्लत देने की कोशिश की लेकिन अबू बक्र ने मेरी मदद और मेरी इत्तिबाअ़ की।" (تاریخ مدینۃ دمشق، حرف العین، ج٣٠، ص١١٠)

सिद्दीक़े अक्बर के लिये रसूलुल्लाह की हिमायत

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "मैं एक बार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर था, अचानक हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ घुटनों तक दामन उठाए हाज़िरे ख़िदमत हुवे। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें देखते ही इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! क्या तुम्हारे दोस्त और तुम्हारे मा बैन किसी बात पर झगड़ा हुवा है ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ग़मगीन लहजे में अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे और उ़मर बिन ख़त्ताब के दरमियान कुछ शकर रन्जी (नाराज़ी) हो गई थी, मैं ने उन से कुछ सख़्त कलामी कर दी, फिर मैं ने नादिम हो कर उन से मुआ़फ़ी भी मांगी मगर उन्हों ने मुआ़फ़ नहीं किया। इस लिये मैं आप के हुज़ूर हाज़िर हुवा हूं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन बार फ़रमाया "अबू बक्र **अल्लाह** तुम्हें मुआ़फ़ करे।" इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भी नदामत हुई तो वोह सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मकान पर गए तो मा'लूम हुवा कि वोह तो बारगाहे रिसालत में गए हुवे हैं, हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी वहीं पहुंच गए, जैसे ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वहां पहुंचे उन्हें देख कर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़े अन्वर पर जलाल के आसार ज़ाहिर हो गए, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह देख कर डर गए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घुटनों पर हाथ रख कर आ़जिज़ाना अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उ़मर के साथ सख़्त कलामी मैं ने की थी।" दोबारा येही कहा तो सरकारे

www.dawateislami.net

वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ लोगो ! अल्लाह तआ़ला ने मुझे तुम्हारी त़रफ़ रसूल बना कर भेजा तो तुम ने मुझे झूटलाया, मगर अबू बक्र ने मेरी तस्दीक़ की, फिर इस ने अपना जानो माल सब कुछ मुझ पर फ़िदा कर दिया तो क्या तुम मेरे दोस्त के मुआ़मले को मेरी वजह से बरदाश्त नहीं कर सकते ?” आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दो बार येह इरशाद फ़रमाया। इस के बा'द सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को किसी ने ईज़ा न दी।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی لو کنت متخذا خلیلا، الحدیث: ۳۶۶۱، ج۲، ص ۵۱۹)

जानो माल से सरकार की मदद

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “अबू बक्र दुन्या व आख़िरत में मेरा भाई है, अल्लाह इस पर रह़्म फ़रमाए और अल्लाह के रसूल की त़रफ़ से इसे बेहतर जज़ा दे कि इस ने अपनी जानो माल से मेरी मदद की है।” (الریاض النضرۃ، ج۱، ص ۱۳۱)

सब से ज़ियादा फ़ाइदा पहुंचाने वाले

दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जिस शख़्स की सोह़बत और माल ने मुझे सब लोगों से ज़ियादा फ़ाइदा पहुंचाया वोह अबू बक्र बिन अबी क़ुह़ाफ़ा है और अगर मैं दुन्या में किसी को ख़लील बनाता तो अबू बक्र को बनाता लेकिन इस्लामी उख़ुव्वत क़ाइम है।”

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب ھجرۃ النبی واصحابہ الی المدینۃ، الحدیث: ۳۹۰۴، ج۲، ص ۵۹۱)

ह़दीसे पाक की शर्ह़

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : “ख़लील या तो बना है “**ख़ुल्लत**” से ब मा'ना “दिली दोस्त” जिस की मह़ब्बत दिल की गहराई में उतर जाए, हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का ऐसा मह़बूब सिर्फ़

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही है । या बना है "ख़ल्लत" से ब मा'ना "ह़ाजत" या'नी वोह दोस्त जिस पर तवक्कुल किया जाए और ज़रूरत के वक़्त उस से मुश्किल कुशाई और ह़ाजत रवाई कराई जाए हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का ऐसा कारसाज़ ह़ाजत रवा मह़बूब सिवाए खुदा के कोई नहीं । वरना अस्ल मह़ब्बत हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को जनाबे सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से बहुत ही है । (इस फ़रमान "**लेकिन इस्लामी उख़ुवत क़ाइम है**" से मुराद येह है कि) हम मुत़लक़न मह़ब्बत की नफ़ी नहीं कर रहे हैं मोह़ताजी, ह़ाजत रवाई की नफ़ी है, या जिगरी व दिली मह़ब्बत की जो सिर्फ़ एक से ही हो सकती है ईमानी मह़ब्बत इन से अ़ला वजहिल कमाल है ।" (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 8, स. 346)

सिद्दीक़े अक्बर का नूरानी दरवाज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुत्बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "मस्जिदे नबवी में अबू बक्र सिद्दीक़ के सिवा सब लोगों के दरवाज़े बन्द कर दिये जाएं कि अबू बक्र के इ़लावा कोई ऐसा शख़्स नहीं जिस ने अपनी जानो माल के ज़रीए़ सब से ज़ियादा मेरी मदद की हो ।" बा'ज़ लोगों ने कहा कि आप ने अपने दोस्त के सिवा सब के दरवाज़े बन्द करा दिये । जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह बात पहुंची तो इरशाद फ़रमाया : "मैं ने लोगों के दरवाज़ों पर तारीकी और अबू बक्र के दरवाज़े पर नूर देखा और लोगों की येह तारीकी हर आने वाले दिन बढ़ती जाएगी ।"

(کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، الحدیث: ۳۵۶۸۱، ج۶، الجزء: ۱۲، ص۲۳۵)

शाने सिद्दीक़े अक्बर

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुहि़ब्ब त़बरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : "मस्जिदे नबवी की दीवारों में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अपने अपने घरों के क़रीब दरवाज़े बना रखे थे जिन से रोशनी भी आती थी और नमाज़े बा जमाअ़त के लिये जल्द अज़ जल्द पहुंचने की

www.dawateislami.net

सहूलत भी थी, बा'द में सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह तमाम दरवाज़े बन्द करा दिये ताकि मस्जिद का एक ही रास्ता मुतअ़य्यन हो जाए और तक़द्दुस भी बर क़रार रहे, अलबत्ता ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का दरवाज़ा क़ाइम रहने दिया गया और येह हुक्म सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़ाहिरी ह़याते मुबारका के आख़िरी अय्याम में फ़रमाया था, इस में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िलाफ़त व इमामत की त़रफ़ भी इशारा है क्यूंकि इमाम के मकान का दरवाज़ा मस्जिद ही में खुला करता है।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۱۲۸)

सब से बढ़ कर अम्न देने वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मरज़े वफ़ात में अपना सर बांधे मस्जिद में तशरीफ़ लाए, मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुवे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान करने के बा'द इरशाद फ़रमाया : "किसी शख़्स ने अबू क़ुह़ाफ़ा के बेटे से बढ़ कर अपनी जानो माल से मुझे अम्न नहीं दिया, अगर मैं किसी को ख़लील बनाता तो अबू बक्र को बनाता मगर इस्लामी मह़ब्बत और भाई चारा अफ़्ज़ल है। मस्जिद का हर दरवाज़ा बन्द कर दो मगर अबू बक्र का दरवाज़ा खुला रहने दो।"

(صحیح البخاری، کتاب الصلوۃ، باب الخوخۃ والممر فی المسجد، الحدیث:۴۶۷،ج ۱،ص ۱۷۷)

सब से ज़ियादा एह़सान

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र से बढ़ कर किसी ने मुझ पर एह़सान नहीं किया, इन्हों ने अपनी जानो माल से मेरी मदद की और अपनी बेटी का निकाह़ मुझ से किया।" (المعجم الاوسط، من اسمہ علی، الحدیث:۳۸۳۵،ج ۳،ص ۵۰)

उम्मते मुह़म्मदिय्या पर तीन चीज़ों का वुजूब

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लोगों में जिस ने अपनी दोस्ती और माल

www.dawateislami.net

के ज़रीए मुझ पर सब से ज़ियादा एह्सान किये वोह अबू बक्र सिद्दीक़ हैं, पस इन से महब्बत रखना, इन का शुक्रिया अदा करना और इन की हिफ़ाज़त करना मेरी उम्मत पर वाजिब है।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۱۲۹)

रिज़वाने अक्बर की दुआ

हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ारे सौर तशरीफ़ ले जाने लगे तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ऊंटनी पेश करते हुवे अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस पर सुवार हो जाइये।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुवार हो गए फिर आप ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें रिज़वाने अक्बर अ़ता फ़रमाए।" अ़र्ज़ किया : "वोह क्या है ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला तमाम बन्दों पर आ़म तजल्ली और तुम पर ख़ास़ तजल्ली फ़रमाएगा।"

(الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۱۲۶)

या'नी महबूबो मुहिब में नहीं मेरा तेरा

जानो माल सब कुछ फ़िदा

साहिबे मरविय्याते कसीरा हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "مَانَفَعَنِیْ مَالٌ قَطُّ مَانَفَعَنِیْ مَالُ اَبِیْ بَکْرٍ या'नी मुझे किसी के माल ने इतना फ़ाइदा नहीं पहुंचाया जितना अबू बक्र सिद्दीक़ के माल ने फ़ाइदा पहुंचाया।" येह सुन कर सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने लगे और अ़र्ज़ किया : "هَلْ اَنَا وَمَالِیْ اِلَّا لَکَ یَارَسُوْلَ اللّٰہِ या'नी **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी जान और मेरे माल के मालिक आप ही तो हैं।"

(سنن ابن ماجۃ،کتاب السنۃ،باب فی فضائل اصحاب رسول اللہ،الحدیث:۹۴،ج ۱،ص ۷۲)

वोही आंख उन का जो मुंह तके, वोही लब कि महूव हों ना'त में
वोही सर जो उन के लिये झुके, वोही दिल जो उन पे निसार है

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायते मुबारका से मा'लूम हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुबारक अ़क़ीदा भी येही था कि हम दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुलाम हैं और ग़ुलाम के तमाम माल व मनाल का मालिक उस का आक़ा ही होता है, हम ग़ुलामों का तो अपना है ही क्या ?

क्या पेश करें जानां क्या चीज़ हमारी है
येह दिल भी तुम्हारा है येह जां भी तुम्हारी है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपने माल जैसा तसर्रुफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र के माल जैसा नफ़्अ़ मुझे किसी माल से ह़ासिल नहीं हुवा ।" और दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के माल में अपने माल जैसा तसर्रुफ़ फ़रमाया करते थे । (المصنف لعبد الرزاق، کتاب الجامع، باب اصحاب النبی، الحدیث:۲۰۸۴۸، ج۱۰، ص۲۲۲)

ख़ुदा चाहता है रिज़ाए सिद्दीक़

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर था वहां सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसा चोग़ा पहने तशरीफ़ फ़रमा थे जिस में बटनों की जगह कांटे लगे हुवे थे । इतने में जिब्रीले अमीन बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आज अबू बक्र ने ऐसा चोग़ा क्यूं पहना हुवा है ?" फ़रमाया : "ऐ जिब्रील ! इस ने अपना सारा माल फ़त्ह़े मक्का से पहले मुझ पर क़ुरबान कर दिया है ।" जिब्रील ने अ़र्ज़ किया : "**अल्लाह** आप पर सलाम भेजता है, और फ़रमाता

www.dawateislami.net

है इन से पूछिये कि वोह **अल्लाह** से राज़ी हैं या नाराज़ ?" नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अबू बक्र ! **अल्लाह** तुम्हें सलाम इरशाद फ़रमाता है और फ़रमाता है कि मुझ से राज़ी हो या नहीं ?" सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ किया : "मैं अपने परवर दगार से नाराज़ कैसे हो सकता हूं ? मैं अपने रब से राज़ी हूं, मैं अपने रब से राज़ी हूं, मैं अपने रब से राज़ी हूं।" (تاریخ مدینة دمشق، ج۳۰، ص۷۱)

मह़बूबे ह़बीबे ख़ुदा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में आप को सब से बढ़ कर कौन मह़बूब है ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आ़इशा" इन्हों ने दोबारा अ़र्ज़ किया : "मर्दों में से कौन है ?" फ़रमाया : "आ़इशा के वालिद।" (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه)

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، غزوۃ ذات السلاسل، الحدیث:۴۳۵۸، ج۳، ص۱۲۶ مختصرا)

सब से ज़ियादा मेहरबान

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत के लिये सब से ज़ियादा मेहरबान अबू बक्र सिद्दीक़ हैं।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب معاذ بن جبل، الحدیث:۳۸۱۵، ج۵، ص۴۳۵ ملتقطا)

इन्सानों में सब से अफ़्ज़ल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मुझे नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के आगे चलते हुवे देखा तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू दरदा ! तुम उस शख़्स

www.dawateislami.net

के आगे चलते हो जो दुन्या व आख़िरत में तुम से बेहतर है, अम्बिया व मुर्सलीन के बा'द किसी इन्सान पर आफ़्ताब तुलूअ़ हुवा और न ग़ुरूब हुवा कि जो अबू बक्र सिद्दीक़ से अफ़्ज़ल हो।'' (حلیۃ الاولیاء، ذکر من تابعی المدینۃ...الخ، باب عطاء بن ابی رباح، الحدیث: ۴۳۱۵، ج۳، ص۳۷۳)

रोज़े महशर शफ़ाअ़ते सिद्दीक़े अक्बर

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक रोज़ हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में हाज़िर थे। आप ने इरशाद फ़रमाया : ''अभी तुम्हारे पास वोह शख़्स आएगा जो मेरे बा'द सारी उम्मत से अफ़्ज़ल है, वोह रोज़े क़ियामत अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की त़रह शफ़ाअ़त करेगा।'' हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अभी थोड़ी ही देर गुज़री थी कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आ गए। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठे उन की पेशानी को बोसा दिया और उन के साथ मुआ़नक़ा भी किया। (تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۱۵۵)

अबू बक्र पर किसी को फ़ज़ीलत न दो

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हम मुहाजिरीन व अन्सार हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरवाज़े के पास बैठे किसी बात पर बह़स कर रहे थे (ग़ालिबन मस्जिद में आप के दरवाज़े के क़रीब बैठे थे क्यूंकि आप का दरवाज़ा मस्जिद में खुलता था) दौराने बह़स आवाज़ें बुलन्द हो गईं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : ''किस बात पर बह़स कर रहे हो ?'' हम ने अ़र्ज़ किया : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ज़ीलत पर बह़स हो रही थी।'' आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''अबू बक्र पर किसी को फ़ज़ीलत मत दो कि वोह दुन्या व आख़िरत में तुम सब से अफ़्ज़ल है।'' (الریاض النضرۃ، ج۱، ص۱۳۷)

अ़रब के दानिश वरों का सरदार

हज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन अबी ख़ालिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने दो आ़लम के

www.dawateislami.net

मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देख कर कहा : "ऐ सरदारे अ़रब ।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तमाम अवलादे आदम का सरदार हूं और तुम्हारे वालिद **अबू बक्र** अ़रब के दानिश वरों के सरदार हैं ।"

(مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الفضائل، ما ذکر فی ابی بکر، الحدیث: ۲۷، ج۷، ص ۴۷۴)

क़ियामत तक सवाब के ह़क़दार

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि एक बार हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुख़ात़ब कर के इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! आदम عَلَیْہِ السَّلَام से क़ियामत तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाने वालों का सवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अ़त़ा किया और मेरी बिअ़्सत से क़ियामत तक ईमान लाने वालों का सवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे अ़त़ा फ़रमाया ।" (تاریخ مدینة دمشق، ج۳۰، ص۱۱۸)

तक़्दीमे सिद्दीक़े अक्बर मिन जानिब रब्बे अक्बर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इरशाद फ़रमाया : "मैं ने बारगाहे इलाही में तीन बार तुम्हें मुक़द्दम करने का सुवाल किया, मगर बारगाहे इलाही से अबू बक्र ही को मुक़द्दम करने का हुक्म आया ।"

(کنز العمال، کتاب الفضائل، الفصل الثانی، ابو بکر الصدیق رضی اللہ عنہ، الحدیث: ۳۲۶۳۴، ج۶، الجزء: ۱۱، ص۲۵۵)

अ़दालते सिद्दीक़े अक्बर ब ताईदे ह़बीबे अक्बर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जंगे हुनैन में हम हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हमराही में जिहाद के लिये निकले, जब हमारा दुश्मन से सामना हुवा तो मुसलमान मुन्तशिर हो गए, मैं ने एक मुशरिक को एक मुसलमान पर ह़ावी देखा तो मैं घूम कर उस की पुश्त की जानिब से ह़म्ला आवर हुवा और उस के कन्धे पर भरपूर ज़र्ब लगाई जिस से उस की ज़िरअ़ कट गई, वोह पलट कर मुझ पर ह़म्ला आवर हुवा, लेकिन मेरी ज़ोरदार ज़र्ब ने उसे मौत के क़रीब कर दिया और थोड़ी ही

www.dawateislami.net

देर में उस गहरे ज़ख़्म की ताब न लाते हुवे वोह मौत के घाट उतर गया। फिर मैं हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचा और उन से पूछा कि आज लोगों को क्या हो गया है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म।" फिर मुसलमान फ़त्ह़याब हो कर वापस लौटे तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस ने किसी काफ़िर को (मुक़ाबला करते हुवे ख़ुद) क़त्ल किया उसे मक़्तूल का माल व अस्लेहा़ दे दिया जाए जब कि वोह क़त्ल पर गवाही लाए।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने भी चूंकि एक काफ़िर को क़त्ल किया था लिहाज़ा मैं ने खड़े हो कर कहा : मेरे क़त्ल करने पर कोई गवाही देने वाला है ? लेकिन कोई खड़ा न हुवा येह कह कर मैं बैठ गया। हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा वोही इरशाद फ़रमाया तो मैं फिर उठा और कहा : मेरे क़त्ल करने पर कोई गवाही देने वाला है ? लेकिन कोई खड़ा न हुवा येह कह कर मैं बैठ गया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीसरी बार वोही इरशाद फ़रमाया तो मैं एक बार फिर खड़ा हो गया लेकिन मेरे कुछ कहने से पहले ही सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू क़तादा ! क्या बात है ?" मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सारा माजरा पेश कर दिया। अचानक एक शख़्स खड़ा हुवा और कहने लगा : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन की गवाही मैं देता हूं और इन्हों ने जिस काफ़िर को क़त्ल किया था उस का सारा सामान मेरे ही पास है और मैं चाहता हूं वोह मेरे ही पास रहे लिहाज़ा आप मुझे इस से दिलवा दीजिये।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "नहीं, ख़ुदा की क़सम ! हरगिज़ नहीं, क्या **अल्लाह** के शेरों में से एक ऐसे शेर के साथ जो मैदाने जंग में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा की ख़ातिर लड़ा हो येह ज़ियादती कर सकता हूं कि इस का माल तुम्हें दे दूं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अबू बक्र ने सच कहा है,** लिहाज़ा अबू क़तादा का माल इसे वापस दे दो।" येह सुन कर उस ने मेरा माल मुझे वापस कर दिया। चुनान्चे, मैं ने वोह माल बेच कर बनू सलमह का एक बाग़ ख़रीद लिया और इस्लाम में येह सब से पहला माले ग़नीमत था जो मुझे ही मिला।

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب قول اللہ تعالی، الحدیث: ۴۳۲۱، ج۳، ص۱۱۲)

www.dawateislami.net

सब से पहले दुख़ूले जन्नत की सआ़दत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام मेरे पास आए और मेरा हाथ पकड़ कर जन्नत का वोह दरवाज़ा दिखाया जिस से मेरी उम्मत जन्नत में दाख़िल होगी।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी येह ख़्वाहिश है कि मैं भी उस वक़्त आप के साथ होता ताकि मैं भी उस दरवाज़े को देख लेता।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अबू बक्र ! मेरी उम्मत में सब से पहले जन्नत में दाख़िल होने वाले शख़्स तुम ही होगे।"

(سنن ابی داود، کتاب السنۃ، باب فی خلفاء، الحدیث: ۴۶۵۲، ج۴، ص ۲۸۰)

आप के उख़रवी इन्आ़मात

बरोज़े क़ियामत बारगाहे रिसालत में पहले ह़ाज़िरी

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बरोज़े क़ियामत मेरे पास सब से पहले अबू बक्र सिद्दीक़ आएंगे।" (الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۶۴)

बरोज़े क़ियामत ह़बीब व ख़लील की क़ुर्बत

हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रोज़े क़ियामत अ़र्शे आ'ज़म के सामने मेरे और हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के लिये एक मिम्बर नस्ब किया जाएगा और अबू बक्र के लिये एक कुरसी नस्ब की जाएगी जिस पर येह बैठेंगे और एक मुनादी यूं निदा करेगा : "**یَا لَکَ مِنْ صِدِّیْقٍ بَیْنَ خَلِیْلٍ وَحَبِیْبٍ** या'नी सिद्दीक़ की अ़ज़मत के क्या कहने ! कि वोह **ख़लीलुल्लाह** और **ह़बीबुल्लाह** के माबैन तशरीफ़ फ़रमा हैं।"

(لسان المیزان، من اسمہ محمد، ج۵، ص ۱۸۲، تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۳۰، ص ۱۵۸)

www.dawateislami.net

रोजे़ क़ियामत सिद्दीके़ अक्बर का हि़साब नहीं होगा

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने शबे मे'राज जिब्रील से पूछा : क्या मेरी उम्मत का हि़साब होगा ? तो जिब्रील ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा बाक़ी तमाम का हि़साब होगा और रोजे़ क़ियामत हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा जाएगा : ऐ अबू बक्र ! जन्नत में दाखि़ल हो जाओ ! वोह कहेंगे : जब तक मुझ से महृब्बत रखने वाले जन्नत में नहीं चले जाते मैं जन्नत में दाखि़ल नहीं होऊंगा ।"

(تاریخ بغداد، ذکر من اسمہ محمد واسم ابیہ جعفر، ج ۲، ص ۱۱۷، العلل المتناھیہ، باب فی فضل ابی بکر الصدیق، ج ۱، ص ۱۹۰، تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۳۰، ص ۱۵۳)

सिद्दीके़ अक्बर पर रब की खु़सूसी तजल्ली

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! **अल्लाह** तआ़ला रोजे़ क़ियामत मख़्लूक़ पर आ़म तजल्ली फ़रमाएगा और तुम पर ख़ास तजल्ली फ़रमाएगा ।" (لسان المیزان، من اسمہ بنوس وبھرام، الرقم: ۱۷۸۳، ج ۲، ص ۱۱۴، اللاٰلی المصنوعۃ، مناقب الخلفاء الاربعۃ، ج ۱، ص ۲۶۲)

सिद्दीके़ अक्बर पर रब का खु़सूसी करम

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खु़दा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "रोजे़ क़ियामत मुनादी निदा करेगा : اَلسَّابِقُوْنَ الْاَوَّلُوْن कहां हैं ? पूछा जाएगा : वोह कौन हैं ? निदा करने वाला कहेगा : अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कहां हैं ? फिर **अल्लाह** तआ़ला लोगों के लिये आ़म और अबू बक्र के लिये ख़ास तजल्ली फ़रमाएगा ।"

(الآلی المصنوعۃ، مناقب الخلفاء الاربعۃ، ج ۱، ص ۲۶۴ ملتقطا، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۶۵)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर के लिये ख़ुसूसी दुआ

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हम सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठे थे कि बनी अ़ब्दुल क़ैस का वफ़्द आ गया, इन में से एक शख़्स ने यावा गोई शुरूअ़ कर दी। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र ! तुम ने येह बातें सुनीं ?" अ़र्ज़ किया : "जी हां।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इन्हें जवाब दो।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन्हें ज़बरदस्त जवाब दिया। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ अबू बक्र ! **अल्लाह** तुम्हें रिज़्वाने अक्बर देगा : अ़र्ज़ किया गया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रिज़्वाने अक्बर से क्या मुराद है ?" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला दूसरे लोगों पर आ़म और तुम पर ख़ास तजल्ली फ़रमाएगा।"

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفة الصحابة، باب یتجلی اللہ لعبادہ ـــ الخ، الحدیث: ۴۵۲۰، ج۴، ص۲۷، حلیة الاولیاء، محمد بن سوقة، الرقم: ۶۱۳۳، ج۵، ص۱۲)

हौज़े कौसर के साथी

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया : "**اَنْتَ صَاحِبِیْ عَلَی الْحَوْضِ وَصَاحِبِیْ فِی الْغَارِ** या'नी ऐ अबू बक्र ! तुम सफ़रे हिजरत में ग़ार में मेरे साथी थे लिहाज़ा हौज़े कौसर पर भी मेरे साथी होगे।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، فی مناقب ابی بکر وعمر، الحدیث: ۳۶۹۰، ج۵، ص۳۷۸)

जन्नत में रफ़ाक़त की दुआ

हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़क़ में दुआ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "ऐ **अल्लाह** ! मैं ने ग़ार में सिद्दीक़ को अपना रफ़ीक़ बनाया था, तू इसे जन्नत में मेरा रफ़ीक़ बना दे।"

(میزان الاعتدال فی نقد الرجال، المحمدون، ج۱، ص۶۳۲، تاریخ مدینة دمشق، ج۳۰، ص۱۵۱، لسان المیزان، حرف المیم، ج۵، ص۴۱۸)

www.dawateislami.net

जन्नत में रफ़ाक़त

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "لِكُلِّ نَبِيٍّ رَفِيْقٌ وَرَفِيْقِيْ فِي الْجَنَّةِ اَبُوْبَكْر हर नबी का एक रफ़ीक़ था और जन्नत में मेरा रफ़ीक़ अबू बक्र होगा।" (الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۲۴، تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۳۰، ص ۱۵۰)

उम्रे ख़ैर में सब से आगे

सिद्दीक़े अक्बर के लिये जन्नत की बिशारत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आज रोज़ा किस ने रखा है?" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा पूछा : "आज जनाज़े में किस ने शिर्कत की है?" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "मैं ने।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बार फिर पूछा : "मरीज़ की इयादत किस ने की है?" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "मैं ने।" येह सुन कर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जिस शख़्स में येह नेक आ'माल इकट्ठे हो जाएं वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" (صحیح مسلم، کتاب الزکوۃ، باب من جمع الصدقۃ۔۔۔الخ، الحدیث: ۱۰۲۸، ص ۵۱۳)

सुब्ह ही सुब्ह नेकियों में सबक़त

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक दिन रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़े फ़ज्र से फ़ारिग़ हो कर इरशाद फ़रमाया : "आज किस ने रोज़ा रखा है?" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने रोज़े की निय्यत नहीं की और न

www.dawateislami.net

ही ऐसा इरादा है ।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात को फ़क़त् मेरा इरादा था और सुब्ह़ मैं रोज़े से था ।" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आज किस ने मरीज़ की इयादत की है ?" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अभी तो हम नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे हैं और मस्जिद से बाहर भी नहीं निकले, मरीज़ की इयादत कैसे करते ?" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "**या नबिय्यल्लाह** ! मेरे भाई हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बीमार हैं, आज मिज़ाज पुर्सी के लिये मैं पहले उन के घर गया और वहीं से मस्जिद आ गया ।" सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आज राहे ख़ुदा में सदक़ा किस ने दिया है ?" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** ! नमाज़े फ़ज्र की अदाएगी के बा'द से अब तक हम आप की बारगाह में मौजूद हैं, इस सूरत में हमारा सदक़ा करना कैसे मुमकिन है ?" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इयादत कर के मस्जिद पहुंचा तो एक साइल सुवाल कर रहा था, मेरे साथ मेरा पोता (या बेटा) भी था जिस के हाथ में रोटी का टुकड़ा था मैं ने उस से ले कर वोह साइल को दे दिया ।" येह सुन कर रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दो2 बार फ़रमाया : "तुम्हें जन्नत की बिशारत हो ।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने दिल से एक ह़सरत भरी आह निकाली (कि अफ़्सोस ! मैं येह आ'माल न कर सका) तो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की ह़सरत देख कर इरशाद फ़रमाया : "ऐ **अल्लाह** ! उ़मर पर भी रह़मत नाज़िल फ़रमा ।" येह प्यारी दुआ़ सुन कर हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ख़ुशी से झूम उठे और इरशाद फ़रमाया : "मैं ने जब कभी किसी भलाई में अबू बक्र से बढ़ना चाहा तो वोह ही मुझ से आगे निकल गए ।"

(سنن ابی داود، کتاب الزکوۃ، المسالۃ فی المساجد، الحدیث: ۱۶۷۰، ج۲، ص۱۷۷، الریاض النضرۃ، ج۱، ص۱۷۵)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़े अक्बर की मा'रिफ़त

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक बार **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्हाब رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن आप के गिर्द जम्अ़ थे । इतने में हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ किया और बैठने के लिये कोई जगह तलाश करने लगे, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के चेहरे मुलाह़ज़ा फ़रमाए कि हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कौन जगह देता है ? हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सीधी जानिब तशरीफ़ फ़रमा थे, इस लिये इन्हों ने एक त़रफ़ हो कर हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये जगह बनाई और इन से कहा : "ऐ अबल ह़सन ! यहां तशरीफ़ रखिये ।" हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बैठ गए । हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़मल देख कर मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरा ख़ुशी से दमकने लगा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**या अबा बक्र** ! **يَعْرِفُ الْفَضْلَ لِذَوِی الْفَضْلِ اَهْلُ الْفَضْلِ** या'नी ऐ अबू बक्र ! अहले फ़ज़्ल की फ़ज़ीलत को अहले फ़ज़्ल ही जानते हैं ।" (تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۴۲، ص ۳۶۵، اللآلی المصنوعۃ، مناقب الخلفاء الاربعۃ، ج ۱، ص ۳۳۲)

क़राबते मुस्तफ़ा की वजह से फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं ने सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि : "रोज़े क़ियामत मेरे नसबी और सुसराली रिश्ते के सिवा हर क़िस्म का नसबी और सुसराली रिश्ता मुन्क़त़अ़ हो जाएगा । (हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सुसराली रिश्ता है ।) (الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۸۵)

www.dawateislami.net

सिद्दीक़ का पलड़ा भारी हो गया

रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ी वक़ार है : "मैं ने एक तराज़ू देखा जो आस्मान से लटकाया गया, उस के एक पलड़े में मुझे और दूसरे पलड़े में मेरी उम्मत को रखा गया तो मेरा पलड़ा भारी हो गया। फिर एक पलड़े में मेरी उम्मत को और दूसरे पलड़े में अबू बक्र सिद्दीक़ को रखा गया तो अबू बक्र का पलड़ा भारी हो गया।" (مسند امام احمد، حدیث ابی امامۃ الباھلی، الحدیث:۲۲۲۹۵، ج۸، ص۲۸۹-۲۹۰ ملتقطا)

सिद्दीक़े अक्बर की शफ़ाअ़त, शफ़ाअ़ते अम्बिया की मिस्ल

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हम **ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर थे, आप ने इरशाद फ़रमाया : "अभी तुम पर वोह शख़्स ज़ाहिर होगा कि **अल्लाह** तआ़ला ने मेरे बा'द उस के इलावा किसी को अफ़्ज़ल न बनाया और उस की शफ़ाअ़त, शफ़ाअ़ते अम्बिया की मानिन्द होगी।" रावी कहते हैं कि अभी हम बैठे ही थे कि सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नज़र आए, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो गए और सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को प्यार किया और गले लगाया।" (تاریخ بغداد، محمد بن عباس ابوبکر القاص، الرقم:۱۴۵۷، ج۳، ص۳۴۰)

सिद्दीक़े अक्बर की त़रफ़ से कोई बुराई न पहुंची

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि जब दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज्जतुल वदाअ़ से वापस तशरीफ़ लाए तो आप ने मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की और फ़रमाया : "ऐ लोगों अबू बक्र ऐसी शख़्सिय्यत हैं कि इन की त़रफ़ से मुझे कभी कोई बुराई न पहुंची।"

(کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل الصحابۃ، فصل فی تفصیلھم، فصل فی الصدیق، الحدیث:۳۵۶۴۰، ج۶، الجزء:۱۲، ص۲۲۶)

www.dawateislami.net

अन्सार व मुहाजिरीन के सरदार

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना बयान की और फ़रमाया : "मैं तुम्हें अपने अस्हाब में इख़्तिलाफ़ करते हुवे देखता हूं जब कि तुम जानते हों कि मेरी और मेरे अहले बैत की और मेरे अस्हाब की महब्बत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी उम्मत पर क़ियामत तक फ़र्ज़ कर दी है।" फिर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "अबू बक्र कहा हैं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं हाज़िर हूं। आप ने फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! मेरे क़रीब आओ।" फिर आप ने उन्हें सीने से लगाया और उन की पेशानी को बोसा दिया। हम ने देखा कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक रुख़्सारों पर आंसू मुबारक बह रहे थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ पकड़ कर बा आवाज़े बुलन्द फ़रमाया : "ऐ मुसलमानों के गुरौह येह अबू बक्र सिद्दीक़ है येह मुहाजिरीन और अन्सार का सरदार है येह मेरा साथी है, इस ने मेरी उस वक़्त तस्दीक़ की जब तमाम लोगों ने मेरी तक्ज़ीब की और उस वक़्त मुझे पनाह दी जब लोगों ने मुझ से मुंह फेर लिया, और बिलाल को अपने माल से ख़रीद कर आज़ाद किया पस इस से बुग़्ज़ रखने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की और ला'नत करने वालों की ला'नत हो।" (الریاض النضرۃ،ج۱،ص۴۸)

सिद्दीक़े अक्बर के लिये जन्नत से सदाए मरहबा

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : "ऐ अस्हाबे मुहम्मद ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रात को मुझे (जन्नत में) तुम्हारे घर दिखाए। तुम्हारे घर मेरे घर से क़रीब हैं।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की तरफ़ नज़रे रहमत की और फ़रमाया : "ऐ अ़ली क्या तू इस पर ख़ुश है कि तेरा घर मेरे घर के साथ इस तरह हो जिस

www.dawateislami.net

तरह दो भाइयों के घर मिले हुवे होते हैं।" हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अ़र्ज़ किया : "जी हां **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ख़ुश हूं।" फिर सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रोने लगे। तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रफ़ नज़रे रह़मत की और फ़रमाया : "मैं उस शख़्स का और उस के बाप का और उस की मां का नाम जानता हूं कि जब वोह जन्नत में दाख़िल होगा तो जन्नत का हर बाला ख़ाना और हुजरा मरह़बा मरह़बा कहेगा और वोह अबू बक्र बिन अबी क़ुह़ाफ़ा है।" (تاریخ مدینة دمشق، ج۳۰، ص۱۰۳، الریاض النضرة، ج۱، ص۴۳)

सिद्दीके़ अक्बर के लिये रसूलुल्लाह की दुआ़

हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "इलाही ! तू ने मेरी उम्मत के लिये मेरे सह़ाबा में बरकत फ़रमाई, पस इन की बरकत सल्ब न फ़रमाना और इन्हें अबू बक्र पर जम्अ़ कर देना और वोह इस के हुक्म से मुन्तशिर न हों और अबू बक्र तेरे हुक्म पर अपने हुक्म को तरजीह़ न दे।"

(تاریخ مدینة دمشق، ج۱۸، ص۳۹۱، جمع الجوامع، حرف الهمزة، الحدیث: ۴۱۹۲، ج۲، ص۹۹، الریاض النضرة، ج۱ ص۴۲)

सिद्दीक़ ब मन्ज़िला क़मीस है

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन औफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि मैं हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मस्जिद में आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप ने फ़रमाया : "फ़ुलां कहां है ?" मैं ने आप के अस्ह़ाब के चेहरों पर नज़र की तो उस मत़्लूबा सह़ाबी को न पाया और उठ कर उन की त़रफ़ गया यहां तक कि जब वोह प्यारे आक़ा के पास पहुंचे तो आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की फिर फ़रमाया : मैं तुम से जो बात करता हूं उसे याद कर लो उसे कभी न भुलाना और उस के साथ तुम्हारे बा'द वाले बयान करें, बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ से मुझे चुन लिया है।"

www.dawateislami.net

फिर आप ने येह आयत तिलावत फ़रमाई : ﴿اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّ مِنَ النَّاسِ﴾(پ۱۷، الحج:۷۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "अल्लाह चुन लेता है फ़िरिश्तों में से रसूल और आदमियों में से।" और मैं ने तुम में से जिसे पसन्द किया उसे चुन लिया और तुम्हारे दरमियान भाई चारा मुक़र्रर करता हूं जिस त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरिश्तों के दरमियान भाई चारा क़ाइम किया। पस ऐ अबू बक्र ! उठ कर मेरे सामने आ जाओ, बेशक मुझे तुम से एक ख़ास हमदर्दी है जिस के बदले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जज़ा अ़त़ा फ़रमाएगा, और अगर मैं किसी को अपना ख़लील बनाता तो तुझे बनाता और तुम्हारी मुझ से क़ुर्बत ऐसी है जैसे जिस्म से क़मीस की।" (الرياض النضرة، ج ۱، ص ۲۴)

सिद्दीक़े अक्बर तकब्बुर नहीं करते

रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो तकब्बुर की वजह से अपना कपड़ा घसीट कर चलेगा रोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर मैं अपने तहबन्द का ख़याल न रखूं तो वोह ढीला हो कर लटक जाता है।" तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम उन लोगों में से नहीं हो जो तकब्बुर की वजह से ऐसा करते हैं।"

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب لو کنت متخذا خلیلا، الحدیث:۳۶۶۵، ج۲، ص۵۲۰)

बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का
है यारे ग़ार, मह़बूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का
या इलाही रह़्म फ़रमा ! ख़ादिमे सिद्दीक़े अक्बर हूं
तेरी रह़मत के सदक़े, वासित़ा सिद्दीक़े अक्बर का

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (2)

फ़ज़ाइले सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर जन्नतियों के सरदार

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم से रिवायत है, फ़रमाते हैं : "एक बार मैं बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर था, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) तशरीफ़ लाए तो नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र व उ़मर अव्वलो आख़िरीन में सिवाए अम्बिया व मुर्सलीन के तमाम जन्नतियों के सरदार हैं, ऐ अ़ली ! तुम इन दोनों को न बताना।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، فی مناقب ابی بکروعمررضی اللہ عنہما ، الحدیث: ۳۶۸۵، ج۵، ص۳۷۶، المعجم الاوسط، من اسمہ مقدام، الحدیث: ۸۸۰۸، ج۶، ص۲۹۱)

एक अहम मदनी फूल

मज़्कूरए बाला ह़दीस में सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم को बताने से क्यूं मन्अ़ फ़रमाया ? इस बात की वज़ाह़त करते हुवे अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "या'नी ऐ अ़ली ! मुझ से पहले उन दोनों को न बताना क्यूंकि मेरा बताना उन के लिये ज़ियादा खुशी का बाइ़स होगा।" (فیض القدیر بشرح الجامع الصغیر، حرف الھمزۃ، ج۱، ص۱۱۷)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर की मह़ब्बत, जन्नत की ज़मानत

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم का सहारा लिये हुवे दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे। **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم से इरशाद फ़रमाया : "یَا عَلِی اَتُحِبُّ هٰذَیْنِ الشَّیْخَیْن

www.dawateislami.net

या'नी ऐ अ़ली ! क्या तुम इन दोनों से महब्बत करते हो ?'' अ़र्ज़ की : ''जी हां **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ।'' फ़रमाया : '' **اَحِبَّهُمَا تَدْخُلُ الْجَنَّةَ** या'नी इन से महब्बत क़ाइम रखो, जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।''(كنزالعمال، كتاب الفضائل، فضل الشيخين، الحديث: ٣٦١١١، ج٧، الجزء:١٣، ص٨)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर का जन्नत में दाख़िला

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''आज दुन्या मुक़ाबले का दिन है जिस का अन्जाम जन्नत या जहन्नम है और कल क़ियामत अन्जाम का दिन है, पस जहन्नम में जाने वाला हलाक हो गया। मैं सब से पहले जन्नत में दाख़िल होऊंगा, मेरे बा'द अबू बक्र, इन के बा'द उ़मर फ़ारूक़, इन के बा'द बाक़ी तमाम लोग हमारी पैरवी करते हुवे दाख़िले जन्नत होंगे, जो पहले आएगा वोह पहले दाख़िल होगा और जो बा'द में आएगा वोह बा'द में।'' (المعجم الاوسط، من اسمه احمد، الحديث: ٢٠٥، ج١، ص٨٣، تاريخ مدينة دمشق، ج٤١، ص٣٣١)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर के साथ सय्यिदुना जिब्राईल व मीकाईल

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि ग़ज़्वए बद्र के मौक़अ़ पर ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से इरशाद फ़रमाया : ''तुम में से एक के साथ जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) और एक के साथ मीकाईल (عَلَيْهِ السَّلَام) हैं।'' (مصنف ابن ابی شيبة، كتاب الفضائل، ماذكر ابی بكر، الحديث: ٣٢، ج٧، ص٤٧٥، تاريخ مدينة دمشق، ج٤٢، ص٧١)

सब से अफ़्ज़ल सिद्दीक़े अक्बर हैं

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द इस

www.dawateislami.net

उम्मत में सब से ज़ियादा बेहतर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं और इन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।"

(مصنف ابی شیبۃ، کتاب الفضائل، ماذکر فی ابی بکر الصدیق، الحدیث:۲۸، ج۷، ص۴۷۵)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर की इत़ाअ़त में हिदायत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे बा'द अबू बक्र फिर उ़मर की इत़ाअ़त करो हिदायत पा जाओगे और इन दोनों की इक़्तिदा करो कामयाब हो जाओगे।" (تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۲۲۶)

ख़ुदा की त़रफ़ रुजूअ़ करने वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने मिम्बर पर खड़े हो कर इरशाद फ़रमाया : "ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बड़े दर्दमन्द, नर्म दिल और ख़ुदा की त़रफ़ रुजूअ़ करने वाले और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दीन की ख़ैर ख़्वाही करने वाले थे, पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन की ख़ैर ख़्वाही की।" (نوادرالاصول، الاصل الثالث والاربعون، الرقم:۲۶۳، ج۱، ص۱۷۵، تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۳۷۹)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर की मह़शर में रफ़ाक़ते मुस्त़फ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "सब से पहले मेरी क़ब्र शक़ होगी, फिर अबू बक्र की और फिर उ़मर की, इस के बा'द मैं जन्नतुल बक़ीअ़ में आऊंगा, वहां लोग क़ब्रों से उठेंगे, फिर हम अहले मक्का का इन्तिज़ार करेंगे, ह़त्ता कि दोनों ह़रमों के माबैन लोग जम्अ़ हो जाएंगे।" (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی حفص عمر بن خطاب، الحدیث:۳۷۱۲، ج۵، ص۳۸۸)

www.dawateislami.net

इल्ज़ाम तराशों वाली सज़ा

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : "जो मुझे हज़रते अबू बक्र व उ़मर से अफ़्ज़ल कहेगा तो मैं उस को मुफ़्तरी की (या'नी तोहमत लगाने वाले को दी जाने वाली) सज़ा दूंगा।" (تاریخ مدينة دمشق، ج٣٠، ص٣٨٣)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर सब से बेहतरीन शख़्सिय्यत

हज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है फ़रमाते हैं कि हज़रते मौला अ़ली शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द इस उम्मत में सब से बेहतरीन शख़्सिय्यत सय्यिदुना अबू बक्र और इन के बा'द सय्यिदुना उ़मर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) हैं।"

(مسند امام احمد، مسند علی بن ابی طالب، الحديث:٨٣٦، ج١، ص٢٢٧ ملتقطا)

मौला अ़ली का येह फ़रमान ह़द्दे तवातुर तक पहुंचा हुवा है

अ़ल्लामा ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक को नक़्ल करने के बा'द इरशाद फ़रमाते हैं : "मौला अ़ली शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم का येह क़ौल ह़द्दे तवातुर तक पहुंचा हुवा है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रवाफ़िज़ पर ला'नत फ़रमाए कितने जाहिल लोग हैं!

(تاریخ الخلفاء، ص٣٤)

मुहाजिरीन व अन्सार पर ज़ुल्म व ना इन्साफ़ी

हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं : "जिस ने सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) पर **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबा में से किसी को फ़ज़ीलत दी उस ने मुहाजिरीन व अन्सार पर ज़ुल्म व ना इन्साफ़ी की।"

(المعجم الاوسط، من اسمه احمد، الحديث:٨٣٢، ج١، ص٢٤٢ ملتقطا)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर उम्मत में सब से अफ़्ज़ल व बेहतरीन

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जाना जिस ने जाना और फ़लाह़ पाई अगर माना और जिस ने न जाना वोह अब जाने कि ह़ज़रते सय्यिदुल मोअमिनीन इमामुल मुत्तक़ीन **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़स्मान अबू बक्र सिद्दीक़े अक्बर और जनाबे अमीरुल मोअमिनीन इमामुल आ़दिलीन अबू ह़फ़्स उ़मर बिन ख़त्ताब फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का जनाबे मौलल मोअमिनीन इमामुल वासिलीन अबुल ह़सन अ़ली बिन अबी त़ालिब मुर्तज़ा **असदुल्लाह** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم बल्कि तमाम सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से अफ़्ज़ल व बेहतरीन उम्मत होना अ़क़ीदए इजमाइय्या है । (مطلع القمرین فی ابانة سبقة العمرین، ص ٦٧)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर के ज़रीए ताईद

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अरवी दोसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि "मैं **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास बैठा था कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) तशरीफ़ लाए तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन दोनों को देख कर इरशाद फ़रमाया : "اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَيَّدَنِيْ بِكُمَا या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने तुम दोनों के ज़रीए मेरी ताईद फ़रमाई ।"

(معرفة الصحابة، ابواروی دوسی، الرقم: ٦٧٣٥، ج ٤، ص ٤٣٧)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर के ईमान की गवाही

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह बिन अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "एक चरवाहा अपनी बकरियों में मौजूद था कि एक भेड़िये ने ह़म्ला किया और उस रेवड़ से एक बकरी पकड़ कर चलता बना, चरवाहे ने उस का पीछा कर के उसे छुड़ा लिया, भेड़िया उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और कहने लगा :

www.dawateislami.net

ऐ चरवाहे ज़रा बताओ **यौमुस्सबअ़** या'नी दरिन्दों के दिन इन बकरियों की हिफ़ाज़त कौन करेगा ? येह वोही दिन होगा जिस दिन मेरे सिवा कोई चरवाहा नहीं होगा। इसी अस्ना में एक शख़्स बेल हांके उस पर कुछ लादे जा रहा था, बेल उस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और कहने लगा : "मैं तो इस बोझ के लिये पैदा नहीं किया गया बल्कि मैं तो खे़ती बाड़ी के लिये पैदा किया गया हूं।" लोग कहने लगे : "سُبْحٰنَ الله बेल भी गुफ़्तगू करता है !" सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे साथ इस वाक़िए की तस्दीक़ अबू बक्र व उ़मर भी करते हैं।" (صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب قول النبی لو کنت متخذا خلیلا، الحدیث:٣٦٦٣، ج٢، ص ٥١٩)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर इस्लाम के मां-बाप हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उसामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "जानते हो अबू बक्र व उ़मर कौन हैं ? येह इस्लाम के पिदर व मादर (मां-बाप) हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मैं उस से बरी व बेज़ार हूं जो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का ज़िक्र बदी के साथ करे।" (تاریخ الخلفاء، ص ٩٦)

सय्यिदुना अनस की सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर से मह़ब्बत

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : "क़ियामत कब क़ाइम होगी ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम ने उस के लिये क्या तय्यारी की है ?" तो उस ने अ़र्ज़ की : तय्यारी तो कुछ नहीं की, मगर मैं **अल्लाह** और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करता हूं।" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "तुम जिस से मह़ब्बत करते हो उसी के साथ होगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه इरशाद फ़रमाते हैं कि हमें किसी चीज़ से इतनी खुशी ह़ासिल नहीं हुई जितनी खुशी शहनशाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान से हुई : "तुम जिस के साथ मह़ब्बत करते हो उसी के साथ होगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि मैं सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से महब्बत करता हूं और मुझे उम्मीद है कि इन से महब्बत करने की वजह से मैं इन्हीं के साथ होऊंगा।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر بن الخطاب۔۔۔الخ، الحدیث: ۳۶۸۸، ج ۲، ص ۵۲۷)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर बुलन्दो बाला मर्तबे वाले हैं

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बुलन्दो बाला दरजे वालों को कम मर्तबे वाले ऐसे देखेंगे जिस त़रह़ तुम आस्मान के उफ़ुक़ पर चमकते सितारे को देखते हो। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन बुलन्दो बाला मर्तबे वालों में से हैं।"

(سنن ابن ماجة، کتاب السنة، فضل ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۹۶، ج ۱، ص ۷۳، سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۳۶۷۸، ج ۵، ص ۳۷۲)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर पर रसूलुल्लाह की निगाहे करम

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुहाजिरीन व अन्सार सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के पास तशरीफ़ फ़रमा होते तो सिर्फ़ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रुख़े ज़ैबा की ज़ियारत करते रहते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन पर निगाहे करम डालते। येह दोनों आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तबस्सुम और मुस्कुराहट का तबादला फ़रमाते। (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی بکر و عمر، الحدیث: ۳۶۸۸، ج ۵، ص ۳۷۷)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर क़ियामत के दिन रसूलुल्लाह के साथ

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक दिन सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के हमराह मस्जिद में इस त़रह़ तशरीफ़ लाए कि सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के दाईं जानिब और सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के बाईं जानिब थे और सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोनों के हाथों को पकड़ रखा था, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हम क़ियामत के दिन इसी त़रह़ उठाए जाएंगे ।" (سنن الترمذی، کتاب المناقب، فی مناقب ابی بکر وعمر، الحدیث: ۳۶۸۹، ج۵، ص۳۷۸)

ब रोज़े क़ियामत सब से पहले क़ब्र से निकलने वाले

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "कल बरोज़े क़ियामत सब से पहले मेरी क़ब्र शक़ होगी और फिर अबू बक्र व उ़मर निकलेंगे ।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، فی مناقب ابی حفص عمر بن الخطاب، الحدیث: ۳۷۱۲، ج۵، ص۳۸۸)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर रसूलुल्लाह के कान और आंख

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ह़नत़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देख कर इरशाद फ़रमाया : "**هٰذَانِ السَّمْعُ وَالْبَصَرُ** या'नी येह दोनों मेरे कान और आंखें हैं ।"

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، نزول جبریل۔۔۔الخ، الحدیث: ۴۴۸۹، ج۴، ص۱۴)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर ख़ासुल ख़ास वफ़ादार साथी

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "बिला शुबा हर नबी के लिये उस की उम्मत में ख़ासुल

www.dawateislami.net

ख़ास रफ़ीक़ होते हैं, यक़ीनन मेरे सहाबए किराम में से ख़ासुल ख़ास वफ़ादार साथी अबू बक्र व उ़मर हैं ।'' (کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضل ابوبکر الصدیق، الحدیث:٣٢٦٥٦،ج٦، الجزء:١١، ص٢٥٧)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर रसूलुल्लाह के ज़मीनी वज़ीर

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''हर नबी के दो वज़ीर हैं, दो आस्मान में और दो ज़मीन में । आस्मान में मेरे दो वज़ीर जिब्रईल व मीकाईल (عَلَیْهِمَا السَّلام) हैं और ज़मीन में मेरे दो वज़ीर अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हैं ।''

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب ابی بکر وعمر کلیھما، الحدیث:٣٧٠٠،ج٥، ص٣٨٢)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर पर कोई हुक्मरानी नहीं करेगा

हज़रते सय्यिदुना बिस्त़ाम बिन मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : ''मेरे बा'द कोई भी तुम दोनों पर हुक्मरानी नहीं करेगा ।''

(مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الفضائل، ماذکر فی ابی بکر الصدیق، الحدیث:٣٣،ج٧، ص٤٧٥)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर की मह़ब्बत ईमान है

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मह़ब्बत ईमान है और इन से बुग़्ज़ कुफ़्र है । (مسند الفردوس، باب الحاء، الرقم:٢٥٤١،ج١، ص٣٤٦، تاریخ الخلفاء، ص٥٠)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर के मक़ाम की मा'रिफ़त सुन्नत है

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मह़ब्बत और इन के मक़ामो मर्तबे को पहचानना सुन्नत में से है ।

(کنزالعمال، کتاب الفضائل، فضائل ابی بکر وعمر، الحدیث:٣٢٧٠١،ج٦، الجزء:١١، ص٢٦١)

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर से उम्मत की महब्बत

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि "मैं अपनी उम्मत से येह उम्मीद रखता हूं कि येह अबू बक्र व उ़मर से मह़ब्बत रखेगी जिस त़रह़ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ से मह़ब्बत करेगी।" (کنز العمال، کتاب الفضائل، فضائل ابی بکر وعمر، الحدیث: ۳۲۶۹۹، ج۶، الجزء: ۱۱، ص ۲۶۱)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर जन्नती हैं

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अभी तुम पर एक जन्नती शख़्स ज़ाहिर होगा" तो थोड़ी देर बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले आए। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा इरशाद फ़रमाया : "अभी एक और जन्नती शख़्स ज़ाहिर होगा।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ ले आए। (سنن الترمذی، کتاب المناقب، فی مناقب ابی حفص عمر بن الخطاب، الحدیث: ۳۷۱۴، ج۵، ص ۳۸۸)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर की हर अच्छे काम में सबक़त

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैं नमाज़ अदा कर रहा था कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के साथ मेरे क़रीब से गुज़रे तो इरशाद फ़रमाया : "ऐ उम्मे अ़ब्द दुआ़ मांग कि तेरी दुआ़ क़बूल की जाएगी।" ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि येह सुन कर सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और मैं ने दुआ़ करने में एक दूसरे पर सबक़त ले जाने की कोशिश की लेकिन सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझ से सबक़त ले गए क्यूंकि हर नेकी के काम में वोह मुझ से सबक़त ले जाते थे।" फिर इरशाद फ़रमाया : मैं हमेशा यूं दुआ़ मांगता हूं :

www.dawateislami.net

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَسْاَلُکَ نَعِیمًا لَا یَبِیْدُ وَقُرَّۃَ عَیْنٍ لَا تَنْفَدُ وَمُرَافَقَۃَ النَّبِیِّ مُحَمَّدٍ فِی اَعْلَی الْجَنَّۃِ جَنَّۃِ الْخُلْدِ

"या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से ला ज़वाल ने'मत, न ख़त्म होने वाली आंखों की ठन्डक और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से आ'ला जन्नत खुल्द में रफ़ाक़त मांगता हूं।" (مسند امام احمد، مسند عبداللہ بن مسعود، الحدیث:۳۶۶۲، ج۲، ص۳۱)

सय्यिदुना अबू बक्र व उमर की इक़्तिदा की वसिय्यत

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आलम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे बा'द दो अफ़राद अबू बक्र व उमर की इक़्तिदा करना।" (سنن ابن ماجۃ، کتاب السنۃ، فضل ابی بکر الصدیق، الحدیث:۹۷، ج۱، ص۷۴)

सय्यिदुना अबू बक्र व उमर की मिसाल फ़िरिश्तों में

हज़रते सय्यिदुना **अब्दुल्लाह** बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : जंगे बद्र के रोज़ दो आलम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से इरशाद फ़रमाया कि "ऐ अबू बक्र ! तुम्हारी मिसाल फ़िरिश्तों में मीकाईल (عَلَیْہِ السَّلَام) की तरह है और ऐ उमर ! तुम्हारी मिसाल फ़िरिश्तों में जिब्राईल (عَلَیْہِ السَّلَام) की तरह है।"

(جمع الجوامع، مسند ابی بکر، الحدیث:۲۵۸، ج۱۱، ص۵۸)

सय्यिदुना अबू बक्र व उमर दीने इस्लाम के सम्अ़ व बसर

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि दो आलम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक आदमी को किसी अहम काम के लिये भेजने का इरादा फ़रमाया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की एक जानिब सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और दूसरी जानिब सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे तो एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

आप इन दोनों को नहीं भेजते ?" तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मैं इन दोनों में से किसी एक को केसे भेजूं येह दोनों दीन के लिये इस त़रह़ हैं जैसे सर के लिये कान और आंख ।" (جمع الجوامع، مسند ابی بکر، الحدیث:۲۵۰، ج ۱۱، ص۵۷)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर से बुग़्ज़ व मह़ब्बत का सिला

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स अबू बक्र और उ़मर से मह़ब्बत करता है आस्माने दुन्या में उस के लिये अस्सी[80] हज़ार फ़िरिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं और जो शख़्स इन दोनों से बुग़्ज़ रखता है तो दूसरे आस्मान पर मौजूद अस्सी हज़ार फ़िरिश्ते उस पर ला'नत करते हैं ।" (الکامل فی ضعفاء الرجال، باب ذکر ماسرق العدوی، ج۳، ص۱۹۹، تاریخ مدینة دمشق، ج۳۰، ص۱۴۸)

सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर के गुस्ताख़ का इ़ब्रतनाक अन्जाम

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 410 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**उ़य्यूनुल ह़िकायात**" सफ़ह़ा 246 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन तमीम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सीब बशीर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने बताया कि मैं तिजारत किया करता था और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से काफ़ी मालदार था । मुझे हर त़रह़ की आसाइशें मुयस्सर थीं और मैं अक्सर ईरान के शहरों में रहा करता था । एक मरतबा मेरे एक मज़दूर ने मुझे ख़बर दी कि फ़ुलां मुसाफ़िर ख़ाने में एक शख़्स मर गया है, वहां उस का कोई भी वारिस नहीं, अब उस की लाश बे गोरो कफ़न पड़ी है । जब मैं ने येह सुना तो मैं मुसाफ़िर ख़ाने पहुंचा, वहां मैं ने एक शख़्स को मुर्दा ह़ालत में पाया, उस के पेट पर कच्ची ईंटें रखी हुई थीं । मैं ने एक चादर उस पर डाल दी, उस के पास उस के कुछ साथी भी थे । उन्हों ने मुझे बताया : येह शख़्स बहुत इ़बादत गुज़ार और नेक था लेकिन आज इसे कफ़न भी मुयस्सर नहीं और हमारे पास इतनी रक़म भी नहीं कि इस की तजहीज़ व तक्फ़ीन कर सकें । जब मैं ने येह सुना तो उजरत दे कर एक शख़्स को

www.dawateislami.net

कफ़न लेने के लिये और एक को क़ब्र खोदने के लिये भेजा और हम उस के लिये कच्ची ईंटें तय्यार करने लगे फिर मैं ने पानी गर्म किया ताकि उसे गुस्ल दें। अभी हम लोग इन्हीं कामों में मश्ग़ूल थे कि यकायक वोह मुर्दा उठ बैठा, ईंटें उस के पेट से गिर गईं फिर वोह बड़ी भयानक आवाज़ में चीख़ने लगा : हाए आग, हाए हलाकत, हाए बरबादी ! हाए आग, हाए हलाकत, हाए बरबादी ! जब उस के साथियों ने येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देखा तो वोह वहां से भाग गए। मैं उस के क़रीब गया और उस का बाज़ू पकड़ कर हिलाया। फिर उस से पूछा : तू कौन है और तेरा क्या मुआ़मला है ? वोह कहने लगा : मैं कूफ़ा का रिहाइशी था और बद क़िस्मती से मुझे ऐसे बुरे लोगों की सोहबत मिली जो हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) को गालियां दिया करते थे। उन की सोहबते बद की वजह से मैं भी उन के साथ मिल कर शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا को गालियां दिया करता और उन से नफ़रत करता था। सय्यिदुना अबुल ह़सीब رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ फ़रमाते हैं : मैं ने उस की येह बात सुन कर इस्तिग़फ़ार पढ़ा और कहा : ऐ बद बख़्त ! फिर तो तुझे सख़्त सज़ा मिलनी चाहिये और तू मरने के बा'द ज़िन्दा कैसे हो गया ? तो उस ने जवाब दिया : मेरे नेक आ'माल ने मुझे कोई फ़ाइदा न दिया। सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان की गुस्ताख़ी की वजह से मुझे मरने के बा'द घसीट कर जहन्नम की त़रफ़ ले जाया गया और वहां मुझे मेरा ठिकाना दिखाया गया, वहां की आग बहुत भड़क रही थी। फिर मुझ से कहा गया : अ़न क़रीब तुझे दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा ताकि तू अपने बद अ़क़ीदा साथियों को अपने दर्दनाक अन्जाम की ख़बर दे और उन्हें बताए कि जो कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों से दुश्मनी रखता है उस का आख़िरत में कैसा दर्दनाक अन्जाम होता है, जब तू उन को अपने बारे में बता देगा तो फिर दोबारा तुझे तेरे अस्ली ठिकाने (या'नी जहन्नम) में डाल दिया जाएगा। येह ख़बर देने के लिये मुझे दोबारा ज़िन्दा किया गया है ताकि मेरी इस ह़ालत से गुस्ताख़ाने सहाबए किराम इब्रत ह़ासिल करें और अपनी गुस्ताख़ियों से बाज़ आ जाएं वरना जो कोई उन ह़ज़रात की शान में गुस्ताख़ी करेगा उस का अन्जाम भी मेरी त़रह़ होगा। इतना कहने के बा'द वोह शख़्स

www.dawateislami.net

दोबारा मुर्दा ह़ालत में हो गया। मैं ने भी और दीगर लोगों ने भी उस की येह इब्रतनाक बातें सुनीं, इतनी ही देर में मज़्दूर कफ़न ख़रीद लाया, मैं ने वोह कफ़न लिया और कहा : मैं ऐसे बद नसीब शख़्स की हरगिज़ तजहीज़ो तक्फ़ीन नहीं करूंगा जो शैख़ैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का गुस्ताख़ हो, तुम अपने साथी को संभालो मैं अब इस के पास ठहरना भी गवारा नहीं करता। इस के बा'द मैं वहां से वापस चला आया फिर मुझे बताया गया कि उस के बद अ़क़ीदा साथियों ने ही उसे ग़ुस्ल व कफ़न दिया और उन चन्द बन्दों ही ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, उन के इ़लावा किसी ने भी नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत न की, उस के बद अ़क़ीदा साथियों की बद बख़्ती देखो कि वोह फिर भी लोगों से पूछ रहे थे कि तुम ने हमारे साथी की नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत क्यूं नहीं की? ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन तमीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सीब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा : क्या तुम इस वाक़िए के वक़्त वहां मौजूद थे? उन्हों ने जवाब दिया : जी हां! मैं ने अपनी आंखों से उस बद बख़्त को दोबारा ज़िन्दा होते देखा और अपने कानों से उस की बातें सुनीं। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन तमीम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : अब मैं भी उस बे अदब व गुस्ताख़ शख़्स की इस बद तरीन ह़ालत की ख़बर लोगों को ज़रूर दूंगा। (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शान में गुस्ताख़ी और बे अदबी से मह़फ़ूज़ रखे और तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की सच्ची मह़ब्बत अ़ता फ़रमाए, इन की ख़ूब ख़ूब ता'ज़ीम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। (اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم)

मह़फ़ूज़ सदा रखना शहा बे अदबों से
और मुझ से भी सरज़द न कभी बे अदबी हो

सह़ाबा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम
येह सब है आप ही की तो इनायत या रसूलल्लाह!

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (3)

फ़ज़ाइले खुलफ़ाए राशिदीन

खुलफ़ाए राशिदीन और इल्म का शहर

ख़ातमुल मुर्सलीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''**اَنَا مَدِيْنَةُ الْعِلْمِ وَاَبُوْبَكْرٍ اَسَاسُهَا وَعُمَرُ حِيْطَانُهَا وَعُثْمَانُ سَقْفُهَا وَعَلِيٌّ بَابُهَا** या'नी मैं इल्म का शहर हूं और अबू बक्र इस की बुन्याद, उमर इस की दीवार, उस्मान इस की छत और अलिय्युल मुर्तज़ा इस का दरवाज़ा हैं।'' (تاریخ مدینۃ دمشق، ج۹، ص۲۰)

खुलफ़ाए राशिदीन की अस्हाबे कह्फ़ से मुलाक़ात

एक दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अस्हाबे कह्फ़ से मुलाक़ात की आरज़ू की तो उसी वक़्त हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام नाज़िल हुवे और बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की, कि : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप उन्हें दुन्या में ज़ाहिरन नहीं देख पाएंगे, अलबत्ता अपने अकाबिर सहाबा में चार सहाबियों को उन के पास भेज दें ताकि वोह आप का पैग़ाम उन तक पहुंचाएं और उन्हें आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने की दा'वत दें।'' नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''ऐ जिब्रील ! इस की क्या सूरत होगी ? मैं अपने सहाबा को उन के पास कैसे भेजूं और उन के पास जाने का हुक्म किस को दूं ?'' सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام ने अर्ज़ किया : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसा करें आप अपनी चादर मुबारक को बिछाएं और एक तरफ़ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, दूसरी तरफ़ हज़रते उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, तीसरी तरफ़ हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم और चौथी तरफ़ हज़रते अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बिठा दीजिये। फिर उस हवा को बुलाएं जिसे **अल्लाह** तआला ने हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام के लिये मुसख़्ख़र फ़रमाया था, क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे हुक्म दिया है कि वोह आप की इताअत करे आप उस हवा से इरशाद फ़रमाइये कि इन चारों सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم

www.dawateislami.net

को उठाए और उस ग़ार तक ले जाए जहां अस्हाबे कह्फ़ आराम फ़रमा हैं।" चुनान्चे, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वैसा ही फ़रमाया। तो हवा ने आप की चादरे मुबारक को उठाया, चारों सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उस पर आराम व सुकून से बैठे रहे और देखते ही देखते वोह चादर आंखों से ओझल हो गई यहां तक कि अस्हाबे कह्फ़ के ग़ार के पास हवा ने चादर को ज़मीन पर रख दिया। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ग़ार के क़रीब पहुंच कर ग़ार के मुंह से पथ्थर हटाया और जैसे ही रोशनी अन्दर पहुंची तो अस्हाबे कह्फ़ के उस आ़शिक़ कुत्ते ने जो उन के साथ ही आराम कर रहा था हल्की सी आवाज़ निकाली, गोया उस ने ग़ार में दाख़िल होने वालों को बिग़ैर इजाज़त दाख़िले से ख़बरदार किया। ख़त़रे की बू सूंघ कर फ़ौरन ह़म्ला करने के लिये बाहर आया लेकिन जब **औलियाअल्लाह** के उस आ़शिक़ ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इन प्यारे उ़श्शाक़ को देखा तो इन के क़दमों के बोसे लेने लगा और बड़े प्यार से अपनी दुम हिलाने लगा और फिर सर के इशारे से अन्दर आने को कहा। चारों सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم ग़ार के अन्दर गए और सोए हुवे अस्हाबे कह्फ़ को यूं सलाम किया : "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُه **अल्लाह** तआ़ला ने अपने करम से अस्हाबे कह्फ़ को बेदार फ़रमाया और उन्हों ने भी जवाबन सलाम किया। चारों सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अपना तआ़रुफ़ करवाया और फ़रमाया : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे नबी ह़ज़रते **मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप लोगों को सलाम इरशाद फ़रमाया है।" उन्हों ने कहा : "हमारी त़रफ़ से भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जब तक ज़मीनो आस्मान हैं सलामती नाज़िल हो और आप सब पर भी।" फिर सब लोग बैठ कर बातें करते रहे। अस्ह़ाबे कह्फ़ सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आए और दीने इस्लाम को क़बूल किया और अ़र्ज़ किया कि : "हमारी त़रफ़ से प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम पेश कीजियेगा।" फिर वोह अपनी अपनी जगहों पर दोबारा लेट गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन पर ह़ज़रते इमाम महदी عَلَيْهِ السَّلَام के ज़ाहिर होने तक नींद त़ारी फ़रमा दी। कहा जाता है कि ह़ज़रते

www.dawateislami.net

इमाम महदी عَلَيْهِ السَّلَام जब ज़ुहूर फ़रमाएंगे तो उन्हें सलाम करेंगे और एक बार फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन को बेदार फ़रमाएगा और इस के बा'द क़ियामत तक के लिये सो जाएंगे। बहर हाल चारों सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان चादर पर अपनी अपनी जगह दोबारा बैठ गए और हवा उन्हें बारगाहे रिसालत में पहुंचाने के लिये चादर को ले कर चल पड़ी। उधर हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास हाज़िर हो गए और उन चारों सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ जो हुवा सब कुछ बयान कर दिया और जब चारों सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से इस्तिफ़्सार किया कि "अस्हाबे कह्फ़ से मुलाक़ात कैसी रही और उन्हों ने क्या कहा ?" अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम ने उन्हें सलाम किया, उन्हों ने जवाब दिया, फिर हम ने उन्हें दीने इस्लाम की दा'वत दी तो उन्हों ने इसे क़बूल किया और दीने इस्लाम में दाख़िल हो गए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान की। और **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन्हों ने आप को सलाम भी अ़र्ज़ किया है।" येह सुन कर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत ख़ुश हुवे और दुआ़ के लिये हाथ उठा दिये और बारगाहे इलाही में यूं दुआ़ फ़रमाई : "**या इलाहल आ़लमीन** ! मेरे, मेरे रिश्तेदारों, मेरे दोस्तों, मेरे भाइयों मेरे मुहि़ब्बीन के माबैन कभी जुदाई न डालना और जो मुझ से मह़ब्बत करता है, मेरे अहले बैत से मह़ब्बत करता है, इन का ह़ामी है, और जो मेरे अस्ह़ाब से मह़ब्बत करता है उन सब की मग़फ़िरत फ़रमा।"

(تفسیر الثعلبی، پ۱۵، الکھف: ۱۲، ج۱، ص۱۳۹۲، روح البیان، پ۱۵، الکھف: ۲۱، ج۵، ص۲۳۱)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन और नबुव्वत की ख़िलाफ़त

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में, मैं वोह वाह़िद शख़्स था जो दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़लवतों का आ़शिक़ था और जब भी मुझे मौक़अ़ मिलता फ़ौरन पहुंच जाता और इल्मे दीन ह़ासिल करता। एक दिन मुझे मा'लूम हुवा कि सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अकेले तशरीफ़ फ़रमा हैं तो मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़लवत को ग़नीमत जाना और बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गया ताकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

से कुछ सीख लूं। मैं ने सलाम अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जवाब अ़ता फ़रमाया। फिर मुझे इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबू ज़र ! तुझे कौन सी चीज़ मेरे पास लाई ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत।" मैं आप के पहलू में बैठ गया। ۞.....इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हाज़िरे ख़िदमत हुवे उन्हों ने सलाम अ़र्ज़ किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जवाब अ़ता फ़रमाया और उन से भी इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "ऐ अबू बक्र ! तुझे कौन सी चीज़ मेरे पास लाई ?" सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दाईं जानिब बैठ गए। ۞.....इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तशरीफ़ लाए और बारगाहे रिसालत में सलाम अ़र्ज़ किया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दाईं जानिब बैठ गए। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया और उन से भी पूछा कि ऐ उ़मर ! तुम्हें कौन सी चीज़ मेरे पास लाई ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी अ़र्ज़ किया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत।" ۞.....फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हाज़िर हुवे और सलाम अ़र्ज़ किया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दाईं जानिब बैठ गए। सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया और उन से भी पूछा कि : "ऐ उ़स्मान ! तुम्हें कौन सी चीज़ मेरे पास लाई ?" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी अ़र्ज़ किया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि : उस वक़्त हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथों में सात7 या नव9 कंकरियां थीं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपनी हथेली पर रखा तो वोह तस्बीह़ पढ़ने लगीं और उन कंकरियों की तस्बीह़ की आवाज़ शहद की मख्खियों की भिन भिनाहट की त़रह़ मुझे सुनाई दे रही थी। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कंकरियां ज़मीन पर रख दीं तो वोह कंकरियां ख़ामोश हो गईं।

www.dawateislami.net

۞.....फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह कंकरियां दोबारा उठाईं और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के हाथ पे डाल दीं, जैसे ही वोह कंकरियां आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के हाथ में गईं फिर तस्बीह़ पढ़ना शुरूअ़ हो गईं और उन की तस्बीह़ की आवाज़ मुझे सुनाई दे रही थी और जूं ही उन्हें ज़मीन पर रखा तो वोह फिर ख़ामोश हो गईं ।

۞.....फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह कंकरियां दोबारा उठाईं और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के हाथ पे डाल दीं, जैसे ही वोह कंकरियां आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के हाथ में गईं फिर तस्बीह़ पढ़ना शुरूअ़ हो गईं और उन की तस्बीह़ की आवाज़ मुझे सुनाई दे रही थी और जैसे ही उन्हें ज़मीन पर रखा तो वोह फिर ख़ामोश हो गईं ।

۞.....फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोह कंकरियां दोबारा उठाईं और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के हाथ पे डाल दीं, जैसे ही वोह कंकरियां आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के हाथ में गईं फिर तस्बीह़ पढ़ना शुरूअ़ हो गईं और उन की तस्बीह़ की आवाज़ मुझे सुनाई दे रही थी और जूं ही उन्हें ज़मीन पर रखा तो वोह फिर ख़ामोश हो गईं । तो सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : " هٰذِهٖ خِلَافَةُ النُّبُوَّةِ या'नी येह नबुव्वत की ख़िलाफ़त है ।"

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के बा'द सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम में से हर एक शख़्स के हाथ पर वोह कंकरियां रखीं लेकिन उन्हों ने तस्बीह़ न पढ़ी ।

(كنز العمال، كتاب الفضائل، المعجزات ودلائل النبوة، الحديث: ٣٥٤٠٤، ج٦، الجزء: ١٢، ص ١٧٤، تاريخ مدينة دمشق، ج ٣٩، ص ١١٧)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन और हौज़े कौसर

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : "मेरे ह़ौज़ के चार कोने हैं : पहले कोने पर अबू बक्र, दूसरे पर उ़मर, तीसरे पर उ़स्मान और चौथे पर अ़ली होंगे । पस

۞.....जो अबू बक्र से मह़ब्बत करे और उ़मर से बुग़्ज़ रखे उस को अबू बक्र सैराब नहीं करेंगे ।

۞.....और जो उ़मर से मह़ब्बत रखे और उ़स्मान से बुग़्ज़ रखे उस को उ़मर सैराब नहीं करेंगे ।

۞.....और जो उ़स्मान से मह़ब्बत करे और अ़ली से बुग़्ज़ रखे उस को उ़स्मान ह़ौज़ से नहीं पिलाएंगे ।

۞.....और जो अ़ली से मह़ब्बत करे मगर उ़स्मान से बुग़्ज़ रखे उस को अ़ली सैराब नहीं

www.dawateislami.net

करेंगे। तो जिस ने अबू बक्र से महृब्बत की उस ने दीने मतीन को क़ाइम किया और जिस ने उ़मर से महृब्बत की वोह ईमान वालों में लिखा जाएगा और जिस ने उ़स्मान से महृब्बत की वोह नूरे मुबीन से मुनव्वर हुवा और जिस ने अ़ली से महृब्बत की तो उस ने भलाई का काम किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भलाई करने वालों को पसन्द फ़रमाता है और जिस ने इन तमाम के मुतअ़ल्लिक़ अच्छा अ़क़ीदा रखा वोह मोमिन है।"

(العلل المتناهية لابن الجوزی، حدیث فی فضل الاربعة، الحدیث:۴۰۸، ج ۱، ص ۲۵۴)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन और इस्तिक़्बाले नबवी

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हम हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इजतिमाए पाक में बैठे हुवे थे तो। ۞.....हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ हाज़िरे ख़िदमत हुवे, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिक़्बाल करते हुवे फ़रमाया : "अपने माल के साथ ग़म गुसारी करने वाले और दूसरों को खुद पर तरजीह देने वाले को खुश आमदीद !" ۞.....फिर हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ हाज़िरे ख़िदमत हुवे तो इरशाद फ़रमाया : "ह़क़ व बात़िल के दरमियान फ़र्क़ करने वाले को मरह़बा ! उस शख़्स को खुश आमदीद जिस के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दीन को कामिल किया और मुसलमानों को इ़ज़्ज़त बख़्शी।" ۞.....फिर हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ हाज़िर हुवे तो इरशाद फ़रमाया : "मेरे दामाद और मेरी दो बेटियों के शोहर को खुश आमदीद ! जिस में मेरा नूर जम्अ़ हुवा, जो अपनी ज़िन्दगी में सआ़दत मन्द और मौत में शहीद है, उस के क़ातिल के लिये नारे जहन्नम की बरबादी है।" ۞.....फिर हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم हाज़िर हुवे तो इरशाद फ़रमाया : "मेरे चचाज़ाद भाई को खुश आमदीद ! मुझे और इसे एक नूर से पैदा किया गया है। (फिर फ़रमाया :) ऐ गुरौहे मुस्लिमीन ! इन तमाम की महृब्बत मोमिन के दिल में ही इकठ्ठी हो सकती है और मुनाफ़िक़ के दिल में यक्जा नहीं हो सकती। जो इन को मह़बूब बना ले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को मह़बूब बना लेता है और जो इन से बुग़्ज़ रखे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे नापसन्द फ़रमाता है।

(مسند الفردوس، باب الخاء، الحدیث:۲۷۷۶، ج ۱، ص ۳۷۴ مختصرًا، الروض الفائق، المجلس الثالث والخمسون، فی مناقب الخلفاء، ص ۳۱۲)

www.dawateislami.net

ख़ुलफ़ाए राशिदीन और इन्सानी चेहरे वाला जानवर

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : मैं ने मक्कए मुकर्रमा में एक नौ मुस्लिम को (जो पहले नसरानी था) त़वाफ़ करते हुवे देखा जो अस्क़ुफ़ के नाम से मशहूर था, मैं ने पूछा : किस चीज़ ने तुम्हें अपने आबाओ अजदाद के दीन से मुन्ह़रिफ़ किया ? उस ने कहा : मैं ने उस से बेहतर चीज़ इख़्तियार की। मैं ने पूछा : येह सब कैसे हुवा ? तो उस ने अपना वाक़िआ़ बयान किया : मैं समन्दर में एक कश्ती पर सुवार था, थोड़ी दूर पहुंचने के बा'द कश्ती टूट गई। मैं उस के एक तख़्ते पर लटक गया, समन्दर की मौजें मुझे धकेलती रहीं यहां तक कि किसी जज़ीरे में डाल दिया, उस में कसीर दरख़्त थे जिन के फल शहद से ज़ियादा मीठे और मख्खन से ज़ियादा नर्म थे। और एक शाफ़ व शफ़्फ़ाफ़ नहर थी। मैं ने इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा किया और कहा : अब मैं येह फल खाऊंगा और नहर से पानी पियूंगा जब तक कि कोई रास्ता नहीं मिलता। जब रात हुई तो मैं जानवरों के ख़ौफ़ से दरख़्त पर चढ़ कर किसी टहनी पर सो गया, रात का कुछ ह़िस्सा गुज़रने के बा'द मैं ने सत़्हे आब पर एक जानवर को ब ज़बाने फ़सीह़ तस्बीह़ करते हुवे देखा, जिस का मफ़्हूम कुछ यूं है : **अल्लाह** अ़ज़ीज़ो जब्बार के सिवा कोई मा'बूद नहीं, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल और चुने हुवे नबी हैं। अबू बक्र इन के ग़ार के रफ़ीक़ हैं, उ़मर फ़ारूक़ शहरों को फ़त्ह़ करने वाले, उ़स्मान घर में शहीद और अ़ली कुफ़्फ़ार पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तल्वार हैं, इन से बुग़्ज़ रखने वालों पर अ़ज़ीज़ो जब्बार की ला'नत हो, उन का ठिकाना जहन्नम है और वोह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

वोह जानवर येही कलिमात बार बार दोहराता रहा, तुलूए़ फ़ज्र के बा'द उस ने फिर चन्द कलिमात कहे, जिन का मफ़्हूम कुछ इस त़रह़ है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, जिस का वा'दा व वई़द सच्चे हैं और मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, हिदायत देने वाले और राहनुमाई फ़रमाने वाले। अबू बक्र को सह़ीह़ राए की तौफ़ीक़ दी गई, उ़मर बिन ख़त़्त़ाब कुफ़्फ़ार पर आहनी जंगले की त़रह़ (सख़्त) हैं, उ़स्मान फ़ज़ीलत वाले शहीद हैं और अ़ली बिन अबी त़ालिब ज़बर दस्त क़ुव्वत वाले

www.dawateislami.net

हैं। इन से बुग़्ज़ रखने वालों पर रब्बे मजीद की ला'नत हो।" जब वोह जानवर ख़ुश्की पर पहुंचा तो मैं ने देखा कि उस का सर शुतर मुर्ग़ जैसा, चेहरा इन्सान जैसा, टांगें ऊंट की टांगों की त़रह़ और दुम मछली की दुम जैसी है, मैं हलाकत के ख़ौफ़ से भागने ही वाला था कि उस ने मुझे देख कर कहा : रुक जाओ, वरना हलाक हो जाओगे। मेरे रुकने के बा'द उस ने मुझ से मेरे दीन के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो मैं ने जवाब दिया : नसरानिय्यत। उस ने कहा : ऐ नुक़्सान उठाने वाले ! बरबादी है तेरे लिये, दीने इस्लाम इख़्तियार कर ले कि तू मोअमिनीन जिन्नात की क़ौम में पहुंच चुका है, इन से सिवाए मुसलमान के कोई नजात नहीं पा सकता। मैं ने पूछा : इस्लाम कैसे लाऊं ? उस ने बताया : इस बात की गवाही दे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं। चुनान्चे, मैं कलिमए शहादत पढ़ कर मुसलमान हो गया। फिर उस ने कहा : **तेरा इस्लाम कामिल तब होगा जब तू ख़ुलफ़ाए अरबआ़ से राज़ी रहेगा।** मैं ने कहा : तुम्हें येह बात कैसे मा'लूम हुई ? उस ने जवाब दिया : हमारी एक क़ौम नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़फ़िल में ह़ाज़िर हुई, उन्हों ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह इरशाद फ़रमाते सुना : जब क़ियामत का दिन होगा तो जन्नत लाई जाएगी, वोह अ़र्ज़ करेगी : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ने मुझ से वा'दा किया था कि तू मेरे कोनों को मज़्बूत़ करेगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : मैं ने तेरे कोनों को ख़ुलफ़ाए अरबआ़ से मज़्बूत़ कर दिया है और तुझे ह़सनो ह़ुसैन से ज़ीनत बख़्शी है। फिर उस जानवर ने मुझ से पूछा : तुम यहां ठहरना चाहते हो या अपने अहलो इयाल की त़रफ़ लौटना चाहते हो ? मैं ने कहा : अपने घर वालों की त़रफ़ लौटना चाहता हूं। उस ने कहा : तो फिर यहां खड़े रहो, एक कश्ती का यहां से गुज़र होगा। मैं वहां खड़ा रहा। वोह जानवर समन्दर में उतर कर मेरी आंखों से ओझल हो गया फिर एक कश्ती गुज़री जिस में चन्द अफ़राद सुवार थे। मेरे इशारा करने पर उन्हों ने मुझे भी सुवार कर लिया। उस में बारह नस्रानी थे। जब मैं ने उन को अपना वाक़िआ़ बताया तो सब के सब दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए। फिर मुझे यक़ीन हो गया कि उन लोगों का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां ज़रूर कोई राज़ है कि उन की बरकत से मुझे इस्लाम की दौलत मिली और बुलन्द मक़ाम नसीब हुवा।

(الروض الفائق، المجلس الثالث والخمسون، فی مناقب الخلفاء، ص ۳۱۵)

www.dawateislami.net

ख़ुलफ़ाए राशिदीन की महब्बत सिर्फ़ क़ल्बे मोमिन में

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान, अ़ली इन चारों की महब्बत सिर्फ़ क़ल्बे मोमिन में ही जम्अ़ हो सकती है।"

(کنز العمال، کتاب الفضائل، الخلفاء مجتمعة، الحدیث: ۳۳۱۰۱، ج۶، الجزء: ۱۱، ص ۲۹۳)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन पर रब्बुल आ़लमीन रह़्म फ़रमाए

हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم से मरवी है, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़्मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अबू बक्र पर रह़्म फ़रमाए, उन्हों ने अपनी बेटी मेरी ज़ौजिय्यत में दी, मुझे अपनी ऊंटनी पर सुवार कर के मदीनए पाक ले गए और बिलाल को अपने माल से आज़ाद किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उ़मर पर रह़्म फ़रमाए, वोह ह़क़ बोलते हैं अगर्चे कड़वा हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उ़स्माने ग़नी पर रह़्म फ़रमाए, मलाइका उन से ह़या करते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़ली पर रह़्म फ़रमाए, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़ली जहां चले ह़क़ को उस के साथ चला दे।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب علی ۔۔۔ الخ، الحدیث: ۳۷۳۴، ج۵، ص ۳۹۷)

तमाम सह़ाबा में ख़ुलफ़ाए राशिदीन की फ़ज़ीलत

दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे सह़ाबए किराम को तमाम मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत दी सिवाए अम्बिया व मुर्सलीन के, फिर मेरे सह़ाबा में से चार अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान और अ़ली को चुन लिया। (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) (المجروحین لابن حبان، عبد اللہ بن صالح کاتب اللیث المصری، الرقم: ۵۶۸، ج۱، ص ۵۳۵ ملتقطا)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन की महब्बत फ़र्ज़ है

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ निशान है : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान और अ़ली की मह़ब्बत को फ़र्ज़ कर दिया

www.dawateislami.net

है, जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज को तुम पर फ़र्ज़ किया है तो जो इन में से किसी एक से भी बुग़्ज़ रखे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की नमाज़ क़बूल फ़रमाएगा, न ज़कात, न रोज़ा और न ही हज और उसे क़ब्र से जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।"

(مسندالفردوس، باب الالف، الحدیث:۹۱۲، ج۱، ص۱۰۱)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन से महब्बत करने वाले

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरे इन चारों सहाबा अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान, अ़ली से महब्बत करने वाले **अल्लाह** के दोस्त हैं और इन से बुग़्ज़ और नफ़रत रखने वाले **अल्लाह** के दुश्मन हैं।" (الریاض النضرۃ،ج۱،ص۴۸)

या'नी उस अफ़्ज़लुल ख़ल्क़ बा'दर्रुसुल
सानियसनैन हिजरत पे लाखों सलाम

अस्दक़ुस्सादिक़ीन सय्यिदुल मुत्तक़ीन
चश्मो गोशो वज़ारत पे लाखों सलाम

रोज़े क़ियामत ख़ुलफ़ाए राशिदीन की हुकूमत

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन अ़र्श के नीचे मुनादी निदा करेगा : अस्हाबे **मुहम्मद** कहां हैं? फिर अबू बक्र व उ़मर, और उ़स्मान व अ़ली (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُم) आएंगे।

۞......हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये कहा जाएगा कि जन्नत के दरवाज़े पर ठहर जाएं और जिसे चाहें **अल्लाह** की रहमत से दाख़िल करें और जिसे चाहें **अल्लाह** के इ़ल्म के साथ बुलाएं।

۞......और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये कहा जाएगा कि मीज़ान के पास ठहर जाएं जिसे चाहें **अल्लाह** की रहमत के साथ भारी करें और जिसे चाहें **अल्लाह** तआ़ला के इ़ल्म के साथ हल्का करें।

www.dawateislami.net

۞......और हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये दो हुल्ले आएंगे और उन्हें कहा जाएगा दोनों पहन लें। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा कि मैं ने दोनों को तेरे लिये उस वक़्त बनाया जब आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया था।

۞......और हज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को अ़साए मुज़य्यन अ़ता किया जाएगा, जो उस दरख़्त से बनाया गया होगा जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने दस्ते क़ुदरत से जन्नत में लगाया।" (تاریخ مدینۃ دمشق،ج۴۴،ص ۱۹۱،الریاض النضرۃ،ج۱،ص ۵۴)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन की महब्बत ज़रूरी है

हज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्तियानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "जिस शख़्स ने सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से महब्बत की उस ने दीन को क़ाइम किया और जिस ने सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से महब्बत की उस ने अपना रास्ता रोशन कर लिया और जिस ने सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से महब्बत की वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर से चमक गया और जिस ने सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से महब्बत की उस ने मज़बूत गिरह को थाम लिया और जो शख़्स दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्हाब के लिये अच्छा अ़क़ीदा रखता है और इन के लिये अच्छी बात ही कहता है वोह निफ़ाक़ से महफ़ूज़ है।" (تاریخ مدینۃ دمشق،ج۴۲،ص ۵۳۰)

ख़िलाफ़त किसे मिलेगी ?

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त तक दुन्या से तशरीफ़ नहीं ले गए जब तक कि आप ने मुझ से येह अ़हद न ले लिया कि मेरा अम्र मेरे बा'द अबू बक्र को मिलेगा फिर उ़मर को फिर उ़स्मान को फिर मेरी त़रफ़ आएगा और लोग मुझ पर जम्अ़ नहीं होंगे। और आप ही से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस वक़्त तक विसाल न फ़रमाया जब तक कि मुझ पर येह राज़ ज़ाहिर न फ़रमा दिया कि मेरे बा'द मेरी विलायत अबू बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को मिलेगी।" (الریاض النضرۃ،ج۱،ص۵۵)

सिद्दीक़ अव्वलीं हैं ख़िलाफ़त के ताजदार
बा'द इन के उ़मर व उ़स्मानो हैदर हैं बिल यक़ीन

www.dawateislami.net

ख़ुलफ़ाए राशिदीन सूरतुल अ़स्र की तफ़्सीर

हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं : "मैं ने बारगाहे रिसालत में सूरए अ़स्र पढ़ी और अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां-बाप आप पर कुरबान इस सूरत की तफ़्सीर क्या है तो प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**وَالْعَصْرِ** : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से दिन के आख़िर के साथ क़सम है । **اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا** से मुराद अबू बक्र सिद्दीक़ हैं । **وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ** से मुराद उ़मर और **وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ** से मुराद उ़स्मान, और **وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ** से मुराद अ़ली बिन अबी त़ालिब हैं ।"

(الجامع لاحکام القران، سورۃ العصر، ج۱۰، ص۱۳۱، الریاض النضرۃ، ج۱، ص۵۷)

रसूलुल्लाह के वुज़रा व मुशीर

हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि नबिय्ये अकरम, रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! मुझे **अल्लाह** तआ़ला ने हुक्म फ़रमाया है कि अबू बक्र को वज़ीर, उ़मर को मुशीर, उ़स्मान को सहारा और तुझे अपना मददगार बनाऊं, पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम चारों के मुतअ़ल्लिक़ **उम्मुल किताब** में वा'दा लिया है, कि तुम से सिर्फ़ मोमिन ही मह़ब्बत करेगा और फ़ाजिर ही बुग़्ज़ रखेगा । तुम मेरी नबुव्वत के ख़ुलफ़ा हो, मेरे ज़िम्मे की बैअ़त लेने वाले हो और मेरी उम्मत पर हुज्जत हो, मेरी उम्मत के लोग न तुम से मुक़ात़आ (क़त़ए तअ़ल्लुक़) करें न तुम से मुंह फेरें ।" (الریاض النضرۃ، ج۱، ص۴۷)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन की मुवाफ़क़ते रसूल

रिवायत है कि जब प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुझे तुम्हारी दुन्या से तीन चीज़ों से मह़ब्बत है तो ۞......हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं दुन्या की तीन चीज़ों से मह़ब्बत करता

www.dawateislami.net

हूं, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़े अन्वर की ज़ियारत करना, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़र्च करने के लिये माल जम्अ़ करना, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ आप की क़राबत के साथ तवस्सुल ह़ासिल करना।'' ۞......ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं दुन्या की तीन चीज़ों से मह़ब्बत करता हूं, भूके को खाना खिलाना, प्यासे को पानी पिलाना और बरह्ना को कपड़े पहनाना।'' ۞......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने दुन्या से तीन चीज़ें पसन्द की हैं, गर्मी में रोज़े रखना, मेहमान को खाना खिलाना और आप के सामने तल्वार की ज़र्ब लगाना।''

(السنن الکبری للبیہقی، کتاب النکاح، الرغبۃ فی النکاح، الحدیث: ۱۳۴۵۴، ج۷، ص۱۲۵، الریاض النضرۃ، ج۱، ص۲۰)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन और जन्नत की ख़ुश ख़बरी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि एक दिन हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा के एक बाग़ में तशरीफ़ फ़रमा थे। एक शख़्स ने दरवाज़ा खुलवाना चाहा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''दरवाज़ा खोल कर आने वाले को जन्नत की बिशारत दे दो।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि मैं ने दरवाज़ा खोल दिया और देखा कि आने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه थे, मैं ने दरवाज़ा खोल कर उन को जन्नत की बिशारत दी तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बयान की। फिर एक शख़्स ने दरवाज़ा खुलवाना चाहा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''दरवाज़ा खोल कर आने वाले को जन्नत की बिशारत दे दो।'' मैं ने देखा तो वोह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه थे, मैं ने दरवाज़ा खोल कर उन को भी जन्नत की बिशारत दे दी। फिर एक और शख़्स ने दरवाज़ा खुलवाना चाहा तो हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बैठ गए और इरशाद फ़रमाया : ''दरवाज़ा खोल दो और आने वाले को मुसीबतों की बिना पर जन्नत की बिशारत दे दो।'' मैं ने जा कर देखा तो वोह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه थे, मैं ने दरवाज़ा खोला और उन को भी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान सुना कर जन्नत की बिशारत दे दी। ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ़ की : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू मुझे सब्र अ़ता फ़रमा, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू ही मदद फ़रमाने वाला है।"

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر بن الخطاب، الحدیث: ۳۲۹۳، ج ۲، ص ۵۲۹)

फ़ज़ाइले खु़लफ़ाए राशिदीन ब ज़बाने सय्यिदुल मुर्सलीन

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हुवे, ह़म्दो सना के बा'द इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम्हें क्या है कि मेरे सह़ाबा के बारे में इख़्तिलाफ़ रखते हो ? जानते नहीं कि मेरे अहले बैत और मेरे सह़ाबा की मह़ब्बत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस उम्मत पर क़ियामत तक फ़र्ज़ फ़रमा दी है।"

۞......फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र कहां हैं ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं यहां मौजूद हूं।" फ़रमाया : "मेरे क़रीब आ जाओ।" जैसे ही सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ क़रीब आए तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपने सीने से चिमटा लिया और उन की आंखों के दरमियान माथे का बोसा लिया। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने देखा कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चश्माने मुबारक से आंसू छलक रहे थे। फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का हाथ थाम कर बा आवाज़े बुलन्द इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुसलमानो ! येह अबू बक्र सिद्दीक़ है, तमाम मुहाजिरीन व अन्सार का सरदार और मेरा साथी है। जब लोगों ने मुझे झुटलाया तो इस ने मेरी तस्दीक़ की, लोगों ने मुझ से सर्फ़े नज़र किया तो इस ने मुझे पनाह दी और बिलाल को मेरी रिज़ा के लिये अपने माल से ख़रीद कर आज़ाद किया। इस से दुश्मनी रखने वाले पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और तमाम जहान की ला'नत और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से बरी है और जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हां सुर्ख़रू होना चाहता है वोह अबू बक्र सिद्दीक़ की अ़दावत से बाज़ आ जाए, येह बातें दूसरों तक भी पहुंचा दो। येह कह कर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र ! बैठ जाओ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे बारे में बेहतर जानता है।"

www.dawateislami.net

۞......फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उ़मर बिन ख़त्ताब कहां हैं ?" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जल्दी से सामने आए और अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ह़ाज़िर हूं।" फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! क़रीब आ जाओ।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ क़रीब आए तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें सीने से लगा कर पेशानी पर बोसा दिया।" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक आंखों से आंसू रवां हैं।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का हाथ पकड़ कर बा आवाज़े बुलन्द इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुसलमानो ! येह उ़मर बिन ख़त्ताब है, तमाम मुहाजिरीन व अन्सार का सरदार है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि इसे अपना मददगार और मुशीर बनाऊं, इस के दिल ज़बान और हाथ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हक़ बात उतारता है अगर्चे इस का कोई हिमायती न हो, येह हक़ बात कहने से नहीं रुकता ख़्वाह सच्ची बात कितनी ही कड़वी क्यूं न हो। अह़कामे ख़ुदावन्दी की बजा आवरी में किसी इन्सान की मलामत गिरी को ख़ातिर में नहीं लाता, शैतान इस की शख़्सिय्यत से भागता है। याद रखो ! उ़मर तो जन्नतियों का नूर है, इस के दुश्मन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और तमाम जहान वालों की ला'नत है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस से बरी और मैं भी उस से बरी हूं।"

۞......फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान कहां हैं ?" तो हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौरन सामने आए और अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ह़ाज़िर हूं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें भी क़रीब बुला कर सीने से लगाया तो सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने देखा कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक रुख़्सारों पर आंसू बह रहे थे। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन का हाथ पकड़ कर बुलन्द आवाज़ से इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुसलमानो ! येह उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान है मुहाजिरीन व अन्सार का सरदार है, इसी के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि इसे अपना सहारा और दामाद बनाऊं। अगर मेरी तीसरी बेटी भी होती तो मैं इसी से निकाह़ कर देता, इस से फ़िरिश्ते ह़या करते हैं, इस के दुश्मन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और तमाम जहान वालों की ला'नत है।"

www.dawateislami.net

۞......फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़ली बिन अबी ता़लिब कहां है ?" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم जल्दी से सामने तशरीफ़ लाए और अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ह़ाज़िर हूं।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! मेरे क़रीब आओ।" जैसे ही ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم क़रीब आए तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें भी अपने सीने से लगाया और उन की आंखों के दरमियान बोसा दिया और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने देखा कि अब भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक आंखों से आंसू बह रहे हैं। इस के बा'द आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन का हाथ पकड़ कर बुलन्द आवाज़ से इरशाद फ़रमाया : "मोमिनो ! येह मुहाजिरीन व अन्सार का सरदार है मेरा भाई मेरे चचा का बेटा और मेरा दामाद है, मेरे गोश्त, ख़ून और बालों का ह़िस्सा है, ह़सनो ह़ुसैन का वालिद है जो नौ जवानाने जन्नत के सरदार हैं। येह मुश्किल कुशा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शेर है और दुश्मनाने ख़ुदा के लिये लटकती तल्वार है। इस के दुश्मन पर ख़ुदा और तमाम ला'नत करने वालों की ला'नत है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस से बरी और मैं भी उस से बरी हूं। जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां सुर्ख़रू होना चाहता है वोह अ़ली की अ़दावत से बाज़ रहे। जो लोग मौजूद हैं वोह दूसरों तक येह बातें पहुंचा दें।" फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ अबल ह़सन ! बैठ जाओ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे बारे में बेहतर जानता है।" (الرياض النضرة،ج ١، ص ٤٨)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन की मह़ब्बत पर मौत

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वज़ीर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मैं ने ख़्वाब में देखा तो क़रीब हो कर अ़र्ज़ किया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰه तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूं जवाब इरशाद फ़रमाया : "وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا مُحَمَّدُ بْنُ وَزِيْر तुम्हारी कोई ह़ाजत है ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "जी हां !

www.dawateislami.net

या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे अहलो इयाल ज़ियादा हैं और मेरा माल बहुत थोड़ा, मैं चाहता हूं कि आप मुझे चन्द दुआएं इरशाद फ़रमा दें जिन्हें मैं सफ़र व हज़र में हर वक़्त पढ़ता रहूं और इन दुआओं के ज़रीए अपने कामों पर मदद तलब करूं।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "बैठ जाओ और येह तीन दुआएं हैं जिन्हें हर मुश्किल के वक़्त और हर नमाज़ के बा'द पढ़ा करो। वोह दुआएं येह हैं : ❁ یَا قَدِیْمَ الْاِحْسَانِ या'नी ऐ हमेशा से एहसान फ़रमाने वाले। ❁ وَیَا مَنْ اِحْسَانُہٗ فَوْقَ کُلِّ اِحْسَانٍ या'नी ऐ एहसान पर एहसान फ़रमाने वाले। ❁ وَیَا مَالِکَ الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ या'नी ऐ दुन्या व आख़िरत के मालिक।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "इस्लाम और सुन्नत पर मरने की कोशिश करो। अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान और अ़ली की महब्बत पर मरने की कोशिश करो क्यूंकि ऐसी मौत के बा'द जहन्नम नज़्दीक नहीं आती।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۵۰)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन अम्बियाए किराम की मिस्ल

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत में मुख़्तलिफ़ अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام में से हर नबी जैसा एक शख़्स (या'नी उस नबी की सिफ़ात का मज़हर) ज़रूर मौजूद है। अबू बक्र हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की मिस्ल है, उ़मर हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की त़रह है, उ़स्मान हज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام की मिस्ल है, और अ़ली बिन अबी त़ालिब मेरी मानिन्द है।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۵۰)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन की एक ही मिट्टी से पैदाइश

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र व उ़मर एक मिट्टी से पैदा किये गए हैं और उ़स्मान व अ़ली एक मिट्टी से पैदा किये गए हैं।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۵۱)

www.dawateislami.net

ख़ुलफ़ाए राशिदीन के दुख़ूले जन्नत का मुबारक मन्ज़र

हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास इस हाल में तशरीफ़ लाए कि दायां हाथ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में और बायां हाथ हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हाथ में था, हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे थे और हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने आप की चादरे मुबारक का पल्लू पकड़ रखा था, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "रब्बे का'बा की क़सम ! हम पांचों यूंही जन्नत में दाख़िल होंगे ।" (الکامل فی ضعفاء الرجال،عبداللہ بن خراش،ج۵،ص ۳۵۱)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन का नाम अ़र्शे आ'ज़म पर

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें येह बतलाऊं कि अ़र्श पर क्या लिखा है ?" हम ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्यूं नहीं ।" फ़रमाया : "अ़र्श पर लिखा है : لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ اَبُوْبَکْر الصِّدِّیْق عُمَر الْفَارُوْق عُثْمَان الشَّھِیْد عَلِی الرضا या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, अबू बक्र "**सिद्दीक़**" हैं, उ़मर "**फ़ारूक़**" हैं, उ़स्मान "**शहीद**" हैं और अ़ली "**रिज़ा**" हैं ।" (تاریخ مدینۃ دمشق،ج۳۹،ص۲۹۷)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन का नाम लिवाउल हम्द पर

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **लिवाउल हम्द** क्या है ?" फ़रमाया : "इस के तीन हिस्से हैं और हर

www.dawateislami.net

हिस्सा आस्मानो ज़मीन के दरमियान है : पहले पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم और सूरए फ़ातिहा लिखी है। जब कि दूसरे पर لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰه और तीसरे पर **अबू बक्र अस्सिद्दीक़, उ़मर अल फ़ारूक़, उ़स्मान ज़ुन्नूरैन, अ़लिय्युल मुर्तज़ा** लिखा हुवा है।'' (الرياض النضرة، ج ۱، ص ۵۴)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन की पैदाइश

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ अपनी सनद के साथ रिवायत करते हैं कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मैं अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान और अ़ली हम पांचों हज़रते आदम عَلَیۡہِ السَّلَام की पैदाइश से पहले अ़र्शे आ'ज़म की दाईं जानिब अन्वार की शक्ल में थे। जब हज़रते आदम عَلَیۡہِ السَّلَام पैदा हुवे तो हमें उन की पुश्त में ठहरा दिया गया। फिर हम पुश्त दर पुश्त मुन्तक़िल होते रहे यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हज़रते **अ़ब्दुल्लाह** की पुश्त में, अबू बक्र को अबू क़ुहाफ़ा की पुश्त में, उ़मर को ख़त्ताब की पुश्त में, उ़स्मान को अ़फ़्फ़ान की पुश्त में और अ़ली को अबू ता़लिब की पुश्त में ठहराया। फिर इन्हें मेरा सहा़बी बना दिया गया और अबू बक्र को मेरा सिद्दीक़, उ़मर को फ़ारूक़, उ़स्मान को ज़ुन्नूरैन और अ़ली को मेरा वसी बना दिया गया। तो इन पर सबो शितम मुझ पर सबो शितम है और मुझ पर सबो शितम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर सबो शितम है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सबो शितम करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे नाक के बल घसीट कर जहन्नम में फेंकेगा।''

(الرياض النضرة، ج ۱، ص ۵۱)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन ज़मानए नबवी के मुफ़्ती

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुहम्मद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से मन्क़ूल है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ, हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ, हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ, हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَهُ الۡكَرِیۡم दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हयाते त़य्यिबा में फ़तवा दिया करते थे। (تاريخ الخلفاء، ص ۳۹)

www.dawateislami.net

ख़ुलफ़ाए राशिदीन के अवसाफ़ ब ज़बाने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के अवसाफ़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

۞.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर रहम फ़रमाए कि वोह तो कुरआन की तिलावत करने वाले, गुनाहों से नफ़रत करने वाले, नेकी का हुक्म करने वाले, बुराई से रोकने वाले, रिज़ाए इलाही के लिये सब्र करने वाले, बे ह़याई से दूर रहने वाले, रात भर इबादत करने वाले, दिन भर रोज़ा रखने वाले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन की मा'रिफ़त रखने वाले, रब्बुल आ़लमीन का ख़ौफ़ रखने वाले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़राम कर्दा उमूर से दूरी इख़्तियार करने वाले और हलाकत ख़ेज़ आ'माल से ए'राज़ करने वाले थे। सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ तो तक़्वा व क़नाअ़त में अपने साथियों पर सबक़त ले गए, उन की अमानत दारी और नेक नामी बे मिसाल थी। जो ऐसी अ़ज़ीम हस्ती पर ए'तिराज़ करे उस पर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़ियामत तक ला'नत हो। पूछा गया कि : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मोहर वाली अंगूठी पर कौन सी इ़बारत नक़्श थी ?" फ़रमाया : "عَبْدٌ ذَلِیْلٌ لِرَبٍّ جَلِیْلٍ या'नी इ़ज़्ज़त वाले रब का ह़क़ीर बन्दा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : "हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में आप क्या कहते हैं ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के अवसाफ़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

۞.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अबू ह़फ़्स उ़मर बिन ख़त्ताब पर रह़म फ़रमाए, आप इस्लाम के अ़लम बरदार, यतीमों के मल्जा, ईमान व यक़ीन के मर्कज़, एह़सान की इन्तिहा, कमज़ोरों के मेज़बान, बादशाहों के लिये दलीले राह, दीने ह़क़ का क़लआ़ और मोमिनों के दस्तगीर थे। आप ने दीन को ख़ूब वाज़ेह़ कर दिया और मुख़्तलिफ़ मुमालिक फ़त्ह़ कर के चप्पे चप्पे पर ज़िक्रे ख़ुदा जारी कर दिया। मुश्किल वक़्त हो या आसान, आप हर वक़्त **अल्लाह** का शुक्र अदा करते थे, आप से बुग़्ज़ रखने वाले को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रोज़े क़ियामत अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमाएगा। पूछा गया कि "हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मोहर वाली अंगूठी पर कौन सी इ़बारत नक़्श थी ?" फ़रमाया : "اَللّٰہُ الْمُعِیْنُ لِمَنْ صَبَرَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब्र करने वालों का मददगार है।"

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : "सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में आप क्या कहते हैं ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के अवसाफ़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

۞.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अबू उ़मर उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान पर रह़्म फ़रमाए कि आप नेक लोगों से बेहतर, सब से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़, कसरत से इस्तिग़फ़ार करने वाले, रातों को शब बेदारी फ़रमाने वाले, दोज़ख़ का ज़िक्र छिड़ जाने पर कसरत से गिर्या व ज़ारी करने वाले, शबो रोज़ मुफ़ीद कामों में मश्ग़ूल रहने वाले, हर अ़ज़्मत व बुज़ुर्गी के ख़्वाहां, आख़िरत में नजात दिलाने वाले, हर अच्छे अ़मल के शैदाई, हर हलाकत ख़ेज़ अ़मल से दूर भागने वाले, वफ़ादार, बा किरदार, पाक बाज़, तंगदस्त इस्लामी लश्कर के सरपरस्त, रूमा के कूंएं को वक़्फ़ फ़रमाने वाले और दामादे रसूल थे । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप के क़ातिलों को क़ियामत तक दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला रखे । पूछा गया कि "ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मोहर वाली अंगूठी पर कौन सी इ़बारत नक़्श थी ?" फ़रमाया : "اَللّٰھُمَّ اَحْیِنِیْ سَعِیْداً وَّاَمِتْنِیْ شَھِیْداً या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे सआ़दत के साथ ज़िन्दा रख और शहादत की मौत अ़ता फ़रमा और ख़ुदा की क़सम ! वाक़ेई आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सआ़दत के साथ दुन्या में रहे और शहादत के साथ तशरीफ़ ले गए ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : "सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में आप क्या कहते हैं ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन के अवसाफ़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया :

۞.....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अबुल ह़सन अ़लिय्युल मुर्तज़ा पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए, आप हिदायत का मीनार, तक़्वे की कान, अ़क़्ल का पहाड़, दानाई का मह़वर, मुजस्समे फ़य्याज़ी, इन्सानी उ़लूम की इन्तिहा, अन्धेरों में चमकते नूर, दीने मतीन के दाई, ख़ुदा की रस्सी को मज़बूती से थामने वाले, सब से ज़ियादा मुत्तक़ी व परहेज़गार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द शहादते फ़ारूक़े आ'ज़म पर क़ाइम होने वाली मजलिस के अराकीन में सब से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़, साह़िबे क़िब्लतैन, ह़सनैने करीमैन के वालिद और ख़ैरुन्निसा सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के शोहर हैं, आप से बेहतर कोई आदमी न मेरी आंखों ने देखा न कानों ने सुना, आप जंगो क़िताल के माहिर और हम पल्ला दुश्मनों के लिये हलाकत थे, आप से बुग़्ज़ रखने वाले पर

www.dawateislami.net

अल्लाह और उस की तमाम मख़्लूक़ की क़ियामत तक ला'नत हो। पूछा गया कि : "हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मोहर वाली अंगूठी पर कौन सी इबारत नक़्श थी ?" फ़रमाया : اَللّٰہُ الْمَلِک या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही बादशाह है।"

(المعجم الکبیر، من مناقب عبد اللہ بن عباس، الحدیث: ۱۰۵۸۹، ج ۱۰، ص ۲۳۸، الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۵۷)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन की अफ़्ज़लिय्यत

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अम्बिया व मुर्सलीन के सिवा तमाम जहानों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरे सहाबा को अ़ज़्मत अ़ता फ़रमाई, फिर इन सहाबा में से अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान और अ़ली को अफ़्ज़लिय्यत अ़ता फ़रमाई और मेरे तमाम सहाबा को पूरी उम्मत में अफ़्ज़लिय्यत अ़ता फ़रमाई और मेरी उम्मत को तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल बनाया।" (تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۳۹، ص ۱۱۳)

बे गुमां शम्ए नबुव्वत के हैं आईने चार
या'नी उ़स्मानो उ़मर, हैदरो अक्बर सिद्दीक़
सारे अस्हाबे नबी तारे हैं उम्मत के लिये
इन सितारों में बने महरे मुनव्वर सिद्दीक़
इल्म में ज़ोहद में बे शुबा तू सब से बढ़ कर
कि इमामत से तेरी खुल गए जोहर सिद्दीक़
इस इमामत से खुला तुम इमामे अक्बर
थी येही रुमुज़े नबी कहते हैं हैदर सिद्दीक़

(**दीवाने सालिक अज़ :** हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (4)

फ़ज़ाइले अ़शरए मुबश्शरा

अ़शरए मुबश्शरा सहाबए किराम

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन हुमैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जै़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक मजलिस में उन्हें येह ह़दीस बयान की, कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''दस आदमी जन्नती हैं, अबू बक्र जन्नती हैं, उ़मर जन्नती हैं, उ़स्मान, अ़ली, ज़ुबैर, त़लह़ा, अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़, अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ और सा'द बिन अबी वक़्क़ास जन्नती हैं।'' हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जै़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नव[9] अफ़राद के नाम बता कर दसवें पर ख़ामोश हो गए, लोगों ने कहा : ''ऐ अबल आ'वर ! हम आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम दे कर पूछते हैं कि दसवां कौन है ?'' फ़रमाया : ''तुम ने मुझे क़सम दी है तो सुनो दसवां फ़र्द अबुल आ'वर है।'' (अबुल आ'वर हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जै़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत है।) (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب عبد الرحمن بن عوف، الحدیث: ۳۷۶۹، ج۵، ص۴۱۶)

अ़शरए मुबश्शरा मह़बूबे ह़बीबे ख़ुदा

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों में से आप को सब से ज़ियादा कौन मह़बूब है ?'' फ़रमाया : ''आ़इशा।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''मर्दों में ?'' फ़रमाया : ''अबू बक्र।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''इन के बा'द कौन ?'' फ़रमाया : ''उ़मर।'' मैं ने कहा : ''फिर कौन ?'' फ़रमाया : ''उ़स्मान।'' मैं ने कहा : ''फिर कौन ?'' फ़रमाया : ''अ़ली बिन अबी त़ालिब।'' हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि फिर मैं ख़ामोश हो गया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''**ऐ अ़ब्दुल्लाह** ! जो पूछना चाहते हो पूछो।'' मैं ने अ़र्ज़ किया : ''**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द कौन आप को ज़ियादा मह़बूब है ?'' फ़रमाया : ''त़लह़ा, फिर ज़ुबैर, फिर सा'द बिन अबी वक़्क़ास, फिर सईद बिन जै़द, फिर अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ और फिर अबू उ़बैदा बिन जर्राह़।'' (الریاض النضرۃ، ج۱، ص۳۳)

www.dawateislami.net

ऐ हिरा ठहर जा, तुझ पर नबी, सिद्दीक़ और शहीद हैं

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मैं नव आदमियों के बारे में गवाही देता हूं कि वोह जन्नती हैं और अगर मैं दसवें आदमी के बारे में भी गवाही दूं तो गुनाह गार न होऊंगा।" पूछा गया : "वोह कैसे ? फ़रमाया : "हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह कोहे हिरा पर थे तो वोह हिलने लगा। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ हिरा ठहर जा, क्यूंकि तुझ पर नबी, सिद्दीक़ और शहीद खड़े हैं।" पूछा गया : "हिरा पर उस वक़्त कौन कौन थे ?" फ़रमाया : "हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم, हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह**, हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम, हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास, और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن)।" पूछा गया : "येह तो नव हैं, दसवें कौन हैं ?" फ़रमाया : "मैं।" (या'नी हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ)

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی الاعور سعید بن زید، الحدیث: ۳۷۷۸، ج۵، ص ۴۲۰)

अ़शरए मुबश्शरा से बुग़्ज़ का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुसलमानों के गुरौह ! अगर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करो यहां तक कि तुम कमान की त़रह़ हो जाओ और ख़ामोशी इख़्तियार करो यहां तक कि तुम कीलों की त़रह़ हो जाओ और तुम नमाज़ पढ़ो यहां तक कि तुम से सुवार ठहर जाए और तुम अस्ह़ाबे अ़शरए (मुबश्शरा) से बुग़्ज़ भी रखो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें औंधे मुंह जहन्नम में गिराएगा।" (الریاض النضرۃ،ج ۱، ص ۳۴)

www.dawateislami.net

अ़शरए मुबश्शरा के नूर से पैदा होने वाला परन्दा

मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आ़लमे अरवाह़ में अ़शरए मुबश्शरा की अरवाह़ को जम्अ़ फ़रमाया और इन के नूर से एक परन्दा पैदा फ़रमाया जो जन्नत ही में रहता है। गोया अ़शरए मुबश्शरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को दुन्या में पैदा करने से पहले ही आ़लमे अरवाह़ में इकठ्ठा कर दिया गया था और जब येह नुफ़ूसे कुदसिय्या दुन्या में तशरीफ़ लाए तो आ़लमे अरवाह़ की त़रह़ यहां भी इकठ्ठे हो गए। नसब में भी, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोह़बत में भी, रिश्तए मुवाख़ात में भी, फिर जन्नत में भी اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इकठ्ठे ही होंगे। तो खुश बख़्त है वोह इन्सान जिस ने इन से मह़ब्बत की, इन में से किसी एक में फ़र्क़ न किया और इन के रास्ते पर चला। नीज़ बद बख़्त है वोह इन्सान जो इन के बाहमी इख़्तिलाफ़ात में उलझा रहा, किसी एक में फ़र्क़ करने का ख़त़रा मौल लिया और नफ़्स की पैरवी करते हुवे किसी की गुस्ताख़ी का मुर्तकिब हुवा। अल्लाह ही को ह़म्द है जिस ने हमें इस गुनाह से मह़फ़ूज़ रखा और आयिन्दा के लिये भी दुआ़ है कि येह करम हमेशा हमारे साथ रहे। (الریاض النضرۃ،ج ۱، ص ۳۳)

अ़शरए मुबश्शरा कु़रआन की तफ़्सीर

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र बिन मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने जद्दे आ'ला ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से रिवायत करते हैं कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान : ﴿مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَ الَّذِیْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ﴾ الآیۃ(پ۲۶، الفتح: ۲۹) में ۞ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗ की तफ़्सीर सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। ۞ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ की तफ़्सीर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं ۞ رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ की तफ़्सीर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं। ۞ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا की तफ़्सीर अ़ली बिन अबी त़ालिब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हैं ۞ یَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانًا की तफ़्सीर ह़ज़रते त़लह़ा और ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) हैं। ۞ سِیْمَاهُمْ فِیْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ की तफ़्सीर ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ व सा'द बिन अबी वक़्क़ास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) हैं।

www.dawateislami.net

۞ ذٰلِکَ مَثَلُھُمۡ فِی التَّوۡرٰىةِ وَمَثَلُھُمۡ فِی الۡاِنۡجِیۡلِ۔۔۔اِلَخ की तफ़्सीर वोह मोअमिनीन हैं जो इन से महब्बत करते हैं। ۞ لِیَغِیۡظَ بِھِمُ الۡکُفَّارَ के मिस्दाक़ वोह लोग हैं जो इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या से बुग़्ज़ रखते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वा'दा किया उन से जो उन में ईमान और अच्छे कामों वाले हैं बख़्शिश और बड़े सवाब का।" (فضائل الصحابۃ للامام احمد، ومن فضائل عمر بن الخطاب، الرقم: ۲۹۰، ج ۱، ص ۴۳۴)

अ़शरए मुबश्शरा के जन्नत में रुफ़क़ा अम्बियाए किराम

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बार हज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! तुम्हें एक बिशारत न दूं ?" अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्यूं नहीं।" फ़रमाया : "तुम्हारे वालिद अबू बक्र जन्नती हैं और जन्नत में इन के रफ़ीक़ हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام होंगे। उ़मर जन्नती हैं और जन्नत में इन के रफ़ीक़ हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام होंगे। उ़स्मान जन्नती हैं और जन्नत में इन का रफ़ीक़ मैं खुद होऊंगा। अ़ली जन्नती हैं और जन्नत में इन के रफ़ीक़ हज़रते यह़्या عَلَیْہِ السَّلَام होंगे। त़लह़ा जन्नती हैं और जन्नत में इन के रफ़ीक़ हज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام होंगे। जुबैर जन्नती हैं और जन्नत में इन के रफ़ीक़ हज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام होंगे। सा'द बिन अबी वक़्क़ास जन्नती हैं और जन्नत में इन के रफ़ीक़ सुलैमान बिन दावूद عَلَیْہِ السَّلَام होंगे। सईद बिन ज़ैद जन्नती हैं और जन्नत में इन के रफ़ीक़ हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام होंगे और अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ जन्नती हैं और जन्नत में इन के रफ़ीक़ हज़रते इदरीस عَلَیْہِ السَّلَام होंगे।" फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ आ़इशा ! मैं सय्यिदुल मुर्सलीन हूं, तुम्हारे वालिद अफ़्ज़लुस्सिद्दीक़ीन हैं और तुम उम्मुल मोअमिनीन हो।" (الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۳۵)

अ़शरए मुबश्शरा की जुदागाना सिफ़ात

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी सारी उम्मत में सब से ज़ियादा रह़्म दिल अबू बक्र हैं। दीन में सब से ज़ियादा मज़बूत़ उ़मर हैं। ह़या में सब से बढ़ कर उ़स्मान और सब से ज़ियादा क़ुव्वते फ़ैसला के मालिक अ़ली इब्ने अबी त़ालिब हैं। हर नबी

www.dawateislami.net

के ह़वारी (मददगार) थे और मेरे ह़वारी त़लह़ा व ज़ुबैर हैं। सा'द बिन अबी वक़्क़ास जहां होंगे ह़क़ उन के साथ होगा, सईद बिन ज़ैद मह़बूबाने ख़ुदा में से हैं। अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ अल्लाह के ताजिरों में से हैं, अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ अल्लाह और उस के रसूल के अमीन हैं। हर नबी का मह़रमे राज़ होता है और मेरा मह़रमे राज़ अमीरे मुआ़विय्या बिन अबी सुफ़्यान है। इन से मह़ब्बत करने वाला नजात पा गया और बुग़्ज़ रखने वाला तबाह हो गया।"

(سنن ابن ماجة، کتاب السنة، باب فی فضائل اصحاب الرسول، الحدیث:۱۵۴، ج۱، ص۱۰۲)

अ़शरए मुबश्शरा क़ुरआनी आयत की तफ़्सीर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने येह आयते मुबारका पढ़ी : ﴿اِنَّ الَّذِیْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰۤىۙ اُولٰٓىٕكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ﴿۱۰۱﴾﴾ (پ۱۷، الانبیاء: ۱۰۱) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "बेशक वोह जिन के लिये हमारा वा'दा भलाई का हो चुका वोह जहन्नम से दूर रखे गए हैं।" फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने फ़रमाया : "मैं उन्हीं में से हूं, सय्यिदुना अबू बक्र, उ़मर, उ़स्मान, और त़लह़ा, ज़ुबैर, सा'द, सईद, अ़ब्दुर्रह़मान, अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ (رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن) उन्हीं में से हैं।"

(تفسیر البیضاوی، الانبیاء:۱۰۱، ج۴، ص۱۱۰)

अ़शरए मुबश्शरा के लिये रिज़ाए मुस्त़फ़ा का परवाना

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه अपने जद्दे अमजद से रिवायत करते हैं कि सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुदैबिय्या से लौटे तो मिम्बर पर तशरीफ़ ला कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना के बा'द इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अबू बक्र ने मुझे कभी भी दुख नहीं दिया। इस बात को अच्छी त़रह़ समझ लो। ऐ लोगो ! उ़मर, उ़स्मान, अ़ली, त़लह़ा, ज़ुबैर, सा'द बिन मालिक, अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ और अव्वल मुहाजिरीन तमाम से मैं राज़ी हूं और इस बात को भी अच्छी त़रह़ समझ लो।" (معرفة الصحابة لابی نعیم، باب السین، سهل بن مالک، ج۲، ص۴۴۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (5)

फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर मअ़ दीगर सहाबए किराम

सहाबा के लिये रहमत की दुआ

हज़रते सय्यिदुना अबू यख़ामर सकसिकी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ۞.....इलाही अबू बक्र पर रहमत भेज क्यूंकि वोह तुझ से और तेरे रसूल से महब्बत करता है। ۞.....इलाही उ़मर पर रहमत भेज क्यूंकि वोह तुझ से और तेरे रसूल से महब्बत करता है। ۞.....इलाही उ़स्मान पर रहमत भेज बेशक वोह तुझ से और तेरे रसूल से महब्बत करता है। ۞.....इलाही अबू उ़बैदा बिन जर्राह पर रहमत भेज पस वोह तुझ से और तेरे रसूल से महब्बत करता है। ۞.....इलाही अ़म्र बिन आ़स पर दुरूद भेज क्यूंकि वोह तेरा और तेरे रसूल का मुहिब है।

(کنز العمال، فضائل الصحابة مجتمعة، الحدیث: ۳۳۲۸۰، ج۲، الجزء: ۱۱، ص ۳۴۵، الریاض النضرة، ج ۱، ص ۴۱، تاریخ مدینة دمشق، ج ۴۲، ص ۱۳۲)

अवसाफ़े सहाबा ब ज़बाने महबूबे सहाबा

हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र मेरी उम्मत में से ज़ियादा मेहरबान और रहीम हैं, उ़मर सब से ज़ियादा अज्र वाले और सब से ज़ियादा आ़दिल हैं, उ़स्मान सब से ज़ियादा बा हया और मुअ़ज़्ज़ज़ हैं, अ़ली सब से ज़ियादा चुस्त और बहादुर हैं, **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द सब से ज़ियादा नेकूकार हैं, अबू ज़र सब से ज़ियादा ज़ोहदो तक़्वा वाले और सदक़ा करने वाले हैं, अबू दरदा सब से ज़ियादा मुन्सिफ़ (इन्साफ़ फ़रमाने वाले) और मुत्तक़ी (परहेज़गार) हैं और मुआ़विय्या सब से ज़ियादा हलीम (बुर्दबार) और सख़ी हैं।" (کنز العمال فی سنن الاقوال والافعال، فضائل الصحابة مجتمعة، الحدیث: ۳۳۲۶۶، ج ۲، الجزء: ۱۱، ص ۳۴۴)

www.dawateislami.net

सहाबए किराम के लिये बरकत की दुआ

हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन अव्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ग़ज़्वए तबूक से वापसी पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खुत़बा देते हुवे इरशाद फ़रमाया : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने अबू बक्र को बरकत अ़ता फ़रमाई येह बरकत उस से जुदा न फ़रमाना, और लोग अबू बक्र की मह़ब्बत पर जम्अ़ हो गए हैं इन को कभी भी अबू बक्र की नफ़रत पर मुन्तशिर न फ़रमाना कि अबू बक्र तेरी रिज़ा को अपनी रिज़ा पर तरजीह़ देता है। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उ़मर बिन ख़त़्त़ाब को इ़ज़्ज़त अ़ता फ़रमा, उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान को सब्र अ़ता फ़रमा, अ़ली बिन अबी त़ालिब की मुवाफ़क़त फ़रमा, जुबैर बिन अ़व्वाम को साबित क़दमी अ़ता फ़रमा, त़लह़ा बिन **उ़बैदुल्लाह** की मग़्फ़िरत फ़रमा, सा'द बिन अबी वक़्क़ास को सलामती अ़ता फ़रमा, अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ को ज़ख़ीरए ख़ैर अ़ता फ़रमा।" (اللآلی المصنوعۃ،ج ۱،ص ۳۹۲)

चौदह रक़ीबे मुस्त़फ़ा

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "हर नबी को सात बरगुज़ीदा साथी या मुह़ाफ़िज़ अ़ता किये गए और मुझे चौदह।" हम ने अ़र्ज़ किया : "वोह कौन हैं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ख़ुद, मेरे दोनों बेटे या'नी ह़सनैने करीमैन, ह़ज़रते जा'फ़र, ह़ज़रते अमीरे ह़म्ज़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर, ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर, ह़ज़रते बिलाल, ह़ज़रते सलमान, ह़ज़रते मिक़्दाद, ह़ज़रते हुज़ैफ़ा, ह़ज़रते अ़म्मार और ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द। (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب اھل بیت النبی، الحدیث: ۳۸۱۰،ج ۵،ص ۴۳۳)

सहाबए किराम से रसूलुल्लाह की रिज़ा

हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन यूसुफ़ बिन सह्ल बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने जद्दे अमजद से रिवायत करते हैं कि सुल्त़ानुल मुतवक्किलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज्जतुल वदाअ़ से लौटे तो मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

की ह़म्दो सना के बा'द इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! अबू बक्र ने मुझे कभी दुख नहीं दिया, इस बात को अच्छी त़रह़ समझ लो। ऐ लोगो ! उ़मर, उ़स्मान, अ़ली, त़लह़ा, ज़ुबैर, सा'द बिन मालिक, अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, और अव्वल मुहाजिरीन तमाम से मैं राज़ी हूं, इस बात को भी अच्छी त़रह़ समझ लो।" (المعجم الکبیر، باب السین، سھل بن مالک بن اخی، الحدیث: ۵۶۴۰، ج۶، ص۱۰۴)

सह़ाबए किराम के अवसाफ़े ह़मीदा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मदद गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मेरी सारी उम्मत में सब से ज़ियादा मेहरबान अबू बक्र हैं, दीन में सब से ज़ियादा पुख़्ता उ़मर, ह़या में सब से सच्चे उ़स्मान, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की किताब के सब से बड़े क़ारी उबय बिन का'ब, फ़राइज़ को सब से ज़ियादा जानने और अ़मल करने वाले ज़ैद बिन साबित, ह़लालो ह़राम को सब से ज़ियादा जानने वाले मुआ़ज़ बिन जबल हैं। याद रखो हर उम्मत का एक अमीन होता है और इस उम्मत का अमीन अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ है।"

(سنن ابن ماجة، فضائل خباب رضی اللہ عنہ، الحدیث: ۱۵۴، ج۱، ص۱۰۲)

सह़ाबए किराम बेहतरीन इन्सान हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र बेहतरीन इन्सान हैं, उ़मर अच्छे आदमी हैं, अबू उ़बैदा बिन जर्राह़, उसैद बिन हुज़ैर, साबित बिन क़ैस बिन शुमास, मुआ़ज़ बिन जबल और मुआ़ज़ बिन अ़म्र बिन जमूह़ येह सब भी अच्छे इन्सान हैं।" (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) (سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب معاذ بن جبل رضی اللہ عنہ، الحدیث: ۳۸۲۰، ج۵، ص۴۳۷)

सह़ाबा में सब से ज़ियादा मह़बूब

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन शक़ीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से पूछा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सह़ाबा में सब से ज़ियादा कौन मह़बूब था ?

www.dawateislami.net

फ़रमाया : "सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।" मैं ने पूछा : "इन के बा'द कौन महबूब था ?" फ़रमाया : "सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।" मैं ने पूछा : "इन के बा'द ?" फ़रमाया : "ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ।" फ़रमाते हैं, मैं ने पूछा : "इन के बा'द कौन ? लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ामोश रहीं ।"

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب ابی بکر الصدیق، الحدیث: ۳۶۷۷، ج۵، ص ۳۷۲)

सह़ाबए किराम के जन्नती घर

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : "ऐ मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथियो ! आज रात मैं ने जन्नत में तुम्हारे घरों और अपने घर के क़ुर्ब को देखा है ।" येह कह कर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और फ़रमाया :

۞....."ऐ अ़ली क्या तुम येह पसन्द करोगे कि जन्नत में तुम्हारा घर मेरे घर के सामने हो जैसे दो भाइयों के घर बाहम मुक़ाबिल होते हैं ?" अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्यूं नहीं ।" येह कहते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने लगे । फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और फ़रमाया :

۞....."मैं एक ऐसे शख़्स का नाम और उस के वालिदैन का नाम भी जानता हूं जब वोह जन्नत में आएगा तो वहां का हर मकान और हर हर क़त़रा मरह़बा मरह़बा पुकार उठेगा ।" ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़र्ज़ करने लगे : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ऐसा शख़्स तो इन्तिहाई कामयाब है ।" फ़रमाया : "वोह अबू बक्र है ।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ इल्तिफ़ात फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया :

۞....."ऐ अबू ह़फ़्स ! मैं ने जन्नत में सफ़ेद जोहर से बना एक मह़ल देखा जिस पर सफ़ेद मोती जड़े थे ।" मैं ने मालिके जन्नत रिज़्वान से पूछा : "येह मह़ल किस के लिये

www.dawateislami.net

है ?" कहने लगे : "एक कुरैशी जवान के लिये।" मैं ने समझा कि शायद येह मेरा है वोह खुद ही बोल उठे : "येह उ़मर बिन ख़त्ताब का है।" फिर मैं ने उस के अन्दर जाना चाहा तो ऐ उ़मर ! मुझे तेरी ग़ैरत याद आ गई।" सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुन कर आबदीदा हो गए, अ़र्ज़ करने लगे : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क्या मुझे आप पर ग़ैरत आएगी ?" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ रुख़े अन्वर किया और इरशाद फ़रमाया :

۞....."हर नबी का एक रफ़ीक़ होता है और ऐ उ़स्मान ! मेरे जन्नत के रफ़ीक़ तुम हो।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ की त़रफ़ नज़रे करम फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया :

۞....."ऐ इब्ने औ़फ़ ! क्या वजह है कि मैं ने तुम्हें तमाम सह़ाबा से देर के साथ आते देखा है ?" अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से ह़िसाब होता रहा कि फ़ुलां माल तुम्हें कहां से मिला ? कहा ख़र्च किया ? बल्कि मुझे तो गुमान गुज़रा कि शायद आप को न देख पाऊंगा।" फिर अ़र्ज़ किया : "मेरे सो ऊंट मिस्र से माले तिजारत से लदे हुवे आए हैं, जिन्हें मैं मदीने के यतीमों और बेवाओं में तक़्सीम करने का ए'लान करता हूं, शायद कि इसी सबब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा ह़िसाब आसान फ़रमा दे।" फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा और ज़ुबैर की त़रफ़ देखा तो फ़रमाया :

۞....."हर नबी के ह़वारी व मददगार होते हैं और मेरे ह़वारी तुम दोनों हो।"

(الریاض النضرۃ،ج ۱، ص ۴۳)

बेहतरी जिस पे करे फ़ख़्र वोह बेहतर सिद्दीक़
सरवरी जिस पे करे नाज़ वोह सरवर सिद्दीक़
चमनिस्ताने नबुव्वत की बहारे अव्वल
गुलशने दीं के बने पहले गुले तर सिद्दीक़

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (6)

फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने जिब्रीले अमीन

उम्मत में सब से अफ़्ज़ल

हज़रते सय्यिदुना **अबुल बख़्तरी** ताई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه रिवायत करते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم को फ़रमाते सुना कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام से इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि "ऐ जिब्रील ! हिजरत में मेरा साथी कौन होगा ?" तो सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : "हिजरत में आप के साथी सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه होंगे जो आप के बा'द आप की उम्मत के मुआ़मलात संभालेंगे और वोह उम्मत में सब से अफ़्ज़ल और उम्मत के लिये सब से ज़ियादा मुस्लेह़ व ख़ैर ख़्वाह हैं ।" (جمع الجوامع، مسند ابی بکر، الحدیث:١٢٠ ، ج ١١، ص ٣٩)

आस्मानों में ह़लीम

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि एक बार बारगाहे रिसालत में सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام हाज़िर थे कि सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه तशरीफ़ लाए तो सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने उन्हें देख कर अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह अबू क़ुहाफ़ा के बेटे अबू बक्र सिद्दीक़ हैं ।" सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ जिब्रईल ! क्या आप लोग भी इन्हें जानते हैं ?" सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : "उस रब عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस ने आप को मबऊ़स फ़रमाया है ! सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ज़मीन की निस्बत आस्मानों में ज़ियादा मश्हूर हैं और आस्मानों में इन का नाम **ह़लीम** (या'नी बुर्दबार) है ।" (الرياض النضرة، ج ١، ص ٨٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (7)

फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सिद्दीक़े अक्बर

मैं ख़लीफ़ए रसूले ख़ुदा हूं

हज़रते इब्ने अबी मलीका رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि मैं ने एक बार हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को यूं पुकारा : "ऐ ख़लीफ़ए ख़ुदा !" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पलट कर मुझे देखा और इरशाद फ़रमाया : "मैं ख़लीफ़ए ख़ुदा नहीं बल्कि ख़लीफ़ए रसूले ख़ुदा हूं और मैं इसी पर राज़ी हूं।" (تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۲۹۴)

सरकार के क़राबत दारों से महब्बत

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अक़ारिब मुझे अपने अक़ारिब से ज़ियादा अज़ीज़ हैं।"

(صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب حدیث بنی نضیر، الحدیث: ۴۰۳۶، ج۳، ص۲۹)

क़ुरआने मजीद सुन कर आप का रोना

हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन हारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों से फ़रमाया : "सूरए तौबा की तिलावत कौन करेगा ?" एक शख़्स ने कहा : "मैं करूंगा।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "पढ़ो।" जब तिलावत करने वाला इस आयत पर पहुंचा : ﴿اِذْ یَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَاۚ﴾(پ۱۰، التوبۃ:۴۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक **अल्लाह** हमारे साथ है।" तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोने लगे और रोते हुवे इरशाद फ़रमाया : "मैं ही इन का साथी हूं।" (الدر المنثور، التوبۃ:۴۰، ج۴، ص۲۰۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (8)

फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने फ़ारूक़े आ'ज़म

महबूबे हबीबे ख़ुदा

हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमारे सरदार हैं, हम में सब से बेहतर और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा महबूब हैं।" (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی بکر الصدیق، الحدیث:٣٦٧٦، ج٥، ص٣٧٢)

शाने सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने फ़ारूक़े आ'ज़म

हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से एक शख़्स ने कहा : "मैं ने आप से बेहतर कोई नहीं देखा।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : "तुम ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की है ?" उस ने कहा : नहीं।" आप ने फ़रमाया : "अगर तुम उन की ज़ियारत का इक़रार करते तो मैं तुम्हारी गर्दन उड़ा देता।" फिर फ़रमाया : "तुम ने हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ियारत की है ?" उस ने कहा : "नहीं।" फ़रमाया : "अगर तुम हां कहते तो मैं तुम्हें सख़्त तरीन सज़ा देता।" (क्यूंकि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बा'द सब से बेहतर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं ! और तुम मुझे अफ़्ज़ल कह रहे हो ?) (الریاض النضرۃ، ج١، ص١٣٧)

कठिन वक़्त में ग़ैबी मदद

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : जंगे बद्र के रोज़ दो आलम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा कि मुशरिकीन एक हज़ार

www.dawateislami.net

और मुसलमान तक़्रीबन तीन सो सतरह (ब रिवायाते दीगर तीन सो तेरह) हैं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़िब्ले की तरफ़ मुंह कर के दुआ के लिये हाथ उठाए और रब عَزَّوَجَلَّ से गिर्या व ज़ारी करते हुवे यूं दुआ करने लगे : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझ से किया हुवा वा'दा पूरा फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर येह मुठ्ठी भर मुसलमान हलाक हो गए तो ज़मीन में ता क़ियामत तेरी इबादत करने वाला कोई न होगा।" आप यूंही देर तक दुआ करते रहे हत्ता कि आप की चादर कन्धे से ढलक कर नीचे तशरीफ़ ले आई। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तशरीफ़ लाए और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चादर मुबारक को उठा कर आप के कन्धे पर रखा और आप का दामन थाम कर यूं अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप बहुत दुआ कर चुके **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपना वा'दा अभी पूरा फ़रमाएगा।" पस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की फ़िरिश्तों के ज़रीए मदद फ़रमाई।

(سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ الانفال، الحدیث:۳۰۹۲، ج۵، ص۵۵، مسلم، کتاب الجهاد والسیر، باب الامداد بالملائکه فی غزوۃ بدر واباحۃ الغنائم، الحدیث:۱۷۶۳، ص۹۶۹)

आप का ईमान सब से अफ़्ज़ल

हज़रते सय्यिदुना हज़ील बिन शुर हबील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "अगर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ईमान को सारे अहले ज़मीन के ईमान के साथ वज़्न किया जाए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ईमान सब से वज़्नी होगा।"

(جمع الجوامع، مسند عمر بن الخطاب، الحدیث:۱۰۴۵، ج۱۱، ص۲۱۸)

सिद्दीक़े अक्बर के सीने का बाल होता

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इरशाद फ़रमाते हैं : "ऐ काश मैं सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सीने का बाल होता।" (تاریخ مدینة دمشق، ج۳۰، ص۳۴۳)

www.dawateislami.net

सारी मख़्लूक़ के सरदार

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हमारे सरदार हैं और इन्हों ने हमारे सरदार हज़रते बिलाल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को आज़ाद करवाया।" (جمع الجوامع، مسند عمر بن الخطاب، الحدیث: ۱۰۵۱، ج ۱۱، ص ۲۱۹)

नेक कामों में सब पर सबक़त

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से नेक कामों में कोई भी सबक़त नहीं ले जा सका आप तमाम लोगों पर सबक़त ले गए।"

(کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل الصدیق، الحدیث: ۳۵۷۱۲، ج ۶، الجزء: ۱۲، ص ۲۲۳، جمع الجوامع، مسند عمر بن الخطاب، الحدیث: ۱۰۵۲، ج ۱۱، ص ۲۱۹)

सय्यिदुना बिलाल तो सिद्दीक़े अक्बर की एक नेकी हैं

हज़रते सय्यिदुना याह़्या बिन सईद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "سَیِّدُنَا بِلَال حَسَنَةٌ مِّنْ حَسَنَاتِ أَبِيْ بَكْر या'नी सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक नेकी हैं।"

(معرفة الصحابة، من اسمه بلال، الحدیث: ۱۱۳۱، ج ۱، ص ۳۳۴، تاریخ مدینة دمشق، ج ۱۰، ص ۴۷۳)

अफ़्ज़ल तरीन शख़्सिय्यत

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : "दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द इस उम्मत में सब से अफ़्ज़ल हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, जो शख़्स इन पर किसी को फ़ज़ीलत दे वोह मुफ़्तरी या'नी तोहमत लगाने वाला है और उस को तोहमत लगाने वाले की सज़ा ही दी जाएगी।"

(کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل الصدیق، الحدیث: ۳۵۶۲۲، ج ۶، الجزء: ۱۲، ص ۲۲۳، جمع الجوامع، مسند عمر بن خطاب، الحدیث: ۱۰۵۸، ج ۱۱، ص ۲۱۹)

www.dawateislami.net

जन्नत में सिद्दीक़े अक्बर

हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कुछ लोगों ने ख़बर दी कि "बहुत से लोग इस बात पर जम्अ़ हो गए हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अफ़्ज़ल हैं।" येह सुनते ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जलाल में आ गए और उन लोगों को बुला कर फ़रमाया : "ऐ शरीर क़ौम ! ऐ शरीर गुरौह ! ऐ घोड़ों के सरदार !" लोगों ने मुतअ़ज्जिब हो कर पूछा : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप हम पर क्यूं जलाल फ़रमाते हैं हम से क्या ग़लती सरज़द हुई है।" लोगों ने तीन बार येही अल्फ़ाज़ दोहराए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तुम लोग मुझे सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर क्यूं फ़ज़ीलत देते हो ? क़सम है उस रब की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! मेरी येह ख़्वाहिश है कि जन्नत में ऐसी जगह रहूं कि आप का दीदार करता रहूं।" (جمع الجوامع، مسند عمر بن الخطاب، الحدیث:۱۰۵۹، ج۱۱، ص۲۱۹)

रुसुल और अम्बिया के बा'द जो अफ़्ज़ल हो आ़लम से
येह आ़लम में है किस का मर्तबा, सिद्दीक़े अक्बर का
अ़ली हैं उस के दुश्मन और वोह दुश्मन अ़ली का है
जो दुश्मन अ़क़्ल का, दुश्मन हुवा सिद्दीक़े अक्बर का
गदा सिद्दीक़े अक्बर का ख़ुदा से फ़ज़्ल पाता है
ख़ुदा के फ़ज़्ल से हूं मैं गदा, सिद्दीक़े अक्बर का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (9)

फ़ज़ीलते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने उ़स्माने ग़नी

ख़िलाफ़त के ह़क़्दार सिद्दीक़े अक्बर हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़मरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : "तमाम लोगों में ख़िलाफ़त के ह़क़दार सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही हैं, बेशक वोह सिद्दीक़ और सानियसनैन हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथी हैं ।"

(کنز العمال، کتاب الخلافۃ مع الامارۃ، الباب الاول فی خلافۃ الخلفاء، الحدیث: ۱۴۱۳۸، ج۳، الجزء: ۵، ص ۲۶۰)

हैं वज़ीरे अह़मदे मुख़्तार, यारे मुस्त़फ़ा
अहले ह़क़ के क़ाफ़िला सालार, यारे मुस्त़फ़ा
हैं सह़ाबा के इमाम व पेश्वा व मुक़्तदा
सरवरे आ़लम के यारे ग़ार, यारे मुस्त़फ़ा
ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म के रफ़ीक़ व ग़म गुसार
ह़ैदरो उ़स्मान के दिलदार, यारे मुस्त़फ़ा
मज़्हरे शाने रिसालत पैकरे सिद्क़ो वफ़ा
वाह क्या हैं साह़िबे किरदार, यारे मुस्त़फ़ा

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (10)

फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अ़ली शेरे ख़ुदा

सिद्दीक़े अक्बर सब से ज़ियादा बहादुर हैं

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अ़क़ील رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने एक दफ़्आ़ इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "बताओ ! सब से ज़ियादा बहादुर कौन है ?" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर आप ही हैं।" फ़रमाया : "मैं तो अपने बराबर वाले से लड़ता हूं इस त़रह़ मैं सिर्फ़ बहादुर हुवा न कि सब से ज़ियादा बहादुर। मैं तो सब से ज़ियादा बहादुर का पूछ रहा हूं कि वोह कौन है ?" लोगों ने अ़र्ज़ किया : "हुज़ूर आप ही इरशाद फ़रमाइये।" फ़रमाया : "ग़ज़्वए बद्र के रोज़ हम ने दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत और निगहदाश्त के लिये एक साइबान बनाया और आपस में मश्वरा किया कि इस साइबान में निगहबानी के फ़राइज़ कौन सर अन्जाम देगा ताकि कोई काफ़िर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला कर के तक्लीफ़ न पहुंचा सके। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम में से कोई भी आगे नहीं बढ़ा, सिर्फ़ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ नंगी तल्वार हाथ में लिये आगे तशरीफ़ लाए और नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास खड़े हो गए और फिर हम ने देखा कि किसी काफ़िर को येह जुरअत न हो सकी कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब भी फटके और बिलफ़र्ज़ किसी ने ऐसी जुरअत का मुज़ाहरा करने की कोशिश भी की तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुंह की खाई, इस लिये हम में सब से ज़ियादा बहादुर तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही थे।"

(کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل الصدیق، الحدیث: ۳۵۶۸۵، ج۶، الجزء: ۱۲، ص۲۳۵)

आले फ़िरऔ़न के मोमिन से बेहतर

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इरशाद फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं ने देखा कि कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को घेर रखा है और आप को मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तक्लीफ़ें दे रहे हैं, एक

www.dawateislami.net

शख़्स आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दस्त दराज़ी कर रहा है तो दूसरा निहायत ही सख़्ती से ज़दो कोब कर रहा है और येह बदगोई भी करता जा रहा है कि तू ही है जिस ने तमाम खुदाओं को छोड़ कर एक खुदा बना लिया है। खुदा की क़सम ! उस वक़्त प्यारे आक़ा दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब सिवाए ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के कोई न गया, आप एक क़ुरैशी को पीटते और दूसरे को धक्का देते, तीसरे पर दबाव डालते हुवे सब को पीछे हटाने लगे और साथ ही येह भी फ़रमाते जाते : "अफ़्सोस है तुम पर कि तुम ऐसी शख़्सिय्यत को शहीद करना चाहते हो जिस का कहना है कि मेरा रब **अल्लाह** है।" येह कहने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने ऊपर से चादर उठाई और ज़ारो क़ितार रोने लगे और इतना रोए कि आप की रीश मुबारक आंसूओं से तर हो गई, फिर इरशाद फ़रमाया : "मैं तुम्हें खुदा का वासित़ा दे कर पूछता हूं मुझे बताओ कि आले फ़िरऔन का मोमिन बेहतर था या ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ?" तमाम लोग ख़ामोश रहे। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "मुझे जवाब क्यूं नहीं देते ?" फिर फ़रमाया : "खुदा की क़सम ! ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ह़याते त़य्यिबा का एक लम्ह़ा आले फ़िरऔन के मोमिन जैसे शख़्स के हज़ारों लम्ह़ात से बेहतर है, अरे वोह शख़्स तो अपने ईमान को छुपाया करता था और येह पाकीज़ा हस्ती अपने ईमान का ए'लानिया इज़्हार करती थी।" (مسند البزار، مما روی محمد بن عقیل عن علی، ج۳، ص۱۵، تاریخ الخلفاء، ص۲۸)

आले फ़िरऔन के मोमिन का तज़किरा

मज़्कूरए बाला ह़दीस में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने आले फ़िरऔन के जिस मोमिन का ज़िक्र फ़रमाया है वोह क़िब्त़ी क़ौम का एक फ़र्द था जो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर ईमान ला चुका था लेकिन उस ने अपना ईमान छुपाया हुवा था, अपनी क़ौम को अपने ईमान से आगाह नहीं किया था उस ने जब सुना कि फ़िरऔन और उस के रुफ़क़ा ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को क़त्ल करने के मन्सूबे बना रहे हैं तो उस ने उन को इस इरादे से बाज़ रखने की तल्क़ीन शुरूअ़ की, पहले तो उस ने उन्हें झिड़का कि "तुम मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के दरपे क्यूं हो ? उस ने तुम्हारा क्या जुर्म किया है ? उस ने कौन सी क़ानून शिकनी की है ? मह़ज़ इस लिये

www.dawateislami.net

तुम उसे क़त्ल करना चाहते हो कि वोह कहता है : मेरा परवर दगार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है और उस ने अपने अ़क़ीदे की ह़क़्क़ानिय्यत दलाइल व मो'जिज़ात से साबित कर दी है तुम्हारा मुआ़शरा तो बड़ा तरक़्क़ी याफ़्ता है तुम उस के ज़ाती अ़क़ीदे में क्यूं दख़्ल देते हो उस को अपने ह़ाल पर छोड़ दो। अगर बिलफ़र्ज़ वोह ग़लत़ है तो ख़ुद ही अपने अन्जाम तक पहुंच जाएगा हमें अपने हाथ उस के ख़ून से रंगने की क्या ज़रूरत है।"

इस मोमिन का ज़िक्र पारह 24, सूरए मोमिन, आयत नम्बर 28 में यूं किया गया है :

﴿وَ قَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗۤ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَ قَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَ اِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَ اِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और बोला फ़िरऔ़न वालों में से एक मर्द मुसलमान कि अपने ईमान को छुपाता था क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो कि वोह कहता है मेरा रब अल्लाह है और बेशक वोह रोशन निशानियां तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से लाए और अगर बिलफ़र्ज़ वोह ग़लत़ कहते हैं तो उन की ग़लत़ गोई का वबाल उन पर और अगर वोह सच्चे हैं तो तुम्हें पहुंच जाएगा कुछ वोह जिस का तुम्हें वा'दा देते हैं बेशक अल्लाह राह नहीं देता उसे जो ह़द से बढ़ने वाला बड़ा झूटा हो।"

सिद्दीक़े अक्बर का दिल बहुत मज़बूत़ है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू शरीह़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم को मिम्बर पर येह फ़रमाते हुवे सुना कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का दिल बहुत मज़बूत़ है।" (الریاض النضرة، ج ۱، ص ۱۳۹)

सब से ज़ियादा रह़्म दिल

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم को देख कर फ़रमाया : "जो शख़्स किसी ऐसे इन्सान को देखना चाहता है कि जो नबिय्ये अकरम रसूले मोह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सब से क़रीबी रिश्तेदार हो, सब से ज़ियादा ख़साइसे नबुव्वत से फ़ैज़याब हुवा हो

www.dawateislami.net

और रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का महबूब तरीन हो तो वोह अ़लिय्युल मुर्तज़ा को देख ले।" जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने येह सुना तो इरशाद फ़रमाया : "अबू बक्र ने मेरे बारे में अगर येह कहा है तो याद रखो ! वोह इन्सानों में सब से ज़ियादा रह़्म दिल, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के यारे ग़ार और अपने माल से आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा नफ़्अ़ पहुंचाने वाले हैं।" (الرياض النضرة،ج ١، ص ١٣٠)

सब से बेहतर शख़्स

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم पर जब ऐसा क़ातिलाना ह़म्ला हुवा कि आप क़रीबुल विसाल हो गए तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के अह़बाब ने आप से पूछा कि : "क्या आप किसी को अपना जा निशीन नहीं बनाएंगे ?" फ़रमाया : "नहीं क्यूंकि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी जा निशीन मुक़र्रर नहीं फ़रमाया था, हम ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के वक़्त आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर येही सुवाल किया था कि : **या रसूलल्लाह** ! क्या आप किसी को अपना जा निशीन नहीं बनाएंगे ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी बेहतरी चाहेगा तो तुम में सब से बेहतर शख़्स को ह़ाकिम बना देगा।" जैसा कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हम में सब से बेहतर शख़्सिय्यत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को हमारा ह़ाकिम बना दिया।" (تاريخ مدينة دمشق،ج ٣٠، ص ٢٩٠)

सह़ाबा में सब से अफ़्ज़ल

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा बिन शद्दाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि : "हम सब सह़ाबा में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه सब से अफ़्ज़ल हैं।" (الرياض النضرة،ج ١، ص ١٣٨)

www.dawateislami.net

रब का अ़ता कर्दा नाम

हज़रते सय्यिदुना हकीम बिन सा'द رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि मैं ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم को मिम्बर पर येह इरशाद फ़रमाते हुवे सुना कि "**अल्लाह** तआ़ला ने अपने ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बान पर हज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र** का नाम **सिद्दीक़** रखा।" (تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۷۶)

आस्मान से नाज़िल होने वाला नाम

हज़रते सय्यिदुना अबू यह्या رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने क़सम खा कर इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** तआ़ला ने सय्यिदुना **अबू बक्र** का नाम **सिद्दीक़** आस्मान से नाज़िल फ़रमाया है।"

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، الاحادیث المشعرۃ بتسمیۃ ابی بکر، الحدیث: ۴۴۶۱، ج۴، ص۴)

सिद्दीक़े अक्बर के लिये दुआ़ए रह़मत

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अबू बक्र पर रह़म फ़रमाए कि इन्हों ने अपनी बेटी का निकाह़ मुझ से किया और मुझे दारुल हिजरत तक पहुंचाया नीज़ अपने माल से बिलाल को आज़ाद किया।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب علی بن ابی طالب، الحدیث: ۳۷۳۴، ج۵، ص۳۹۸)

हर नेक काम में सबक़त

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : "उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है! मैं ने जिस काम में भी सबक़त का इरादा किया उस में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझ से सबक़त ले गए।"

(مجمع الزوائد، کتاب المناقب، جامع فی فضلہ، الحدیث: ۱۴۳۳۲، ج۹، ص۲۹)

हुज्जत व दलील

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم इरशाद फ़रमाते हैं कि "क़ियामत में आने वाले हुक्मरानों और वालियों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को हुज्जत और दलील बनाया है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम येह दोनों सब पर सबक़त ले गए हैं और इन दोनों ने बा'द में आने वालों को (इख़्लास व तक़्वा के ए'तिबार से) मुश्किल में डाल दिया।" (کنزالعمال،کتاب الفضائل،فضل الشیخین،الحدیث:۳۲۱۵۰،ج۷،الجزء:۱۳،ص۱۳)

साहिबे सहीफ़ा से ज़ियादा मह़बूब

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के विसाल के बा'द आप के पास तशरीफ़ लाए जब कि आप के जसदे मुबारक को एक कपड़े से ढांप दिया गया था तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मेरे नज़्दीक कोई इस शख़्सिय्यत से बढ़ कर पसन्दीदा नहीं जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपने नेक आ'माल नामे के साथ मुलाक़ात की हो।" (تاریخ الخلفاء،ص۴۵)

सिद्दीक़े अक्बर से मह़ब्बत का इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इरशाद फ़रमाते हैं : "जिस ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मह़ब्बत की, क़ियामत के दिन वोह उन ही के साथ खड़ा होगा और जहां वोह तशरीफ़ ले जाएंगे वोह भी उन ही के साथ साथ जाएगा।" (کنزالعمال،کتاب الفضائل،فضل الشیخین،الحدیث:۳۶۰۹۶،ج۷،الجزء:۱۳،ص۲،تاریخ مدینۃ دمشق،ج۳۹،ص۱۲۸)

तमाम नेकियों में से एक नेकी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तमाम नेकियों में से सिर्फ़ एक नेकी हूं।" (تاریخ مدینۃ دمشق،ج۳۰،ص۳۸۳،کنزالعمال،کتاب الفضائل،فضل الصدیق،الحدیث:۳۵۶۳۱،ج۶،الجزء:۱۲،ص۲۲۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

महब्बते अ़ली और बुग़्ज़े शैख़ैन जम्अ़ नहीं हो सकते

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की बारगाह में हज़रते सय्यिदुना ज़ुहैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه हाज़िर हुवे और आप को यूं मुख़ात़ब किया : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द तमाम लोगों में बेहतर !" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "ठहर ऐ अबू ज़ुहैफ़ा ! हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द सब से बेहतरीन शख़्सिय्यात अबू बक्र व उ़मर हैं, किसी मोमिन के दिल में मेरी महब्बत और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर का बुग़्ज़ जम्अ़ नहीं हो सकते और न ही मेरी दुश्मनी और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर की महब्बत जम्अ़ हो सकती है।"

(تاریخ الخلفاء ، ص۴۵، کنز العمال ، کتاب الفضائل، فضل الشیخین، الحدیث:۳۶۱۳۶ ،ج۷، الجزء:۱۳، ص۱۱ ، تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۳۵۶)

चार बातों में सबक़त

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि बिला शुबा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه इन चार बातों में मुझ से सबक़त ले गए : (1) उन्हों ने मुझ से पहले इज़्हारे इस्लाम किया। (2) मुझ से पहले हिजरत की। (3) सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के यारे ग़ार होने का शरफ़ पाया। (4) और सब से पहले नमाज़ क़ाइम फ़रमाई।" (الریاض النضرۃ، ج۱، ص۸۹، تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۲۹۱)

सिद्दीक़े अक्बर की इमामत पर रिज़ामन्दी

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की इमामत पर रिज़ामन्दी का इज़्हार करते हुवे यूं इरशाद फ़रमाया : "जब रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दीनी मुआ़मलात में इन से अपनी रिज़ामन्दी का इज़्हार फ़रमाया तो हम दुन्यावी मुआ़मलात में भी इन से राज़ी हो गए।" (تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۲۶۵، کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل الصدیق، الحدیث:۳۵۶۲۵، ج۶، الجزء:۱۲، ص۲۳۰)

www.dawateislami.net

मस्जिदे नबवी में दाख़िल होने में पहल

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ाते ज़ाहिरी के छे रोज़ बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत के लिये मस्जिदे नबवी हाज़िर हुवे। मस्जिद के बाहर हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ किया : "ऐ ख़लीफ़ए **रसूलुल्लाह** ! आगे बढ़िये।" (या'नी मस्जिद में पहले आप दाख़िल हों) हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं उस शख़्स से आगे नहीं बढ़ सकता जिस के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मैं ने येह सुना है कि अ़ली का मक़ाम मेरे हां ऐसा है जैसा **अल्लाह** के हां मेरा मक़ाम है।" हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने जवाबन अ़र्ज़ किया : "मैं भी ऐसे शख़्स से आगे नहीं बढ़ सकता, जिस के मुतअ़ल्लिक़ मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना है कि हर एक ने मेरी तकज़ीब की सिवाए अबू बक्र सिद्दीक़ के और सुब्ह़ हर शख़्स के दरवाज़े पर अन्धेरा होता है सिवाए अबू बक्र सिद्दीक़ के।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "क्या वाक़ेई आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येही फ़रमाते सुना है ?" अ़र्ज़ किया : "जी हां।" फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم का हाथ पकड़ा और दोनों इकठ्ठे मस्जिद में दाख़िल हो गए। (الریاض النضرۃ، ج ۱، ص ۱۲۴)

निहायत अ़ज़ीम शख़्सिय्यत

हज़रते सय्यिदुना नज़ाल बिन सबरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि हम ने हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से अ़र्ज़ किया कि : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप हमें हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ कुछ इरशाद फ़रमाएं।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ वोह अ़ज़ीम शख़्सिय्यत हैं कि जिन का नाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام और प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से रखा। वोह दीनी मुआ़मलात में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा थे। पस जिस शख़्स से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे दीनी मुआ़मलात में राज़ी हुवे हम उस से दुन्यावी मुआ़मलात में राज़ी हो गए।" (كنزالعمال،فضائل الصحابة،جامع الخلفاء،الحديث:٣٦٦٩٤،ج٧،الجزء:١٣،ص١٣)

ख़िलाफ़त दुन्या से ख़त्म हो गई

हज़रते सय्यिदुना उसैद बिन सफ़्वान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं कि जब हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हुवा तो अहले मदीना रो रो के निढाल हो गए और इस त़रह़ बेचैन व परेशान हो गए जैसे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के वक़्त लोग बेचैन और ग़म से निढाल थे। हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم रोते हुवे तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "आज ख़िलाफ़ते नबुव्वत दुन्या से ख़त्म हो गई।" (اسدالغابة،اسيدبن صفوان،ج١،ص١٤١)

गुस्ताख़े सिद्दीक़े अक्बर को मुल्क बदर कर दिया

अ़ब्दुल्लाह बिन अस्वद हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान में गुस्ताख़ी किया करता था, हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने उसे क़त्ल करने के लिये तल्वार मंगाई। लेकिन लोगों ने उस की इस्लाह़ की उम्मीद दिलाई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना इरादा तब्दील फ़रमा कर उसे मुल्क बदर करने का हुक्म दिया, और इरशाद फ़रमाया : "मैं जिस शहर में हूं उस शहर में येह नहीं ठहर सकता।" पस उसे जिला वत़न कर के शाम भेज दिया गया। (كنزالعمال،كتاب الفضائل،فضل الشيخين،الحديث:٣٦١٥١،ج٧،الجزء:١٣،ص١٣)

बोहतान लगाने वाले की सज़ा

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स मुझे सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا पर फ़ज़ीलत देगा मैं उस को **मुफ़्तरी** (या'नी बोहतान लगाने वाले) की सज़ा दूंगा।"

(الاستيعاب فى معرفة الاصحاب،عبدالله بن ابى قحافة،ج٣،ص٩٩،تاريخ مدينة دمشق،ج٤٤،ص٣٦٥)

www.dawateislami.net

ज़ानी की सज़ा

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : "जो मुझे सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) पर फ़ज़ीलत देगा मैं उसे ज़ानी की ह़द लगाऊंगा ।" (كنز العمال، كتاب الفضائل، فضل الشيخين، الحديث: ٣٦١٤٧، ج٧، الجزء: ١٣، ص ١٣)

तेरी गर्दन उड़ा देता

एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर कहने लगा कि "आप तमाम लोगों से बेहतर हैं ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "क्या तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की है ?" उस ने कहा : "नहीं ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : "तू ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की ज़ियारत की है ?" उस ने कहा : "नहीं ।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने इरशाद फ़रमाया : "अगर तू सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखने का इक़रार करता तो मैं तेरी गर्दन उड़ा देता और अगर तू सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर की ज़ियारत का इक़रार करता तो मैं तुझे कोड़े लगाता ।" (क्यूंकि इन की ज़ियारत करने के बा'द तो कोई भी इन के ग़ैर को इन से अफ़्ज़ल नहीं कह सकता और अगर कोई कहे तो यक़ीनन वोह बुग़्ज़ की वजह से ही कहेगा और इन से बुग़्ज़ रखने वाले की येही सज़ा है)

(كنز العمال، كتاب الفضائل، فضل الشيخين، الحديث: ٣٦١٤٧، ج٧، الجزء: ١٣، ص ١٣)

आख़िरी ज़माने के शरीर लोग

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इरशाद फ़रमाया : "अ़न क़रीब आख़िरी ज़माने में ऐसे लोग होंगे जो हमारी मह़ब्बत का दा'वा करेंगे और हमारे गुरौह में होना ज़ाहिर करेंगे, वोह लोग **अल्लाह** के शरीर बन्दों में से हैं जो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) को बुरा कहते हैं ।"

(تاريخ مدينة دمشق، ج٢٦، ص٣٤٣، كنز العمال، كتاب الفضائل، فضل الشيخين، الحديث: ٣٦٠٩٨، ج٧، الجزء: ١٣، ص٦ ملتقطا)

www.dawateislami.net

शहज़ादिये कौनैन की नमाज़े जनाज़ा

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुहम्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि जब हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साहिब ज़ादी, शहज़ादिये कौनैन सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल हुवा तो सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व उमर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) आप की नमाज़े जनाज़ा में तशरीफ़ लाए। सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को नमाज़ पढ़ाने के लिये फ़रमाया तो हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया : "ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा हैं, मैं आप की मौजूदगी में नमाज़ नहीं पढ़ाऊंगा ।" फिर हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आगे बढ़े और सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई ।

(جمع الجوامع، مسند ابی بکر، الحدیث:۱۵۳، ج ۱۱، ص ۳۸)

सब से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्सिय्यत

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "इस उम्मत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द **अल्लाह** के नज़्दीक सब से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं और इन का रुत्बा सब से ज़ियादा बुलन्द है क्यूंकि इन्हों ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब से पहले क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने हमीद को जम्अ़ करना शुरूअ़ किया और **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीन को इस की क़दीम हुस्न व ख़ूबियों के साथ क़ाइम फ़रमाया ।"

(جمع الجوامع، مسند ابی بکر، الحدیث:۱۵۷، ج ۱۱، ص ۳۹)

फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने मौला अ़ली

हज़रते सय्यिदुना उसैद बिन सफ़्वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : जब हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का विसाल हुवा तो मदीने की फ़ज़ा में रन्जो ग़म के आसार थे,

www.dawateislami.net

हर शख़्स शिद्दते ग़म से निढाल था, हर आंख से अश्क रवां थे, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان पर उसी त़रह़ परेशानी के आसार थे जैसे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त थे, सारा मदीना ग़म में डूबा हुवा था। फिर जब ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को ग़ुस्ल देने के बा'द कफ़न पहनाया गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم तशरीफ़ लाए, और कहने लगे : आज के दिन नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा हम से रुख़्सत हो गए। फिर आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास खड़े हो गए और आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के अवसाफ़ बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ऐ सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए, आप **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बेहतरीन रफ़ीक़, अच्छे मुह़िब, बा ए'तिमाद रफ़ीक़ और मह़बूबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के राज़ दां थे। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मश्वरा फ़रमाया करते थे, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه लोगों में सब से पहले मोमिन, ईमान में सब से ज़ियादा मुख़्लिस, पुख़्ता यक़ीन रखने वाले और मुत्तक़ी व परहेज़गार थे। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه दीन के मुआ़मलात में बहुत ज़ियादा सख़ी और **अल्लाह** के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सब से ज़ियादा क़रीबी दोस्त थे। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की सोह़बत सब से अच्छी थी, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का मर्तबा सब से बुलन्द था, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه हमारे लिये बेहतरीन वासित़ा थे, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का अन्दाज़े ख़ैर ख़्वाही, इस्लाम की दा'वत देने का त़रीक़ा, शफ़्क़तें और अ़त़ाएं **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रह़ थीं, आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बहुत ज़ियादा ख़िदमत गुज़ार थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को अपने रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इस्लाम की ख़िदमत की बेहतरीन जज़ा अ़त़ा फ़रमाए। आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने दीने मतीन और नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत ज़ियादा ख़िदमत की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत के शायाने शान आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को जज़ा अ़त़ा फ़रमाए। जिस वक़्त लोगों ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को झुटलाया तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ फ़रमाई, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

के हर फ़रमान को हक़ व सच जाना और हर मुआमले में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तस्दीक़ फ़रमाई, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने करीम में आप को सिद्दीक़ का लक़ब अ़ता फ़रमाया फ़रमाने बारी तआ़ला है : ﴿وَالَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖۤ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ﴾(پ۲۴، الزمر:۳۳) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो येह सच ले कर तशरीफ़ लाए और वोह जिन्हों ने उन की तस्दीक़ की येही डर वाले हैं।

इस आयत में **صَدَّقَ بِهٖ** से मुराद सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ या तमाम मोअमिनीन हैं। फिर हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने मज़ीद फ़रमाया : ऐ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिस वक़्त लोगों ने बुख़्ल किया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सख़ावत की, लोगों ने मसाइबो आलाम में **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का साथ छोड़ दिया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ रहे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सोहबते बा बरकत से बहुत ज़ियादा फ़ैज़याब हुवे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान तो येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को **सानियसनैन** का लक़ब मिला, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ यारे ग़ार हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर सकीना नाज़िल फ़रमाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हिजरत फ़रमाई, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़ व अमीन और ख़लीफ़ा फ़िद्दीन थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़िलाफ़त का हक़ अदा किया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुर्तद्दीन से जिहाद किया, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द लोगों के लिये सहारा बने, जब लोगों में उदासी और मायूसी फैलने लगी तो उस वक़्त भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हौसले बुलन्द रहे। लोगों ने अपने इस्लाम को छुपाया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने ईमान का इज़्हार किया, जब लोगों में कमज़ोरी आई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को तक़्विय्यत बख़्शी, उन की हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई और उन्हें संभाला।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हमेशा नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ की, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ए बरहक़ थे, मुनाफ़िक़ीन व कुफ़्फ़ार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हौसलों को पस्त न कर सके, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

ने कुफ़्फ़ार को ज़लील किया, बाग़ियों पर ख़ूब शिद्दत की, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन के लिये ग़ैज़ो ग़ज़ब का पहाड़ थे। लोगों ने दीनी उमूर में सुस्ती की लेकिन आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब ख़ुशी दीन पर अ़मल किया। लोगों ने ह़क़ बात से ख़ामोशी इख़्तियार की मगर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़लल ए'लान कलिमए ह़क़ कहा, जब लोग अन्धेरों में भटकने लगे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात उन के लिये मनारए नूर साबित हुई। उन्हों ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की त़रफ़ रुख़ किया और कामयाब हुवे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ सब से ज़ियादा ज़हीन व फ़त़ीन, आ'ला किरदार के मालिक, सच्चे, ख़ामोश त़बीअ़त, दूर अन्देश, अच्छी राए के मालिक, बहादुर और सब से ज़ियादा पाकीज़ा ख़स्लत थे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब लोगों ने दीने इस्लाम से दूरी इख़्तियार की तो सब से पहले आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ही ने इस्लाम क़बूल किया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमानों के सरदार थे, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने लोगों पर मुशफ़िक़ बाप की त़रह़ शफ़्क़तें फ़रमाईं, जिस बोझ से वोह लोग थक कर निढाल हो गए थे आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें सहारा दे कर वोह बोझ भी अपने कन्धों पर लाद लिया। जब लोगों ने बे परवाई का मुज़ाहरा किया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ौम की बाग दौड़ संभाली, जिस चीज़ से लोग बे ख़बर थे आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उसे जानते थे और जब लोगों ने बे सब्री का मुज़ाहरा किया तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब्र से काम लिया। जो चीज़ लोग त़लब करते आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़त़ा फ़रमा देते। लोग आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की पैरवी कर के कामयाबी की त़रफ़ बढ़ते रहे और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के मश्वरों और ह़िक्मते अ़मली की वजह से उन्हें ऐसी ऐसी कामयाबियां अ़त़ा हुईं जो उन लोगों के वहमो गुमान में भी न थीं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब और मोमिनों के लिये रह़मत, शफ़्क़त और मह़फ़ूज़ क़ल्आ़ थे। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी मन्ज़िले मक़्सूद की त़रफ़ परवाज़ कर गए और अपने मक़्सूद को पा लिया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की राए कभी ग़लत़ न हुई, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी बुज़दिली का मुज़ाहरा न किया, आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत निडर थे, कभी भी न घबराते गोया आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जज़्बों और हिम्मतों का ऐसा पहाड़ थे जिसे न तो आन्धियां डगमगा सकीं न ही सख़्त गरज वाली बिजलियां मुतज़लज़ल कर सकीं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बिल्कुल

www.dawateislami.net

ऐसे ही थे जैसे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में फ़रमाया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बदन के ए'तिबार से अगर्चे कमज़ोर थे लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन के मुआ़मले में बहुत ज़ियादा क़वी व मज़्बूत़ थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपने आप को बहुत आ़जिज़ समझते, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का रुत्बा बहुत बुलन्द था और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों की नज़रों में भी बहुत बा इ़ज़्ज़त व बा वक़ार थे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ता'रीफ़ करते हुवे मज़ीद फ़रमाया : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कभी किसी को ऐ़ब न लगाया, न किसी की ग़ीबत की और न ही कभी लालच किया। बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों पर बहुत ज़ियादा शफ़ीक़ व मेहरबान थे, कमज़ोर व नातुवां लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक मह़्बूब और इ़ज़्ज़त वाले होते, अगर किसी मालदार और त़ाक़तवर शख़्स पर उन का ह़क़ होता तो उन्हें ज़रूर उन का ह़क़ दिलवाते। त़ाक़त और शानो शौकत वालों से जब तक लोगों का ह़क़ न ले लेते वोह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक कमज़ोर होते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक अमीर व ग़रीब सब बराबर थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के नज़्दीक लोगों में सब से ज़ियादा मुक़र्रब व मह़्बूब वोह था जो सब से ज़ियादा मुत्तक़ी व परहेज़गार था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सिद्क़ व सच्चाई के पैकर थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़ैसला अटल होता, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बहुत मज़्बूत़ राए के मालिक और ह़लीम व बुर्दबार थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हम सब से सबक़त ले गए, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द वाले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का मुक़ाबला नहीं कर सकते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन सब को पीछे छोड़ दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी मन्ज़िले मक़्सूद को पहुंच गए। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बहुत अ़ज़ीम कामयाबी ह़ासिल हुई, (ऐ यारे ग़ार !) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इस शान से अपने अस्ली वत़न की त़रफ़ कूच किया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़ज़मत के डंके आस्मानों में बज रहे हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जुदाई का ग़म सारी दुन्या को रुला रहा है। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ

हम हर ह़ाल में अपने रब के हर फ़ैसले पर राज़ी हैं, हर मुआ़मले में उस की इत़ाअ़त करने वाले हैं। ऐ सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल

www.dawateislami.net

के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की जुदाई का ग़म मुसलमानों के लिये सब से बड़ा ग़म है। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ात अहले इस्लाम के लिये इज़्ज़त का बाइस बनी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुसलमानों के लिये बहुत बड़ा सहारा और जाए पनाह थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आख़िरी आराम गाह अपने प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के कुर्ब में बनाई। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तरफ़ से अच्छा अज्र अ़ता फ़रमाए और हमें आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बा'द सिराते़ मुस्तक़ीम पर साबित क़दम रखे और गुमराही से बचाए। (आमीन)

लोग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم का कलाम ख़ामोशी से सुनते रहे। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ख़ामोशी इख़्तियार की तो लोगों ने ज़ारो क़ितार रोना शुरूअ़ कर दिया और सब ने बयक ज़बान हो कर कहा : ऐ हैदरे कर्रार ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिल्कुल सच फ़रमाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बिल्कुल सच फ़रमाया। (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۲۶۲)

पुल सिरात़ से गुज़रने का इजाज़त नामा

एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मुलाक़ात हुई तो सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देख कर मुस्कुराने लगे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पूछा : "आप क्यूं मुस्कुरा रहे हैं ?" सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि पुल सिरात़ से वोह ही गुज़रेगा जिस को अ़लिय्युल मुर्तज़ा तह़रीरी इजाज़त नामा देंगे।" येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मुस्कुरा दिये और अ़र्ज़ करने लगे : "क्या मैं आप को **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ से आप के लिये बयान कर्दा ख़ुश ख़बरी न सुनाऊं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : पुल सिरात़ से गुज़रने का तह़रीरी इजाज़त नामा सिर्फ़ उसी को मिलेगा जो अबू बक्र सिद्दीक़ से मह़ब्बत करने वाला होगा।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۲۰۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (11)

फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सहाबए किराम

मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने हस्सान बिन साबित

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से इरशाद फ़रमाया : "ऐ हस्सान ! क्या तुम ने भी मेरे सिद्दीक़ के बारे में कुछ मद्ह सराई की है ?" अ़र्ज़ किया : "जी हां **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !" फ़रमाया : "मुझे सुनाओ।" हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने शाने सिद्दीक़े अक्बर में एक रुबाई अ़र्ज़ की :

وَثَانِي اثْنَيْنِ فِي الْغَارِ الْمَنِيفِ وَقَدْ
طَافَ الْعَدُوُّ بِهِ إِذْ صَاعَدَ الْجَبَلَا

तर्जमा : ऐ अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आप उस बा बरकत ग़ारे सौर में "**सानियसनैन**" या'नी दो में से दूसरे थे जब दुश्मन ने उस पहाड़ के गिर्द चक्कर लगाया और उस पर चढ़ा।

وَكَانَ حُبَّ رَسُولِ اللّٰهِ قَدْ عَلِمُوا
مِنَ الْبَرِيَّةِ لَمْ يَعْدِلْ بِهِ بَدَلَا

तर्जमा : और आप ही **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के महबूब हैं और सब जानते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सारी मख़्लूक़ में किसी को आप का हम पल्ला नहीं समझा। ख़ातमुल मुर्सलीन, रह्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह सुन कर बहुत ख़ुश हुवे और इतना मुस्कुराए कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक दाढ़ें नज़र आने लगीं, फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ हस्सान ! तू ने सच कहा, अबू बक्र ऐसे ही हैं।"

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ابوبکر الصدیق ابن ابی قحافۃ، الحدیث: ۴۴۶۹، ج۴، ص۷، جمع الجوامع، مسند انس بن مالک، الحدیث: ۹۳۶۱، ج۱۴، ص۲۱)

www.dawateislami.net

हर जगह सरकार की मइय्यत

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि इन के पास एक शख़्स आया और कहने लगा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी हयाते तृय्यिबा में जहां भी होते वहीं हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم भी आप के साथ होते ।" हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन अबी बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : "इस बात पर क़सम न उठाना।" उस ने पूछा : "क्यूं ?" फ़रमाया : "क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इरशाद है : "ثَانِیَ اثْنَیْنِ اِذْ ھُمَا فِی الْغَارِ या'नी गारे सौर एक ऐसी जगह है जहां हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ न थे बल्कि वहां सिर्फ़ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही हाज़िरे ख़िदमत थे।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۱۲۵)

हुक़ूक़ुल इबाद की अदाएगी

हज़रते सय्यिदुना रबीआ अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार मेरे और जनाबे सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान किसी बात पर बह्स हो गई, बह्स-मुबाहसा में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे ऐसा लफ़्ज़ कह दिया जो मुझे ना गवार गुज़रा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "ऐ रबीआ ! तुम भी मुझे ऐसा ही लफ़्ज़ कह लो ताकि बदला हो जाए।" मैं ने कहा : "नहीं ! मैं नहीं कहूंगा।" सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दोबारा फ़रमाया : "तुम वैसा ही लफ़्ज़ कहो ! वरना मैं नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में चला जाऊंगा।" मैं ने कहा : "बहर हाल मैं आप को ऐसा लफ़्ज़ नहीं कह सकता।" येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अफ़्सोस से ज़मीन पर पाउं मारा और बारगाहे इमामुल अम्बिया में हाज़िर होने के लिये चल दिये, मैं ने इन की इत्तिबाअ़ की और पीछे पीछे चल दिया। जब मेरे क़बीले के लोगों को मा'लूम हुवा कि मेरा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से किसी बात पर झगड़ा हो गया है और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

www.dawateislami.net

सरकार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में चले गए हैं तो वोह लोग दौड़े दौड़े मेरी मदद को आए और कहने लगे : "अबू बक्र से तुम्हारे किस बात पर झगड़ा हुवा है और वोह किस मुआ़मले में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मदद लेने गए हैं ?" मैं ने उन के तेवर देख कर कहा : "तुम जानते हो येह कौन हैं ? येह सिद्दीक़े अक्बर हैं, येह सानियसनैन फ़िल ग़ार हैं, ख़बरदार ! जो तुम ने इस मुआ़मले में मेरी मदद करने की कोशिश की, तुम्हारी मदद इन की नाराज़ी का सबब बन जाएगी और सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की नाराज़ी नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी है और **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का सबब है और अगर रब عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हो गया तो मैं तबाह हो जाऊंगा।" उन्हों ने कहा : "फिर हम क्या करें ?" मैं ने कहा : "तुम लोग वापस पलट जाओ।" तो वोह चले गए। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसे ही बारगाहे रिसालत में पहुंचे, मैं भी पीछे पहुंच गया। उन्हों ने नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सारी रूदाद सुनाई, तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी त़रफ़ निगाह उठाई और इरशाद फ़रमाया : "रबीआ़ ! तुम्हारा सिद्दीक़ से क्या तनाज़ोअ़ है ?" मैं ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन्हों ने मुझे एक ना गवार लफ़्ज़ कहा और फिर बोले तुम भी मुझे ऐसा ही कह लो ताकि बदला हो जाए, तो मैं ने इन्कार कर दिया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ रबीआ़ ! अब सिद्दीक़ से कोई बात न कहना, बस इतना कह दो कि ऐ अबू बक्र ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी बख़्शिश करे।" मैं ने कहा : "ऐ अबू बक्र ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की बख़्शिश करे।" येह सुन कर सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोते हुवे उठ खड़े हुवे। (مسند امام احمد، حدیث ربیعۃ بن کعب اسلمی، الحدیث:۱۶۵۷۷، ج۵، ص۵۲۹ تا ۵۷۱)

सारा माल राहे ख़ुदा में लुटा दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस्लाम लाए उस वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास चालीस हज़ार दिरहम थे, आप ने वोह सारे राहे ख़ुदा में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ख़र्च कर दिये। (الاستیعاب، عبد اللہ بن ابی قحافۃ، الرقم:۱۶۵۱، ج۳ ص۹۴، تاریخ مدینۃ دمشق، ج۳۰، ص۶۲)

www.dawateislami.net

पांच या छे हज़ार दिरहम ख़र्च किये

हज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि जब नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हमारे वालिद सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मक्का से मदीना हिजरत के लिये जाने लगे तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपना कुल माल या'नी पांच या छे हज़ार दिरहम साथ ले लिये, हमारे दादा अबू क़ुहाफ़ा हमारे घर आए उन की नज़र जाती रही थी और अभी वोह दाख़िले इस्लाम नहीं हुवे थे कहने लगे : "ख़ुदा की क़सम ! मुझे मा'लूम होता है कि अबू बक्र सारा माल साथ ले गया है ?" मैं ने कहा : "नहीं ! वोह तो हमारे लिये बहुत कुछ छोड़ गए हैं।" हज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं : "मैं ने कुछ पथ्थर जम्अ़ किये, उन्हें मकान के एक कोने में रख कर ऊपर मोटा कपड़ा डाल दिया, जैसा कि मेरे वालिद सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ किया करते थे, फिर मैं दादा जान को पकड़ कर वहां लाई और उन का हाथ वहां रखवाया।" वोह बोले : "अगर वोह इतना सारा माल तुम्हारी ख़ातिर छोड़ गया है तो फिर कोई ख़तरे की बात नहीं।" जब कि ह़क़ीक़तन सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ कुछ भी नहीं छोड़ कर गए थे, सिर्फ़ दादा जान को यूं ही मुत़्मइन कर दिया गया।

(السيرة النبوية لابن هشام، هجرة الرسول، ابوقحافة واسماء بعد هجرة ابی بکر، الجزء الاول، ص ۴۴۱)

मुस्कुराहटे रसूल में शिर्कते सिद्दीक़े अक्बर

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि फ़त्हे मक्का के रोज़ जब नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा कि कुफ़्फ़ार की औ़रतें (मुआ़फ़ी मांगने के लिये) आप के घोड़े के मुंह के आगे दूपट्टे कर रही हैं तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को देख कर मुस्कुराने लगे (गोया आप ने सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को अपनी ख़ुशी में शरीक किया)। (المستدرک علی الصحیحین، معرفة الصحابة، الخلافة بالمدینة والملک بالشام، الحدیث: ۴۴۹۹، ج۴، ص۱۹)

www.dawateislami.net

जन्नतियों में इज़ाफ़े की दर ख़्वास्त

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से इस बात पर वा'दा फ़रमा लिया है कि मेरी उम्मत के चार लाख मुसलमान बिला हिसाब जन्नत में जाएंगे।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन में इज़ाफ़ा फ़रमा दीजिये।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दोनों हाथ मिला कर फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी उम्मत के गुनहगारों को यूं एक चुल्लू भर जन्नत में डाल देगा।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दोबारा इज़ाफ़े की दर ख़्वास्त करने वाले थे कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "अबू बक्र बस करो।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जवाब दिया : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को जन्नत में भेज दे तो तुम्हारा क्या नुक़्सान है।" हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : "अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो सारी मख़्लूक़ को जन्नत में भेज सकता है।" नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उ़मर ने सच कहा।" (المعجم الاوسط،من اسمه الحسن الحديث:۳۴۰۰،ج۲،ص۳۱۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का येह अ़क़ीदा है कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم काइनात के मालिको मुख़्तार हैं यहां तक कि जन्नत के भी, अगर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चाहें तो जन्नतियों में इज़ाफ़ा हो सकता है, जभी तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जन्नतियों में इज़ाफ़े की दर ख़्वास्त पेश की ۞ सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की अ़र्ज़ को क़बूल फ़रमाया और इन्कार न फ़रमाया, येह भी बारगाहे रिसालत में आप की मक़्बूलिय्यत की दलील है। ۞ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सब मुसलमानों के ख़ैर ख़्वाह हैं कि इन के जन्नत में जाने के ख़्वाहिश मन्द हैं।

ख़िलाफ़त की अहलिय्यत

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : "ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे हुकूमती मुआ़मलात में ऐसे शख़्स को निगरान बनाया है जो तुम

www.dawateislami.net

में सब से बेहतर, **रसूलुल्लाह** का साथी, ग़ारे सौर में ख़िदमत कर के सानियसनैन का लक़ब पाने वाला और तुम सब से बढ़ कर ख़िलाफ़त का अहल है।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۱۳۷)

सब से बेहतर आदमी

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : "बेहतर शख़्स को इमाम बनाया करो क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने बा'द हम में सब से बेहतर आदमी (या'नी हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को इमाम बना कर गए।" (الاستیعاب،عبداللہ بن ابی قحافۃ،ج ۳،ص ۹۷)

रिआ़या के लिये मेहरबान और रहम दिल

हज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन जा'फ़र बिन अबी ता़लिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने जब मन्सबे ख़िलाफ़त संभाला तो बेहतरीन ख़लीफ़ा वाक़ेअ़ हुवे और वोह रिआ़या के लिये बेहद मेहरबान और बहुत नर्म दिल थे।" (تاریخ مدینۃ دمشق،ج ۳۰،ص ۳۸۲)

सब से बढ़ कर सिद्दीक़े अक्बर

हज़रते सय्यिदुना लैस बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब की नज़र में सब से बढ़ कर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं।" (الریاض النضرۃ،ج ۱،ص ۱۳۸)

सिद्दीक़े अक्बर की साबित क़दमी

हज़रते सय्यिदुना ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जंगे बद्र में लड़ाई शुरूअ़ हुई तो नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हाथ उठा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करते हुवे वा'दा पेश किया और अ़र्ज़ किया : "ऐ **अल्लाह**! अगर मुशरिकीन इस जमाअ़त पर ग़ालिब आ गए तो फिर तेरा दीन क़ाइम न रहेगा।" तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अ़र्ज़ करने लगे : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की ज़रूर मदद फ़रमाएगा, और यक़ीनन आप का

www.dawateislami.net

चेहरा खिल उठेगा।" तो उसी वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुश्मन की फ़ौज के गिर्द एक हज़ार फ़िरिश्तों की क़ितार उतारी। तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अबू बक्र ! तुम्हें मुबारक हो, जिब्रील आस्मानो ज़मीन के दरमियान अपने घोड़े को लगाम से पकड़े खींच कर ला रहे हैं, जिब्रील ने ज़र्द रंग का इमामा सर पर बांध रखा है, वोह आस्मान से उतरे, आंखों से ओझल हो गए, फिर सामने आ गए और कह रहे हैं : तुम्हारे पास अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मदद आ पहुंची।" (الریاض النضرۃ،ج ۱، ص ۱۴۰)

राहे ख़ुदा के ग़ुबार आलूद क़दम

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मुल्के शाम की त़रफ़ आ़मिल बना कर भेजा और उन्हें रुख़्सत करने के लिये दो मील तक साथ चले। हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ की गई : "ऐ ख़लीफ़ए रसूले ख़ुदा ! अब आप वापस चले जाइये।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : **"मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है कि जिस के क़दम राहे ख़ुदा में ग़ुबार आलूद हों अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर जहन्नम की आग को ह़राम फ़रमा देता है।"

(تاریخ مدینۃ دمشق، ج ۶۵، ص ۲۴۷، کنز العمال، کتاب الجہاد، فصل فی احکام المتفرقۃ، الحدیث: ۱۱۴۰۷، ج ۲، الجزء: ۴، ص ۲۰۴)

रसूलुल्लाह के ह़वारी या'नी मददगार

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि क़ुरैश में बारह सह़ाबए किराम हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के ह़वारी हैं जिन के नामे नामी येह हैं : (1) हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ (2) हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (3) हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी (4) हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा (5) हज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा (6) हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र (7) हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ (8) हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊन (9) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (10) हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास (11) हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह (12) हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन

www.dawateislami.net

अल अ़व्वाम (رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن) (इन मुख़्लिस जां निसारों ने हर मौक़अ़ पर दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नुस्रत व ह़िमायत का बे मिसाल रेकॉर्ड क़ाइम कर दिया।) (معالم التنزیل للبغوی، اٰل عمران: ۵۲، ج ۱، ص ۲۳۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द हम जिस मक़ाम पर खड़े थे, वोह निहायत ख़त़रनाक मक़ाम था, **अल्लाह** तआ़ला अगर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़रीए़ से हमारी मदद न फ़रमाता तो हम हलाकत के गढ़े में गिर जाते। हम तमाम मुसलमान इस बात पर मुत्तफ़िक़ थे कि ज़कात के ऊंट वुसूल करने के लिये हमें जंग नहीं करनी चाहिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में मसरूफ़ रहना चाहिये और हमारे शबो रोज़ इसी काम में बसर होने चाहिये। लेकिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुन्किरीने ज़कात से लड़ने का फ़ैसला कर लिया।"

अमीरुल मोअमिनीन का अन्दाज़े फ़ैसला

ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में जब ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीके़ अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बारगाह में कोई मुक़द्दमा लाया जाता तो सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस का ह़ल **किताबुल्लाह** में तलाश करते, अगर कु़रआने मजीद में उस मस्अले का ह़ल उन्हें मिल जाता तो उसी के मुत़ाबिक़ फ़ैसला फ़रमा देते और अगर कु़रआने मजीद में उस मस्अले का ह़ल न पाते तो सुन्नते रसूल में उस का ह़ल तलाश करते, अगर सुन्नते नबवी में उस का हुक्म मिल जाता तो उस के मुत़ाबिक़ उस मुक़द्दमे का फ़ैसला फ़रमा देते और अगर सुन्नते रसूल में भी कोई हुक्म न पाते तो सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को बताते कि मेरे पास इस त़रह़ का मस्अला आया है जिस का हुक्म मैं ने कु़रआनो सुन्नत में न पाया, क्या आप में से कोई जानता है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस मस्अले में कोई हुक्म इरशाद फ़रमाया हो। बसा अवक़ात कोई सह़ाबी आप के सामने

www.dawateislami.net

बयान कर देता कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस मुआ़मले में येह फ़ैसला फ़रमाया था तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه उसी के मुवाफ़िक़ उस मुक़द्दमे का फ़ैसला फ़रमा देते और यूं गोया होते : "तमाम ता'रीफ़ें उस रब عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हम में ऐसे लोगों को पैदा फ़रमाया जिन्हों ने हमारे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन को अच्छी त़रह़ याद कर लिया।" और अगर इस त़रह़ भी मस्अले का ह़ल मा'लूम न होता तो मुसलमानों के सरदारों और उ़लमा को बुलाते और उन से मश्वरा करते जब उन तमाम की राए किसी हुक्म पर जम्अ़ होती तो उसी पर फ़ैसला फ़रमा देते। (سنن دارمی، باب الفتیا وما فیہ من الشدۃ، الحدیث: ١٦١، ج ١، ص ٧٠)

सारा माल बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि "सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ख़लीफ़ा मुन्तख़ब हुवे तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपने तमाम दराहिम व दनानीर मुसलमानों के बैतुल माल में जम्अ़ करा दिये।" (جمع الجوامع، مسند ابی بکر، الحدیث: ٣٢٢، ج ١١، ص ٧٥)

कोई दिरहमो दीनार न छोड़ा

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه दुन्या से इस ह़ाल में रुख़्सत हुवे कि आप ने न कोई दिरहम छोड़ा न कोई दीनार।" (جمع الجوامع، مسند ابی بکر، الحدیث: ٣٢٣، ج ١١، ص ٧٥)

अल्लाह तआ़ला और तमाम फ़िरिश्तों की ला'नत

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : "जो शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की शान में गुस्ताख़ी करता है उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है।" (الریاض النضرۃ، ج ١، ص ٦٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अक्वाले फ़ज़ाइल बाब (12)

फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अस्लाफ़े किराम

शाने सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम जा'फ़र

हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْخَالِق से हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बारे में पूछा गया तो आप رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मैं इन के मुतअ़ल्लिक़ कोई बेहतर बात ही कह सकता हूं क्यूंकि मैं ने अपने वालिद हज़रते इमाम बाक़र से उन्हों ने इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन से और उन्हों ने इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि हज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना कि "किसी इन्सान पर आज तक न आफ़्ताब तुलूअ़ हुवा और न ही गुरूब हुवा कि वोह अबू बक्र सिद्दीक़ से अफ़्ज़ल हो।" इस के बा'द इमाम जा'फ़र सादिक़ عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْخَالِق ने फ़रमाया : "अगर मैं ने रिवायत में गलत़ बयानी की हो तो मुझे कल बरोज़े क़ियामत सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त हासिल न हो और (मैं अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़ज़ाइल क्यूं न बयान करूं कि) मैं तो खुद रोज़े क़ियामत सिद्दीक़ की शफ़ाअ़त का त़लबगार हूं।" (الرياض النضرة، ج ١، ص ١٣٦)

दिले सिद्दीक़ मुशाहदए रबूबिय्यत से पुर था

हज़रते सय्यिदुना मुफ़ज़्ज़ल बिन उ़मर رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने जद्दे अमजद से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया : "बेशक हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ का दिल मुशाहदए रबूबिय्यत से भरा हुवा था और **अल्लाह** तआ़ला के साथ उस के इलावा कोई मौजूद न था, वोह لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ का विर्द कसरत से किया करते थे।" (الرياض النضرة، ج ١، ص ٥٩)

www.dawateislami.net

तमाम अहले बैत की सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर से मह़ब्बत

۞.....ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र इमाम मुह़म्मद बाक़र बिन अ़ली बिन हु़सैन बिन अ़ली बिन अबी त़ालिब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم) फ़रमाते हैं : "जो शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की फ़ज़ीलत से ना वाक़िफ़ है वोह सुन्नत से ना वाक़िफ़ है।" ۞.....और आप ही से रिवायत है जब इन से शैख़ैन के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : "मैं इन दोनों से मह़ब्बत करता हूं और इन दोनों के लिये इस्तिग़फ़ार करता हूं और मैं ने अहले बैत में किसी को नहीं देखा जो इन से मह़ब्बत न रखता हो।" ۞.....और आप ही से रिवायत है कि जिस ने इन दोनों या'नी सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) के बारे में शक किया उन्हों ने सुन्नत में शक किया और सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) का बुग़्ज़ मुनाफ़क़त है और अन्सार का बुग़्ज़ मुनाफ़क़त है, बेशक बनी हाशिम बनी अ़दी और बनी तैम के दरमियान जाहिलिय्यत के ज़माने में कीना था पस जब इस्लाम लाए तो इन के दरमियान मह़ब्बत क़ाइम हो गई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस कीने को इन के दिलों से खींच लिया, यहां तक कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पहलू में दर्द की शिकायत हुई तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपना हाथ आग से गर्म कर के उन के पहलू को सेंक दिया और इन के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई :

﴿وَ نَزَعۡنَا مَا فِیۡ صُدُوۡرِہِمۡ مِّنۡ غِلٍّ اِخۡوَانًا عَلٰی سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِیۡنَ﴾(پ۱۴، الحجر:۴۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और हम ने उन के सीनों में जो कुछ कीने थे सब खींच लिये आपस में भाई हैं तख़्तों पर रू बरू बैठे।" (الریاض النضرۃ،ج۱،ص۶۷)

दुश्मने शैख़ैन से बराअत का इज़्हार

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) के बारे में पूछा गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया : "जो इन दोनों से बरी है मैं उस से बरी हूं।" (या'नी जिसे इन दोनों की परवाह नहीं मुझे भी उस की परवाह नहीं) मज़ीद फ़रमाया : "अगर ऐसा न हो तो मैं इस्लाम से निकल जाऊं और मुझे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब न हो।" (الریاض النضرۃ،ج۱،ص۶۹)

www.dawateislami.net

दोनों अफ़्ज़ल और दोनों के लिये मग़्फ़िरत

हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन इमाम ह़सन رَحْمَۃُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के बारे में पूछा गया तो इन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "येह दोनों अफ़्ज़ल हैं और मैं दोनों की बुलन्दिये दरजात के लिये दुआ़ गो हूं।" मज़ीद फ़रमाया : "अगर मैं अपने दिल की बात के ख़िलाफ़ कहूं तो मुझे ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त न पहुंचे।"

(الریاض النضرۃ، ج۱، ص۲۹)

मक़ामे सिद्दीके़ अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अबू ह़फ़्स उ़मर बिन अ़ली दिमश्क़ी

साहि़बे तफ़्सीरे अल लुबाब ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू ह़फ़्स उ़मर बिन अ़ली दिमश्क़ी رَحْمَۃُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "﴿صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ﴾(پ۱، الفاتحۃ:۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** रास्ता उन का जिन पर तू ने एह़सान किया।" येह आयत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की इमामत पर दलालत करती है क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

﴿فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِیْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ مِّنَ النَّبِیّٖنَ وَ الصِّدِّیْقِیْنَ وَ الشُّهَدَآءِ وَ الصّٰلِحِیْنَ﴾(پ۵، النسآء:۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर **अल्लाह** ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया व सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग।"

और सिद्दीक़ीन के सरदार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हैं लिहाज़ा अब आयत का मफ़्हूम येह होगा कि **अल्लाह** तआ़ला ने हमें उस हिदायत को त़लब करने का हुक्म दिया है जिस पर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हैं।

(اللباب فی العلوم الکتاب، ج۱، ص۲۱۹)

मक़ामे सिद्दीके़ अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना मुबारक बिन फ़ुज़ाला

ह़ज़रते सय्यिदुना मुबारक बिन फ़ुज़ाला رَحْمَۃُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : (पारह 26 सूरतुल फ़त्ह़, आयत नम्बर 29 में) "**وَالَّذِیْنَ مَعَهٗ**" से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हैं,

www.dawateislami.net

“اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّار” से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه, “رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ” से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه “تَرٰهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا” से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه हैं।” (اللباب فی علوم الکتاب، پ۲٦، الفتح: ۲۹، ج۱۷، ص۵۱۷)

मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना महमूद बिन अ़ब्दुल्लाह आलूसी

साहिबे तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी ह़ज़रते सय्यिदुना शहाबुद्दीन मह़मूद बिन अ़ब्दुल्लाह हुसैनी आलूसी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ ख़ालिद नक़्शबन्दी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने एक रोज़ कामिलीन के मरातिब बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ۞ “मदारे नबुव्वत के क़ुत़्ब दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। ۞ मदारे सिद्दीक़िय्यत के क़ुत़्ब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه हैं। ۞ मदारे शहादत के क़ुत़्ब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه हैं ۞ मदारे विलायत के क़ुत़्ब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه हैं।” बा’ज़ लोगों ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के बारे में पूछा कि “येह इन दरजात में से किस दरजे पर फ़ाइज़ हैं ?” तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : ۞ चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ने रुत्बए शहादत और रुत्बए विलायत दोनों से ह़िस्सा पाया है लिहाज़ा आ़रिफ़ीन के नज़्दीक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه ज़ुन्नूरैन हैं।” (روح المعانی، النساء: ۲۹، ج۵، ص۱۰۰)

मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना इमाम ज़ह़्ह़ाक

सय्यिदुना इमाम ज़ह़्ह़ाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान “صَالِحُ الْمُؤْمِنِيْن” का मिस्दाक़ मोअमिनीन में सब से ज़ियादा पसन्दीदा तरीन शख़्सिय्यत ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه हैं।” (تفسیر الطبری، التحریم: ۴، ج۱۲، ص۱۵۴)

www.dawateislami.net

मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन यह्या

फ़रमाते हैं : "हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी शफ़्क़त व नर्मी की वजह से "اَلْاَوَّاہ" (या'नी रह़्म दिल, नर्म दिल) कहलाते थे ।"

(الجامع لاحکام القرآن، التوبة: ۱۱۴، ج۴، ص ۱۵۹)

मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने दाता गंज बख़्श अ़ली हिजवेरी

मख़्दूमुल औलिया, सुल्त़ानुल अस्फ़िया, ह़ज़रते दाता गन्ज बख़्श अ़ली हिजवेरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की मद्ह़ सराई कुछ यूं फ़रमाते हैं : शैख़ुल इस्लाम बा'दे अम्बिया ख़ैरुल अनाम, ख़लीफ़ए पैग़म्बर व इमाम, अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़स्मान सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, आप की करामात मश्हूर हैं और अह़काम व मुआ़मलात में आप के क़वी दलाइल हैं और मसाइल व ह़क़ाइक़े तसव्वुफ़ में मश्हूर । इस वजह से मशाइख़े किराम आप को पेश्वा और अहले मुशाहदा मानते हैं इस लिये कि साह़िबे मुशाहदा जो होता है उस का ह़ाल दूसरों पर बहुत कम मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) होता है और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को इन की (दुश्मनाने ख़ुदा पर) सख़्त गीरी की वजह से पेश्वए मुजाहिदीन मानते हैं । अह़ादीस में आया है और उ़लमा में मश्हूर है कि सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रात के वक़्त नमाज़ में क़ुरआने करीम आहिस्ता आहिस्ता तिलावत फ़रमाते और जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नमाज़ पढ़ते तो क़ुरआने करीम बा आवाज़े बुलन्द पढ़ते । दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि : "तुम आहिस्ता तिलावत क्यूं करते हो ?" अ़र्ज़ किया : "हु़ज़ूर इस लिये आहिस्ता पढ़ता हूं कि मैं जानता हूं कि जिस की मुनाजात कर रहा हूं वोह मुझ से ग़ाइब नहीं और उस की समाअ़त ऐसी है कि उस के लिये दूरो नज़्दीक और आहिस्ता या बुलन्द आवाज़ से पढ़ना बराबर है ।" और जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया तो अ़र्ज़ किया : "मैं सोते हुवे लोगों को जगाता हूं और शैत़ान को भगाता हूं ।"

www.dawateislami.net

येह शाने मुजाहदात का मुज़ाहरा था और वोह शाने मुशाहदात का और येह अम्र ज़ाहिर है कि मुशाहदे के अन्दर मुजाहदा इस त़रह़ है जैसे क़त़रा दरया में और येही वजह थी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ उ़मर ! तुम अबू बक्र की नेकियों में से एक नेकी हो।" जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जैसी जलीलुल क़द्र हस्ती जिन से इ़ज़्ज़त व वक़ारे इस्लाम तरक़्क़ी पर आया वोह सिद्दीक़े अक्बर के मुक़ाबले में एक नेकी के बराबर हैं तो ग़ौर करो कि दुन्या के लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुक़ाबले में किस दरजे में होंगे। फिर बा वुजूद इस शान के ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : "हमारा घर फ़ानी है हमारे ह़ालात पराए हैं और हमारी गिनती के सांस हैं और हमारी सुस्ती ब दस्तूर मौजूद है।" तो याद रखो ! सराए फ़ानी में दिल लगाना, बड़ी बड़ी बिल्डिंगें और इमारतें बनाना जहालत के मुक़्तज़िय्यात (तक़ाज़ों) से है और अपने ह़ालात व कवाइफ़ पर भरोसा करना ह़माक़त व बे वुक़ूफ़ी है और चन्द सांस के भरोसे पर दिल लगा लेना मह़्ज़ ग़फ़्लत है और अपनी काहिली और सुस्ती को दीन कहना ख़ियानते मुजरिमाना है जो मह़रूमी और नुक़्सान है।

(کشف المحجوب، باب فی ذکر ائمتهم من الصحابة، ص٦٧)

मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमामे इ़श्क़ो मह़ब्बत अलह़ाज अल क़ारी अल ह़ाफ़िज़ शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی ने "**मफ़ातीह़ुल ग़ैब**" में फ़रमाया कि "**सूरए वल्लैल** ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सूरत है और **सूरए वद्दुहा** इमामुल अम्बिया ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सूरत है।

वस्फ़े रुख़ उन का किया करते हैं
शर्हे वश्शम्स वद्दुहा करते हैं
उन की हम मद्ह़ो सना करते हैं
जिन को मह़मूद कहा करते हैं

www.dawateislami.net

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی के इस क़ौले मुबारक की तशरीह़ करते हुवे फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की सूरत को "लैल" (ليل) का नाम देना और मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सूरत का नाम "दुह़ा" (ضُحٰی) रखना गोया इस बात की त़रफ़ इशारा है कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिद्दीक़ का नूर और उन की हिदायत और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ उन का ऐसा वसीला है जिस के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल और उस की रिज़ा त़लब की जाती है और सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه, नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की राह़त और उन के उन्स व सुकून और इत़्मीनाने नफ़्स की वजह हैं और उन के मह़रमे राज़ और उन के ख़ास मुआ़मलात से वाबस्ता रहने वाले, इस लिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ﴿وَّجَعَلۡنَا الَّيۡلَ لِبَاسًا﴾ और रात को पर्दा पोश किया (پ۳۰،النبا:۱۰) और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ﴿جَعَلَ لَكُمُ الَّيۡلَ وَالنَّهَارَ لِتَسۡكُنُوۡا فِيۡهِ وَلِتَبۡتَغُوۡا مِنۡ فَضۡلِهٖ وَلَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ﴾ तुम्हारे लिये रात और दिन बनाए कि रात में आराम करो और दिन में उस का फ़ज़्ल ढूंडो और इस लिये कि तुम ह़क़ मानो। (پ۲۰،القصص:۷۳) और येह बात की त़रफ़ तल्मीह़ या'नी इशारा है कि दीन का निज़ाम इन दोनों मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم व सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से क़ाइम है जैसे कि दुन्या का निज़ाम दिन रात से क़ाइम है तो अगर दिन न हो तो कुछ नज़र न आए और रात न हो तो सुकून ह़ासिल न हो।" (فتاوی رضویۃ،ج۲۸،ص۶۷۹-۶۸۱)

ख़ास उस साबिक़े सैरे क़ुर्बे ख़ुदा
अवह़दे कामिलिय्यत पे लाखों सलाम

सायए मुस्त़फ़ा, मायए इस्त़फ़ा
इ़ज़्ज़ो नाज़े ख़िलाफ़त पे लाखों सलाम

अस्दक़ुस्सादिक़ीन सय्यिदुल मुत्तक़ीं
चश्मो गोशे विज़ारत पे लाखों सलाम

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने बरादरे आ'ला हज़रत

बरादरे आ'ला हज़रत, उस्ताज़े ज़मन, हज़रते मौलाना हसन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن अपने मजमूअए कलाम "**ज़ौक़े ना'त**" में अफ़्ज़लुल बशरे बा'दल अम्बिया, महबूबे हबीबे ख़ुदा, साहिबे सिद्क़ो सफ़ा, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ बिन अबू क़हाफ़ा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) की शाने सदाक़त निशान में यूं रत़बुल्लिसान हैं :

बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का
है यारे ग़ार, महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

रुसुल और अम्बिया के बा'द जो अफ़्ज़ल हो आलम से
येह आलम में है किस का मर्तबा, सिद्दीक़े अक्बर का

अ़ली हैं उस के दुश्मन और वोह दुश्मन अ़ली का है
जो दुश्मन अ़क़्ल का, दुश्मन हुवा सिद्दीक़े अक्बर का

मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने ह़कीमुल उम्मत

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती **अह़मद यार ख़ान नईमी** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : "وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ" में चार[4] सिफ़ात बयान हुई हैं : हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ रहना, कुफ़्फ़ार पर सख़्त होना आपस में रह़ीमो करीम होना, रुकूअ़ व सजदा ज़ियादा करना या'नी आ़बिद होना, येह चारों सिफ़्त **अल्लाह** के फ़ज़्ल से तमाम सह़ाबा के अन्दर मौजूद हैं, मगर चार ख़ुलफ़ा में एक एक वस्फ़ कमाल दरजे का है। सिद्दीक़ में साथ रहना, उ़मर फ़ारूक़ में काफ़िरों पर सख़्त रहना, उ़स्माने ग़नी में रह़ीम होना, मौला अ़ली में इ़बादत व ज़ोह्द (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم) गोया कि शम्ए नबुव्वत की लालटेन के चार शीशे हैं अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा रंग वाले। अगर नूरे नबुव्वत देखना है तो इन रंग बिरंगे शीशों के ज़रीए से देखो। जो शख़्स इन शीशों से अ़लाहि़दा है वोह नूरे मुस्त़फ़ा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दूर है क्यूंकि मुमकिन था कि रब्बुल आ़लमीन अपने नबी के साथ के लिये ऐसे लोगों को ख़ास करता जो مَعَاذَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ईमानदार भी न हों और फूल के पास रह कर मिट्टी भी महक जाती है। आस्मान का सूरज जिस गन्दी ज़मीन पर रोशनी डाल दे वोह पाक हो जावें तो किस त़रह़ हो सकता है कि हुज़ूर के पास रहने वाले ख़ुश्बूदार न हो

www.dawateislami.net

जावें और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जो कि दोनों जहान के सूरजे ह़क़ीक़ी हैं, इस सूरज के पास बैठने वाले क्यूंकर गन्दे रह सकते हैं ? अगर مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ येह ह़ज़रात दीनदार न थे तो कुरआन के पहुंचाने वाले मख़्लूक़ तक और अह़ादीस के सुनाने वाले दीन की तब्लीग़ करने वाले ग़रज़ येह कि चमने मुस्त़फ़ा की निगहबानी करने वाले तो येह ही ह़ज़रात हैं तो क्या कुरआन और इस्लाम مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ बुरे लोगों के हाथों में फला फूला ? जिस आंख ने एक बार भी जल्वए मुस्त़फ़ा देख लिया, उस का दरजा दुन्या भर के ग़ौसो क़ुत़्ब से बढ़ गया, तो जो ह़ज़रात साये की त़रह़ हमेशा हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ रहे वोह क्या शान रखते होंगे !" (شان حبیب الرحمن، ص۲۱۸)

मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अमीरे अहले सुन्नत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अमीरुल मोअमिनीन मह़बूबे ह़बीबे ख़ुदा, साह़िबे सिद्क़ो सफ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ बिन अबू क़ुह़ाफ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की शान में यूं रत़्बुल्लिसान हैं :

यक़ीनन मम्बए ख़ौफ़े ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं
ह़क़ीक़ी आ़शिक़े ख़ैरुल वरा सिद्दीक़े अक्बर हैं
जो यारे ग़ार मह़बूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं
वोही यारे मज़ारे मुस्त़फ़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं
अमीरुल मोअमिनीं हैं आप इमामुल मुस्लिमीं हैं आप
नबी ने जन्नती जिन को कहा सिद्दीक़े अक्बर हैं
सभी उ़लमाए उम्मत के, इमामो पेश्वा हैं आप
बिला शक पेश्वाए अस्फ़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं
न डर "अ़त़्त़ार" आफ़त से ख़ुदा की ख़ास रह़मत से
नबी वाली तेरे, मुश्किल कुशा सिद्दीक़े अक्बर हैं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

हयाते सिद्दीक़े अक्बर तारीख़ के आईने में

573 ईसवी 48 साल क़ब्ले हिजरत	सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर आमुल फ़ील के ढाई साल बा'द पैदा हुवे
1 बिअ्सते नबवी ब मुताबिक़ 609 ईसवी	सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर ने इस्लाम क़बूल फ़रमाया।
1 बिअ्सते नबवी ब मुताबिक़ 609 ईसवी	ख़ुफ़्या तौर पर इस्लाम की दा'वत देना शुरूअ़ कर दी।
11 बिअ्सते नबवी ब मुताबिक़ 619 ईसवी	ए'लानिय्या तौर पर इस्लाम की दा'वत देना शुरूअ़ कर दी।
5 बिअ्सते नबवी ब मुताबिक़ 613 ईसवी	हिजरते हबशा के लिये मदीनए मुनव्वरा से रवाना हुवे।
14 बिअ्सते नबवी ब मुताबिक़ 622 ईसवी	हिजरते मदीना के लिये **रसूलुल्लाह** की मइय्यत में मदीनए मुनव्वरा रवाना हुवे।
14 बिअ्सते नबवी ब मुताबिक़ 622 ईसवी	सफ़रे हिजरत के दौरान ग़ारे सौर में क़ियाम
14 बिअ्सते नबवी ब मुताबिक़ 622 ईसवी	**रसूलुल्लाह** की मइय्यत में मदीनए मुनव्वरा में दाख़िला
2 हिजरी ब मुताबिक़ 623 ईसवी	**रसूलुल्लाह** की मइय्यत में ग़ज़्वए बद्र में शिरकत
3 हिजरी ब मुताबिक़ 624 ईसवी	**रसूलुल्लाह** की मइय्यत में गज़्वए उहुद में शिरकत
6 हिजरी ब मुताबिक़ 627 ईसवी	**रसूलुल्लाह** की मइय्यत में सुल्हे हुदैबिय्या व बैअ़ते रिज़्वान में शिरकत
7 हिजरी ब मुताबिक़ 628 ईसवी	**रसूलुल्लाह** के हुक्म से बनी फ़ुज़ारा के ख़िलाफ़ जिहाद फ़रमाया।
8 हिजरी ब मुताबिक़ 629 ईसवी	**रसूलुल्लाह** की मइय्यत में ग़ज़्वए फ़त्हे मक्का में शिरकत
9 हिजरी ब मुताबिक़ 630 ईसवी	**रसूलुल्लाह** की मइय्यत में ग़ज़्वए तबूक में शिरकत

www.dawateislami.net

9 हिजरी ब मुताबिक़ 630 ईसवी	**रसूलुल्लाह** ने आप को अमीरुल हज मुक़र्रर फ़रमाया।
10 हिजरी ब मुताबिक़ 631 ईसवी	**रसूलुल्लाह** की मइय्यत में हज्जतुल वदाअ़ में शिरकत
11 हिजरी ब मुताबिक़ 632 ईसवी	**रसूलुल्लाह** ने आप को नमाज़ की इमामत का हुक्म इरशाद फ़रमाया।
11 हिजरी ब मुताबिक़ 632 ईसवी	**रसूलुल्लाह** का विसाले ज़ाहिरी, सिद्दीके़ अक्बर के लिये सब से अ़ज़ीम सानेहा
11 हिजरी ब मुताबिक़ 632 ईसवी	ख़िलाफ़त के लिये सिद्दीके़ अक्बर की बैअ़ते ख़ास्सा व बैअ़ते आम्मा की गई।
11 हिजरी ब मुताबिक़ 632 ईसवी	लश्करे उसामा बिन ज़ैद की रवानगी का पहला जंगी हुक्म इरशाद फ़रमाया।
11 हिजरी ब मुताबिक़ 632 ईसवी	मानेईने ज़कात व मुर्तद्दीन क़बाइल के ख़िलाफ़ जिहाद
11 हिजरी ब मुताबिक़ 632 ईसवी	मुख़्तलिफ़ मसाहिफ़े क़ुरआन को एक ही जगह जम्अ़ फ़रमा कर 'मुस्हफ़' नाम इरशाद फ़रमाया
12 हिजरी ब मुताबिक़ 633 ईसवी	मानेईने ज़कात व मुर्तद्दीन क़बाइल के ख़िलाफ़ जिहाद की तक्मील
13 हिजरी ब मुताबिक़ 634 ईसवी	इराक़ व शाम के मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों में इस्लाम की तरवीज और इन की फ़ुतूहात
13 हिजरी ब मुताबिक़ 634 ईसवी	21 जमादिल उख़रा बरोज़ पीर ब मुताबिक़ 22 अगस्त दुन्या से विसाले ज़ाहिरी

मज़्कूरा तमाम तवारीख़ मुख़्तलिफ़ कुतुबे मो'तबरा और *Hijri date converter* की मदद से ली गई हैं, चूंकि हिजरी और ईसवी साल के अय्याम मुख़्तलिफ़ होते हैं इसी सबब से तारीख़ों में बा'ज़ अवक़ात शदीद इख़्तिलाफ़ भी वाक़ेअ़ हो जाता है, इस लिये मज़्कूरा तमाम तवारीख़ में कमी बेशी मुमकिन है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّ حِیۡم ط

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیۡكَ یَارَسُوۡلَ اللّٰہِ

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
इजमाली फ़ेहरिस्त	5	ग़लबए नाम के सबब अ़तीक़	23
अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआ़रुफ़	7	आस्मानो ज़मीन में अ़तीक़	24
पेशे लफ़्ज़	8	ग़ुलाम आज़ाद करने के सबब अ़तीक़	24
तआ़रुफ़े सिद्दीक़े अक्बर	11	इन तमाम अक़्वाल में मुताबक़त	24
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	13	**"सिद्दीक़" लक़ब की वुजूहात**	25
क़ुरैश का नेक सीरत जवान	14	रब तआ़ला ने आप का नाम सिद्दीक़ रखा	25
सिद्दीक़े अक्बर का तआ़रुफ़	16	नबिय्ये करीम के नज़्दीक सिद्दीक़	25
शख़्सिय्यत की पहचान का अस्ल ज़रीआ़	16	सय्यिदुना जिब्रीले अमीन के नज़्दीक सिद्दीक़	26
आप का सिलसिलए नसब	17	ज़बाने जिब्रील से सिद्दीक़	26
नक़्शए शजरए नसब	17	ज़मानए जाहिलिय्यत से ही सिद्दीक़	27
आप के क़बीले के अवसाफ़	18	तस्दीक़े मे'राज के सबब सिद्दीक़	27
सिद्दीक़े अक्बर का इस्मे गिरामी	19	सिद्दीक़ लक़ब आस्मान से उतारा गया	28
पहला क़ौल, **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़स्मान	19	हर आस्मान पर सिद्दीक़ लिखा था	28
दूसरा क़ौल, अ़ब्दुल का'बा	19	जो आप को सिद्दीक़ न कहे ....?	28
तीसरा क़ौल, अ़तीक़	19	**सादिक़, सिद्दीक़, सिद्दीक़िय्यत और सिद्दीक़े अक्बर**	29
इन तमाम अक़्वाल में मुताबक़त	20	सादिक़ किसे कहते हैं ?	29
आप की कुन्यत	20	सिद्दीक़े अक्बर सादिक़ व हकीम हैं	29
अबू बक्र कुन्यत की वुजूहात	20	सिद्दीक़ किसे कहते हैं ?	30
सिद्दीक़े अक्बर के अलक़ाबात	21	सिद्दीक़िय्यत किसे कहते हैं ?	30
"अ़तीक़" लक़ब की वुजूहात	21	सिद्दीक़े अक्बर किसे कहते हैं ?	31
जहन्नम से आज़ादी के सबब अ़तीक़	21	**लक़ब "हलीम" (बुर्दबार)**	32
हुस्नो जमाल के सबब अ़तीक़	22	सिद्दीक़े अक्बर आस्मानों में हलीम	32
ख़ैर में मुक़द्दम होने के सबब अ़तीक़	22	**लक़ब "अव्वाहुन" (कसीरुद्दुआ, आजिज़ी करने वाले)**	32
नसब की पाकीज़गी के सबब अ़तीक़	22	**सिद्दीक़े अक्बर की पैदाइश व जाए परवरिश**	33
वालिद के नाम रखने के सबब अ़तीक़	23	दुन्या में तशरीफ़ आवरी	33
मां की दुआ़ के सबब अ़तीक़	23	जाए परवरिश और दीगर मुआ़मलात	33

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा
सिद्दीक़े अक्बर के तीन मुबारक घर	33
सिद्दीक़े अक्बर का हुल्यए मुबारका	34
जिस्मानी ख़द्दो ख़ाल	34
गन्दुमी रंग और कम गोश्त वाले	34
दाढ़ी में ख़िज़ाब का इस्ति'माल	34
रीश मुबारक में सफ़ेद बाल	34
"कतम" किसे कहते हैं ?	35
सिद्दीक़े अक्बर का बचपन	35
बचपन की हैरत अंगेज़ हिकायत	35
सिद्दीक़े अक्बर की जवानी,	36
ज़मानए जाहिलिय्यत की ज़िन्दगी	36
अ़ज़मतो शराफ़त	36
ज़मानए जाहिलिय्यत व इस्लाम दोनों की मुसल्लमा शख़्सिय्यत	36
सिद्दीक़े अक्बर का कारोबार	37
कपड़े की तिजारत	37
सिद्दीक़े अक्बर का शाम तक तिजारती सफ़र	37
रिज़्क़े हलाल की अहम्मिय्यत	37
कस्बे हलाल के मुतअ़ल्लिक़ तीन अहादीसे मुबारका	38
ताजिर हो तो सिद्दीक़े अक्बर जैसा	38
सिद्दीक़े अक्बर की नबिय्ये करीम से दोस्ती	40
इस्लाम से क़ब्ल भी दोस्त	40
सिद्दीक़े अक्बर के घर **रसूलुल्लाह** की रोज़ाना आमद	40
दोस्ती के वक़्त आप की उ़म्र	40
दोस्ती की वुजूहात	40
ग़ैबी आवाज़ की पुकार	41
सय्यिदुना वरक़ा बिन नौफ़ल के हां तशरीफ़ आवरी	41
सिद्दीक़े अक्बर और **रसूलुल्लाह** की ग़म ख़्वारी	42
तीन चीज़ें पसन्द हैं	43
तीनों आरज़ूएं बर आईं	44
काश ! हमारे अन्दर भी जज़्बा पैदा हो जाए	44
महब्बत के खोखले दा'वे	44
सिद्दीक़े अक्बर का क़बूले इस्लाम	45
(1) बह़ीरा राहिब से मुलाक़ात	45
(2) आप का ख़्वाब	46
(3) सिद्दीक़े अक्बर और दरख़्त की पुर असरार आवाज़	46
क़बूले इस्लाम के वक़्त आप की उ़म्र	47
सिद्दीक़े अक्बर और वह़्दानिय्यते इलाही	48
सिद्दीक़े अक्बर हमेशा से मुसलमान थे	48
कभी बुत को सजदा न किया	48
कभी ज़ाते बारी तआ़ला में शक न हुवा	49
हमेशा हमेशा तक सरदारे मुस्लिमीन	49
रोज़े "अलस्तु" क्या है ?	49
तौह़ीद में सब से बुलन्द कलाम, फ़रमाने सिद्दीक़े अक्बर	50
सिद्दीक़े अक्बर और वह़्दानिय्यते इलाही ब ज़बाने आ'ला ह़ज़रत	50
सिद्दीक़े अक्बर हमेशा **रसूलुल्लाह** की ख़ुशनूदी में रहे	51
क़ब्ल बिअ़्सत भी मोमिन बा'दे बिअ़्सत भी मोमिन	52
आप से कोई हालते कुफ़्र साबित नहीं	52
महब्बते इलाही और फ़रमाने सिद्दीक़े अक्बर	52
इस्लाम लाने में कोई तरद्दुद न किया	53
क़बूले इस्लाम में अ़दमे तरद्दुद की वजह	53
एक और हैरत अंगेज़ बात	54
अ़ज़मते ईमाने सिद्दीक़े अक्बर	54
सिद्दीक़े अक्बर और अव्वलिय्यते क़बूले इस्लाम	55
सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ पहले ईमान लाए	55
सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा पहले ईमान लाए	56
सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा पहले ईमान लाईं	56
ज़ैद बिन ह़ारिसा पहले ईमान लाए	56
तमाम अक़्वाल में मुत़ाबक़त	56
सिद्दीक़े अक्बर का इज़हार व ए'लाने इस्लाम	57
सब से पहले इज़्हारे इस्लाम	57
सिद्दीक़े अक्बर और दा'वते इस्लाम	57
आठ अफ़राद का क़बूले इस्लाम	58

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
एक अहम वज़ाहत	58	दूसरी बेटी, सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबी बक्र	74
सब से पहले मुबल्लिग़े इस्लाम	59	तीसरी बेटी, सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम	75
काश ! हम भी नेकी की दा'वत देने वाले बनें	59	**नस्ल दर नस्ल सहाबी**	75
एक नाकाम आशिक़ की तौबा	60	वालिद और अवलाद दोनों सहाबी	75
सिद्दीक़े अक्बर का इस्लाम की दा'वत देने का अन्दाज़	62	शजरए ख़ानदाने सिद्दीक़े अक्बर	76
इबादतो रियाज़त देख कर क़बूले इस्लाम	62	**सिद्दीक़े अक्बर की अहले बैत से रिश्तेदारी**	77
इस्लाम की ताक़त बे मिसाल ताक़त	63	(1) सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा का **रसूलुल्लाह** से अ़क़्दे मुबारक	78
सिद्दीक़े अक्बर के वालिदैने करीमैन	63	(2) **रसूलुल्लाह** और सिद्दीक़े अक्बर हम ज़ुल्फ़	78
आप के वालिद का तआरुफ़	63	(3) सिद्दीक़े अक्बर के नवासे **रसूलुल्लाह** के भतीजे	79
आप के वालिद का क़बूले इस्लाम	64	(4) सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा सिद्दीक़े अक्बर के नवासे की फूफी दादी	79
आप की वालिदा का तआरुफ़	65	(5) सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर के नवासे सय्यिदुना इमामे हसन के दामाद	80
आप की वालिदा का क़बूले इस्लाम	65	(6) सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा व सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर के बेटे में रिश्तेदारी	80
तस्दीक़ के सबब बख़्श दिया गया	66	(7) सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा व सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर दोनों की रिश्तेदारी	81
सिद्दीक़े अक्बर की अज़्वाज (बीवियां) और अवलाद	67	सय्यिदतुना शहरबानू के नाम की वजहे तस्मिय्या	82
अज़्वाज की ता'दाद	67	(8) हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र सादिक़ का नसब	82
पहला निकाह और इस से अवलाद	67	(9) सय्यिदुना इमामे हुसैन सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर के दामाद	83
दूसरा निकाह और इस से अवलाद	67	**ख़ानदाने सिद्दीक़े अक्बर और**	
जो हूरे ऐन को देखना चाहे....!	67	**ख़ानदाने अहले बैत में महब्बत का अनोखा अन्दाज़**	83
तीसरा निकाह और इस से अवलाद	68	शजरए तय्यिबा सय्यिदुना इमामुल अम्बिया और सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़	85
चौथा निकाह और इस से अवलाद	68	**सिद्दीक़े अक्बर के भाई**	86
अवलाद का तज़्किरा फ़ज़ीलत से ख़ाली नहीं	69	आप के तीन भाई थे	86
पहले बेटे, सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बक्र	69	**सिद्दीक़े अक्बर की बहनें**	86
दूसरे बेटे, सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र	70	पहली बहन, सय्यिदतुना उम्मे फ़ुरोह बिन्ते अबी क़ुहाफ़ा	86
सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र की सआदत मन्दी	70	दूसरी बहन, सय्यिदतुना क़ुरैबा बिन्ते अबी क़ुहाफ़ा	86
तीसरे बेटे, सय्यिदुना मुहम्मद बिन अबी बक्र	71	तीसरी बहन, सय्यिदतुना उम्मे आ़मिर बिन्ते अबी क़ुहाफ़ा	86
पहली बेटी, सय्यिदतुना आइशा बिन्ते अबी बक्र	71	**अवसाफ़े सिद्दीक़े अक्बर**	87
हक़्क़े महर सिद्दीक़े अक्बर ने पेश किया	72	तीन सौ साठ ख़साइल	89
इल्मो फ़ज़्ल में सब से बढ़ कर	72	पीरे कामिल और मुरीदे कामिल	90
आप से मरवी अहादीसे मुबारका	72	**सिद्दीक़े अक्बर की इफ़्फ़त व पाक दामनी**	90
ए'तिमाद और राज़दारी की आ'ला मिसाल	72	शराब को अपने ऊपर हराम कर रखा था	90
सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा की बरकत	73	शराब से सख़्त नफ़रत हो गई	91

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
इ़ज़्ज़त व ग़ैरत की ह़िफ़ाज़त	91	दुश्मन की नज़रों से ओझल	111
कभी कोई बेहूदा शे'र न कहा	91	आले फ़िरऔन के मोमिन से बेहतर	112
सिद्दीक़े अक्बर की आ़जिज़ी व इन्किसारी	92	आले फ़िरऔन का मोमिन कौन था ?	113
ख़लीफ़ा होने के बा वुजूद इन्किसारी	92	सब से पहले पलटने वाले मुहाफ़िज़	114
सलाम की ख़ुसूसिय्यत पर इज़्हारे तअ़ज्जुब	92	**सिद्दीक़े अक्बर की सख़ावत**	114
लश्कर के साथ साथ पैदल चलते रहे	93	आयते मुबारका और सख़ावते सिद्दीक़े अक्बर	115
अ़वामी उमूर की अदाएगी	93	इस्लाम की माली ख़िदमत	115
सिद्दीक़े अक्बर की ख़ुद्दारी	94	आक़िबत अल्लाह के ज़िम्मए करम पर	115
ऊंटनी की नकील भी ख़ुद उठाते	94	**रसूलुल्लाह** की माली ख़िदमत	116
ख़लीफ़ा होने के बा वुजूद ख़ुद्दारी	95	रसूले ख़ुदा की गवाही	116
सिद्दीक़े अक्बर का ह़िल्म व बुर्दबारी व रह़्म दिली	95	अपने ही माल जैसा तसर्रुफ़	116
आस्मानों में ह़लीम	95	मुसलमानों की माली ख़िदमत	116
सिद्दीक़े अक्बर की अहले बैत पर शफ़्क़त	95	**सिद्दीक़े अक्बर का ग़ुलामों को आज़ाद करना**	117
ज़ारो क़ितार रो पड़े	96	ख़ैर ख़्वाही का बे मिसाल जज़्बा	117
मिम्बरे मुनव्वर के ज़ीने का एह़तिराम	97	सात ग़ुलामों के नाम	117
ख़ुलफ़ाए राशिदीन और मिम्बरे रसूल	98	सो 100 ऊक़िया सोना	117
सिद्दीक़े अक्बर रसूलुल्लाह के राज़दार	98	सख़्त आज़्माइश	118
रसूलुल्लाह के राज़ का पास	98	ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल की आज़ादी	118
सिद्दीक़े अक्बर की ग़ैरते ईमानी	99	शाने सिद्दीक़े अक्बर	119
ग़ैरते सिद्दीक़े अक्बर और यहूदी आ़लिम	100	अल्लाह और उस का रसूल ही काफ़ी है	120
ग़ैरते सिद्दीक़े अक्बर और आप के वालिद	102	**सिद्दीक़े अक्बर और मुख़्तलिफ़ उ़लूम**	121
ग़ैरते सिद्दीक़े अक्बर और आप के बेटे	103	दूध से भरा पियाला	121
ग़ैरते सिद्दीक़े अक्बर और आप की बेटी	103	**इ़ल्मे क़ुरआन और सिद्दीक़े अक्बर**	121
सिद्दीक़े अक्बर की जुरअत व बहादुरी	104	क़ुरआन के सब से बड़े आ़लिम	121
सब से ज़ियादा बहादुर	105	**इ़ल्मे ह़दीस और सिद्दीक़े अक्बर**	122
मुशरिकीन से रसूले ख़ुदा का दिफ़ाअ़	105	ह़दीस के बहुत बड़े आ़लिम	122
बद बख़्तो ! हलाक हो जाओ	105	अह़ादीस के मुआ़मले में सब से पहले एह़तियात़ करने वाले	123
एक पागल से सामना	106	बहुत कम अह़ादीस मरवी होने की वजह	123
गर्दन में कपड़े का फन्दा	107	**इ़ल्मे ता'बीर और सिद्दीक़े अक्बर**	123
मेरे महबूब का क्या ह़ाल है ?	107	इ़ल्मे ता'बीर में महारत	124
त़वाफ़े का'बा से रोक दिया	110	इ़ल्मे ता'बीर में महारत का राज़	124

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
ता'बीर बताने के लिये आप की तक़र्रुरी	124	ता'रीफ़ पर बारगाहे खुदावन्दी में इल्तिजा	149
सिद्दीक़े अक्बर और ख़्वाबों की ता'बीर	125	मोमिने सालेह़ का कोई बाल होता	149
आंगन में तीन चांद	125	काश ! मैं एक दरख़्त होता	149
सियाह व सफ़ेद बकरियां	125	काश ! मैं सब्ज़ा होता	150
बारगाहे इलाही में पहले हाज़िरी	126	शे'र ब तौ़रे नसीह़त	150
ह़ालते हैज़ में ज़ौजा से सोह़बत	126	सब से ज़ियादा डरने वाले	150
आप की ता'बीर, ज़बाने नबुव्वत से तस्दीक़	126	फ़रमाने रसूल के सबब गिर्या व ज़ारी	150
आयिन्दा काफ़िर हो जाने की पेशन गोई	127	उम्मीद व ख़ौफ़ की आ'ला मिसाल	151
इल्मे अन्साब और सिद्दीक़े अक्बर	128	ख़ौफ़े खुदा के सबब शदीद तक्लीफ़	151
इल्मे अन्साब के उस्ताद	128	**सिद्दीक़े अक्बर का तक़्वा व परहेज़गारी**	152
अन्साबे क़ुरैश में आप से मुशावरत	129	**अल्लाह** की ह़राम कर्दा अश्या से बचाने वाला तक़्वा	152
इल्मे अन्साब में महारत का हैरत अंगेज़ वाक़िआ	130	सिद्दीक़े अक्बर के ज़ोह्दो तक़्वा पर क़ुरआन की गवाही	153
नेकी की दा'वत के मदनी फूल	138	ज़ोह्दो तक़्वा में ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की मिस्ल	153
ग़ैर मुस्लिमों का क़बूले इस्लाम	140	आप के पास सिर्फ़ एक फ़ुदकी कपड़ा था	153
इल्मे तौह़ीद और सिद्दीक़े अक्बर	142	पीते ही क़ै कर दी	154
इल्मे तौह़ीद के मुतअ़ल्लिक़ मुकालमा	142	मम्बए ख़ौफ़े खुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं	154
सिद्दीक़े अक्बर और फ़त्वा नवेसी	142	गुनाह से बाज़ रहने से बढ़ कर कोई तक़्वा नहीं	155
ज़मानए नबवी के मुफ़्तियाने किराम	142	**सिद्दीक़े अक्बर और क़ुफ़्ले मदीना**	155
सिद्दीक़े अक्बर और किताबते वह़ी	143	ज़बान की सख़्ती की शिकायत	155
सिद्दीक़े अक्बर की फ़िरासत	143	क़ुफ़्ले मदीना के लिये मुंह में पथ्थर	156
सिद्दीक़े अक्बर की बे मिसाल फ़िरासत	144	ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना	156
सिद्दीक़े अक्बर की मुआमला फ़ह्मी	144	जवाबी कारवाई पर शैत़ान की आमद	156
मुआमला फ़हमी की आ'ला मिसाल	144	**सिद्दीक़े अक्बर और तिलावते क़ुरआन**	157
जंगी उमूर में मुआमला फ़ह्मी	145	तिलावत करते हुवे गिर्या व ज़ारी	157
सिद्दीक़े अक्बर ब ह़ैसिय्यते मुशीर	146	तिलावत में रोना कारे सवाब है	158
आप से मुशावरत के लिये हुक्मे इलाही	146	गर्मियों में रोज़े	158
मुसलमानों के मुआमलात में मुशावरत	146	इबादत की मिठास	160
आप का ख़ात़ी होना रब को पसन्द नहीं	147	कई कई रोज़ तक फ़ाक़ा	160
आप का मश्वरा और **रसूलुल्लाह** की ताईद	147	पूरे साल भर का फ़ाक़ा	161
सिद्दीक़े अक्बर का ख़ौफ़े खुदा	148	सिद्दीक़े अक्बर का यौमिया वज़ीफ़ा	161
काश ! अबू बक्र भी तेरी त़रह़ होता	148	तर्के कसब किस के लिये अफ़्ज़ल है ?	162

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा
हुसूले इल्मे दीन के लिये सफ़र	163
अख़राजात से ज़ाइद रक़म कम करवा दी	164
उस का मुशाहरा तो इतना ज़ियादा और मेरा इतना कम...?	165
वक़्फ़ की चीज़ों के बारे में एहतियात	165
सिद्दीक़े अक्बर की ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ वाली नमाज़	166
नमाज़ में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़	166
यक्सूई के साथ नमाज़ की अदाएगी	166
आप ने नमाज़ किस से सीखी ?	166
सिद्दीक़े अक्बर और नमाज़े तहज्जुद	167
सिद्दीक़े अक्बर और मरीज़ों की इ़यादत	167
ख़ुलफ़ाए राशिदीन का मदनी मुकालमा	168
सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर की अपनी बेटी पर शफ़्क़त	170
सिद्दीक़े अक्बर और लवाहिक़ीन से ता'ज़िय्यत	170
ता'ज़िय्यत का मदनी अन्दाज़	170
ता'ज़िय्यत करना बाइ़से सवाब है	171
ता'ज़िय्यत करने के आदाब	172
फ़रामीने सिद्दीक़े अक्बर	172
(1) ख़ुश क़िस्मत शख़्स	172
दुन्या तो निरी आज़्माइश है	173
चार चीज़ों के सिवा दुन्या मलऊ़न है	173
केन्सर का मरज़ ख़त्म हो गया	174
(2) पड़ोसी से झगड़ा मत करो	175
पड़ोसी के हुक़ूक़	175
तीन अहादीसे मुबारका	176
(3) रोने जैसी सूरत ही बना लो	176
अच्छों की नक़्ल भी अच्छी होती है	177
(4) सह़री का वक़्त	177
(5) छोटी सी तक्लीफ़ पर भी अज्र	178
(6) पहले हमारी भी येही ह़ालत थी	178
सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली की तशरीह़	179
साहिबे ह़िल्यतुल औलिया की वज़ाह़त	179
(7) ज़िक्रुल्लाह से ग़फ़्लत का अन्जाम	180
दिलों का इत़्मीनान अल्लाह की याद में है	180
(8) रिज़ाए इलाही के सबब दुआ़ क़बूल	181
सिद्दीक़े अक्बर से मन्क़ूल दुआ़एं	181
(1) सुब्ह़ शाम मांगी जाने वाली दुआ़	181
(2) जनाज़ा पढ़ाने के बा'द दुआ़	182
(3) जन्नातुन्नईम के आ'ला दरजात	182
(4) अश्या में तमाम ने'मत का सुवाल	182
(5) ईमाने कामिल, यक़ीने सादिक़ की दुआ़	183
(6) ह़राम से ह़िफ़ाज़त की दुआ़	183
(7) रह़मते इलाही का सुवाल	184
(8) मुझ पर ह़क़ को वाज़ेह़ फ़रमा	184
सिद्दीक़े अक्बर की मुख़्तलिफ़ वसिय्यतें	184
दस बातों की वसिय्यत	185
दुन्या से ब क़द्रे ज़रूरत ही लेना	185
सुब्ह़ शाम अल्लाह के ज़िम्मए करम पर	185
नामे मुह़म्मद पर अंगूठे चूमना और आंखों पर लगाना	185
अंगूठे चूम कर आंखों पर लगाना मुस्तह़ब है	185
सिद्दीक़े अक्बर ने अंगूठे आंखों पर लगाए	186
सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अंगूठे चूमे	186
अंगूठे चूम कर आंखों पर लगाने के फ़ज़ाइल व बरकात	187
(1) शफ़ाअ़ते रसूल का ह़क़दार	187
(2) आंखें कभी न दुखेंगी	187
(3) नामे नामी मुसीबत में काम आ गया	188
(4) अंगूठे चूमने वाला कभी अन्धा न होगा	188
(5) जन्नत में सरकार के पीछे पीछे	188
(6) जन्नत की सफ़ों में दाख़िला	189
(7) अंगूठे चूम कर आंखों पर लगाने की बरकत	189

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
सिद्दीक़े अक्बर और हिजरते हबशा	193	कुफ़्फ़ारे कुरैश ग़ार तक आ पहुंचे	215
मेरे रब की अमान ही काफ़ी है	193	ग़ारे सौर की अन्दरूनी साख़्त	216
हबशा की दो हिजरतें	197	बेटे की ख़िदमत गुज़ारी	216
तारीख़े इस्लाम का एक मुन्फ़रिद और अजीब वाक़िआ	197	ग़ुलाम की ख़िदमत गुज़ारी	217
सिद्दीक़े अक्बर और हिजरते मदीना	198	सय्यिदुना आमिर बिन फ़ुहैरा कौन थे ?	217
हिजरते **रसूलुल्लाह** में हिक्मत	198	जसदे मुबारक से एक नूर निकला	217
हिजरत किस तारीख़ को हुई ?	198	वाक़िअए ग़ारे सौर क़ुरआने पाक से	218
मक़ामे हिजरत का तअ़य्युन	199	**सकीना** किसे कहते हैं ?	218
हिजरत के लिये मदीना ही का तअ़य्युन क्यूं ?	199	हयाते सिद्दीक़ का एक दिन और एक रात	219
मुसलमानों को हिजरत का हुक्म	200	काइनात की मुन्फ़रिद इबादत	220
हिजरत का रास्ता	201	पूरी ज़िन्दगी के जुम्ला आ'माल से बेहतर	221
सिद्दीक़े अक्बर का इरादए हिजरत	202	कबूतरों के हक़ में दुआ	222
घर में **रसूलुल्लाह** की आमद	202	ग़ार पर ख़ुदाई पहरा लगा दिया गया	223
हिजरते मदीना और कुफ़्फ़ार का नापाक मन्सूबा	203	वाह रे मकड़ी तेरा मुक़द्दर....!	224
सो ऊंट बतौरे इन्आम	204	ग़ार के उस पार समन्दर नज़र आया	225
सिद्दीक़े अक्बर की ऊंटनी की पेशकश	204	मुसीबत में आक़ा से मदद मांगना सहाबा का त़रीक़ा है	225
ऊंटनी आठ सो दिरहम में ख़रीदी	205	ग़ार में जन्नत का पानी	226
ऊंटनी ख़रीद ने में हिक्मत	205	सिद्दीक़ की कहानी सिद्दीक़ की ज़बानी	226
हिजरत के रफ़ीक़े सफ़र	205	राहबर की ख़िदमत गुज़ारी	228
सिद्दीक़े अक्बर के ख़ुशी के आंसू	206	**ग़ारे सौर से मदीने को रवानगी**	228
सफ़र के लिये ज़ादे राह	206	ग़ारे सौर से रवानगी कब हुई ?	228
बेटी की ख़िदमत गुज़ारी	206	सिद्दीक़े अक्बर के लिये रिज़्वाने अक्बर की दुआ	228
एक अहम मदनी फूल	207	सिद्दीक़े अक्बर का हिक्मत भरा जवाब	229
सर ज़मीने मक्का से ख़िताब	207	सय्यिदतुना **उम्मे मा'बद** के घर मो'जिज़े का ज़ुहूर	229
सिद्दीक़े अक्बर की अनोखी आरज़ू	208	सय्यिदतुना **उम्मे मा'बद** की मुबारक बकरी	231
सिद्दीक़े अक्बर की उंगली का ज़ख़्मी होना	209	जिन्न के महब्बत भरे अश्आर	232
ग़ारे सौर में दाख़िला	209	पीछा करने वाले का अन्जाम	232
सिद्दीक़े अक्बर के हक़ में जन्नत की दुआ	210	सुराक़ा बिन मालिक का क़बूले इस्लाम	233
सिद्दीक़ी हज़रात के अंगूठे में निशान	211	किस्रा के सोने के कंगन	234
बारे नबुव्वत	212	हज़रते सय्यिदुना बुरैदा अस्लमी से मुलाक़ात	235
आशिक़े रसूल सांप	213	आप का क़बूले इस्लाम	235
आप जैसा वफ़ादार दोस्त नहीं	215		

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा
मदीनए मुनव्वरा में आमद	236
रसूलुल्लाह का मदनी जुलूस	236
आमदे मुस्त़फ़ा....मरह़बा....मरह़बा	236
मुह़िब और मह़बूब की पहचान	238
मुह़िब और मह़बूब को न पहचानने की वजह	238
मक़ामे क़ुबा में क़ियाम और मस्जिद की ता'मीर	240
इस्लाम की सब से पहली मस्जिद	240
मस्जिदे क़ुबा के फ़ज़ाइल	240
मस्जिदे क़ुबा के बारे में आयते मुबारका	240
एक नमाज़ का सवाब एक उ़मरह के बराबर	241
मस्जिदुल जुमुआ में नमाज़े जुमुआ	241
ना'रए रिसालत : **या रसूलल्लाह** !	242
मदीने में अव्वलन क़ियाम की सआ़दत	242
मुहाजिरीन व अन्सार के माबैन मुवाख़ात	243
मदीने में सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर का क़ियाम	244
सिद्दीक़े अक्बर को मदीने में बुख़ार हो गया	244
मस्जिदे नबवी की क़ीमत सिद्दीक़े अक्बर के माल से	245
सिद्दीक़े अक्बर के नवासे की विलादत	245
मुसलमानों का इज़्हारे फ़रह़त व मसर्रत	246
वाह क्या बात है सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर की !	246
सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर की सआ़दतें	247
सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन ज़ुबैर का वालिहाना इ़श्के़ रसूल	247
सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा की रुख़्सती	248
ग़ज़वात में शिरकत	251
ग़ज़वए बद्र और सिद्दीक़े अक्बर	251
मैदाने बद्र में आप का बुलन्द हौसला	251
सिद्दीक़े अक्बर की ग़ैरते ईमानी जोश में आ गई	253
मौला अ़ली के वालिहाना जज़्बात	254
मैदाने बद्र में सिद्दीक़े अक्बर की शुजाअ़त	254
बद्र के क़ैदियों से फ़िदया लेने की तजवीज़	255

उन्वान	सफ़्हा
ग़ज़वए उहुद और सिद्दीक़े अक्बर	256
ग़ज़वए उहुद में वालिहाना जज़्बए जिहाद	256
सब से पहले पलटने वाले	258
ग़ज़वए उहुद की ह़सीन याद और अश्कबारी	259
हुदैबिय्या और सिद्दीक़े अक्बर	259
रसूलुल्लाह का ख़्वाब	259
हुदैबिय्या क्या है ?	260
कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के वुफ़ूद की आमद	260
सिद्दीक़े अक्बर की ग़ैरते ईमानी	261
सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शा'बा का वालिहाना इ़श्क़	261
उ़रवा बिन मसऊ़द सक़फ़ी के तअस्सुरात	262
बैअ़ते रिज़्वान	262
बैअ़ते रिज़्वान से कुफ़्फ़ार ख़ौफ़ज़दा हो गए	263
सुल्ह़े हुदैबिय्या पर सिद्दीक़े अक्बर का इत़्मीनान	263
सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर की मदनी सोच	264
सह़ाबा में सब से बढ़ कर साइबुर्राए	265
सुल्ह़े हुदैबिय्या के नताइज	266
रसूलुल्लाह का शाहाना मदनी जुलूस	266
सिद्दीक़े अक्बर और घोड़ दौड़	267
घोड़ों और ऊंटों की दौड़	267
सिद्दीक़े अक्बर के घोड़े की जीत	267
आ'राबी का ऊंट सबक़त ले गया	267
ग़ज़वए तबूक और सिद्दीक़े अक्बर	268
ग़ज़वए तबूक का सबब	268
सिद्दीक़े अक्बर की माली क़ुरबानी	269
अल्लाह और उस का रसूल ही काफ़ी है	269
तबूक और इस का दुश्वार गुज़ार रास्ता	272
सिद्दीक़े अक्बर और मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही	272
सब से बड़ा झन्डा सिद्दीक़े अक्बर के हाथ में	273
ख़ुश बख़्त सह़ाबी	274
सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर का ईमान अफ़रोज़ तबसेरा	275

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा
जैशे सिद्दीक़े अक्बर	276
कई मुशरिकीन को वासिले जहन्नम किया	276
सिद्दीक़े अक्बर मुसलमानों के अमीरुल हज	276
सिद्दीक़े अक्बर पहले अमीरुल हज	276
सरकार ने हज क्यूं न किया ?	277
सूरए बराअत के लिये हज़रते अ़ली की रवानगी	277
ऊंटनी की बिल-बिलाहट	278
एक अहम वज़ाहत	278
हज्जतुल वदाअ़ में सिद्दीक़े अक्बर की रफ़ाक़त	279
हज्जतुल वदाअ़ के अस्मा और इन की वजहे तस्मिय्या	279
हज्जतुल वदाअ़ में सहाबए किराम की ता'दाद	280
शहज़ादए सिद्दीक़े अक्बर की विलादत	281
जैशे उसामा बिन ज़ैद की तय्यारी व रवानगी	281
जैशे उसामा बिन ज़ैद का पस मन्ज़र	281
इमामत व ख़िलाफ़त का बयान	285
इमामते सुग़रा	285
किसी और को इमामत का हक़ नहीं	285
सरकार की मौजूदगी में इमामत	286
सरकार की ग़ैर मौजूदगी में इमामत	287
इमामत करने का हुक्म	288
तुम भी यूसुफ़ वाली औ़रतें हो	288
रब और मोमिनों दोनों को ना मन्ज़ूर	289
सिद्दीक़े अक्बर का तक़र्रुर ब हैसिय्यते इमाम	290
सिद्दीक़े अक्बर ने कितनी नमाज़ें पढ़ाईं ?	290
रसूलुल्लाह ने बैठ कर नमाज़ अदा फ़रमाई	290
आख़िरी नमाज़ सिद्दीक़े अक्बर की इमामत में	291
मज़्कूरा अहादीस की शर्ह	291
नबी की अदा को अदा कर रहा हूं	291
रसूलुल्लाह का विसाले ज़ाहिरी	292
अ़ज़ीम सानेहा पर सिद्दीक़े अक्बर का अ़ज़ीम सब्र	292
सिद्दीक़े अक्बर का नसीहत आमोज़ ख़ुत्बा	293
सिद्दीक़े अक्बर के सदमे की कैफ़िय्यत	294
सिद्दीक़े अक्बर का सब्रो ज़ब्त	295
बारगाहे रिसालत में सिद्दीक़े अक्बर की हाज़िरी	295
विसाले सरकार और सहाबा का हुज़्नो मलाल	297
एक दिन मरना है आख़िर मौत है	297
मेरे पीछे चले आओ तुम्हारा रहनुमा मैं हूं	299
रसूलुल्लाह की वफ़ात कब हुई ?	300
इमामते कुब्रा, ख़िलाफ़त का बयान	301
आयाते मुबारका और ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर	301
पहली आयते मुबारका	301
दूसरी आयते मुबारका	302
तीसरी आयते मुबारका	302
अहादीसे मुबारका और ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर	304
अबू बक्र व उ़मर की पैरवी करना	304
सब दरवाज़े बन्द कर दो	304
सिद्दीक़े अक्बर पर ए'तिमाद	304
ख़िलाफ़त के हक़दार, सिद्दीक़े अक्बर	305
अपने सदक़ात किसे पेश करें ?	305
रसूलुल्लाह किसे ख़लीफ़ा मुन्तख़ब फ़रमाते ?	305
ख़िलाफ़त की वसिय्यत	306
अबू बक्र के सिवा कोई मन्ज़ूर नहीं	306
सब से पहले ख़लीफ़ा, सिद्दीक़े अक्बर	307
हम दुन्यवी उमूर में सिद्दीक़े अक्बर से राज़ी	307
आप की ख़िलाफ़त के दो साल	307
तरतीबे ख़िलाफ़त	308
मुख़्तलिफ़ अक्वाल और ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर	308
ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर और सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ	308
ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर और सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मसऊ़द رضی اللہ تعالٰی عنہ	309
ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर और सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رضی اللہ تعالٰی عنہ	309
ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर और सय्यिदुना मुआ़विय्या बिन क़ुर्रह رضی اللہ تعالٰی عنہ	309
ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर और सय्यिदुना ह़सन बसरी رضی اللہ تعالٰی عنہ	310
ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अक्बर और इमाम शाफ़ेई رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	310

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर	311	अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा की बैअ़त	323
मुहाजिरीन व अन्सार की फ़ज़ीलत	311	फ़ारूक़े आ'ज़म का नसीहत आमोज़ ख़ुत्बा	324
तृबई व फ़ित्री मैलान	311	मुआ़मलाते ख़िलाफ़त के ज़ियादा हक़दार	325
अन्सार व मुहाजिरीन में इख़्तिलाफ़ और इस की वजह	312	**सिद्दीक़े अक्बर की बैअ़ते आ़म्मा**	325
मुहाजिरीन मुसलमानों का इम्तियाज़	312	सय्यदुना फ़ारूक़े आ'ज़म का एक और ख़ुत्बा	325
अन्सार मुसलमानों का इम्तियाज़	312	**बा'दे बैअ़त ख़ुत्बाते सिद्दीक़े अक्बर**	326
फ़ज़ीलते अन्सार ब ज़बाने हबीबे परवर दगार	313	ख़लीफ़ा बनने के बा'द पहला ख़ुत्बा	326
मुहाजिरीन व अन्सार में इख़्तिलाफ़ की हक़ीक़ी वजह	313	कोई इस मन्सब को संभाल ले	327
सक़ीफ़ा बनू सा'दा में अन्सार का मश्वरा	314	मुझे अमारत की कोई चाहत नहीं	327
सक़ीफ़ा बनू सा'दा क्या है ?	314	बैअ़त की ज़िम्मेदारी से आज़ादी	328
तीनों अकाबिर सहाबा की सक़ीफ़ा बनू सा'दा आमद	315	सात दिन तक बैअ़त तोड़ने का कहते रहे	328
गुफ़्तगू करने का बेहतरीन तरीक़ा	315	दूसरा ख़ुत्बा, ख़िलाफ़त से अ़दमे दिल चस्पी का इज़्हार	329
सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर का बयान	316	तीसरा ख़ुत्बा, ख़ालिक़ की नाफ़रमानी में किसी की इत्तिबाअ़ नहीं	329
सिद्दीक़े अक्बर के बयान की तफ़्सील	316	चौथा ख़ुत्बा, सब से बड़ी दानाई	329
बैअ़त के लिये अपना हाथ बढ़ाइये	318	नसीहतों के मदनी फूल	330
हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा की ताईद	318	बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर और वालिदे सिद्दीक़े अक्बर	331
सिद्दीक़े अक्बर के बयान पर सब का इत्मीनान	319	बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर कब हुई ?	331
बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर और सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म	319	सिद्दीक़े अक्बर का तर्ज़े ख़िलाफ़त निहायत शानदार था	332
आप इस उम्मत के अमीन हैं	319	एक हैरत अंगेज़ बात	332
एक नियाम में एक साथ दो तल्वारें नहीं रह सकतीं	320	अव्वलीन मुसलमानों का तर्ज़े ख़िलाफ़त	333
एक अमीर अन्सार से, एक मुहाजिरीन से	320	इन्तिख़ाबे ख़लीफ़ा में अहले मदीना का इजतिहाद	334
दो त़रह की बैअ़त की गई	321	दीगर ख़ुलफ़ा के इन्तिख़ाब का त़रीक़ए कार	334
सिद्दीक़े अक्बर की बैअ़ते ख़ास्सा	321	**बा'दे बैअ़त इबतिदाई मुआ़मलात**	335
सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म की बैअ़त	321	सिद्दीक़े अक्बर की रिहाइश	335
अन्सारी क़बीले के सरदार की बैअ़त	322	बैतुल माल से वज़ीफ़े की तक़र्रुरी	336
सब से ज़ियादा मुत्तफ़िक़ा बात	322	सिद्दीक़े अक्बर का यौमिया वज़ीफ़ा	336
फ़तेहे ख़ैबर और बैअ़ते सिद्दीक़े अक्बर	322	आप के नए वज़ीफ़े की तक़र्रुरी	337
शेरे ख़ुदा का दा'वए ख़िलाफ़त से इन्कार	322	मेरा माल मुसलमानों के काम आ जाता है	338
ख़िलाफ़त की वसिय्यत नहीं की	323	**सिद्दीक़े अक्बर और मोहरे रसूल वाली अंगूठी**	338
ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ से इस्तिह्काम इस्लाम	323	अंगूठी पर कन्दा इबारत	339
		अंगूठी तय्यार करने वाले सहाबी	339

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
नामे सिद्दीक़ नामे ह़बीब से जुदा न हो	339	ज़कात किस पर फ़र्ज़ है ?	361
सिद्दीक़े अक्बर के पास मोहरे नबुव्वत	341	ज़कात किस माल पर है ?	361
सिद्दीक़े अक्बर की ज़ाती मोहर वाली अंगूठी	341	ज़कात के मुतअ़ल्लिक़ तीन आयाते मुबारका	361
बा'दे ख़िलाफ़त ह़याते सिद्दीक़े अक्बर	342	ज़कात की अ़दमे अदाएगी पर तीन अह़ादीसे मुबारका	362
सब से पहला और अहम मस्अला	342	ज़कात की अदाएगी की ह़िक्मतें और फ़वाइदे कसीरा	363
मुतफ़र्रिद होने के बा वुजूद क़बूलिय्यत	342	मुन्किरीने ज़कात के ख़िलाफ़ जिहाद ज़रूरी था	364
पहले ख़लीफ़ा का पहला जंगी हुक्म	343	**मुन्किरीने ज़कात की सरकोबी**	364
लश्करे उसामा बिन ज़ैद का इजमाली ख़ाका	343	मुहाजिरीन व अन्सार का जंगी लश्कर	364
लश्करे उसामा को मुहिम पर भेज दो	346	शरई मुआ़मले में कोई नर्मी नहीं	365
नक़्शए मक़ामे जुर्फ़	347	फ़र्ते मह़ब्बत से सर चूम लिया	366
लश्करे उसामा को नसीह़त आमोज़ ख़ुत़्बा	348	इसाबते राए पर आफ़रीं	366
लश्करे उसामा की रवानगी	349	मौला अ़ली के वालिहाना जज़्बात	366
सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद पर शफ़्क़तो राफ़्त	350	**सिद्दीक़े अक्बर और मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जिहाद**	367
आप की वालिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ऐमन	350	बग़ावत व इर्तिदाद की वुजूहात	367
सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद को अमीर क्यूं मुक़र्रर किया गया ?	351	पहली वजह, इस्लामी ता'लीम में पुख़्ता न होना	367
लोगों का लश्करे उसामा भेजने पर ए'तिराज़	352	दूसरी वजह, बैरूनी अ़वामिल	368
लश्करे उसामा की रवानगी में ह़िक्मतें	352	तीसरी वजह, अह़कामाते शरइय्या में नर्मी	368
लश्करे उसामा की जंग का ह़ाल	353	चौथी वजह, मुनाफ़िक़ीन का मन्फ़ी किरदार	369
लश्करे उसामा की वापसी	354	येह मुर्तद्दीन किस क़िस्म के थे ?	369
सिद्दीक़े अक्बर और इस्लामी निज़ामे ह़ुकूमत	354	झूटे मुद्दइय्याने नबुव्वत की पेशन गोई	369
सिदीक़े अक्बर का मुन्फ़रिद निज़ामे ह़ुकूमत	354	**मुर्तद्दीन से जिहाद का लाइह़ए अ़मल**	371
सिद्दीक़े अक्बर और मुख़्तलिफ़ क़बाइल		मुर्तद्दीन को सिद्दीक़े अक्बर का मक्तूब	371
का इर्तिदाद व बग़ावत	355	सिद्दीक़े अक्बर के मक्तूब का मज़्मून	371
दो त़रह़ के लोगों से मुक़ाबला	355	ग्यारह सिपह सालार और ग्यारह झन्डे	373
मुख़्तलिफ़ क़बाइल का मुख़्तलिफ़ किरदार	356	पहला झन्डा सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद को दिया गया	373
मुन्किरीने ज़कात से जिहाद	359	दूसरा झन्डा सय्यिदुना इ़क्रमा बिन अबी जह्ल को दिया गया	373
मुन्किरीने ज़कात के इन्कार की वुजूहात	359	तीसरा झन्डा सय्यिदुना शुर ह़बील बिन ह़स्ना को दिया गया	374
इस्लाम में नज़रिय्यए ज़कात	360	चौथा झन्डा सय्यिदुना ख़ालिद बिन सईद को दिया गया	374
ज़कात का लुग़वी मा'ना	360	पांचवां झन्डा सय्यिदुना अ़म्र बिन अल आ़स को दिया गया	374
ज़कात की ता'रीफ़	360	छटा झन्डा सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा बिन मोह़सिन को दिया गया	374
ज़कात का शरई हुक्म	360	सातवां झन्डा सय्यिदुना अ़रफ़जा बिन हरसमा को दिया गया	374

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
आठवां झन्डा सय्यिदुना मअ्न बिन जाबिर को दिया गया	375	**अस्वद अ़नसी के ख़िलाफ़ जिहाद**	390
नवां झन्डा सय्यिदुना सुवैद बिन मक़रन को दिया गया	375	अस्वद अ़नसी कौन था ?	390
दसवां झन्डा सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़्रमी को दिया गया	375	अस्वद अ़नसी कज़्ज़ाब का ज़ुहूर	390
ग्यारहवां झन्डा सय्यिदुना मुहाजिर बिन उमय्या को दिया गया	375	अस्वद अ़नसी का उ़रूज	391
तमाम उमरा के लिये नसीह़त आमोज़ फ़रमान	375	अस्वद अ़नसी का ज़िल्लत आमेज़ क़त्ल	391
एक ह़ैरत अंगेज़ बात	377	ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ीरोज़ दैलमी का तआ़रुफ़	392
तमाम सिपह सालारों की रवानगी	377	**अ़ल्क़मा बिन अ़लाशा के ख़िलाफ़ जिहाद और इस का क़बूले इस्लाम**	392
सिद्दीक़े अक्बर व मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जिहाद	378	**फ़ुजाह अयास बिन अ़ब्द के ख़िलाफ़ जिहाद**	393
मा'रिकए सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद	378	**अबू शजरह बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा का इर्तिदाद और क़बूले इस्लाम**	393
क़बीलए बनी असद व बनी ग़ित़फ़ान से जिहाद	378	**उम्मे ज़मल के ख़िलाफ़ जिहाद**	394
मुख़्तलिफ़ क़बाइल का इजतिमाए अ़ज़ीम	378	उम्मे ज़मल कौन थी ?	394
मुर्तद्दीन भाग खड़े हुवे	378	उम्मे ज़मल का जंगी ऊंट	394
सलमा नामी ख़ातून से जंग	379	उम्मे ज़मल से जंग और इस का नतीजा	395
सय्यिदा ख़ातूने जन्नत का विसाले पुर मलाल	379	**इर्तिदाद की आख़िरी छे जंगें**	396
क़बीलए बनी तमीम के मुर्तद्दीन से जिहाद	380	**मुर्तद्दीने बह़रैन के ख़िलाफ़ जिहाद**	396
क़बीलए बनी अस्लम से जिहाद	381	बनू अ़ब्दुल क़ैस की इर्तिदाद से तौबा	396
मुसैलमा कज़्ज़ाब के ख़िलाफ़ जिहाद	381	ह़ुत़म बिन ज़ुबैआ़ का इर्तिदाद	396
दो झूटे नबियों की ख़बर	381	मुर्तद्दीने बह़रैन से जंग	397
मुसैलमा कज़्ज़ाब कौन था ?	381	मुर्तद्दीने उ़म्मान के ख़िलाफ़ जिहाद	397
बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी	382	मुर्तद्दीने मोहरा के ख़िलाफ़ जिहाद	398
मुसैलमा कज़्ज़ाब का मक्तूब	382	यमन के मुर्तद्दीन के ख़िलाफ़ जिहाद	398
रसूलुल्लाह का जवाबी मक्तूब	383	कन्दा व ह़ज़्र मौत के मुर्तद्दीन बाग़ियों के ख़िलाफ़ जिहाद	399
हर मुआ़मला उलटा हो जाता	383	**फ़ितनए इर्तिदाद का मुकम्मल ख़ातिमा**	400
जंगे यमामा और इस का होश रुबा मन्ज़र	384	**सिद्दीक़े अक्बर सल्त़नते मुस्त़फ़ा के शहनशाह**	400
सह़ाबए किराम का अ़क़ीदए इस्तिमदाद	385	**झूटे नबियों की ख़ुश फ़हमी**	401
ह़याते त़य्यिबा में मदद त़लब करना	386	**मजलिसे इन्तिज़ामी उमूर**	402
बा'दे ह़यात मदद त़लब करना	387	**दौरे सिद्दीक़ी में फ़ुतूह़ात का आग़ाज़**	404
मुसैलमा कज़्ज़ाब का क़त्ल	388	**इ़राक़ और मुल्ह़िक़ा अ़लाक़ों की फ़ुतूह़ात**	404
ह़ज़रते सय्यिदुना वह़शी कौन थे ?	389	जंगे ज़ातुस्सलासिल	404
बरादरे फ़ारूक़े आ'ज़म की शहादत	389	फ़त्ह़े ह़ैरह	405
दीगर मुख़्तलिफ़ सह़ाबए किराम की शहादत	389		

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
फ़त्हे अम्बार	405	चोर की इबादत वाली रात	426
फ़त्हे ऐनुल तमर	406	**बाग़े फ़दक और सिद्दीक़े अक्बर**	426
फ़त्हे दूमतुल जन्दल	406	फ़दक क्या है ?	426
फ़त्हे हुसीद, ख़नाफ़िस, मुसीख़	407	सिद्दीक़े अक्बर और **रसूलुल्लाह** की इत्तिबाअ़	427
एक अहम बात	407	बा'दे विसाल **रसूलुल्लाह** का तर्का	427
फ़िराज़ और इस की जंग	408	शहज़ादिये कौनैन और मीरासे **रसूलुल्लाह**	428
सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की बेहतरीन हिक्मते अ़मली	408	शहज़ादिये कौनैन ने मीरास का मुतालबा क्यूं किया ?	429
शाम और मुल्हिक़ा अलाक़ों की फ़ुतूहात	409	शहज़ादिये कौनैन के मुतालबे की बरकत	430
मुल्के शाम की पहली फ़त्ह	409	अम्बिया की मीरास न होने की हिक्मत	430
मुल्के शाम की पहली सुल्ह और पहली जंग	409	अम्बियाए किराम की मीरास इल्म है	431
सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद की शाम की त़रफ़ रवानगी	410	उ़लमा अम्बिया के वारिस हैं	431
यरमूक पर तमाम लश्करों का इजतिमाअ़	411	सिद्दीक़े अक्बर की शहज़ादिये कौनैन से वालिहाना महब्बत	431
मुसलमानों के लश्कर की मुकम्मल ता'दाद	411	शहज़ादिये कौनैन का विसाल	432
रूमी फ़ौज की ता'दाद	411	नमाज़े जनाज़ा सिद्दीक़े अक्बर ने पढ़ाई	432
दोनों लश्करों में जंग	412	**ख़ुत्बाते सिद्दीक़े अक्बर**	433
फ़त्हे उरदन	413	(1) नसीहतों के मदनी फूल	433
फ़त्हे अजनादीन	413	(2) आसानियों वाले दरवाज़े का कुशादा होना	435
फ़ैज़ाने हयाते सिद्दीक़े अक्बर	414	(3) ह़या के सबब सर ढांप लेना	435
सिद्दीक़े अक्बर और जम्ए क़ुरआन	415	ह़या के सबब पीठ दीवार से लगाना	435
जम्ए क़ुरआन का पस मन्ज़र	415	(4) फ़िक्रे आख़िरत से भरपूर ख़ुत्बा	436
जम्ए क़ुरआन और इस के मुतअ़ल्लिक़ मुशावरत	415	(5) कहां हैं ह़सीन चेहरों वाले ?	437
सब से ज़ियादा सवाब के ह़क़दार	417	(6) ज़मीन पर रह़मते इलाही का साया	437
सब से पहले जामेए क़ुरआन	417	**वसिय्यते ख़िलाफ़ते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म**	437
सिद्दीक़े अक्बर का अन्दाज़े ख़िलाफ़त	421	ख़िलाफ़त के मुआ़मले में मुशावरत	438
सिद्दीक़े अक्बर की शरई अ़दालत	421	परवानए ख़िलाफ़त ब नाम सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म	439
सिद्दीक़े अक्बर के फ़ैसला करने का अन्दाज़	421	सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म को नसीहत	440
रसूलुल्लाह की मौजूदगी में फ़ैसला कुन राए	422	उम्मीद व ख़ौफ़ के दरमियान रहो	441
मसाइले शरइय्या में इजतिहाद	424	सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म के ह़क़ में दुआ़	441
तक़्दीर के मो'तरिज़ पर सर ज़निश	424	फ़िरासते सिद्दीक़े अक्बर	442
दिमाग़ में शैतान घुसा है	425	कामयाब और मुअस्सिर इन्तिज़ामी ढांचा	442
चोर के लिये क़त्ल का हुक्म	425	आप की ज़ात बहुत बड़ा मो'जिज़ा	443

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
विसाले सिद्दीके अक्बर	445	अक़ीदए हयातुल अम्बिया	465
मरज़े वफ़ात और सिद्दीके अक्बर	447	अम्बियाए किराम की क़ब्रों में नमाज़	465
तीनों अक़्वाल में मुताबक़त	447	गुस्ताख़े रसूल से दूर रहो	466
हाए ज़लील दुन्या	448	गुस्ताख़े सहाबा से दूर रहो	467
दुन्या की महब्बत अन्धी होती है	448	क़ब्र में सय्यिदुना अबू बक्र व उमर का वसीला काम आ गया	467
आप की वफ़ात का सबबे हक़ीक़ी	449	वक़्ते वफ़ात सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर की उम्र	468
सिद्दीके अक्बर का ग़मे मुस्तफ़ा	449	कलिमए तय्यिबा पढ़ कर जन्नत में दाख़िला	468
काश ! हमें भी ग़मे मुस्तफ़ा नसीब हो !	451	आप की मुद्दते ख़िलाफ़त	468
ख़्वाब में दीदारे मुस्तफ़ा	451	**अल्लाह** आप को हमेशा सुर्ख़रू रखे	469
अपनी वफ़ात की तरफ़ इशारा	452	रोज़े महशर मज़ाराते मुनव्वर से बाहर आने का हसीन मन्ज़र	469
दिल मेरा दुन्या पे शैदा हो गया	452	राहे ख़ुदा में आने वाली मुश्किलात का सामना कीजिये	470
ग़ुस्ल देने की वसिय्यत	453	ग़मे दुन्या में नहीं ग़मे मुस्तफ़ा में रोएं	470
महबूब से महब्बत का अनोखा अन्दाज़	454	येह कैसा इश्क़ और कैसी महब्बत है ?	471
पसन्दीदा दिन और रातें	454	ता क़ियामत "उम्मती उम्मती" फ़रमाएंगे	473
प्यारे आक़ा के कफ़न से मुताबक़त	455	मुहद्दिसे आ'ज़म पाकिस्तान का फ़रमान	474
सिद्दीके अक्बर का कफ़न	455	रोज़े क़ियामत फ़िक्रे उम्मत का अन्दाज़	474
सफ़रे आख़िरत में मुवाफ़क़त	455	काश ! हम पक्के आशिक़े रसूल बन जाएं	475
नज़्अ के वक़्त आप की कैफ़िय्यत	456	**सिद्दीके अक्बर और क़ुरआने पाक की तफ़्सीर**	479
आख़िरी कलिमाते तय्यिबा	457		
आप के वालिद के तअस्सुरात	457	बयाने तफ़्सीर में ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी	479
सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा का तारीख़ी ख़ुत्बा	457	बिग़ैर इल्म के तफ़्सीर करना	479
सिद्दीके अक्बर की नमाज़े जनाज़ा	462	लफ़्ज़ كَلَّا की तफ़्सीर	480
चार तक्बीरों के साथ जनाज़ा	462	दो आयतों की तफ़्सीर	480
नमाज़े जनाज़ा कहां अदा की गई ?	462	एक और आयते करीमा की तफ़्सीर	481
नमाज़े जनाज़ा किस ने अदा की ?	462	हर अमल का बदला दिया जाएगा	481
लहद में किस ने उतारा ?	462	**सिद्दीके अक्बर से मरवी अहादीस**	482
सिद्दीके अक्बर की तदफ़ीन	463	सुन्नते रसूल के जय्यिद आलिम	482
किस वक़्त तदफ़ीन की गई ?	463	आप से रिवायत करने वाले सहाबा व सहाबिय्यात	482
रसूलुल्लाह के पहलू में तदफ़ीन	463	**आप से मरवी अहादीसे मुबारका**	484
या **रसूलुल्लाह** !....अबू बक्र हाज़िर है	463	(1) जन्नत में दाख़िल न होंगे	484
सिद्दीके अक्बर हयातुन्नबी के क़ाइल थे	464	(2) मोमिन को नुक़्सान पहुंचाने वाला	485

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा
(3) नमाज़े सुब्ह पढ़ने वाला अल्लाह के ज़िम्मए करम पर	485
(4) मिस्वाक की फ़ज़ीलत	485
(5) दो रक्अ़त नमाज़ सलातुत्तौबा	485
(6) बख़ील जन्नत में दाख़िल न होगा	486
(7) जुमुआ़ की फ़ज़ीलत	486
(8) सुब्हो शाम का वज़ीफ़ा	486
(9) शैतान की हलाकत वाले कलिमात	487
(10) अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले	487
(11) ज़बान की तेज़ी की शिकायत	488
(12) बुराई को देख कर न रोकना	488
(13) राहे ख़ुदा में गुबार आलूद क़दम	488
(14) झूट से बचो	489
(15) मुसीबत ज़दा औ़रत को तसल्ली देना	489
(16) राहे ख़ुदा में नंगे पाउं चलना	489
(17) ह़दीस लिखने की फ़ज़ीलत	490
(18) मुसलमानों पर नर्मी करने वाला	490
(19) मेरी मख़्लूक़ पर रह़म करो	490
ख़ुसूसिय्याते सिद्दीक़े अक्बर	491
पहली ख़ुसूसिय्यत, नामे सिद्दीक़	493
दूसरी ख़ुसूसिय्यत, रफ़ीक़े हिजरत	493
तीसरी ख़ुसूसिय्यत, यारे ग़ार	493
चौथी ख़ुसूसिय्यत, मोअमिनीन की मौजूदगी में इमामत	493
पांचवीं ख़ुसूसिय्यत, जिब्रीले अमीन की गुफ़्त्गू सुनते	494
छटी ख़ुसूसिय्यत, वज़ीरे ख़ास	494
सातवीं ख़ुसूसिय्यत, आप की ता'रीफ़ व तौसीफ़	494
आठवीं ख़ुसूसिय्यत, आप की रिज़ा	494
अव्वलिय्याते सिद्दीक़े अक्बर	495
(1) सब से पहले दोस्त	497
(2) सब से पहले मुसद्दिक़	497
(3) सब से पहले मुसलमान	497
(4) सब से पहले इज़्हारे इस्लाम करने वाले	497
(5) सब से पहले जामेए़ क़ुरआन	497
(6) सब से पहले मुसम्मा क़ुरआन	498
(7) सब से पहले ख़लीफ़ा	498
(8) सब से पहले ख़लीफ़ा पुकारा गया	498
(9) सब से पहले नफ़्क़ा की तक़र्रुरी	498
(10) सब से पहले ख़त़ीब	498
(11) सब से पहले मुह़ाफ़िज़	499
(12) सब से पहले मुक़ीमे बैतुल माल	499
(13) सब से पहले अ़तीक़ का लक़ब पाने वाले	499
(14) सब से पहले मुबल्लिग़े इस्लाम	499
(15) सब से पहले मुई़ने इस्लाम	499
(16) सब से पहले अमीरुल ह़ज	500
(17) अपने वालिद की ह़यात ही में पहले ख़लीफ़ा	500
(18) ह़याते वालिद में इन्तिक़ाल करने वाले पहले ख़लीफ़ा	500
(19) इस्लाम की सब से पहली मस्जिद बनाने वाले	500
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर	501
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ	503
मुफ़्तरी की सज़ा	503
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ	504
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ تعالٰی عنہ	504
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ	504
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہما	505
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अस्बग़ बिन नबातह رضی اللہ تعالٰی عنہ	505
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अबू दरदा رضی اللہ تعالٰی عنہ	505
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना सलमह बिन अक्वअ़ رضی اللہ تعالٰی عنہ	506
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने जिब्रीले अमीन علیہ السلام	506
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رضی اللہ تعالٰی عنہ	506
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने ह़स्सान बिन साबित رضی اللہ تعالٰی عنہ	507
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अबू ह़सीन رضی اللہ تعالٰی عنہ	507
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अ़ल्लामा नस्फ़ी رضی اللہ تعالٰی عنہ	507
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमामे आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ	508

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम शाफ़ेई رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	508
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम मालिक رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	508
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम तहावी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	508
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम अबू बक्र बाक़लानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	509
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने शैख़ तक़ियुद्दीन رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	509
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने हाफ़िज़ इब्ने अब्दुलबर رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	509
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अल्लामा अब्दुश्शकूर सालिमी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	510
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम ग़ज़ाली رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	510
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम कमालुद्दीन رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	510
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम क़ाज़ी इयाज़ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	511
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने गौसे आ'ज़म رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	511
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने हाफ़िज़ इब्ने असाकिर رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	511
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम शरफ़ुद्दीन नववी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	512
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने मुहम्मद बिन हुसैन बग़वी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	512
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	512
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम जलालुद्दीन सुयूती رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	513
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम अब्दुल वह्हाब शा'रानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	513
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने ब ज़बाने इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	513
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम इब्ने हजर हैतमी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	514
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने मुजद्दिदे अल्फ़े सानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	514
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अल्लामा मुल्ला अली क़ारी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	514
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अल्लामा क़स्तलानी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	515
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने मीर अब्दुल वाहिद बलगिरामी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	515
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	515
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने शाह वलिय्युल्लाह मुहद्दिसे देहलवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	515
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ परहारवी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	516
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने पीर महर अली शाह गोलड़वी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	516
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने आ'ला हज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	516
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सदरुल अफ़ाज़िल رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	517
अफ़्ज़लिय्यते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सदरुश्शरीआ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ	517
सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व उमर फ़ारूक़ की अफ़्ज़लिय्यत क़त्ई है	517
जहां निहायतें व ग़ायतें ख़त्म वहां मक़ामे सिद्दीक़ शुरूअ़	517
मस्अलए अफ़्ज़लिय्यत बाबे अ़क़ाइद से है	518
सिद्दीक़े अक्बर सूफ़िया की नज़र में	519
सूफ़ी बनने के लिये नक़्शे सिद्दीक़ की इत्तिबाअ़	519
ख़ौफ़ व उम्मीद की आ'ला मिसाल	519
सिद्दीक़े अक्बर जैसे बन जाओ	519
सूफ़िया की बोली बोलने वाले पहले शख़्स	520
सूफ़िया की पहली बोली सिद्दीक़े अक्बर ने बोली	521
हयाते सिद्दीक़ और इशाराते सूफ़िया	522
सूफ़िया की बोली, दूसरी मिसाल	522
एक सुवाल और इस का जवाब	523
सिद्दीक़े अक्बर के तीन इल्हाम	524
(1) मानेईने ज़कात के ख़िलाफ़ जंग	524
(2) जैशे उसामा की रवानगी	525
(3) क़ब्ले विसाल बेटी की ख़ुश ख़बरी	525
सहाबा के माबैन इम्तियाज़े सिद्दीक़े अक्बर	526
खाते ही फ़ौरन क़ै कर दी	527
काश मैं एक सब्ज़ा होता	527
सिद्दीक़े अक्बर और तीन आयतें	527
दुन्यादारों की मज़म्मत में सिद्दीक़े अक्बर के अश्आर	529
सिद्दीक़े अक्बर सब से बेहतरीन राहनुमा	529
सिद्दीक़े अक्बर मुरीदे सादिक़ हैं	529
सिद्दीक़े अक्बर की फ़ज़ीलत की बिल फ़े'ल दलील	530
क़ौले सिद्दीक़ में इन्तिहाई अदब	530
इस्तिहक़ाक़े इमामत का इरफ़ान	532
करामाते सिद्दीक़े अक्बर	533
(1) खाने में अ़ज़ीम बरकत	535
(2) बेटी पैदा होने की बिशारत	536
वाक़ेई लड़की पैदा हुई	536
दो करामतों का सुबूत	537
सिद्दीक़े अक्बर को इल्मे ग़ैब था	537
औलियाए किराम को भी इल्मे ग़ैब है	538

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
बेटा पैदा होने की बिशारत	539	आयत (18) ग़ैरते ईमानी	561
सिद्दीक़े अक्बर की करामात के क्या कहने !	540	आयत (19) हुक्मे इलाही	562
सिद्दीक़े अक्बर ने मदनी ऑपरेशन फ़रमा दिया	540	आयत (20) अल्लाह के प्यारे	562
(3) निगाहे करामत की नूरी फ़िरासत	541	आयत (21) चालीस हज़ार दीनार सदक़ा	563
(4) कलिमए तृय्यिबा से क़ल्आ मिसमार	543	आयत (22) इल्म वाले	563
(5) ख़ून में पेशाब करने वाला	543	आयत (23) अहले बैत से महब्बत	564
(6) सलाम से दरवाज़ा खुल गया	543	आयत (24) नेकियों की क़बूलिय्यत	564
(7) कश्फ़े मुस्तक़बिल	544	आयत (25) रब की रहमत	564
(8) मदफ़न के बारे में ग़ैबी आवाज़	546	आयत (26) ईमान वालों का अज्र	565
(9) सिद्दीक़े अक्बर का गुस्ताख़ बन्दर बन गया	547	आयत (27) तवाज़ोअ़ करने वाले	565
(10) सिद्दीक़े अक्बर का गुस्ताख़ ख़िन्ज़ीर बन गया	547	आयत (28) अ़क़्ल वालों को नसीहत	566
(11) सिद्दीक़े अक्बर का गुस्ताख़ कुत्ता बन गया	548	आयत (29) आवाज़ पस्त करने वाले	566
नसीहत के मदनी फूल	549	आयत (30) इस्लाम की दा'वत	567
आप के मुतअ़ल्लिक़ नाज़िल होने वाली आयात	550	आयत (31) हिम्मत वाले काम	567
आयत (1) तस्दीक़ करने वाले	550	आयत (32) इत्मीनान वाली जान	568
आयत (2) यारे ग़ार	550	**अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (1)**	571
आयत (3) बारगाहे रिसालत के मुशीर	551	**फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने महबूबे सिद्दीक़े अक्बर**	571
आयत (4) ख़ौफ़े ख़ुदा	552	बारगाहे रिसालत में मक़ामो मर्तबा	571
आयत (5) रिज़ाए इलाही के तालिब	552	सितारों की मिस्ल नेकियां	571
आयत (6) सब से बड़े परहेज़गार	553	उम्मुल मोअमिनीन और अ़क़ीदए इल्मे ग़ैबे मुस्तफ़ा	572
आयत (7) वसीलए **रसूलुल्लाह**	553	बारगाहे रिसालत में सिद्दीक़े अक्बर की अहम्मिय्यत	572
आयत (8) नेक ईमान वाले	554	**सिद्दीक़े अक्बर और जन्नत**	573
आयत (9) रिज़ाए इलाही	554	जन्नत के तमाम दरवाज़ों से बुलावा	573
आयत (10) आपस में भाई भाई	555	सिद्दीक़े अक्बर की जन्नत में अम्बियाए किराम की मइय्यत	574
आयत (11) दुआए सिद्दीक़	556	सिद्दीक़े अक्बर और जन्नती मोटे ताज़े परन्दे	574
आयत (12) राहे ख़ुदा में तकालीफ़	556	सिद्दीक़े अक्बर और जन्नती दरख़्त "तूबा"	574
आयत (13) इत्तिबाअ़ का हुक्म	557	सिद्दीक़े अक्बर का जन्नत में बुलन्दो बाला महल	575
आयत (14) फ़ज़ीलत वाले	558	सिद्दीक़े अक्बर के लिये गुलाब जैसी चार सो हूरें	575
आयत (15) अवसाफ़े हमीदा	559	सिद्दीक़े अक्बर का जन्नत में पुर तपाक इस्तिक़्बाल	576
आयत (16) अमान से आने वाला	559	तमाम आस्मानों में आप का नाम	576
आयत (17) राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाला	560	नूरानी क़लम से लिखा हुवा नाम	576

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
नूरानी झन्डे पर आप का नाम	577	रोज़े क़ियामत सिद्दीक़े अक्बर का हिसाब नहीं होगा	589
तीनों अहादीस में मुताबक़त	577	सिद्दीक़े अक्बर पर रब की ख़ुसूसी तजल्ली	589
मोहसिने काइनात के मोहसिन	577	सिद्दीक़े अक्बर पर रब का ख़ुसूसी करम	589
नूर से मा'मूर दिल	577	सिद्दीक़े अक्बर के लिये ख़ुसूसी दुआ	590
सिद्दीक़े अक्बर के लिये **रसूलुल्लाह** की हिमायत	578	हौज़े कौसर के साथी	590
जानो माल से सरकार की मदद	579	जन्नत में रफ़ाक़त की दुआ	590
सब से ज़ियादा फ़ाइदा पहुंचाने वाले	579	जन्नत में रफ़ाक़त	591
हदीसे पाक की शर्ह	579	**उमूरे ख़ैर में सब से आगे**	591
सिद्दीक़े अक्बर का नूरानी दरवाज़ा	580	सिद्दीक़े अक्बर के लिये जन्नत की बिशारत	591
शाने सिद्दीक़े अक्बर	580	सुब्ह ही सुब्ह नेकियों में सबक़त	591
सब से बढ़ कर अम्न देने वाले	581	सिद्दीक़े अक्बर की मा'रिफ़त	593
सब से ज़ियादा एहसान	581	क़राबते मुस्तफ़ा की वजह से फ़ज़ीलत	593
उम्मते मुहम्मदिय्या पर तीन चीज़ों का वुजूब	581	सिद्दीक़े अक्बर का पलड़ा भारी हो गया	594
रिज़्वाने अक्बर की दुआ	582	सिद्दीक़े अक्बर की शफ़ाअ़त, शफ़ाअ़ते अम्बिया की मिस्ल	594
या'नी महबूबो मुहिब में नहीं मेरा तेरा	582	सिद्दीक़े अक्बर की तरफ़ से कोई बुराई न पहुंची	594
जानो माल सब कुछ फ़िदा	582	अन्सार व मुहाजिरीन के सरदार	595
अपने माल जैसा तसर्रुफ़	583	सिद्दीक़ के लिये जन्नत से सदाए मरहबा	595
ख़ुदा चाहता है रिज़ाए सिद्दीक़	583	सिद्दीक़े अक्बर के लिये **रसूलुल्लाह** की दुआ	596
महबूबे हबीबे ख़ुदा	584	सिद्दीक़ ब मन्ज़िला क़मीस है	596
सब से ज़ियादा मेहरबान	584	सिद्दीक़े अक्बर तकब्बुर नहीं करते	597
इन्सानों में सब से अफ़्ज़ल	584	**अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (2)**	598
रोज़े महशर शफ़ाअ़ते सिद्दीक़े अक्बर	585	**फ़ज़ाइले सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर व सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म**	598
अबू बक्र पर किसी को फ़ज़ीलत न दो	585	सय्यिदुना अबू बक्र व उमर जन्नतियों के सरदार	598
अ़रब के दानिश वरों का सरदार	585	एक अहम मदनी फूल	598
क़ियामत तक सवाब के हक़दार	586	सय्यिदुना अबू बक्र व उमर की महब्बत, जन्नत की ज़मानत	598
तक़्दीमे सिद्दीक़े अक्बर मिन जानिब रब्बे अक्बर	586	सय्यिदुना अबू बक्र व उमर का जन्नत में दाख़िला	599
अ़दालते सिद्दीक़े अक्बर ब ताईदे हबीबे अक्बर	586	सय्यिदुना अबू बक्र व उमर के साथ सय्यिदुना जिब्रईल व मीकाईल	599
सब से पहले दुख़ूले जन्नत की सआ़दत	588	सब से अफ़्ज़ल सिद्दीक़े अक्बर हैं	599
आप के उख़रवी इन्आमात	588	सय्यिदुना अबू बक्र व उमर की इताअ़त में हिदायत	600
बरोज़े क़ियामत बारगाहे रिसालत में पहले हाज़िरी	588	ख़ुदा की तरफ़ रुजूअ़ करने वाले	600
बरोज़े क़ियामत हबीब व ख़लील की क़ुर्बत	588	सय्यिदुना अबू बक्र व उमर की महशर में रफ़ाक़ते मुस्तफ़ा	600

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
इल्ज़ाम तराशों वाली सज़ा	601	खुलफ़ाए राशिदीन और नबुव्वत की ख़िलाफ़त	614
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर सब से बेहतरीन शख़्सिय्यत	601	खुलफ़ाए राशिदीन और हौज़े कौसर	616
मौला अ़ली का येह फ़रमान ह़द्दे तवातुर तक पहुंचा हुवा है	601	खुलफ़ाए राशिदीन और इस्तिक़्बाले नबवी	617
मुहाजिरीन व अन्सार पर ज़ुल्म व ना इन्साफ़ी	601	खुलफ़ाए राशिदीन और इन्सानी चेहरे वाला जानवर	618
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर उम्मत में सब से अफ़्ज़ल व बेहतरीन	602	खुलफ़ाए राशिदीन की मह़ब्बत सिर्फ़ क़ल्बे मोमिन में	620
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर के ज़रीए ताईद	602	खुलफ़ाए राशिदीन पर रब्बुल आ़लमीन रह़्म फ़रमाए	620
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर के ईमान की गवाही	602	तमाम सह़ाबा में खुलफ़ाए राशिदीन की फ़ज़ीलत	620
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर इस्लाम के मां बाप हैं	603	खुलफ़ाए राशिदीन की मह़ब्बत फ़र्ज़ है	620
सय्यिदुना अनस की सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर से मह़ब्बत	603	खुलफ़ाए राशिदीन से मह़ब्बत करने वाले	621
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर बुलन्दो बाला मर्तबे वाले हैं	604	रोज़े क़ियामत खुलफ़ाए राशिदीन की हुकूमत	621
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर पर **रसूलुल्लाह** की निगाहे करम	604	खुलफ़ाए राशिदीन की मह़ब्बत ज़रूरी है	622
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर क़ियामत के दिन **रसूलुल्लाह** के साथ	605	ख़िलाफ़त किसे मिलेगी ?	622
बरोज़े क़ियामत सब से पहले क़ब्र से निकलने वाले	605	खुलफ़ाए राशिदीन सूरतुल अ़स्र की तफ़्सीर	623
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर **रसूलुल्लाह** के कान और आंख	605	रसूलुल्लाह के वुज़रा व मुशीर	623
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर ख़ासुल ख़ास वफ़ादार साथी	605	खुलफ़ाए राशिदीन की मुवाफ़क़ते रसूल	623
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर **रसूलुल्लाह** के ज़मीनी वज़ीर	606	खुलफ़ाए राशिदीन और जन्नत की ख़ुश ख़बरी	624
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर पर कोई हुक्मरानी नहीं करेगा	606	फ़ज़ाइले खुलफ़ाए राशिदीन ब ज़बाने सय्यिदुल मुर्सलीन	625
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर की मह़ब्बत ईमान है	606	खुलफ़ाए राशिदीन की मह़ब्बत पर मौत	627
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर के मक़ाम की मा'रिफ़त सुन्नत है	606	खुलफ़ाए राशिदीन अम्बियाए किराम की मिस्ल	628
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर से उम्मत की मह़ब्बत	607	खुलफ़ाए राशिदीन की एक ही मिट्टी से पैदाइश	628
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर जन्नती हैं	607	खुलफ़ाए राशिदीन के दुख़ूले जन्नत का मुबारक मन्ज़र	629
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर की हर अच्छे काम में सबक़त	607	खुलफ़ाए राशिदीन का नाम अ़र्शे आ'ज़म पर	629
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर की इक़्तिदा की वसिय्यत	608	खुलफ़ाए राशिदीन का नाम लिवाउल ह़म्द पर	629
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर की मिसाल फ़िरिश्तों में	608	खुलफ़ाए राशिदीन की पैदाइश	630
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर दीने इस्लाम के सम्अ़ व बसर	608	खुलफ़ाए राशिदीन ज़मानए नबवी के मुफ़्ती	630
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर से बुग़्ज़ व मह़ब्बत का सिला	609	खुलफ़ाए राशिदीन के अवसाफ़ ब ज़बाने **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास	631
सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर के गुस्ताख़ का इ़ब्रतनाक अन्जाम	609	खुलफ़ाए राशिदीन की अफ़्ज़लिय्यत	633
अह़ादीसे फ़ज़ाइल बाब (3)	612	**अह़ादीसे फ़ज़ाइल बाब (4)**	634
फ़ज़ाइले खुलफ़ाए राशिदीन	612	**फ़ज़ाइले अ़शरए मुबश्शरा**	634
खुलफ़ाए राशिदीन और इ़ल्म का शहर	612	अ़शरए मुबश्शरा सह़ाबए किराम	634
खुलफ़ाए राशिदीन की अस्ह़ाबे कहफ़ से मुलाक़ात	612	अ़शरए मुबश्शरा मह़बूबे ह़बीबे ख़ुदा	634

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
ऐ हिरा ठहर जा, तुझ पर नबी, सिद्दीक़ और शहीद हैं	635	फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने फ़ारूक़े आ'ज़म	646
अ़शरए मुबश्शरा से बुग़्ज़ का अन्जाम	635	महबूबे हबीबे ख़ुदा	646
अ़शरए मुबश्शरा के नूर से पैदा होने वाला परन्दा	636	शाने सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने फ़ारूक़े आ'ज़म	646
अ़शरए मुबश्शरा क़ुरआन की तफ़्सीर	636	कठिन वक़्त में ग़ैबी मदद	646
अ़शरए मुबश्शरा के जन्नत में रुफ़क़ा अम्बियाए किराम	637	आप का ईमान सब से अफ़्ज़ल	647
अ़शरए मुबश्शरा की जुदागाना सिफ़ात	637	सिद्दीक़े अक्बर के सीने का बाल होता	647
अ़शरए मुबश्शरा क़ुरआनी आयत की तफ़्सीर	638	सारी मख़्लूक़ के सरदार	648
अ़शरए मुबश्शरा के लिये रिज़ाए मुस्तफ़ा का परवाना	638	नेक कामों में सब पर सबक़त	648
अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (5)	639	सय्यिदुना बिलाल तो सिद्दीक़े अक्बर की एक नेकी हैं	648
फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर मअ़ दीगर सहाबए किराम	639	अफ़्ज़ल तरीन शख़्सिय्यत	648
सहाबा के लिये रहमत की दुआ	639	जन्नत में सिद्दीक़े अक्बर	649
अवसाफ़े सहाबा ब ज़बाने महबूबे सहाबा	639	अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (9)	650
सहाबए किराम के लिये बरकत की दुआ	640	फ़ज़ीलते सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने उ़स्माने ग़नी	650
चौदह रक़ीबे मुस्तफ़ा	640	ख़िलाफ़त के हक़दार सिद्दीक़े अक्बर हैं	650
सहाबए किराम से **रसूलुल्लाह** की रिज़ा	640	अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (10)	651
सहाबए किराम के अवसाफ़े हमीदा	641	फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अ़ली शेरे ख़ुदा	651
सहाबए किराम बेहतरीन इन्सान हैं	641	सिद्दीक़े अक्बर सब से ज़ियादा बहादुर हैं	651
सहाबा में सब से ज़ियादा महबूब	641	आले फ़िरऔन के मोमिन से बेहतर	651
सहाबए किराम के जन्नती घर	642	आले फ़िरऔन के मोमिन का तज़्किरा	652
अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (6)	644	सिद्दीक़े अक्बर का दिल बहुत मज़्बूत है	653
फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने जिब्रीले अमीन	644	सब से ज़ियादा रह्म दिल	653
उम्मत में सब से अफ़्ज़ल	644	सब से बेहतर शख़्स	654
आस्मानों में हलीम	644	सहाबा में सब से अफ़्ज़ल	654
अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (7)	645	रब का अ़ताकर्दा नाम	655
फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सिद्दीक़े अक्बर	645	आस्मान से नाज़िल होने वाला नाम	655
मैं ख़लीफ़ए रसूले ख़ुदा हूं	645	सिद्दीक़े अक्बर के लिये दुआए रहमत	655
सरकार के क़राबत दारों से महब्बत	645	हर नेक काम में सबक़त	655
क़ुरआने मजीद सुन कर आप का रोना	645	हुज्जत व दलील	655
अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (8)	646	साहिबे सहीफ़ा से ज़ियादा महबूब	656

www.dawateislami.net

उन्वान	सफ़्हा	उन्वान	सफ़्हा
सिद्दीक़े अक्बर से महब्बत का इन्आम	656	सब से बढ़ कर सिद्दीक़े अक्बर	672
तमाम नेकियों में से एक नेकी	656	सिद्दीक़े अक्बर की साबित क़दमी	672
महब्बते अ़ली और बुग़्ज़े शैख़ैन जम्अ़ नहीं हो सकते	657	राहे ख़ुदा के गुबार आलूद क़दम	673
चार बातों में सबक़त	657	रसूलुल्लाह के हवारी या'नी मददगार	673
सिद्दीक़े अक्बर की इमामत पर रिज़ामन्दी	657	अमीरुल मोअमिनीन का अन्दाज़े फ़ैसला	674
मस्जिदे नबवी में दाख़िल होने में पहल	658	सारा माल बैतुल माल में जम्अ़ करवा दिया	675
निहायत अ़ज़ीम शख़्सिय्यत	658	कोई दिरहम व दीनार न छोड़ा	675
ख़िलाफ़त दुन्या से ख़त्म हो गई	659	अल्लाह तआ़ला और तमाम फ़िरिश्तों की ला'नत	675
गुस्ताख़े सिद्दीक़ को मुल्क बदर कर दिया	659	**अक्वाले फ़ज़ाइल बाब (12)**	676
बोहतान लगाने वाले की सज़ा	659	**फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अस्लाफ़े किराम**	676
ज़ानी की सज़ा	660	शाने सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने इमाम जा'फ़र	676
तेरी गर्दन उड़ा देता	660	दिले सिद्दीक़ मुशाहदए रबूबिय्यत से पुर था	676
आख़िरी ज़माने के शरीर लोग	660	तमाम अहले बैत की सय्यिदुना अबू बक्र व उ़मर से महब्बत	677
शहज़ादिये कौनैन की नमाज़े जनाज़ा	661	दुश्मने शैख़ैन से बराअत का इज़्हार	677
सब से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्सिय्यत	661	दोनों अफ़्ज़ल और दोनों के लिये मग़फ़िरत	678
फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने मौला अ़ली	661	मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अबू हफ़्स उ़मर बिन अ़ली दमिश्क़ी	678
पुल सिरात़ से गुज़रने का इजाज़त नामा	666	मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना मुबारक बिन फ़ुज़ाला	678
अहादीसे फ़ज़ाइल बाब (11)	667	मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना महमूद बिन अ़ब्दुल्लाह आलूसी	679
फ़ज़ाइले सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सहाबए किराम	667	मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना इमाम ज़ह्हाक	679
मक़ामे सिद्दीक़ ब ज़बाने हस्सान बिन साबित	667	मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन यह्या	680
हर जगह सरकार की मइय्यत	668	मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने दाता गंज बख़्श अ़ली हिजवेरी	680
हुक़ूक़ुल इबाद की अदाएगी	668	मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत	681
सारा माल राहे ख़ुदा में लुटा दिया	669	मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने बरादरे आ'ला ह़ज़रत	683
पांच या छे हज़ार दिरहम ख़र्च किये	670	मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने हकीमुल उम्मत	683
मुस्कुराहटे रसूल में शिरकते सिद्दीक़े अक्बर	670	मक़ामे सिद्दीक़े अक्बर ब ज़बाने अमीरे अहले सुन्नत	684
जन्नतियों में इज़ाफ़े की दर ख़्वास्त	671	**हयाते सिद्दीक़े अक्बर तारीख़ के आईने में**	685
ख़िलाफ़त की अहलिय्यत	671	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	687
सब से बेहतर आदमी	672	माख़ज़ो मराजेअ़	708
रिआ़या के लिये मेहरबान और रह़्म दिल	672	मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या के चन्द कुतुबो रसाइल	713

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

نمبر شمار	نام کتاب	مؤلف/مصنف/متوفی	مطبوعات
1	قرآن مجید	کلامِ الٰہی	مکتبۃ المدینہ کراچی
2	کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
3	المحرر الوجیز	قاضی ابو محمد بن غالب بن عطیہ اندلسی، متوفی ۵۴۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
4	تفسیر البغوی	امام ابو محمد حسین بن مسعود فراء بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
5	التفسیر الکبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث بیروت
6	الجامع لاحکام القرآن	ابو عبد اللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی، متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر بیروت
7	تفسیر البیضاوی	امام ناصر الدین عبد اللہ بن عمر شیرازی بیضاوی، متوفی ۶۸۵ھ	دار الفکر بیروت
8	تفسیر الخازن	علاء الدین علی بن محمد بغدادی، متوفی ۷۴۱ھ	اکوڑہ خٹک نوشہرہ
9	تفسیر ابن کثیر	عماد الدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی، متوفی ۷۷۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
10	اللباب فی علوم الکتاب	ابو حفص عمر بن علی ابن عادل حنبلی، متوفی ۸۸۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
11	الدر المنثور	امام جلال الدین بن ابو بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت
12	روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ
13	روح المعانی	ابو فضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث بیروت
14	النکت والعیون	ابو الحسن علی بن محمد بن محمد بن حبیب البغدادی، متوفی ۴۵۰ھ	المکتبۃ الشاملہ
15	تفسیر الثعلبی	امام ابو اسحٰق احمد المعروف امام ثعلبی، متوفی ۴۲۷ھ	المکتبۃ الشاملہ
16	خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
17	صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
18	صحیح مسلم	امام ابو حسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دار المغنی عرب شریف
19	سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفہ بیروت
20	سنن أبی داود	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث بیروت
21	سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت
22	سنن النسائی	امام ابو عبد الرحمٰن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
23	الموطا	امام مالک بن انس اصبحی، متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفہ بیروت
24	مصنف عبد الرزاق	امام ابو بکر عبد الرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی، متوفی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
25	مصنف ابن ابی شیبۃ	حافظ عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی عبسی، متوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت
26	مسند امام احمد	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

27	نوادر الاصول	ابوعبد اللہ محمد بن علی بن حسن حکیم ترمذی، متوفی ۳۲۰ھ	مکتبہ امام بخاری
28	مسند البزار	امام ابوبکر احمد عمرو بن عبد الخالق بزار، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ
29	سنن الدارمی	امام حافظ عبد اللہ بن عبد الرحمن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دار الکتاب العربی بیروت
30	السنن الکبری	امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
31	مسند ابی یعلی	شیخ الاسلام ابو یعلی احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
32	شرح معانی الآثار	امام ابو جعفر احمد بن محمد طحاوی، متوفی ۳۲۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
33	مشکل الآثار	امام ابو جعفر احمد بن محمد طحاوی، متوفی ۳۲۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
34	المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث بیروت
35	المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث بیروت
36	معجم ابی یعلی	شیخ الاسلام ابو یعلی احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفی ۳۰۷ھ	المکتبۃ الشاملہ
37	الکامل فی ضعفاء الرجال	امام ابو احمد عبد اللہ بن عدی جرجانی، متوفی ۳۶۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
38	المستدرک علی الصحیحین	امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفہ بیروت
39	حلیۃ الاولیاء	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
40	شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
41	السنن الکبری	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
42	معرفۃ السنن والآثار	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
43	تاریخ بغداد	حافظ ابوبکر علی بن احمد خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
44	فردوس الاخبار	حافظ ابو شجاع شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دار الفکر بیروت
45	شرح السنۃ	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی، متوفی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
46	تاریخ مدینہ دمشق	امام علی بن حسن المعروف ابن عساکر، متوفی ۵۷۱ھ	دار الفکر بیروت
47	العلل المتناھیۃ	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
48	جامع الاصول	امام مبارک بن محمد شیبانی المعروف بابن اثیر جزری، متوفی ۶۰۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
49	الترغیب والترھیب	امام زکی الدین عبد العظیم بن عبد القوی منذری، متوفی ۶۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
50	المجروحین	امام حافظ محمد بن حبان، متوفی ۳۵۴ھ	دار الصمیعی ریاض
51	صحیح ابن حبان	علامہ امیر علاء الدین علی بن بلبان فارسی، متوفی ۷۳۹ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
52	مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
53	مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ہیثمی، متوفی ۸۰۷ھ	دار الفکر بیروت
54	فیض القدیر	علامہ محمد عبد الرءوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
55	المطالب العالیۃ	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت

www.dawateislami.net

56	المقاصد الحسنة	شیخ محمد عبد الرحمن سخاوی، متوفی ۹۰۲ھ	دار الکتاب العربی بیروت
57	اللآلئ المصنوعة	امام جلال الدین عبد الرحمن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
58	جمع الجوامع	امام جلال الدین عبد الرحمن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
59	جامع الاحادیث	امام جلال الدین عبد الرحمن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت
60	کنز العمال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی برہان پوری، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
61	کشف الخفاء	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی، متوفی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
62	التمهيد	امام یوسف بن عبد اللہ محمد بن عبد البر، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
63	فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
64	عمدة القاری	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی، متوفی ۸۵۵ھ	دار الفکر بیروت
65	ارشاد الساری	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دار الفکر بیروت
66	مرقاة المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر بیروت
67	مراٰۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز کراچی
68	نزهة القاری	علامہ مفتی محمد شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۰ھ	برکاتی پبلشرز کراچی
69	کشف المشکل	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	المکتبۃ الشاملہ
70	مشکل الآثار	امام ابو جعفر احمد بن محمد طحاوی، متوفی ۳۲۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
71	مکارم الاخلاق	حافظ امام ابو بکر عبد اللہ بن محمد قرشی، متوفی ۲۸۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
72	اتحاف الخیرة المهرة	امام احمد بن ابی بکر بن اسماعیل بوصیری، متوفی ۸۴۰ھ	مکتبۃ الرشد ریاض
73	شرح العقیدة الطحاویة	امام ابو جعفر احمد بن محمد طحاوی، متوفی ۳۲۱ھ	المکتب الاسلامی بیروت
74	شرح العقائد النسفیة	علامہ مسعود بن عمر سعد الدین تفتازانی، متوفی ۷۹۳ھ	کراچی
75	الیواقیت والجواهر	عبد الوہاب بن احمد بن علی بن احمد شعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
76	الصواعق المحرقة	حافظ احمد بن حجر مکی ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان
77	شرح الفقه الاکبر	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	کراچی
78	تکمیل الایمان	شیخ محقق عبد الحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	مکتبہ اعلیٰ حضرت
79	النبراس	علامہ محمد عبد العزیز فرہاری، متوفی ۱۲۳۹ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان
80	مطلع القمرین	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مخطوطہ
81	رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفہ بیروت
82	الفتاوی الهندیة	علامہ ہمام مولانا شیخ نظام، متوفی ۱۱۶۱ھ وجماعۃ من علماء الہند	دار الفکر بیروت
83	الفتاوی الرضویة	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
84	بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبہ رضویہ کراچی

www.dawateislami.net

85	مکاشفۃ القلوب	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
86	منہاج العابدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
87	الزھد	امام ابو عبد اللہ احمد بن محمد بن حنبل، متوفی ۲۴۱ھ	دار الغد الجدید
88	اللمع فی التصوف	ابو نصر عبد اللہ بن علی سراج طوسی، متوفی ۳۷۸ھ	کوئٹہ
89	إحیاء علوم الدین	امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت
90	سبع سنابل	میر عبد الواحد بلگرامی، متوفی ۱۰۱۷ھ	مکتبہ قادریہ لاہور
91	مکتوبات امام ربانی	مجدد الف ثانی شیخ احمد سرہندی، متوفی ۱۰۳۴ھ	مکتبۃ القدس کوئٹہ
92	السیرۃ النبویۃ لابن ہشام	ابو محمد عبد الملک بن ہشام، متوفی ۲۱۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
93	دلائل النبوۃ	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
94	الشفا بتعریف حقوق المصطفی	قاضی ابو الفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
95	الروض الانف	امام ابو القاسم عبد الرحمن بن عبد اللہ خثعمی سہیلی، متوفی ۵۸۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
96	البدایۃ والنہایۃ	عماد الدین اسماعیل بن عمر ابن کثیر دمشقی، متوفی ۷۷۴ھ	دار الفکر بیروت
97	الخصائص الکبری	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
98	شرح الصدور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
99	المواہب اللدنیۃ	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
100	معارج النبوۃ	مولانا معین الدین کاشفی ہروی، ۹۰۷ھ	نوریہ رضویہ لاہور
101	شواہد النبوۃ	مولانا عبد الرحمن جامی، متوفی ۸۹۸ھ	استنبول ترکی
102	مدارج النبوۃ	شیخ محقق عبد الحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	نوریہ رضویہ لاہور
103	شرح المواہب	محمد زرقانی بن عبد الباقی بن یوسف، متوفی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
104	حجۃ اللہ علی العالمین	امام یوسف بن اسماعیل نبہانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہل سنت برکات رضا ہند
105	الطبقات الکبری	محمد بن سعد بن منیع ہاشمی، متوفی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
106	الکامل فی التاریخ	ابو الحسن علی بن محمد بن اثیر جزری، متوفی ۶۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
107	الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	ابو عمر یوسف عبد اللہ بن محمد بن عبد البر قرطبی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
108	معرفۃ الصحابۃ	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
109	صفۃ الصفوۃ	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
110	تاریخ الاسلام	امام محمد بن احمد بن عثمان ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الکتاب العربی
111	کتاب المغازی	علامہ محمد بن عمر بن واقدی، متوفی ۲۰۷ھ	مؤسسۃ الاعلمی للمطبوعات
112	الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ	امام شیخ ابو جعفر احمد طبری، متوفی ۶۹۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
113	تہذیب التہذیب	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

114	الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
115	اسد الغابۃ	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
116	تہذیب الاسماء	امام ابو زکریا محی الدین بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دار الفکر بیروت
117	میزان الاعتدال	امام محمد بن احمد بن عثمان ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الفکر بیروت
118	لسان المیزان	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار الفکر بیروت
119	ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، متوفی ۱۱۷۶ھ	کراچی
120	ہمعات	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، متوفی ۱۱۷۶ھ	لاہور
121	انفاس العارفین	شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، متوفی ۱۱۷۶ھ	گجرات
122	لسان المیزان	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار احیاء التراث بیروت
123	المعارف لابن قتیبہ	ابو محمد عبد اللہ بن مسلم، متوفی ۲۷۶ھ	کراچی
124	المنتظم فی تاریخ الملوک والامم	امام ابو فرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	مکتبہ دار الباز مکۃ المکرمۃ
125	سیر اعلام النبلاء	امام محمد بن احمد بن عثمان ذہبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الفکر بیروت
126	الروض الفائق	شیخ شعیب حریفیش، متوفی ۸۱۰ھ	کوئٹہ
127	نزھۃ المجالس	علامہ عبد الرحمن بن عبد السلام صفوری شافعی، متوفی ۸۹۴ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
128	تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز
129	سبل الہدیٰ والرشاد	محمد بن یوسف صالحی شامی، متوفی ۹۴۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
130	فضائل دعا	والد اعلیٰ حضرت مولانا نقی علی خان، متوفی ۱۲۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
131	تمہید الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
132	ملفوظات اعلیٰ حضرت	مولانا مصطفےٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
133	مہر منیر	سوانح حیات پیر مہر علی شاہ گولڑوی، متوفی ۱۳۵۶ھ	لاہور
134	رسائل نعیمیہ	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز
135	نیکی کی دعوت	امیر اہلسنت مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
136	فیضان سنت	امیر اہلسنت مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی
137	تاج العروس من جواہر القاموس	ابو الفیض محمد بن محمد بن عبد الرزاق حسینی	المکتبۃ الشاملہ
138	التعریفات	سید شریف علی بن محمد بن علی جرجانی، متوفی ۸۱۶ھ	دار المنار للطباعۃ والنشر
139	اردو لغت	ادارہ ترقی اردو بورڈ	ترقی اردو لغت بورڈ کراچی

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुबो रसाइल

शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत

उर्दू कुतुब

01....राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء) (कुल सफ़ह़ात : 40)
02....करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِمِ فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم) (कुल सफ़ह़ात : 199)
03....फ़ज़ाइले दुआ (اَحْسَنُ الْوِعَاء لِآدَابِ الدُّعَاء مَعَهُ ذَيْلُ الْمُدَّعَاء لِاَحْسَنِ الْوِعَاء) (कुल सफ़ह़ात : 326)
04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد) (कुल सफ़ह़ात : 55)
05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوْق لِطَرْحِ الْعُقُوْق) (कुल सफ़ह़ात : 125)
06....अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार हिस्से) (कुल सफ़ह़ात : 561)
07....शरीअ़त व त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِاِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء) (कुल सफ़ह़ात : 57)
08....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़ह़ात : 60)
09....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ व नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)
10....आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (إِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़ह़ात : 100)
11....हुक़ूक़ुल इ़बाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : 47)
12....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ إِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़ह़ात : 63)
13....अवलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)
14....ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)
15....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़ह़ात : 46)
16....कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान (कुल सफ़ह़ात : 1185)

अ़रबी कुतुब

17, 18, 19, 20, 21.....جَدُّ الْمُمْتَارعَلٰی رَدِّالْمُحْتَار(المجلد الاول والثانی و الثالث والرابع والخامس)
(कुल सफ़ह़ात : 570, 672, 713, 650, 483)
22.... اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِی عَلٰی صَحِيْحِ الْبُخَارِی (कुल सफ़ह़ात : 458)
23.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़ह़ात : 74) 24..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़ह़ात : 62)
25... اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (कुल सफ़ह़ात : 93) 26.....اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِی (कुल सफ़ह़ात : 46)
27.....تَمْهِيْدُ الْاِيْمَان (कुल सफ़ह़ात : 77) 28.....اَجْلَی الْاِعْلَام (कुल सफ़ह़ात : 70)
29.....اِقَامَةُ الْقِيَامَة (कुल सफ़ह़ात : 60) 30..... जद्दुल मुमतार जिल्द 6, 7 (कुल सफ़ह़ात : 722, 723)

www.dawateislami.net

शो'बए तराजिमे कुतुब (अ़रबी से उर्दू तराजुम)

01..... अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُالْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द (कुल सफ़्ह़ात : 896)
02.....मदनी आक़ा के रोशन फ़ैसले (اَلْبَاهِرفِی حُکْمِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمْ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاه) (कुल सफ़्ह़ात : 112)
03.....सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा....? (تَمْهِیْدُ الْفَرْش فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़्ह़ात : 28)
04.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُالْعُیُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़्ह़ात : 142)
05.....नसीह़तों के मदनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِیْثِ الْقُدْسِیَّة) (कुल सफ़्ह़ात : 54)
06.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِیْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح) (कुल सफ़्ह़ात : 743)
07.....इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَایَااِمَام اَعْظَم عَلَیْهِ الرَّحْمَة) (कुल सफ़्ह़ात : 46)
08.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़्ह़ात : 853)
09.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़्ह़ात : 1012)
10.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْرعَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़्ह़ात : 144)
11.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْدوَقَصْرُالْاَمَل) (कुल सफ़्ह़ात : 85)
12.....राहे इल्म (تَعْلِیْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِیْقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़्ह़ात : 102)
13.....उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम ह़िस्सए अव्वल) (कुल सफ़्ह़ात : 412)
14.....उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम, ह़िस्सए दुवुम)(कुल सफ़्ह़ात : 413)
15.....इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْیَاء) (कुल सफ़्ह़ात : 641)
16....ह़िकायतें और नसीह़तें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق) (कुल सफ़्ह़ात : 649)
17....अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُالْمُذَاکَرَة) (कुल सफ़्ह़ात : 122)
18....शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُلِلّٰه عَزَّوَجَل) (कुल सफ़्ह़ात : 122)
19....हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़्ह़ात : 102)
20....आंसूओं का दरया (بَحْرُالدُّمُوْع) (कुल सफ़्ह़ात : 300)
21....आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّیْن) (कुल सफ़्ह़ात : 63)
22....शाहराए औलिया (مِنْهَاجُ الْعَارِفِیْن) (कुल सफ़्ह़ात : 36)
23....बेटे को नसीह़त (اَیُّهَاالْوَلَد) (कुल सफ़्ह़ात : 64)
24....اَلدَّعْوَة اِلَى الْفِكْر (कुल सफ़्ह़ात : 148)
25....नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلْاَمْرُبِالْمَعْرُوْف وَالنَّهْیُ عَنِ الْمُنْكَر) (कुल सफ़्ह़ात : 98)
26....इस्लाहे आ'माल जिल्द अव्वल (اَلْحَدِیْقَةُالنَّدِیَّة شَرْحُ طَرِیْقَةِ الْمُحَمَّدِیَّة) (कुल सफ़्ह़ात : 866)
27....आ़शिक़ाने ह़दीस की ह़िकायात (اَلرِّحْلَة فِی طَلَبِ الْحَدِیْث) (कुल सफ़्ह़ात : 105)

www.dawateislami.net

28....इह़याउल उ़लूम जिल्द अव्वल (احیاء علوم الدین) (कुल सफ़ह़ात : 1124)
29..... अल्लाह वालों की बातें जिल्द 2 (कुल सफ़ह़ात : 217)
30..... कुतुल कुलूब जिल्द अव्वल (कुल सफ़ह़ात : 826)

शो'बए दर्सी कुतुब

01....مراح الارواح مع حاشیۃضیاء الاصباح (कुल सफ़ह़ात : 241)
02....الاربعین النوویۃ فی الأحادیث النبویۃ (कुल सफ़ह़ात : 155)
03....اتقان الفراسۃ شرح دیوان الحماسہ (कुल सफ़ह़ात : 325)
04....اصول الشاشی مع احسن الحواشی (कुल सफ़ह़ात : 299)
05....نورالایضاح مع حاشیۃالنوروالضیاء (कुल सफ़ह़ात : 392)
06....شرح العقائدمع حاشیۃجمع الفرائد (कुल सफ़ह़ात : 384)
07....الفرح الکامل علی شرح مئۃ عامل (कुल सफ़ह़ात : 158)
08....عنایۃ النحو فی شرح ھدایۃ النحو (कुल सफ़ह़ात : 280)
09....صرف بھائی مع حاشیۃ صرف بنائی (कुल सफ़ह़ात : 55)
10....دروس البلاغۃ مع شموس البراعۃ (कुल सफ़ह़ात : 241)
11....مقدمۃالشیخ مع التحفۃالمرضیۃ (कुल सफ़ह़ात : 119)
12....نزھۃ النظر شرح نخبۃ الفکر (कुल सफ़ह़ात : 175)
13....نحو میرمع حاشیۃ نحو منیر (कुल सफ़ह़ात : 203)
14....تلخیص اصول الشاشی (कुल सफ़ह़ात : 144)
15....نصاب النحو (कुल सफ़ह़ात : 288)
16....نصاب اصولِ حدیث (कुल सफ़ह़ात : 95)
17....نصاب التجوید (कुल सफ़ह़ात : 79)
18....المحادثۃ العربیۃ (कुल सफ़ह़ात : 101)
19....تعریفاتِ نحویۃ (कुल सफ़ह़ात : 45)
20....خاصیات ابواب (कुल सफ़ह़ात : 141)
21....شرح مئۃ عامل (कुल सफ़ह़ात : 44)
22....نصاب الصرف (कुल सफ़ह़ात : 343)
23....نصاب المنطق (कुल सफ़ह़ात : 168)
24....انوارالحدیث (कुल सफ़ह़ात : 466)
25....نصاب الادب (कुल सफ़ह़ात : 184)
26....تفسیر الجلالین مع حاشیۃانوارالحرمین (कुल सफ़ह़ात : 364)

शो'बए तख़रीज

01....सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن का इ़श्क़े रसूल (कुल सफ़ह़ात : 274)
02....बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 ता 6, कुल सफ़ह़ात : 1360)
03....बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (ह़िस्सा : 7 ता 13) (कुल सफ़ह़ात : 1304)

www.dawateislami.net

04....बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 ता 20) (कुल सफ़हात : 1332)
05....अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़हात : 422)
06....गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 244)
07....बहारे शरीअ़त, (सोलहवां हिस्सा, कुल सफ़हात 312)
08....तह़क़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142)
09....अच्छे माहोल की बरकतें (कुल सफ़हात : 56)
10....जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)
11....इल्मुल क़ुरआन (कुल सफ़हात : 244)
12....सवानहे करबला (कुल सफ़हात : 192)
13....अरबईने ह़नफ़िय्या (कुल सफ़हात : 112)
14....किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64)
15....मुन्तख़ब ह़दीसें (कुल सफ़हात : 246)
16....इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)
17....आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)
18 ता 24....फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)
25.... ह़क़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)
26....बिहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़हात : 249)
27....जहन्नम के ख़तरात (कुल सफ़हात : 207)
28....करामाते सह़ाबा (कुल सफ़हात : 346)
29....अख़्लाक़ुस्सालिहीन (कुल सफ़हात : 78)
30....सीरते मुस्तफ़ा (कुल सफ़हात : 875)
31....आईनए इ़ब्रत (कुल सफ़हात : 133)
32....उम्महातुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُنَّ (कुल सफ़हात : 59)
33....जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता (कुल सफ़हात : 470)
34....फ़ैज़ाने नमाज़ (कुल सफ़हात : 49)
35....19 दुरूदो सलाम (कुल सफ़हात : 16)
36....फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़ मअ़ दुआए निस्फ़ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म (कुल सफ़हात : 20)

शो'बए फ़ैज़ाने सह़ाबा

01....ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (कुल सफ़हात : 56)
02....ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (कुल सफ़हात : 72)
03....ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (कुल सफ़हात : 89)
04....ह़ज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (कुल सफ़हात : 60)
05....ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (कुल सफ़हात : 132)
06....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (कुल सफ़हात : 720)
07....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जिल्द अव्वल (कुल सफ़हात : 864)
08....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जिल्द दुवुम (कुल सफ़हात : 855)

www.dawateislami.net

शो'बए इस्लाही कुतुब

01....ग़ौसे पाक رضی اللہ تعالٰی عنہ के हालात (कुल सफ़हात : 106)
02....तकब्बुर (कुल सफ़हात : 97)
03....40 फ़रामीने मुस्तफ़ा صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم (कुल सफ़हात : 87)
04....बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)
05....क़ब्र में आने वाला दोस्त (कुल सफ़हात : 115)
06....नूर का खिलोना (कुल सफ़हात : 32)
07....आ'ला हज़रत की इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 49)
08.... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)
09....इम्तिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)
10....रियाकारी (कुल सफ़हात : 170)
11....क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 262)
12....उ़श्र के अह़काम (कुल सफ़हात : 48)
13....तौबा की रिवायात व हिकायात (कुल सफ़हात : 124)
14....फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़हात : 150)
15....अहादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)
16....तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़हात : 187)
17....कामयाब तालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : 63)
18....टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)
19....तलाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)
20....मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
21....फ़ैज़ाने चहल अहादीस (कुल सफ़हात : 120)
22....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या (कुल सफ़हात : 215)
23....नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)
24....ख़ौफ़े ख़ुदा (कुल सफ़हात : 160)
25....तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
26....इनफ़िरादी कोशिश(कुल सफ़हात : 200)
27....आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)
28....नेक बनने और बनाने के तरीक़े (कुल सफ़हात : 696)
29....फ़ैज़ाने इह़याउल उ़लूम (कुल सफ़हात : 325)
30.... ज़ियाए सदक़ात (कुल सफ़हात : 408)
31....जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)
32....कामयाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
33....तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)
34....हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 हिकायात (कुल सफ़हात : 590)
35....हज व उ़मरह का मुख़्तसर तरीक़ा (कुल सफ़हात : 48)
36....जल्दबाज़ी के नुक़्सानात (कुल सफ़हात : 168)
37....ह़सद (कुल सफ़हात : 97)

अ़न क़रीब आने वाली कुतुब

01....क़सम के अह़काम
02....जल्द बाज़ी
03....फ़ैज़ाने इस्लाम
04....फ़ैज़ाने दुआ़ (ग़ार के क़ैदी)
05....बुख़्ल

www.dawateislami.net

﴾शो'बए अमीरे अहले सुन्नत﴿

01....सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़हात : 49)
02....मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़ह़ात : 48)
03....इस्लाह़ का राज़ (मदनी चैनल की बहारें, हिस्सा दुवुम) (कुल सफ़हात : 32)
04....25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 33)
05....दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)
06....वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़ह़ात : 48)
07....कफ़न की सलामती (कुल सफ़ह़ात : 33)
08....आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हि़स्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)
09....बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हि़कमत (कुल सफ़ह़ात : 48)
10....क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात :48)
11....पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़ह़ात : 48)
12....गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़ह़ात : 55)
13....दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)
14....गुमशुदा दुल्हा (कुल सफ़ह़ात : 33)
15....मैं ने मदनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़ह़ात : 33)
16....जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़ह़ात : 32)
17....मैं ह़यादार कैसे बनी ? (कुल सफ़ह़ात : 32)
18....ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़ह़ात : 36)
19....मुख़ालफ़त मह़ब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़ह़ात : 33)
20....मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़ह़ात : 32)
21....तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (1) (कुल सफ़ह़ात : 49)
22....तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ (2) (कुल सफ़ह़ात : 48)
23....तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़) (कुल सफ़ह़ात : 86)
24...तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत (क़िस्त़ 4) (कुल सफ़ह़ात : 49)
25....इल्मो हिक्मत के 125 मदनी फूल (तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ 5) (कुल सफ़ह़ात : 102)
26....57....हुक़ूक़ुल इबाद की एह़तियातें (तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ 6) (कुल सफ़ह़ात : 47)

www.dawateislami.net

27....मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़्हात : 32)
28....बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़्हात : 32)
29....अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्हात : 24)
30....हैरोइंची की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)
31....नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़्हात : 32)
32....मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़्हात : 32)
33....ख़ौफ़नाक दांतों वाला बच्चा (कुल सफ़्हात : 32)
34....फ़िल्मी अदाकार की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)
35....सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़्हात : 32)
36....क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़्हात : 24)
37....फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्हात : 101)
38....हैरत अंगेज़ हादिसा (कुल सफ़्हात : 32)
39....मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)
40....क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़्हात : 32)
41....सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़्हात : 33)
42....क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़्हात : 32)
43....म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़्हात : 32)
44....नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़्हात : 32)
45....आंखों का तारा (कुल सफ़्हात : 32)
46....वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़्हात : 32)
47....बा बरकत रोटी (कुल सफ़्हात : 32)
48....इग़्वाशुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़्हात : 32)
49....मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़्हात : 32)
50....शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़्हात : 32)
51....बद किरदार की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)
52....ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़्हात : 32)
53....नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़्हात : 32)
54....मैं ने वीडियो सेन्टर क्यूं बन्द किया ? (कुल सफ़्हात : 32)
55....चमकती आंखों वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़्हात : 32)
56....इल्मो हिक्मत के 125 मदनी फूल (तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ 5) (कुल सफ़्हात : 102)
57....हुक़ूक़ुल इबाद की एह़तियातें (तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ 6) (कुल सफ़्हात : 47)
58....नादान आ़शिक़ (कुल सफ़्हात : 32)
59....सीनेमा घर का शैदाई (कुल सफ़्हात : 32)
60....गूंगे बहरों के बारे में सुवाल जवाब, क़िस्त़ पन्जुम (कुल सफ़्हात : 23)
61....डान्सर ना'त ख़्वान बन गया (कुल सफ़्हात : 32)
62....गुलूकार कैसे सुधरा ? (कुल सफ़्हात : 32)
63....नशे बाज़ की इस्लाह़ का राज़ (कुल सफ़्हात : 32)
64....काले बिच्छू का ख़ौफ़ (कुल सफ़्हात : 32)
65....ब्रेक डान्सर कैसे सुधरा ? (कुल सफ़्हात : 32)
66....अ़जीबुल ख़ल्क़त बच्ची (कुल सफ़्हात : 32)
67....बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़्हात : 32)
68....चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़्हात : 32)

अ़न क़रीब आने वाली कुतुब

01....अजनबी का तोह़्फ़ा
02....जेल का गवय्या

www.dawateislami.net

मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का

अज़ : बरादरे आ'ला हज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن, बरेली शरीफ़

बयां हो किस ज़बां से मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर का
है यारे ग़ार, मह़बूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

या इलाही ! रह़्म फ़रमा ! ख़ादिमे सिद्दीक़े अक्बर हूं
तेरी रह़मत के सदक़े, वासित़ा सिद्दीक़े अक्बर का

रुसुल और अम्बिया के बा'द जो अफ़्ज़ल हो आ़लम से
येह आ़लम में है किस का मर्तबा ? सिद्दीक़े अक्बर का

गदा सिद्दीक़े अक्बर का, ख़ुदा से फ़ज़्ल पाता है
ख़ुदा के फ़ज़्ल से हूं मैं गदा, सिद्दीक़े अक्बर का

ज़ईफ़ी में येह क़ुव्वत है ज़ईफ़ों को क़वी कर दें
सहारा लें ज़ईफ़ो अक़्विया सिद्दीक़े अक्बर का

हुवे फ़ारूक़ व उ़स्मानो अ़ली जब दाख़िले बैअ़त
बना फ़ख़्रे सलासिल सिलसिला सिद्दीक़े अक्बर का

मक़ामे ख़्वाबे राह़त चैन से आराम करने को
बना पहलूए मह़बूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर का

अ़ली हैं उस के दुश्मन और वोह दुश्मन अ़ली का है
जो दुश्मन अ़क़्ल का, दुश्मन हुवा सिद्दीक़े अक्बर का

लुटाया राहे ह़क़ में घर कई बार इस मह़ब्बत से
कि लुट लुट कर 'ह़सन' घर बन गया सिद्दीक़े अक्बर का

(ज़ौक़े ना'त, स. 53)

www.dawateislami.net

बेहतरी जिस पे करे फ़ख़्र वोह बेहतर सिद्दीक़

अज़ : मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

बेहतरी जिस पे करे फ़ख़्र वोह बेहतर सिद्दीक़
सरवरी जिस पे करे नाज़ वोह सरवर सिद्दीक़

चमनिस्ताने नबुव्वत की बहारे अव्वल
गुलिस्ताने दीं के बने पहले गुले तर सिद्दीक़

बे गुमां शम्ए नबुव्वत के हैं आईने चार
या'नी उ़स्मानो उ़मर, ह़ैदरो अक्बर सिद्दीक़

सारे अस्ह़ाबे नबी तारे हैं उम्मत के लिये
इन सितारों में बने महरे मुनव्वर सिद्दीक़

सानियसनैन हैं अबू बक्र ख़ुदा मेरा गवाह
ह़क़ मुक़द्दम करे फिर क्यूं हो मुअख़्ख़र सिद्दीक़

ज़ीस्त में मौत में और सब्र में सानी ही रही
सानियसनैन के इस त़रह़ हैं मज़्हर सिद्दीक़

والذين معه के हैं येह फ़र्दे कामिल
ह़श्र तक पाए नबी पर हैं धरे सर सिद्दीक़

बाल बच्चों के लिये घर में ख़ुदा को छोड़ें
मुस्त़फ़ा पर करें घर बार निछावर सिद्दीक़

तू है आज़ाद सक़र (जहन्नम) से तेरे बन्दे आज़ाद
है येह 'सालिक' भी तेरा बन्दए बे ज़र सिद्दीक़

(रसाइले नईमिय्या, दीवाने सालिक अज़ , स. 26)

www.dawateislami.net

मम्बए ख़ौफ़े ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं

अज़ : अमीरे अहले सुन्नत मौलाना इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

यक़ीनन मम्बए ख़ौफ़े ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं
हक़ीक़ी आ़शिक़े ख़ैरुल वरा सिद्दीक़े अक्बर हैं

बिला शक पैकरे सब्रो रिज़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं
यक़ीनन मख़्ज़ने सिद्क़ो वफ़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं

निहायत मुत्तक़ी व पारसा सिद्दीक़े अक्बर हैं
तक़ी हैं बल्कि शाहे अत्क़िया सिद्दीक़े अक्बर हैं

जो यारे ग़ार महबूबे ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं
वोही यारे मज़ारे मुस्त़फ़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं

त़बीबे हर मरीज़े ला दवा सिद्दीक़े अक्बर हैं
ग़रीबों बे कसों का आसरा सिद्दीक़े अक्बर हैं

अमीरुल मोअमिनीं हैं आप इमामुल मुस्लिमीं हैं आप
नबी ने जन्नती जिन को कहा सिद्दीक़े अक्बर हैं

सभी अस्ह़ाब से बढ़ कर मुक़र्रब ज़ात है उन की
रफ़ीक़े सरवरे अरज़ो समा सिद्दीक़े अक्बर हैं

उ़मर से भी वोह अफ़्ज़ल हैं वोह उ़स्मां से भी आ'ला हैं
यक़ीनन पेश्वाए मुर्तज़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं

न डर 'अ़त्तार' आफ़त से ख़ुदा की ख़ास रह़मत से
नबी वाली तेरे, मुश्किल कुशा सिद्दीक़े अक्बर हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 494)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- नागपुर :- सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पुरा, नागपुर, महाराष्ट्र, फ़ोन : 07304052526
- अजमेर :- 19 / 216, फ़लाहे़ दारैन मस्जिद के क़रीब, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, राजस्थान, फ़ोन : 09352694586
- हुबली :- ए जे मुढोल कोम्पलेक्स, ए जे मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 09900332092
- हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, है़दराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
- बनारस :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यू.पी, फ़ोन : 09369023101

ISBN 978-969-631-110-2
0101130
MC 1286

MAKTABATUL MADINA
421, URDU MARKET, MATIA MAHAL, JAMA MASJID, DELHI - 110006, PH : 011 - 23284560
E- mail : maktabadelhi@gmail.com, web : www.dawateislami.net